श्रीः ।

शाक्तप्रमोदः ।

काली, तारा, त्रिपुरसुन्दरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता,
त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातङ्गी,
कमलात्मिकेति दशमहाविद्यातन्त्रात्मकः ।
कुमारीतन्त्रेण च, दुर्गा, शिव, गणेश,
सूर्य, विष्णूनां पंचायतनदेवतानां तन्त्रैश्च
समलंकृतः.

शिवहरराजधानीराजभिः
श्रीराजदेवनन्दनसिंहबहादुरनराधिपैः
संगृह्य विरचित

तद्गुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराजदुबेजीद्वारा
संशोधितः ।

सोयं मुम्बय्यां
श्रीकृष्णदासात्मज खेमराजेन
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९५० शके १८१५

Price Rs. -8.

श्रीः।

श्रीरामचन्द्रो विजयते

अथ

रघुनाथपुष्पाञ्जलिः।

विराजतां स्फुरन्महामहोमहार्हकुण्डलोल्लसत्कपोलपालिरुल्लसत्तडित्समाम्बरः॥ नवाभ्रकालिमच्छटाघटाच्छविच्छिदप्रभुर्मदीयचित्तमन्दिरे निकाममिन्दिरावरः॥१॥ मुनीन्द्रवृन्दरञ्जनं कवीन्द्रतापभञ्जनं पुरन्दरादिदेववृन्दवन्दिताङ्घ्रिपङ्कजम्॥ मुरच्छिदं मधुच्छिदं बकच्छिदं खरच्छिदं भवच्छिदं भयच्छिदं सुरद्विषच्छिदम्भजे॥२॥ विपक्षपक्षघातदक्षकच्छपादिरूपभृत् स्वरक्ष्यरक्षणक्षमः क्षमासु च क्षमासमः॥ स्वभक्तहृच्चकोरचन्द्रशेखरप्रियःसदैव रामभूपतिः शिवाय नः प्रजायताम्॥३॥ वसिष्ठनारदाङ्गिरःपुलस्त्यगस्त्यसेवितं हनूमदाद्यशेषकीशपूजिताङ्घ्रिपङ्कजे॥ जगन्नृपावतंसहंसवंशभूपभूषणे प्रतिक्षणं नवा नवा नवाऽस्तुमामकी रतिः॥४॥ कलङ्करङ्कचन्द्रमश्छविच्छटास्फुटाननप्रभाप्रभावपेशलस्स कोसलेशनन्दनः॥ नृपालबालकावृतः समन्ततोऽलकावृतः सदा नृकेसरी हरिश्चरीकरोतु नः शिवम्॥५॥ मुहुर्धगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयच्छटाविडम्बिकृद्धदुर्धरप्रतापसिद्धसाधनेः॥

प्रफुल्लनीलनीरजच्छटाविडम्बिलोचने त्रिलोचनप्रिये
सदा दृढास्तु मामकी रतिः ॥ ६ ॥ अशेषलेखशेखर-
प्रसूनमाल्यसंस्खलत्परागराजिराञ्जिताङ्घ्रिपीठच-
क्रवर्तिनि ॥ विदेहराजनन्दिनीमुखेन्दुलग्नमानसे हरौ
मनो नियोजयन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ ७ ॥ विमु-
क्तसर्ववासनः शनैर्मनो निवर्तयन्नशेषभोग्यवस्तुनो
निरुद्धदुर्द्धरेन्द्रियः ॥ महानिकुञ्जकोटरे कदा सदास-
सम्मदो वसामि नाम संस्मरन् पुलस्तिपुत्रवैरिणः ॥८॥
त्रिलोकनाथरङ्कयोः कुरङ्गदृक्कुयोषितोर्वधूभुजाभुजङ्ग-
योर्विपक्षमित्रपक्षयोः ॥ दरीगरिष्ठवेश्मनोर्वरिष्ठरत्नलो-
ष्टयोस्समप्रवृत्तिरद्भुतं भजामि राघवं कदा ॥ ९ ॥ क-
लिन्दकाद्रिनन्दिनीचलत्तरङ्गभङ्गुरप्रवाहपुञ्जमञ्जुलप्र-
भाविडम्बिनी भृशम् ॥ जगन्मनोभिरामनामकाय-
यकान्तिलम्बिनी सदैव राघवी तनुस्तनोतु नो मनोमु-
दम् ॥ १० ॥ अयं विचित्रनूतनस्तवप्रसूनसाधितो हि-
तस्त्रिलोकजन्मिनामतीव मञ्जुलाञ्जलिः ॥ कपीन्द्रचञ्च-
दुन्नचित्तचञ्चरीकहर्षदः सदाऽस्तु चेतसो मुदे विदेहक-
न्यकापतेः ॥ ११ ॥ पठति यो रघुनाथकृतं सदा नव-
मिदं स्तवमादरतः पुमान् ॥ भवति तस्य रमापतिपाद-
योरचिरमेव सुभक्तिरनुत्तमा ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्रघुनाथशर्मविरचितो रघुनाथपुष्पाञ्जलिः ।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना कल्याण—(बंबई)

श्रीः ।

लक्ष्मीवेङ्कटेशोविजयते ।

अवश्यदेखिये !] ——— [देखनेही योग्यहै !

{ ज्यौं पारस लगि होतहै, लोहा कनक समान ॥
त्यौं ग्रन्थनके पठनसे, मूरख होत सुजान ॥ }

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेका-विज्ञापन,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदाससे-

विदितहो कि, (बंबई) शहरका प्रख्यात अपना लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर छापाखाना है वही छापाखाना बंबई नजीक (३७ कोशपर) कल्याणमें स्थापन कियाहै और आपलोगोंकी कृपासे अभी शकट-चलन-साधक-अग्नि-जलयुक्त धूमयन्त्र (वाफ-स्टीम) से चलताहै, परंतु ग्राहक महाशयहो ! आजतक इस छापेका नाम ऐसा चलताथा जैसा--

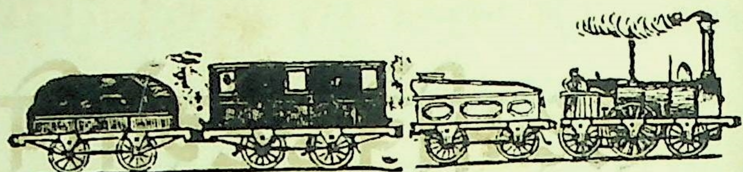
(गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास " श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना- बंबई)

बीचमें कोई २ पुस्तकपर श्रीकृष्णदासात्मज गङ्गाविष्णु-खेमराज ऐसाभी छपगयाहै अभी मैंने वही " श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना मेरे छोटे भाईकूं देके ऊपर लिखाहुवा सुप्रसिद्ध " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " नामका छापाखाना कल्याणमेंही स्थापन करनेका कारण कल्याण रेलवाईका बडा जंक्शन् है जैसा-बंगाला (कलकत्ता)

नागपूर, खांडवा, मद्रास, पूना इत्यादि चारौतर्फसे सब रेलगड्डी प्रथम—

कल्याण

(जंगूशन्) ☞



होके पीछे बंबई जातीहै तिस्से यहाँ चिठियाँभी झट मिलताहै कि, जिस्से ग्राहक महाशयोंको पुस्तकें आदि रवाना करनेमें कुछभी देरी नहीं होती. मात्र केवल एक गुजरात—रेलगड्डी पहिली बंबई होके पीछे कल्याणमें आतीहै जिसवास्ते पुस्तकोंका दुकान बंबईमें जहाँका तहाँही रक्खाहै तौभी प्रायः अभी कल्याणसेही पुस्तकें रवाना किया जाताहै जहाँ चाहिये तहाँ पत्रव्यवहार करना पहुँचताहै. ग्राहकगण! अपना नाम, गाम, ठिकाना हमेसा स्पष्ट लिखिये कि, जिस्से आपलोगोंको जवाब या पुस्तकें भेजनेकूं देरी न होगी मात्र नीचे लिखेहुये पतेमुजब पत्रव्यवहार करना.

निखिलविद्वज्जनचरणपङ्कजरसानुभवशाली—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर छापाखाना

कल्याण—(बंबई)

३ रामायण मझोला।

ऊपरके सब अलंकारोंसहित इसका सांचा छोटाहै अक्षर मध्यमहै कीमत ग्लेज २॥ रु० रफ् १॥

४ रामायण गुटका।

यहभी पूर्वोक्त सब अलंकारोंसे पूरितहै अभिप्रायमें कुछभी कम नहीं किन्तु कलेवर इसका जेबहीमें रखने योग्य तथा अति सुरूपभी है. साधु तथा देशाटन करनेवालोंको अत्यंत उपयोगीहै कीमत बहुतही थोडी केवल १ रु०

मनुस्मृतिः।

सान्वय अत्युत्तम सरल हिंदीभाषाटीकासहित छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत है ऐसा उत्तमग्रंथ अद्यावधि कहीं नहीं छपाथा भारतवर्षके राजा महाराजा तथा विप्रगण इसीके अनुसार राजनीति और प्रजापालन धर्मशासन करते हैं यहाँतक कि श्रीमन्महाराज अंग्रेजबहादूरभी इसका अवलम्ब लेते हैं यहग्रंथ परमसुंदर मोटे टैपू और जाडे विलायती कागजपर छपाहै की २॥ रु०

श्रीमहाभारत।

सटीक मोटेअक्षरका।

महर्षिश्रीवेदव्यासप्रणीत और पंचमवेद संज्ञा होनेसे विशेष प्रशंसाकरना निरर्थकहै ये वह पुस्तक गणपत कृष्णाजीके छापेकीहै जो पूर्वकालमें ६० वा ८० रुपयेको मिलताथा उसीको हमने सबलेकर ४० रुपयेमें देतेहैं टपाल महसूल ९ रु० अलग है परंतु अब थोडी पुस्तकें रहगईहैं महाभारतके प्रेमीलोगोंको शीघ्र लेनाचाहिये कुछकालके पीछे मूल्य अधिक होजायगा ऐसा ग्रंथ

(१६) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना;

कागज विलायती बढिया लगायाहै माहात्म्य षष्ठाध्यायी भाषाटीका सहित इस्के साथही है प्रथमावृत्तीमें मूल्य १५ रुपय्येथा इस आवृत्तीमें केवल १२ बाराही रुपया रक्खाहै ज्यादा प्रशंसा बाहुल्यमात्रहै.

(दोहा) एकघडी आधीघडी, ताहूकी पुनिआध ।
नेमसहित जो नितपढे, कटै कोटि अपराध ॥ १ ॥

विशेषसूचना–

संस्कृतादि पुस्तकप्रकाशक– " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " नाम मुद्रायन्त्रमें देवनागरीभाषा और संस्कृत तथा संस्कृत–भाषाटीकासहित अनेकानेक ग्रन्थ जैसे–वैदिक, वेदान्त पुराण, धर्मशास्त्र, काव्य, छन्द, नीती, चम्पू, नाटक, स्तोत्र, वैद्यक, स्मृति, कोष, इतिहास, श्रीरामानुजसाम्प्रदायी तथा हिन्दीभाषाके सब रकम ग्रन्थ सर्वकाल विकनेको तय्यार रहतेहैं जो अन्यत्र नहीं मिलसक्ते खुलापत्राकार तथा किताबों सपुष्ट रेशमी विलायती चित्रित जिल्द बँधीहैं पुस्तकोंकी रचना और शुद्धता इसछापेकी उत्तमहै कि, देखनेसे चित्त प्रसन्न होजाय. जिनका दूसरा सूचीपत्र है, (आध आनेका टिकट भेजनेसे शीघ्र रवाना होताहै)

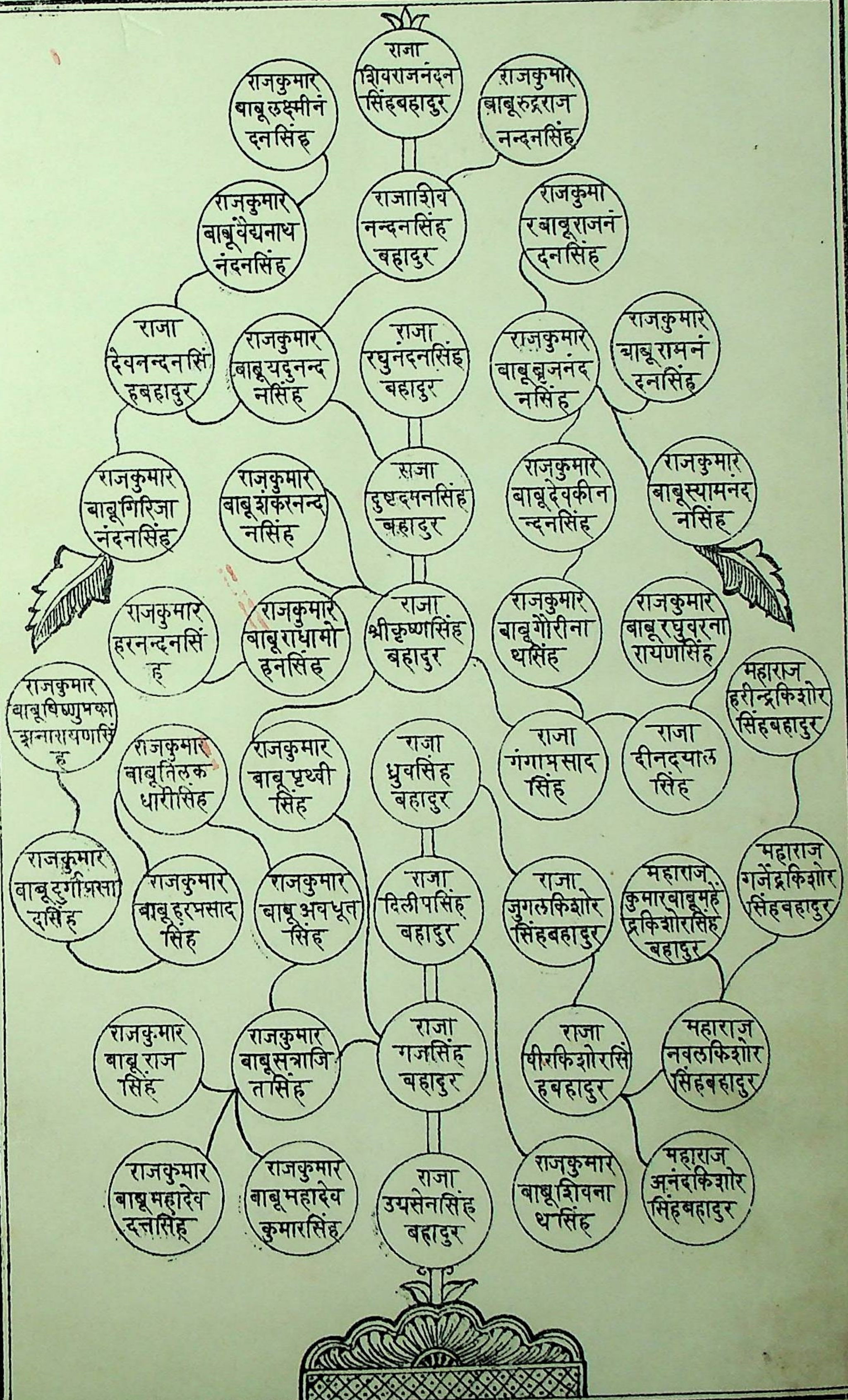
पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना
कल्याण–(बंबई)

श्रीगणेशाय नमः।

विज्ञापन।

मैं श्रीराजदेवनन्दनसिंह बहादुर मालिक राजधानी शिवहर जिले मुजफ्फरपुरने श्रीकाली तारा इत्यादि दशो महाविद्या और सूर्य्य गणेश इत्यादि देवताओंको प्रणामकरके इस ग्रन्थको बहुत परिश्रमके साथ अनेक तन्त्र व पुराणोंसे संग्रह किया और इस ग्रन्थ बनानेका कारण यह है कि मुझको और दूसरे २ शाक्तजनोंको पूजादिकके समय इन विषयोंको आवश्यकता पडतीथी और समयपर प्राप्ति होना इनका कठिनथा और जिन लोकोंके पास यत्किञ्चित थाभी तो अशुद्ध और गोपनीय इत्यादि वचनके कारण किसी दूसरेको देते नहीं परन्तु मैंने यह विचार किया कि इस्से यह विषय लुप्त होजायगा आर इसरीतिको पुस्तक कोई महाशयोंकेपास देखीभी नहीं गई इसकारण सर्व्वशाक्तोंके उपकारहेतु इन विषयोंको संग्रहकर श्रीपण्डित रघुराजदुबेजी जो कि हमारे गुरु वंशसे हैं शुद्धकरा शाक्तप्रमोदनाम रख मुंबईमें श्रीकृष्णदासात्मज खेमराज इन्होंके समीप मुद्रित करनेके अर्थ भेज दियाहै सो आज सर्व्व देवताओंके प्रसादसे छपके तैयार हुवाहै अब सर्व्वविद्वज्जनोंको चाहिए कि प्रतिष्ठापूर्व्वक इस ग्रन्थको कृपादृष्टिसे देखें और नीचे अपनी वंशावली लिखताहूं कि वृत्तान्त कुलका प्रगटहो.

श्रीराजदेवनन्दनसिंह– बहादुरशिवहर– जिला मुजफ्फरपुर


राजा शिवराजनंदन सिंहबहादुर
राजकुमार बाबू लक्ष्मीनंदनसिंह
राजकुमार बाबू रुद्रराज नन्दनसिंह
राजकुमार बाबू वैद्यनाथ नंदनसिंह
राजा शिव नन्दनसिंह बहादुर
राजकुमार बाबू राजनंदनसिंह
राजा देवनन्दनसिंहबहादुर
राजकुमार बाबू यदुनन्दनसिंह
राजा रघुनंदनसिंह बहादुर
राजकुमार बाबू ब्रजनंदनसिंह
राजकुमार बाबू रामनंदनसिंह
राजकुमार बाबू गिरिजा नंदनसिंह
राजकुमार बाबू शंकरनन्दनसिंह
राजा दुष्टदमनसिंह बहादुर
राजकुमार बाबू देवकीनन्दनसिंह
राजकुमार बाबू स्यामनंदनसिंह
राजकुमार हरनन्दनसिंह
राजकुमार बाबू राधामोहनसिंह
राजा श्रीकृष्णसिंह बहादुर
राजकुमार बाबू गौरीनाथसिंह
राजकुमार बाबू रघुवरनारायणसिंह
राजकुमार बाबू विष्णुप्रकाशनारायणसिंह
महाराज हरीन्द्रकिशोर सिंहबहादुर
राजकुमार बाबू तिलकधारीसिंह
राजकुमार बाबू पृथ्वीसिंह
राजा ध्रुवसिंह बहादुर
राजा गंगाप्रसाद सिंह
राजा दीनदयालु सिंह
राजकुमार बाबू दुर्गाप्रसादसिंह
राजकुमार बाबू हरप्रसाद सिंह
राजकुमार बाबू अवधूत सिंह
राजा दिलीपसिंह बहादुर
राजा जुगलकिशोर सिंहबहादुर
महाराजकुमार बाबू महेंद्रकिशोरसिंह बहादुर
महाराज गजेंद्रकिशोर सिंहबहादुर
राजकुमार बाबू राजसिंह
राजकुमार बाबू सत्राजितसिंह
राजा गजसिंह बहादुर
राजा वीरकिशोरसिंहबहादुर
महाराज नवलकिशोर सिंहबहादुर
राजकुमार बाबू महादेवदत्तसिंह
राजकुमार बाबू महादेव कुमारसिंह
राजा उग्रसेनसिंह बहादुर
राजकुमार बाबू शिवनाथसिंह
महाराज अनंदकिशोर सिंहबहादुर

श्रीः ।

विज्ञप्तिः ।

अद्य खलु सकलभूतलनिवासिनामार्यजनानां पुरतःकिञ्चिद्विज्ञापनं लिखितुम स्मदीयं मनोऽतितरामानन्दमाधत्ते–प्रवर्तयति च सत्परिश्रमाभिनन्दनाय। तत्कि-मपि कथमपि वर्ण्यमानममुं प्रार्थनाञ्जलिं निजसपर्यायै समभिनन्दन्तु सभ्यजनाः

भोः ! विद्वांसो महाप्रज्ञाः ! संप्रति ह्यस्मिन्प्रकृष्टप्रादुर्भावे आर्यदेशे प्राचीनम-हानुभावमहर्षिजनानुष्ठितानुष्ठापितसनातनवेदधर्मप्रथाऽनेकधा प्रवितता एकशैलस-मुत्पन्ननानानदीवत्समन्ततो व्याप्तबहुलप्रदेशा अंते च समुद्रमिव परमेष्टप्राप्तव्यं प्रतिलंभते–इति हि विचारान्ते निखिलविचक्षणजनानां प्रत्यक्षं स्यात् ।

तत्र च प्रकृतमनुरुन्ध्महि–अस्मिन्भरतवर्षे प्राधान्येन वैदिको धर्म एवासीत्। ततश्च कियता समतीतेन समयेन नानाविधाः जैनबौद्धादयः धर्मा वैदिकधर्मप्र चारविदूषका नष्टदृष्टिभिरयथातत्त्वदर्शिभिःकेवलं दयामुखैरैर्महानिर्दयैर्मनुष्यापस-दैराहृताः कालदोषेण प्रसिद्धिमाययुः–येषां दुष्टधर्माणां शुष्कविरक्तिवादनिर-न्तरघोषणेन जातबुद्धिसंस्काराणां भारतीयप्रजानां दृढसाहसिकमनोबन्धना नि शिथिलीकृतानि–येनच मनोबन्धशिथिलीकरणेन प्रतिविचारं औदासिन्यमेव प्रायो भारतीयजनानामाश्रयप्रासादो बोभवीति–अतएव च विप्रकृष्टनिकृष्टजनैर्गारु डैर्महाविषाः पन्नगा इव क्रीडोपकरणीकृताः खलु भारतीयाः ! अयं महाननर्थः जैनबौद्धादिमहापाषण्डधर्मकृतःइति सुतरां भारतीया अनुमिन्वन्तु ।

वैदिकधर्मश्च त्रेधा–सात्विको राजसस्तामसश्चेति । स त्रिविधोऽपि द्विविधः–आभ्यन्तरो बाह्यश्च । आभ्यन्तरश्च स्वमनोव्यापाररूपः । बाह्यः इतरेन्द्रियवृत्ति कृतव्यापाररूपः । तत्र लोकवृत्तिः बाह्यधर्मे आभ्यन्तरधर्मे च परिणिष्ठितास्ति । तच्चेत्थं–सकलजगदुत्पादकस्य निजमहानन्दैकमूर्तेः सच्चिदानन्दरूपस्य अनिर्वच नीयाचिंत्यगुणगणस्य अप्रच्युतिस्वभावस्य परमात्मनो निजाभिन्नापरिमेयशक्ति विरचितनिखिलब्रह्माण्डकोटिपरम्परा सृष्टिस्थितिसंहारकारिणी सत्त्वरजस्तमोगुण जननी भगवती योगमाया आदिशक्तिः दृश्यज्ञेयादिस्वरूपं इदं जगत् समुत्पाद्य तस्मिन्निजलीलया नानाविधचरित्राणि विधाय भगवति सर्वेश्वरे सदा रमते ।

भगवांश्च तयैव योगमायया निर्गुणोऽपि स्वयं गुणवानिव साक्षितया सर्वं तच्च-रितं समनुमोदते कान्त इव कान्ताकृतां कन्दुकलीलाम् ।

एतादृशगुणवैभवयोर्मायापरमपुरुषयोरादिमायासृष्टगुणत्रयकार्यभूते जगति जायमानानां त्रिविधानां जनानां स्वस्वगुणभावितदैहिकमानसिकवृत्तीनां तत्तद्गुणभाविता परमपुरुषयोगमायारूपा परमेष्टदेवता तत्तद्गुणसामग्र्या समाराधनीयतया विधीयते नत्वन्यान्यप्रकृतीनामन्यान्यदेवतान्यान्यसामग्र्या- । यथानीलपीतादिकाचदत्तदृष्टीनां तत्तद्वर्णदृश्यद्रव्यप्रकाशो दरीदृश्यते न त्वितरः। एवं रीत्याऽयं वैदिको धर्मःअनन्तकालतोऽस्मिन्नार्यभूमण्डले प्रचारातिभूमिंगतः सर्वान्धर्मिष्ठजनानभीष्टफलप्रदानेन कृतार्थयतीति बहु भागधेयं मन्ये वैदिकधर्मानुयायिनाम्।

तत्र च प्रकृतं किञ्चिद्विचार्यते-वैदिका नाम वेदचतुष्टयप्रोक्ताःइतिहासपुराणप्रोक्ताश्च । इतिहासपुराणयोर्वेदत्वं च-

" इतिहासपुराणानि पञ्चमो वेद उच्यते "

इत्यादिवचनकदम्बात् । इतिहासान्तःकोटिप्रविष्टान्येव हि तन्त्राणि । तेषामपीतिहासत्वात् । ' इतिहासः पुरावृत्तम् ' इत्याभिधानिकवचनात् । तन्त्रेष्वपि पुरावृत्तस्यैव संवादादिरूपेण सत्त्वात् एवं च तान्त्रिकधर्माणामपि वैदिकधर्मत्वं सिद्धम्।

तत्र च इदं (" शाक्तप्रमोद ") नामकं पुस्तकं नानाविधतन्त्रेभ्यः समुद्धृतं व्यवस्थया चानुक्रमितम् ।

अयं (शाक्तप्रमोदः)-शक्तिर्देवता येषां ते शाक्ताः शाक्ताः प्रमोदन्ते यस्मात्सः शाक्तप्रमोदः शाक्तजनानन्ददायक इत्यर्थः । अनेन च केवलं शक्तिपूजकानामेवायं आनंददायक इत्येवार्थ इति न भ्रमितव्यम् । किंतु अस्य ग्रन्थस्य अंतिमे भागे दुर्गा-शिव-गणेश-सूर्य-विष्णूनां तन्त्राणि दृश्यन्ते- । अतःसर्वेषां शाक्त-शैव-गाणपत्य-सौर-वैष्णवानामप्ययमानन्ददायक एवास्ति ।

अयं च ग्रन्थः श्रीशिवहरराजधानीनरेन्द्रैः श्रीमन्महाराजश्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादुराभिधानैः महाप्रयासेन नानातन्त्राणि संगृह्य तेभ्यस्तन्त्रेभ्यः दशमहाविद्यानां (काली-तारा-त्रिपुरसुन्दरी-भुवनेश्वरी-छिन्नमस्ता-त्रिपुरभैरवी-धूमावती-बगलामुखी-मातङ्गी-कमलात्मिकानां दशशक्तीनां) तन्त्राणि समुद्धृतानि ।तथाच (दुर्गा-शिव-गणेश-सूर्य-विष्णूनां) पंचायतनदेवतानां तन्त्राणि समुद्धृतानि । तेषुच सर्वेषु तन्त्रेषु-तत्तद्देवतायाः ध्यानं-यन्त्रोद्धारः-मन्त्रोद्धारः-पूजाविधिः-स्तोत्रं-कवचं-हृदयं-उपनिषत्-शतनाम-सहस्रनाम इत्येतानि दश-दश अंगानि सन्ति । कुमारीतन्त्रं-बलिप्रदानं हवननिर्णयश्च सम्यगत्र निवेशितो वर्तते । एवं सर्वांगपरिपूरितोऽयं ग्रन्थः पूर्वोक्तमहाराजैः सर्ववैदिकधर्मावलंबिजनानां हितार्थाय समग्रतया संकलितः ।

अस्मिन्भूमण्डले संप्रति एतादृशपरहितकारिणो जना विरलाःसंति । पश्यन्तु विद्वांसः !अयं वैदिकधर्मश्च यत्रतत्र उत्तरोत्तरं ह्रस्यमान एव दृश्यते न तु क्वचित् वृद्धिंगतः । अत्र हेतुं तु तावत्पश्यामो निश्चिनुयामश्च धर्मवृद्धिमूलं तावद्ब्राह्मणाः, तेच ब्राह्मणाः प्रायशोऽस्मिन्काले लोभग्रहग्रस्ता वेदेषु वैश्यवृत्तय एव केवलं दृश्यंते नतु परमार्थदृष्टयो बहवः । तेषां च लोभिष्ठतया सनातनधर्मस्यापि यथावकाशं संकोचेन धर्मग्रंथानामपि यावत्प्रयोजनं संग्रहकरणेन बहवश्च ग्रंथाः लेखनादिपरिपाटीविरहिता नष्टप्राया इव भवंति । तत्प्रजानां च निजपूर्वजसंपादितानामेव ग्रंथानां अध्ययने कालो न लभ्यते किं पुनरन्यसंग्रहे । एवं परंपरया नष्टेषु ग्रंथसंग्रहेषु का कथा खलु प्राचीनधर्मनिर्णये? इममेव वैदिकधर्मह्रासहेतुं पश्यामः । अथान्यच्चात्र ब्रूमहे–अस्मिञ्जगति सर्वजगन्निर्वाहाय वर्णाश्रमव्यवस्था कृतास्ति । तत्र च ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्राः एते चत्वारो वर्णाः । ब्रह्मचर्य–गार्हस्थ्य–वानप्रस्थ–संन्यासाः एते चत्वार आश्रमाः कल्पिताः । तत्र ब्राह्मणादीनां वर्णानां ब्रह्मचर्याद्या आश्रमधर्माः करणीयतया सम्यगनुशिष्टाः श्रुतिस्मृत्यादीश्वराज्ञारूपधर्मशास्त्रेण । तादृशधर्मपालनं ईश्वरानुज्ञा तन्मनुष्याणां सर्वकर्त्तव्यशिरोधार्यतयाऽत्यन्तादरणीयं खलु ॥ उक्तं च पराशरस्मृतौ–

चतुर्णामपि वर्णानामाचारो धर्मपालनम् ।
आचारहीनदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुखः॥ १॥ ॥इति॥

तत्र चैवं प्रस्तूयते–संप्रति हि प्रायः ब्राह्मणानां अवश्यकर्त्तव्यानि अध्ययनं, अध्यापनं, यजनं, याजनं, दानं, प्रतिग्रहः एतानि षट्कर्माणि यथाशास्त्रं यथेश्वरानुज्ञानं न भवंति । केषुचिन्मध्योत्तरगुर्जरप्रभृतिदेशेषु तु संध्यानामापि क्वचित्क्वचिन्न श्रूयते । का नाम गायत्री! । अस्माकं प्रपितामहाः संध्यामकुर्वंस्ततो वयं ब्राह्मणाः इति ब्रुवते । केवलं चिन्हभूतेन यज्ञोपवीतेनैव षष्ठे कर्मणि प्रतिग्रहे अधिकारिणः परिदृश्यंते । अहह कियानयं धर्मह्रासः ! । येषां गोत्रपुरुषाः वसिष्ठगौतमादयः महर्षयः परावरदृशः धर्मशास्त्राण्यकुर्वन् ते सन्ध्यामपि न जानंति दूरे सकलस्वधर्मानुष्ठानकथाकन्था । किमेतत्कलिकालकौतुकं !!!

पूर्वोक्तमहाराजानां च एतद्ग्रन्थसंग्रहे तन्त्रपुस्तकावचयने च अनुभूतमेवासीत् । यत् एकमपि तन्त्रं समग्रतया कुतश्चन न लब्धम् । किंतु एकत एकमपरतोऽपरमिति हैमनीयपुष्पावचयनवत् संग्रहेऽतिप्रयासोऽभूत् । एवं हि भारतीयदशा संवृत्तास्ति । अस्तु ।

महाराजानां श्रीराजदेवनन्दनसिंहानां एतद्ग्रन्थस्य संग्रहणे यः प्रयासः सच सकललोकानां हितकारी खलु । अतस्तेन प्रयासेन महाराजानां अस्मिन्नार्य-

मण्डले धवलं यशश्चिरकालपर्यन्तं भविष्यति । अनेन प्रयासेन सुखं परमैश्वर्यं चाप्नुवन्तु महाराजा इत्याशास्महे । श्रीमन्महाराजैः अस्य ग्रन्थस्य प्रतितंत्रं पुनर्मुद्रणाद्यधिकारः उदारबुद्धयाऽस्मभ्यं दत्तोऽस्ति । अतस्तेभ्यः श्रीमहाराजेभ्यः संतु सहस्रांता धन्यवादाः ।

अपरं च ग्रंथं (श्रीशाक्तप्रमोदं) दृष्ट्वा सर्वेऽपि भारतीया जना एतदुक्तप्रकारेणेष्टदेवताराधनेन स्वेष्टफलावाप्तिपूर्वकं सकलैहिकामुष्मिकसुखमनुभविष्यन्ति ।

एतद्ग्रन्थस्य शोधकाश्च श्रीरघुराजदुबेजीसमभिधाः महाराजानां गुरुवंश्यास्तेषामपि अस्मिन्सत्कर्मण्यभिरुचिः सर्वतोऽभिनंदनीया ।

अयमेतादृशो ग्रन्थः सकलजगत्प्रसिद्धो भवत्वेतदर्थं पाठकवर्यश्रीकेशवचंद्राभिधानैः-अयं ग्रंथः-मुंबय्यां अस्मत्समीपे मुद्रयित्वा प्रकाशाय प्रेषितः । सर्वतः श्लाघ्यत एव सदुपक्रमः ।

सोऽयं (शाक्तप्रमोदः) अस्माभिः स्वकीये "श्रीवेंङ्कटेश्वरा"ख्ये मुद्रणालये खानदेशीयरावेरग्रामनिवासिपरशुरामभट्टतनयगोविन्दशर्मशास्त्रितः संशोध्य प्रथमं मुद्रयित्वा प्रकाशमानीतः आसीत् । तस्य तानि सर्वाणि पुस्तकानि शक्तिभक्तिमद्भिर्जनैः सर्वतः संगृहीतानि बहुभिश्च भूयोभूय एतत्पुस्तकलाभाय सूचनाऽकारि । अतस्तस्यचेयं द्वितीयाऽऽवृत्तिःसंप्रति विशेषतःपरिष्कृत्य मुद्रयित्वा प्रकाशितास्ति ।

अत्र अक्षरयोजकयोजिताक्षराणां विपर्यासादिजनितानामशुद्धानां मनुष्यनिष्ठनैसर्गिकभ्रमप्रमादयोर्दुःपरिहरत्वात्क्षन्तव्यःस्वल्पापराधः ।

विज्ञापयामश्च सर्वान् शाक्त-शैव-गाणपत्य-सौरवैष्णवान् विद्वज्जनान् अस्य अमूल्यस्य ग्रंथरत्नस्य संग्रहेण कृतार्थयन्तु आत्मनो जन्म विधिवत् स्वेष्टदेवतासमाराधनेनेति ।

इदंच पुस्तकं श्रीमहाराजेभ्यो लब्धंसर्वसत्ताकं अस्माभिः १८६७ तमवार्षिक २५ तम राजनियमानुसारेण राजपट्टारूढीकरणात्पुनर्मुद्रणाद्यधिकारेषु प्रत्येकमेकंत्रतमपि सर्वथा स्वायत्तीकृतोऽस्ति । अतः कैरपि व्यापारिभिः एतत्पुस्तकसंबन्धि किमपि मुद्रणाय नोपयोक्तव्यमिति सूचयामः ।

अमूल्यस्याप्यस्य ग्रंथस्य सर्वसाधारणजनजिघृक्षानुजिघृक्षया मूल्यं अतिस्वल्पमेव केवलं नेयव्ययं (पोष्टखर्च) सहितं (५) पञ्च मुद्रापरिमितं स्थापितमस्ति।

खेमराज श्रीकृष्णदास.

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना

(बंबई.)

श्रीः ।

अथ शाक्तप्रमोदस्थविषयानुक्रमणिकाप्रारम्भः ।



१ अथकालीतन्त्रम् ।

इति कालीतन्त्रं समाप्तम् ॥ १ ॥

२ अथ तारातंत्रम् ।

इति तारातन्त्रं समाप्तम् ॥ २ ॥

१८४ सर्वे विषयाः ।

इति शाक्तप्रमोदस्थविषयानुक्रमणिका.

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-
श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-
संगृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

प्रथमं

कालीतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुवंश-
दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन
मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः

संवत् १९५० शके १८१५

श्रीः।

विक्रयार्थ नूतनपुस्तकोंकी-सूची

नाम.	की.रु.आ.	ट.म.रु.आ.
१ गरुडपुराण भाषा-टीका.........	१-०	०-३
२ महाभाष्य नवाह्निकमात्र......	२-०	०-४
३ वाल्मीकीयरामायण भूषण टीका सह बालकाण्ड छपंके तयार है.		
४ कोकिलामाहात्म्य अधिकआषाढका	०-१२	०-१
५ श्रीगोदास्तोत्रम्	०-२	०-॥
६ द्राविडाम्नायमाहात्म्य...........	०-१	०-॥
७ भक्तिप्रबोध	०-२	०-॥
८ परमेश्वरशतक....	०-६	०-१
९ अनुपानदर्पण (वैद्यक)........	०-१०	०-१
१० भावपंचासिका कविवृंदजीकृत....	०-२	०॥-
११ हिंदी अंग्रेजी शिक्षक प्रायमर....	०-२	०-॥
१२ भक्तमाल हरिभक्तिप्रकाशिका वार्तिक हिंदीभाषामें छपतीहै		
१३ नखशिख शिखनख भगवानका शृंगार चरनसें लगाके शिखातक उत्तम कवितामें....	०-१	०-॥
१४ गुरुपरंपरा श्रीवल्लभसम्प्रदाय०	०-२	०-॥
१५ राधारासविलास अर्थात् (उद्धवगोपीसंवाद)दोहा चौपाईमें	०-३	०-१
१६ वैद्यकल्पद्रुम भाषा टीका.......	५-०	०-१०
१७ गोपालसहस्रनाम अतिउत्तम भाषाटीका समेत	०-८	०-॥
१८ संप्रदायकल्पद्रुमश्रीवल्लभसंप्रदायका	१-४	-०४

नाम.	की.रु.आ.	ट.म.रु.आ.
१९ हारीतसंहिता भा० टी०.......	३—०	०—६
२० जानकीमंगल ...	०—१	०—॥
२१ श्रीकृष्णराधामंगल और हनुमान स्तुती	०—१	०—॥
२२ मदनपालनिघंटभाषाटीका छपताहै.		
२३ भजनावली अति उत्तम...............	०—८	०—१
२४ अष्टादशश्लोकीगीता भाषाटीका	०—१	०—॥
२५ भवानीमानसिक पूजन...............	०—१	०—॥
२६ सप्तश्लोकीगीता तथा चतुःश्लोकीभागवत(भाषाटीका)	०—१	०—॥
२७ चर्पटपञ्जरी भाषाटीका	०—१	०—॥
२८ प्रेमशतक........	०—४	०—॥
२९ सितारचन्द्रिका....	०—६	०—॥
३० कर्मविपाक (भाषाटीका)......	१।—	०—३
३१ वैष्णवधर्मशिक्षा	०—२	०—॥
३२ आळवंदार स्तोत्र (भाषाटीका)	०—४	०—॥
३३ भूतपुरीमाहात्म्य	०—३	०—॥
३४ गीतामाहात्म्य (भाषा) चौपाई,दोहा, सोरठा, छंद इत्यादियोंमें	०—२	०—॥
३५ गोविन्दाष्टक तथा कृष्णाष्टक छन्दबद्ध	०—१	०—॥
३६ पंचामृतकल्याण तथा पंचवान छन्दबद्ध............	०—१	०—॥
३७ श्रीमद्भगवद्गीता श्लोकार्थ दीपिका अति-उत्तम टिप्पणीसमेत	१—४	०—३
३८ जातकालंकार (भाषाटीका)...	०—६	०—१

३९ दो बालाओं और एकक्षत्रीवीरका इतिहास (नाम मुद्राकुलीन) यह छोटासा ग्रंथ ऐसा मनोहर हिंदीभाषामें है कि अवश्यही बांचने योग्य है. कीमत १ रु०.

श्रीः।

४० गोविन्दराजीयभूषणाख्यया तनिश्लोक्याख्यया रामानुजीयाख्यया च व्याख्यया समेतस्य श्रीवाल्मीकिरामायणस्य

प्रसिद्धिपत्रिका।

भो भो विद्यापारावारपारीणा! इदं विदाङ्कुर्वन्त्वत्रभवन्तः—तनिश्लोक्याख्यया भूषणाख्यया रामानुजीयाख्यया च व्याख्यया समेतं श्रीवाल्मीकीयरामायणम् अत्युत्तमतैलङ्गदेशीयपुस्तकमालोच्य पण्डितैः संशोधितं, तच्च सम्प्रति सुव्यक्तैः स्थूलसूक्ष्माक्षरैर्लक्ष्मीवेङ्कटेश्वरमुद्रणयन्त्रे मुद्यते, तस्य च नागेशप्रभृतिविनिर्मिताः सन्ति यद्यपि बह्वचो व्याख्याः, तथापि सहृदयहृदयाह्लादकनानाविधाऽपूर्वार्थान्वेषणे प्रयतमानैरार्यकुलोचितधर्ममर्यादाविचारशीलैर्महाशयैर्निर्विशेषत्वेन सविशेषत्वेन च ब्रह्मस्वरूपप्रतिपादकवेदान्तवाक्यानां समीचीनतर्कसहकृतविषयभेदव्यवस्थापनेन तात्पर्यार्थनिर्णायकतया श्रीवाल्मीक्यभिप्रायानुगारामानुजीयव्याख्यातनिश्लोकीव्याख्यासमेता भूषणाख्यव्याख्याऽवश्यं निरीक्षणीयेति, मन्येऽहं निरीक्षणेनाभिज्ञानामवश्यं जिघृक्षा भवेदिति।

४१ विष्णुसहस्रनाम।

निरुक्ति निर्वचन दो व्याख्याओंसे युक्त भगवद्गुणदर्पणाख्य विष्णुसहस्रनामभाष्यकी और विष्णुसहस्रनाम दीपिकाकी तथा विष्णुसहस्रनाम चन्द्रिकाको जाहिरखबर—

अनुष्टुप्श्लोकात्मक निरुक्तिव्याख्यासमेत और प्रकृतिप्रत्ययको दिखानेवाले पाणिनिसूत्रोंसे गर्भित ऐसी निर्वचननामक द्वितीयव्याख्यासें युक्त भगवद्गुणदर्प-

णनामक विष्णुसहस्रनामभाष्य संपूर्ण छपके तय्यारहै. और उक्तभाष्यके अनुसार विष्णुसहस्रनामका व्युत्पत्तिसहित हिंदीभाषामें दीपिकानामक ग्रंथ (कीमत १ रु०) तथा शाङ्करभाष्यके अनुकूल विष्णुसहस्रनामका व्युत्पत्तिसहित हिंदीभाषामें चन्द्रिकानामक ग्रन्थ (कीमत १२ आ०) सो यह दोनों पुस्तकें अत्यंत सुंदर छोटे बडे अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुतहैं जिन महाशयोंको लेनेकी और देखनेकी इच्छा हो उन्होंनें शीघ्र सूचना करना तब उक्त पुस्तकोंको भेजनेमें उद्यत होवेंगे ।

४२ हितोपदेश (भाषाटीका)

व्रजरत्न-भट्टाचार्यविरचित ।

यह पुस्तक तो सर्वोपरि उत्तमहै और श्रीयुत-पंडित-ज्वालाप्रसादजीनें शुद्धकियाहै. महाशयों! यह पुस्तक अवश्य संग्रहमें रखनेलायक है इसका मूल्यभी ठीक २ रक्खाहै अर्थात् डेड (१॥) रुपयेमें देतेहैं.

प्रसिद्धिपत्रिका ।

४३ न्यायमुक्तावलीयुतो भाषापरिच्छेदः ।

पूर्वम् १९४३ संवत्सरे " श्रीवेङ्कटेश्वर " यन्त्रालये मुद्रणेन प्रसिद्धिं नीतोऽपि परं परिस्खलितविषयपुस्तकप्रतिकृत्यैव शोधित आसीदिति तदेतदादाने विदुषामनुत्साहस्थितिमाकलय्य पुनरधुना " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " यन्त्रागारे अभिनवकृतविद्यतर्कपरिष्कृताशयाचार्यमहावनशास्त्रिसंशोधितो मुद्रित इत्येतददित्साऽस्ति स्याद्वा येषां तैः सूचनीयं यदुद्यतस्स्यां प्रेषणे इति । मूल्य १०आ.

४४ मूलरामायणभूषणटीकाका-(भाषानुवाद)

इसका टीका कुरुक्षेत्रान्तर्गत विहाणीवास्तव्य श्रीयुतआचार्यवासुदेवशास्त्रीजीने कियाहै. और ऐसा सुशोभितकियाहै कि, जिन्होंने अपना तन-मन-धन-

कर अपनी ‘ उदार ’ उज्ज्वल बुद्धिसे कियाहै फिरतो बाँचनाहीचाहिये. देखो! यह पुस्तक ऐसा सुन्दर छपाहै कि, बहुतबढिया कागज, उत्तम श्याही और मोटा अक्षर तो आप इस छापेका जानतेहीहो कि दर्शन करतेही चित्त प्रसन्न होजाय ग्रंथका आशय जाननेपर जो कुछ अद्भुत आनन्द होगा उसमें पाठकोंका हृदयही साक्षी देगा (सबको सुगम पडनेकेलिये इसका मूल्यभी केवल ८ आना रक्खाहै)

४५ मुहूर्तचिन्तामणि–(भाषाटीकासमेत)

सम्पूर्ण ज्योतिषी पंडितोंको तथा ज्योतिष जाननेवालोंको विदित कियाजाताहै कि, मुहूर्तचिन्तामणिकी साधारण भाषाटीका कहीं २ छपीहै परंतु सांप्रतमें अपने “लक्ष्मीवेंकटेश्वर” छापाखानेमें ऐसी अत्युत्तम प्रति छापीगई है कि, जिसमें ज्योतिर्वित् कविवर रामदैवज्ञका गूढाशय एवं स्वल्पाक्षरोंमें बहुर्थता सहसा सर्व साधारणको विदित नहीं होतीथी. वह यथावत् पीयूषधाराके अनुमत तथा अन्य ग्रंथातरीय प्रमाण युक्तियोंसे स्पष्ट करदिया गयाहै ऐसी अत्युत्तम भाषाटीका अन्यत्र कहीं न मिलेगी इस लेखकी सत्यता एकबार देखनेहीसे गुणज्ञलोगोंको प्रत्यक्ष होगी तथा इसमें संपूर्ण (चक्रादि) लगाये गयेहैं जिनके देखनेसे औरभी सुगमता मौहूर्तिकोंको होजातीहै. और महाशयोंके करकमलमें है देखनेहीसे मालूम होगा. लीजिये टपालखर्चासहित डेड (१।।)रु० मात्र मूल्यहै.

४६ भागवतसार (हिन्दीभाषावार्तिक)

यह पुस्तक तो ऐसा उत्तम हुवाहै कि, संपूर्ण भागवतकासार थोरेसेमें ऐसा झलकायाहै कि, बालसे वृद्धपर्यन्त सबोंके समझनेमें शीघ्र आसक्ताहै. देखो! यहपुस्तक सुंदर मनोहर अक्षरोंमें चिकनेकागजपर सर्वोपरि उत्तम छपाहै और इसका मूल्यभी केवल १ रु० रक्खाहै.

४७ तर्कसंग्रहव्याख्यायाः लघुबोधिनी समाख्यायाः प्रसिद्धिपत्रिका ।

भो भो न्यायशास्त्राऽधिजिगांसवो ! विदाङ्कुर्वन्त्वत्रभवन्तः जगत्प्रसिद्धश्रीवृन्दावननिवासिश्रीरङ्गाचार्यस्वामिप्रणीता लघुबोधिनीसमाख्या तर्कसंग्रहसमेता तर्कसंग्रहव्याख्या साम्प्रतं " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " मुद्रणागारे संमुद्य प्रकाशिता साच, न्यायशास्त्रपरिभाषाजिज्ञासूनामतीवोपकारिणी तस्यां च, इतरव्याख्यापेक्षया अधिका उपयुक्ताश्च सर्वेऽपि विषयाः अल्पशोदर्शिताः, तथा च मन्येऽहमेतदध्ययनेन गादाधरी—जागदीशीत्याद्याकरग्रन्थाध्ययने व्यवसायशालिनोऽवश्यं समुत्सहेरन्, येषां महाशयानां जिघृक्षा तैः सूचना कार्येति मे विज्ञप्तिः मूल्य ६ आ०

४८ भक्तमालरामरसिकावली ।

सत्ययुग त्रेता द्वापर कलियुगके हरिचरणानुरागी परमभक्तोंका जीवनचरित्र चौपाई दोहा सोरठा इत्यादिमें लिखाहै इसके रचयिता श्रीमन्महाराज रघुराजसिंहजू देवबहादुर रीवांधिपति हैं इनकी बनाईपुस्तकोंमें यह किताब परम पवित्र और अग्रगण्य गिनीजाती है की० ४ रु०

४९ श्रीमद्भागवतम् ।

(श्रीमद्वीरराघवीयटीकासमन्वितम्)

संप्रति श्रीमद्भागवतं महापुराणं बहुविधटीकासमन्वितं सर्वत्र सुप्रसिद्धं विद्यते तथा-

पि सर्वटीकानां मध्ये श्रीवीरराघवीया टीकाऽत्यन्तं सरला सुबोधा भवति (९०) सहस्रग्रन्थात्मिका सविस्तरा सुप्रसिद्धा श्रीवैष्णवजनादरणीयाऽतिप्रशस्तास्ति। तया वीरराघवीयया टीकया समन्वितमेतत्पुस्तकं सर्वसज्जनविद्वज्जनसंप्रदायिजन-पौराणिकजनानां त्वत्यन्तोपयोगित्वात्—अस्माभिः तैलङ्गद्राविडादिलिपिलिखितपु-स्तकान्युपलभ्य तिरुपतिनगरस्थवेदमार्गप्रतिष्ठापकाचार्योभयवेदान्ताचार्यश्रीमदनन्तपूरुषसिंहासनासीनतिरुपतिश्रीरङ्गाचार्यद्वारा शोधयित्वा स्वकीये "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये स्थूलस्थूलैरतिविशदवर्णविन्यासैरायसाक्षरैः पुष्टघनचिक्कणपत्रेषु मुद्रयितुं समारभ्यते। तत्रच प्रथमं श्रीमद्दशमस्कन्धो मुद्रयितुमुपक्रम्यते।

येषां येषामेतत्समग्रग्रन्थसंग्रहणेच्छास्ति। ते स्वस्वनामग्रामस्थलमत्यभिज्ञ एकं पत्रं प्रेषयन्तु। यथा यथा पुस्तकं मुद्रयिष्यते तथा तथा प्रेषयिष्यामः। प्रतिस्कन्धं मुद्रिते सति तावदेव ग्रन्थं प्रेषयित्वा तावदेव वा मूल्यं तत्तत्समये ग्रहीष्यामः। येषां तु प्रथमम् एतद्ग्रन्थजिघृक्षा स्यात् येच वा प्रतिस्कन्धं संगृह्णीयुः—तेऽतीव स्वल्पमूल्येन स[illegible]क अ। पश्चाद्मूल्यं वर्द्धयिष्यते। अतस्त्वर्यतामेतदलभ्यस्वल्पमूल्य-श्रीवीरराघवीयटीकासमन्वित-श्रीमद्भागवतमहापुराणग्रन्थसंग्रहणेच्छयेति शम्।

५० हारीतसंहिता—(वैद्यकग्रन्थ)

(मूल संस्कृत और भाषाटीकासहित)

समस्त महाशयोंको विदित कराया जाताहै कि,—"हारीतसंहिता" नामक वैद्यक ग्रन्थ सरल हिन्दीभाषानुवाद बनवाकर और शास्त्रियों-द्वारा शुद्ध करवाकर सुन्दर मध्यम अक्षरोंमें छपाकर विक्रयार्थ प्रस्तुत है,—लीजिये यह ग्रन्थ बहुतही उपकारक है और स्वल्पहोकरभी सर्ववैद्योंको सर्वप्रकारके औषधज्ञान तथा रोगियोंकी चिकित्सा करनेमें अप्रतिम सहाय होगा इसमें कुछ संदेह नहींहै इसलिये वैद्य महाशयजी अभी ज्यादा लिखना बाहुल्यमात्रहै, तथापि इस अपूर्व ग्रन्थको अवश्य संग्रहमें रखकर रोग-निवारण एवं धनार्जनपूर्वक निर्मलकीर्तिको प्राप्त करिये इस ग्रन्थका मूल्य के-वल ३ रु. रक्खाहै

५१ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत-

(१) रामायण (सटीक)

पंडित-ज्वालाप्रसादकृतटीका।

लीजिये महाशय कविवरशिरोमणि तुलसीदासजीकी अपूर्व कविताका अक्षरार्थ भाषामृतभी लीजिये सम्पूर्ण क्षेपकों सहित और श्रुतिस्मृतिपुराणोंके अद्भुत दृष्टांतोंसहित (जिसमें सम्पूर्ण शंका समाधानका विवर्ण है) तुलसीदासजीका समग्र जीवनचरित्र, माहात्म्य, रामजन्म, चतुर्दश वर्ष वनोवासका तिथिपत्र, अष्टम रामाश्वमेध, लवकुशकाण्ड, भी अक्षरार्थ सम्मिलितहै और गूढार्थ, अक्षौहिणीकी संख्या, प्रश्नावली, भजनमाला, प्रभाती आदि च मेन्क परम मनोहर फोटूग्राफके विचित्र चित्रभी हैं, सूर्यवंशका वृक्ष और हनोमानजीकी चित्रित प्रतिमाभी है इन सबके अतिरिक्त कठिन शब्दोंका बृहत् कोषभी लगाया गया है ऐसी रामायण आजपर्य्यन्त अन्यत्र कहींनहींछपी देखतेही तन मन प्रसन्नहोताहै मूल्य ८ रु० है जिल्द चित्रित सुनहरी परम मनोहरहै.

२ रामायण बडा।

श्लोकार्थ गूढार्थ छन्दार्थ स्तुत्यर्थ शंकासमाधान और तुलसीदासजीका जीवनचरित्र, रामवनवासतिथिपत्र, रामाश्वमेध, लवकुशकाण्ड, माहात्म्य, बरवारामायणके सहित जिस्में पंचीकरणका बडा नक्शा और रघुनाथपुष्पाञ्जली, रामायणकोष, छत्रबन्धादि, जिस्में ३८०० कठिन २ शब्दोंके अर्थभी लिखेहैं अक्षर अत्यंत मोटा ग्लेजकागजका की० ६ रु० रफ् कागजका की० ४ रु०

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ शाक्तप्रमोदः ।



नत्वा कालीङ्कपाद्रांङ्कलिकलुषहराङ्कोमलाङ्कान्तदेहाङ्कुर्वे शाक्तप्रमोदं सुकृतसुमतिदं शोभनं सज्जनानाम् ॥ शक्तीनां सत्सपर्य्यादिकमिह गदितन्तत्समन्त्रन्दशानाम्पञ्चानान्देवताना-मपि तदखिलकङ्कण्डनन्दुर्म्मतीनाम् ॥ १ ॥

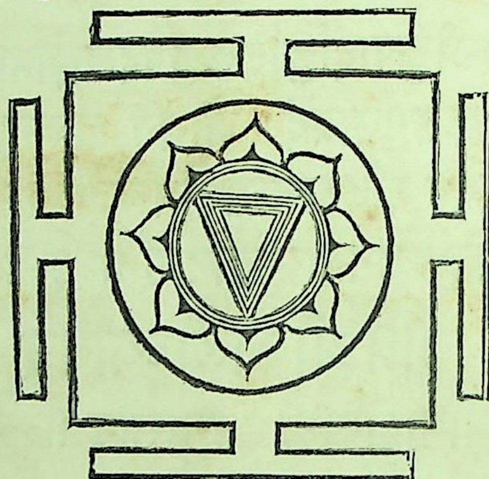
अथ श्रीकालीध्यानम् ।

शवारूढाम्महाभीमाङ्घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम् ॥ चतुर्भुजाङ्खड्गमुण्ड वराभयकरां शिवाम् ॥ १ ॥ मुण्डमालाधरान्देवीं ललज्जिह्वान्दि गम्बराम् ॥ एवं सञ्चिन्तयेत्कालीं श्मशानालयवा सिनीम् ॥ २ ॥



अथ यन्त्रोद्धारः ।

आदौ त्रिकोणमालिख्य त्रिकोणन्तद्वहिर्लिखेत् ॥ ततो वै विलिखेन्मन्त्री त्रिकोणत्रयमुत्तमम् ॥ १ ॥ ततस्त्रिवृत्तमालिख्य लिखेदष्टदलं ततः॥वृत्तं विलिख्य विधिवल्लिखेद्भूपुरमेककम्॥२॥



अथ मन्त्रोद्धारः ।

कालीबीजत्रयम्प्रोक्ता लज्जाबीजद्वयन्ततः ॥ हूँकारौद्वौततःपश्चा द्दक्षिणेकालिकेततः ॥ १ ॥ कालीबीजत्रयन्तस्माल्लज्जाबीजद्वयम्पठेत् ॥ द्वौचस्वाहान्तहूङ्कारौकालीमन्त्रउदाहृतः ॥ २ ॥

अथ मन्त्रः ।

क्रींक्रींक्रींह्रींह्रीं हूँहूँ दक्षिणे कालिके क्रीं ३ ह्रीं २ हूँ२स्वाहा ॥

अथ श्रीदक्षिणकालीसपर्य्यापद्धतिः ।

प्रथमम्पञ्चवर्णरजाश्चित्रं शुद्धं स्थानं गत्वा पूजावेद्या वहिस्स्थित्वा गुरुम्प्रणम्य इष्टदेवताम्प्रणम्य दिक्पालांश्च प्रणम्य आचान्तः कुशहस्तो मौनी पापशमनार्थं श्लोकद्वयम्पठेत् तद्यथा“ ॐ देवि त्वत्प्रकृतश्चित्तम्पापाक्रान्तमभून्मम ॥ तन्निस्सरतु चित्तान्मे पापं हूंफट्चते नमः ॥ १ ॥सूर्य्यस्सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्म्मणो नव साक्षिणः ” इति पठित्वा सम्प्रार्थ्य गृहे प्रविशेत् । मौनी मूलेनाचम्य

"ॐ वज्रोदकेहूंफट्स्वाहा" इतिजलङ्गृहीत्वा "हूंस्वाहा" इतिकरेआदाय" ॐ ह्रींविशुद्धसर्व्वपापानिशमयाशेषविकल्पमपनय हूंफट्स्वाहा" इत्यनेन पादौ प्रक्षाल्य "ॐ ह्रींस्वाहा" इतिपुनराचम्य "ऐंकालिकायैनमः, ऐंकपालिन्यैनमः, ऐंकुल्लायैनमः" इति त्रिराचम्य ततो मूलेन हस्तौ प्रक्षाल्य "ॐकालिकायै नमः। ॐ कपालिन्यैनमः" इतिदशहस्ताङ्गुलीभिरोष्ठौ द्विरुन्मृज्य "ॐकुल्लायैनमः" इतिकरं प्रक्षाल्य मूलेन सङ्कुचिताङ्गुलीभिर्म्मुखतर्ज्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां नासिकां मूलेन अनामिकाङ्गुष्ठाभ्याङ्कर्णमङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यान्नाभिन्तलेनहृदयं सर्व्वाङ्गुलीभिर्मस्तकं भुजौ च स्पृशेत्। ततस्तिलकङ्कुलचन्दनादिना ललाटोदरहृत्कण्ठदक्षपार्श्वांसकण्ठपृष्ठककुदि भुजद्वन्द्वे मूर्द्धनि द्वादशस्वपि स्थानेषुकुर्य्यात्॥ ततो "देव्यस्त्रंविँलिखेद्भाले कालीबीजन्ततो हृदि॥ शक्तिम्मध्यगताङ्कृत्वाकूर्च्चबीजन्न्यसेत्सुधीः" ततःसामान्यार्घ्यस्थापनङ्कुर्य्यात्॥ तद्यथा स्ववामेत्रिकोणवृत्तभूपुरात्मकम्मण्डलंविँलिख्यततः "ॐआधारशक्तिभ्योनमः" इतिपुष्पाक्षतादिभिरभ्यर्च्य "ॐहःद्वारार्घ्यंसाधयामि" इत्युक्त्वा "फट्" इतिप्रक्षालितंशङ्खादिपात्रन्त्रिपादिकोपरिनिधाय "नमः" इति जलेनापूर्य्य "गङ्गेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्वति॥ नर्म्मदेसिन्धुकावेरिजलेऽस्मिन्सन्निधिङ्कुरु" इतिमन्त्रेणाङ्कुशमुद्रयासूर्य्यमण्डलात्तीर्थन्तज्जलेआवाह्य, गन्धादिकम्प्रणवेनानिःक्षिप्य, धेनुमत्स्यमुद्रेदर्शयित्वा, प्रणवेनाष्टशोदशकृत्वोवाभिमन्त्र्यफडिति मन्त्रेणद्वारमभिषेचयेत् "ॐमाणिधरिणि वज्रिणि शिखरिणि सर्व्वलोकवशङ्करि हूंफट्स्वाहा" इतिशिखाम्बध्नीयात्॥ ततो द्वारदेवताः पूजयेत् "गंगणेशायनमः, बंबटुकायमः, क्षंक्षेत्रेशायनमः, यंयोगिनीभ्योनमः" इतिऊर्ध्वे वामेदक्षे अधइतिचतु

दिक्षु पूजयेत् " गंगङ्गायैनमः, यं यमुनायै नमः" इतिशाखा पार्श्वयोः "लंलक्ष्म्यैनमः, संसरस्वत्यैनमः" इतिऊर्ध्वेअधश्चपूजयेत् ॥ " ॐब्रह्माण्याद्यष्टमातृभ्योनमः " इतिदेहल्याम् गन्धपुष्पादिनाभ्यर्च्चयेत्ततोदक्षिणाङ्गंसङ्कोचयन् दक्षचरणमग्रेनिधायवामशाखामस्पृशन् मण्डलाभ्यन्तरे गत्वा " ॐरक्षरक्षहूँफट्स्वाहा" इतिजलेनाभिषिच्य " ॐपवित्रवज्रभूमेहूँफट्स्वाहा" इत्यभिमन्त्र्य " ह्रींआधारशक्तिकमलासनायनमः " इत्यासनमभ्यर्च्चयेत्रिकोणव्विँलिख्य " आसुरेखेवज्ररेखेहूँफट्स्वाहा " इतिमण्डलव्विँलिख्यतत्र " ह्सौं " इतिप्रेतबीजंव्विलिख्य" ह्रीं आधारशक्तिकमलासनायनमः " इत्यासनमभ्यर्च्च्य " ॐअनन्तायनमः, विमलासनायनमः, पद्मासनायनमः " इतिकुशानास्तीर्य्यव्याघ्राजिनङ्कृष्णसारमृगाजिनङ्कम्बलासनव्वाँप्रकल्पयेत् ॥ तदभावेतुपञ्चविंशतिकुशनिर्म्मितविष्टरं शवरूपव्वाँप्रकल्पयेत् " ह्सौंमहाप्रेतपद्मासनायनमः " इत्यभ्यर्च्च्य तत्रासने आत्ममन्त्रेणउपाविश्यवामोरूपरिदक्षिणपादङ्कृत्वाबद्धवीरासनःवामपादोपरिदक्षिणोरुन्धृत्वाविपरीतव्वाँपूर्व्वाभिमुख उत्तराभिमुखोवाआसनन्धृत्वामन्त्रम्पठेत् ॥ आसनमन्त्रस्यमेरुपृष्ठऋषिःसुतलञ्छन्दःकूर्म्मोदेवताआसनपरिग्रहे विनियोगः "ॐपृथ्वित्वयाधृतालोकादेवित्वँव्विष्णुनाधृता ॥ त्वञ्चधारयमान्नित्यम्पवित्रङ्कुरुचासनम् " इति " ॐ वास्तुपुरुषायनमः, ॐब्रह्मणेनमः " इतिनैर्ऋत्येसम्पूज्य " ॐ धर्म्मायनमः, ॐ ज्ञानायनमः, ॐ वैराग्यायनमः, ॐ ऐश्वर्य्यायनमः " इतिदिक्षुसम्पूज्य" ॐ अधर्म्मायनमः, ॐ अवैराग्यायनमः, ॐ अनैश्वर्य्यायनमः " इतिविदिक्षुसम्पूजयेत् ॥ " ॐहूँफट्स्वाहा " इतिमन्त्रेण " ॐह्रींस्वाहा" इतिमन्त्रेणवाकायवाक्चित्तशोधनङ्कृत्वा

"रक्षरक्षहूँफट्स्वाहा" इत्यात्मानमभिरक्षयेत् "ॐशताभिषेके शताभिषेकेपदेहूँफट्स्वाहा;ॐपुष्पकेतुराजार्हत् पुष्पेपुष्पेमहापुष्पेसुपुष्पेपुष्पसम्भवे। पुष्पचयावकीर्ण्णेहूँफट्स्वाहा" इतिपुष्पमभिमन्त्रयेत् अन्यानिपूजावस्तूनिसर्व्वाणिसामान्यार्घ्योदकेनाभिषिच्यधेनुमुद्रामत्स्यमुद्रे दर्शयित्वा पुष्पाणिशुद्धानि विभावयेत् ॥ वमितिजलधाराम्प्रक्षिप्य, वह्निबीजेनवह्निप्राकारं विचिन्त्य "हूँफट्" इतिमन्त्रेणचतुर्द्दिक्षुक्रोधदृष्ट्यानिरीक्ष्यसर्व्वान् विघ्नानुत्सारयेत् तद्यथा "सर्व्वविघ्नानुत्सारयहूँफट्स्वाहा" इतिमन्त्रेण ऊर्ध्वमवलोक्यदिव्यांश्चतुर्द्दिक्षुजलक्षेपेणान्तरीक्षगान् वामपार्ष्णिघातत्रयेणभौमान् विघ्नानुत्सार्य्य लाजचन्दनसिद्धार्थतिलदधिदूर्व्वाक्षतानामन्यतममादाय "ॐअपसर्प्पन्तुते भूता येभूताभूमिसंस्थिताः ॥ येचात्रविघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया" इतिपठंश्चतुर्द्दिक्षुक्षिपेत् । ततोवामे "ॐगुरुभ्योनमः, ॐपरमगुरुभ्योनमः, ॐपरात्परगुरुभ्योनमः, ॐपरमेष्ठिगुरुभ्योनमः ॥" दक्षिणे "ॐगणेशायनमः" पुरतः "ॐदक्षिणकालिकायैनमः" इतिप्रणमेत् ॥ततःकरशुद्धिङ्कुर्य्यात्॥तद्यथा"हूँ"इतिमन्त्रेणचन्दनाक्तानिकुसुमान्यङ्गुल्यग्रेणादाय "ह्रौं" इतिमन्त्रेणकराभ्याम्मर्द्दयित्वा"क्लीं"इतिबीजेन दक्षहस्तेनसम्मृज्य "ॐतत्सत्" इतिमन्त्रेणवामहस्तेनाघ्राय "ह्रौं"इतिमन्त्रेणऐशान्यान्दिशिपुष्पम्परित्यजेत् "ॐतेसर्व्वेविलयय्यान्तुयेमांहिंसन्तिहिंसकाः॥ मृत्युरोगभयक्रोधाःपतन्तुरिपुमस्तके"इतिमन्त्रेणवापरित्यजेत् । परित्यागश्चनाराचमुद्रया ॥

अथ भूतशुद्धिः ।

शिरसि भैरवायऋषयेनमः। मुखे उष्णिक्छन्दसेनमः। हृदये

ॐ दक्षिणकालिकायैनमः। गुह्ये क्रींबीजायनमः। पादयोः हूँ शक्तयेनमः। सर्व्वाङ्गे क्रींकीलकायनमः॥

अथ षडङ्गन्यासः।

'क्रांहृदयायनमः' अङ्गुलीभिस्तर्ज्जनीमध्यमानामाभिःप्रसारिताभिर्हृदयंस्पृशेत् ॥ 'क्रींशिरसेस्वाहा' इतितर्ज्जनीमध्यमाभ्यां शिरसिस्पृशेत् ॥ 'क्रूंशिखायैवषट्' इतिबद्धमुष्टिना अङ्गुष्ठेनाशिखांस्पृशेत् ॥ 'क्रैंकवचायहुम्' इतिमन्त्रेणव्यस्तहस्ताभ्यांसर्व्वाङ्गे ॥ 'क्रौंनेत्रत्रयायवौषट्' इतितर्ज्जन्याअनामया नेत्रे, मध्यमयाभ्रूमध्यमेवन्नेत्रत्रयंस्पृशेत् ॥ 'क्रः अस्त्रायफट्' इतिछोटिकयादिग्बन्धनङ्कुर्य्यात् ॥ एवङ्करन्यासः 'क्रांअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः, क्रींतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा, क्रूंमध्यमाभ्यांवँषट्, क्रैंअनामिकाभ्यां हूम् क्रौंकनिष्ठाभ्यांवौँषट् क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यांफट्, एवङ्करन्यासंविँधाय दशधासप्तधा पञ्चधावा मूलेन व्यापकन्यासङ्कुर्य्यात्। ततःपूर्व्वोक्तक्रमेणप्राणायामत्रयंविँदध्यात्॥ तद्यथादक्षिणहस्ताङ्गुष्ठेनदक्षनासापुटन्निरुध्य वामनासापुटेनमूलंषोडशवारञ्जपन् शनैःशनैःप्राणाख्यवायुमाकृष्यशिरसिसहस्त्रारेधारयेदिति पूरकः। दक्षहस्तानामिकातर्ज्जन्यङ्गुष्ठैः नासापुटद्वयन्निरुध्य मूलञ्चतुःषष्टिवारञ्जपन्कुम्भयेत्। पुनर्दक्षनासापुटमङ्गुष्ठनिरोधनन्त्यक्त्वामूलन्द्वात्रिंशद्वारञ्जपञ्छनैःशनैस्तद्वायुंरेचयेत् इतिप्राणायामत्रयम्॥यदिसंविँच्छोधनमिच्छेत्तदात्रैवकर्तव्यम्।तद्विधिस्तु "ॐसिद्धाढ्यांशिवगेहिनीङ्करलसत्पाशाङ्कुशाम्भैरवीम्भक्ताभीष्टवरप्रदांसुकुशलांसंसारबन्धच्छिदाम् ॥ पीयूषाम्बुधिमन्थनोद्भवरसांसँविद्विलासाम्पराव्वींराराधितपादुकांसुविजयान्ध्यायेज्जगन्मोहिनीम्" इतिध्यात्वा "ॐसँविदेब्रह्मसम्भू

तेब्रह्मपुत्रिसदानघे ॥ भैरवानन्दतृप्त्यर्थं पवित्राभवसर्व्वदा ” ॐब्राह्मण्यैनमः स्वाहा “ ॐसिद्धमूलक्रियेदेवि हीनबोधप्रबोधिनि ॥ राजप्रजावशङ्करिशत्रुकण्ठनिषूदिनि॥” ऐंक्षत्रियायैनमः स्वाहा“ ॐअज्ञानेन्धनदीप्ताग्निज्वालाग्निज्ञानरूपिणि ॥ आनन्दस्यागमप्रीतिंसम्यग्ज्ञानम्प्रयच्छमे ॥”ह्रींवैश्यायैनमःस्वाहा“ॐ नमस्यामिनमस्यामियोगमार्ग्गप्रदर्शिनि । त्रैलोक्याविजयेमातःसमाधिफलदाभव” क्लींशूद्रायैनमः स्वाहा इत्येतैर्मन्त्रैस्संशोध्य ततः‘ॐअमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षय आकर्षय सिद्धिन्देहिसर्व्वम्मेवशमानयस्वाहा’इतिमन्त्रेणाभिमन्त्रयेत् ॥ ततःॐह्रींलह्रींलूंअःअंडंऐंमहाघोरेशायनमः इत्यघोरमन्त्रेणचाभिमन्त्र्यमूलमन्त्रंसप्तवारञ्जप्त्वाश्रीष्टदेवीमावाह्यधेनुमुद्रायोँयोनिमुद्राञ्चप्रदर्श्यछोटिकाभिर्दिग्बन्धनन्तालत्रयञ्चकृत्वातत्रश्रीष्टदेवीम्मानसोपचारैःसम्पूज्य ‘ऐंगुँरुपादुकाभ्योनमः’ इतिमन्त्रेणब्रह्मरन्ध्रेश्रीगुरुन्त्रिधातर्प्पयेत् मूलेनहृत्कमलेश्रीष्टदेवताम्पञ्चधातर्प्पयेत् । ततःस्वीकारः‘ऐंआत्मतत्त्वेनआत्मतत्त्वंशोधयामिस्वाहा, ऐंविद्यातत्त्वेनविद्यातत्त्वंशोधयामिस्वाहा, ऐंशिवतत्त्वेनशिवतत्त्वंशोधयामिस्वाहा, मूलमुच्चार्य्य ‘सर्व्वतत्त्वेनसर्व्वतत्त्वंशोधयामिस्वाहा, ‘ऐंवदवदवाग्वादिनिममजिह्वाग्रेस्थिराभवसर्व्वसत्ववशङ्करिस्वाहा’ इतिमुखेनजाठराग्नौजुहुयात् मूलमन्त्रेणसर्व्वम्पिबेत्ततःस्तुवीत “ सँव्विद्देविगरीयसीगुणमयीवैगुण्यविध्वंसिनीमायामोहमदान्धकारशमनीतापत्रयोन्मूलिनी ॥ वाग्देवीवदनाम्बुजैकरसिकासम्बोधिनीदीपिकाब्रह्मज्ञानाविवेकासिद्धविजयीविज्ञानमूर्त्त्यैनमः ॥ १ ॥ सँव्विदासवयोर्म्मध्ये सँव्विदेवगरीयसी ॥ भयनाशायनिर्ग्गन्धाविख्यातामोदकारिणी ॥ ॥ २ ॥ ” इतिस्तुत्वाश्रीगुरुंश्रीष्टदेवताञ्चप्रणम्यऋष्यादिन्या

सं, षडङ्गन्यासं, करन्यासञ्चकुर्य्यात् । तद्यथा ' शिरसिभैरवा यऋषयेनमः, मुखेउष्णिकछन्दसेनमः, हृदये ॐदक्षिणाकालि कायैनमः, गुह्येक्रींबीजायनमः, पादयोः हूँशक्तयेनमः सर्व्वाङ्गे क्रींकीलकायनमः '॥ अथषडङ्गन्यासः ॥ क्रांहृदयायनमः, क्रीं शिरसेस्वाहा,क्रूंशिखायैवषट्, क्रैंकवचायहुम्, क्रौंनेत्रत्रयायवौष ट्,क्रःअस्त्रायफट् ॥ एवंकरन्यासः ॥ क्रांअङ्गुष्ठाभ्यांनमः,क्रींतर्ज्ज नीभ्यांस्वाहा, क्रूंमध्यमाभ्यांवषट्, क्रैंअनामिकाभ्यांहूम्, क्रौंक निष्ठाभ्यांवौषट्,क्रःकरतलकरपृष्ठाभ्यांफट्॥एवंकरन्यासँविधाय भूतशुद्धिङ्कुर्य्यात् ॥ अङ्केकरावुत्तानीकृत्यनिश्चलचित्तः' सोह म् ' इतिमन्त्रेणप्रबोधिताङ्कुण्डलिनीम्मूलाधारात् सुषुम्नावर्तम नाःस्वाधिष्ठाने मणिपूरेऽनाहतेक्रमेणानीय तत्र स्थितञ्जीवम्प्र दीपकलिकाकारँविचिन्त्यतन्मुखे निक्षिप्यततोविशुद्धाख्याज्ञा चक्रेआनीयततःशिरोवस्थिताधोमुखसहस्रारचक्रेहिमनिभसर्व्व वर्णविभूषिताकखादित्रिरेखासुआलक्षत्रयविभूषितसहस्रदलयुक्त म्पद्मम्, तत्रगुरुं तस्मिन्समानीयतत्कर्णिकास्थपराशिवे " हंसः" इतिमन्त्रेणसय्यँयोजयेत् ॥ अथपादतो जानुपर्यन्त ञ्चतुष्कोणंसुवर्णाभं ' लम् ' इतिबीजेन युक्तं सवज्रकम्पृथ्वी मण्डलन्तत्रगमनसहितम्पादेन्द्रियङ्गन्धसहितङ्घ्राणेन्द्रियन्निवृत्ति कलायुक्तम्ब्रह्माणं, समानवायुञ्चविभावयेत्। ततोजानुतोनाभिप र्य्यन्तमर्द्धचन्द्राकारं श्वेताभं'वम्'इतिबीजेनयुक्तम्पद्मद्वयलाञ्छि तञ्जलमण्डलन्तत्रच ग्रहणक्रियासहितम्पाणीन्द्रियंरसेनस हजिह्वेन्द्रियम्प्रतिष्ठाकलासहितं श्रीविष्णुमुदानवायुञ्चविभावये त् ॥ ततोनाभितोहृदयपर्य्यन्तन्त्रिकोणंरक्तं ' रम्'इति बीजे नयुक्तंस्वस्तिकान्वितन्तेजोमण्डलन्तत्रच विसर्गक्रियासहित म्पाय्विन्द्रियंरूपेणचक्षुरिन्द्रियंव्विद्याकलासहितंशिवँव्यानवा

युञ्चविभावयेत् ॥३॥ततोहृदयाद्भ्रूमध्यपर्य्यन्तव्वँर्तुलन्धूम्रवर्णं 'यम्'इतिबीजेनयुक्तं षड्बिन्दुलाञ्छितव्वाँयुमण्डलन्तत्रानन्द क्रियासहितोपस्थेन्द्रियं स्पर्शसहितन्त्वगिन्द्रियम् ॥ शान्तिकला सहितमीशानमपानवायुञ्चविभावयेत् ॥ ततोभ्रूमध्याद्ब्रह्मर न्ध्रपर्य्यन्तव्वृँत्तंस्वच्छं 'हम्' इतिबीजेनयुक्तन्नभोमण्डलन्तत्र वचनक्रियासहितव्वाँगिन्द्रियंशब्दसहितं श्रोत्रेन्द्रियं, शान्त्य तीताख्यकलासहितं सदाशिवम्प्राणवायुञ्च ध्यायेत् ॥ ततःस हस्रारे शून्येसर्व्वचैतन्यमये परब्रह्म ध्यायेत् ॥ ततः सपरिकर म्पृथ्वीमण्डलञ्जलमण्डले, तच्चवह्निमण्डले, तच्चवायुमण्डले तच्चाकाशमण्डले, तच्चाहङ्कारे, तम्महत्तत्त्वे, तच्चप्रकृतौ, ता ञ्चब्रह्मणि लीनाँव्विभावयेत् ॥ ततःसर्वंशून्यंव्विचिन्तयेत् ॥ ततोदक्षिणकुक्षौकृष्णवर्णमङ्गुष्ठप्रमाणम्ब्रह्महत्याशिरस्कंस्वर्ण स्तेयभुजंसुरापानहृदयङ्गुरुतलपकटियुतन्तत्संसर्गपदद्वन्द्वमुप पातकरोमकञ्चर्म्मधरमधोमुखम्पापपुरुषाँव्विचिन्त्यतत्सहितंश रीरम्पूरकविधिनादशकृत्वोजप्तेन "यम्" इतिबीजेन नभो ध्यातेनसंशोष्यकुम्भकविधिनाचतुःषष्टिकृत्वोजप्तेन "रम्" इ तिबीजेनवन्हिमण्डलेमेढ्रमूलेवाध्यातेन, रक्तवर्णाम्मायान्नाभौध्या त्वातदुद्भूताग्निनासन्दह्यरेचकविधिनाद्वात्रिंशत्कृत्वोजप्तेन 'यम्' इतिबीजेनपापपुरुषोद्भवम्भस्मकालीबीजंहृदिपीताभन्ध्यात्वात दुद्भूतेनवायुनाप्रोत्सारयेत्॥ततः पूरकविधिनाषोडशकृत्वोजप्तेन 'वम्' इतिवरुणबीजेनहृदिस्थेनघण्टिकायान्ध्यातेनवातद्भस्म ललाटेतुषाराभङ्कूर्च्चबीजन्ध्यात्वातदुद्भूतेनामृतेनाप्लाव्यकुम्भक विधिनाचतुःषष्टिजप्तेन 'लम्' इतिबीजेनपृथ्वीमण्डलेध्यातेन तद्भस्मघनीकृत्यरेचकविधिनाद्वात्रिंशत्कृत्वोजप्तेन 'हम्' इतिबीजेन नभोमण्डलेस्थितेनाङ्गानिरेचयित्वा पापपुण्यनि

म्मुक्तंशरीरंशाम्भवन्ध्यात्वाचिन्मयाङ्कूतानिउत्पादयेत् तद्यथा 'सोहं,हंसः'इतिवामन्त्रेणप्रकृतिश्चिन्मयादुत्पाद्य प्रकृतेर्म्महत्तत्व म्महत्तत्वादहङ्कारमहङ्काराद्नभो, नभसोवायुं, वायोरग्निं, वन्हे रपस्ततः पृथ्वीमुत्पादयेत् तेनैवमन्त्रेणकुण्डलिनीश्चैतन्यमयी श्चन्द्रमण्डलान्तर्गतामृतम्पाययित्वाषट्सुचक्रेषुक्रमशःस्वच रणयुगलान्तर्ग्गतामृतवृष्ट्यासिञ्चन्तीन्तेष्वानीयजीवन्तयाविय़ो ज्यहृदयेसंस्थाप्यताम्मूलाधारे स्वयम्भूलिङ्गेस्थापयेत् इत्यात्मा नन्देवतामयन्ध्यायेत् ॥ इतिभूतशुद्धिः ॥ ततःप्राणमन्त्रेणजीव स्थापनङ्कुर्य्यात् ॥ तत्रक्रमः ॐअस्यप्राणस्थापनमन्त्रस्यब्र ह्माविष्णुमहेश्वराऋषय ऋग्यजुस्सामानिछन्दांसि चैतन्यरूपा प्राणशक्तिर्देवता प्राणस्थापनेविनियोगः ॥ शिरसि ब्रह्माविष्णुम हेश्वरेभ्यऋषिभ्योनमः, मुखेऋग्यजुस्सामभ्यश्छन्दोभ्योन मः, हृदयेप्राणशक्त्यैदेवतायैनमः, गुह्येआंबीजायनमः, पादयोः ह्रींशक्तयेनमः, सर्व्वाङ्गेक्रौंकीलकायनमः, इतिविन्यस्यषडङ्गानि विन्यसेत् ॥ ङंकंखंगंघंआकाशवायुवन्हिजलपृथिव्यात्मनेहृद यायनमः । ञंचंछंजंझंशब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मनेशिरसेस्वा हा । णंटंठंडंढंश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मनेशिखायैवषट् । नंतं थंदंधंवाक्पाणिपादपायूपस्थात्मनेकवचायहूँ॥मंपंफंबंभंवक्तव्या दानगमनविसर्ग्गानन्दात्मने नेत्रत्रयायवौषट् । शंयंरंवंलंहंषंक्षं सलंमनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अस्त्रायफट् ॥ एवङ्करन्यासः सोपियथा । नाभेरारभ्यपादान्तम् आमितिन्यसेत्।ङंकंखंघंगंआ काशवायुवन्हिजलपृथिव्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः, ञंचंछंझंजंश ब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मनेतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा,णंटंठढंडंश्रोत्रत्वक्च क्षुर्जिह्वाघ्राणात्मनेमध्यमाभ्यांवौषट्, नंतंथंधंदंवाक्पाणिपादपा यूपस्थात्मनेअनामिकाभ्यांहूम्,मंपंफंभंबंवक्तव्यादानगमनविस

र्गानन्दात्मनेकनिष्ठिकाभ्यांवौषट्,शंयंरंवंलंहंषंक्षंसंलंमनोबुद्धच हङ्कारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ततोनाभितोहृदयप र्य्यन्तंह्रींमितिहृदयान्मस्तकान्तङ्क्रौंमितिविन्यसेत्,यन्त्वगात्मने नम इतिहृदि, रंअसृगात्मनेनम इतिदक्षिणांसे, लंमांसात्म नेनम इतिककुदि, वंमेदआत्मनेनम इतिवामस्कन्धे, शंअस्थ्या त्मनेनम इतिहृदयाद्दक्षिणभुजाग्रान्तं, षंमज्जात्मनेनम इतिहृ दयाद्वामभुजाग्रान्तं, संशुक्रात्मनेनम इतिहृदयाद्दक्षिणपादाग्रा न्तंहौंओजआत्मनेनम इतिहृदयाद्वामपादाग्रान्तं, हंप्राणात्म नेनम इतिहृदयान्नाभ्यन्तं, संजीवात्मनेनम इतिहृदयान्मस्त कान्तन्प्राणमन्त्रेण सप्तधापञ्चधावाव्यापकन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ ततो ध्यायेत् ॥ यथा "रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थापाशाङ्कुशेष्वासश रासिबाणान् ॥ शूलङ्कपालन्दधतीङ्कराब्जैरक्तान्त्रिनेत्राम्प्रणमामि देवीम्" ततोवक्ष्यमाणलेलिहानमुद्रयाहृदयंस्पृशन्नेकादशवारप्रा णमन्त्रञ्जपेत् ॥ मन्त्रश्चआंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहोंओंक्षंसंहंसःह्रींओं हंसःश्रीदक्षिणकालिकायाः (मम) प्राणाइहप्राणाः, आंह्रींक्रोंयं रंलंवंशंषंसंहोंओंक्षंसंहंसः ह्रींओंहंसःश्रीदक्षिणकालिकाया जीव इहस्थितः, आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहोंओंक्षंसंहंसः श्रीदक्षिणकालि कायाः सर्व्वेन्द्रियाणिइहस्थितानिआंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहोंओंक्षं संहंसः ह्रींओंहंसः श्रीदक्षिणकालिकायावाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रो त्रघ्राणप्राणाइहागत्यसुखञ्चिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा, ओंक्षंसंहंसः ह्रींओं आंह्रींक्रोंश्रीदक्षिणकालिकायाःप्राणाइहप्राणाः, आंह्रींक्रोंश्रीदक्षि णकालिकाया जीवइहास्थितः, आँह्रींक्रोंश्रीदक्षिणकालिकायाः सर्व्वेन्द्रियाणि, आँह्रींक्रोंश्रीदक्षिणकालिकायाः वाङ्मनस्त्व क्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्यसुखञ्चिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ततोदे वतारूपमात्मानन्ध्यात्वा प्राणायामऋष्यादिन्यासषडंगन्यासक

रन्यासान्विधाय मातृकान्यासमाचरेत् ॥ तत्रॐअस्य मातृकामन्त्रस्यब्रह्माऋषिर्गायत्रीछन्दो, मातृकासरस्वतीदेवता, हलोबीजानि, स्वराः शक्तयस्तदुभयङ्कीलकं अभीष्टसिद्धयर्थेन्यासेविनियोगः ॥ प्राणायामोयथा इडयाअइउऋऌएऐओऔएभिः स्वरैः पूरयेत्, कुचुटुतुपुइतिवर्णपञ्चकेनकुम्भयेत् यरलवशषसहएभिरष्टभिर्व्वर्णैरेचयेत् ॥ ऋष्यादिन्यासोयथा शिरसिब्रह्मणेऋषयेनमः, मुखेगायत्रीछन्दसेनमःहृदिमातृकासरस्वत्यैनमः, लिङ्गेहल्भ्योबीजेभ्योनमः, पादयोःस्वरेभ्यःशक्तिभ्योनमः सर्वाङ्गेतदुभयकीलकायनमः ॥ अथषडङ्गन्यासोयथा ॥ अंकंखंगंघंङं आँहृदयायनमः, इंचंछंजंझंञंईशिरसेस्वाहा, उंटंठंडंढंणं ऊंशिखायैवषट्, एंतंथंदंधंनंऐंकवचायहूम् ओंपंफंबंभंमंऔं नेत्रत्रयायवौषट्, अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षं अः अस्त्रायफट् ॥ एवङ्करन्यासोयथा ॥ अंकंखंगंघंङं आँअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः, इंचंछंजंझंञंईतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा, उंटंठंडंढंणंऊंमध्यमाभ्यांवषट्, एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यांहूम्, ओंपंफंबंभंमं औंकनिष्ठिकाभ्यां वौषट् अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअःकरतलकरपृष्ठाभ्यांफट् ॥ अथध्यानम् “ पञ्चाशल्लिपिभिर्व्विभक्तसुखदोःपन्मध्यवक्षःस्थलाम्भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ॥ मुद्रामक्षगुणंसुधाढ्यकलशं व्याख्याञ्चहस्ताम्बुजैर्बिभ्राणाँव्विशदप्रभान्त्रिनयनाव्वाँग्देवतामाश्रये ” अथान्तर्म्मातृकान्यासः॥ अंइंउंऋंऌंएंऐंओंऔं नमइतिधूम्राभेषोडशदलेकण्ठेन्यसेत्, कंखंगंघंङंचंछंजंझंञंटंठंनमइतिद्वादशदलेप्रवालनिभेहृदये, डंढंणंतंथंदंधंनंपंफंनमइतिनीलजीमूतसन्निभेदशदलेनाभेरुपरिमणिपूरे, बंभंमंयंरंलंनमइतिविद्युन्निभेषड्दलेनाभेरधःस्वाधिष्ठाने, वंशंषंसंनमइतिसुवर्णाभेचतुर्दलेमूलाधारे, हंक्षंनमइतिद्विदलेचन्द्राभे

भ्रूमध्ये आज्ञाचक्रे न्यसेत् "सहस्रारेहिमानिभेसर्व्ववर्णविभूषिते ॥ अकखादित्रिरेखासुआलक्षत्रयभूषिते ॥" परबिन्दुभ्योनमइतिन्यसेत् ॥मूलादिब्रह्मरध्रान्तम्बिन्दुञ्चिदात्मकन्ध्यात्वातत्स्रुतसुधासारैर्म्मातृकान्तर्प्पयेत् ॥ ललाटेअंनमः, मुखवृत्ते आंनमः, दक्षनेत्रेइंनमः, वामनेत्रेईंनमः, दक्षकर्णेउंनमः, वामकर्णे ऊंनमः, दक्षनासायांऋंनमः, वामनासायाम् ॠंनमः, दक्षगण्डेलृंनम :, वामगण्डेलॄंनमः, ऊर्ध्वौष्ठे एंनमः, अधरोष्ठे ऐंनमः, ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ओंनमः, अधोदन्तपङ्क्तौ औंनमः, शिरसि अंनमः, मुखे अःनमः, ॥ वीरचूडामणौतु जिह्वाग्रे अंनमः, कण्ठदेशे अः नमः ॥ दक्षिणबाहुमूलेकंनमः, कूर्प्परे खंनमः, मणिबन्धे गंनमः, अंगुलीमूले घंनमः, अङ्गुल्यग्रे ङंनमः वामबाहुमूले चंनमः, कूर्प्परेछंनमः, मणिबन्धेजंनमः, अङ्गुलीमूले झंनमः, अङ्गुल्यग्रेञंनमः, दक्षिणोरुमूले टंनमः, जानुनिठंनमः, गुल्फे डंनमः, अङ्गुलीमूलेढंनमः, अङ्गुल्यग्रे णंनमः, वामोरुमूलेतंनमः, जानुनिथंनमः गुल्फेदंनमः, अङ्गुलीमूलेधंनमः, अङ्गुल्यग्रेनंनमः, दक्षपार्श्वेपंनमः, वामपार्श्वेफंनमः, पृष्ठेबंनमः,नाभौ भंनमः उदरेमंनमः, हृदयेयंत्वगात्मनेनमः, दक्षांसेरंअसृगात्मनेनमः, ककुदिलंमांसात्मनेनमः, वामांसेवंमेदआत्मनेनमः, हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तंशंअस्थ्यात्मनेनमः, हृदयाद्वामभुजाग्रान्तंषंमज्जात्मनेनमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तंसंशुक्रात्मनेनमः, हृदादिवामपादाग्रान्तंहंआत्मनेनमः, हृदयान्मस्तकान्तंलंपरमात्मनेनमः, इतिबहिर्मातृकान्यासः; अथसृष्टिक्रमः ॥ तत्रतुविसर्गान्वितः प्रणवपुटितोवामायालक्ष्मीबीजपूर्व्वोवावाग्भवाद्योवान्यस्तव्यः तत्रवाग्भवाद्योयथा जिह्वाग्रेऐंअंनमः,कण्ठदेशतःऐंअःनमः, दक्षिणबाहुमूलेऐंकंनमः, कूर्प्परेऐंखंनमः, मणिबन्धेऐंगंनमः अङ्गुलीमूलेऐंघंनमः, अङ्गुल्यग्रेऐंङंनमः; वामबाहुमूलेऐंचंनमः, कूर्प्प

रेऐंछंनमः मणिबन्धेऐंजंनमः, अङ्गुलीमूलेऐंझंनमः, अङ्गुल्यग्रे ऐंञंनमः, दक्षिणोरुमूलेऐंटंनमः, जानुनिऐंठंनमः गुल्फेऐंडंनमः, अङ्गुलीमूलेऐंढंनमः, अङ्गुल्यग्रेऐंणंनमः, वामोरुमूलेऐंतंनमः, जानुनिऐंथंनमः, गुल्फेऐंदंनमः, अङ्गुलीमूलेऐंधंनमः, अङ्गुल्य ग्रेऐंनंनमः, दक्षपार्श्वेऐंपंनमः, वामपार्श्वेऐंफंनमः , पृष्ठेऐंबंनमः, नाभौऐंभंनमः, उदरेऐंमंनमः, हृदयेऐंयंत्वगात्मनेनमः, दक्षां सेऐंरंअसृगात्मनेनमः, ककुदिऐंलंमांसात्मनेनमः, वामांसेऐंवं मेदआत्मनेनमः, हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम् ऐंशंअस्थ्यात्मने नमः, हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम् ऐंषंमज्जात्मनेनमः, हृदया द्दक्षपादाग्रान्तम् ऐंसंशुक्रात्मनेनमः, हृदादिवामपादाग्रान्तम् ऐंहंआत्मनेनमः, हृदयान्मस्तकान्तम् ऐंलंपरमात्मनेनमः ॥

अथस्थितिक्रमः ।

तत्र प्रथमन्ध्यानय्यँथा " सिन्दूरकान्तिमसिताभरणान्त्रिने त्राँव्विद्याक्षसूत्रमृगपोतवरान्दधानाम् ॥ पार्श्वस्थिताम्भगवती मपिकाञ्चनाङ्गीन्ध्यायेत्कराब्जधृतपुस्तकवर्णमालाम् "॥एवंध्या त्वान्यसेत् ॥ तद्यथा—ललाटेटंठंडंनमः, मुखवृत्ते टंठंडंनमः, दक्ष नेत्रे टंठंडंनमः, वामनेत्रे टंठंडंनमः, दक्षकर्णे टंठंडंनमः, वाम कर्णे टंठंडंनमः, दक्षनासायाम् टंठंडंनमः, वामनासायाम् टंठं डंनमः, दक्षगण्डे टंठंडंनमः, वामगण्डे टंठंडंनमः, ऊर्द्ध्वोष्ठे टंठंडं नमः, अधरोष्ठे टंठंडंनमः, ऊर्द्ध्वदन्तपङ्क्तौ टंठंडंनमः अधोदन्त पङ्क्तौ टंठंडंनमः, शिरसि टंठंडंनमः, मुखे टंठंडंनमः, जिह्वाग्रे टंठंडंनमः, कण्ठदेशे टंठंडंनमः, दक्षिणबाहुमूले टंठंडंनमः, कूर्प्परे टंठंडंनमः, मणिबन्धे टंठंडंनमः, अङ्गुलीमूले टंठंडंनमः, अङ्गुल्यग्रेटंठंडंनमः, वामबाहुमूले टंठंडंनमः, कूर्प्परेटंठंडंनमः,

मणिबन्धे टंठंडंनमः, अङ्गुलीमूले टंठंडंनमः, दक्षिणोरुमूले टंठं डंनमः, जानुनि टंठंडंनमः गुल्फे टंठंडंनमः, अङ्गुलीमूले टंठं डंनमः, अङ्गुल्यग्रे टंठंडंनमः, वामोरुमूले टंठंडंनमः, जानु-नि टंठंडंनमः गुल्फे टंठंडंनमः, अङ्गुलीमूले टंठंडंनमः, अङ्गु ल्यग्रे टंठंडंनमः, दक्षपार्श्वे टंठंडंनमः, वामपार्श्वे टंठंडंनमः, पृष्ठे टंठंडंनमः, उदरे टंठंडंनमः, हृदये टंठंडंनमः दक्षांसे टंठं डंनमः ककुदि टंठंडंनमः वामांसे टंठंडंनमः हृदयाद्दक्षभुज ग्रान्तम् टंठंडंनमः; हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम् टंठंडंनमः हृदयाद्वाम भुजाग्रान्तम् टंठंडंनमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम् टंठंडंनमः हृद याद्वामपादान्तम् टंठंडंनमः, हृदयान्मस्तकान्तम् टंठंडंनमः ॥

इतिस्थितिक्रमः ।

तत्रध्यानंयथा " अक्षस्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं विद्याकरैरवि रतं दधतींत्रिनेत्राम् ॥ अर्द्धेन्दुमौलिभरणामरविन्दवासां वर्णेश्व रीं प्रणमतंस्तनभारखिन्नाम्" ॥तत्रक्रमः॥ललाटे क्षंनमः,मुखवृत्ते हंनमः,दक्षनेत्रे संनमः, वामनेत्रे षंनमः दक्षकर्णे शंनमः, वाम-कर्णेवंनमः, दक्षनासायांमूलंनमः,वामनासायामूरंनम,ःदक्षगण्डेयं नमःवामगण्डेमंनमः, ऊर्द्धोष्ठेभंनमः,अधरोष्ठे बंनमः, ऊर्ध्वदन्तप ङ्क्तौ फंनमः, अधोदन्तपङ्क्तौ पंनमः, शिरसि नंनमः, मुखे धंन मः, दक्षिणबाहुमूले दंनमः कूर्प्परे थंनमः, मणिबन्धे तंनमः, अङ्गुलीमूले णंनमः, अङ्गुल्यग्रे ढंनमः, वामबाहु मूले डं नमः, कूप्परे ठंनमः, मणिबन्धे टंनमः, अङ्गुलीमूले ञंनमः, अङ्गुल्यग्रे झंनमः, दक्षिणोरुमूले जंनमः, जानुनि छंनमः, गुल्फे चंनमः, अङ्गुलीमूले ङंनमः, अङ्गुल्यग्रे घंनमः वामो रुमूले गंनमः, जानुनि खंनमः, गुल्फे कंनमः, अङ्गुलीमूले

अःनमः, अङ्गुल्यग्रे अंनमः, दक्षपार्श्वे औंनमः, वामपार्श्वे ओंनमः, पृष्ठेऐंनमः, नाभौ एंनमः, उदरेॡंनमः, हृदयेलृंनमः, दक्षांसे ॠंनमः, ककुदि ऋंनमः, वामांसे ऊंनमः, हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम् उंअस्थ्यात्मनेनमः, हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम् ईंमज्जात्मनेनमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम् इंशुक्रात्मनेनमः, हृदादिवामपादाग्रान्तम् आंआत्मनेनमः, हृदयान्मस्तकान्तम् अंपरमात्मनेनमः॥इतिसंहारक्रमः॥अथश्रीकण्ठादिन्यासः॥तत्रध्यानंयथा"अतिश्यामांत्रिनयनांशवासनसमुन्नताम् ॥ बिभ्रतींविविधाकल्पाश्चतुर्दिक्षुशिवायुताम्॥पाशाङ्कुशवराक्षस्रक्पाणिंशीतांशुशेखराम् ॥ त्र्यक्षंरक्तसुवर्णाभमर्द्धनारीश्वरंभजे"॥ शक्तिध्यानंयथा ॥ "एतारुद्राङ्कपीठस्थाःसिन्दूरारुणविग्रहाः ॥ रक्तोत्पलःकपालाभ्यामलङ्कृतकराम्बुजाः"इतिरुद्रन्यासेध्यानंकर्त्तव्यम् ॥ अस्य श्रीकण्ठादिन्यासस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽर्द्धनारीश्वरो देवता, श्रीकण्ठादिन्यासेविनियोगः ललाटे अंश्रीकण्ठाय पूर्णोदर्य्यैनमः, मुखवृत्तेआंअनन्तायवीर्य्यायैनमः, दक्षनेत्रेइंसूक्ष्मेशायशाल्मल्यैनमः; वामनेत्रे ईंत्रिमूर्त्तयेलोलाक्ष्यैनमः, दक्षकर्णे उंअमरेशायवर्त्तुलाक्ष्यैनमः,वामकर्णे ऊंअर्घीशायदीर्घघोणायैनमः, दक्षनासायाम् ऋंमारभूतयेदीर्घमुख्यैनमः, वामनासायाम् ॠंतिथीशायगोमुख्यैनमः, दक्षगण्डे ऌंस्थाराधीशायदीर्घाजिह्वायैनमः, वामदण्डे ॡंहरायकुण्डोदर्य्यैनमः; ऊर्ध्वोष्ठे एंझिणीशाय ऊर्द्धकेश्यैनमः,अधरोष्ठे ऐंभौक्तिकायविकृतमुख्यैनमः, ऊर्द्धदन्तपङ्क्तौ ओंसद्योजातायज्वालामुख्यैनमः, अधोदन्तपङ्क्तौ औंअनुग्रहेशायउल्कामुख्यैनमः, शिरसि अंअक्रूरायश्रीमुख्यैनमः, मुखे अःमहासेनायविद्यामुख्यैनमः, दक्षिणबाहुमूले कंक्रोधीशाय महाकाल्यैनमः, कूर्प्परे खंचण्डीशायसरस्वत्यैनमः, मणिबन्धेगं

पञ्चान्तकायगौर्य्यैनमः, अङ्गुलीमूलेघंशिवोन्नमायत्रैलोक्यविद्या यैनमः, अङ्गुल्यग्रे ङंएकरुद्रायमन्त्रशक्त्येनमः, वामबाहुमूलेचंकूर्म्मेशायआत्मशक्त्यैनमः, कूर्प्परे छंएकनेत्रायभूतिमात्रेनमः, मणिबन्धे जंचतुराननायलम्बोदर्य्यैनमः,अङ्गुलीमूले झंअजेशाय द्राविण्यैनमः, अङ्गुल्यग्रेजंसर्व्वेशायनागर्य्यैनमः, दक्षिणोरुमूले टंसोमेशायखेचर्य्यैनमः, जानुनि ठंलाङ्गलीशायमञ्जर्य्यैनमः गुल्फे डंडारकेशायरूपिण्यैनमः, अङ्गुलीमूले ढंअर्द्धनारीशाय वीरिण्यैनमः, अङ्गुल्यग्रेणंउमाकान्तायकाकोदर्य्यैनमः, वामोरुमूले तंआषाढिनेपूतनायैनमः, जानुनिथंदण्डिनेभद्रकाल्यै नमः,गुल्फेदंअत्रीशाययोगिन्यैनमः, अङ्गुलीमूले धंमीनेशायशंखिन्यैनमः, अङ्गुल्यग्रेनंमेषेशायगर्ज्जिन्यैनमः, दक्षपार्श्वे पंलोहितायकालरात्र्यैनमः, वामपार्श्वेफंशिखीशायवकूर्दिन्यैमम:, पृष्ठे बंछगलण्डायकपर्द्दिन्यैनमः, नाभौभंद्विरण्डेशायवज्रायैनमः, उदरेमंमहाकालायजयायैनमः, हृदये यंवाणीशायसुमुखेश्वर्य्यै नमः, दक्षांसे रंभुजङ्गायरेवत्यैनमः, ककुदि लंपिनाकिनेमाधव्यैन मः, वामांसेवंषड्गीशायवारुण्यैनमः, हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम् शं बकेशायवायव्यैनमः, हृदयादिवामभुजाग्रान्तम् षंश्वेतायरक्षोविदारिण्यैनमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम्संभृगवेसहजायैनमः, हृदादिवामपादाग्रान्तम्, हंनकुलीशायलक्ष्म्यैनमः, हृदयान्मस्तकान्तम् क्षंसर्व्वर्त्तकायमहामायायैनमः॥ इतिरुद्रन्यासः॥

अथकालीतन्त्रोक्तप्रकारेणषोढान्यासः कर्त्तव्यः॥

यथामातृकान्यासःप्रथमः ॥ अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंनमोहृदि, एंऐंओंऔंअंअः कंखंगंघंदक्षभुजे, ङंचंछंजंझंभंटंठंडंढंवामभु

जे, णंतंथंदंधंनंपंफंबंभंदक्षपादे, मंयंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षंइतिवाम पादेविन्यसेत् ॥ इति मातृकान्यासःप्रथमः ॥

अथ द्वितीयः ।

श्रींअंश्रींअंश्रींअंनमःललाटे, मुखवृत्तेश्रींआंश्रींआंश्रींआं नमः, दक्षनेत्रेश्रींइंश्रींइंश्रींइंनमः, वामनेत्रेश्रींईंश्रींईंश्रींईंनमः, दक्षकर्णेश्रींउंश्रींउंश्रींउंनमः, वामकर्णेश्रींऊंश्रींऊंश्रींऊंनमः, दक्षनासायाम् ॥श्रींऋंश्रींऋंश्रींऋंनमः, वामनासायाम्श्रींॠंश्रींॠं श्रींॠंनमः, दक्षगण्डेश्रींऌंश्रींऌंश्रींऌंनमः, वामगण्डेश्रींॡं श्रींॡंश्रींॡंनमः, ऊर्ध्वोष्ठेश्रींएंश्रींएंश्रींएंनमः, अधरोष्ठेश्रींऐंश्रीं ऐंश्रींऐंनमः, ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौश्रींओंश्रींओंश्रींओंनमः, अधोदन्तपङ्क्तौश्रींऔंश्रींऔंश्रींऔंनमः, शिरसिश्रींअंश्रींअंश्रींअंनमः, मुखेश्रींअःश्रींअःश्रींअःनमः, दक्षिणबाहुमूलेश्रींकंश्रींकंश्रींकंनमः, कूर्प्परेश्रींखंश्रींखंश्रींखंनमः, मणिबन्धेश्रींगंश्रींगंश्रींगंनमः, अङ्गुलीमूलेश्रींघंश्रींघंश्रींघंनमः, अङ्गुल्यग्रेश्रींङंश्रींङंश्रींङं नमः, वामबाहुमूलेश्रींचंश्रींचंश्रींचंनमः, कूर्प्परेश्रींछंश्रींछंश्रीं छंनमः; मणिबन्धे श्रींजंश्रींजंश्रींजंनमः, अङ्गुलीमूले श्रींझंश्रीं झंश्रींझंनमः, अङ्गुल्यग्रे श्रींञंश्रींञंश्रींञंनमः, दक्षिणोरुमूले श्रींटंश्रींटंश्रींटंनमः, जानुनि श्रींठंश्रींठंश्रींठंनमः, गुल्फे श्रीं डंश्रींडंश्रींडंनमः, अङ्गुलीमूले श्रींढंश्रींढंश्रींढंनमः, अङ्गुल्यग्रे श्रींणंश्रींणंश्रींणंनमः, वामोरुमूले श्रींतंश्रींतंश्रींतंनमः; जानुनि श्रींथंश्रींथंश्रींथंनमः, गुल्फे श्रींदंश्रींदंश्रींदंनमः, अङ्गुलीमूले श्रींधंश्रींधंश्रींधंनमः, अङ्गुल्यग्रे श्रींनंश्रींनंश्रींनंनमः, दक्षपार्श्वे श्रींपंश्रींपंश्रींपंनमः, वामपार्श्वेश्रींफंश्रींफंश्रींफंनमः, पृष्ठे श्रींबंश्रींबंश्रींबंनमः, नाभौ श्रींभंश्रींभंश्रींभंनमः, उदरे

श्रींमंश्रींमंश्रींमंनमः, हृदये श्रींयंश्रींयंश्रींयं त्वगात्मनेनमः, दक्षांसे श्रींरंश्रींरंश्रींरंअसृगात्मनेनमः, ककुदि श्रींलंश्रींलंश्रींलंमांसात्मनेनमः, वामांसे श्रींवंश्रींवंश्रींवंमेदआत्मनेनमः, हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम् श्रींशंश्रींशंश्रींशंअस्थ्यात्मनेनमः, हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम् श्रींषंश्रींषंश्रींषंमज्जात्मनेनमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम् श्रींसंश्रींसंश्रींसंशुक्रात्मनेनमः, हृदादिवामपादाग्रान्तम् श्रींहंश्रींहंश्रींहंआत्मनेनमः, हृदयान्मस्तकान्तम् श्रींक्षंश्रींक्षंश्रींक्षंपरमात्मनेनमः ॥ इतिद्वितीयः ॥

अथतृतीयः।

ललाटे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, मुखवृत्ते क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, दक्षनेत्रे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, वामनेत्रे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, दक्षकर्णे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, वामकर्णे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, दक्षनासायाम् क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, वामनासायाम् क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, दक्षगण्डे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींमनः, वामगण्डे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, ऊर्ध्वोष्ठे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अधरोष्ठे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अधोदन्तपङ्क्तौ क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, शिरसि क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, मुखे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, दक्षिणबाहुमूले क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, कूर्परे, क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, मणिबन्धे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अङ्गुलीमूले क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अङ्गुल्यग्रे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, वामबाहुमूले क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, कूर्परे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, मणिबन्धे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अङ्गुलीमूले क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अङ्गुल्यग्रे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, दक्षि

णोरुमूले क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, जानुनि क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रीं नमः, गुल्फे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अङ्गुलीमूले क्लींश्रींक्लींश्रीं क्लींश्रींनमः, अङ्गुल्यग्रे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, वामोरुमूले क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, जानुनि क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, गुल्फे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अङ्गुलीमूले क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, अङ्गुल्यग्रे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, दक्षपार्श्वे क्लींश्रींक्लींश्रीं क्लींश्रींनमः वामपार्श्वे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, पृष्ठे क्लींश्रीं क्लींश्रींक्लींश्रींनमः, नाभौ क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, उदरे क्लींश्रीं क्लींश्रींक्लींश्रींनमः, हृदये क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, दक्षांसे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, ककुदि क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, वामांसे क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम् क्लींश्रींक्लींश्रीं क्लींश्रींनमः, हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम् क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम् क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, हृदादिवामपादाग्रान्तम् क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः, हृदयान्मस्तकान्तम् क्लींश्रींक्लींश्रींक्लींश्रींनमः ॥ इतितृतीयः ॥

अथचतुर्थः ।

ललाटेह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, मुखवृत्ते ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, दक्षनेत्रे ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, वामनेत्रे ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रीं श्रींनमः, दक्षकर्णे ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, वामकर्णे ह्रींश्रींह्रीं श्रींह्रींश्रींनमः, दक्षनासायाम् ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, वामनासायाम् ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, दक्षगण्डे ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, वामगण्डे ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, ऊर्द्ध्वोष्ठे ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, अधरोष्ठे ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, ऊर्द्ध्वदन्तपङ्क्तौ ह्रींश्रींह्रीं श्रींह्रींश्रींनमः, अधोदन्तपङ्क्तौ ह्रींश्रींह्रींश्रींह्रींश्रींनमः, शिरसि

ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः, मुखे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः, दक्षिण बाहुमूले ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः, कूर्प्परे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः, मणिबन्धे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः अङ्गुलीमूले ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लीं श्रींनमः अङ्गुल्यग्रे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः वामबाहुमूले ह्लीं श्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः कूर्प्परे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः मणिबन्धे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः अङ्गुलीमूले ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः अङ्गुल्यग्रे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः दक्षिणोरुमूले ह्लींश्रींह्लींश्रीं ह्लींश्रींनमः जानुनि ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः गुल्फे ह्लींश्रींह्लीं श्रींह्लींश्रींनमः अङ्गुलीमूले ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः अङ्गुल्यग्रे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः वामोरुमूले ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः जा नुनि ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः गुल्फे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः अ ङ्गुलीमूले ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः अङ्गुल्यग्रे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रीं नमः दक्षणपार्श्वे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः वामपार्श्वे ह्लींश्रींह्लीं श्रींह्लींश्रींनमः पृष्ठे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः नाभौ ह्लींश्रींह्लींश्रीं ह्लींश्रींनमः उदरे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः हृदये ह्लींश्रींह्लींश्रीं ह्लींश्रींनमः दक्षांसे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः ककुदि ह्लींश्रींह्लीं श्रींह्लींश्रींनमः वामांसे ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः हृदयादक्षभुजा ग्रान्तम् ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम् ह्लींश्रीं ह्लींश्रींह्लींश्रींनमः हृदयादिवामपादाग्रान्तम् ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रीं नमः, हृदयान्मस्तकान्तम् ह्लींश्रींह्लींश्रींह्लींश्रींनमः ॥ इतिचतुर्थः

अथ पञ्चमः ।

ललाटे मूलं ह्रांह्रांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, मुखवृत्ते मूलं ह्रांह्रांक्रैंक्रैंक्लूं नमः, दक्षनेत्रे मूलं ह्रांह्रांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, वामनेत्रेमूलंह्रांह्रांक्रैंक्रैंक्लूं नमः, दक्षकर्णेमूलं ह्रांह्रांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, वामकर्णे मूलं ह्रांह्रांक्रैंक्रैं

क्लूंनमः, दक्षनासायाम् मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, वामनासायाम् मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, दक्षगण्डे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, वामगण्डे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, ऊर्द्ध्वोष्ठेमूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, अधरोष्ठे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, ऊर्द्ध्वदन्तपङ्क्तौ मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैं क्लूंनमः, अधोदन्तपङ्क्तौ मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, शिरसि मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, मुखे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, दक्षिणबाहुमूले मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, कूर्प्परे मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, मणिबन्धे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, अङ्गुलीमूले मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, अङ्गुल्यग्रे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, वामबाहुमूले मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूं नमः, कूर्प्परे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, मणिबन्धे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूं नमः, अङ्गुलीमूले मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः अङ्गुल्यग्रेमूलं ह्वांह्वांक्रैं क्रैंक्लूंनमः, दक्षिणोरुमूलेमूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, जानुनि मूलं ह्वां ह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, गुल्फे मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, अङ्गुलीमूले मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, अङ्गुल्यग्रे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, वामोरुमूले मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, जानुनि मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, गुल्फे मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, अङ्गुलीमूलेमूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, अङ्गुल्यग्रे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनम,ः दक्षपार्श्वेमूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, वामपार्श्वेमूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, पृष्ठे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, नाभौ मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, उदरे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, हृदये मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, दक्षांसेमूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, ककुदि मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, वामांसे मूलं ह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमःहृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम् मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम् ॥ मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम् मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूं नमः, हृदादिवामपादाग्रान्तम् मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः, हृदयान्मस्तकान्तम् मूलंह्वांह्वांक्रैंक्रैंक्लूंनमः ॥ इति पञ्चमः ॥

अथ षष्ठः ।

ललाटे मूलंनमः, मुखवृत्ते मूलंनमः, दक्षनेत्रे मूलंनमः, वामने त्रेमूलंनमः, दक्षकर्णे मूलंनमः, वामकर्णे मूलंनमः, दक्षनासाया म् मूलंनमः, वामनासायाम् मूलंनमः, दक्षगण्डे मूलंनमः, वामगण्डे मूलंनमः, ऊर्ध्वोष्ठेमूलंनमः, अधरोष्ठेमूलंनमः, ऊर्ध्व दन्तपङ्क्तौ मूलंनमः, अधोदन्तपङ्क्तौ मूलंनमः, शिरसिमूलंनमः, मुखेमूलंनमः दक्षिणबाहुमूलेमूलंनमः, कूर्प्परेमूलंनमः, मणिबन्धे मूलंनमः, अङ्गुलीमूलेमूलंनमः, अङ्गुल्यग्रेमूलंनमः, वामबाहुमू लेमूलंनमः, कूर्परेमूलंनमः, मणिबन्धेमूलंनमः, अङ्गुलीमूलेमू लंनमः, अङ्गुल्यग्रेमूलंनमः, दक्षिणोरुमूलेमूलंनमः, जानुनिमू लंनमः, गुल्फेमूलंनमः, अङ्गुलीमूलेमूलंनमः अङ्गुल्यग्रेमूलंनमः, वामोरुमूलेमूलंनमः, जानुनिमूलंनमः, गुल्फेमूलंनमः, अङ्गुली मूलेमूलंनमः, अङ्गुल्यग्रेमूलंनमः, दक्षपार्श्वेमूलंनमः, वामपार्श्वे मूलंनमः, पृष्ठेमूलंनमः, नाभौमूलंनमः, उदरेमूलंनमः, हृदये मूलंनमः, दक्षांसेमूलंनमः, ककुदिमूलंनमः, वामांसेमूलंनमः, हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम् मूलंनमः, हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम् मूलंनमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम् मूलंनमः, हृदादिवामपा दाग्रान्तम् मूलंनमः, हृदयान्मस्तकान्तम् मूलंनमः,

इत्यनुलोमः ॥

अथ विलोमः ।

हृदयान्मस्तकान्तम् मूलंनमः, हृदादिवामपादाग्रान्तम्मूलं नमः, हृदयाद्दक्षपादाग्रान्तम् मूलंनमः, हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम् मूलंनमः, हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम् मूलंनमः, वामांसेमूलंनमः,

ककुदिमूलंनमः, दक्षांसेमूलंनमः, हृदयेमूलंनमः, उदरेमूलंनमः, नाभौमूलंनमः, पृष्ठेमूलंनमः, वामपार्श्वेमूलंनमः, दक्षपार्श्वे मूलंन मः,अङ्गुल्यग्रेमूलंनमः, अङ्गुलीमूलेमूलंनमः, गुल्फेमूलंनमः, जानुनिमूलंनमः, वामोरुमूलेमूलंनमः, अङ्गुल्यग्रेमूलंनमः, अङ्गुली मूलेमूलंनमः, गुल्फेमूलंनमः, जानुनिमूलंनमः, दक्षिणोरुमूले मूलंनमः, अङ्गुल्यग्रेमूलंनमः, अङ्गुलीमूलेमूलंनमः, मणिबन्धे मूलंनमः, कूर्प्परेमूलंनमः, वामबाहुमूलेमूलंनमः, अङ्गुल्यग्रेमूलं नमः , अङ्गुलीमूलेमूलंनमः,मणिबन्धेमूलंनमः कूर्प्परेमूलंनमः, दक्षिणबाहुमूलेमूलंनमः, मुखेमूलंनमः, शिरसिमूलंनमः, अधो दन्तपङ्क्तौमूलंनमः, ऊर्द्ध्वदन्तपङ्क्तौमूलंनमः, अधरोष्ठेमूलंनमः, ऊर्द्ध्वोष्ठेमूलंनमः, वामगण्डे मूलंनमः, दक्षगण्डेमूलंनमः, वामनासायांमूलंनमः, दक्षनासायांमूलंनमः, वामकर्ण्णेमूलंनमः, दक्षकर्ण्णेमूलंनमः, वामनेत्रेमूलंनमः,दक्षनेत्रेमूलंनमः, मुखवृत्ते मूलंनमः, ललाटेमूलंनमः ॥ इतिविलोमः ॥ अष्टोत्तरशत सङ्ख्यकमूलेनव्यापकन्यासंकुर्य्यादितिषष्ठः ॥

अथ तत्त्वन्यासः ।

तद्यथा पादादिनाभिपर्य्यन्तं क्रींक्रींक्रींह्रींह्रींहूंहूंॐआत्म तत्त्वायनमः, नाभ्यादिहृदयपर्य्यन्तंदक्षिणेकालिकेॐविद्यात त्त्वायनमः, हृदादिशिरःपर्य्यन्तंक्रींक्रींक्रींह्रींह्रींहूंहूंस्वाहाॐशिव तत्त्वायनमः ॥

अथ बीजन्यासः ।

तथाहिब्रह्मरन्ध्रेक्रींनमः, भ्रूमध्येक्रींनमः, ललाटेक्रींनमः ना भौह्रींनमः, गुह्येह्रींनमः, वक्त्रेहूंनमः, गुर्व्वङ्गेहूंनमः, इति॥इमौन्या

सौ ॥ क्रींक्रींक्रींह्रींह्रींहूंहूंदक्षिणेकालिकेक्रींक्रींक्रींह्रींह्रींहूंहूंस्वाहा इतिविद्याबीजेन ततोमूलेन नवधा सप्तधा पञ्चधा व्यापक न्यासङ्कुर्य्यात्॥ततोध्यानंकुर्य्यात्तद्यथा॥ करालवदनांघोरांमुक्तकेशीञ्चतुर्भुजाम् ॥ कालिकान्दक्षिणान्दिव्याम्मुण्डमालाविभूषिताम् ॥ सद्यश्छिन्नाशिरःखड्गवामोर्ध्वाधःकराम्बुजाम्॥अभयँव्वरदञ्चैवदक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम् ॥ महामेघप्रभांश्यामान्तथाचैव दिगम्बराम् ॥ कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्च्चिताम् ॥ कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम् ॥ घोरदंष्ट्राङ्करालास्याम्पीनोन्नतपयोधराम् ॥ शवानाङ्करसङ्घातैःकृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् ॥ सृक्कद्वयगलद्रक्तधाराविस्फुरिताननाम् ॥ घोररावाम्महारौद्रींश्मशानालयवासिनीम्॥ दन्तुरान्दक्षिणव्यापिलम्बमानकचोच्चयाम् ॥ शवरूपमहादेवहृदयोपरिसंस्थिताम् ॥ शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्द्दिक्षुसमन्विताम् ॥ महाकालेनचसमंविपरीतरतातुराम् ॥ एवंसञ्चिन्तयेद्देवींसर्व्वकामार्त्थसिद्धये॥ततः समस्तकिल्बिषराहितन्निर्म्मलन्देहँव्विचिन्त्यआत्मानन्देवीरूपँव्विभावयेत्॥ अथ पीठदेवताया देहे पीठमयँव्विभावयेत्॥तद्यथा ।आधारेमण्डूकायनमः, स्वाधिष्ठाने कालाग्निरुद्रायनमः, नाभौकक्षपायनमः, हृदये ॐआधारशक्तयेनमःकूर्म्मायनमःधरायैनमः सुधासमुद्रायनमः कल्पवृक्षायनमः मणिहर्म्म्यायनमः हेमपीठायनमः इतिहृदयेन्यसेत् ॥ दक्षबाहौधर्म्मायनमः, वामेज्ञानायनमः वामोरौवैराग्यायनमः, दक्षोरौऐश्वर्यायनमः वदनेअधर्म्मायनमः, वामपार्श्वेअज्ञानायनमः, नाभौ अवैराग्यायनमः, दक्षिणपार्श्वेअनैश्वर्य्यायनमः हृदि सं सत्त्वायनमःरंरजसेनमः, तंतमसेनमः;तपिन्यादिकलाभ्योनमः, अमृतादिकलाभ्योनमः;धूम्रार्च्चिकलाभ्योनमः, आंआत्मनेनमः, अंअन्तरात्मनेनमः, पंपरमात्मनेनमः, ह्रींज्ञा

नात्मनेनमः, मंमायातत्त्वायनमः, कंकलातत्त्वायनमः, विंविद्या तत्त्वायनमः, पंपरतत्त्वायनमः , श्मशानायनमः , मुनिभ्यो देवेभ्योनमः , बहुमांसास्थिमोदमानाभ्यः शिवाभ्योनमः, श वमुण्डचिताङ्गारेभ्योनमः ॐजयायैनमः ॐविजयायैनमः ॐ अजितायैनमः, ॐअपराजितायैनमः, ॐनित्यायैनमः ॐ विलासिन्यैनमः ॐदोग्ध्र्यैनमः ॐअघोरायैनमः, ॐमङ्गला यैनमः, ततः ह्सौःमहाप्रेतपद्मासनायनमः , एवन्देहमयम्पीठ व्विँभाव्य प्रातः कृत्योक्तप्रकारेणकुण्डल्युत्थानादिकृत्वा देवी न्ध्यात्वा तत्तन्मुद्राः प्रदर्श्य मानसैरुपचारैः पूजयेत्॥तद्यथा॥ मूलाधारेध्वजाधोगुदोर्ध्वे चतुःशोणपत्रे वंशंषंसामितिसहिते प्रसुप्तभुजगाकारांस्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनींध्यायेत् ॥ तद्यथा ॥ ध्याये त्कुण्डलिनींसूक्ष्माम्मूलाधारनिवासिनीम्॥प्रसुप्तभुजगाकाराँव्वि द्युत्पटलसन्निभाम् ॥ तामिष्टदेवतारूपांसार्द्धत्रिवलयान्विताम् । कोटिसौदामिनीभासांस्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनीम् ॥तामुत्थाप्यमहादे वींहंसंमन्त्रेणसाधकः॥ उद्यद्दिनकरद्योताय्याँवच्छ्वासन्दृढासनः ॥ अशेषाशुभशान्त्यर्थंसमाहितमनाश्चिरम् ॥ तत्प्रभापटलव्याप्तं शरीरमपिचिन्तयेत् ॥ सुषुम्नावर्त्मनैवैनाम्परब्रह्मणियोजयेत् ॥ तत्रपरब्रह्मणिसङ्गमय्य । ततश्चन्द्रमण्डलान्तर्गतामृतधारान्नि पीय तया लोलीभूताश्चैतन्यमयीश्चरणयुगलान्तर्व्विगलितैरमृ तनिवहैःप्रपञ्चं सिञ्चतीम्मूलाधारमानयेत्॥आत्मानंशुद्धचैतन्या नन्दमयन्देवतारूपव्विभावयेत् ॥ ततो मूलाधारात्कुण्डलिनीं हंसंमन्त्रेणोत्थाप्यद्वादशदलेहृदयसरसिजेषड्बिन्दुलाञ्छितका दिचान्तसहितेगत्वाप्रदीपकलिकाकारजीवरूपाद्द्वितीयाम्प्रदीप कलिकामाकृष्यस्वमूखेनिःक्षिप्तवतीम्परब्रह्मणि सङ्गमय्य पुनर्हृ दयदेशमानीय तन्मुखात्प्रदीपकलिका व्विँनिष्कृष्य मूलाधा

रेसंस्थापयेत्॥ताम्प्रदीपकलिकान्देवतारूपान्ध्यायेत्।तद्यथा।मेघाङ्गीँव्विगताम्बरांशवशिवारावान्त्रिनेत्राम्पराङ्कर्ण्णालम्बितवालयुग्मभयदाम्मुण्डस्रजामालिनीम् ॥ वामाधोर्ध्वकराम्बुजेनरशिरःखड्गञ्चसव्येतरेदानाभीतिविमुक्तकेशनिचयाँव्वन्देसदाकालिकाम्॥इतिध्यात्वा तत्तन्मुद्राम्प्रदर्श्य मानसैरुपचारैःपूजयेत्॥तत्रप्रार्थयेदनेनमन्त्रेण " ॐ स्वागतन्देवदेवेशिसन्निधौभवकालिके।।गृहाणमानसीम्पूजाय्यँथार्त्थपरिभाषिताम् " ततोऽष्टोत्तरशतव्वँर्णमय्यामालयाजपेत् ॥ इतिमानसपूजाविधिः ॥

अथ बहिःपूजा ।

तत्रप्राणायामषडङ्गन्यासादिकुर्य्यात्॥तद्यथा॥क्रांहृदयायनमः क्रींशिरसेस्वाहा, क्रूंशिखायैवषट्, क्रैंकवचायहूम्, क्रौंनेत्रत्रयाय वौषट्, क्रःअस्त्रायफट्, इतिछोटिकयादिग्बन्धनङ्कुर्य्यात् ॥ एवङ्करन्यासः क्रांअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः , क्रींतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा, क्रूंमध्यमाभ्याँव्वौषट् , क्रैंअनामिकाभ्यांहूम् , क्रौंकनिष्ठिकाभ्याँव्वौषट्, क्रःकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट्, एवन्न्यासादिकङ्कृत्वा 'आःसुरेखवज्ररेखेहूँफट्स्वाहा, अनेनमन्त्रेणकुङ्कुमसिन्दूरादिभिःसौवर्णराजतताम्रस्फाटिकवैद्रुमाद्यन्यतमपात्रे षट्कोणत्रिकोणाष्टदलभूपुरात्मकँय्यन्त्राँल्लिखेत् ॥ तदुक्तंरुद्रयामले"ततःकुङ्कुमसिन्दूरैःकार्य्यय्यँन्त्रन्तुयोगिनाम् ॥ सौवर्णेराजतेताम्रे स्फाटिके वैद्रुमे तथा ॥ चक्रेयथोक्तविधिनापूज्यादेवीनरोत्तमैः ॥" सारसङ्ग्रहेपि ' ताम्रेद्वादशकव्वँर्षं स्फाटिकादौतुसर्व्वदा ॥ तेषाम्मध्येस्फाटिकन्तुसर्व्वसिद्धिप्रदम्भवेत् " इत्यादि ॥ तन्त्रान्तरेपि " यावज्जीवंसुवर्णेस्याद्रौप्येद्वाविंशतिप्रिये ॥ ताम्रेद्वादशवर्षान्तन्तदर्द्धंभूर्ज्जपत्रके ॥

एकतोलन्द्वितोलव्वाँतितोलव्वेदतोलकम् ॥ स्वेच्छातोलन्नरःकृत्वाप्रत्यवायंसमश्नुते" ॥

अथार्घस्थापनविधिः ।

तद्यथा आत्मयन्त्रयोर्म्मध्ये त्रिकोणवृत्तषट्कोणचतुरस्रमण्डलँव्विरच्यईमितिविलिख्य, मूलखण्डत्रयेणत्रिकोणंसम्पूज्यषट्कोणेषुषडङ्गंसम्पूज्यचतुरस्रे 'पूर्णगिरिपीठायनमः' इतिपूर्व्वे, 'उड्डीयानपीठायनमः' इतिदक्षिणे, 'कामरूपपीठायनमः' इति पश्चिमे, 'जालन्धरपीठायनमः' इत्युत्तरे इतिसम्पूज्य मध्ये 'ॐ आधारशक्तयेनमः' इतिसम्पूज्य त्रिकोणगर्भत्रिकोणषट्कोणभूषितार्घ्यत्रिकाम्मूलेनसंस्थाप्य 'नमः' इतिसामान्यार्घस्थजलेनाभ्युक्ष्य 'वांवींवूंहसक्षमलवरयूंधर्म्मदवह्निमण्डलात्मनेकालिकार्घ्यपात्राधारायनमः' इतिसम्पूज्य 'यंधूम्रार्च्चिषेनमः' रंऊष्मायैनमः, लंज्वलिन्यैनमः, वंज्वालिन्यैनमः शंविस्फुलिङ्गिन्यैनमः षंसुश्रियैनमः, संसुरूपायैनमः, हंकपिलायैनमः, लंहव्यवाहायैनमः, क्षंकव्यवाहायैनमः, इतिवह्निदशकलाः सम्पूज्य षट्कोणेषुषडङ्गञ्चसम्पूज्यमध्येमूलेनदेवीम्प्रपूज्य 'श्रीकालिकाश्रीपात्रं स्थापयामिनमः' इतिपठित्वातदुपरिसौवर्णराजतन्ताम्रन्नारिकेलव्वापात्रंफडितिप्रक्षालितंसंस्थाप्य 'ह्रींह्रींहूंहसक्षमलवरयूंवसुप्रदतपिन्यादिद्वादशकलात्मनेअर्क्कमण्डलायश्रींदक्षिणाकालिकार्घ्यपात्रायनमः' इतिसम्पूज्यपूर्व्वादिप्रादक्षिण्येनकलाम्पूजयेत्तद्यथा 'कंभंतपिन्यैनमः, खंबंतापिन्यैनमः, गंफंधूम्रायैनमः, घंपंमरीच्यैनमः, ङंनंज्वालिन्यैनमः, चंधंरुच्यैनमः, छंदंसुषुम्नायैनमः, जंथंभोगदायैनमः, झंतंविश्वायैनमः, ञंणंबोधिन्यै

नमः, टंढंधारिण्यैनमः, ठंडंक्षमायैनमः, इतिसम्पूज्यतत्पात्रम
ध्येत्रिकोणंषट्कोणवृत्तम्मूलेनविलिख्यषडङ्गंसम्पूज्यमूलेनत्रि-
कोणं सम्पूज्य विलोममातृकयादशधाजप्तेनवा क्षीरञ्जलव्वाँ म
धुसव्विँदा दिवा निक्षिप्य तेन त्रिकोणम्परिपूर्य्य यंरंवमितिदो
षशोषणदहनप्लावनानि कृत्वा सांसींसूंसहक्षमलवरयूंकामप्रदामृ
तादिषोडशकलात्मनेसोममण्डलाय श्रीदक्षिणाकालिकार्घ्यामृ
तायनम' इतिसम्पूज्यकलाः पूजयेत् । "अंअमृतायैनमः, आंमा
नदायैनमः, इंपूषायैनमः, ईंतुष्टयैनमः, उंपुष्टयैनमः, ऊंवृत्यै
नमः, ऋंधृत्यैनमः, ॠंशशिन्यैनमः, लृंचन्द्रिकायैनमः, लॄंका
न्त्यैनमः, एंज्योत्स्नायैनमः, ऐंश्रियैनमः, ओंप्रीत्यैनमः, औंअ
ङ्गदायैनमः, अंपूर्णायैनमः अःपूर्णामृतायैनमः" इतिकलाःसम्पू
ज्यएलालवङ्गकर्पूरादिसुगन्धादिनिःक्षिप्य पूर्व्ववद्यन्त्रन्द्रव्ये वि
लिख्य त्रिकोणरेखायाम्' अं १६ कं १६ खं १६ , इतिविलिख्य
मध्ये 'हंलंक्षं' इतिसँल्लिख्यमूलखण्डत्रयेण सम्पूज्य 'गङ्गेचयमु
नेचैवगोदावरिसरस्वति ॥ नर्म्मदेसिन्धुकावेरिजलेस्मिन्सन्निधि
ङ्कुरु ॥ ॐब्रह्माण्डोदरतीर्थानिकरैःस्पृष्टानिते रवे ॥ तेन सत्येन
मे देव तीर्थन्देहिदिवाकर' इत्यादिभिस्तीर्थान्यावाह्याङ्कुशमुद्रया
'वौषट्' इतिपुष्पं'वषट्' इत्यनेनगालिनीमुद्राम्प्रदर्श्य । गालि
नीमुद्रायथा "कनिष्ठाङ्गुष्ठकौयुक्तौकरयोरितरेतरम् ॥ तर्ज्जनीम
ध्यमानामासंहताभुग्नवर्ज्जिताः" ॥ वमितिधेनुमुद्रयाअमृतीकृ
त्य इष्टदेवतान्ध्यात्वा सम्पूज्यसङ्कुलीकृत्यशङ्खमुद्राम्प्रदर्श्य,
षट्कोणेचषडङ्गं सम्पूज्य पूर्व्वे ग्लूंगगनरत्नेभ्योनमः, दक्षिणे
स्लूंस्वर्गरत्नेभ्योनमः, इति पश्चिमे प्लूंपातालरत्नेभ्योनमः उ
त्तरे म्लूंमनुष्यरत्नेभ्योनमः नूंनागरत्नेभ्योनमःइतिमध्ये सम्पू
ज्य ऐंमूलंअमृतेअमृतोद्भवेअमृतेश्वरिअमृतवर्षिणिअमृतंस्रा

वय सांजूंजूंअमृतेश्वर्य्यैस्वाहाइत्यमृतेश्वरीन्त्रिधाजप्त्वात्र्यैयम्बके नगायत्र्यावा शांशींशूंशैंशौंशः शुक्रशापविमोचितायैस्वाहाइत्य मृतेशींस्मृत्वा अखण्डैकवरानन्दकरेपरसुधात्मनि।स्वच्छन्दस्फु रणामत्रनिधेह्यमृतरूपिणी ॥ सूर्य्यकोटिप्रतीकाशश्चन्द्रकोटि सुशीतलम्। अष्टादशभुजन्देवम्पञ्चवक्त्रन्त्रिलोचनम्। अमृतार्णवं मध्यस्थम्ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम्।वृषारूढन्नीलकण्ठंसर्व्वाभरणभूषि तम्(कपालखट्वाङ्गधरङ्घण्टाडमरुवादिनम्) पाशाङ्कुशधरन्देवङ्ग दामुशलधारिणम् (खड्गखेटकपट्टीशमुद्गरोच्छूलकुन्तिनम्) विचित्रखेटकम्मुण्डव्वँरदाभयमालिनम्(लोहितन्देवदेवेशम्भाव येत्साधकोत्तमः) भावयेच्चसुरान्देवीञ्चन्द्रकोटचयुतप्रभाम्) हिम कुन्देन्दुधवलाम्पञ्चवक्त्रान्त्रिलोचनाम्)अष्टादशभुजैर्य्युक्तांसर्व्वा नन्दकरोद्यताम्) प्रहसन्तीव्विँशालाक्षीन्देवदेवस्यसम्मुखीमिति ध्यात्वा 'ह्सक्षमलवरयूंआनन्दभैरवायवषट् ह्सक्षमलवरयूंआन न्दभैरव्यैवौषट् आनन्दभैरवानन्दभैरवीश्रीपादुकाम्पूजयामि तर्प्पयामिनमः' इतिमन्त्रेणवामाङ्गुष्ठमध्यमाभ्यान्द्रव्यमुद्धृत्या नन्दभैरवमिथुनन्तत्रैवसम्पूज्यसन्तर्प्यचअमृतेशींस्मृत्वा क्लींकुल स्थामृताकारेसिद्धिज्ञानकरेपरे ॥ अमृतत्वन्निधेह्यत्रवस्तुनिक्लि न्नरूपिणि ॥ 'हंसः तर्प्पयामिनमः' इतिपूर्व्ववत्संतर्प्यअमृतेशीं स्मृत्वा सौं तद्रूपैकरसाख्यञ्चदत्वाह्येतत्स्वरूपिणी ॥ भूत्वाकु लामृताकारम्मयिविस्फुरणङ्कुरु ॥"हंसः" इतिप्राग्वत्सन्तर्प्यमूलं सप्तधाजप्त्वाकवचेनावगुण्ठ्यास्त्रेणसंरक्ष्यमत्स्यमुद्रयाच्छाद्ययो निधेनुमुद्रेप्रदर्शयेत् ॥ इतिश्रीपात्रस्थापनाविधिः ॥ दक्षिणेअ र्घ्यस्थापनङ्कुर्य्यात्। तद्यथा त्रिकोणवृत्तषट्कोणभूपुराणिकृत्वा । 'आधारशक्तयेनमः' इत्यभ्यर्च्याग्निमुद्देङ्कोणाग्रङ्कृत्वाशङ्खमुद्रान्द र्शयेत्॥शङ्खमुद्रायथा "वाममुष्टयन्तरेङ्गुष्ठान्निवेश्यसरलाङ्गुलीः ॥

दक्षिणस्यकरस्यैववामाङ्गुष्ठेनसंस्पृशेत् ॥ शङ्खमुद्रेयमाख्याता मन्त्रविद्भिरनुत्तमा " इति पुष्पाक्षतैःषडङ्गानिअग्नीशासुरवायव्येषुमध्यदिक्षुचसम्पूज्य'फट्'इतिप्रक्षालितमाधारंसंस्थाप्य तत्र वह्निमण्डलमभ्यर्च्य, तत्र पूर्व्ववीजेनशङ्खम्प्रक्षाल्य, तत्रसंस्थाप्य, पूर्व्वोक्तमन्त्रेणार्कमण्डलन्तत्रसम्पूज्य मूलेनजलन्दत्वा, पूर्व्वोक्तमन्त्रेणचन्द्रमण्डलमभ्यर्च्य ' गङ्गेच' इत्यादिनातीर्थमावाह्य'वौषट्' इतिसंयोज्यसम्पूज्यतीर्थशक्तिञ्चसम्पूज्य 'वषट्'इतिपुष्पन्न्यस्य गालिनीमुद्राम्प्रदर्श्य, 'रम्'इतिस्वधावीजेनधेनुमुद्रयाअमृतीकृत्य, इष्टदेवतान्ध्यात्वा, सकलीकृत्य, षडङ्गानिसन्न्यस्य, अस्त्रेणसंरक्ष्य सम्पूज्य अष्टकृत्वोमूलेनाभिमन्त्र्य, मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य, कुशाग्राक्षततिलव्रीहियवाज्यसिद्धार्थम्पुष्पाणिसङ्क्षिप्य, योनिमुद्रान्दर्शयित्वा, श्रीपात्रस्थजलङ्किञ्चित्सङ्क्षिपेदित्यर्घ्यसंस्थापनविधिः ॥ तद्वामेपाद्यपात्रन्त्रिकोणावृत्तचतुरस्रेआधारशक्तिंसम्पूज्यपात्रंसाधारंसंस्थाप्य ' नमः' इतिमूलेनवाजलेनप्रपूर्य्य ' वषट् ' इतिपुष्पं ' नमः' इतिगन्धञ्च निःक्षिप्यउशीररोचनञ्चश्यामाकविष्णुक्रान्ताक्षदूर्व्वाइतिवासङ्क्षिप्यास्त्रेणाष्टकृत्वोऽभिमन्त्र्यमूलेनाभिमन्त्र्यधेनुयोनिमुद्रेदर्शयेत् ॥ एवन्तत्पार्श्वेआचमनीयपात्रन्त्रिरावृत्तचतुरस्रेआधारशक्तिं सम्पूज्यपात्रंसाधारंसंस्थाप्य ' नमः ' इति मूलेनवाजलेन प्रपूर्य्य ' वषट् ' इति पुष्पं ' नमः ' इति गन्धञ्चनिःक्षिप्यजातीकर्प्पूरकङ्कोललवङ्गतमालकादिचूर्णन्निक्षिप्यास्त्रेणाष्टकृत्वोऽभिमन्त्र्यमूलेनाभिमन्त्र्यधेनुयोनिमुद्रेदर्शयेत् ॥ तद्दक्षिणे मधुपर्कपात्रन्त्रिकोणवृत्तचतुरस्रेआधारशक्तिंसम्पूज्यपात्रंसाधारम्मधुघृतशर्करादधिदुग्धयुतंसंस्थाप्यास्त्रेणाष्टकृत्वोभिमन्त्र्य मूलेनाभिमन्त्र्यधेनुयोनिमुद्रेदर्शयेत्॥तद्दक्षेस्नानीयपात्रन्त्रिकोण

वृत्तचतुरस्रेआधारशक्तिंसम्पूज्यपात्रंसाधारंसंस्थाप्य 'नमः' इ ति, मूलेन वा जलेनप्रपूर्य्य 'वषट्' इतिपुष्पं 'नमः' इति गन्धञ्चनिक्षिप्यउशीरंरोचनञ्चसङ्क्षिप्यास्त्रेणाष्टकृत्वोऽभिमन्त्र्यमू लेनाभिमन्त्र्यधेनुयोनिमुद्रेदर्शयेत् तत्रैवश्रीचन्दनादिपुष्पन्देक्षव सनभूषणादि तत्रैवस्थापयेत् सामान्यार्घ्यस्थजलेनविशेषजले नवाभिषिच्यमूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्यधेनुयोनिमुद्रेदर्शयेत् ॥ एवं- सर्व्ववस्तुशोधनंविशेषजलेनात्ममूर्द्धिभैरवौतर्प्पयेत् ॥ श्रीपात्रा मृतेन विशेषार्घ्यपात्रेण वा देवीं हृदि त्रिवारन्तर्प्पयेत् ॥ त र्प्पणञ्चतत्त्वमुद्रया ॥ साचानामिकाङ्गुष्ठयोगेनबोध्या ॥ अत्र त त्त्वशुद्ध्याद्यपिकौलिकैराचरणीयम् ॥ तद्यथातत्रश्रुतिः ॥ प्राणा पानव्यानोदानसमाना मे शुध्यन्तांज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा, ॐपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानि मेशुद्ध्यन्तामि त्यादि ॐप्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्राणिमेशुद्ध्यन्तांज्यो तिरहंविरजाविपाप्माभूयासंस्वाहा ॥ ॐस्पर्शरूपरसगन्धाकाशा निमे शुद्ध्यन्ताम् ॥ ज्योतिरहँव्विरजा विपाप्मा भूयासंस्वाहा। ॐ वायुतेजःसलिलभूम्यात्मानो मे शुद्ध्यन्ताञ्ज्योतिरहँव्विर जा विपाप्मा भूयासंस्वाहाइति । परामृशन्सप्तधासर्व्वाङ्गं ॐत्व क्चक्षुर्ज्जिह्वाघ्राणवचांसि मे शुद्ध्यन्ताम् ॥ ज्योतिरहं विरजा वि पाप्मा भूयासंस्वाहा । ॐपाणिपादपायूपस्थशब्दा मे शुद्ध्य न्ताम् ज्योतिरहँव्विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ॥ इतितत्त्वशु द्धिः ॥ ईशानवह्निनिर्ऋतिवायुकोणेषु मण्डलानि विधाय बटु कयोगिनीगणेशक्षेत्रपालभूतेभ्यःसम्पूज्य वटकादिबलिन्दद्यात् । मण्डलमभ्यर्च्च्यवटकादिद्रव्यंसंस्थापयेत् ॥ 'ॐएह्येहिदेवीपु त्रकपिशजटाभारभास्वरज्वालामुख सर्व्वविघ्नान्नाशयनाशय स र्व्वोपचारसहितम्बलिङ्गृह्णगृह्णस्वाहा' ॥ अनेनाङ्गुष्ठानामिकायो

गेनईशानेबटुकायबलिन्दद्यात् ॥ ऊर्द्ध्वम्ब्रह्माण्डतोवादिविगतसु तले भूतले निष्कले वा पाताले वानले वा सलिलपवनयोर्य्यत्रत त्रास्थितावा ॥ क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु कृतसुपदाः पुष्पधूपादिकेन प्रीता देव्यस्सदाताश्शुभबलिविधिनायान्तु देवेन्द्रतुल्याः ॥'यां यींयूंयैंयौंयः योगिनीभ्यः हूँफट्स्वाहा' अनेनकनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेन वह्निकोणेबलिन्दद्यात् ॥ 'क्षांक्षींक्षूंक्षैंक्षौंक्षःक्षेत्रपालधूपदीपादिस हितम्बालिङ्गृह्णगृह्णस्वाहा' अङ्गुष्ठतर्ज्जनीभ्यांव्वायुकोणेबलिन्दद्या त् ॥'गांगींगूंवरवरदसर्व्वजनम्मेवशमानयबलिङ्गृह्णगृह्णस्वाहा'मु ष्टिमध्यस्थामङ्गुलीन्दण्डवत्कृत्वानैर्ऋतेबालिन्दद्यात् ॥ वामभागे मण्डलङ्कृत्वासाधारपात्रंसंस्थाप्य तत्र बलिद्रव्यन्दत्वासेकादि कृत्वा 'ॐह्रींसर्व्वविघ्नकृद्भ्यः सर्व्वभूतेभ्योहूँफट्स्वाहा' इत्य नेनतत्त्वमुद्रयाभूतेभ्योबालिन्दद्यात्। इदम्बलिदानव्वँस्तुतः पुर श्चरणेएवकर्त्तव्यम् ॥ सुवर्णस्फटिकादौकाश्मीरमृगनाभिमल योद्भवरक्तचन्दनादिद्रव्येण 'आसुरेखेवज्रेरेखेहूम्फट्स्वाहा'इति मन्त्रेणचषट्कोणगर्भन्त्रिकोणत्रयाष्टदलभूपुरात्मकय्यँन्त्रँल्लिखे त् ॥ तत्रपञ्चगव्येन पञ्चामृतेन च प्रक्षाल्यप्राणप्रतिष्ठाम न्त्रेणअष्टोत्तरशतकृत्वः प्राणान्प्रतिष्ठाप्य ॥ मन्त्रोयथा 'आंह्रीं क्रोंयंरंलंवंशंषंसंहोंॐक्षंसंहंसः ह्रींॐ हंसः श्रीमद्दक्षिणकालिका याष्षट्कोणगर्भत्रिकोणत्रयाष्टदलभूपुरात्मकयन्त्रस्यसजीववा ङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रघ्राणप्राणाइहागत्यसुखञ्चिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा'॥ त तः 'ॐयन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्' इतिदशधाजप्त्वा, दशधापुष्पाञ्जलिंसङ्क्षिप्य,होमङ्कृ त्वाप्रतिहोमेहुतशेषन्तास्मिन्क्षिपेत् तत्राधारशक्त्यादिपूजनङ्कु र्य्यात् ॥ तद्यथा' ह्रींआधारशक्तिभ्योनमः इतिसम्पूज्य' । ततो रक्तचन्दनपुष्पाक्षतपुञ्जान्निधाय 'ॐजयायैनमः' 'ॐविजयायैन

मः' 'ॐअजितायैनमः' 'ॐअपराजितायैनमः' 'ॐनित्यायैनमः' 'ॐविलासिन्यैनमः' ॐदोग्ध्र्यैनमः 'ॐअघोरायैनमः 'ॐमङ्गलायैनमः' इतिपीठशक्तीरभ्यर्च्य 'ह्रींकालिकायोगपीठात्मने नमः' 'ह्लौंसदाशिवमहाप्रेतपद्मासनायनमः, इत्यभ्यर्च्यततोदेवीय्यँजेत् हस्तेपुष्पाक्षतपुञ्जन्निधायकूर्म्ममुद्राव्विँधायकुलकुण्डलिनीहृदयदेशेआनीयतन्मुखेप्रक्षिप्यताम्परब्रह्मणिसङ्गमय्य चन्द्रमण्डलान्तर्गतामृतलोलीभूतान्द्विदले सन्निवेश्य वामनासापुटेन 'यम्'इतिनिष्कृष्यपूर्व्वङ्कामकलान्ध्यायेत् 'मुखम्बिन्दुवदाकारन्तदधः कुचयुग्मकम्॥तदधस्सपराङ्कञ्चसपरिष्कृतमण्डलम्॥' ततः पुष्पादिचक्रेक्षिपेत् देवीन्ध्यात्वाआवाहयेत् । ध्यानञ्च "करालवदनाङ्घोराम्मुक्तकेशीञ्चतुर्भुजाम् ॥ कालिकान्दक्षिणान्दिव्याम्मुण्डमालाविभूषिताम्॥ १ ॥ सद्यश्छिन्नशिरः खड्गवामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम् ॥ अभयव्वँरदञ्चैव दक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम् ॥ २ ॥ महामेघप्रभांश्यामान्तथाचैवदिगम्बराम्॥ कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्च्चिताम् ॥ ३ ॥ कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम् ॥ घोरदंष्ट्राकरालास्याम्पीनोन्नतपयोधराम् ॥ ४ ॥ शवानाङ्करसङ्घातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् ॥ सृक्कद्वयगलद्रक्तधाराविस्फुरिताननाम् ॥ ५ ॥ घोररूपाम्महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम् ॥ दन्तुरान्दक्षिणव्यापिमुक्तलम्बकचोच्चयाम् ॥ ६ ॥ शवरूपमहादेवहृदयोपरिसंस्थिताम् ॥ शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्दिक्षुसमन्विताम् ॥ ७ ॥ महाकालेन सार्द्धोर्द्धमुपविष्टरतातुराम् ॥ सुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम् ॥ ८ ॥ एवंसञ्चिन्तयेद्देवींश्मशानालयवासिनीम्॥ "अथवाहंसतन्त्रोक्तन्ध्यानङ्कुर्य्यात् । यथा" नमामिदक्षिणामूर्तिङ्कालिकाम्परभैरवीम् ॥ भिन्नाञ्जनचयप्रख्याम्प्रवीरशवसंस्थिताम् ॥ १ ॥ गलच्छोणितधाराभिः

स्मेराननसरोरुहाम् ॥ पीनोन्नतकुचद्वन्द्वाम्पीनवक्षोनितम्बिनीम् ॥२॥ दक्षिणाम्मुक्तकेशालीन्दिगम्बरविनोदिनीम् ॥ महाकालशवाविष्टांस्मेरानन्दोपरिस्थिताम् ॥ ३ ॥ मुखसान्द्रास्मितामोदमोदिनीम्मदविह्वलाम् ॥ आरक्तमुखसान्द्राभिर्नेत्रालीभिर्व्विराजिताम् ॥ ४ ॥ शवद्वयकृतोत्तंसांसिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् ॥ पञ्चाशन्मुण्डघटितमालाशोणितलोहिताम् ॥ ५ ॥ नानामणिविशोभाढ्यनानालङ्कारशोभिताम् ॥ शवास्थिकृतकेयूरशङ्खकङ्कणमण्डिताम् ॥ ६॥ शववक्षस्समारूढाँल्लेलिहानांशवङ्कचित् ॥ शवमांसकृतग्रासांसाट्टहासम्मुहुर्म्मुहुः ॥ ७ ॥ खड्गमुण्डधराव्वाँमेसव्येऽभयवरप्रदाम् ॥ दन्तुराञ्चमहारौद्रीञ्चण्डनादातिभीषणाम् ॥ ८॥ शिवाभिर्घोररूपाभिर्व्वेष्टिताम्भयनाशिनीम् ॥ माभैर्म्माभैरुस्वभक्तेषुजल्पन्तीर्घोरानिःस्वनैः ॥ ९ ॥ यूयङ्किमिच्छथब्रूतददामीतिप्रभाषिणीम् ॥ " इतिध्यायेत् ॥ आवाहनञ्च " आत्मसंस्थामजाशुद्धान्त्वामहम्परमेश्वरीम् ॥ आरण्यामिवहव्यांशम्मूर्त्तावावाहयाम्यहम्" इतिमूलञ्चपठन्, 'भगवतिदक्षिणकालिकेइहागच्छ' इतिप्रसारितसंहताङ्गुलोमूलपर्व्वणोरङ्गुष्ठौनि॒क्षिप्यआवाहयेत् ॥ ततः " ॐदेवेशिभक्तिसुलभेपरिवारसमन्विते ॥ यावत्त्वाम्पूजयिष्यामितावत्त्वंसुस्थिराभव ॥ तवेयम्महिमामूर्त्तिस्तस्यान्त्वांसर्व्वगाम्प्रभो ॥ भक्तिस्नेहसमाकृष्टान्दीपवत्स्थापयाम्यहम् "॥ इतिमूलम्पठित्वापूर्व्वोक्तयाअधोमुख्यामुद्रयास्थापयेत् ॥ "ॐसर्व्वान्तर्य्यामिन्यैदेविसर्व्वबीजमयेशुभे ॥ स्वात्मस्थायैपरंशुद्धमासनङ्कल्पयाम्यहम् " मूलञ्चपठन्पद्ममुद्रयापुष्पाद्यासनन्दद्यात् ॥ततः " ॐअस्मिन्वरासनेदेविसुखासीनेऽक्षरात्मिके ॥ प्रतिष्ठिताभवेस्सात्वम्प्रसीदपरमेश्वरि " मूलञ्चपठन् " इहप्रतिष्ठिताभव " इतिपूर्व्वोक्तयामुद्रयाप्रतिष्ठापये

त् " अनन्यातत्रदेवेशिमूर्त्तिंशक्तिरियम्प्रभो । सान्निध्यङ्कुरुत स्यान्त्वम्भक्तानुग्रहतत्परे " मूलञ्चपठन् ' इहसन्निधेहि ' उच्छ्रिताङ्गुष्ठमुष्टयोस्सय्योगात्सन्निधापनमुद्रयासन्निधानङ्कुर्य्यात् ॥ " ॐआज्ञयातवदेवेशिकृपाम्भोधेगुणाम्बुधे ॥ आत्मनाचैकहृत्तान्त्वांसंरुणद्धिमहेश्वरि " इति , मूलञ्चपठन्अन्तःप्रवेशिताङ्गुष्ठमुष्टयात्मिकया ' इहसन्निरुध्यस्व ' इतिसान्निरोधनङ्कुर्य्यात् ॥ "अज्ञानाद्दुर्म्मनस्त्वाद्वावैकल्यात्साधकस्यच ॥ ममऊनंभवेत्कृत्यन्तदाप्यभिमुखीभव" इति,मूलञ्चपठन्'इहसम्मुखीभव' इति उत्तानमुष्टियुगलात्मिकयासम्मुखीकरणङ्कुर्य्यात् ॥ ततो'हूम्' इत्यनेनसव्यहस्तमुष्टिदीर्घाधोमुखतर्ज्जन्यात्मिकयाऽभितोभ्रामितयाऽवगुण्ठयेत् ॥ " ॐदशपीयूषवर्षिण्यापूरयेद्यज्ञविष्टरम् ॥मूर्तौवायज्ञसम्पूर्तौस्थिराभवमहेश्वरि ॥" इति, मूलञ्चपठन् । अञ्जल्यात्मिकयामुद्रयाप्रार्थयेत् ॥ देवताङ्गेषडङ्गन्यासात्मकंसकलीकरणङ्कुर्य्यात् ॥ तद्यथा 'क्रांहृदयायनमः, क्रींशिरसेस्वाहा, क्रूंशिखायैवषट्, क्रैंकवचायहूम्, क्रौंनेत्रत्रयायवौषट्' क्रः अस्त्रायफट्,॥ततः"स्वभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूरार्पितास्थिते ॥ स्वतेजःपञ्जरेणाशुवेष्टिताभवसर्व्वतः" स्वधाबीजेनधेनुमुद्रयाअमृतीकरणम् ॥ ततोमहामुद्रयापरमीकरणम् ॥ महामुद्रायथा" अन्योन्यग्रथिताङ्गुष्ठाप्रसारितपराङ्गुलिः ॥ महामुद्रेयमुदितापरमीकरणेप्रिये॥ ततः " ॐयस्यादर्शनमिच्छन्तिदेवास्स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्यैतेपरमेशान्यैआगतंस्वागतञ्चमे " मूलञ्चपठन् ' साङ्गे सायुधे सवाहने सावरणे श्रीमद्दक्षिणकालिके तवस्वागतम्' इति प्रसारिताङ्गुल्यधोमुखकरद्वयेनस्वागतङ्कुर्य्यात् ॥ " ॐकृतार्थोनुगृहीतोस्मि सफलञ्जीवितञ्चमे । आगतादेवदेवेशिसुस्वागतमिदम्पुनः" मूलञ्चपठन्नूर्ध्वमुख्यापूर्वोक्तमुद्रयासुस्वागतङ्कुर्य्यात् ॥

लेलिहानमुद्रयाप्राणस्थापनम्पूर्व्वोक्तरीत्याकुर्य्यात् ॥ लेलिहानमुद्रायथा ॥ "तर्ज्जनीमध्यमानामांसमाकुर्य्यादधोमुखीम् । अनामायाङ्गिपेद्वद्धामृजुङ्कृत्वाकनिष्ठिकाम् ॥ लेलिहानात्ममुद्रेयञ्जीवन्यासेप्रकीर्त्तिता" ॥ पूर्व्वोक्तप्राणस्थापनरीतिर्यथा 'आंह्रीं क्रोंयंरंलंवंशंषंसंहोंॐक्षंसंहंसः ह्रींॐहंसः श्रीमद्दक्षिणकालिकायाःप्राणाइहप्राणाः । आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहोंॐक्षंसंहंसःह्रींॐहंसःश्रीमद्दक्षिणकालिकायाजीवइहस्थितः। आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहों ॐक्षंसंहंसःह्रीं ॐहंसः श्रीमद्दक्षिणकालिकायास्सर्व्वेन्द्रियाणिइहास्थितानि । आंह्रींक्रोंयंरंलंवंशंषंसंहोंसःॐक्षंसंहंसःश्रीमद्दक्षिणकालिकायावाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाइहागत्यसुखञ्चिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा॥ततोमूलमन्त्रेणार्घ्योदकेन त्रिःप्रोक्षणम्। 'शालग्रामेमणौयन्त्रेनावाहनविसर्ज्जने ॥ प्राणप्रतिष्ठाञ्चनकुर्य्यात्॥' योनिम्महायोनिञ्चबद्धाखङ्गमुण्डाऽभयवरमुद्रान्दर्शयेत्। महायोनिमुद्रायथा 'तर्ज्जन्यनामिकेमध्येकनिष्ठेचक्रमादपि । करयोर्य्योजयेच्चैवकनिष्ठामूलभेदतः । अङ्गुष्ठाग्रन्तुनिःक्षिप्यमहायोनिः प्रकीर्त्तिता ॥ अधोमुखीमिमाङ्कृत्वादर्शयेद्वीजपूर्व्विकाम् ॥' बीजम् ऐमिति ॥ योनिमुद्रायान्तु 'अङ्गुष्ठाग्रन्तुनानिःक्षिपेदिति ॥ खङ्गादिमुद्रातुस्पष्टैव । ततःपुष्पाञ्जलिन्दद्यात् ॥ तत्रएकम्पादे, द्वितीयञ्जानुनि, तृतीयन्नाभौ, चतुर्थंहृदये, मस्तकेपञ्चममिति । ततः पाद्यादि दद्यात् ॥ तद्यथा । "यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दसम्भवः॥ तस्मैतेचरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये" इति, मूलञ्चपठन् 'इदम्पाद्यन्दक्षिणकालिकायैनिवेदयामिनमः' इतिपूर्व्वोक्तपुष्पगन्धोशीररोचनश्यामाकविष्णुक्रान्ताब्जदूर्व्वायुतञ्जलमनामाङ्गुष्ठयोर्य्योगेनपादयोर्द्दद्यात् ॥ "ॐवेदानामपिवेदायदेवानान्देवतात्मने । आचमङ्कल्पयामीशिशुद्धानांशुद्धिहे

तवे" मूलञ्चपठन् 'इदमाचमनीयन्दक्षिणकालिकायैनिवेदया मि' इत्याचमनीयङ्कनिष्ठाहीनोन्नतसय्युँक्तचतुरङ्गुलीरूपाचमन मुद्रयाचन्दनपुष्पजातिकर्प्पूरकङ्कोलवङ्गतमालकादिचूर्णसय्युँ क्तजलम्मुखेदद्यात्॥"ॐसर्व्वकालुष्यहीनायैपरिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्क्कमिदन्देविकल्पयामिप्रसीदमे" मूलञ्च पठन्सय्युँक्ताधो मुख्यनामिकास्पृष्टाङ्गुष्ठात्मिकयामधुघृतशर्क्करादधिदुग्धसङ्घा तात्मकम्मधुपर्क्कम्मुखेदद्यात् ॥ "ॐउच्छिष्टोप्यशुचिर्व्वापिय स्याःस्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोतितस्यैते पुनराचमनीयकम्" इतिमूलञ्चपठन्पूर्व्ववदाचमनीयम्मुखेदद्यात् ॥ "ॐतापत्रयह रन्दिव्यम्परमानन्दलक्षणम् । तापत्रयविनिर्म्मुक्तन्तवार्घ्यङ्कल्प याम्यहम् ॥" इति, मूलञ्चपठन् 'इदमर्घ्यन्दक्षिणकालिकायै निवेदयामि एषोर्घः श्रीमद्दक्षिणकालिकायैस्वाहा' इत्यनेनप ठितेन कुशाग्राक्षततिलव्रीहियवाज्यासिद्धार्थपुष्पामिश्रितजला त्मकार्घ्यम्छिरसिसर्व्वाङ्गुलीसय्योगेनदद्यात्।ततोहरिद्राद्युद्वर्त्तन द्रव्यन्तैलञ्चदद्यात्॥ "ॐस्नेहङ्गृहाणस्नेहेनलोकमातर्म्महाशये। सर्व्वलोकेषुशुद्धात्मन्ददामिस्नेहमुत्तमम् ॥" मूलञ्चपठन् इदंहरि द्रादिद्रव्यन्तैलञ्चदक्षिणकालिकायैनिवेदयामि, नम' इत्युक्त्वा उद्वर्त्तयेत् ॥ "ॐपरमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्त्तये। साङ्गो पाङ्गमिदंस्नानङ्कल्पयाम्यहमीश्वरि" मूलञ्चपठन् 'इदंस्नानीय न्दक्षिणकालिकायैनिवेदयामि, इदंस्नानीयन्दक्षिणकालिकायैन मः' इतिपठित्वाकनिष्ठाहीनदक्षहस्तमुष्ट्यात्मिकयामुद्रयास्नानी यन्दद्यात् ॥ शतकृत्वःसहस्रकृत्वोयथाशक्ति वामूलम्पठन्स्नपये त्। "ॐमायाचित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे ॥ निवारणायविज्ञा नवासस्तेकल्पयाम्यहम्"मूलञ्चपठन्'इदव्वाँसोदक्षिणकालिका यैइत्याद्युक्तवाक्येन उत्तानदक्षिणहस्ताङ्गुष्ठस्पृष्टतन्मध्यमात्मि

कयारक्तव्वाँसो दद्यात् ॥ "ॐयामाश्रित्यमहादेवो जगत्संहारक स्सदा । तस्यै तेपरमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम्" इदमुत्तरी यन्दक्षिणकालिकायै इत्यादिवाक्येनपूर्वोक्तमुद्रयोत्तरीयन्दद्या त् ॥ ततोमूलेनाष्टोत्तरसहस्रशतदशान्यतमवारङ्गन्धोदकैर्देवीम भिषिञ्चेत् ॥ "ॐस्वभावसुन्दराङ्गायैनानाशक्त्याश्रितेशिवे॥भूष णानि विचित्राणिकल्पयाम्यमरार्चिते" 'एतानिभूषणानिदक्षिण कालिकायैनिवेदयामिनमः इतिवाक्येनदक्षहस्ताङ्गुष्ठस्पृष्टानामि कात्मिकयामुद्रयाभूषणानिदद्यात्॥ मूलमन्त्रेणसम्पुटितम्प्रत्येक मातृकाक्षरम्पठन्देवताङ्गेषुविन्यसेत् ॥ "ॐ परमानन्दसौभाग्यप रिपूर्णदिगन्तरे । गृहाणपरमङ्गन्धङ्कृपयापरमेश्वरि ॥" मूलञ्चप ठन् ' इदञ्चन्दनंश्रीदक्षिणकालिकायैनमः ' इतिवाक्येनकर्पू रमिश्रितश्रीखण्डचन्दनम्बहुचन्दनञ्चकनिष्ठाङ्गुष्ठसँय्योगेनदेव्य ङ्गेनिवेदयेत ॥ "ॐअक्षतान्धवलान्देवि स्वर्णरौप्यमयीकृ तान् । गृहाणजगदीशाने प्रसीद परमेश्वरि" ॥ मूलञ्चपठन् ' साङ्गायैसायुधायैसबलवाहनायै सपरिवारायैश्रीदक्षिणकालि कायैनिवेदयामिनमः ' इतिवाक्येनसर्व्वाङ्गुलीभिर्द्दद्यात् ॥ ततः "ॐ तुरीयवनसम्भूतन्नानागुणमनोहरम् ॥ अमन्दसौरभम्पु ष्पङ्गृह्यतामिदमुत्तमम्" ' एतानिपुष्पाणिदक्षिणकालिकायैवौ षट् ' इति , मूलञ्च पठंस्तर्ज्जन्यङ्गुष्ठयोगेन दद्यात् ॥ यथोत्पन्नम पर्य्युषितमच्छिद्रन्नवंशुभम्पुष्पन्दद्यात् ॥ अञ्जलिदानेत्वधोमुख ता न दोषाय ' श्वेतरक्तजवापुष्पकरवीरतगरजातीसेवन्तीयू थिकाधत्तूराशोकवकुलश्वेतकृष्णापराजिताबकपुष्पाबिल्वपत्रच म्पकनागकेशरमल्लिकाझिणिकाकाञ्चीबर्बरार्करक्तपद्मपुष्पाम लककोकनदबन्धूककेतक्याद्यन्यतमपुष्पान्निवेदयेत ॥ अर्कम न्दारौअतिप्रशस्तौ ॥ तुलसीम्मालतीव्वँर्ज्जयेत ॥ दूर्वयानार्चे

येत् ॥ धूपभाजनं'फट्' इतिसम्प्रोक्ष्य 'नम' इत्यभ्यर्च्यवायुबी जेनद्वादशवारजप्तेनसंशोष्य वामहस्ततले दक्षहस्तपृष्ठन्निवेश्य 'रम्' इतिबीजेन षोडशवारजप्तेन सन्दह्य वामहस्तपृष्ठे दक्षह स्ततलन्निवेश्य, 'वँ' इतिषोडशवारजप्तेन धेनुमुद्रयाऽमृतीकृ त्य, मूलेनाष्टशोऽभिमन्त्र्य 'जयध्वनिमन्त्रमातःस्वाहा' इतिव ण्टांसम्पूज्यवामतर्ज्जन्यासंस्पृश्यमूलम्पठन् "ॐवनस्पतिरसो पेतोगन्धाढ्यः सुमनोहरः ॥ आघ्रेयः सर्व्वदेवानान्धूपोऽयम्प्र तिगृह्यताम्" 'एषधूपःश्रीदक्षिणकालिकायैनमः' इतिशङ्खा म्बु प्रक्षिपेद्भूमौततो वामहस्तेनघण्टाँव्वादयन् दक्षतर्ज्जन्यङ्गुष्ठयो गेनधूपमुद्रान्दर्शयन् देवतागुणान्कीर्त्तयन्नाभिदेशतोधूपयेत् ॥ पुष्पाञ्जलित्रयन्दद्यात् ॥ एवन्दीपदानप्रकारः "ॐसुप्रकाशो महादीपः सर्व्वतस्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्द्दीपो यम्प्रतिगृह्यताम्" इति, मूलञ्चपठन् मध्यमाङ्गुष्ठयोगेनदीपमु द्राम्प्रदर्श्य नेत्रप्रदेशेदीपन्दर्शयेत्॥ घृतदीपो दक्षिणेदेयस्तैल दीपोवामतः, स्वर्णादिभाजनेसाज्यशर्करपायसादिकम्परिविष्य चतुरस्रेनिधाय 'फट्' इतिमन्त्रेणचक्रमुद्रयाऽभिरक्ष्यद्वादशवा रजप्तेन 'यम्' इतिवायुबीजेनसंशोष्यवामहस्ततलेदक्षहस्तपृष्ठं निवेश्य'रम्' इतिवह्निबीजेन द्वादशवारजप्तेन सन्दह्य दक्षकरा ग्रेण संस्पृश्य 'वम्' इतिसुधाबीजेनधेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्यमूलम न्त्रेणकराभ्यां संस्पृश्यअष्टधाचाभिमन्त्र्यधेनुमुद्राम्प्रदर्श्यगन्ध पुष्पैः समभ्यर्च्य 'तत्त्वाख्यमुद्रया देव्यै नैवेद्यं हि निवेदयेत् ॥' 'ॐसत्पात्रसिद्धंसहविर्व्विविधानेकभक्षणम् ॥ निवेदयामिदेवेशि कृपयात्वङ्गृहाणतत्' ॥ इतिपठन् ग्रासमुद्राम्प्रदर्श्यशङ्खोदकेन निवेदयेत् ॥ ततः "ॐसमस्तदेवदेवेशिसर्व्वतृप्तिकरम्परम् ॥ अखण्डानन्दसम्पूर्ण्णं गृहाणजलमुत्तमम् ॥" इतिपानीयमाचम

नीयञ्चदत्त्वाचुलुकँव्विधिवद्दद्यात् ॥ पञ्चमुद्राःप्राणापानसमा नोदानव्यानाख्याःप्रदर्शयेत् ॥ तद्यथा कनिष्ठानामिकाभ्या म्प्राणमुद्रा । मध्यमातर्ज्जनीभ्यामपानाख्या ! अनामामध्यमा भ्यांसमानाख्या । अनामातर्ज्जनीभ्यामुदानाख्या । सर्व्वाङ्गुली भिर्व्यानाख्या।ततोमूलेनताम्बूलं साधकस्तत्त्वमुद्रया एलालव ङ्गकर्प्पूरजातीफलादिसय्युँतन्तमालदलकर्प्पूरपूगेरितम्मुदान्वि तान्ध्यायन्' 'फट्' इतिसम्प्रोक्ष्य 'नमः' इत्यभ्यर्च्चर्यवायुवीजे नद्वादशवारजप्तेनसंशोष्य वामहस्ततलेदक्षहस्तपृष्ठेनिवेश्य 'रम् ' इतिबीजेनद्वादशवारजप्तेनसन्दह्यवामहस्तपृष्ठदक्षहस्त तलन्निवेश्य 'वम्' इतिसुधाबीजेनधेनुमुद्रयाअमृतीकृत्यमूलेना ष्टवारमभिमन्त्र्य "ॐएलालवङ्गकर्प्पूरनागवल्लीदलैर्य्युतम् ॥ पू गभागेरितन्देवि ताम्बूलङ्गृह्यतान्नमः" मूलम्पठन् 'इदन्ताम्बूलं श्रीदक्षिणकालिकायै निवेदयामिनमः' इतिमुखप्रदेशेतत्त्वमुद्र याद्दद्यात् ॥ ततःपुष्पाञ्जलिङ्गृहीत्वा 'ॐसँव्विन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये ॥ अनुज्ञान्दक्षिणेदेहिपरिवारार्च्चनायमे ॥ तत्र प्रथमं षडङ्गपूजाअग्नीशासुरवायव्येषुमध्येदिक्षुचषडङ्गशक्तिः पूजयेत् ॥ तासान्ध्यानन्तु ' तुषारस्फटिकश्यामनीलकृष्णारु णास्तथा ॥ वरदाभयधारिण्यःप्रधानतनवः स्त्रियः' इतिध्यात्वा 'हृदयदेवतेइहागच्छइहतिष्ठक्रांहृदयायनमः श्रीपादुकाम्पूज जयामि' इतिसम्पूज्य, ततः 'शिरोदेवतेइहागच्छइहतिष्ठक्रीं शिरसेस्वाहाश्रीपादुकाम्पूजयामि' 'शिखादेवतेइहागच्छइ हतिष्ठक्रूंशिखायै वषट्श्रीपादुकाम्पूजयामि' 'कवचदेवतेइहाग च्छइहतिष्ठक्रैंकवचायहूम् ॥ श्रीपादुकाम्पूजयामि ' 'नेत्रत्रयदेव तेइहागच्छइह तिष्ठक्रौंनेत्रत्रयायवौषट्श्रीपादुकाम्पूजयामि ' 'अ स्त्रदेवतेइहागच्छइहतिष्ठ क्रःअस्त्रायफट्श्रीपादुकाम्पूजयामि '

ततोवायव्यादीशानपर्य्यन्तङ्गुरुपङ्क्तिम्पूजयेत् ॥ तत्रगुरुक्रमोय था "महादेवीमहादेवास्त्रिपुरश्चैवभैरवः॥दिव्यौघागुरवः प्रोक्तास्सि द्धौघान्कथयामिते । ब्रह्मानन्दः पूर्णदेवश्चलच्चित्तश्चलाचलः । कुमारः क्रोधनश्चैववरदस्स्मरदीपनः । मायामायावतीचैवमान वौघाञ्छृणुप्रिये ॥ विमलः कुशलश्चैवश्रीमत्सेनस्सुधाकरः ॥ प्र ल्हादस्सनकश्चैववसिष्ठोबोधएवच ॥ मीनोगोरक्षकश्चैवभोजदे वः प्रजापतिः ॥ मूलदेवोरन्तिदेवोविघ्नेश्वरहुताशनौ ॥ समया नन्दसन्तोषौकालिकागुरवस्तथा ॥ आनन्दनाथशब्दान्तेगुरव स्सर्वसिद्धिदाः ॥ स्त्रियोपिगुरुरूपाश्चेदम्बान्ताः परिकीर्त्ति ताः" ॥ ततःपूजा 'महादेव्यम्बइहागच्छइहतिष्ठमहादेव्यम्बाश्री पादुकाम्पूजयामि ॥ महादेवानन्दनाथइहागच्छइहतिष्ठमहादेवा नन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि ॥ त्रिपुरानन्दनाथइहागच्छइह तिष्ठ त्रिपुरानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि ॥ भैरवानन्दनाथइ हागच्छइहतिष्ठ भैरवानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि ॥ अथ सिद्धौघइहागच्छत इहतिष्ठत ब्रह्मानन्दानन्दनाथश्रीपादुका म्पूजयामि । पूर्णदेवानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । चलच्चि त्तानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । चलाचलानन्दनाथश्रीपा दुकाम्पूजयामि । कुमारानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । क्रोधा नन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । वरदानन्दनाथश्रीपादुकाम्पू जयामि । स्मरदीपनानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । माया म्बाश्रीपादुकाम्पूजयामि । मायावत्यम्बाश्रीपादुकाम्पूजयामि"॥ ॥ इति ॥ अथमानवौघाइहागच्छतइहतिष्ठत ॥ विमलानन्द नाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । कुशलानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजया मि । श्रीमत्सेनानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि ॥ सुधाकरानन्द नाथ श्रीपादुकाम्पूजयामि । प्रल्हादानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूज

यामि । सनकानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । वसिष्ठानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । बोधानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । मीनानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । गोरक्षकानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । भोजदेवानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । प्रजापत्यानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । मूलदेवानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । रन्तिदेवानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । विघ्नेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । हुताशनानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । समयानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि ॥ सन्तोषानन्दनाथश्रीपादुकाम्पूजयामि । " ततोनिजगुरुंपुरोध्यात्वा पञ्चोपचारैस्सम्पूज्य, ततः " ॐअभीष्टसिद्धिम्मेदेहिशरणागतपालिके । भक्त्यासमर्प्पयेतुभ्यमिदमावरणार्च्चनम् " इतिमूलञ्चपठन् पुष्पचन्दनयुतशङ्खोदकेनदेव्या वामहस्ते आवरणपूजांसमर्प्पयेत् ततोरश्मिवृन्ददेवताः पूजयेत् ॥ तासान्ध्यानय्यँथा " सर्व्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमालाविभूषिताः । तर्ज्जनीँवामहस्तेनधारयन्त्यश्च सस्मिताः " ॥ बाह्यात्रिकोणस्यसम्मुखकोणे ' ॐकालीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ' इतिपाद्यादिभिस्त्रिः कालींसम्पूजयेत् ॥ एवन्देव्या वामे ' ॐकपालिनीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ' इति ॥ दक्षे ' ॐकुल्लाश्रीपादुकाम्पूजयामि ' इत्यादि ॥ तदन्तस्त्रिकोणसम्मुखे ' ॐकुरुकुल्लाश्रीपादुकाम्पूजयामि ' इत्यादि ॥ वामे ' ॐविरोधिनीश्रीपादुकाम्पूजयामि ' इत्यादि ॥ दक्षे ' ॐविप्रचित्ताश्रीपादुकाम्पूजयामि ' इत्यादि ॥ तदन्तास्त्रिकोणसम्मुखे ' ॐउग्राश्रीपादुकापूजयामि ' इत्यादि ॥ ततोवामे ' ॐउग्रप्रभाश्रीपादुकाम्पूजयामि ' इत्यादि ॥ दक्षे ' ॐदीप्ताश्रीपादुकाम्पूजयामि ' इत्यादि ॥ तदन्तास्त्रिकोणसम्मुखे ' ॐनीलाश्रीपादुका

म्पूजयामि' इत्यादि ॥ वामे 'ॐघनाश्रीपादुकाम्पूजयामि' इत्यादि ॥ दक्षे 'ॐबलाकाश्रीपादुकाम्पूजयामि' इत्यादि ॥ तदन्तस्त्रिकोणेसम्मुखे 'ॐमात्राश्रीपादुकाम्पूजयामि' इत्यादि ॥ वामे 'ॐमुद्राश्रीपादुकाम्पूजयामि' इत्यादि ॥ दक्षे 'ॐमित्राश्रीपादुकाम्पूजयामि' इत्यादि ॥ पूर्वोक्तवाक्यैः पाद्यादिभिःपूजयेत्॥ ततो देव्या दक्षे 'ह्सौंमहाकालायहूंफट्' इतिमन्त्रेणमहाकालम्पूजयेत् ॥ कुलार्णवेतु 'ॐह्रींक्ष्मींहूंमहाकालायह्सौंमहादेवाय क्रींकालिकायै ह्रौं' इतिमहाकालमन्त्रः ॥ तद्ध्यानन्तु 'अञ्जनाद्रिनिभन्देवम्पिङ्गकेशन्द्विबाहुकम् ॥ आशाम्बरंसर्प्पभूषाभूषितम्प्रणमामितम् ' इतिध्यात्वापूर्व्वोक्तमन्त्रद्वयान्यतरेणमहाकालम्पूजयेत् ॥ ततः 'ॐअभीष्टसिद्धिम्मेदेहिशरणागतपालिके । भक्त्यासमर्प्पयेतुभ्यमिदमावरणार्च्चनम्' इतिमन्त्रेण शङ्खोदकादिना देव्या वामहस्ते आवरणार्च्चनं समर्प्पयेत् ॥ ततोष्टदलेपूर्व्वादिक्रमेणाष्टशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्व्वे'ॐआंब्रह्माणीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः इत्यादिवाक्येनपाद्यादिभिस्त्रिस्सम्पूजयेत् ॥ अग्निकोणे 'ॐईंश्रीनारायणीश्रीपादुकाम्पूजयामि' इत्यादि॥ दक्षिणे 'ॐ ऊंमाहेश्वरीश्रीपादुकाम्पूजयामि'इत्यादि॥ नैर्ऋते 'ॐॠंश्रीचामुण्डाश्रीपादुकाम्पूजयामिइत्यादि' ॥ पश्चिमे 'ॐलृंकौमारीश्रीपादुकाम्पूजयामि'इत्यादि ॥ वायव्ये 'ॐऐं अपराजिताश्रीपादुकाम्पूजयामि'इत्यादि ॥ उत्तरे 'ॐऔंवाराहीश्रीपादुकाम्पूजयामि'इत्यादि ॥ ईशाने 'ॐअः नारसिंहीश्रीपादुकाम्पूजयामि'इत्यादि ॥ आसान्ध्यानन्तुपूजनतःपूर्व्वमेवकर्त्तव्यम् ॥ तद्यथा 'दण्डङ्कमण्डलुम्पश्चादक्षसूत्रम्महाभयम् । बिभ्रतीकनकच्छायाम्ब्राह्मीकृष्णाजिनोज्ज्वला ॥ १ ॥ शूलम्परश्वधङ्क्षुद्रदुन्दुभीनृकरोटिकाम् ॥ वहन्तीहिमसङ्काशाध्येयामाहेश्व

रीशुभा ॥ २ ॥ अङ्कुशन्दण्डखट्वाङ्गौपाशञ्चदधतीकरैः ॥ बन्धूकपुष्पसङ्काशाकुमारीकामदायिनी ॥ ३ ॥ चक्रङ्घण्टाङ्कपालञ्चशङ्खञ्चदधतीकरैः ॥ तमालश्यामलाध्येयावैष्णवीविभ्रमोज्ज्वला ॥ ४ ॥ मुशलङ्करवालञ्चखेटकन्दधतीहलम् ॥ करैश्चतुर्भिर्व्वाराहीध्येयाकालघनच्छविः ॥ ५ ॥ अङ्कुशन्तोमरँव्विद्युत्कुलिशम्बिभ्रतीकरैः ॥ इन्द्रनीलनिभेन्द्राणीध्येयासर्वसमृद्धिदा ॥ ६ ॥ शूलङ्कृपाणंनृशिरःकपालन्दधतीकरैः ॥ मुण्डस्रङ्मण्डिताध्येयाचामुण्डारक्तविग्रहा ॥ ६ ॥ अक्षस्रजम्बीजपूरङ्कपालन्दधतीकरैः॥वहन्तीहेमसङ्काशामोहलक्ष्मीस्समीरिता॥९॥' इति ॥ ततः " अभीष्टसिद्धिम्मेदेहिशरणागतपालिके । भक्त्या समर्प्पयेतुभ्यमिदमावरणार्च्चनम् " इतिमूलञ्चपठन्पुष्पचन्दनयुतशङ्खोकेनदेव्यावामहस्तेसमर्प्पयेत् ॥ ततःयन्त्राग्रेभैरवान्पूजयेत् ॥ तत्रप्रथमन्ध्यानङ्कुर्य्यात् ॥ तद्यथा ' भीषणास्यान्त्रिनयनमर्द्धचन्द्रविभूषितम् ॥ स्फटिकाभङ्कङ्कणादिभूषाशतसमायुतम् ॥ अष्टवर्षवयस्कञ्चकुन्तलोल्लसितम्भजे ॥ धारयन्तन्दण्डशूलेभैरव्यादिसमायुतम् ' इतिध्यात्वापूजयेत् ॥ पूजाक्रमस्तु ' ऐंह्रींअं असिताङ्गभैरवश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ऐंह्रींइंरुरुभैरवश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ ऐंह्रींउंचण्डभैरवश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । ऐंह्रींऋंक्रोधभैरवश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ ऐंह्रींलंउन्मत्तभैरवश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ ऐंह्रींएंकपालिभैरवश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ ऐंह्रींओंभीषणभैरवश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ ऐंह्रींअंसंहारभैरवश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ ' इतिवामावर्त्तेनपूजयेत् ॥ तत्रैवपूर्व्वादितोवामावर्त्तेनाष्टभैरवीःप्रत्येकन्तत्तन्नामाक्षरैस्तास्ताःपूजयेत् ॥ तत्रासान्ध्यानन्तु ' भावयेचमहादेवीश्चन्द्रकोटियुतप्रभाम् ॥

हिमकुन्देन्दुधवलाम्पञ्चवक्त्रान्त्रिलोचनाम् ॥ अष्टादशभुजैर्य्युक्तांसर्व्वानन्दकरोद्यताम् ॥ प्रहसन्तींविशालाक्षीन्देवदेवस्य सम्मुखीम् ' इतिध्यात्वापूजयेत् । यथा 'श्रीभैरवीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । महाभैरवीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । सिंह भैरवीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । धूम्रभैरवीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । भीमभैरवीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । उन्मत्तभैरवी श्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । वशीकरणभैरवीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ मोहनभैरवीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ ' ततः 'ॐ अभीष्टसिद्धिम्मेदेहिशरणागतपालिके ।भक्त्यासमर्प्पयेतुभ्यमिदमावरणार्च्चनम् ' इतिमन्त्रेण देव्या वामहस्ते आवरणार्च्चनं समर्प्पयेत् ततोयन्त्रबाह्येइन्द्रादीन्पूजयेत् ॥ तेषान्ध्यानय्यँथा' इन्द्रं नीलवर्णमैरावतवाहनव्वँज्रहस्तम्मुकुटधारिणंसहस्राक्षन्ध्यायेत् ॥ वन्हिरक्तवर्णंशक्तिहस्तन्त्रिनेत्रम्मेषवाहनन्ध्यायेत् ॥ यमम्महिषवाहनन्दण्डपाशधरंश्यामन्ध्यायेत् ॥ निर्ऋतिंश्यामवर्णङ्खड्गहस्तम्मृतपुरुषवाहनन्ध्यायेत् ॥वरुणम्पाशहस्तम्मकरवाहनंशुद्धवर्णन्ध्यायेत्॥वायुमङ्कुशहस्तम्मृगवाहनन्नीलवर्णन्ध्यायेत्॥कुबेरङ्गदाहस्तम्मर्त्त्यवाहनंश्यामवर्णन्ध्यायेत् ॥ ईशानंशूलहस्तव्वृँषभवाहनन्त्रिनेत्रङ्गौरवर्णन्ध्यायेत् ॥ हंसमारूढंस्वर्णञ्चचतुर्व्वक्त्रन्दण्डत्रयाक्षसूत्रङ्कमण्डलुन्दधतञ्जटाजूटधरम्ब्रह्माणन्ध्यायेत्॥ श्यामङ्गरुडवाहनंशङ्खचक्रगदापद्मधारिणञ्चतुर्हस्तन्नानालङ्कारसय्युँक्तव्विँष्णुन्ध्यायेत्, ॥ इतिध्यात्वा 'इन्द्रादयइहागच्छतइहतिष्ठत'इत्यावाह्य ॥ पूर्व्वादितोवामावर्त्तेनपूजयेद्यथा 'लं इन्द्रश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः। रंवन्हिश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः। यंयमश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ क्षंनिर्ऋतिश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः। वंवरुणश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः।यंवायुश्रीपादुकाम्पूज

यामिनमः। इंकुबेरश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ ह्रोंईशानश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । ह्रौंब्रह्मश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः। ततः ॐ विष्णुश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥'अभीष्टसिद्धिम्मे देहि शरणागतपालिके ॥ भक्त्यासमर्प्पयेतुभ्यमिदमावरणार्च्चनम्' इतिमन्त्रेणदेव्याः वामहस्तेआवरणार्च्चनंसमर्प्पयेत् ॥ ततो वामावर्त्तेनतत्तत्स्थलेअस्त्राणिपूजयेद्यथा ' वंवज्रश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः॥ शंशक्तिश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ दंदण्डश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ खंखड्गश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ पंपाशश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ अंअङ्कुशश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ गंगदाश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ शंशूलश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः ॥ पंपद्मश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः॥ चंचक्रश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः॥ ततः ' अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतपालिके ॥ भक्त्यासमर्प्पयेतुभ्यमिदमावरणार्च्चनम्' इतिमन्त्रेणदेव्यावामकरेआवरणार्च्चनंसमर्प्पयेत् ॥ ततःदेव्या वामोर्ध्वहस्ते खंखड्गश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । तदधःमंमुण्डश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । दक्षोर्द्ध्वेअंअभयश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः। तदधःवंवरश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः। " ॐअभीष्टसिद्धिम्मेदेहिशरणागतपालिके ॥भक्त्यासमर्प्पयेतुभ्यमिदमावरणार्च्चनम्' इतिमंत्रेणआवरणार्च्चनंदेव्यावामकरेसमर्प्पयेत् ॥ पुष्पाञ्जलित्रयन्देव्याः पादयोर्दद्यात् ॥ ततष्षडङ्गन्यासम्पूर्वोक्तकुर्य्यात् ॥ तद्यथा क्रांहृदयायनमः। क्रींशिरसेस्वाहा। क्रूंशिखायैवषट् । क्रैंकवचायहूम् । क्रौंनेत्रत्रयायवौषट्। क्रःअस्त्रायफट्। एवन्न्यासव्विँधाय, गन्धपुष्पाक्षतैर्देवींसम्पूज्य, मूलम्पठन् 'श्रीमद्दक्षिणकालीन्देवीन्तर्प्पयामिनमः' इतिमन्त्रेण मधुकर्प्पूरमिश्रितैर्ज्जलैर्द्वादशधा तर्प्पयेत् ॥ ततोघण्टाव्वँादयंस्ततोजपङ्कु

य्यात् । तत्र पूर्व्वोक्तक्रमेण प्राणायामंषडङ्गन्यासञ्च विदध्यात्॥ तद्यथा क्रींबीजेन १६ षोडशधापूरक ६४ चतुष्षष्टिकुम्भक३२ द्वात्रिंशद्रेचकैस्त्रिवारम्प्राणानायम्य, ततोन्यासः 'क्रांहृदयायनमः क्रींशिरसेस्वाहा क्रूंशिखायैवषट् क्रैंकवचायहूम् क्रौंनेत्रत्रयायवौषट् क्रःअस्त्रायफट् ततः ॐ मालेमालेमहामालेसर्व्वतत्त्वस्वरूपिणो । चतुर्व्वर्ग्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मेसिद्धिदाभव ॥ ॐह्रींमालायैनमः' इत्यनेनमालान्दक्षिणकरेनिधायहृत्प्रदेशेसमानीय, मध्यभागेनगुटिकाम्प्रत्येकंसंस्पृशन्मेरुमलङ्घयन्स्वशरीरेकामकलांविभाव्य, शिरसिगुरुन्ध्यात्वा, हृदिदेवीम्भावयाजिह्वायाम्मन्त्रन्दीपरूपिणांविभाव्यतत्प्रभापटलेजिह्वामपिदीपरूपांविभाव्य, मनसा, उपांशुना, वा करमालया, वर्ण्णमालया, वा संस्कृत महाशङ्खरुद्राक्षस्फटिकाद्यन्यतममालया, वा अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतवांद्रुतमविलम्बितम्प्रजप्य, मालां शिरसि "ॐत्वम्माले सर्व्वभूतानांसर्व्वलोकप्रियामता ॥ शिवङ्कुरुष्वमेभद्रेयशोवीर्य्यञ्च सर्व्वदा"॥ इतिपठन्निधाय "ह्रींसिद्ध्यैनमः" इतिसम्पूज्य पुनःप्राणायामन्न्यासादिकञ्चविधाय, यथाक्रींबीजेन १६पूरक ६४ कुम्भक ३२रेचकैस्त्रिवारम्प्राणानायम्य॥ततोन्यासः॥क्रांहृदयायनमः। क्रींशिरसेस्वाहा । क्रूंशिखायैवषट् । क्रैंकवचायहूं । क्रौंनेत्रत्रयाय वौषट् , क्रःअस्त्रायफट्, इतिन्यासादिकृत्वा, ततोदेवताम्पुष्पाक्षतादिभिःसम्पूज्य, पुष्पचन्दनाक्षतयुतशङ्खोदकेन " ॐगुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ॥ सिद्धिर्भवतुमेदेवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि" इतिमन्त्रेण देव्या वामकरे तेजोमयञ्जलन्ध्यात्वा जपंसमर्प्पयेत्॥ ततो मालां शिरस उत्तार्य्य "ॐत्वम्मालेसर्व्वदेवानां सर्व्वसिद्धिप्रदा मता ॥ तेन सत्येन मे सिद्धिन्देहि मातर्न्नमोस्तुते " इत्यमुम्मन्त्रम्पठन्सम्पूज्य , यत्नतो गोप

येत् ॥ ततोदेव्यै पुष्पाञ्जल्यष्टकन्दत्वा स्तोत्रकवचादिकम्पठेत् ॥ कराङ्कंशेतच्छान्त्यर्थमष्टोत्तरशतम्मूलञ्जपेत् ॥ ततो वामे चतुरस्रम्मण्डलँव्विधाय, किञ्चित्पात्रेसंस्थाप्य, तस्मिन्मांसमाषान्नशाकाज्यपायसापूपकाद्यन्यतमवलिँव्विधाय 'फट्' इतिसम्प्रोक्ष्य 'नमः' इत्यभ्यर्च्य 'यम्' इतिवायुबीजेन द्वादशवारजप्तेनसंशोष्य, वामहस्ततले दक्षहस्तपृष्ठन्निवेश्य 'रम्' इतिवन्हिबीजेनषोडशवारजप्तेन धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य 'हूम्' इत्यवगुण्ठययोनिधेनुमुद्रेदर्शयित्वा, तत्त्वमुद्राञ्च प्रदर्श्य 'ॐक्रींश्रींदक्षिणकालिकायै स्वाहा एषवलिर्न्नमः' इत्युत्सृज्यनैर्ऋत्यान्दिशिधारयेत् ॥ एषानित्यवलिदानमन्त्रः ॥ रात्रौकाम्यवलिर्देयः ॥ तत्रमन्त्रस्तु "ॐपद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावति महायक्षाधिपतये मयोपनीतमिमं बलिं गृह्णगृह्णगृह्णापयगृह्णापय मम सर्व्वशान्तिङ्कुरुकुरु परविद्याञ्चाकृष्याकृष्य छिन्धि ह्लींहूंस्वाहा" इतिमन्त्रेणचतुष्पथादिस्थाने पूर्व्वोक्तशोधनँव्विधाय तत्वमुद्राम्प्रदर्श्य मांसाद्यन्यतमबलिन्दद्यात् ॥ अधिकभक्त्युत्तरशक्तिकालादिलाभेचतुर्थ्यन्तैः प्रत्येकैस्सहस्रनामस्तोत्रान्तर्गतनामभिः पुष्पादिनाकालीम्पूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ ओंक्रींकाल्यै नमः १ क्रूँकराल्यै नमः २ कल्याण्यै नमः ३ कमलायै नमः ७ कलायै नमः ५ कलावत्यै नमः ६ कलाढ्यायै नमः ४ कलापूज्यायै नमः ८ कलात्मिकायै नमः ९ कलाहृष्टायै नमः १० कलापुष्टायै नमः ११ कलामस्तायै नमः १२ कलाकरायै नमः १३ कलाकोटिसमाभासायै नमः १४ कलाकोटिप्रपूजितायै नमः १५ कलाकर्म्मकलाधारायै नमः १६ कलापरायै नमः १७ कलागमायै नमः १८ कलधारायै नमः १९ कमलिन्यै नमः २० ककारायै नमः २१ करुणायै नमः २२ क

ण्यै नमः २३ ककारवर्णसर्व्वाङ्ग्यै नमः २४ कलाकोटिप्रभूषितायै नमः २५ ककारकोटिगुणितायै नमः २६ ककारकोटिभूषणायै नमः २७ ककारवर्णहृदयायै नमः २८ ककारमनुमण्डितायै नमः २९ ककारवर्णनिलयायै नमः ३० काकशब्दपरायणायै नमः ३१ ककारवर्णमुकुटायैनमः ३२ ककारवर्णभूषणायै नमः ३३ ककारवर्णरूपायैनमः ३४ काकशब्दपरायणायैनमः ३५ ककवीरास्फालरतायै नमः ३६ कमलाकरपूजितायै नमः ३७ कमलाकरनाथायै नमः ३८ कमलाकररूपधृषे नमः ३९ कमलाकरसिद्धिस्थायै नमः ४० कमलाकरपारदायै नमः ४१ कमलाकरमध्यस्थायै नमः ४२ कमलाकरतोषितायै नमः ४३ कथङ्कारपरालापायै नमः ४४ कथङ्कारपरायणायै नमः ४५ कथङ्कारपदान्तस्थायै नमः ४६ कथङ्कारपदार्थभुवे नमः ४७ कमलाक्ष्यै नमः ४८ कमलजायै नमः ४९ कमलाक्षप्रपूजितायै नमः ५० कमलाक्षवरोद्युक्तायै नमः ५१ ककारायै नमः ५२ कर्बूराक्षरायै नमः ५३ करतारायै नमः ५४ कराच्छिन्नायै नमः ५५ करश्यामायै नमः ५६ करार्ण्णवायै नमः ५७ करपूज्यायै नमः ५८ कररतायै नमः ५९ करदायै नमः ६० करपूजितायै नमः ६१ करतोयायै नमः ६२ करामर्षायै नमः ६३ कर्म्मनाशायै नमः ६४ करप्रियायै नमः ६५ करप्राणायै नमः ६६ करकजायै नमः ६७ करकायै नमः ६८ करकान्तरायै नमः ६९ करकाचलरूपायै नमः ७० करकाचलशोभिन्यै नमः ७१ करकाचलपुत्र्यै नमः ७२ करकाचलतोषितायै नमः ७३ करकाचलगेहस्थायै नमः ७४ करकाचलरक्षिण्यै नमः ७५ करकाचलसम्मान्यायै नमः ७६ करकाचलकारिण्यै नमः ७७ करकाचलवर्षाढ्यायै नमः ७८ करकाचलरञ्जितायै नमः ७९

करकाचलकान्तारायै नमः ८० करकाचलमालिन्यै नमः ८१ करकाचलभोज्यायै नमः८२करकाचलरूपिण्यै नमः ८३करामलकसंस्थायै नमः८४ करामलकासिद्धिदायै नमः ८५ करामलकसम्पूज्यायै नमः ८६ करामलकतारिण्यै नमः ८७ करामलककाल्यै नमः ८८ करामलकरोचिन्यै नमः ८९ करामलकमात्रे नमः ९० करामलकसेविन्यै नमः ९१ करामलकवद्ध्येयायै नमः ९२ करामलकदायिन्यै नमः ९३ कञ्जनेत्रायै नमः ९४कञ्जमत्यै नमः ९५ कञ्जस्थायै नमः ९६ कञ्जधारिण्यै नमः ९७ कञ्जमालाप्रियकर्य्यै नमः ९८ कञ्जरूपायै नमः ९९ कञ्जजायै नमः १०० कञ्जजात्यै नमः १०१ कञ्जगत्यै नमः १०२ कञ्जहोमपरायणायै नमः १०३ कञ्जमण्डलमध्यस्थायै नमः १०४ कञ्जाभरणभूषितायै नमः १०५ कञ्जसम्माननिरतायै नमः १०६ कञ्जोत्पत्तिपरायणायै नमः १०७ कञ्जराशिसमाकारायै नमः १०८ कञ्जारण्यनिवासिन्यै नमः१०९करञ्जवृक्षमध्यस्थायै नमः ११०करञ्जवृक्षवासिन्यैनमः१११करञ्जफलभूषाढ्यायैनमः ११२ करञ्जारण्यवासिन्यै नमः ११३ करञ्जमालाभरणायै नमः ११४ करवालपरायणायै नमः ११५ करवालप्रहृष्टात्मने नमः ११६ करवालप्रियागत्यै नमः ११७ करवालप्रियाकन्थायै नमः ११८ करवालविहारिण्यै नमः ११९ करवालमय्यै नमः १२० कर्म्मायै नमः १२१ करवालप्रियङ्कर्य्यै नमः १२२ कबन्धमालाभरणायै नमः १२३ कबन्धराशिमध्यगायै नमः १२४ कबन्धकूटसंस्थानायैनमः१२५ कबन्धानन्तभूषणायैनमः १२६ कबन्धनादसन्तुष्टायैनमः १२७ कबन्धासनधारिण्यै नमः १२८ कबन्धगृहमध्यस्थायै नमः १२९ कबन्धवनवासिन्यै नमः १३० कबन्धकाञ्च्यै नमः १३१ करण्यै नमः १३२ कबन्ध

राशिभूषणायै नमः १३३ कबन्धमालाजयदायै नमः १३४ कबन्धदेहवासिन्यैनमः १३५ कबन्धासनमान्यायैनमः १३६ कपालमाल्यधारिण्यै नमः १३७ कपालमालामध्यस्थायै नमः १३८ कपालव्रततोषितायैनमः १३९ कपालदीपसन्तुष्टायैनमः १४० कपालदीपरूपिण्यै नमः १४१ कपालदीपवरदायैनमः १४२ कपालकज्जलस्थितायैनमः १४३ कपालमालाजयदायैनमः १४४ कपालजलतोषिण्यैनमः १४५ कपालसिद्धिसंहृष्टायैनमः १४६ कपालभोजनोद्यतायैनमः १४७ कपालव्रतसंस्थानायैनमः १४८ कपालकमलालयायैनमः१४९ कवित्वामृतसारायैनमः १५० कवित्वामृतसागरायैनमः १५१ कवित्वसिद्धिसंहृष्टायैनमः १५२ कवित्वादानकारिण्यैनमः१५३ कविपूज्यायैनमः १५४ कविगत्यैनमः १५५ कविरूपायैनमः १५६ कविप्रियायैनमः १५७ कविब्रह्मानन्दरूपायैनमः १५८ कवित्वव्रततोषितायैनमः १५९ कवित्वव्रतसंस्थानायैनमः१६० कविवाञ्छाप्रपूरिण्यैनमः १६१ कविकण्ठास्थितायैनमः १६२ कंह्रींकंकंकंकविपूर्त्तिदायैनमः १६३ कज्जलायैनमः १६४कज्जलदानमानसायैनमः १६५ कज्जलप्रियायैनमः १६६ कपालकज्जलसमायैनमः १६७ कज्जलेशप्रपूजितायैनमः १६८ कज्जलार्णवमध्यस्थायैनमः १६९ कज्जलानन्दरूपिण्यैनमः १७० कज्जलप्रियसन्तुष्टायैनमः १७१ कज्जलप्रियतोषिण्यैनमः १७२ कपालमालाभरणायैनमः १७३ कपालकरभूषणायैनमः १७४ कपालकरभूषाढ्यायैनमः १७५ कपालचक्रमण्डितायैनमः १७६ कपालकोटिनिलयायैनमः १७७ कपालदुर्गकारिण्यैनमः १७८ कपालगिरिसंस्थानायैनमः १७९ कपालचक्रवासिन्यैनमः १८० कपालपात्रसन्तुष्टायैनमः १८१ कपालार्घ्यपरायणायैनमः१८२

कपालार्घ्यप्रियप्राणायैनमः १८३ कपालार्घ्यवरप्रदायैनमः १८४ कपालचक्ररूपायैनमः १८५ कपालरूपमात्रगायैनमः १८६ कदल्यैनमः १८७ कदलीरूपायैनमः १८८ कदलीवन वासिन्यैनमः १८९ कदलीपुष्पसम्प्रीतायैनमः १९० कदली फलमानसायैनमः १९१ कदलीहोमसन्तुष्टायैनमः १९२ कद लीदर्शनोद्यतायैनमः १९३ कदलीगर्भमध्यस्थायैनमः १९४ कदलीवनसुन्दर्य्यैनमः १९५ कदम्बपुष्पनिलयायैनमः १९६ कदम्बवनमध्यगायैनमः १९७ कदम्बकुसुमामोदायैनमः १९८ कदम्बवनतोषिण्यैनमः १९९ कदम्बपुष्पसम्पूज्यायैनमः २०० कदम्बपुष्पहोमदायैनमः २०१ कदम्बपुष्पमध्यस्थायैनमः २०२ कदम्बफलभोजिन्यैनमः २०३ कदम्बकाननान्तस्था यैनमः २०४ कदम्बाचलवासिन्यैनमः २०५ कक्षपायैनमः २०६ कक्षपाराध्यायैनमः २०७कक्षपासनसंस्थितायैनमः२०८ कर्ण्णपूरायैनमः२०९ कर्ण्णनासायैनमः २१० कर्ण्णाढ्यायैनमः २११ कालभैरव्यैनमः २१२ कलप्रीतायैनमः २१३ कलहदा यैनमः २१४ कलहायैनमः २१५ कलहातुरायैनमः २१६ क र्ण्णयक्ष्यैनमः २१७ काथिन्यैनमः २१८ कर्ण्णसुन्दर्यैनमः २१९ कर्ण्णपिशाचिन्यैनमः २२० कर्ण्णमञ्जर्य्यैनमः २२१ कपिकक्ष दायैनमः २२२ कविकक्षविरूपाढ्यायैनमः २२३ कविकक्ष स्वरूपिण्यैनमः २२४ कस्तूरीमृगसंस्थानायैनमः २२५ कस्तू रीमृगरूपिण्यैनमः २२६ कस्तूरीमृगसन्तोषायै नमः २२७ कस्तूरीमृगमध्यगायै नमः २२८ कस्तूरीरसनीलाङ्ग्यै नमः २२९ कस्तूरीगन्धतोषितायै नमः २३० कस्तूरीपूजकप्रा णायैनमः २३१ कस्तूरीपूजकप्रियायै नमः २३२ कस्तूरीप्रे मसन्तुष्टायैनमः २३३ कस्तूरीप्राणधारिण्यैनमः २३४ कस्तू

रीपूजकानन्दायैनमः २३५ कस्तूरीगन्धरूपिण्यैनमः २३६ कस्तूरीमालिकारूपायैनमः २३७ कस्तूरीभोजनप्रियायैनमः २३८ कस्तूरीतिलकानन्दायैनमः २३९ कस्तूरीतिलकप्रिया यैनमः २४० कस्तूरीहोमसन्तुष्टायैनमः २४१ कस्तूरीतर्प्पणो द्यतायैनमः २४२ कस्तूरीमार्ज्जनोद्युक्तायैनमः २४३ कस्तूरी चक्रपूजितायैनमः २४४ कस्तूरीपुष्पसम्पूज्यायैनमः २४५ क स्तूरीचर्व्वणोद्यतायैनमः २४६ कस्तूरीगर्भमध्यस्थायैनमः २४७ कस्तूरीवस्त्रधारिण्यैनमः २४८ कस्तूरिकामोदरतायै नमः २४९ कस्तूरीवनवासिन्यैनमः २५० कस्तूरीवनसंरक्षायै नमः २५१ कस्तूरीप्रेमधारिण्यैनमः २५२ कस्तूरीशक्तिनि लयायैनमः २५३ कस्तूरीशक्तिकुण्डगायैनमः २५४ कस्तूरी कुण्डसंस्नातायैनमः २५५ कस्तूरीकुण्डमज्जनायैनमः २५६ कस्तूरीजीवसन्तुष्टायैनमः २५७ कस्तूरीजीवधारिण्यै नमः २५८ कस्तूरीपरमामोदायै नमः २५९ कस्तूरीजीवनक्षमा यैनमः २६० कस्तूरीजातिभावस्थायैनमः २६१ कस्तूरी गन्धचुम्बनायैनमः २६२ कस्तूरोगन्धसंशोभाविराजितकपा लभुवेनमः २६३ कस्तूरीमदनान्तस्थायैनमः २६४ कस्तूरी मदहर्ष्पदायैनमः २६५ कस्तूर्य्यैनमः २६६ कवितानाढ्या यैनमः २६७ कस्तूरीगृहमध्यगायैनमः २६८ कस्तूरीस्पर्श कप्राणायैनमः २६९ कस्तूरीनिन्दकान्तकायैनमः २७० क स्तूर्य्यामोदरसिकायैनमः २७१ कस्तूरीक्रीडनोद्यतायैनमः २७२ कस्तूरीदाननिरतायैनमः २७३ कस्तूरीवरदायिन्यैनमः २७४ कस्तूरीस्थापनाशक्तायैनमः२७५ कस्तूरीस्थानरञ्जिन्यै नमः२७६ कस्तूरीकुशलप्राणायैनमः २७७ कस्तूरीस्तुतिव न्दितायैनमः २७८ कस्तूरीवन्दकाराध्यायैनमः २७९ कस्तूरी

स्थानवासिन्यैनमः २८० कहरूपायैनमः २८१ कहाढ्यायैनमः २८२ कहानन्दायैनमः २८३ कहात्मभुवेनमः २८४ कहपूज्यायैनमः २८५ कहेत्याख्यायैनमः २८६ कहहेयायैनमः २८७ कहात्मिकायैनमः २८८ कहमालायैनमः २८९ कण्ठभूषायैनमः २९० कहमन्त्रजपोद्यतायैनमः २९१ कहनामस्मृतिपरायैनमः २९२ कहनामपरायणायैनमः २९३ कहपरायणरतायैनमः २९४ कहदेव्यैनमः २९५ कहेश्वर्य्यैनमः २१६ कहहेत्वैनमः २९७ कहानन्दायैनमः २९८ कहनादपरायणायैनमः २९९ कहमात्रेनमः ३०० कहान्तस्थायैनमः ३०१ कहमन्त्रायै नमः ३०२ कहेश्वरायैनमः ३०३ कहगेयायैनमः ३०४ कहाराध्यायैनमः ३०५ कहध्यानपरायणायैनमः ३०६ कहतन्त्रायैनमः ३०७ कहकहायैनमः ३०८ कहचर्य्यापरायणायै नमः ३०९ कहाचारायै नमः ३१० कहगत्यैनमः ३११ कहताण्डवकारिण्यैनमः ३१२ कहारण्यायैनमः ३१३ कहगत्यैनमः ३१४ कहशक्तिपरायणायैनमः ३१५ कहराज्यरतायैनमः ३१६ कर्म्मसाक्षिण्यैनमः ३१७ कर्म्मसुन्दर्य्यैनमः ३१८ कर्म्मविद्यायैनमः ३१९ कर्म्मगत्यैनमः ३२० कर्म्मतन्त्रपरायणायै नमः ३२१ कर्म्मगात्रायै नमः ३२२ कर्म्मगात्रायैनमः ३२३ कर्म्मधर्म्मपरायणायैनमः ३२४ कर्म्मरेखानाशकर्त्र्यैनमः ३२५ कर्म्मरेखाविनोदिन्यैनमः ३२६ कर्म्मरेखामोहकर्य्यै नमः ३२७ कर्म्मकीर्तिपरायणायैनमः३२८कर्म्मविद्यायैनमः ३२९ कर्म्मसारायैनमः ३३० कर्म्माधारायैनमः ३३१ कर्म्मभुवेनमः ३३२ कर्म्मकार्य्यैनमः ३३३ कर्म्महार्य्यैनमः ३३४ कर्म्मकौतुकसुन्दर्य्यैनमः ३३५ कर्म्मकाल्यैनमः ३३६ कर्म्मतारायैनमः ३३७ कर्म्मछिन्नायैनमः ३३८ कर्म्मदायैनमः ३३९ कर्म्मचाण्डालिन्यैन

मः ३४० कर्म्मवेदमात्रे नमः ३४१ कर्म्मभुवे नमः ३४२ कर्म्म काण्डरतानन्तायै नमः ३४३ कर्म्मकाण्डानुमानितायै नमः ३४४ कर्म्मकाण्डपरीणाहायै नमः ३४५ कमठ्यै नमः ३४६ कमठाकृत्यै नमः ३४७ कामठाराध्यहृदयायैनमः ३४८ कमठायै नमः ३४९ कण्ठसुन्दर्य्यै नमः ३५० कमठासनसंसेव्यायैनमः ३५१ कमठ्यैनमः ३५२ कर्म्मतत्परायैनमः ३५३ करुणाकर कान्तायैनमः ३५४ करुणाकरवन्दितायैनमः ३५५ कठोरायैन मः ३५६ करमालायैनमः ३५७ कठोरकुचधारिण्यैनमः ३५८ कपर्द्दिन्यैनमः ३५९ कपटिन्यैनमः ३६० कठिन्यैनमः ३६१ कङ्कभूषणायैनमः ३६२ करभोर्वैनमः ३६३ कठिनदायैनमः ३६४ करभायैनमः ३६५ करभालयायैनमः ३६६ कलभाषा मय्यैनमः ३६७ कल्पायैनमः ३६८ कल्पनायैनमः ३६९ कल्पदायिन्यैनमः ३७० कमलस्थायैनमः ३७१ कलामा लायैनमः ३७२ कमलास्यायैनमः ३७३ क्वणत्प्रभायैनमः ३७४ ककुद्मिन्यैनमः ३७५ कष्टवत्यैनमः ३७६ कर णीयकथार्च्चितायैनमः ३७७ कचार्च्चितायैनमः ३७८ कच तन्वैनमः ३७९ कचसुन्दरधारिण्यैनमः ३८० कठोरकुचसँल्लग्ना यैनमः ३८१ कटिसूत्रविराजितायैनमः ३८२ कर्णभक्षप्रियायै नमः ३८३ कन्दायैनमः ३८४ कथायैनमः ३८५ कन्दवत्यै नमः ३८६ कल्यैनमः ३८७ कलिघ्न्यैनमः ३८८ कलिदूत्यैन मः ३८९ कपिनायकपूजितायैनमः ३९० कणकक्षानियन्त्र्यै नमः ३९१ काश्चित्कविवरार्चितायैनमः ३९२ कर्त्र्यैनमः ३९३ कर्तृकाभूषायैनमः ३९४ करिण्यैनमः ३९५ कर्कशत्रुपायैनमः ३९६ कर्णेश्यैनमः ३९७ कर्णपायैनमः ३९८ कलवाचायैनमः ३९९ कलानिध्यैनमः ४०० कलनायैनमः ४०१ कलनाधा

रायैनमः ४०२ कारिकायैनमः ४०३ करकायैनमः ४०४ करायैनमः ४०५ कलगेयायैनमः४०६कर्कराइयैनमः४०७कर्कराशिपूजितायैनमः४०८कन्याराइयैनमः ४०९ कन्यकायैनमः ४१० कन्यकाप्रियभाषिण्यैनमः ४११कन्यकादानसन्तुष्टायैनमः४१२ कन्यकादानतोषिण्यैनमः ४१३ कन्यादानकरानन्दायैनमः ४१४ कन्यादानग्रहेष्टदायैनमः ४१५ कर्षणायैनमः ४१६ कक्षदहनायैनमः ४१७ कामितायैनमः ४१८ कमलासनायैनमः ४१९ करमालानन्दकर्त्र्यैनमः ४२० करमालाप्रतोषितायैनमः ४२१ करमालाशयानन्दायैनमः ४२२ करमालासमागमायैनमः ४२३ करमालासिद्धिदात्र्यैनमः४२४ करमालायैनमः४२५ करप्रियायैनमः ४२६ करप्रियाकररतायैनमः४२७ करदानपरायणायैनमः ४२८ कलानन्दायैनमः४२९कलिपूज्यायैनमः४३० कलिप्रस्वैनमः ४३१ कलनादनिनादस्थायैनमः ४३२ कलनादवरप्रदायैनमः ४३३ कलनादसमाजस्थायैनमः ४३४ कहोलायैनमः ४३५ कहोलदायैनमः ४३६ कहोलगेहमध्यस्थायैनमः ४३७ कहोलवरदायैनमः ४३८ कहोलकविताधारायैनमः ४३९ कहोलऋषिमानितायैनमः ४४० कहोलमानसाराध्यायैनमः ४४१ कहोलवाक्यकारिण्यैनमः ४४२ कर्तृरूपायैनमः ४४३ कर्तृमय्यैनमः४४४कर्तृमात्रेनमः४४५ कर्त्त्र्यैनमः ४४६ कनीयायैनमः ४४७ कनकाराध्यायैनमः ४४८ कनीनकमय्यैनमः ४४९ कनीयानन्दनिलयायैनमः४५०कनकानन्दतोषितायैनमः ४५१ कनीनककरायैनमः ४५२ काष्ठायैनमः४५३ कथार्णवकर्य्यैनमः ४५४ कर्य्यैनमः ४५५ करिगम्यायैनमः ४५६ करिगत्यैनमः ४५७ करिध्वजपरायणायैनमः ४५८ करिनाथप्रियायैनमः ४५९ कण्ठायैनमः ४६० कथानकप्रतोषि

तायैनमः ४६१ कमनीयायैनमः ४६२ कमनकायैनमः ४६३ कमनीयविभूषणायैनमः ४६४ कमनीयसमाजस्थायैनमः ४६५ कमनीयव्रतप्रियायैनमः ४६६ कमनीयगुणाराध्यायैनमः ४६७ कपिलायैनमः ४६८ कपिलेश्वय्यैंनमः ४६९ कपिलाराध्यहृदयायैनमः ४७० कपिलाप्रियवादिन्यैनमः ४७१ कहचक्रमन्त्रवर्णायैनमः ४७२ कहचक्रप्रसूनकायैनमः ४७३ कएईलह्रींस्वरूपायैनमः ४७४ कएईलह्रींवरप्रदायैनमः ४७५ कएईलह्रींसिद्धिदात्र्यैनमः ४७६ कएईलह्रींस्वरूपिण्यैनमः ४७७ कएईलह्रींमन्त्रवर्णायैनमः ४७८ कएईलह्रींप्रसूकलायैनमः ४७९कएवर्ग्गायैनमः ४८० कपाटस्थायैनमः४८१ कपाटोद्घाटनक्षमायैनमः ४८२ कङ्काल्यैनमः ४८३ कपाल्यैनमः ४८४ कङ्कालप्रियभाषिण्यैनमः ४८५ कङ्कालभैरवाराध्यायैनमः४८६ कङ्कालमानसंस्थितायैनमः ४८७ कङ्कालमोहनिरतायैनमः ४८८ कङ्कालमोहदायिन्यैनमः ४८९ कलुषघ्न्यैनमः ४९० कलुषहायैनमः ३९१ कलुषार्त्तिविनाशिन्यैनमः ४९२ कलिपुष्पायैनमः ४९३ कलादानायैनमः ४९४ कशिप्वैनमः ४९५ कश्यपार्च्चितायैनमः ४९६ कश्यपायैनमः ४९७ कश्यपाराध्यायैनमः ४९८ कलिपूर्णकलेवरायैनमः ४९९ कलेवरकय्यैंनमः ५०० कांच्यैनमः ५०१ कवर्ग्गायैनमः ५०२ करालकायैनमः ५०३ करालभैरवाराध्यायैनमः ५०४ करालभैरवेश्वय्यैंनमः५०५ करालायैनमः ५०६ कलनाधारायैनमः ५०७ कपर्द्दीशवरप्रदायैनमः ५०८ कपर्द्दीशप्रेमलतायैनमः ५०९ कपर्द्दिमालिकायैनमः २१० कपर्द्दिजपमालाढ्यायैनमः ५११ करवीरप्रसूनदायैनमः ५१२ करवीरप्रियप्राणायैनमः ५१३ करवीरप्रपूजितायैनमः ५१४ कर्णिकारसमाकारायैनमः ५१५ कर्णिकारप्रपूजि

तायैनमः ५१६ करीषाग्निस्थितायैनमः ५१७कर्षायैनमः ५१८ कर्षमात्रसुवर्णदायैनमः ५१९ कलशायैनमः ५२० कलशारा ध्यायैनमः ५२१ कषायायैनमः ५२२ करिगानदायैनमः५२३ कपिलायैनमः ५२४ कलकण्ठ्यैनमः ५२५ कविकल्पलतायैन मः ५२६ कल्पलतायैनमः ५२७ कल्पमात्रेनमः५२८ कल्प काय्यैंनमः ५२९ कल्पभुवेनमः ५३० कर्प्पूरामोदरुचिरायैनमः ५३१ कर्प्पूरामोदधारिण्यैनमः ५३२ कर्प्पूरमालाभरणायैन मः ५३३ कर्प्पूरवासपूर्त्तिदायैनमः ५३४ कर्प्पूरमालाजयदायै नमः ५३५ कर्प्पूरार्णव मध्यगायैनमः ५३६ कर्प्पूरतर्प्पणरतायै नमः ५३७ कटकाम्बरधारिण्यैनमः ५३८ कपटेश्वरसम्पूज्या यैनमः ५३९ कपटेश्वररूपिण्यैनमः ५४० कट्वैनमः ५४१ क पिध्वजाराध्यायैनमः ५४२ कलापपुष्परूपिण्यैनमः ५४३ क लापपुष्परुचिरायैनमः ५४४ कलापपुष्पपूजितायैनमः ५४५ क्रकचायैनमः५४६क्रकचाराध्यायैनमः ५४७ कथम्ब्रूमायैनमः ५४८ करलतायैनमः ५४९ कथङ्कारविनिर्म्मुक्तायैनमः ५५० काल्यैनमः ५५१ कालक्रियायैनमः ५५२ क्रत्वैनमः ५५३ का मिन्यैनमः ५५४ कामिनीपूज्यायैनमः ५५५ कामिनीपुष्पधा रिण्यैनमः ५५६ कामिनीपुष्पनिलयायैनमः ५५७ कामिनीपु ष्पपूर्णिमायैनमः ५५८ कामिनीपुष्पपूजार्हायैनमः ५५९ का मिनीपुष्पभूषणायैनमः ५६० कामिनीपुष्पतिलकायैनमः५६१ कामिनीकुण्डचुम्बनायैनमः ५६२ कामिनीयोगसन्तुष्टायैनमः ५६३ कामिनीयोगभोगदायैनमः ५६४ कामिनीकुण्डसम्मग्ना यैनमः ५६५ कामिनीकुण्डमध्यगायैनमः ५६६ कामिनीमान साराध्यायैनमः ५६७ कामिनीमानतोषितायैनमः ५६८ कामि नीमानसञ्चारायैनमः ५६९ कालिकायैनमः ५७० कालकालि

कायैनमः ५७१ कामायैनमः ५७२ कामदेव्यैनमः ५७३ कामेश्यैनमः ५७४ कामसम्भवायैनमः ५७५ कामभावायैनमः ५७६ कामरतायैनमः ५७७ कामार्त्तायैनमः ५७८ काममञ्जर्य्यैनमः ५७९ काममञ्जीररणितायैनमः ५८० कामदेवप्रियान्तरायैनमः ५८१ कामकाल्यैनमः ५८२कामकलायैनमः५८३ कालिकायैनमः ५८४ कमलार्च्चितायैनमः ५८५ कादिकायैनमः ५८६ कमलायैनमः ५८७ काल्यैनमः ५८८ कालानलसमप्रभायैनमः ५८९ कल्पान्तदहनायैनमः ५९० कान्तायैनमः ५९१ कान्तारप्रियवासिन्यैनमः ५९२ कालपूज्यायैनमः ५९३ कालरतायैनमः ५९४ कालमात्रेनमः ५९५ कालिन्यैनमः ५९६ कालवीरायैनमः ५९७ कालघोरायैनमः ५९८ कालसिद्धायैनमः ५९९ कालदायैनमः ६०० कालाञ्जनसमाकारायैनमः ६०१ कालञ्जरनिवासिन्यैनमः ६०२ कालऋद्ध्यैनमः६०३ कालवृद्ध्यैनमः ६०४ कारागृहविमोचन्यैनमः ६०५ कादिविद्यायैनमः ६०६ कादिमात्रेनमः ६०७ कादिस्थायैनमः ६०८ कादिसुन्दर्य्यैनमः६०९काश्यैनमः६१०कांच्यैनमः६११ काञ्चीशायैनमः ६१२ काशीवरदायिन्यैनमः ६१३ क्रींबीजायैनमः ६१४ क्रींबीजाहृदयायनमस्स्मृतायैनमः ६१५ काम्यायैनमः ६१६ कामगत्यैनमः ६१७ काम्यसिद्धिदात्र्यैनमः ६१८ कामभुवेनमः ६१९कामाख्यायैनमः६२०काकरूपायैनमः६२१ कामचापविमोचिन्यैनमः ६२२ काकदेवकलारामायैनमः ६२३ कामदेवकलालयायैनमः६२४कामरात्र्यैनमः ६२५ कामदात्र्यैनमः ६२६ कान्ताराचलवासिन्यैनमः६२७ कालरूपायैनमः६२८ कालगत्यैनमः६२९काकयोगपरायणायैनमः ६३० कामसम्मर्दनरतायैनमः६३१ कामगेहविनाशिन्यैनमः ६३२ कालभैरवभा

र्य्यायैनमः ६३३ कालभैरवकामिन्यैनमः ६३४ कालभैरवयोग स्थायैनमः ६३५ कालभैरवभोगदायैनमः ६३६ कामधेन्वैनमः ६३७ कामदोग्ध्र्यैनमः ६३८काममात्रेनमः ६३९कान्तिदायैनमः ६४० कामुकायैनमः ६४१ कामुकाराध्यायैनमः ६४२ कामुकानन्दवर्द्धिन्यैनमः ६४३ कार्त्तवीर्य्यायैनमः ६४४ कार्त्तिकेयायैनमः ६४५ कार्त्तिकेयप्रपूजितायैनमः ६४६ कार्य्यायैनमः ६४७ कारणदायैनमः ६४८ कार्य्यकारिण्यैनमः ६४९ कारणान्तरायैनमः ६५० कान्तिगम्यायैनमः ६५१ कान्तिमय्यैनमः ६५२ कात्यायैनमः ६५३ कात्यायन्यैनमः ६५४ कायैनमः ६५५ कामसारायैनमः ६५६ काश्मीरायैनमः ६५७ काश्मीराचारतत्परायैनमः ६५८ कामरूपाचाररतायैनमः ६५९ कामरूपप्रियव्वँदायैनमः ६६० कामरूपाचारनिद्धचैनमः ६६१ कामरूपमनोमय्यैनमः ६६२ कार्त्तिक्यैनमः ६६३ कार्त्तिकाराध्यायैनमः ६६४ काञ्चनारप्रसूनभुवेनमः ६६५ काञ्चनारप्रसूनाभायैनमः ६६६ काञ्चनारप्रपूजितायैनमः ६६७ काञ्चरूपायैनमः ६६८ काञ्चभूम्यैनमः ६६९ कांस्यपात्रप्रभोजिन्यैनमः ६७० कांस्यध्वानिमय्यैनमः ६७१ कामसुन्दर्य्यैनमः ६७२ कामचुम्बनायैनमः ६७३ काशपुष्पप्रतीकाशायैनमः ६७४ कामद्रुमसमागमायैनमः ६७५ कामपुष्पायैनमः ६७६ कामभूम्यैनमः ६७७ कामपूज्यायैनमः ६७८ कामदायैनमः ६७९ कामदेहायैनमः ६८० कामगेहायैनमः ६८१ कामबीजपरायणायैनमः ६८२ कामध्वजसमारूढायैनमः ६८३ कामध्वजसमास्थितायैनमः ६८४ काश्यप्यैनमः ६८५ काश्यपाराध्यायैनमः ६८६ काश्यपानन्ददायिन्यैनमः ६८७ कालिन्दीजलसङ्काशायैनमः ६८८ कालिन्दीजलपूजितायैनमः ६८९ कादेवपू

जानिरतायैनमः ६९० कादेवपरमार्थदायैनमः ६९१ कार्म्म णायैनमः ६९२ कार्म्मणाकारायैनमः ६९३ कामकार्म्मणकारिण्यैनमः ६९४ कार्म्मणत्रोटनकर्य्यैनमः ६९५ काकिन्यैनमः ६९६ कारणाह्वयायैनमः ६९७ काव्यामृतायैनमः ६९८ कालिङ्गायैनमः ६९९ कालिङ्गमर्द्दनोद्यतायैनमः ७०० कालागुरुविभूषाढ्यायैनमः ७०१ कालागुरुविभूतिदायैनमः ७०२ कालागुरुसुगन्धायैनमः ७०३ कालागुरुप्रतर्प्पणायैनमः ७०४ कावेरीनीरसम्प्रीतायैनमः ७०५ कावेरीतीरवासिन्यैनमः ७०६ कालचक्रभ्रमाकारायैनमः ७०७ कालचक्रनिवासिन्यैनमः ७०८ काननायैनमः ७०९ काननाधारायैनमः ७१० कार्व्यैनमः ७११ कारुणिकामय्यैनमः ७१२ काम्पील्यवासिन्यैनमः ७१३ काष्ठायैनमः ७१४ कामपत्न्यैनमः ७१५ कामभुवेनमः ७१६ कादम्बरीपानरतायैनमः ७१७ कादम्बर्य्यैनमः ७१८ कलायैनमः ७१९ कामवन्द्यायैनमः ७२० कामेश्यैनमः ७२१ कामराजप्रपूजितायैनमः ७२२ कामराजेश्वरीविद्यायैनमः ७२३ कामकौतुकसुन्दर्य्यैनमः ७२४ काम्बोजयायैनमः ७२५ काञ्छिनदायैनमः ७२६ कांश्यायैनमः ७२७ काञ्चनकारिण्यैनमः ७२८ काञ्चनाद्रिसमाकारायैनमः ७२९ काञ्चनाद्रिप्रदानदायैनमः ७३० कामकीर्त्यैनमः ७३१ कामकेश्यैनमः ७३२ कारिकायैनमः ७३३ कान्तराश्रयायैनमः ७३४ कामभेद्यैनमः ७३५ कामार्त्तिनाशिन्यैनमः ७३६ कामभूमिकायैनमः ७३७ कालनिर्णाशिन्यैनमः ७३८ कामवनितायैनमः ७३९ कामरूपिण्यैनमः ७४० कामसन्दीप्त्यैनमः ७४१ काव्यदायैनमः ७४२ कालसुन्दर्य्यैनमः ७४३ कामेश्यैनमः ७४४ कारणवरायैनमः ७४५ कामेशीपूजनोद्य

तायैनमः ७४६ काञ्चीनूपुरभूषाढ्यायैनमः ७४७ कुङ्कुमाभर णान्वितायैनमः ७४८ कालचक्रायैनमः ७४९ कालगत्यैनमः ७५० कालचक्रमनोभवायैनमः ७५१ कुन्दमध्यायैनमः ७५२कु न्दपुष्पायैनमः ७५३ कुन्दपुष्पप्रियायैनमः ७५४ कुजायैनमः ७५५ कुजमात्रेनमः ७५६ कुजाराध्यायैनमः ७५७ कुठारवर धारिण्यैनमः ७५८ कुञ्जरस्थायैनमः ७५९ कुशरतायैनमः ७६० कुशेशयविलोचनायैनमः ७६१ कुनट्यैनमः ७६२ कुरय्यैंनमः ७६३ क्रुद्धायैनमः ७६४ कुरङ्ग्यैनमः ७६५ कुटजाश्रयायैनमः ७६६ कुम्भीनसविभूषायैनमः ७६७ कुम्भीनसवधोद्यतायैन मः ७६८ कुम्भकर्णमनोल्लासायैनमः ७६९ कुलचूडामण्यैनमः ७७०कुलायैनमः७७१ कुलालगृहकन्यायैनमः ७७२कुलचूडाम णिप्रियायैनमः ७७३ कुलपूज्यायैनमः ७७४ कुलाराध्यायैनमः ७७५ कुलपूजापरायणायैनमः ७७६ कुलभूषायैनमः ७७७ कु क्ष्यैनमः ७७८ कुररीगणसेवितायैनमः ७७९ कुलपुष्पायैनमः ७८० कुलरतायैनमः ७८१ कुलपुष्पपरायणायैनमः ७८२ कु लवस्त्रायैनमः ७८३ कुलाराध्यायैनमः ७८४ कुलकुण्डसमप्र भायैनमः ७८५ कुलकुण्डसमोल्लासायैनमः ७८६ कुण्डपुष्पप रायणायैनमः ७८७ कुण्डपुष्पप्रसन्नास्यायैनमः ७८८ कुण्ड गोलोद्भवात्मिकायैनमः ७८९ कुण्डगोलोद्भवाधारायैनमः ७९० कुण्डगोलमय्यैनमः ७९१ कुह्वैनमः ७९२ कुण्डगोलप्रियप्राणा यैनमः ७९३ कुण्डगोलप्रपूजितायैनमः ७९४ कुण्डगोलमनो ल्लासायैनमः ७९५ कुण्डगोलबलप्रदायैनमः७९६ कुण्डदेवरता यैनमः ७९७ क्रुद्धायैनमः ७९८ कुलसिद्धिकरीपरायैनमः७९९ कुलकुण्डसमाकारायैनमः ८०० कुलकुण्डसमानभुवेनमः ८०१ कुण्डसिद्ध्यैनमः ८०२ कुण्डऋद्ध्यैनमः ८०३कुमारीपूजनोद्य

तायैनमः ८०४ कुमारीपूजकप्राणायैनमः ८०५ कुमारीपूजका लयायैनमः ८०६ कुमार्य्यैनमः ८०७ कामसन्तुष्टायैनमः ८०८ कुमारीपूजनोत्सुकायैनमः ८०९ कुमारीव्रतसन्तुष्टायैनमः८१० कुमारीरूपधारिण्यैनमः ८११ कुमारीभोजनप्रीतायैनमः ८१२ कुमार्य्यैनमः ८१३ कुमारदायैनमः ८१४ कुमारमात्रेनमः८१५ कुलदायैनमः ८१६ कुलयोन्यैनमः ८१७ कुलेश्वर्य्यैनमः ८१८ कुललिङ्गायैनमः ८१९ कुलानन्दायैनमः ८२० कुलर म्यायैनमः ८२१ कुतर्कधृषेनमः ८२२ कुन्त्यैनमः ८२३ कु लकान्तायैनमः ८२४ कुलमार्ग्गपरायणायैनमः ८२५ कुल्लायैन मः ८२६ कुरुकुल्लायैनमः ८२७ कुल्लुकायैनमः ८२८ कुलकाम दायैनमः ८२९ कुलिशाङ्ग्यैनमः ८३० कुरिकायैनमः ८३१ कु रिकानन्दवर्द्धिन्यैनमः ८३२ कुलीनायैनमः ८३३ कुञ्जरगत्यैन मः ८३४ कुञ्जरेश्वरगामिन्यैनमः ८३५कुलपाल्यैनमः ८३६ कुलवत्यैनमः ८३७ कुलदीपिकायैनमः ८३८ कुलयोगीश्वर्य्यै नमः ८३९ कुण्डायैनमः ८४० कुङ्कुमारुणविग्रहायै नमः ८४१ कुङ्कुमानन्दसन्तोषायैनमः ८४२ कुङ्कुमार्ण्णववासिन्यैन मः ८४३ कुसुमायैनमः८४४ कुसुमप्रीतायैनमः ८४५ कुलभुवे नमः ८४६ कुलसुन्दर्य्यैनमः ८४७ कुमुद्वत्यैनमः ८४८कुमुदि न्यैनमः ८४९ कुशलायैनमः ८५० कुलटालयायैनमः ८५१ कु लटालयमध्यस्थायैनमः ८५२ कुलटासङ्गतोषितायैनमः ८५३ कुलटाभुवनोद्युक्तायैनमः ८५४ कुशावर्त्तायैनमः८५५ कुलार्ण्ण वायैनमः ८५६ कुलार्ण्णवाचाररतायैनमः ८५७ कुण्डल्यैनमः ८५८ कुण्डलाकृत्यैनमः ८५९ कुमत्यैनमः ८६०कुलश्रेष्ठायैन मः ८६१ कुलचक्रपरायणायैनमः ८६२ कूटस्थायैनमः ८६३ कूटदृष्ट्यैनमः ८६४ कुन्तलायैनमः ८६५ कुन्तलाकृत्यैनमः

८६६कुशलाकृतिरूपायैनमः ८६७ कूर्चबीजधरायैनमः ८६८ कैनमः८६९कुंकुंकुंकुंशब्दरतायैनमः ८७० क्रुंकुंकुंक्रुंपरायणायै नमः ८७१कुंकुंकुंशब्दनिलयायैनमः ८७२ कुक्कुरालयवासिन्यै ममः ८७३ कुक्कुरासङ्गसय्युंक्तायैनमः८७४ कुक्कुरानन्तविग्रहायै नमः ८७५ कूर्च्चारम्भायैनमः ८७६ कूर्च्चबीजायैनमः ८७७ कूर्च्चजापपरायणायैनमः ८७८ कुलिन्यैनमः ८७९ कुलसंस्थानायैनमः ८८० कूर्च्चकण्ठपरागत्यैनमः८८१ कूर्चवीणाभालदेशायै नमः ८८२ कूर्चमस्तकभूषितायैनमः ८८३ कुलवृक्षगतायैनमः ८८४ कूर्म्मायैनमः ८८५ कूर्म्माचलनिवासिन्यैनमः८८६कुलबिन्द्वैनमः ८८७ कुलशिवायैनमः ८८८ कुलशक्तिपरायणायैनमः ८८९ कुलबिन्दुमणिप्रख्यायैनमः ८९० कुङ्कुमद्रूमवासिन्यैनमः ८९१ कुचमर्द्दनसन्तुष्टायैनमः ८९२ कुचजापपरायणायैनमः ८९३ कुचस्पर्शनसन्तुष्टायैनमः ८९४ कुचालिङ्गनहर्षदायैनमः ८९५ कुगतिघ्न्यैनमः८९६ कुबेरार्च्चायैनमः ८९७ कुचभुवेनमः ८९८ कुलनायिकायैनमः८९९ कुगायनायैनमः ९०० कुचधरायैनमः ९०१ कुमात्रेनमः ९०२ कुन्ददन्तिन्यैनमः ९०३ कुगेयायैनमः ९०४ कुहराभासायैनमः ९०५ कुगेयाकुघ्नदारिकायै नमः ९०६ कीर्त्यैनमः ९०७किरातिन्यैनमः ९०८ क्लिन्नायैनमः ९०९ किन्नरायैनमः ९१० किन्नर्य्यैनमः ९११ क्रियायैनमः ९१२ क्रीङ्कारायैनमः ९१३ क्रींजपासक्तायैनमः ९१४ क्रींहूँस्त्रीं मन्त्ररूपिण्यैनमः ९१५किर्म्मीरितदृशापाङ्ग्यैनमः ९१६ किशोर्य्यैनमः ९१७ किरीटिन्यैनमः ९१८ कीटभाषायैनमः ९१९ कीटयोन्यैनमः ९२० कीटमात्रेनमः ९२१ कीटदायैनमः ९२२ किंशुकायैनमः ९२३ कीरभाषायैनमः ९२४ क्रियासारायैनमः ९२५क्रियावत्यैनमः ९२६कींकींशब्दपरायैनमः ९२७ क्लींक्लींक्लूँ

क्लैंक्लौंमन्त्ररूपिण्यैनमः९२८कांकींकूंकैंस्वरूपायैनमः ९२९ क्रः फट्मन्त्रस्वरूपिण्यैनमः ९३० केतकीभूषणानन्दायैनमः ९३१ केतकीभरणान्वितायैनमः ९३२ कैकदायैनमः९३३ केशिन्यैनमः ९३४ केशीसूदनतत्परायैनमः ९३५ केशरूपायैनमः९३६ केशमुक्तायैनमः ९३७ कैकेय्यैनमः ९३८ कौशिक्यैनमः९३९ कैरवायैनमः९४० कैरवाल्हादायैनमः९४१ केशरायैनमः९४२ केतुरूपिण्यैनमः ९४३ केशवाराध्यहृदयायैनमः ९४४ केशवासक्तमानसायैनमः ९४५ क्लैब्यविनाशिन्यैनमः ९४६ क्लैंचक्लैंबीजजपतोषितायैनमः ९४७ कौशिल्यायैनमः ९४८ कोशलाक्ष्यैनमः ९४९ कोशायैनमः ९५० कोमलायैनमः ९५१ कोलापुरनिवासायैनमः ९५२ कोलासुरविनाशिन्यैनमः ९५३ कोटिरूपायैनमः ९५४ कोटिरतायैनमः ९५५ क्रोधिन्यैनमः ९५६ क्रोधरूपिण्यैनमः ९५७केकायैनमः ९५४ कोकिलायैनमः ९५९ कोटयैनमः ९६० कोटिमन्त्रपरायणायैनमः ९६१ कोटयनन्तमन्त्रयुतायैनमः ९६२ कैरूपायैनमः ९६३ केरलाश्रयायैनमः ९६४ केरलाचारनिपुणायैनमः ९६५ केरलेन्द्रगृहेस्थितायैनमः ९६७ केदाराश्रमसंस्थायैमम: ९६७ केदारेश्वरपूजितायैनमः ९६८ क्रोधरूपायैनमनमः ९६९ क्रोधपदायैनमः ९७० क्रोधमात्रैनमः ९७१ कौशिक्यैनमः ९७२ कोदण्डधारिण्यैनमः ९७३ क्रौञ्चायैनमः९७४ कौशल्यायैनमः ९७५ कौलमार्गगायैनमः ९७६ कौलिन्यैनमः ९७७ कौलिकाराध्यायैनमः ९७८ कौलिकागारवासिन्यैनमः ९७९ कौतुक्यैनमः ९८० कौमुद्यैनमः ९८१ कौलायैनमः ९८२ कौमार्य्यैनमः ९८३ कौरवार्चितायैनमः ९८४ कौण्डिन्यायैनमः ९८५ कौशिक्यैनमः ९८६ क्रोधज्वालाभासुररूपिण्यैनमः ९८७ कोटिकालानलज्वालायैनमः

९८८ कोटिमार्तण्डविग्रहायैनमः ९८९ कृत्तिकायैनमः ९९० कृष्णवर्णायैनमः ९९१ कृष्णायैनमः ९९२कृत्यायैनमः ९९३ क्रियातुरायैनमः ९९४ कृशाङ्ग्यैनमः ९९५ कृतकृत्यायैनमः ९९६क्रः फट्स्वाहास्वरूपिण्यैनमः ९९७ क्रौंक्रौंहूँफट्मन्त्रवर्णायैनमः ९९८ क्रींह्रींह्रूँफट्नमस्स्वधायैनमः ९९९ क्रींक्रींह्रींह्रीं तथाह्रूँह्रूँफट्स्वाहामन्त्ररूपिण्यैनमः १००० इतिश्रीसर्व्वसाम्राज्यमेधाचतुर्थ्यन्तनामसहस्रकंसम्पूर्णम् ॥

अथकुमारींसुवासिनीश्चपूजयेद्भोजयेच्च ॥ तत्क्रमोयथा पूजागृहे कुमारीमानीय, प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्त्तनाद्यैः स्नापयित्वा, गन्धतैलेनशरीरंसंस्कुर्य्यात्। केशंपरिष्कृत्य, ललाटेसिन्दूरम्, नयनयोः कज्जलम्, सर्व्वाङ्गेचन्दनम्, वस्त्रालङ्कारैराभूष्य, पादौप्रक्षाल्य, पीठोपरिसमावेश्य, ताम्बूलेनमुखंसंशोध्य, स्वयमपिन्यासङ्कृत्वा, षडङ्गेषु न्यसेत्। 'ॐक्रांकुलकुमारिके हृदयायनमः। ॐक्रींकुलकुमारिकेशिरसेस्वाहा। ॐक्रूंकुलकुमारिकेशिखायैवषट्। ॐक्रैंकुलकुमारिकेशिखायैवषट् ॐक्रौंकुलकुमारिकेनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐक्रः कुलकुमारिकेअस्त्रायफट् ॥' ततोऽङ्गेषु मातृकान्यासः ॥ सचयथा ॥ 'अंनमोललाटे। ॐनमोसुखवृत्ते। इंनमोदक्षनेत्रे। ईंनमोवामनेत्रे। उंनमोदक्षकर्णे। ऊंनमोवामकर्णे। ऋंनमोदक्षनासायाम्। ॠंनमोवामनासायाम्। लृंनमोदक्षगण्डे। ॡंनमोवामगण्डे। एंनमःऊर्ध्वोष्ठे। ऐंनमः अधरोष्ठे। ओंनमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ। औंनमःअधोदन्तपङ्क्तौ। अंनमः शिरसि। अःनमो मुखे ॥' ततोध्यायेत् "शङ्खकुन्देन्दुधवलान्द्विभुजाम्बरदाभयाम् ॥ चन्द्रमध्यमहाम्भोजभावहावविराजिताम्" ॥ एवन्ध्यात्वा मानसोपचारैरभ्यपूज्य, पुनर्ध्यात्वा पूजयेत् ॥ यथा 'इदम्पाद्यं ह्रींक्रूंकुलकुमारिकायैनमः।' एवमि'दमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनु

लेपनमेतेऽक्षताः एतानिपुष्पाणि एषधूपः एषदीपः इदन्नैवेद्यामि दन्ताबूलं ह्रींकुलकुमारिकायैनमः' इतिमन्त्रेणपूजयेत् ॥ ततः षडङ्गमन्त्रेणषडङ्गानिपूजयेत् ॥ तद्यथा 'ॐक्लांकुलकुमारिके हृदयायनमः। ॐक्लींकुलकुमारिकेशिरसेनमः। ॐक्लूंकुलकुमारिकेशिखायैनमः। ॐक्लैंकुलकुमारिकेकवचायनमः ॐक्लौंकुलकुमारिकेनेत्रत्रयायनमः। ॐक्लः कुलकुमारिकेअस्त्रायनमः।' इत्यङ्गानि पूजयित्वा 'ॐह्रींहंसःकुलकुमारिकाश्रीपादुकाम्पूजयामि' इतिपुष्पाञ्जलित्रयञ्च दत्वा कालीम्पूजयेत् ॥ तद्यथा 'ॐऐंसन्ध्यायैनमः। ॐऐंसरस्वत्यैनमः। ॐऐंत्रिमूर्त्यैनमः॥ ॐऐंकालिकायैनमः। ॐऐंसुभगायैनमः। ॐऐंउमायैनमः॥ ॐऐंमालिन्यैनमः। ॐऐंकुब्जिकायैनमः। ॐऐंकालसङ्कर्षिण्यै नमः। ॐऐंअपराजितायैनमः। ॐऐंरुद्राण्यैनमः। ॐऐंभैरव्यै नमः। ॐऐंमहालक्ष्म्यैनमः। ॐऐंपीठनायिकायैनमः॥ ॐऐं क्षेत्रज्ञायैनमः। ॐऐंचर्च्चिकायैनमः॥ १६ ॥' ततोमूलेनपुष्पाञ्जलित्रयन्दत्वा, प्रदक्षिणीकृत्यप्रणमेत् ॥ तत्रमन्त्रायथा 'ॐ जगत्पूज्येजगद्वन्द्ये सर्व्वशक्तिस्वरूपिणि। पूजाङ्गृहाणकौमारि जगन्मातर्न्नमोस्तुते ॥ १ ॥ त्रिपुरान्त्रिगुणान्धात्रीञ्ज्ञानमार्ग्गस्वरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवन्दितान्देवीं त्रिमूर्त्तिम्पूजयाम्यहम् ॥२॥ कालात्मिकाङ्कालभीताङ्कारुण्यहृदयांशिवाम्। कारुण्यजननीन्नित्यांकल्याणीम्पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥ अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम्। शक्तिभेदात्मिकाल्लँक्ष्मीं रोहिणीम्पूजयाम्यहम् ॥ ४॥ कलाधाराङ्कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम्। कामदाङ्करुणाधाराङ्कामिनीम्पूजयाम्यहम् ॥ ५॥ चण्डधाराश्चण्डमायाश्चण्डमुण्डविनाशिनीम्। प्रणमामि च देवेशीश्चण्डिकाम्पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥ सुखानन्दकरीं शान्तां सर्व्वदेवनमस्कृ

ताम् । सर्व्वभूतात्मिकान्देवीं शङ्करीम्पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥ दुर्गं मेदुस्तरेचैव दुःखत्रयविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गान्दुर्गेनमाम्यहम् ॥ ८ ॥ सुन्दरींस्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् । सुभद्रजननीन्देवीं सुभद्राम्प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥' ततः कर्प्पूरादिवर्त्तिकारचितारार्त्तिकन्दत्त्वा, दक्षिणाञ्चदत्त्वा ॥ प्रणम्य, विसर्ज्जयेत् ॥ कौमारी, त्रिपुरा, कल्याणी, रोहिणी, कामिनी, चण्डिका, शङ्करी, दुर्गा,सुभद्रा,इतिकुमारीनामानि ॥ ततश्छागादिबलिन्दद्यात् तद्यथा छागंसिन्दूराद्यैरलङ्कृत्यअर्घ्योदकेन 'दुर्गेदुर्गेरक्षिणीस्वाहा' इतित्रिः प्रोक्ष्यस्नापयेदनेन 'ओंवाराहीयमुनागङ्गाकरतोयासरस्वती । कावेरीचन्द्रभागाचसिन्धुभैरवसागराः । अजस्नानेमहेशानिसान्निध्यमिहकल्पय ॥ पशुपाशविनाशायहेमकूटस्थितायच । परायपरमेष्ठिनेहूङ्काराय चमूर्त्तये ॥' ततोगन्धोदकेनत्रिःप्रोक्ष्यकृताञ्जलिःपठेत् ॥ 'ओं छागत्वम्बलिरूपेणमहाभाग्यादुपस्थितः । प्रणमामिसदाभक्त्या रूपिणम्बलिरूपिणम् ॥ चण्डिकाप्रीतिकामस्यदातुरापद्विनाशिने । चण्डिकाबलिरूपायबलेतुभ्यन्नमोनमः ॥ यज्ञार्थेपशवःसृष्टाः स्वयमेवस्वयम्भुवा ॥अतस्त्वाङ्घातयिष्यामितस्माद्यज्ञेवधोऽवधः ततःपार्श्वपूजा 'ॐजयन्त्यैनमः। ॐमङ्गलायैनमः ३ । ॐकाल्यै नमः ३ । ॐभद्रकाल्यैनमः ३ । ॐमानस्तोकायैनमः ३ । ॐविजयायैनमः ३ । ॐअपराजितायैनमः ३ ।' मध्ये 'ॐअनन्तायैनमः ३ ॥' ततःप्रत्यङ्गम्पूजयेत् ॥ 'शिरसिरुधिरवदनायैनमः' । कपोले 'चण्डिकायैनमः ।' चक्षुषोः 'चन्द्रार्काभ्यान्नमः ।' कर्णयोः 'बृहस्पतयेनमः ।' नासायाम् ॥ 'सरस्वत्यैनमः ।' जिह्वायाम् 'उग्रदन्तिकायैनमः' ग्रीवायां 'महादान्तिकायैनमः ।' उदरे 'पृथिव्यैनमः' । जङ्घाचतुष्टये 'धर्मायनमः' ततोजलङ्गृहीत्वा हस्ते 'ओंह्रींश्रीं

वरुणमण्डलाधिष्ठितविग्रहायैपशुरूपचण्डिकायैइमम्पशुम्प्रोक्षा मिस्वाहा' इतिपशुप्रोक्षणम् ततस्तिलकुशजलान्यादायओं "अद्या मुकमास्यमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकगोत्रः श्रीअमुकशर्म्माछागस मसङ्ख्यकदशवर्षावच्छिन्नश्रीमद्दक्षिणकालिकाप्रीतिकामोऽहमे ताञ्छागान्वह्निदैवतान् भगवत्यैश्रीदक्षिणकालिकायैतुभ्यंघात यिष्ये॥" ततोगन्धादिभिःखड्गमर्च्चयेत् ॥ 'ॐकृष्णम्पिनाकपाणि ञ्चकालरात्रिस्वरूपिणम्। उग्रंरक्तास्यनयनंरक्तमाल्यानुलेपनम्। रक्ताम्बरधरञ्चैवपाशहस्तङ्कुटुम्बिनम्। पिबमानञ्चरुधिरम्भुञ्जा नङ्क्रव्यसंहतिम् ॥ 'ॐकालिकालिवज्रेश्वरीलोहदण्डायनमः' इतित्रिःसम्पूज्य सिन्दूरादिनाह्रींकारंव्विलिख्य 'खड्गायनमः' इतिसम्पूज्य बलिकर्णेबलिगायत्रींश्रावयेत् 'ह्रींबलिरूपायवि द्महेदेवीप्रियायधीमहि। तन्नःपशुःप्रचोदयात्॥' ततःखड्गम्प्रार्थ येत् 'ॐअसिर्व्विशसनःखड्गस्तीक्ष्णधारोदुरासदः। श्रीगर्भो विजयश्चैवधर्म्मपालनमोस्तुते ॥ इत्यष्टौतवनामानिस्वयमुक्ता निवेधसा ॥ नक्षत्रङ्कृत्तिकातेतुगुरुर्देवोमहेश्वरः ॥ रोहिण्यश्चश रीरन्तेधातादेवोजनार्दनः ॥ पितापितामहोदेवस्त्वम्माम्पालय सर्व्वदा ॥ नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रःकृशोदरः॥ भावशुद्धो मर्षणश्चअतितेजास्तथैवच ॥ इयय्येनधृताक्षोणीहतश्चमहिषा सुरः ॥ तीक्ष्णधारायशुद्धायतस्मैखड्गायतेनमः ॥ चण्डिकारस नाबुद्ध्याएकघातेतुघातयेत् ॥ पशुपाशायविद्महे विप्रकर्णायधी महि।तन्नश्छागः प्रचोदयात् ॥सकलंरुधिरन्मुण्डञ्चदेव्यग्रेकृत्वा समभागेनसपूर्णम्परमङ्कविर्दीपयेत्मांससमीपजन्दीपं 'क्रौंक्रौंन मोनमः' अनेनमुण्डेमुण्डेदीपन्दद्यात्ततस्तर्प्पयेदेभिः। पूर्व्वे 'चामु ण्डान्तर्प्पयामिनमः।' दक्षिणे 'योगिनीन्तर्प्पयामिनमः।' पश्चि मे 'डाकिनीन्तर्प्पयामिनमः।' उत्तरे 'भैरवीन्तर्प्पयामिनमः।' आ

ग्नेय्याम् 'विदारिकान्तर्प्पयामिनमः।' नैर्ऋते 'पापराक्षसीन्तर्प्पया मिनमः।' वायव्ये 'पूतनान्तर्प्पयामिनमः ।' ईशाने 'कालिकान्तर्प्प यामिनमः।' 'ॐअद्यदशवर्षावच्छिन्नश्रीदक्षिणकालिकाप्रीतिका मइमञ्छागरुधिरं समुण्डंविष्णुदैवतम्भगवत्यै श्रीदक्षिणकाल्यै तुभ्यमहंसम्प्रददे' इतिछागदानविधिः ॥

ततआरार्त्तिकम् ॥तद्यथा कस्मिँश्चित्स्वर्णादिभाजनेगोधूमचू र्णपिष्टेकर्प्पूरमिश्रिताएकादशश्वेतवर्त्तिकाः प्रज्वाल्यधूपदान विध्युक्तप्रकारेण प्रोक्षणादिकङ्कृत्वा आरार्त्तिकन्दद्यात् ॥ आ रार्त्तिकभाजनं 'फट्' इतिसम्प्रोक्ष्य 'नमः' इत्यभ्यर्च्य 'वम्' इतिवायुबीजेन द्वादशवारजप्तेन संशोष्य वामहस्ततले दक्षहस्त पृष्ठन्निवेश्य 'रम्' इतिबीजेन संदह्य, वामहस्तपृष्ठेदक्षहस्ततल न्निवेश्य 'वम्' इतिषोडशवारजप्तेनधेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, मूले नाष्टशोऽभिमन्त्र्य, 'जयध्वनिमन्त्रमातःस्वाहा' इतिघण्टांसम्पू ज्यवामतर्ज्जन्यासंस्पृश्यमूलम्पठन् 'ॐकर्प्पूरवर्त्तिसय्युँक्तंवह्निना योजितञ्चयत् ॥आरार्त्तिकमिदन्दिव्यङ्गृहाणजगदीश्वरि॥' मूलञ्च पठन् 'इदमारार्त्तिकंसाङ्गायैसायुधायैसबलवाहनायैसपरिवारा यैसावरणायैश्रीदक्षिणकालिकायैनमः' इतिपठञ्जलन्दत्वा नेत्र प्रदेशे दशधा भ्रामयेत् ततः पुष्पाञ्जलित्रयेण 'सायुधसवाहनस परिवारमहाकालसहितश्रीदक्षिणकालिकाम्पूजयामिनमः' इति त्रिःसम्पूज्यत्रिस्तर्प्पयेत् ॥ ततोयोनिमुद्रादिकम्पूर्व्ववद्दर्शये त्॥ततश्छत्रचामरे दर्शयित्वा पुष्पाञ्जलिङ्गृहीत्वा श्लोकचतुष्टय म्पठेत् ॥ श्लोकायथा" बुद्धिश्शरासनेकृत्वादर्प्पणम्मङ्गलानिच ॥ मनोवृत्तिर्व्विचित्रातेनृत्यरूपेणकल्पिता ॥ १ ॥ ध्वनयोगी तिरूपेणशब्दवाद्यप्रभेदतः ॥ छत्राणितवपद्मानिकल्पितानिम याप्रभो ॥ २ ॥ सुषुम्नाध्वजरूपेणप्राणाद्यावाशरात्मना ॥ अह

ङ्कारोगजत्वेनवेगः कृतोरथात्मना ॥ ३ ॥ इन्द्रियाण्यश्वरूपाणिशब्दादीन्रथवर्त्मना॥मनःप्रग्रहरूपेणबुद्धिस्सारथिरूपतः ॥ सर्व्वमन्यत्तक्कृवाप्तन्तवोपकरणात्मना" इतिपुष्पाजलिन्दद्यात्प्रार्थयेत् ॥ इतिश्रीमद्दक्षिणकाल्यास्सपर्य्याविधिस्सम्पूर्णः ॥छ ॥

ततो नित्यहोमङ्कुर्य्यात् ॥ तद्यथा स्थण्डिले कुण्डे वा मूलेन वीक्ष्य, अस्त्रेण प्रोक्षणताडने कृत्वा, कुशैराच्छाद्य, व्याहृतित्रयमुच्चार्य्य,वह्निमानीय,तिस्रोरेखाःसँल्लिख्य,अस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्येक्रव्यादांशम्परित्यज्य मूलेनाभिमन्त्र्य, 'वम्'इतिधेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्यास्त्रेणसंरक्ष्य,'हूम्'इत्यवगुण्ठ्यपरितोभ्रामयन् त्रिःप्रणवम्पठन् शय्यागतामृतुस्नातान्नीलेन्दीवरधारिणीन्देवेनभुज्यमानाव्वाँगीश्वरीङ्कुण्डे ध्यात्वातद्योनिमण्डलेईश्वरेतोधिया वह्निं'हूं वह्निचैतन्यायनमः' इतिपठन्मूलञ्चपठन्स्थापयेत्॥ ततोवह्निम्पुष्पाक्षतादिनासम्पूज्यतत्रइष्टदेवतामावाह्य,सम्पूज्य,घृतादिभिर्व्यस्तसमस्ताभिर्म्महाव्याहृतिभिराहुतिचतुष्टयन्दत्वा, स्वकल्पोक्तकरवीरपुष्पैर्घृतादिनावापञ्चविंशतिसङ्ख्ययास्वाहान्तम्मूलमन्त्रमुच्चार्य्यतदन्तेचतुर्थ्यन्तन्देवताभिधानंस्वाहान्तमुच्चार्य्यजुहुयात् ॥ पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वामूर्त्तौदेवीन्नियोज्य संहारमुद्रयावह्निंव्विसृज्य, देव्यैआचमनादिकन्दद्यात् ॥ चामरादिकंसम्प्रदर्श्यस्तुत्वा, 'यानिकानिच' इत्यादिनात्रिःप्रदक्षिणङ्कुर्य्यात् ॥ ततोदण्डवत्प्रणिपत्य, आचमनादिकम्पुष्पाञ्जलिञ्चविधाय ततोब्रह्मार्प्पणाख्येनमनुनाआत्मानमर्प्पयेत् ॥ तद्यथा अर्प्पणमन्त्रस्तु 'ॐइतःपूर्व्वंपापबुद्धिन्देवधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसावाचा हस्ताभ्याम्पद्भ्यामुदरेणशिश्नायत्स्मृतय्यँदुक्तय्यँत्कृतन्तत्सर्व्वम्ब्रह्मार्प्पणम्भवतुस्वाहामाम्मदीयञ्चसकलन्देव्यै ते समर्प्पये ॐतत्सत्' ततःप्राणायामादिकाँव्विधाय

पुष्पाक्षतादिभिस्सम्पूज्य, क्षमापयेत् ॥ क्षमापनमन्त्रो यथा 'अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रांत्यायन्न्यूनमधिकङ्कृतम् ॥ विपरीतञ्चतत्सर्व्वं क्षमस्वपरमेश्वरि ॥१॥ मन्त्रहीनङ्क्रियाहीनाँव्विधिहीनंसुरेश्वरि । सम्पूजितामयादेवितस्मात्त्वव्वँरदाभव ॥२॥ आवाहनञ्चपूजाञ्चत्वन्माहात्म्यञ्जपन्तथा ॥ विसर्ज्जनन्नजानामिकालिकेत्वङ्क्षमस्वमे ॥ ३ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टंस्वरव्यञ्जनवर्जितम् ॥ तत्सर्वङ्क्षम्यतान्देविप्रसीदपरमेश्वरि ॥ ४ ॥ यस्याःस्मृत्याचनामोक्त्यातपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनंसम्पूर्णतायाँतिप्रसीदपरमेश्वरि ॥ ५ ॥ कामेश्वरिजगन्मातःसच्चिदानन्दविग्रहे ॥ गृहाणार्च्चामिमांसर्वाम्प्रसीदपरमेश्वरि ॥ ६ ॥' इत्येतैः पुष्पाञ्जलिनाक्षमापयेत् ॥ ततोयोनिमुद्राम्बद्ध्वाप्रणम्य 'ॐगच्छगच्छपरंस्थानंस्वस्थानम्परमेश्वरि । पूजाराधनकालेचपुनरागमनायच' इति, मूलमन्त्रम्पठन्संहारमुद्रयादेवीँव्विसृज्य स्वहृदयेस्थापयेत् ॥ततऐशान्यान्दिशि'ह्रीं चण्डेश्वर्य्यैनमः'इतिचण्डेश्वरींसम्पूज्य 'ॐचण्डेश्वरि महादेवि निर्म्माल्यैश्चन्दनादिभिः । लेह्यचोष्यान्नपानादिनिर्म्माल्यस्रग्विलेपनैः। निर्म्माल्यभोजनन्तुभ्यन्ददामिश्रीशिवाज्ञया' इति मन्त्रेण निर्म्माल्यन्दद्यात् ततस्तत्रैवोच्छिष्टचाण्डालिनींसम्पूज्य तदुच्छिष्टन्नैवेद्यासवमुच्छिष्टचाण्डाल्यैदद्यात् ॥ ततोब्राह्मणान्कुमारीश्चसम्भोज्यस्वयम्प्रसादम्भुञ्जीत ॥ पुरश्चरणेत्वयं व्विशेषःलक्षसङ्ख्यकजपः तद्दशांशऽपूर्वोक्तद्रव्यैःपुरश्चरणपद्धत्युक्तक्रमेणपूर्व्वोक्तविधिनाहोमऽकर्त्तव्यः॥तद्दशांशतऽकर्प्पूरमिश्रिततोयैस्तीर्थतोयैर्म्मधुनावामूलमन्त्रमुच्चार्य्य'दक्षिणकालीन्तर्प्पयामिस्वाहा'एतदुच्चार्यकिञ्चित्पात्रेदेवतांसम्पूज्यतर्प्पयेत्॥ पुनऽप्राणायामादिविधायविसर्ज्जयेत् ॥ तद्दशांशतोमार्जयेत् ॥ तद्यथा आत्मानन्देवताबुद्ध्याध्यात्वासम्पूज्यमूलविद्यांसमु

च्चार्य्यंतदन्तेदेवताभिधान्द्वितीयान्तामुच्चार्य्यंतदन्ते'अभिषिञ्चामिनमः' इत्यात्मानमभिषेचयेत् ॥ तद्दशांशब्राह्मणभोजनम् । तदन्ते महतीम्पूजाञ्चकुर्य्यात् ॥

अथ सङ्क्षिप्तपूजाविधिः ।

तत्रस्ववामेचतुरस्रंल्लिखित्वातत्र 'ॐह्वःसामान्यार्घ्यंस्थापयामि' इतिपुष्पाक्षतम्प्रक्षिप्यतत्र 'ॐआधारशक्तिभ्योनमः' इतिसम्पूज्यतत्रार्घपात्रंसंस्थाप्य 'नमः' इतिजलेनापूर्य्यतस्मिञ्जलेसूर्य्यमण्डलादङ्कुशमुद्रयातीर्थान्यावाहयेत् । तत्रमन्त्रः 'ॐगङ्गेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्वति । नर्म्मदेसिन्धुकावेरिजलेस्मिन्सन्निधिङ्कुरु ॥ ॐब्रह्माण्डोदरतीर्थानिकरैःस्पृष्टानितेरवे । तेनसत्येनमेदेवतीर्थन्देहिदिवाकर' इतितीर्थान्यावाह्य 'ॐ गङ्गादिसकलतीर्थेभ्योनमः' इतिपुष्पाक्षतादिभिस्सम्पूज्य 'ॐअर्कमण्डलायद्वादशकलात्मनेनमः' 'ॐवन्हिमण्डलायदशकलात्मनेनमः' 'ॐसोममण्डलायषोडशकलात्मनेनमः' इतिअर्कवह्निसोममण्डलत्रयंसम्पूज्य 'ॐषडङ्गेभ्योनमः' इतिषडङ्गानिसम्पूज्यअस्त्रेणसंरक्ष्यकवचेनावगुण्ठय'वम्'इतिधेनुमुद्रयाअमृतीकृत्य मत्स्यमुद्रया आच्छाद्य प्रणवन्दशकृत्वो जपेत् ॥ शङ्खमुद्रांसन्दर्श्य धेनुमुद्रायोनिमुद्रे दर्शयेत् इतिसामान्यार्घ्यंस्थापनविधिः॥अथपूजा ॥ यन्त्रंल्लिखित्वाकुङ्कुमकेशरचन्दनादिभिःषट्कोणगर्भंत्रिकोणत्रयाष्टभूपुरात्मकंल्लिखेत् ॥ ततः ऋष्यादिन्यासङ्कुर्य्यात् तद्यथा 'शिरसिभैरवायऋषयेनमः ।मुखेउष्णिक्छन्दसेनमः।हृदये ॐदक्षिणकालिकायैनमः । गुह्येक्रींबीजायनमः।पादयोःहूंशक्तयेनमः ।सर्व्वाङ्गेक्रींकीलकायनमः ॥' अथषडङ्गन्यासः॥'क्रांहृदयायनमः।'इत्यङ्गुलीभिःतर्ज्जनीमध्यमा

नामाभिःप्रसारिताभिर्हृदयंस्पृशेत्।'क्रींशिरसेस्वाहा'इतितर्ज्जनी मध्यमाभ्यांशिरःस्पृशेत्।'क्रूंशिखायैवषट्'इतिबद्धमुष्टिनाअङ्गुष्ठे नशिखांस्पृशेत् । 'क्रैंकवचायहूम्'इतिमन्त्रेणव्यस्तहस्ताभ्यांस र्व्वाङ्गे।'क्रौंनेत्रत्रयायवौषट्॥'इतितर्ज्जन्याअनामयानेत्रे मध्यमया भ्रूमध्यम् एवन्नेत्रत्रयंस्पृशेत् ।'क्रःअस्त्रायफट्।' इतिछोटिकयादि ग्बन्धनङ्कुर्य्यात् । एवङ्करन्यासः 'क्रांअङ्गुष्ठाभ्यांनमः । क्रींत र्ज्जनीभ्यांस्वाहा । क्रूँमध्यमाभ्यांवषट् । क्रैंअनामिकाभ्यांहूम् । क्रौंकनिष्ठाभ्यांवौषट् । क्रःकरतलकरपृष्ठाभ्यांफट्'। एवंन्यास व्विधाय दशधासप्तधापञ्चधावाव्यापकन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ तत श्चतुःषोडशाष्टवारजप्तेन मूलमन्त्रेण पूरककुम्भकरेचकाख्यम्प्रा णायामत्रयङ्कुर्य्यात् ॥ ततोदक्षिणकालीन्ध्यायेत् तत आवाहयेत् तद्यथा ॥ करकच्छपिकां सपुष्पाम्बद्ध्वा यथोक्तरूपान्देवीन्ध्या त्वा हृदयान्नासिकोपरि समानीय मूलम्पठित्वा । 'एह्येहिमहादे विपादुकाभ्यान्दयानिधे' इत्यञ्जलिस्थपुष्पोपरिसमानीय, 'ॐ देवेशिभक्तिसुलभे परिवारसमन्विते । यावत्त्वाम्पूजयिष्यामिता वत्त्वंसुस्थिराभव' इतियन्त्रोपरिक्षिपेत् ॥ततोमूलमुच्चार्य्य 'साङ्गे सायुधेसवाहने सावरणे सपरिवारे दक्षिणकालिके इहागच्छ' इ त्यावाहनमुद्रयाऽऽवाहयेत् 'इहतिष्ठ' इतिस्थापनमुद्रयास्थाप येत् 'इहसन्निधेहि' इतिसन्निधीकरणमुद्रयासन्निधीकरणम् 'इहस न्निरुध्यस्व' इतिसन्निरोधनमुद्रया सन्निरोधनम् 'इहसम्मुखी भव' इतिसम्मुखीकरणमुद्रयासम्मुखीकरणम् । अस्त्रेणसंरक्ष्य, 'हूम्'इत्यवगुण्ठ्य, 'वम्'इतिधेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्यदेवताङ्गेषडङ्गा न्विन्यस्य, मूलमन्त्रेण सकलीकृत्य 'आँह्रींक्रोंस्वाहा'इतिद्वादश वारञ्जपल्लेंलिहानमुद्रयादेवतायाः प्राणप्रतिष्ठाङ्कुर्य्यात् । तद्यथा, 'आँह्रींक्रोंश्रीदक्षिणकालिकाया वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्श्रोत्रघ्राण

प्राणाइहागत्यसुखञ्चिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा' इतिहस्तन्दत्त्वापठेत् ॥ तत्रधेनुमुद्राम्प्रदर्शयेत् ॥ ततोमूलमन्त्रम्पठन् 'एषपुष्पाञ्जलिस्साङ्गसायुधसवाहनसावरणसपरिवारदक्षिणकालिकादेवतायै नमः' इतिपुष्पाञ्जलिपञ्चकन्दद्यात् ॥ एवंसर्व्वत्रमूलमन्त्रपाठस्साङ्गइत्यादियोजनाचबोध्या ॥ 'इदम्पाद्यमिदमाचमनीयम्, एषोऽर्घः, एषमधुपर्कः, इदम्पुनराचमनीयम्, इदंस्नानीयन्दक्षिणकालिकादेवतायैनमः' 'इदंरक्तचन्दनानुलेपनम् एतेअक्षता इमानिपुष्पाणि अमुकदेवतायैवौषट्' 'एषधूपःएषदीपःएतानिनैवेद्यानि कालिकादेवतायैनमः॥' इतिसङ्क्षेपतः पूजाँव्विधाय, ततोजपमालामानीय, क्वचित्पात्रेवामहस्तेवास्थापयित्वा, मूलमन्त्रणार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य 'ॐमाले माले महामायेसर्व्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्व्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मेसिद्धिदाभव' 'ॐह्रींसिद्धयैनमः' इत्यनेनमालान्दक्षिणकेरनिधायहृत्प्रदेशेसमानीय मध्यमामध्यभागेनगुटिकाम्प्रत्येकंस्पृशन् मेरुमलङ्घयन् शरीरेकामकलाँव्विभाव्य शिरसिगुरुन्ध्यात्वा हृदिदेवीम्भावयन् जिह्वायाम्मन्त्रन्दीपरूपिणाँव्विभाव्य तत्प्रभापटलेजिह्वामपिदीपरूपिणीँव्विभाव्य मनसा उपांशुना वा करमालया वर्णमालया वा संस्कृतमहाशङ्खरुद्राक्षस्फटिकाद्यन्यतममालया वा मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतव्वाँ अद्रुतमविलम्बितम्प्रजप्य मालांशिरसि 'ॐत्वम्मालेसर्व्वभूतानांसर्व्वलोकप्रियामता । शिवङ्कुरुष्वमेभद्रेयशोवीर्य्यञ्चसर्वदा' इतिपठन्निधाय 'ह्रींसिद्धैयनमः' इतिसम्पूज्य पुनःपूर्व्ववत् प्राणायामन्न्यासादिकञ्चविधाय देवताम्पुष्पाक्षतादिभिःसम्पूज्यपुष्पचन्दनाक्षतयुतशङ्खोदकेन 'ॐगुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ॥ सिद्धिर्भवतुमेदेवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि' इतिमन्त्रेणदेव्यावामकरेतेजो

मयञ्जलन्ध्यात्वा,समर्प्पयेत् ततोमालांशिरसउत्तार्य्य 'ॐत्व
म्मालेसर्व्वदेवानांसर्व्वसिद्धिप्रदामता । तेनसत्येनमेसिद्धिन्देहि
देविनमोऽस्तुते' इत्यमुम्मन्त्रम्पठन्सम्पूज्ययत्नतोगोपयेत् । क
राद्भ्रष्टेतच्छान्त्यर्थमष्टोत्तरशतमूलञ्जपेत्ततोदेव्यैपुष्पाञ्जल्यष्ट
कन्दत्वास्तोत्रकवचादिकम्पठेत् ॥

अथ कर्प्पूरस्तोत्रम् ।

कर्प्पूरम्मध्यमान्त्यस्वरपररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तम्बीजन्तेमात
रेतत्त्रिपुरहरवधुत्रिष्कृतय्येजपन्ति ॥ तेषाङ्गद्यानिपद्यानिचमुख
कुहरादुल्लसन्तोववाचः स्वच्छन्दध्वान्तधाराधररुचिरुचिरेसर्व्व
सिद्धिङ्गतानाम् ॥ १ ॥ ईशानस्सेन्दुवामश्रवणपरिगतम्बीज
मन्यन्महेशिद्वन्द्वन्तेमन्दचेतायदिजपतिजनोवारमेकङ्कदाचित् ॥
जित्वावाचामधीशन्धनदमपिचिरम्मोहयत्यम्बुजाक्षीवृन्दञ्चन्द्रा
र्द्धचूडेप्रभवतिसमहाघोरराावावतंसे ॥ २ ॥ ईशोवैश्वानरस्थश्श
शधरविलसद्वामनेत्रेणयुक्तम्बीजन्तेद्वन्द्वमन्यद्विगलितचिकुरेका
लिकेयेजपन्ति ॥ द्वेष्टारन्तेनिहन्तित्रिभुवनमासितेवश्यभावन्नय
न्तिसृक्कद्वन्द्वास्रधाराद्वयधरवदनेदक्षिणेकालिकेति ॥ ३ ॥ ऊर्ध्वं
व्वामेकृपाणङ्करतलकमलेछिन्नमुण्डन्तथाधः सव्येभीतिव्वरञ्च
त्रिजगदघहरेदक्षिणेकालिकेच ॥ जप्त्वैतन्नामवर्णन्तवमनुविभव
म्भावयन्यस्तदर्थन्तेषामष्टौकरस्थाःप्रकटितवदनेसिद्धयस्त्र्यम्ब
कस्य ॥४॥वर्ग्गाद्यव्वह्निसंस्थव्विधुरतिललितन्तत्रयङ्कूर्चयुग्मल्लँ
ज्जाद्वन्द्वञ्चपश्चात्स्मितसुखितदधष्ठद्वयय्योजयित्वा ॥ मातर्य्येये
जपन्तिस्मरहरमहिलेभावयन्तेस्वरूपन्तेलक्ष्मीलास्यलीलाकम
लदलदृशःकामरूपाभवन्ति॥५॥प्रत्येकव्वाँद्वयव्वाँत्रयमपिचपर
म्बीजमत्यन्तगुह्यन्त्वन्नाम्नायोजयित्वासकलमपिसदाभाववन्तो

१ 'घोरशावावतंसे' वा पाठः ।

जपन्ति ॥ तेषान्नेत्रारविन्देविहरतिकमलावक्त्रशुभ्रांशुबिम्बेवाग्दे
वीदिव्यमुण्डस्रगतिशयलसत्कण्ठपीनस्तनाढ्ये ॥६ ॥ गतासूना
म्बाहुप्रकरकृतकाञ्चीपरिलसन्नितम्बान्दिग्वस्त्रान्त्रिभुवनविधात्री
न्त्रिनयनाम् ॥ श्मशानस्थेतल्पेशवहृदिमहाकालसुरतप्रसक्ता
न्त्वान्ध्यायञ्जननिजडचेताअपिकविः ॥७॥ शिवाभिर्घोराभिश्श
वनिवहमुण्डास्थिनिकरैःपरंसङ्कीर्णायाम्प्रकटितचितायांहरव
धूम् ॥प्रविष्टांसन्तुष्टामुपरिसुरतेनातियुवतींसदात्वान्ध्यायन्तिक्व
चिदपिनतेषाम्परिभवः ॥८॥ वदामस्तेकिंत्वाजननिवयमुच्चैर्जड
धियोनधातानापीशोहरिरपिनतेवेत्तिपरमम् ॥तथापित्वद्भक्तिर्मुु
खरयतिचास्माकमसितेतदेतत्क्षन्तव्योनखलुपशुरोषस्समुचितः
॥ ९ ॥ समन्तादापीनस्तनजघनधृग्यौवनवतीरतासक्तोनक्तंय्य
दिजपतिभक्तस्तवमनुम् ॥ विवासास्त्वान्ध्यायन्गलितचिकुरस्त
स्यवशगाःसमस्ताःसिद्धौघाभुविचिरतरञ्जीवतिकविः ॥१०॥ स
मास्स्वस्थीभूतोजपतिविपरीतोयादिसदाविचिन्त्यत्वान्ध्यायन्नति
शयमहाकालसुरताम् ॥ तदातस्यक्षोणीतलविरहमाणस्यविदुषः
कराम्भोजेवश्याःस्मरहरवधूसिद्धिनिवहाः ॥ ११ ॥ प्रसूते संसा
रञ्जननि जगतीम्पालयति वा समस्तङ्क्षित्यादिप्रलयसमये संह
रतिच॥अतस्त्वां धातापि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि महेशोपि
प्रायःसकलमपि किंस्तौमि भवतीम् ॥ १२ ॥ अनेकेसेवन्ते
भवदधिकगीर्व्वाणनिवहा विमूढास्ते मातः किमपि नहि जा
नन्ति परमम् ॥ समाराध्यामाद्यां हरिहरविरञ्च्यादिविबुधैः प्रप
न्नोस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्दनिरताम् ॥ १३ ॥ धरित्री कीलालं
शुचिरपि समीरोपि गगनन्त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी का
लिसकलम् ॥स्तुतिःका ते मातर्निजकरुणयामामगतिकम्प्रसन्ना
त्वम्भूया भवमनु न भूयान्ममजनुः ॥१४॥ श्मशानस्थस्स्वस्थो

गलितचिकुरो दिक्पटधरस्सहस्रंत्वर्क्काणान्निजगलितवीर्य्येण कुसुमम् ॥ जपँस्त्वत्प्रत्येकम्मनुमपि तव ध्याननिरतोमहाकालि स्वैरं स भवतिधरित्रीपरिवृढः ॥ १५ ॥ गृहेसम्मार्ज्जन्या परिगलितवीर्य्यंहिकुसुमं समूलम्मध्याह्नेवितरति चितायाङ्कुजदिने॥समुच्चार्य्यप्रेम्णामनुमपिसकृत्कालि सततङ्गजारूढोयातिक्षितिपरिवृढःसत्कविवरः ॥ १६ ॥ स्वपुष्पैराकीर्णङ्कुसुमधनुषोमन्दिरमहोपुरोध्यायन्ध्यायञ्जपतियादिभक्तस्तवमनुम् । सगन्धर्व्वश्रेणीपतिरपिकवित्वामृतनदीनदीनऽपर्य्यन्तेपरमपदलीनऽप्रभवति ॥ १७॥ त्रिपञ्चारेपीठेशवशिवहृदि स्मेरवदनाम्महाकालेनोच्चैर्म्मदनरसलावण्यनिरताम्॥ समासक्तोनक्तंस्वयमपिरतानन्दानिरतोजनोयोध्यायेत्त्वामापिजननिसस्यात्स्मरहरः ॥ १७ ॥ सलोमास्थिस्वैरम्पललमपिमार्ज्जारमसितेपरञ्चोष्ट्रम्मेषन्नरमहिषयोश्छागमपिवा ॥ बलिन्तेपूजायामपिवितरताम्मर्त्त्यवसतांसतांसिद्धिः सर्व्वाप्रतिपदमपूर्व्वाप्रभवति ॥ १९ ॥ वशोलक्षम्मन्त्रम्प्रजपति हविष्याशनरतोदिवा मातर्य्युष्मच्चरणयुगलध्याननिरतः ॥ परन्नक्तन्नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुञ्जनो लक्षं सम्यक्स्मरहरसमानऽ क्षितितले ॥ २० ॥ इदंस्तोत्रंमातस्तवमनुसमुद्धारणजपस्वरूपाख्यम्पादाम्बुजयुगलपूजाविधियुतम्॥निशार्द्धेवापूजासमयमथवायस्तुपठति प्रलापस्तस्यापिप्रसरतिकवित्वामृतरसः॥ २१॥ कुरङ्गाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रेमतरलव्वँशस्तस्यक्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः ॥ रिपुऽकारागारं कलयतिचतत्केलिकलया चिरञ्जीवन्मुक्तस्स भवति सुभक्तःप्रतिजनुः॥ ॥ २ ॥ इतिश्रीमहाकालप्रणीतङ्कर्प्पूरस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

अथ स्तोत्रम् ॥

प्राग्देहस्थोयदाहंतवचरणयुगन्नाश्रितोनार्च्चितोहं तेनाद्याकीर्तिवर्गैर्ज्जठरजदहनैर्बाद्ध्यमानोवालैष्टैः ॥ क्षिप्त्वाजन्मान्तरान्न्पुनरिहभविताक्काश्रयः क्कापिसेवाक्षन्तव्योमेपराधः प्रकटितवदने कामरूपेकराले ॥ १ ॥ वाल्येबालाभिलापैर्ज्जडितजडमतिर्बाललीलाप्रसक्तोनत्वांजानामिमातःकलिकलुषहराम्भोगमोक्षप्रदात्रीम् ॥ नाचारोनैवपूजा नचयजनकथानस्मृतिन्नैवसेवाक्षन्तव्यो० ॥ २ ॥ प्राप्तोहंयौवनञ्चेद्विषधरसदृशैरिन्द्रियैर्दष्टगात्रोनष्टप्रज्ञःपरस्त्रीपरधनहरणेसर्व्वदासाभिलाषः ॥ त्वत्पादाम्भोजयुग्मङ्क्षणमपिमनसानस्मृतोहङ्कदापिक्षन्तव्यो० ॥ ३ ॥ प्रौढोभिक्षाभिलाषीसुतदुहितृकलत्रार्थमन्नादिचेष्टःक्कप्राप्स्येकुत्रयामीत्यनुदिनमनिशञ्चिन्तयामग्नदेहः ॥ नोतेध्यानन्नचास्थानचभजनविधिर्न्नामसङ्कीर्त्तनव्वाँक्षन्तव्यो० ॥ ४ ॥ वृद्धत्वेबुद्धिहीनःकृशविवशतनुश्श्वासकासातिसारैःकर्म्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनः क्षुत्पिपासातिभूतः ॥ पश्चात्तापेनदग्धो मरणमनुदिनन्ध्येयमात्रन्नचान्यत्क्षन्तव्यो० ॥ ५ ॥ कृत्वास्नानंदिनादौक्काचिदपिसलिलंनाकृतंनैवपुष्पन्तेनैवेद्यादिकञ्चक्काचिदपिनकृतं नापिभावोनभक्तिः ॥ न न्यासोनैवपूजानचगुणकथनं नापिचर्च्चाकृताते क्षन्तव्यो० ॥ ६ ॥ जानामित्वांनचाहंभवभयहरणीं सर्व्वसिद्धिप्रदात्रीन्नित्यानन्दोदयाढ्यान्त्रितयगणमयीन्नित्यशुद्धोदयाढ्याम् ॥ मिथ्याकर्म्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीडितोदुःखसङ्घैः क्षन्तव्यो० ॥ ७ ॥ कालाभ्रां श्यामलाङ्गीव्विँगलितचिकुराङ्खड्गमुण्डाभिरामान्त्रासत्राणेष्टदात्रीङ्कुणपगणशिरोमालिनीन्दीर्घनेत्राम् ॥ संसारस्यैकसाराम्भवजननहराम्भावितोभावनाभिःक्षन्त

व्यो० ॥ ८ ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथेशः परिणमतिसदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मम्भाग्याभावान्नचाहम्भवजननिभवत्पादयुग्मम्भजामि ॥ नित्यँल्लोभप्रलोभैःकृतविवशमतिःकामुकस्त्वाम्प्रयाचेक्षन्तव्यो० ॥ ९ ॥ रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धःकार्य्याकार्य्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैर्विहीनः ॥ क्वध्यानन्तेक्वचर्चाक्वचमनुजपनन्नैवकिञ्चित्कृतोहङ्क्षन्तव्यो० ॥ १० ॥ रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेता निद्रालस्यप्रसक्तस्सुजठरभरणेव्याकुलःकल्पितात्मा ॥ किन्तेपूजाविधानन्त्वयिक्वचनुमतिःक्वानुरागःक्वचास्थाक्षन्तव्यो० ॥ ११ ॥ मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरसुविरहिणःपापकर्म्मप्रवृत्तेः ॥ दारिद्र्यस्यक्वधर्मःक्वचजननरुचिः क्वस्थितिस्साधुसङ्घैः क्षन्तव्यो० ॥ १२ ॥ मातस्तातस्य देहाज्जननिजठरगः संस्थितस्त्वद्वशेहन्त्वं हर्त्ता कारयित्री करणगुणमयीकर्महेतुस्वरूपा ॥ त्वम्बुद्धिश्चित्तसंस्थाप्यहमतिभवतीसर्व्वमेतत्क्षमस्व क्षन्तव्यो० ॥ १३ ॥ त्वम्भूमिस्त्वञ्जलञ्च त्वमसि हुतवहस्त्वञ्जगद्वायुरूपा त्वञ्चाकाशम्मनश्चप्रकृतिरसि महत्पूर्व्विकापूर्व्वपूर्व्वा ॥ आत्मात्वञ्चासिमातःपरमसिभवती त्वत्परन्नैवकिञ्चित्क्षन्तव्यो० ॥ १४ ॥ त्वङ्काली त्वञ्च तारात्वमसि गिरिसुता सुन्दरीभैरवी त्वन्त्वन्दुर्ग्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं हि लक्ष्मीः शिवा त्वम् ॥ धूमा मातङ्गिनी त्वन्त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्याक्षन्तव्यो० ॥ १५ ॥ स्तोत्रेणानेन देवीम्परिणमति जनो यः सदाभक्तियुक्तो दुःकृत्यादुर्ग्गसङ्घम्परितरति शतव्विँघ्नतानाशमेति ॥ नाधिर्व्याधिः कदाचिद्भवति यदि पुनस्सर्व्वदा सापराधस्सर्व्वन्तत्कामरूपेत्रिभुवजननि क्षामये पुत्रबुद्ध्या ॥ १६ ॥ ज्ञाता वक्ता कवीशो भव

ति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा निःपापी निःकलङ्की कुलपति कुशलस्सत्यवाग्धार्म्मिकश्च ॥ नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगण विमुखस्सत्पथाचाशीलः संसाराब्धिसुखेनप्रतरातिगिरिजापादयु ग्मावलम्बात् ॥ १७ ॥ इतिस्तोत्रम् ॥

अथ कवचम् ।

भैरव्युवाच॥कालीपूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधाः प्रभो। इदानींश्रोतुमिच्छामि कवचम्पूर्वसूचितम् ॥ १ ॥त्वमेव स्रष्टा पाता च संहर्ताच त्वमेव हि । त्वमेव शरणन्नाथ त्राहि मान्दुः खसङ्कटात् ॥ २ ॥ भैरवउवाच ॥ रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे । श्रीजगन्मङ्गलन्नाम कवचम्मन्त्रविग्रहम् ॥ ३ ॥ पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यम्मोहयेत्क्षणात् । नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ॥ ४ ॥ योगिनङ्क्षोभमनयद्यद्धृ त्वाचरघूत्तमः । वरतृप्तौजघानैवरावणादिनिशाचरान्॥५ ॥यस्य प्रसादादीशोऽहंत्रैलोक्यविजयीविभुः॥ धनाधिपः कुबेरोपिसुरेशो भूच्छचीपतिः ॥६॥ एवंहिसकलादेवास्सर्व्वसिद्धीश्वराः प्रिये ॥ श्रीजगन्मङ्गलस्यास्यकवचस्यऋषिः शिवः ॥७॥ छन्दोऽनुष्टुब्दे वताचकालिकादक्षिणेरिता ॥ जगताम्मोहने दुष्टविजये भुक्ति मुक्तिषु ॥८॥ योषिदाकर्षणेचैवविनियोगः प्रकीर्तितः ॥ शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरीपरा ॥ ९ ॥ क्रींक्रींक्रीं मे ललाट ञ्चकालिकाखड्गधारिणी ॥ हूंहूंपातुनेत्रयुगंह्रींह्रींपातुश्रुतीमम ॥ ॥ १० ॥ दक्षिणे कालिके पातु घ्राणयुग्मम्महेश्वरी ॥ क्रींक्रीं क्रींरसनाम्पातुहूंहूंपातुकपोलकम् ॥ ११ ॥ वदनं सकलम्पातु ह्रींह्रीँ स्वाहास्वरूपिणी । द्वाविंशत्यक्षरीस्कन्धौ महाविद्या सु खप्रदा ॥ १२ ॥ खड्गमुण्डधरा काली सर्व्वाङ्गमभितोऽवतु ॥

क्रींहूँह्रींत्र्यक्षरीपातुचामुण्डाहृदयम्मम ॥ १३ ॥ ऐंहूंओंऐंस्तन द्वन्द्वंह्रीँफट्स्वाहाककुत्स्थलम् ॥ अष्टाक्षरीमहाविद्या भुजौपा तुसकर्तृका ॥ १४ ॥ क्रींक्रींहूंहूंह्रींह्रींकारीपातुषडक्षरीमम ॥ क्रींनाभिम्मध्यदेशञ्च दक्षिणेकालिकाऽवतु ॥ १५ ॥ क्रींस्वाहा पातुपृष्ठञ्चकालिकासादशाक्षरी ॥ क्रींमेगुह्यंसदापातुकालिकायै नमस्ततः ॥ १६ ॥ सप्ताक्षरीमहाविद्यासर्व्वतन्त्रेषुगोपिता ॥ ह्रींह्रींदक्षिणेकालिकेहूंहूंपातुकटिद्वयम् ॥ १७ ॥ कालीदशाक्षरी विद्यास्वाहामामूरुयुग्मकम् ॥ ॐक्रींक्रींमेस्वाहापातुकालिकाजा नुनीसदा ॥ १८ ॥ कालीहृन्नामविद्येयञ्चतुर्व्वर्गफलप्रदा ॥ क्रीं ह्रींह्रींपातुसागुल्फन्दक्षिणेकालिकेऽवतु ॥ १९ ॥ क्रींहूंह्रींस्वाहा पदम्पातुचतुर्द्दशाक्षरीमम ॥ खड्गमुण्डधराकालीवरदाभयधारि णी ॥ २० ॥ विद्याभिस्सकलाभिःसासर्व्वाङ्गमभितोऽवतु ॥ का लीकपालिनीकुल्लाकुरुकुल्लाविरोधिनी ॥ २१ ॥ विप्रचित्तातथो ग्रोग्रप्रभादीप्तावनात्विषा ॥ नीलाघनाबलाकाचमात्रामुद्रामिताच माम् ॥ २२ ॥ एतास्सर्व्वाःखड्गधरामुण्डमालाविभूषणाः ॥ रक्ष न्तुदिग्विदिक्षुमांब्राह्मीनारायणीतथा ॥ २३ ॥ माहेश्वरीचचा मुण्डाकौमारीचापराजिता ॥ वाराहीनारसिंहीचसर्व्वाश्चामितभू षणाः ॥ २४ ॥ रक्षन्तुस्वायुधैर्द्दिक्षुविदिक्षुमांयथातथा ॥ इतिते कथितन्दिव्यङ्कवचम्परमाद्भुतम् ॥ २५ ॥ श्रीजगन्मङ्गलन्नामम हाविद्यौघविग्रहम् ॥ त्रैलोक्याकर्षणम्ब्रह्मन्कवचम्मन्मुखोदित म् ॥ २६ ॥ गुरुपूजांविधायाथविधिवत्प्रपठेत्ततः ॥ कवचन्त्रिस्स कृद्वापियावज्जीवञ्चवापुनः ॥ २७ ॥ एतच्छतार्द्धमावृत्त्यत्रैलो क्यविजयीभवेत् ॥ त्रैलोक्यङ्क्षोभयत्येवकवचस्यप्रसादतः ॥ ॥ २८ ॥ महाकविर्भवेन्मासंसर्व्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥ पुष्पाञ्ज लीन्कालिकायैमूलेनैवार्प्पयेत्सकृत् ॥ २९ ॥ शतवर्षसहस्राणा

म्पूजायाःफलमाप्नुयात् ॥ भूर्जेविलिखितञ्चैतत्स्वर्णस्थन्धारये द्यदि ॥ ३० ॥ विशाखायान्दक्षबाहौकण्ठेवाधारयेद्यदि ॥ त्रैलोक्यम्मोहयेत्क्रोधात्त्रैलोक्यञ्चूर्णयेतत्क्षणात् ॥ ३१ ॥ पुत्रवान्धनवाञ्श्रीमान्नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥ ब्रह्मास्त्रादीनिशस्त्राणित द्गात्रस्पर्शनात्ततः ॥ ३२ ॥ नाशमायान्तियानारीवन्ध्यावामृत पुत्रिणी ॥ बह्वपत्याजीवतोकाभवत्येवनसंशयः ॥ ३३ ॥ नदेयम्परशिष्येभ्यअभक्तेभ्योविशेषतः ॥ शिष्येभ्योभक्तियुक्तेभ्योह्यन्यथामृत्युमाप्नुयात् ॥ ३४ ॥ स्पर्द्धामुद्धूयकमलावाग्देवीमन्दिरेसुखे ॥ पौत्रान्तंस्थैर्य्यमास्थायनिवसत्येवनिश्चितम् ॥ ॥ ३५ ॥ इदङ्कवचमज्ञात्वायोभजेद्घोरदक्षिणाम् ॥ शतलक्षम्प्रजप्त्वापितस्य विद्या न सिध्यति ॥ ३६ ॥ सहस्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ इतिकवचम् ॥

अथ हृदयम् ।

श्रीमहाकाल उवाच ॥ महाकौतूहलस्तोत्रंहृदयाख्यम्महोत्तमम् ॥ शृणुप्रियेमहागोप्यन्दक्षिणायाःसुगोपितम् ॥ १ ॥ अवाच्यमपिवक्ष्यामितवप्रीत्याप्रकाशितम् ॥ अन्येभ्यःकुरुगोप्यञ्चसत्यंसत्यञ्चशैलजे ॥ २ ॥ श्रीदेव्युवा० ॥ कस्मिन्युगेसमुत्पन्नङ्केनस्तोत्रङ्कृतम्पुरा ॥ तत्सर्व्वङ्कथ्यतांशम्भो दयानिधेमहेश्वर ॥ ३ ॥ श्रीमहाकालउवाच ॥ पुरा प्रजापतेःशीर्षच्छेदनङ्कृतवानहम् ॥ ब्रह्महत्याकृतैःपापैर्भैरवत्वम्ममागतम् ॥ ४ ॥ ब्रह्महत्याविनाशाय कृतं स्तोत्रम्मया प्रिये ॥ कृत्याविनाशकंस्तोत्रम्ब्रह्महत्यापहारकम् ॥ ५ ॥ ' ॐअस्यश्रीदक्षिणकाल्या हृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिरुष्णिकछन्दः ॥ श्रीदक्षिणकालिका देवता क्रींबीजं,ह्रींशक्तिः, नमःकीलकं, सर्व्वत्रसर्व्वदाजपेवि

नियोगः ॥ ॐक्रांहृदयायनमः । ॐक्रींशिरसेस्वाहा । ओंक्रूंशि खायैवषट् । ॐक्रैंकवचायहूम् ॥ ॐक्रौंनेत्रत्रयायवौषट् । ॐक्रः अस्त्रायफट् ॥' अथध्यानम् । ध्यायेत्कालीम्महामायान्त्रिनेत्राम्ब हुरूपिणीम् ॥ चतुर्भुजाल्लँलज्जिह्वाम्पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥ नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसङ्घविदारिणीम् ॥ नरमुण्डन्तथाखड्ग ङ्कमलव्वँरदन्तथा ॥ बिभ्राणांरक्तवदनान्दंष्ट्रालीङ्घोररूपिणी म् ॥ अट्टाट्टहासनिरतांसर्व्वदाचदिगम्बराम् ॥ शवासनस्थि तान्देवीम्मुण्डमालाविभूषिताम् ॥इतिध्यात्वामहादेवीन्ततस्तुहृ दयम्पठेत् ॥' ॐकालिकाघोररूपाद्या सर्व्वकामफलप्रदा ॥ स र्व्वदेवस्तुतादेवीशत्रुनाशङ्करोतुमे ॥ ह्रींह्रींस्वरूपिणीश्रेष्ठात्रिषु लोकेषुदुर्ल्लभा ॥ तवस्नेहान्मया ख्यातन्नदेयय्यँस्य कस्यचित् ॥ अथध्यानम्प्रवक्ष्यामि निशामयपरात्मिके ॥ यस्यविज्ञानमा त्रेणजीवन्मुक्तोभविष्यति ॥नागयज्ञोपवीताञ्चचन्द्रार्द्धकृतशेखरा म् ॥ जटाजूटाञ्चसञ्चिन्त्यमहाकालसमीपगाम् ॥ एवन्न्यासाद यस्सर्व्वेयेप्रकुर्व्वन्तिमानवाः ॥ प्राप्नुवन्तिचतेमोक्षंसत्यंसत्य व्वँरानने ॥ ९ ॥ यन्त्रंशृणुपरन्देव्यास्सर्व्वार्थसिद्धिदायकम् ॥ गोप्याद्गोप्यतरङ्गोप्यङ्गोप्याद्गोप्यतरम्महत् ॥ त्रिकोणम्पञ्च कञ्चाष्टकमलम्भूपुरान्वितम् ॥ मुण्डपङ्क्तिञ्चज्वालाञ्चकालीयन्त्रं सुसिद्धिदम् ॥ ११ ॥ मन्त्रन्तुपूर्व्वंकथितन्धारयस्वसदाप्रिये ॥ देव्यादक्षिणकाल्यास्तुनाममालान्निशामय ॥ १२ ॥ कालीदक्षि णकालीचकृष्णरूपापरात्मिका ॥ मुण्डमालीविशालाक्षीसृष्टि संहारकारिका ॥ १३ ॥ स्थितिरूपामहामाया योगनिद्राभगा त्मिका ॥ भगसर्पिःपानरता भगोद्द्योताभगाङ्गजा ॥ आद्या सदानवाघोरामहातेजाःकरालिका ॥ प्रेतवाहासिद्धिलक्ष्मीरनि रुद्धासरस्वती ॥ १५ ॥ एतानि नाममाल्यानि ये पठन्ति दिने

दिने ॥ तेषान्दासस्यदासोऽहंसत्यंसत्यम्महेश्वरि ॥ कालीङ्कालहरान्देवीङ्कङ्कालबीजरूपिणीम्॥ काकरूपाङ्कलातीताङ्कालिकान्दक्षिणाम्भजे ॥ कुण्डगोलप्रियान्देवींस्वयम्भूकुसुमे रताम्॥ रतिप्रियाम्महारौद्रीङ्कालिकाम्प्रणमाम्यहम् ॥ १९ ॥ दूतीप्रियाम्महादूतीन्दूतीयोगेश्वरीम्मराम् ॥ दूतीयोगोद्भवरतान्दूतीरूपान्नमाम्यहम् ॥ क्रींमन्त्रेणजलञ्जप्त्वासप्तधासेचनेनतु ॥ सर्व्वेरोगाविनश्यन्तिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ २० ॥ क्रींस्वाहान्तैर्म्महामन्त्रैश्चन्दनंसाधयेत्ततः ॥ तिलकङ्क्रियतेप्राज्ञैर्ल्लोकोवश्योभवेत्सदा ॥ २१ ॥ क्रींहूँह्रींमन्त्रजप्तेनचाक्षतंसप्तभिःप्रिये ॥ महाभयविनाशश्चजायतेनात्रसंशयः ॥ २२ ॥ क्रींह्रींहूँ स्वाहामन्त्रेणश्मशानाग्निञ्चमन्त्रयेत् ॥ शत्रोर्ग्गृहेप्रतिक्षिप्त्वाशत्रोर्म्मृत्युर्भविष्यति ॥२३ ॥ हूँह्रींक्रींचैवउच्चाटेपुष्पंसंशोध्यसप्तधा ॥ रिपूणाञ्चैवचोच्चाटन्नयत्येवनसंशयः ॥ २४ ॥ आकर्षणेचक्रींक्रींक्रींजप्त्वाक्षतम्प्रतिक्षिपेत् ॥ सहस्रयोजनस्थाचशीघ्रमागच्छतिप्रिये॥ २५ ॥ क्रींक्रींक्रींहूँहूँह्रींह्रींचकज्जलंशोधितन्तथा ॥ तिलकेनजगन्मोहं सप्तधामन्त्रमाचरेत् ॥ २६ ॥ हृदयम्परमेशानिसर्व्वपापहरम्परम् ॥ अश्वमेधादियज्ञानाङ्कोटिकोटिगुणोत्तरम् ॥ २७ ॥ कन्यादानादिदानानाङ्कोटिकोटिगुणम्फलम् ॥ दूतीयागादियागानाङ्कोटिकोटिफलंस्मृतम् ॥ २८ ॥ गङ्गादिसर्व्वतीर्थानाम्फलङ्कोटिगुणंस्मृतम् ॥ एकधापाठमात्रेणसत्यंसत्यम्मयोदितम् ॥ २९ ॥ कौमारीस्वेष्टरूपेणपूजाङ्कृत्वाविधानतः ॥ पठेत्स्तोत्रम्महेशानिजीवन्मुक्तस्सउच्यते ॥ ३० ॥ रजस्वलाभगन्दृष्ट्वा पठेदेकाग्रमानसः ॥ लभतेपरमंस्थानन्देवीलोकेवरानने ॥३१॥ महादुःखेमहारोगेमहासङ्कटकेदिने ॥ महाभयेमहा

घोरेपठेत्स्तोत्रंमहोत्तमम् ॥ ३२ ॥ सत्यंसत्यम्पुनस्सत्यङ्गोप येन्मातृजारवत् ॥ इतिहृदयंसमाप्तम् ॥

अथोपनिषद् ।

अथहैनाम्ब्रह्मरन्ध्रेब्रह्मस्वरूपिणीमाप्नोतिसुभगाङ्कामरेफे न्दिरांसमष्टिरूपिणीमादौतदन्वकर्तुर्बीजद्वयकूर्चबीजन्तद्वोमषष्ठ स्वरबिन्दुमेलनंरूपन्तदनुभुवनाद्वयभुवनातुव्योमज्वलनेन्दिरा शून्यमेलनरूपादक्षिणेकालिकेवेत्यभिमुखङ्गतातदनुबीजसप्तक मुच्चार्य्यबृहद्भानुजायामुच्चरेत् अयंसर्व्वमन्त्रोत्तमोत्तमइमंसकृज्ज पन्सतुविश्वेश्वरः सतुनारीश्वरः सतुवेदेश्वरः ससर्व्वगुरुः सर्व्वनम स्यःसर्व्वेषुवेदेष्वधिश्रितोभवतिससर्व्वेषुतीर्थेषुस्नातोभवति सर्व्वे षुयज्ञेषुदीक्षितोभवतिसस्वयंसदाशिवः त्रिकोणन्त्रिकोणन्त्रिको णम्पुनश्चैवन्त्रिकोणन्त्रिकोणन्ततोवसुदलंसार्द्धचन्द्रकेसरय्युँग्म शोविलिख्यसम्भृतम्भूपुरैकेनयुतंसर्व्वज्ञेनाभ्यर्च्यतस्मिन्देवीद लेरेखायाँव्विन्यस्यध्येयाअभिनवजलदवदनाघनस्तनी कुटिलदं ष्ट्राशवासनावराभयखड्गमुण्डमण्डितहस्ताकालिकाध्येयाकाली कपालिनीकुल्लाकुरुकुल्लाविरोधिनीविप्रचित्तेतिषट्कोणगाः उग्रा उग्रप्रभादीप्तानीलावनाबलाकामात्रामुद्रामितेतिनवकोणगाः इ त्थम्पञ्चदशकोणगाः । ब्राह्मी नारायणी माहेश्वरी चामुण्डा कौ मारी अपराजिता वाराही नारसिंहीत्यष्टपत्रगाः ॥ चतुष्कोण गाश्चत्वारोदेवाः माधवरुद्रविनायकसौराः चतुर्द्दिक्षु इन्द्रयमव रुणकुबेराः देवीसर्व्वाङ्गेनादौसम्पूज्यभगोदकेनतर्प्पणम्पञ्चमका रेणपूजनंएतस्याः सपर्य्यायाः किमधिकन्नोशक्यम्ब्रह्मादिपदंहे यंहेलयाप्राप्नोति एतस्याएकद्वित्रिक्रमेणमनवोभवन्तिनारिमित्रा दिलक्षणमत्रवर्त्तते अमुष्यमन्त्रपाठकस्यगतिरास्तिनान्यस्येहग तिरस्ति एतस्यास्तारामनोदुर्ग्गामनोर्व्वासिद्धिः इदानीन्तुसर्व्वाः

स्वप्नभूताअसितैवजागर्ति इमामसिताज्ञामुपनिषदय्योवाऽधीते सोऽपुत्रःपुत्रीभवतिनिर्द्धनोधनायति धर्म्मार्थकाऽममोक्षाणाम्पा त्रीयतिऽन्यस्यवरदः दृष्ट्वाजगन्मोहयतिक्रोधस्तज्ञहातिगङ्गादितीर्थक्षेत्राणामग्निष्टोमादियज्ञानांफलभागीयति इत्यथर्व्वणवेदेसौभाग्यकाण्डेकालिकोपनिषत्समाप्ता ॥

अथशतनाम।

भैरवउवाच॥ शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने ॥ यस्य प्रपठनाद्वाग्मी सर्व्वत्र विजयी भवेत् ॥ १ ॥ काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी ॥ कालरात्रिः कालिका च कालभैरवपूजिता ॥ २ ॥ कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी ॥ कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ॥ ३ ॥ कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी ॥ ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका ॥ ४ ॥ कुलकान्ता करालास्या कामार्त्ता च कलावती ॥ कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी ॥ ५ ॥ कुलजाकुलकन्या च कलहा कुलपूजिता ॥ कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥ ६ ॥ कामदात्री कामहर्त्री कृष्णाचैव कपर्दिनी ॥ कुमुदा कृष्ण देहा च कालिन्दी कुलपूजिता ॥ ७ ॥ काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कलातथा ॥ क्रींरूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता ॥ ८ ॥ कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी ॥ कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी ॥ ९ ॥ कुलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका ॥ कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी ॥ १० ॥ कुन्ता च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका ॥ कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी ॥ ११ ॥ कुमारी

पूजनरता कुमारीगणशोभिता ॥ कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी ॥ १२ ॥ कङ्काली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा ॥ कपालखट्वाङ्गधरा कालभैरवरूपिणी ॥ १३ ॥ कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलासवासिनी ॥ कात्यायनी कार्य्यंकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी ॥ १४ ॥ कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी ॥ कङ्किनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलहप्रिया॥ १५॥ कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्त्तिवर्द्धिनी ॥ कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया ॥ १६ ॥ कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा ॥ इति ते कथितन्देवि गुह्याद्गुह्यतरम्परम् ॥ १७ ॥ प्रपठेद्यइदन्नित्यङ्कालीनामशताष्टकम् ॥ त्रिषु लोकेषु देवेशि तस्यासाध्यन्न विद्यते ॥ १८ ॥ प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदानिशि ॥ यः पठेत्परया भक्त्या कालीनामशताष्टकम् ॥ १९ ॥ कालिका तस्य गेहे च संस्थानङ्कुरुते सदा ॥ शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः ॥ २० ॥ वह्निमध्ये च सङ्ग्रामे तथा प्राणस्य संशये॥शताष्टकञ्जपन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम् ॥ कालीं संस्थाप्य विधिवत्स्तुत्वा नामशताष्टकैः ॥ साधकस्सिद्धिमाप्नोति कालिकायाः प्रसादतः॥२१॥ इत्यष्टोत्तरशतनामसमाप्तम् ॥

अथसहस्रनाम।

कैलासशिखरे रम्ये नानादेवगणावृते ॥ नानावृक्षलताकीर्णे नाना पुष्पैरलंकृते ॥ १ ॥ चतुर्म्मण्डलसँय्युक्ते शृङ्गारमण्डपे स्थिते ॥ समाधौ संस्थितंशान्तङ्क्रीडन्त य्योगिनीप्रियम् ॥ २ ॥ तत्र मौनधरन्दृष्ट्वा देवी पृच्छति शङ्करम् ॥ देव्युवाच ॥ किन्त्वया जप्यते देव किन्त्वया स्मर्य्यते सदा ॥ ३ ॥ सृष्टिः कुत्र वि

लीनास्ति पुनः कुत्र प्रजायते ॥ ब्रह्माण्डकारणय्यँत्तत्किमाद्य
ङ्कारणम्महत् ॥ ४ ॥ मनोरथमयी सिद्धिस्तथा वाञ्छामयी
शिव ॥ तृतीया कल्पनासिद्धिः कोटिसिद्धीश्वरत्वकम् ॥ ५ ॥
शक्तिपाताष्टदशकञ्चराचरपुरीगतिः ॥ महेन्द्रजालमिन्द्रादिजा
लानां रचनान्तथा ॥६॥ अणिमाद्यष्टकन्देव परकायप्रवेशनम् ॥
नवीनसृष्टिकरणं समुद्रशोषणन्तथा ॥ ७ ॥ अमायाञ्चन्द्रसन्द
र्शो दिवाचन्द्रप्रकाशनम् ॥ चन्द्राष्टकञ्चाष्टदिक्षु तथा सूर्य्याष्टकं
शिव ॥ ८ ॥ जले जलमयत्वञ्च वह्नौ वह्निमयत्वकम् ॥ ब्रह्म
विष्ण्वादिनिर्म्माणमिन्द्राणाङ्कारणङ्करे ॥ ९ ॥ पातालगुटिका
यक्षवेतालपञ्चकन्तथा ॥ रसायनन्तथा गुप्तिस्तथैव चाखिला
ञ्जनम् ॥ १० ॥ महामधुमतीसिद्धिस्तथा पद्मावती शिव ॥
तथा भोगवतीसिद्धिर्य्यावत्यः सन्ति सिद्धयः ॥ ११ ॥ केन
मन्त्रेण तपसा कलौ पापसमाकुले ॥ आयुष्यम्पुण्यरहिते कथ
म्भवति तद्वद ॥ १२ ॥ शिव उवाच ॥ विना मन्त्रँव्वि
नास्तोत्रँव्विनैव तपसा प्रिये ॥ विना बलिँव्विनान्यास
म्भूतशुद्धिँव्विना प्रिये ॥ १३ ॥ विना ध्यानँव्विनायन्त्र
व्विना पूजादिना प्रिये ॥ विना क्लेशादिभिर्देवि देहदुःखादिभि
र्व्विना॥१४॥ सिद्धिराशु भवेद्येन तदेवङ्कथ्यते मया ॥ शून्येब्र
ह्माण्डगोले तु पञ्चाशच्छून्यमध्यके ॥ १५ ॥ पञ्चशून्यस्थि
ता तारा सर्व्वान्ते कालिका स्मृता ॥ अनन्तकोटिब्रह्माण्डराजद
न्तायके शिवे ॥ १६ ॥ स्थाप्यशून्यालयङ्कृत्वाकृष्णवर्णँव्वि
धाय च ॥ महानिर्ग्गुणरूपा च वाचातीता परा कला ॥ १७ ॥
क्रीडायां संस्थिता देवी शून्यरूपा प्रकल्पयेत् ॥ सृष्टेरारम्भकार्य्ये
र्य्ये तु दृष्टा छाया तया यदा ॥ १८ ॥ इच्छाशक्तिस्तु सा

१ काले तु वापाठः ।

जाता तया कालो विनिर्म्मितः ॥ प्रतिबिम्बन्तत्रदृष्टज्ञाताज्ञा नाभिधा तु सा ॥ १९ ॥ इदमेतत्किँव्विशिष्टज्ञातँव्विज्ञान कम्मुदा ॥ तदा क्रियाभिधा जाता तदीक्षातो महेश्वरि ॥ २० ॥ ब्रह्माण्ड गोले देवेशि राजदन्तस्थितश्च यत् ॥ साक्रिया स्था पयामास स्वस्वस्थानक्रमेण च ॥ २१ ॥ तत्रैव स्वेच्छया देवि सामरस्य परायणा ॥ तदिच्छा कथ्यते देवि यथावदवधारय ॥ २२ ॥ युगादिसमये देवि शिवम्परगुणोत्तमम् ॥ तदिच्छानि र्ग्गुणं शान्तं सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥ २३ ॥ शाश्वतं सुन्दरं शु क्लं सर्व्वदेवयुतँव्वरम् ॥ आदिनाथङ्गुणातीतङ्काल्यासंयुतमी श्वरम् ॥ २४ ॥ विपरीतरतन्देवंसामरस्यपरायणम् ॥ पूजा र्थमागतन्देव गन्धर्व्वाप्सरसाङ्गणम् ॥ २५ ॥ यक्षिणीकिन्नरीम न्यासुर्व्वेश्याद्यान्तिलोत्तमाम् ॥ वीक्ष्य तन्मायया प्राह सुन्दरी प्राणवल्लभा ॥ २६ ॥ त्रैलोक्यसुन्दरी प्राणस्वामिनी प्राणरञ्जि नि ॥ किमागतम्भवत्याद्यममभाग्यार्णवोमहान् ॥ २७ ॥ उ क्तामौनधरं शम्भुम्पूजयन्त्यप्सरोगणाः ॥ अप्सरसऊचुः ॥ संसा रात्तारितन्देव त्वया विश्वजनप्रिय ॥ २८ ॥ सृष्टेरारम्भकार्य्या र्थमुद्युक्तोसि महाप्रभो ॥ वेश्याकृत्यमिदन्देवमङ्गलार्थप्रगायन म् ॥ २९ ॥ प्रयाणोत्सवकाले तु समारम्भे प्रगायनम् ॥ गु णाद्यारम्भकालो हि वर्त्तते शिवशङ्कर ॥ ३० ॥ इन्द्राणीकोटयः सन्ति तस्याऽप्रसवबिन्दुतः ॥ ब्रह्माणी वैष्णवी चैव माहेशीको टिकोटयः॥३१॥तवसामरसानन्ददर्शनार्थं समुद्भवाः ॥ सञ्जाता श्चाग्रतोदेवचास्माकंसौख्यसागर ॥ ३२ ॥ रतिंहित्वाकामिनीनां नान्यत्सौख्यंमहेश्वर ॥ सारतिर्द्दश्यतेस्माभिर्म्महत्सौख्यार्थका रिका ॥ ३३ ॥ एवमेतच्चुचास्माभिः कर्त्तव्यं भर्तृणा सह ॥ एवं श्रुत्वा महादेवो ध्यानावस्थितमानसः ॥ ३४ ॥ ध्यानं हित्त्वा

मायया तु प्रोवाच कालिकाम्प्रति ॥ कालि कालि रुण्डमाले प्रियेभैरववादिनि ॥ ३५ ॥ शिवारूपधरे क्रूरे घोरदंष्ट्रे भयानके॥ त्रैलोक्यसुन्दरकरीसुन्दर्य्यः सन्ति मेग्रतः ॥ ३६ ॥ सुन्दरीवीक्षणङ्कर्म्म कुरु कालि प्रियेशिवे ॥ ध्यानं मुञ्च महादेवि ता गच्छन्ति गृहम्प्रति ॥ ३७ ॥ तवरूपम्महाकालि महाकालप्रियङ्करम् ॥ एतासां सुन्दरं रूपन्त्रैलोक्यप्रियकारकम् ॥३८॥ एवं मायाप्रभाविष्टो महाकालो वदन्निति ॥ इति कालवचः श्रुत्वा कालम्प्राहचकालिका ॥ ३९ ॥ माययाच्छाद्य चात्मानं निज स्त्रीरूपधारिणी ॥ इत ऽ प्रभृति स्त्रीमात्रम्भविष्यति युगे युगे ॥ ॥ ४० ॥ वल्ल्याद्यौषधयो देवि दिवावल्लीस्वरूपताम् ॥ रात्रौ स्त्रीरूपमासाद्य रतिकेलिः परस्परम् ॥ ४१ ॥ अज्ञानञ्चैव सर्व्वेषाम्भविष्यति युगेयुगे ॥ एवं शापञ्च दत्वा तु पुनः प्रोवाचकालिका ॥ ४२ ॥ विपरीतरतिङ्कृत्वाचिन्तयन्तिभजन्तिये ॥ तेषाँव्वरम्प्रदास्यामि नित्यन्तत्र वसाम्यहम् ॥ ४३ ॥ इत्युक्ताकालिकाविद्यातत्रैवान्तरधीयत ॥ त्रिंशत्रिखर्व्वषड्वृन्द नवत्यर्बुदकोटयः॥४४॥दर्शनार्थन्तपस्तेपे सा वै कुत्रगताप्रिया ममप्राणप्रिया देवी हाहा प्राणप्रिये शिवे ॥ ४५ ॥ किङ्करोमि क्व गच्छामि इत्येवम्भ्रमसङ्कुलः ॥ तस्याः काल्या दया जाता मम चिन्तापरः शिवः ॥ ४६ ॥ यन्त्रप्रस्तारबुद्धिस्तु काल्या दत्तातिसत्वरम् ॥ यन्त्रयागन्तदारभ्यपूर्व्वम्बिन्दुत्वगोचरम् ॥ ४७ ॥ श्रीचक्रं यन्त्रप्रस्ताररचनाभ्याससतत्परः ॥ इतस्ततोभ्राम्यमाणस्त्रैलोक्यञ्चक्रमध्यकम् ॥ ४८ ॥ चक्रपारन्दर्शनार्थङ्कोटयर्बुदयुगङ्कृतम् ॥ भक्तप्राणप्रिया देवी महाश्रीचक्रनायिका ॥ ४९ ॥ तत्रबिन्दौ परंरूपं सुन्दरं सुमनोहरम् ॥ रूपञ्ज्ञातम्महेशानि जाग्रत्रिपुरसुन्दरि ॥ ५० ॥ रूपन्दृष्ट्वा महादेवो राजराजेश्व

रोभवत् ॥ तस्याः कटाक्षमात्रेण तस्या रूपधरः शिवः ॥५१॥ विनाशृङ्गारसँय्युक्ता तदा जाता महेश्वरी ॥ विनाकाल्यंशतो देवि जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥५२॥ न शृङ्गारो न शक्तित्वं क्वापि नास्ति महेश्वरि ॥ सुन्दर्य्यां प्रार्थिता काली तुष्टा प्रोवाच कालिका ॥ ५३ ॥ सर्व्वासान्नेत्रकेशे च ममांशोऽत्र भविष्यति ॥ पूर्व्वावस्थासु देवेशि ममांशस्तिष्ठति प्रिये ॥ ५४ ॥ साव स्थातरुणाख्यातु तदन्ते नैव तिष्ठति ॥ मद्भक्तानाम्महेशानि सदा तिष्ठति निश्चितम् ॥ ५५ ॥ शक्तिस्तु कुण्ठिता जाता तथा रूपं न सुन्दरम् ॥ चिन्ताविष्टा तु मलिना जाता तत्र तु सु न्दरि ॥ ५६ ॥ क्षणंस्थित्वा ध्यानपरा काली चिन्तनतत्परा ॥ तदा काली प्रसन्नाभूत्क्षणार्द्धेन महेश्वरि ॥ ५७ ॥ वरम्ब्रूहि वर म्ब्रूहि वरम्ब्रूहीति सादरम् ॥ सुन्दर्य्युवाच ॥ मम सिद्धिवरन्देहि वरोयम्प्रार्थ्यते मया ॥५८॥ तादृगुपायङ्कथययेनशक्तिर्भविष्यति ॥ श्रीकाल्युवाच ॥ मम नामसहस्रञ्च मयापूर्व्वंविनिर्म्मितम् ॥ ॥ ५९ ॥ मत्स्वरूपङ्काराख्यम्महासाम्राज्यनामकम् ॥ वरदा नाभिधन्नाम क्षणार्द्धाद्वरदायकम् ॥ ६० ॥ तत्पठस्वमहामा ये तवशक्तिर्भविष्यति ॥ ततः प्रभृति श्रीविद्यातन्नामपाठतत्परा ॥ ६१ ॥ तदेवनामसाहस्रंसुन्दरीशक्तिदायकम् ॥ कथ्यते नामसाहस्रं सावधानमनाः शृणु ॥ ६२ ॥ सर्व्वसाम्राज्यमे धाख्यनामसाहस्रकस्यच ॥ महाकाल ऋषिः प्रोक्त उष्णि क्छन्दःप्रकीर्त्तितम् ॥ ६३ ॥ देवता दक्षिणा काली मायाबीज म्प्रकीर्त्तितम् ॥ हूँशक्तिः कालिकाबीजङ्कीलकम्परिकीर्त्तितम्॥ ॥ ६४ ॥ ध्यानञ्चपूर्व्ववत्कृत्वा साधयस्वेष्टसाधनम् ॥ कालिका वरदानादिस्वेष्टार्थेविनियोगतः ॥ ६५ ॥ कीलकेनषडङ्गानि षड् दीर्घभाञ्जेन कारयेत् ॥ ओमस्यश्रीसर्व्वसाम्राज्यमेधानामकाली

रूपककारात्मकसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य महाकाल ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीदक्षिणमहाकाली देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः क्रीं कीलकङ्कालीवरदानाद्यखिलेष्टार्थेजपेविनियोगः ॥ ॐक्रीङ्काली क्रूङ्कराली च कल्याणी कमला कला ॥ कलावती कलाढ्या च कलापूज्या कलात्मिका ॥ १ ॥ कलाहृष्टा कलापुष्टा कलामस्ता कलाकरा ॥ कलाकोटिसमाभासा कलाकोटिप्रपूजिता ॥ ॥ २ ॥ कलाकर्म्मकलाधारा कलापारा कलागमा ॥ कलाधारा कमलिनी ककारा करुणा कविः ॥ ३ ॥ ककारवर्णसर्व्वाङ्गी कलाकोटिप्रभूषिता ॥ ककारकोटिगुणिता ककारकोटिभूषणा ॥ ४ ॥ ककारवर्णहृदया ककारमनुमण्डिता ॥ ककारवर्णनिलया काकशब्दपरायणा ॥ ५ ॥ ककारवर्णमुकुटा ककारवर्णभूषणा ॥ ककारवर्णरूपा च ककशब्दपरायणा ॥ ६ ॥ ककवीरास्फालरता कमलाकरपूजिता ॥ कमलाकरनाथा च कमलाकररूपधृक् ॥ ७ ॥ कमलाकरासिद्धिस्था कमलाकरपारदा ॥ कमलाकरमध्यस्था कमलाकरतोषिता ॥ ८ ॥ कथङ्कारपरालापा कथङ्कारपरायणा। कथङ्कारपदान्तस्था कथङ्कारपदार्थभूः ॥ ९ ॥ कमलाक्षी कमलजा कमलाक्षप्रपूजिता ॥ कमलाक्षवरोद्युक्ताककाराकर्बुराक्षरा ॥ १० ॥ करतारा करच्छिन्ना करश्यामा कराण्र्णवा ॥ करपूज्या कररता करदा करपूजिता ॥ ॥ ११ ॥ करतोया करामर्षा कर्म्मनाशा करप्रिया ॥ करप्राणाकरकजाकरकाकरकान्तरा ॥ १२ ॥ करकाचलरूपाचकरकाचलशोभिनी ॥ करकाचलपुत्रीचकरकाचलतोषिता ॥१३॥ करकाचलगेहस्थाकरकाचलरक्षिणी ॥ करकाचलसम्मान्याकरकाचलकारिणी ॥ १४ ॥ करकाचलवर्षाढ्याकरकाचलरञ्जित ॥ करकाचलकान्ताराकरकाचलमालिनी ॥ १५ ॥ करकाचल

भोज्या च करकाचलरूपिणी ॥ करामलकसंस्थाचकरामलक सिद्धिदा ॥ १६ ॥ करामलकसम्पूज्याकरामलकतारिणी ॥ करामलककालीचकरामलकरोचिनी ॥ १७ ॥ करामलकमाताचकरामलकसेविनी ॥ करामलकवद्धयेयाकरामलकदायिनी ॥ १८ ॥ कञ्जनेत्राकञ्जगतिःकञ्जस्थाकञ्जधारिणी ॥ कञ्जमालाप्रियकरी कञ्जरूपाचकञ्जजा ॥ १९ ॥ कञ्जजातिःकञ्जगतिःकञ्जहोमपरायणा ॥ कञ्जमण्डलमध्यस्थाकञ्जाभरणभूषिता ॥ २० ॥ कञ्जसम्माननिरताकञ्जोत्पत्तिपरायणा ॥ कञ्जराशिसमाकाराकञ्जारण्यनिवासिनी ॥ २१ ॥ करञ्जवृक्षमध्यस्थाकरञ्जवृक्षवासिनी ॥ करञ्जफलभूषाढ्याकरञ्जारण्यवासिनी ॥ २२ ॥ करञ्जमालाभरणा करवालपरायणा ॥ करवालप्रहृष्टात्माकरवालप्रियागतिः ॥ २३ ॥ करवालप्रियाकन्थाकरवालविहारिणी ॥ करावालमयीकर्म्मा करवालप्रियङ्करी ॥ २४ ॥ कबन्धमालाभरणाकबन्धराशिमध्यगा ॥ कबन्धकूटसंस्थानाकबन्धानन्तभूषणा ॥ २५ ॥ कबन्धनादसन्तुष्टाकबन्धासनधारिणी ॥ कबन्धगृहमध्यस्थाकबन्धवनवासिनी ॥ २६ ॥ कबन्धकाञ्चीकरणी कबन्धराशिभूषणा ॥ कबन्धमालाजयदाकबन्धदेहवासिनी ॥ २७ ॥ कबन्धासनमान्याच कपालमाल्यधारिणी ॥ कपालमालामध्यस्थाकपालव्रततोषिता ॥ २८ ॥ कपालदीपसन्तुष्टाकपालदीपरूपिणी ॥ कपालदीपवरदाकपालकज्जलस्थिता ॥ २९ ॥ कपालमालाजयदाकपालजपतोषिणी ॥ कपालसिद्धिसंहृष्टाकपालभोजनोद्यता ॥ ३० ॥ कपालव्रतसंस्थानाकपालकमलालया ॥ कवित्वामृतसाराचकवित्वामृतसागरा ॥ ३१ ॥ कवित्वसिद्धिसंहृष्टाकवित्वादानकारिणी ॥ कविपूज्याकविगतिःकविरूपाकविप्रिया ॥ ३२ ॥ कविब्रह्मानन्द

रूपाकवित्वव्रततोषिता ॥ कविमानससंस्थाना कविवाञ्छाप्रपूरिणी ॥३३॥ कविकण्ठस्थिता कंह्रींकंकंकंकविपूर्त्तिदा॥कज्जला कज्जलादानमानसाकज्जलप्रिया ॥ ३४ ॥ कपालकज्जलसमाकज्जलेशप्रपूजिता ॥ कज्जलार्णवमध्यस्थाकज्जलानन्दरूपिणी ॥ ॥ ३५ ॥ कज्जलप्रियसन्तुष्टाकज्जलप्रियतोषिणी ॥ कपालमालाभरणा कपालकरभूषणा ॥ ३६ ॥ कपालकरभूषाढ्या कपालचक्रमण्डिता ॥ कपालकोटिनिलयाकपालदुर्गकारिणी ॥ ३७ ॥ कपालगिरिसंस्थानाकपालचक्रवासिनी ॥ कपालपात्रसन्तुष्टाकपालार्घ्यपरायणा ॥ ३८ ॥ कपालार्घ्यप्रियप्राणाकपालार्घ्यवरप्रदा ॥ कपालचक्ररूपाचकपालरूपमात्रगा ॥ ॥ ३९ ॥ कदलीकदलीरूपाकदलीवनवासिनी ॥ कदलीपुष्पसम्प्रीता कदलीफलमानसा ॥ ४० ॥ कदलीहोमसन्तुष्टाकदलीदर्शनोद्यता ॥ कदलीगर्भमध्यस्थाकदलीवनसुन्दरी ॥ ४१ ॥ कदम्बपुष्पनिलयाकदम्बवनमध्यगा ॥ कदम्बकुसुमामोदाकदम्बवनतोषिणी ॥ ४२ ॥ कदम्बपुष्पसम्पूज्या कदम्बपुष्पहोमदा ॥ कदम्बपुष्पमध्यस्थाकदम्बफलभोजिनी ॥ ४३ ॥ कदम्बकाननान्तःस्थाकदम्बाचलवासिनी ॥ कक्षपाकक्षपाराध्याकक्षपासनसंस्थिता ॥४४॥ कर्ण्णपूराकर्ण्णनासाकर्ण्णाढ्याकालभैरवीकलप्रीताकलहदाकलहाकलहातुरा ॥ ४५ ॥ कर्ण्णयक्षीकर्ण्णवार्त्ताकथिनी कर्ण्णसुन्दरी ॥कर्ण्णपिशाचिनीकर्ण्णमञ्जरी कपिकक्षदा ॥ ४६ ॥ कविकक्षाविरूपाढ्याकविकक्षस्वरूपिणी ॥ कस्तूरीमृगसंस्थानाकस्तूरीमृगरूपिणी ॥ ४७ ॥ कस्तूरीमृगसन्तोषाकस्तूरीमृगमध्यगा ॥ कस्तूरीरसनीलाङ्गी कस्तूरीगन्धतोषिता ॥ ४८ ॥ कस्तूरीपूजकप्राणाकस्तूरीपूजकप्रिया ॥ कस्तूरीप्रेमसन्तुष्टाकस्तूरीप्राणधारिणी ॥ ४९ ॥ कस्तूरीपूजकानन्दाक

स्तूरीगन्धरूपिणी ॥ कस्तूरीमालिकारूपाकस्तूरीभोजनप्रिया ॥ ५० ॥ कस्तूरीतिलकानन्दाकस्तूरीतिलकप्रिया ॥ कस्तूरीहोमसन्तुष्टाकस्तूरीतर्प्पणोद्यता ॥ ५१ ॥ कस्तूरीमार्ज्जनोद्युक्ताकस्तूरीचक्रपूजिता ॥ कस्तूरीपुष्पसम्पूज्याकस्तूरीचर्व्वणोद्यता ॥ ५२ ॥ कस्तूरीगर्भमध्यस्थाकस्तूरीवस्त्रधारिणी ॥ कस्तूरिकामोदरताकस्तूरीवनवासिनी ॥ ५३ ॥ कस्तूरीवनसंरक्षाकस्तूरीप्रेमधारिणी ॥ कस्तूरीशक्तिनिलयाकस्तूरीशक्तिकुण्डगा ॥ ५४ ॥ कस्तूरीकुण्डसंस्नाताकस्तूरीकुण्डमज्जना ॥ कस्तूरीजीवसन्तुष्टाकस्तूरीजीवधारिणी ॥ ५५ ॥ कस्तूरीपरमामोदाकस्तूरीजीवनक्षमा ॥ कस्तूरीजातिभावस्थाकस्तूरीगन्धचुम्बना ॥ ५६ ॥ कस्तूरीगन्धसंशोभाविराजितकपालभूः ॥ कस्तूरीमदनान्तःस्थाकस्तूरीमदहर्षदा ॥ ५७ ॥ कस्तूरीकवितानाढ्याकस्तूरीगृहमध्यगा ॥ कस्तूरीस्पर्शकप्राणाकस्तूरीविन्दकान्तका ॥ ॥ ५८ ॥ कस्तूर्य्यामोदरसिकाकस्तूरीक्रीडनोद्यता ॥ कस्तूरीदाननिरताकस्तूरीवरदायिनी ॥ ५९ ॥ कस्तूरीस्थापनासक्ताकस्तूरीस्थानरञ्जिनी ॥ कस्तूरीकुशलप्रश्नाकस्तूरीस्तुतिवन्दिता ॥ ६० ॥ कस्तूरीवन्दकाराध्याकस्तूरीस्थानवासिनी ॥ कहरूपाकहाढ्याचकहानन्दाकहात्मभूः ॥ ६१ ॥ कहपूज्याकहात्याख्या कहहेयाकहात्मिका ॥ कहमालाकण्ठभूषा कहमन्त्रजपोद्यता ॥ ६२ ॥ कहनामस्मृतिपराकहनामपरायणा ॥ कहपरायणरताकहदेवीकहेश्वरी ॥ ६३ ॥ कहहेतुकहानन्दाकहनादपरायणा ॥ कहमाताकहान्तस्थाकहमन्त्राकहेश्वरा ॥ ६४ ॥ कहगेयाकहाराध्याकहध्यानपरायणा ॥ कहतन्त्राकहकहाकहचर्य्यापरायणा ॥ ६५ ॥ कहाचाराकहगतिःकहताण्डवकारिणी ॥ कहारण्याकहगतिःकहशक्तिपरायणा ॥ ६६ ॥ कहराज्यनताक

र्म्मसाक्षिणीकर्म्मसुन्दरी ॥ कर्म्मविद्याकर्म्मगतिःकर्म्मतन्त्रप रायणा ॥ ६७ ॥ कर्म्ममात्राकर्म्मगात्राकर्म्मधर्म्मपरायणा ॥ कर्म्मरेखानाशकर्त्रीकर्म्मरेखाविनोदिनी ॥ ६८ ॥ कर्म्मरेखा मोहकरीकर्म्मकीर्तिपरायणा ॥ कर्म्मविद्याकर्म्मसाराकर्म्माधा राचकर्म्मभूः ॥ ६९ ॥ कर्म्मकारीकर्म्महारीकर्म्मकौतुकसुन्दरी ॥ कर्म्मकालीकर्म्मताराकर्म्मच्छिन्नाचकर्म्मदा ॥ ७० ॥ कर्म्मचा ण्डालिनीकर्म्मवेदमाताचकर्म्मभूः ॥ कर्म्मकाण्डरतानन्ताकर्म्म काण्डानुमानिता ॥ ७१ ॥ कर्म्मकाण्डपरीणाहाकमठीकमठाकृ तिः ॥ कमठाराध्यहृदयाकमठाकण्ठसुन्दरी ॥ ७२ ॥ कमठास नसंसेव्याकमठीकर्म्मतत्परा ॥ करुणाकरकान्ताचकरुणाकरव न्दिता ॥ ७३ ॥ कठोराकरमालाचकठोरकुचधारिणी ॥ कपर्दि नीकपटिनीकठिनीकङ्कभूषणा ॥ ७४ ॥ करभोरूःकठिनदाकर भाकरभालया ॥ कलभाषामयीकल्पा कल्पनाकल्पदायिनी ॥ ॥ ७५ ॥ कमलस्थाकलामालाकमलास्याक्कणत्प्रभा ॥ ककुद्मि नीकष्टवतीकरणीयकथार्च्चिता ॥ ७६ ॥ कचार्च्चिताकचतनुःक चसुन्दरधारिणी ॥ कठोरकुचसंलग्नाकटिसूत्रविराजिता ॥ ॥ ७७ ॥ कर्ण्णभक्षाप्रियाकन्दाकथाकन्दगतिःकलिः ॥ क लिघ्नीकलिदूतीचकविनायकपूजिता ॥ ७८ ॥ कणकक्षा नियन्त्रीचकश्चित्कविवरार्च्चिता ॥ कर्त्रीचकर्त्तृकाभूषाकारिणी कर्ण्णशत्रुपा ॥ ७९ ॥ करणेशीकरणपाकलवाचाकलानिधिः ॥ कलनाकलनाधाराकलनाकारिकाकरा ॥ ८० ॥ कलगेयाकर्क्क राशिःकर्क्कराशिप्रपूजिता ॥ कन्याराशिःकन्यकाचकन्यकाप्रिय भाषिणी ॥ ८१ ॥ कन्यकादानसन्तुष्टाकन्यकादानतोषिणी ॥ कन्यादानकरानन्दाकन्यादानग्रहेष्टदा ॥ ८२ ॥ कर्षणा कक्षदहनाकामिताकमलासना ॥ करमालानन्दकर्त्रीकरमाला

प्रपोषिता ॥ ८३ ॥ करमालाशयानन्दाकरमालासमागमा ॥ करमालासिद्धिदात्री करमालाकरप्रिया ॥ ८४ ॥ करप्रियाक ररताकरदानपरायणा ॥ कलानन्दाकलिगतिःकलिपूज्याकलि प्रसूः ॥ ८५ ॥ कलनादनिनादस्था कलनादवरप्रदा ॥ कल नादसमाजस्थाकहोलाचकहोलदा ॥ ८६ ॥ कहोलगेहमध्य स्थाकहोलवरदायिनी ॥ कहोलकविताधाराकहोलऋषिमानि ता ॥ ८७ ॥ कहोलमानसाराध्याकहोलवाक्यकारिणी ॥ कर्त्तृरूपाकर्त्तृमयीकर्त्तृमाताचकर्त्तरी ॥ ८८ ॥ कनीयाकनकारा ध्याकनीनकमयीतथा ॥ कनीयानन्दनिलयाकनकानन्दतोषिता ॥८९॥कनीयककराकाष्ठाकथार्णवकरीकरी ॥ करिगम्याकरिग तिःकरिध्वजपरायणा ॥ ९० ॥ करिनाथप्रियाकण्ठाकथानकप्रतो षिता ॥ कमनीयाकमनकाकमनीयविभूषणा ॥ ९१ ॥ कम नीयसमाजस्थाकमनीयव्रतप्रिया ॥ कमनीयगुणाराध्याकपिला कपिलेश्वरी ॥ ९२ ॥ कपिलाराध्यहृदयाकपिलाप्रियवादिनी ॥ कहचक्रमन्त्रवर्णाकहचक्रप्रसूनका ॥ ९३ ॥ कएईलह्रींस्वरू पाचकएईलह्रींवरप्रदा ॥ कएईलह्रींसिद्धिदात्रीकएईलह्रींस्वरू पिणी ॥ ९४ ॥ कएईलह्रींमन्त्रवर्णाकएईलह्रींप्रसूकला ॥ क वर्गाचकपाटस्थाकपाटोद्घाटनक्षमा ॥ ९५ ॥ कङ्कालीचक पालीचकङ्कालप्रियभाषिणी ॥ कङ्कालभैरवाराध्याकङ्कालमान सस्थिता ॥ ९६ ॥ कङ्कालमोहनिरताकङ्कालमोहदायिनी ॥ कलुषघ्नीकलुषहाकलुषार्त्तिविनाशिनी ॥ ९७ ॥ कलिपुष्पाकला दानाकशिपुःकश्यपार्चिता ॥ कश्यपाकश्यपाराध्याकलिपूर्ण कलेवरा ॥ ९८ ॥ कलेवरकरीकाञ्चीकवर्गाचकरालका ॥ क रालभैरवाराध्याकरालभैरवेश्वरी, ॥ ९९ ॥ करालाकलनाधारा कपर्दीशवरप्रदा ॥ कपर्दीशप्रेमलताकपर्दिमालिकायुता ॥ १०० ॥

कपर्द्दिजपमालाढ्याकरवीरप्रसूनदा ॥ करवीरप्रियप्राणाकरवी
रप्रपूजिता ॥१०१॥ कर्ण्णिकारसमाकाराकर्ण्णिकारप्रपूजिता ॥
करिषाग्निस्थिताकर्षाकर्षमात्रसुवर्णदा ॥१०२॥ कलशाकल
शाराध्याकषायाकरिगानदा ॥ कपिलाकलकण्ठीचकलिकल्प
लतामता ॥ १०३ ॥ कल्पलताकल्पमाताकल्पकारीचकल्प
भूः ॥ कर्प्पूरामोदरुचिराकर्प्पूरामोदधारिणी ॥ १०४ ॥ कर्प्पू
रमालाभरणाकर्प्पूरवासपूर्त्तिदा ॥ कर्प्पूरमालाजयदाकर्प्पूरार्ण्ण
वमध्यगा ॥ १०५ ॥ कर्प्पूरतर्प्पणरताकटकाम्बरधारिणी ॥ क
पटेश्वरसम्पूज्याकपटेश्वररूपिणी ॥ १०६ ॥ कटुङ्कपिध्वजा
राध्याकलापपुष्पधारिणी ॥ कलापपुष्परुचिराकलापपुष्पपू
जिता ॥ १०७॥ क्रकचाक्रकचाराध्याकथम्ब्रूमाकरालता ॥ कथ
ङ्कारविनिर्म्मुक्ताकालीकालक्रियाक्रतुः ॥ १०८ ॥ कामिनीका
मिनीपूज्याकामिनीपुष्पधारिणी ॥ कामिनीपुष्पनिलयाकामि
नीपुष्पपूर्णिमा ॥ १०९ ॥ कामिनीपुष्पपूजार्हाकामिनीपुष्प
भूषणा ॥ कामिनीपुष्पतिलकाकामिनीकुण्डचुम्बना ॥ ११० ॥
कामिनीयोगसन्तुष्टाकामिनीयोगभोगदा ॥ कामिनीकुण्डसम्म
ग्नाकामिनीकुण्डमध्यगा ॥ १११ ॥ कामिनीमानसाराध्याका
मिनीमानतोषिता ॥ कामिनीमानसञ्चाराकालिकाकालकालि
का ॥ ११२ ॥ कामाचकामदेवीचकामेशीकामसम्भवा ॥ का
मभावाकामरताकामार्त्ताकाममञ्जरी ॥ ११३ ॥ काममञ्जीरर
णिताकामदेवप्रियान्तरा ॥ कामकालीकामकलाकालिकाकमला
र्च्चिता ॥ ११४ ॥ कादिकाकमलाकालीकालानलसमप्रभा ॥
कल्पान्तदहनाकान्ताकान्तारप्रियवासिनी ॥ ११५ ॥ कालपू
ज्याकालरताकालमाताचकालिनी ॥ कालवीराकालघोराकाल
सिद्धाचकालदा ॥ ११६ ॥ कालाञ्जनसमाकाराकालञ्जरनिवा

सिनी ॥ कालऋद्धिः कालवृद्धिः कारागृहविमोचिनी॥११७॥ कादिविद्याकादिमाताकादिस्थाकादिसुन्दरी ॥ काशीकाञ्चीच काञ्चीशाकाशीशवरदायिनी ॥ ११८॥ क्रीम्बीजाचैवक्राम्बी जाहृदयायनमस्स्मृता ॥ काम्याकाम्यगतिः काम्यसिद्धिदात्री चकामभूः ॥ ११९ ॥ कामाख्याकामरूपाचकामचापविमोचि नी ॥ कामदेवकलारामाकामदेवकलालया ॥ १२० ॥ काम रात्रिः कामदात्रीकान्ताराचलवासिनी ॥ कामरूपाकालगतिः कामयोगपरायणा ॥ १२१ ॥ कामसम्मर्द्दनरताकामगेहवि काशिनी ॥ कालभैरवभार्य्याचकालभैरवकामिनी ॥ १२२ ॥ कालभैरवयोगस्थाकालभैरवभोगदा ॥ कामधेनुः कामदोग्ध्री काममाता च कान्तिदा ॥ १२३ ॥ कामुकाकामुकाराध्याकामु कानन्दवर्द्धिनी ॥ कार्त्तवीर्य्याकार्त्तिकेयाकार्त्तिकेयप्रपूजिता ॥ ॥ १२४ ॥ कार्य्याकारणदाकार्य्यकारिणीकारणान्तरा ॥ का न्तिगम्याकान्तिमयीकात्याकात्यायनीचका ॥ १२५ ॥ कामसा राचकाश्मीराकाश्मीराचारतत्परा ॥ कामरूपाचाररताकामरूप प्रियव्वँदा॥१२६॥कामरूपाचारसिद्धिः कामरूपमनोमयी॥का र्त्तिकीकार्त्तिकाराध्याकाञ्चनारप्रसूनभूः ॥ १२७॥ काञ्चनारप्रसू नाभाकाञ्चनारप्रपूजिता ॥ काञ्चरूपाकाञ्चभूमिः कांस्यपात्रप्र भोजिनी॥ १२८ ॥ कांस्यध्वनिमयीकामसुन्दरीकामचुम्बना॥ काशपुष्पप्रतीकाशाकामद्रुमसमागमा ॥ १२९ ॥ कामपुष्पा कामभूमिः कामपूज्याचकामदा ॥ कामदेहाकामगेहाकामबी जपरायणा ॥ १३० ॥ कामध्वजसमारूढाकामध्वजसमास्थि ता ॥ काश्यपीकाश्यपाराध्याकाश्यपानन्ददायिनी ॥ १३१ ॥ कालिन्दीजलसङ्काशाकालिन्दीजलपूजिता ॥ कादेवपूजानिर ताकादेवपरमार्थदा ॥ १३२ ॥ कार्म्मणाकार्म्मणाकाराकाम

कार्म्मणकारिणी ॥ कार्म्मणत्रोटनकरीकाकिनीकारणाह्वया ॥
॥ १३३ ॥ काव्यामृताचकालिङ्गाकालिङ्गमर्द्दनोद्यता ॥ का
लागुरुविभूषाढ्याकालागुरुविभूतिदा ॥ १३४ ॥ कालागुरुसुग
न्धाचकालागुरुप्रतर्प्पणा ॥ कावेरीनीरसम्प्रीताकावेरीतीरवा
सिनी ॥ १३५ ॥ कालचक्रभ्रमाकाराकालचक्रनिवासिनी ॥
काननाकाननाधाराकारुऽकारुणिकामयी ॥ १३६ ॥ काम्पि
ल्यवासिनीकाष्ठाकामपत्नीचकामभूः ॥ कादम्बरीपानरतात
थाकादम्बरीकला ॥ १३७ ॥ कामवन्द्याचकामेशीकामराज
प्रपूजिता ॥ कामराजेश्वरीविद्याकामकौतुकसुन्दरी ॥ १३८ ॥
काम्बोजजाकाञ्छिनदाकांस्यकाञ्चनकारिणी ॥ काञ्चनाद्रिसमा
काराकाञ्चनाद्रिप्रदानदा ॥ १३९ ॥ कामकीर्त्तिऽकामकेशीका
रिकाकान्तराश्रया ॥ कामभेदीचकामार्त्तिनाशिनीकामभूमिका
॥ १४० ॥ कालनिर्णाशिनीकाव्यवनिताकामरूपिणी ॥ काय
स्थाकामसन्दीप्तिऽकाव्यदाकालसुन्दरी ॥ १४१ ॥ कामेशी
कारणवराकामेशीपूजनोद्यता ॥ काञ्चीनूपुरभूषाढ्याकुङ्कुमाभ
रणान्विता ॥ १४२ ॥ कालचक्राकालगतिऽकालचक्रमनोभवा
॥ कुन्दमध्याकुन्दपुष्पाकुन्दपुष्पप्रियाकुजा ॥ १४३ ॥ कुज
माताकुजाराध्याकुठारवरधारिणी ॥ कुञ्जरस्थाकुशरताकुशेश
यविलोचना ॥ १४४ ॥ कुनठीकुररीकुद्राकुरङ्गीकुटजाश्रया ॥
कुम्भीनसविभूषाचकुम्भीनसवधोद्यता ॥ १४५ ॥ कुम्भकर्ण
मनोल्लासाकुलचूडामणिऽकुला ॥ कुलालगृहकन्याचकुलचूडा
मणिप्रिया ॥ १४६ ॥ कुलपूज्याकुलाराध्याकुलपूजापरायणा
॥ कुलभूषातथाकुक्षिऽकुररीगणसेविता ॥ १४७ ॥ कुलपुष्पाकु
लरताकुलपुष्पपरायणा ॥ कुलवस्त्राकुलाराध्याकुलकुण्डस
मप्रभा ॥ १४८ ॥ कुलकुण्डसमोल्लासाकुण्डपुष्पपरायणा ॥

कुण्डपुष्पप्रसन्नास्याकुण्डगोलोद्भवात्मिका ॥ १४९ ॥ कुण्ड गोलोद्भवाधाराकुण्डगोलमयीकुहूः ॥ कुण्डगोलप्रियप्राणाकुण्ड गोलप्रपूजिता ॥ १५० ॥ कुण्डगोलमनोल्लासाकुण्डगोलबल प्रदा ॥ कुण्डदेवरताक्रुद्धाकुलसिद्धिकरापरा ॥१५१॥ कुलकुण्ड समाकाराकुलकुण्डसमानभूः ॥ कुण्डसिद्धिःकुण्डऋद्धिःकुमारी पूजनोद्यता ॥ १५२ ॥ कुमारीपूजकप्राणाकुमारीपूजकालया ॥ कुमारीकामसन्तुष्टाकुमारीपूजनोत्सुका ॥ १५३ ॥ कुमारी व्रतसन्तुष्टाकुमारीरूपधारिणी ॥ कुमारीभोजनप्रीताकुमारीच कुमारदा ॥ १५४ ॥ कुमारमाताकुलदाकुलयोनिःकुलेश्वरी ॥ कुललिङ्गा कुलानन्दा कुलरम्या कुतर्कधृक् ॥ १५५ ॥ कुन्ती चकुलकान्ता च कुलमार्ग्गपरायणा ॥ कुल्ला च कुरुकुल्ला च कुल्लुका कुलकामदा ॥ १५६ ॥ कुलिशाङ्गी कुब्जिका च कु ब्जिकानन्दवर्द्धिनी ॥ कुलीनाकुञ्जरगतिःकुञ्जरेश्वरगामिनी ॥ ॥ १५७ ॥ कुलपालीकुलवतीतथैवकुलदीपिका ॥ कुलयोगेश्व रीकुण्डाकुङ्कुमारुणविग्रहा ॥ १५८ ॥ कुङ्कुमानन्दसन्तोषाकुङ्कु मार्ण्णववासिनी॥कुसुमा कुसुमप्रीताकुलभूःकुलसुन्दरी॥१५९॥ कुमुद्वती कुमुदिनीकुशलाकुलटालया ॥ कुलटालयमध्यस्था कु लटासङ्गतोषिता ॥ १६० ॥ कुलटाभवनोद्युक्ता कुशावर्त्ता कु लार्ण्णवा ॥ कुलार्ण्णवाचाररताकुण्डलीकुण्डलाकृतिः ॥१६१॥ कुमतीचकुलश्रेष्ठाकुलचक्रपरायणा ॥ कूटस्थाकूटदृष्टिश्चकुन्त लाकुन्तलाकृतिः ॥ १६२ ॥ कुशलाकृतिरूपाचकूर्च्चबीजधराच कूः ॥ कुंकुंकुंकुंशब्दरताक्रुंक्रुंक्रुंक्रुम्परायणा ॥ १६३ ॥ कुंकुंकुं शब्दनिलयाकुक्कुरालयवासिनी ॥ कुक्कुरासङ्गसँय्युक्ताकुक्कुरानन्त विग्रहा ॥ १६४ ॥ कूर्च्चारम्भाकूर्च्चबीजाकूर्च्चजापपरायणा ॥ कुचस्पर्श्शनसन्तुष्टाकुचालिङ्गनहर्षदा ॥ १६५ ॥ कुगतिघ्नी

कुबेराच्यांकुचभूःकुलनायिका ॥ कुगायनाकुचधराकुमाताकुन्ददन्तिनी ॥ १६६ ॥ कुगेयाकुहराभासाकुगेयाकुघ्नदारिका ॥ कीर्त्तिःकिरातिनीक्लिन्नाकिन्नराकिन्नरीक्रिया ॥१६७॥ क्रीङ्कारा क्रीञ्जपासक्ताक्रींह्रूंस्त्रींमन्त्ररूपिणी ॥ किर्मीरितदृशापाङ्गीकिशोरीचकिरीटिनी ॥ १६८॥ कीटभाषाकीटयोनिःकीटमाताच कीटदा ॥ किंशुकाकीरभाषाचक्रियासाराक्रियावती ॥ १६९ ॥ कींकींशब्दपराक्लींक्लींक्लूंक्लैंक्लौंमन्त्ररूपिणी ॥ कांकींकूंकैंस्वरूपा चकःफट्मन्त्रस्वरूपिणी ॥ १७० ॥ केतकीभूषणानन्दाकेतकीभरणान्विता ॥ कैकदाकेशिनीकेशीकेशीसूदनतत्परा ॥१७१॥ केशरूपाकेशमुक्ताकैकेयीकौशिकीतथा ॥ कैरवाकैरवाह्लादा केशराकेतुरूपिणी ॥ १७२ ॥ केशवाराध्यहृदयाकेशवासक्तमानसा ॥ क्लैब्यविनाशिनीक्लैंश्चक्लैम्बीजजपतोषिता ॥ १७३ ॥ कौशल्याकोशलाक्षीचकोशाचकोमलातथा ॥ कोलापुरनिवासा चकोलासुरविनाशिनी ॥१७४॥ कोटिरूपाकोटिरताक्रोधिनीक्रोधरूपिणी॥केकाचकोकिलाकोटिःकोटिमन्त्रपरायणा ॥ १७५ ॥ कोट्यनन्तमन्त्रयुताकैरूपाकेरलाश्रया ॥ केरलाचारनिपुणाकेरलेन्द्रगृहस्थिता ॥ १७६ ॥ केदाराश्रमसंस्थाचकेदारेश्वरपूजिता ॥क्रोधरूपाक्रोधपदाक्रोधमाताचकौशिकी॥१७७॥ कोदण्डधारिणीक्रौञ्चाकौशिल्याकौलमार्ग्गगा ॥ कौलिनीकौलिकाराध्याकौलिकागारवासिनी ॥ १७८ ॥ कौतुकीकौमुदी कौलाकुमारीकौरवार्चिता ॥ कौण्डिन्याकौशिकीक्रोधाज्वाला भासुररूपिणी ॥ १७९ ॥ कोटिकालानलज्वालाकोटिमार्त्तण्ड विग्रहा ॥ कृत्तिकाकृष्णवर्णाचकृष्णाकृत्याक्रियातुरा[१] ॥१८०॥ कृशाङ्गीकृतकृत्याचकःफट्स्वाहास्वरूपिणी ॥ क्रौंक्रौंहूम्फट्

१ कृपातुरावेतिपाठः ।

मन्त्रवर्णाक्रींह्रींहूंम्फट्नमस्स्वधा ॥ १८१ ॥ क्रींक्रींह्रींह्रींत
थाहूंहूंफट्स्वाहामन्त्ररूपिणी ॥ इतिश्रीसर्व्वसाम्राज्यमेधाना
मसहस्रकम् ॥ १८२ ॥ सुन्दरीशक्तिदानाख्यस्वरूपाभिधमेव
च ॥ कथितन्दक्षिणाकाल्याः सुन्दर्य्यै प्रीतियोगतः ॥ १ ॥
वरदानप्रसङ्गेनरहस्यमपिदर्शितम् ॥ गोपनीयंसदाभक्त्यापठ
नीयम्परात्परम् ॥ २ ॥ प्रातर्म्मध्याह्नकालेचमध्यार्द्धरात्रयोर
पि ॥ यज्ञकालेजपान्तेचपठनीयंव्विशेषतः ॥ ३ ॥ यःपठेत्सा
धकोधीरःकालीरूपोहिवर्षतः ॥ पठेद्वापाठयेद्वापिशृणोतिश्रा
वयेदपि ॥ ४ ॥ वाचकन्तोषयेद्वापिसभवेत्कालिकातनुः ॥ स
हेलव्वाँसलीलव्वाँयश्चैनम्मानवःपठेत् ॥ ५ ॥ सर्व्वदुःखविनिर्म्मु
क्तस्त्रैलोक्यविजयीकविः ॥ मृतवन्ध्याकाकवन्ध्याकन्यावन्ध्या
चवन्ध्यका ॥ ६ ॥ पुष्पवन्ध्याशूलवन्ध्याशृणुयात्स्तोत्रमुत्तम
म् ॥ सर्व्वसिद्धिप्रदातारंसत्कविश्चिरजीवितम् ॥ ७ ॥ पाण्डि
त्यङ्कीर्त्तिसँय्युक्तंल्लभतेनात्रसंशयः ॥ यय्यँङ्कामसुपस्कृत्यका
लीन्ध्यात्वा जपेत्स्तवम् ॥ ८ ॥ तन्तङ्कामङ्करेकृत्वामन्त्री भ
वति नान्यथा ॥ योनिपुष्पैर्ल्लिङ्गपुष्पैःकुण्डगोलोद्भवैरपि ॥ ९ ॥
सय्योंगामृतपुष्पैश्च वस्त्रदेवीप्रसूनकैः ॥ कालीपुष्पैःपीठतोयै
र्य्योनिक्षालनतोयकैः ॥ १० ॥ कस्तूरीकुङ्कुमैर्द्दैवीन्नखकालागु
रुकमात् ॥ अष्टगन्धैर्द्धूपदीपैर्य्यवयावकसँय्युतैः ॥ ११ ॥
रक्तचन्दनसिन्दूरैर्म्मत्स्यमांसादिभूषणैः ॥ मधुभिःपायसैःक्षीरैः
शोधितैः शोणितैरपि ॥ १२ ॥ महोपचारैरक्तैश्च नैवेद्यैस्सुरसा
न्वितैः ॥ पूजयित्वामहाकालीम्महाकालेनलालिताम् ॥ १३ ॥
विद्याराज्ञीङ्कुल्लुकाञ्चजप्त्वास्तोत्रञ्जपेच्छिवे ॥ कालीभक्तस्त्वेक
चित्तः सिन्दूरतिलकान्वितः ॥ १४ ॥ ताम्बूलपूरितमुखो मुक्त
केशो दिगम्बरः ॥ शवयोनिस्थितो वीरः श्मशानसुरतान्वि
तः ॥ १५ ॥ शून्यालये बिन्दुपीठे पुष्पाकीर्णे शिवाव

ने ॥ शयानोत्थप्रभुञ्जानःकालीदर्शनमाप्नुयात् ॥ १६ ॥ तत्रयद्यत्कृतङ्कर्म्मं तदनन्तफलम्भवेत् ॥ ऐश्वर्य्यें कमला साक्षात्सिद्धौश्रीकालिकाम्बिका ॥ १७ ॥ कवित्वे तारिणीतुल्यः सौन्दर्य्यें सुन्दरीसमः ॥ सिन्धोर्द्धारासमःकार्य्येश्रुतौ श्रुतिधरस्तथा ॥ १८ ॥ वज्रास्त्रइवदुर्द्धर्षस्त्रैलोक्यविजयास्त्रभृत् ॥ शत्रुहन्ताकाव्यकर्त्ताभवेच्छिवसमःकलौ ॥ ॥ १९ ॥ दिग्विदिक्चन्द्रकर्त्ताचदिवारात्रिविपर्य्ययी ॥ महादेवसमोयोगीत्रैलोक्यस्तम्भकःक्षणात् ॥ २० ॥ गानेनतुम्बुरुस्साक्षाद्दानेकर्ण्णसमोभवेत् ॥ गजाश्वरथपत्तीनामस्त्राणामधिपःकृती ॥ २१ ॥ आयुष्येषु भुशुण्डी च जरापलितनाशकः ॥ वर्षषोडशवान्भूयात्सर्व्वकाले महेश्वरी ॥ २२ ॥ ब्रह्माण्डगोले देवेशि न तस्य दुर्ल्लभं क्वचित् ॥ सर्व्वं हस्तगतम्भूयान्नात्रकार्य्या विचारणा ॥ २३ ॥ कुलपुष्पयुतन्दृष्ट्वा तत्रकालीव्विँचिन्त्य च ॥ विद्याराज्ञीन्तुसम्पूज्य पठेन्नामसहस्रकम् ॥ २४ ॥ मनोरथमयी सिद्धिस्तस्य हस्ते सदा भवेत् ॥ परदारान्समालिङ्गच सम्पूज्यपरमेश्वरीम् ॥ २५ ॥ हस्ताहस्तिकयायोगङ्कृत्वा जप्त्वास्तवम्पठेत् ॥ योनिव्वीँक्ष्य जपेत्स्तोत्रङ्कुबेरादधिकोभवेत् ॥२६॥ कुण्डगोलोद्भवङ्द्रव्यवर्ण्णाक्तं होमयेन्निशि ॥ पितृभूमौ महेशानिविधिरेखाम्प्रमार्ज्जयेत् ॥२७॥ तरुणीं सुन्दरींरम्याञ्चञ्चलाङ्कामगर्व्विताम्॥समानीयप्रयत्नेनसंशोध्यन्यासयोगतः ॥२८॥ प्रसूनमञ्चंसंस्थाप्यपृथिवीङ्कशिताञ्चरेत् ॥ मूलचक्रन्तुसम्भाव्य देव्याश्चारणसँय्युतम् ॥ २९ ॥ सम्पूज्यपरमेशानिसङ्कल्प्यतु महेश्वरि ॥ जप्त्वास्तुत्वामहेशानीम्प्रणवंसंस्मरेच्छिवे ॥ ३० ॥ अष्टोत्तरशतैर्य्योनिम्प्रमन्त्र्याचुम्ब्ययत्नतः ॥ सँय्योगीभूयजप्त्वासर्व्वविद्याधिपोभवेत् ॥ ३१ ॥ शून्यागारेशिवारण्येशिवदे

वालयेतथा ॥ शून्यदेशेतडागेचगङ्गागर्भेचतुष्पथे ॥ ३२ ॥ श्मशानेपर्व्वतप्रान्तेएकलिङ्गेशिवामुखे ॥ मुण्डयोनौकृतौस्नात्वा गेहेवेश्यागृहेतथा ॥ ३३ ॥ कुट्टिनीगृहमध्ये च कदलीमण्डपे तथा ॥ पठेत्सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं सर्व्वार्थसिद्धये ॥ ३४ ॥ अरण्ये शून्यगर्त्ते च रणे शत्रुसमागमे ॥ प्रजपेच्च ततो नाम काल्याश्चैव सहस्रकम् ॥ ३५ ॥ बालानन्दपरो भूत्वा पठित्वा कालिकास्तवम् ॥ कालीं सञ्चिन्त्य प्रजपेत्पठेन्नामसहस्रकम् ॥ ३६ ॥ सर्व्वसिद्धीश्वरो भूयाद्वाञ्छासिद्धीश्वरो भवेत् ॥ मुण्डचूडकयोर्योनित्वाचि वा कोमले शिवे ॥ ३७ ॥ विष्टरे शववस्त्रे वा पुष्पवस्त्रासनेपिवा ॥ मुक्तकेशो दिशावासा मैथुनी शयने स्थितः ॥ ॥ ३८ ॥ जप्त्वाकालीम्पठेत्स्तोत्रङ्खेचरीसिद्धिभाग्भवेत् ॥ चिकुरैर्य्योगमासाद्य शुक्रोत्सारणमेवच ॥ ३९ ॥ जप्त्वाश्रीदक्षिणाङ्कालींशक्तिपातशतम्भवेत् ॥ लतांस्पृशञ्जपित्वाचरमित्वात्वर्च्चयन्नपि ॥ ४० ॥ आलोकयन्दिशावासऽपरशक्तिव्विंशेषतः ॥ स्तुत्वा श्रीदक्षिणाङ्कालीय्यौनिंस्वकरगाञ्चरेत् ॥ ४१ ॥ पठेन्नामसहस्रय्यँः स शिवादधिको भवेत् ॥ लतान्तरेषु जप्तव्यं स्तुत्वा कालीन्निराकुलः ॥ ४२ ॥ दशावधानो भवति मासमात्रेण साधकः ॥ कालरात्र्याम्महारात्र्याँव्वीररात्र्यामपि प्रिये ॥ ॥ ४३ ॥ महारात्र्याञ्चतुर्द्दश्यामष्टम्यांसंक्रमेपिवा ॥ कुहूपूर्णेन्दुशुक्रेषुभौमामायान्निशामुखे ॥ ४४ ॥ नवम्याम्मङ्गलादिने तथाकुलतिथौ शिवे ॥ कुलक्षेत्रे प्रयत्नेन पठेन्नामसहस्रकम् ॥ ॥ ४५ ॥ सौदर्शनो भवेदाशुकिन्नरीसिद्धिभाग्भवेत् ॥ पश्चिमाभिमुखँल्लिङ्गव्वृँषशून्यम्पुरातनम् ॥ ४६ ॥ तत्र स्थित्वा जपेत्स्तोत्रं सर्व्वकामाप्तयेशिवे ॥ भौमवारे निशीथे वा अमावस्यादिने शुभे ॥ ४७ ॥ माषभक्तबलिञ्छागङ्कसरान्नञ्च पायसम् ॥

दग्धमीनं शोणितञ्च दधिदुग्धञ्गुडार्द्रकम् ॥ ४८ ॥ बलिन्दत्वा जपेत्तत्र त्वष्टोत्तरसहस्रकम् ॥ देवगन्धर्व्वसिद्धौघैः सेवितां सुरसुन्दरीम् ॥ ४९ ॥ लभेद्देवेशि मासेन तस्य चासनसंहतिः ॥ हस्तत्रयम्भवेदूर्ध्वन्नात्रकार्य्याविचारणा ॥ ५० ॥ हेलयालीलया भक्त्या कालीं स्तौति नरस्तु यः ॥ ब्रह्मादीन्स्तम्भयेद्देवि माहेशीम्मोहयेत्क्षणात् ॥ ५१ ॥ आकर्षयेन्महाविद्यान्दशपूर्व्वान्त्रियामतः ॥ कुर्व्वीत विष्णुनिर्म्माणय्यँमादीनान्तुमारणम् ॥ ॥ ५२ ॥ ध्रुवमुच्चाटयेन्नूनं सृष्टिनूतनतान्नरः ॥ मेषमाहिषमार्ज्जारखरछागनरादिकैः ॥ ५३ ॥ खड्गीशूकरकापोतैर्घ्टिष्टिभैश्शशकैःऽपलैः ॥ शोणितैस्सास्थिमांसैश्च कारण्डैर्दुग्धपायसैः ॥ ५४ ॥ कादम्बरीसिन्धुमद्यै स्सुरारिष्टैश्च सासवैः ॥ योनिक्षालिततोयैश्च योनिलिङ्गामृतैरपि ॥ ५५ ॥ स्वजातकुसुमैःऽ पूज्यां जपान्तेतर्प्पयेच्छिवाम् ॥ सर्व्वसाम्राज्यनाम्ना तु स्तुत्वा नत्वा स्वशक्तितः ॥ ५६ ॥ शक्त्यालभन्पठेत्स्तोत्रङ्कालीरूपो दिनत्रयात् ॥ दक्षिणाकालिका तस्य गेहे तिष्ठति नान्यथा ॥ ५७ ॥ वेश्यालता गृहे गत्वा तस्याश्चुम्बनतत्परः ॥ तस्या योनौ मुखन्दत्वा तद्रसाँव्विलिहञ्जपेत् ॥ ५८ ॥ तदन्तेनामसाहस्रम्पठेद्भक्तिपरायणः ॥ कालिकादर्शनन्तस्य भवेदेव त्रियामतः ॥ ५९ ॥ नृत्यपात्रगृहे गत्वा मकारपञ्चकान्वितः ॥ प्रसूनमञ्चे संस्थाप्य शक्तिन्यासपरायणः ॥ ६० ॥ पात्राणांसाधनङ्कृत्वा दिग्वस्त्रान्तां समाचरेत्॥सम्भाव्यचक्रन्तन्मूलेतत्रसावरणाञ्जपेत् ॥ ६१ ॥ शतम्भालेशतङ्केशेशतं सिन्दूमण्डले ॥ शतत्रयङ्कुचद्वन्द्वे शतन्नाभौ महेश्वरि ॥ ६२ ॥ शतय्योंनौ महेशानि सँय्योगे च शतत्रयम् ॥ जपेत्तत्र महेशानि तदन्ते प्रपठेत्स्तवम् ॥ ६३ ॥ शतावधानो भवति मासमात्रेण साधकः ॥ मातङ्गिनीं समानी

य किंवाँ कापालिनीं शिवे ॥ ६४ ॥ दन्तमाला जपे कार्य्या गले धार्य्या नृमुण्डजा ॥ नेत्रपद्मेयोनिचक्रं शक्तिचक्रं स्ववक्त्रके ॥ ६५ ॥ कृत्वा जपेन्महेशानि मुण्डयन्त्रम्प्रपूजयेत् ॥ मुण्डासनस्थितो वीरो मकारपञ्चकान्वितः ॥ ६६ ॥ अन्यामालिङ्गच प्रजपेदन्यां सञ्चुम्ब्य वै पठेत् ॥ अन्यांसम्पूजयेत्तत्रत्वन्यां सम्मर्द्दयन्जपेत् ॥ ६७ ॥ अन्यायोनौ शिवन्दत्वा पुनःपूर्व्ववदाचरेत् ॥ अवधानसहस्रेषु शशिपातशतेषुच ॥ ६८ ॥ राजाभवति देवेशि मासपञ्चकयोगतः ॥ यवनीशक्तिमानीय गानशक्तिपरायणाम् ॥ ६९ ॥ कुलाचारमतेनैव तस्या योनिँविकासयेत् ॥ तत्र जिह्वाम्प्रदत्वा तु जपेन्नामसहस्रकम् ॥ ७० ॥ नृकपाले तत्र दीपं ज्वालय यत्नेन वैजपेत् ॥ महाकविवरो भूयान्नात्र कार्य्याविचारणा ॥ ७१ ॥ कामार्त्तां शक्तिमानीय योनौ तु मूलचक्रकम् ॥ विलिख्य परमेशानि तत्र मन्त्राँल्लिखेच्छिवे ॥ ७२ ॥ ताल्लिहन् प्रजपेद्देवि सर्व्वशास्त्रार्थतत्त्ववित् ॥ अश्रुतानिचशास्त्राणिवेदादीन्पाठयेद्ध्रुवम् ॥ ७३ ॥ विना न्यासैर्व्विना पाठैर्व्विना ध्यानादिभिः प्रिये ॥ चतुर्व्वेदाधिपो भूत्वा त्रिकालज्ञस्त्रिवर्षतः ॥ ७४ ॥ चतुर्व्विधञ्च पाण्डित्यन्तस्य हस्तगतङ्क्षणात् ॥ शिवाबलिः प्रदातव्या सर्व्वदा शून्यमण्डले ॥ ७५ ॥ कालीध्यानम्मन्त्रचिन्ता नीलसाधनमेवच ॥ सहस्रनामपाठश्च कालीनामप्रकीर्त्तनम् ॥ ७६ ॥ भक्तस्यकार्य्यमेतावदन्यदभ्युदयाव्वदुः ॥ वीरसाधनकर्म्म शिवापूजाबलिस्तथा ॥ ॥ ७७ ॥ सिन्दूरतिलको देवि वेश्यालापो निरन्तरम् ॥ वेश्यागृहे निशाचारो रात्रौ पर्य्यटनन्तथा ॥ ७८ ॥ शक्तिपूजा योनिदृष्टिः खड्गहस्तो दिगम्बरः ॥ मुक्तकेशो वीरवेषः कुलमूर्त्तिधरो नरः ॥ ७९ ॥ कालीभक्तो भवेद्देवि नान्यथा क्षोभ

माप्नुयात् ॥ दुग्धस्वादी योनिलेही सँव्विदासवघूर्णितः ॥८० ॥ वेश्यालतासमायोगान्मासात्कल्पलता स्वयम् ॥ वेश्याचक्रस मायोगात्कालीचक्रसमस्स्वयम् ॥ ८१ ॥ वेश्यादेहसमायोगा त कालीदेहसमस्स्वयम् ॥ वेश्यामध्यगतव्वँीरङ्कदा पश्यामि साधकम् ॥ ८२ ॥ एवव्वँदति सा काली तस्माद्वेश्या वरा म ता ॥ वेश्याकन्यातथापीठजातिभेदकुलक्रमात् ॥८३॥ अकुलक्र मभेदेन ज्ञात्वा चापि कुमारिकाम् ॥कुमारीम्पूजयेद्भक्त्या जपा न्तेभवनेप्रिये ॥ ८४ ॥ पठेन्नामसहस्रं यऽकालीदर्शनभाग्भवेत् भक्त्यापूज्य कुमारीञ्च वेश्याकुलसमुद्भवाम् ॥ ८५ ॥ वस्त्रहेमा दिभिस्तोष्य यत्नात्स्तोत्रम्पठेच्छिवे ॥ त्रैलोक्यविजयी भूया द्दिवाचन्द्रप्रकाशकः ॥ ८६ ॥ यद्यद्दत्तङ्कुमार्य्यै तु तदनन्तफ लम्भवेत् ॥ कुमारीपूजनफलम्मयावक्तुन्नशक्यते ॥ ८७ ॥ चाञ्च ल्यादुदितकिञ्चित्क्षम्यतामयमञ्जलिः ॥ एकाचेत्पूजिता बाला द्वितीया पूजिता भवेत् ॥ ८८ ॥ कुमार्य्यश्शक्तयश्चैव सर्व्वमेत च्चराचरम् ॥ शक्तिमानीय तद्गात्रे न्यासजालम्प्रविन्यसेत् ॥ ॥ ८९ ॥ वामभागे च संस्थाप्य जपेन्नामसहस्रकम् ॥ सर्व्वसि द्धीश्वरो भूयान्नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ९० ॥ श्मशानस्थो भ वेत्स्वस्थो गलितश्चिकुरश्चरेत् ॥ दिगम्बरः सहस्रञ्च सूर्य्यपुष्पं समानयेत् ॥९१॥ स्ववीर्य्येणयुतङ्कृत्वा प्रत्येकम्प्रजपन्हुनेत् ॥ पूज्यध्यात्वा महाभक्त्याक्षमापालो नरऽपठेत् ॥ ९२ ॥ नख केशंस्ववीर्य्यञ्च यद्यत्सम्मार्ज्जनीगतम् ॥ मुक्तकेशो दिशावासो मूलमन्त्रपुरःसरः ॥ ९३ ॥ कुजवारेमध्यरात्रे होमङ्कृत्वाश्मशा नके ॥ पठेन्नामसहस्रंय्यऽपृथ्वीशाकर्षणम्भवेत् ॥९४॥ पुष्पयु क्ते भगे देवि सँय्योगानन्दतत्परः ॥ पुनश्चिकुरमासाद्य मूलम न्त्रञ्जपन्शिवे ॥ ९५ ॥ चितावह्नौ मध्यरात्रे वीर्य्यमुत्सार्य्य य

त्नतः ॥ कालिकाम्पूजयेत्तत्रपठेन्नामसहस्रकम् ॥ ९६ ॥ पृथ्वी शाकर्षणङ्कुर्य्यान्नात्रकार्य्याविचारणा ॥ कदलीवनमासाद्यलक्ष मात्रञ्जपेन्नरः॥ ९७ ॥ मधुमत्या स्वयन्देव्या सेव्यमानः स्मरो पमः । श्रीमधुमतीत्युक्त्वातथास्थावरजङ्गमान् ॥ ९८ ॥ आक र्षिषणींसमुच्चार्य्यठंठंस्वाहासमुच्चरेत् ॥ त्रैलोक्याकर्षिषणीविद्यात स्य हस्ते सदा भवेत् ॥९९॥ नदीम्पुरीञ्च रत्नानि हेमस्त्रीशैलभू रुहान् ॥ आकर्षयत्यम्बुनिधिं सुमेरुञ्च दिगन्ततः ॥ १०० ॥ अलभ्यानि च वस्तूनि दूराद्भूमितलादपि ॥ वृत्तान्तञ्चसुरस्था नाद्रहस्यँव्विदुषामपि ॥ १ ॥ राज्ञाञ्च कथयत्येषा सत्यं सत्व रमादिशेत् ॥ द्वितीयवर्षपाठेन भवेत्पद्मावती शुभा॥ १०२॥ ॐह्रींपद्मावतिपदन्ततस्त्रैलौक्यनामच ॥ वार्त्ताञ्चकथयद्वन्द्वंस्वा हान्तो मन्त्र ईरितः ॥ १०३ ॥ ब्रह्मविष्णवादिकानाञ्चत्रैलोक्ये याद्दशी भवेत् ॥ सर्व्वंव्वदति देवेशी त्रिकालज्ञःकविश्शुभः ॥ १०४॥ त्रिवर्षम्पठतो देवि लभेद्भोगवतीङ्कलाम् ॥ महाकाले नदृष्टोपि चितामध्यगतोपिवा ॥ १०५ ॥ तस्या दर्शनमात्रे णचिरञ्जीवी नरो भवेत् ॥ मृतसञ्जीविनीत्युक्त्वा मृतमुत्थापयद्वय म् ॥ १०६ ॥ स्वाहान्तोमनुराख्यातोमृतसञ्जीवनात्मकः ॥ चतुर्व्वर्षम्पठेद्यस्तु स्वप्नसिद्धस्ततो भवेत् ॥ १०७॥ ॐह्रीं स्वप्नवाराहिकालिस्वप्नेकथयोच्चरेत् ॥अमुकस्यामुकन्देहिक्रींस्वा हान्तो मनुर्म्मतः॥ १०८ ॥ स्वप्नसिद्धाचतुर्व्वर्षात्तस्य स्वप्ने स दा स्थिता॥ चतुर्व्वर्षस्य पाठेन चतुर्व्वेदाधिपोभवेत्॥ १०९ ॥ ॥तद्धस्तजलसय्योँगान्मूर्खःकाव्यङ्करोतिच ॥ तस्यवाक्यपरि चयान्मूर्तिर्व्विन्दतिकाव्यताम्॥ ११० ॥ मस्तकेतुकरङ्कृत्वावद वाणीमितिब्रुवन् ॥ साधको वाञ्छयाकुर्य्यात्तत्तथैव भविष्य ति ॥ १११ ॥ ब्रह्माण्डगोलकेयाश्च याः काश्चिज्जगतीतले ॥ स

१ वदाति इति वा पाटः ।

मस्तास्सिद्धयो देविकरामलकवद्भवेत् ॥ ११२ ॥ साधकःस्मृतिमात्रेण यावन्त्यस्सन्ति सिद्धयः ॥ स्वयमायान्ति पुरतो जपादीनान्तुका कथा ॥ ११३ ॥ विदेशवर्त्तिनोभूत्वा वर्त्तन्ते चेटकाइव ॥ अमायाञ्चन्द्रसन्दर्शश्चन्द्रग्रहणमेवच ॥ ११४ ॥ अष्टम्याम्पूर्णचन्द्रत्वञ्चन्द्रसूर्य्याष्टकन्तथा ॥ अष्टदिक्षुतथाष्टौ चकरोत्येव महेश्वरि ॥ ११५ ॥ अणिमाखेचरत्वञ्चचराचरपुरीगतिम् ॥ पादुकाखड्गवेतालयक्षिणीगुह्यकादयः ॥ ११६ ॥ तिलको गुप्तताहश्यञ्चराचरकथानकम् ॥ मृतसञ्जीविनीसिद्धिर्ग्गुटिका च रसायनम् ॥ ११७ ॥ उड्डीनसिद्धिर्देवेशिषष्टिसिद्धीश्वरत्वकम्॥तस्यहस्तेवसेद्देविनात्र कार्य्या विचारणा॥११८॥ केतौ वा दुन्दुभौ वस्त्रे विताने वेष्टनेगृहे ॥ भित्तौ च फलके देवि लेख्यम्पूज्यञ्च यत्नतः ॥ ११९ ॥ मध्येचक्रन्दशाङ्गोक्तम्परितो नामलेखनम् ॥ तद्धारणान्महेशानि त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ १२० ॥ एको हि शतसाहस्रन्निर्जित्य च रणाङ्गणे॥ पुनरायाति च सुखं स्वगृहम्प्राति पार्व्वति ॥ १२१ ॥ एको हि शतसन्दर्शी लोकानाम्भवति ध्रुवम् ॥ कलशं स्थाप्य यत्नेन नामसाहस्रकम्पठेत् ॥ १२२ ॥ सेकःकार्य्यो महेशानि सर्व्वापत्तिनिवारणे ॥ भूतप्रेतग्रहादीनां रक्षसाम्ब्रह्मरक्षसाम् ॥ १२३ ॥ वेतालानाम्भैरवाणां स्कन्दवैनायकादिकान् ॥ नाशयेत् क्षणमात्रेण नात्र कार्य्या विचारणा ॥ १२४ ॥ भस्माभिमन्त्रितङ्कृत्वा ग्रहग्रस्ते विलेपयेत् ॥ भस्मसङ्क्षेपणादेवसर्व्वग्रहविनाशनम् ॥ १२५ ॥ नवनीतञ्चाभिमन्त्र्य स्त्रीणान्दद्यान्महेश्वरि ॥ वन्ध्यापुत्रप्रदा देवि नात्र कार्य्या विचारणा ॥ १२६ ॥ कण्ठे वा वामबाहौ वा योनौ वाधारणाच्छिवे ॥ बहुपुत्रवती नारी सुभगा जायते ध्रुवम् ॥ १२७ ॥ पुरुषो दक्षि

णाङ्गे तु धारयेत्सर्व्वसिद्धये ॥ बलवान्कीर्त्तिमान्धन्यो धार्म्मिकः साधकः कृती ॥ १२८ ॥ बहुपुत्रो रथानाञ्च गजानामधिपः सुधीः ॥ कामिनी कर्षणोद्युक्तः क्रीञ्चदक्षिणकालिके ॥ १२९ ॥ क्रींस्वाहा प्रजपेन्मन्त्रमयुतन्नामपाठकः ॥ आकर्षणञ्चरेद्देवि जलखेचरभूगतान् ॥ १३० ॥ वशीकरणकामो हिंहूंहूंह्रींह्रीं च दक्षिणे ॥ कालिके पूर्व्वबीजानि पूर्व्ववत्प्रजपन्पठेत् ॥ १३१ ॥ उर्व्वशीमपिवशयेन्नात्र कार्य्या विचारणा ॥ क्रीञ्चदक्षिणकालिके स्वाहायुक्तञ्जपेन्नरः ॥ १३२ ॥ पठेन्नाम सहस्रन्तुत्रैलोक्यम्मारयेद्ध्रुवम् ॥ सद्भक्ताय प्रदातव्या विद्याराज्ञि शुभेदिने ॥ १३३ ॥ सद्विनीताय शान्ताय दान्तायातिगुणायच ॥ भक्ताय ज्येष्ठपुत्राय गुरुभक्तिपराय च ॥ १३४ ॥ वैष्णवाय प्रशुद्धाय शिवावलिरतायच ॥ वेश्यापूजनयुक्तायकुमारीपूजकायच ॥ १३५ ॥ दुर्ग्गाभक्तायरौद्राय महाकालप्रजापिने ॥ अद्वैतभावयुक्ताय कालीभक्तिपराय च ॥ १३६ ॥ देयं सहस्रनामाख्यं स्वयङ्काल्याप्रकाशितम् ॥ गुरुदैवतमन्त्राणांमहेशस्यापि पार्व्वति ॥ १३७ ॥ अभेदेनस्मरेन्मन्त्रं स शिवःसगणाधिपः ॥ योमन्त्रम्भावयेन्मन्त्री स शिवो नात्र संशयः ॥ १३८ ॥ स शाक्तो वैष्णवस्सौरः सएवपूर्णदीक्षितः ॥ अयोग्याय न दातव्यं सिद्धिरोधः प्रजायते ॥ १३९ ॥ वेश्यास्त्रीनिन्दकायाथ सुरासँव्वित्प्रनिन्दके ॥ सुरामुखीमनुं स्मृत्वा सुराचारोभविष्यति ॥ १४० ॥ वाग्देवताघोरे आसापरघोरे च हूँव्वदेत् ॥ घोररूपे महाघोरे मुखीभीमपदव्वँदेत् ॥ १४१ ॥ भीषण्यमुपषष्ठचन्तं हेतुर्व्वामयुगे शिवे ॥ शिववह्नियुगास्त्रंहूँहूँकवचमनुर्भवेत् ॥ १४२ ॥ एतस्यस्मरणादेव दुष्टानाञ्चमुखे सुरा ॥ अवतीर्णाभवेद्देवीदुष्टानाम्भद्रनाशिनी ॥ १४३ ॥ खला

य परतन्त्राय परनिन्दापराय च ॥ भ्रष्टाय दुष्टसत्वाय परवाद रतायच ॥ १४४ ॥ शिवाभक्ताय दुष्टाय परदाररताय च ॥ न स्तोत्रन्दर्शयेद्देवि शिवहत्याकरो भवेत् ॥ १४५ ॥ कालिका नन्दहृदयःकालिकाभक्तिमानसः ॥ कालीभक्तो भवेत्सोहि ध न्यरूपस्स एव तु ॥ १४६ ॥ कलौ काली कलौ काली कलौ काली वरप्रदा ॥ कलौ काली कालौ काली कालौ काली तु केव ला ॥ १४७ ॥ बिल्वपत्रसहस्राणि करवीराणि वैतथा ॥ प्र तिनाम्ना पूजयेद्धि तेन काली वरप्रदा ॥ १४८ ॥ कमलानां सहस्रन्तु प्रतिनाम्ना समर्प्पयेत् ॥ चक्रं सम्पूज्य देवेशि कालि कावरमाप्नुयात् ॥ १४९ ॥ मन्त्रक्षोभयुतो नैव कलशस्थजले न च ॥ नाम्ना प्रसेचयेद्देवि सर्व्वक्षोभविनाशकृत् ॥ १५० ॥ तथामदनकन्देविसहस्रमाहरेद्व्रती ॥ सहस्रनाम्नासम्पूज्यका लीवरमवाप्नुयात् ॥ १५१ ॥ चक्रँव्विलिख्यदेहस्थन्धारयेत्का लिकातनुः॥कालयै निवेदितं यद्यत्तदंशम्भक्षयेच्छिवे ॥ १५२ ॥ दिव्यदेहधरो भूत्वा कालीदेहे स्थिरो भवेत् ॥ नैवेद्यनिन्दकान् दु ष्टान् दृष्ट्वा नृत्यन्ति भैरवाः ॥ १५३ ॥ योगिन्यश्च महावीरा रक्तपा नोद्यताःप्रिये ॥ मांसास्थिचर्म्मणोद्युक्ता भक्षयन्तिनसंशयः ॥ ॥ १५४ ॥ तस्मान्ननिन्दयेद्देवि मनसा कर्म्मणा गिरा ॥ अ न्यथा कुरुते यस्तु तस्य नाशो भविष्यति ॥ १५५ ॥ क्रमदी क्षायुतानाञ्च सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥ मन्त्रक्षोभश्च वा भूया त्क्षीणायुर्व्वा भवेद्ध्रुवम् ॥ १५६ ॥ पुत्रहारी स्त्रियोहारीराज्य हारीभवेद्ध्रुवम् ॥ क्रमदिक्षायुतो देवि क्रमाद्राज्यमवाप्नुयात् ॥ ॥ १५७ ॥ एकवारम्पठेद्देवि सर्व्वपापविनाशनम् ॥ द्विवारञ्च पठेद्यो हि वाञ्छाँव्विन्दति नित्यशः ॥ १५८ ॥ त्रिवारञ्चपठे द्यस्तु वागीशसमताव्व्रँजेत् ॥ चतुर्वारम्पठेद्देवि चतुर्व्वर्ण्णाधिपो

भवेत् ॥ १६९ ॥ पञ्चवारम्पठेद्देवि पञ्चकामाधिपो भवेत् ॥ षड्वारञ्च पठेद्देवि षडैश्वर्य्याधिपोभवेत् ॥ १६० ॥ सप्तवारम्पठेत्सप्तकामानाश्चिन्तितल्लँभेत् ॥ वसुवारम्पठेद्देवि दिगीशो भवति ध्रुवम् ॥ १६१ ॥ नववारम्पठेद्देवि नवनाथसमो भवेत् ॥ दशवारङ्कीर्त्तयेद्योदशार्हऽ खेचरेश्वरः ॥ १६२ ॥ विंशद्वारङ्कीर्त्तयेद्यः सर्व्वैश्वर्य्यमयो भवेत् ॥ पञ्चविंशतिवारैस्तु सर्व्वचिन्ताविनाशकः ॥ १६३ ॥ पञ्चाशद्वारमावर्त्य पञ्चभूतेश्वरोभवेत् ॥ शतवारङ्कीर्त्तयेद्यः शताननसमानधीः ॥ १६४ ॥ शतपञ्चकमावर्त्त्यराजराजेश्वरो भवेत् ॥ सहस्रावर्त्तनाद्देवि लक्ष्मीरावृणुते स्वयम् ॥ १६५ ॥ त्रिसहस्रं समावर्त्त्य त्रिनेत्रसदृशो भवेत् ॥ पञ्चसाहस्रमावर्त्य कामकोटिविमोहनः ॥ १६६ ॥ दशसहस्रावर्त्तनैर्भवेद्दशसुखेश्वरः ॥ पञ्चविंशतिसाहस्रैश्चतुर्विंशतिसिद्धिधृक् ॥ १६७ ॥ लक्षावर्त्तनमात्रेण लक्ष्मीपतिसमो भवेत् ॥ लक्षत्रयावर्त्तनात्तु महादेवँव्विजेष्यति ॥ १६८ ॥ लक्षपञ्चकमावर्त्त्य कलापञ्चकसँय्युतः ॥ दशलक्षावर्त्तनात्तु दशविद्यातिरुत्तमा ॥ ॥ १६९ ॥ पञ्चविंशतिलक्षैस्तु दशविद्येश्वरो भवेत् ॥ पञ्चाशल्लक्षमावृत्य महाकालसमो भवेत् ॥ १७० ॥ कोटिमावर्त्तयेद्यस्तु कालीम्पश्यति चक्षुषा ॥ वरदानोद्युक्तकराम्महाकालसमन्विताम् ॥ १७१ ॥ प्रत्यक्षम्पश्यति शिवे तस्या देहोभवेद्ध्रुवम् ॥ श्रीविद्याकालिकातारात्रिशक्तिविजयीभवेत् ॥१७२॥ विधेर्ल्लिपिञ्चसम्मार्ज्यकिङ्करत्वँव्विसृज्यच ॥ महाराज्यमवाप्नोतिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ १७३ ॥ त्रिशक्तिविषये देवि क्रमदीक्षा प्रकीर्त्तिता ॥ क्रमदीक्षायुतो देवि राजा भवति निश्चितम् ॥ १७४ ॥ क्रमदीक्षाविहीनस्य फलम्पूर्व्वमिहेरितम् ॥ क्रमदीक्षायुतो देवि शिव एव नचापरः ॥ १७५ ॥ क्रमदीक्षासमायुक्तऽ

काल्योक्तसिद्धिभाग्भवेत् ॥ क्रमदीक्षाविहीनस्य सिद्धिहानिः प देपदे ॥ १७६ ॥ अहो जन्मवताम्मध्ये धन्यःक्रमयुतःकलौ ॥ तत्रापि धन्यो देवेशि नामसाहस्रपाठकः ॥ १७७ ॥ दशकाली विधौ देवि स्तोत्रमेतत्सदापठेत् ॥ सिद्धिँव्विन्दति देवेशि नात्र कार्य्या विचारणा ॥१७८॥ काली काली महाविद्या कलौ काली च सिद्धिदा ॥ कलौ काली च सिद्धा च कलौ काली वरप्रदा ॥ ॥ १७९ ॥ कलौ काली साधकस्य दर्शनार्थं समुद्यता ॥ कलौ काली केवला स्यान्नात्रकार्य्या विचारणा ॥ १८० ॥ नान्यविद्या नान्यविद्या नान्यविद्या कलौ भवेत्॥कलौ कालीँव्विहायाथयःक श्चित्सिद्धिकामुकः ॥१८१॥ सतुशक्तिँव्विना देवि रतिसम्भोगमि च्छति ॥ कलौ कालीँव्विना देवि यःकश्चित्सिद्धिमिच्छति ॥ ॥ १८२ ॥ स नीलसाधनन्त्यक्त्वा परिभ्रमति सर्व्वतः ॥ कलौ कालीँव्विहायाथ यःकश्चिन्मोक्षमिच्छति ॥ १८३ ॥ गुरुध्या नम्परित्यज्य सिद्धिमिच्छति साधकः ॥ कलौ कालीँव्विहाया थयःकश्चिद्राज्यमिच्छति ॥ १८४ ॥ स भोजनम्परित्यज्याभि क्षुवृत्तिमभीप्सति ॥ स धन्यः स च विज्ञानी स एव सुरपूजितः॥ ॥ १८५ ॥ स दीक्षितः सुखी साधुः सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ स वेदवक्ता स्वाध्यायी नात्र कार्य्या विचारणा ॥ १८६ ॥ शिवरू पङ्गुरुन्ध्यात्वा शिवरूपङ्गुरुं स्मरेत् ॥ सदाशिवः स एव स्या न्नात्रकार्य्या विचारणा ॥ १८७ ॥ स्वस्मिन् कालीन्तु सम्भाव्य पूजयेज्जगदम्बिकाम् ॥ त्रैलोक्याविजयी भूयान्नात्र कार्य्या वि चारणा ॥ १८८ ॥ गोपनीयङ्गोपनीयङ्गोपनीयम्प्रयत्नतः ॥ रहस्यातिरहस्यञ्चरहस्यातिरहस्यकम् ॥ १८९ ॥ श्लो कार्द्धम्पादमात्रव्वाँ पादार्द्धञ्च तदर्द्धकम् ॥ नामार्द्धं य्यँः पठेद्दे वि न वन्ध्यदिवसन्न्यसेत् ॥ १९० ॥ पुस्तकम्पूजयेद्भक्त्या

त्वरितम्फलसिद्धये ॥ न च मारीभयन्तत्र नचाग्निर्व्वायुसम्भवम् ॥ १९१ ॥ न भूतादिभयन्तत्र सर्व्वत्र सुखमेधते ॥ कुङ्कुमालक्तकेनैव रोचनागुरुयोगतः ॥ १९२ ॥ भूर्ज्जपत्रे लिखेत्पुस्तं सर्व्वकामार्त्थसिद्धये ॥ १९३ ॥ इतिगदितमशेषङ्कालिकावर्णरूपम्प्रपठति यदिच भक्त्या सर्व्वसिद्धीश्वरः स्यात् ॥ अभिनवसुखकामस्सर्व्वविद्याभिरामो भवति सकलसिद्धिस्सर्व्ववीरासमृद्धिः ॥ १९४ ॥ इतिसङ्क्षेपतःप्रोक्तङ्किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ ॥ १९५ ॥ इति कालीसहस्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

॥ इति श्रीशाक्तप्रमोदे कालीतन्त्रम् ॥

॥ समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

खेमराज श्रीकृष्णदास

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना

बम्बई.

इति शाक्तप्रमोदान्तर्गतकालीतन्त्रम् सम्पूर्णम् ।

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मज
खेमराजेन स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर"
यन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

संगृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

द्वितीयं

तारातन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-
दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

संवत् १९५० शके १८१५

१६

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ शाक्तप्रमोदः ।



तारातन्त्रम् ॥

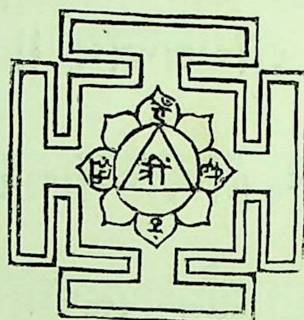
अथ ताराध्यानम् ॥

प्रत्यालीढपदार्प्पिताङ्घ्रिशवहृद्घोराट्टहासापराखड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्प्परभुजाहुँकारबीजोद्भवा ॥ खर्व्वा नीलविशालपिङ्गलजटाजूटैकनागैर्य्युता जाड्यन्न्यस्यकपालकर्त्तृजगतां हन्त्युग्रतारास्वयम् ॥



अथ यन्त्रोद्धारः ॥

सयोनिश्चन्दनेनाष्टदलम्पद्मँल्लिखेत्ततः ॥ मृद्वासनंसमासाद्य मायाम्पूर्वदलेलिखेत् ॥ बीजन्द्वितीयय्याँम्येफट्उत्तरेपश्चिमेतुठं॥ मध्येबीजँलिखेत्तारम्भूतशुद्धिमथाचरेत् ॥



अथ मन्त्रोद्धारः ॥

वाग्बीजम्प्रथमम्प्रोच्यओङ्कारन्तुततःपठेत् ॥ लज्जाबीजन्ततस्ताराबीजं हूंफट्तत ः पठेत् ॥

अथ मन्त्रः ॥

ऐंओंह्रींक्रींहूँफट् ॥

अथ तारासपर्य्यासरणिः ॥

कुशहस्तो मौनी मूलेनाचम्य, 'ॐवज्रोदकेहूँफट्' इत्यनेन जलङ्गृहीत्वा, 'ॐह्रींस्वाहा' इत्यनेन पादौ प्रक्षाल्य, 'ॐ ह्रींस्वविशुद्धधर्म्मसर्व्वपापानि शमयाशेषविकल्पानपनय स्वाहा' इत्यनेनाचम्य, 'ॐमणिधरि वज्रिणि शिखरिणि सर्व्ववशङ्करिहूँफट्' इतिशिखाबन्धनङ्कृत्वा, 'ॐरक्षरक्षहूँफट्स्वाहा' इतिभूमिं संशोध्य, 'ॐपवित्रवज्रम्मेहूँस्वाहा' इतिभूमिमभिमन्त्र्य 'ॐआसुरेश्वरि वज्ररेखे हूँस्वाहा' इत्यनेनभूमिंस्पृष्ट्वा, 'ॐ आधारशक्तिकमलासनायनमः' इतिसम्पूज्य, तत आसनंस्पृष्ट्वा

पृथ्वीत्यादिमन्त्रम्पठेत् ॥ ततःसर्व्वविघ्नानुत्सार्य्यततः 'ॐअपस र्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तुशिवाज्ञया' इत्यनेनाक्षतप्रक्षेपेणसर्व्वविघ्नानुत्सारयेत् ॥ गन्धपुष्पाभ्यां करौ सम्मर्द्य, तत्पुष्पमैशान्यान्नाराचमुद्रयाप्र क्षिपेत् तत्रमन्त्रः 'ॐते सर्व्वे विलयय्यान्तुये मां हिंसन्ति हिंस काः ॥ मृत्युरोगभयक्रोधाः पतन्तुरिपुमस्तकेहूँफट्' ॥ ततस्सा मान्यार्ग्घस्थापनविधिः ॥ 'तत्र ॐआधारशक्तयेनमः' इत्यने नाधारशक्तिमभिमन्त्र्य, तत्रचतुरस्रँल्लिखित्वा, तदुपरि ॐह्रः सामान्यार्ग्घस्थापयामिनमः' इतिसामान्यार्ग्घस्थापनङ्कृत्वा, तस्मिन्प्रणवेनजलन्निधाय, तत्र 'गङ्गेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्व ति । नर्म्मदेसिन्धुकावेरिजलेऽस्मिन्सन्निधिङ्कुरु' इतिसूर्य्यम ण्डलादङ्कुशमुद्रयातीर्थानितत्रावाह्य, पुष्पाक्षतैः 'गङ्गादिसक लतीर्त्थेभ्यो नम, इतितत्रसम्पूज्य 'हृदयादिषडङ्गदेवताभ्योन म' इतिसम्पूज्य 'ॐआंअर्कमण्डलायद्वादशकलात्मनेनम' इ ति, 'ॐवह्निमण्डलायदशकलात्मनेनम' इति, 'ॐडंसोम मण्डलायषोडशकलात्मनेनम' इतिअर्कवह्निचन्द्रमण्डलानिस म्पूज्य, वमितिधेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, हूमितिकवचेनावगुण्ठच फडित्यस्त्रेणसंरक्ष्य, तत्रप्रणवन्दशवारञ्जपेत् ॥ इतिसामान्यार्ग्घ स्थापनविधिः ॥ सामान्यार्ग्घस्थजलेनात्मानम्पूजोपकरणानि चाभिषिच्य, ततो विशेषार्ग्घस्थापनविधिः ॥ तद्यथा 'ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हूँस्वाहा " इति मण्डलँव्विरच्य, ततः नं वमितिभुवं सम्मृज्य, ॥ तत्र त्रिकोणवृत्तभूगृहात्मकम्मण्डल व्विंधाय, तत्रआधारशक्तिङ्कूर्म्मशेषौ च सम्पूज्य, तत्राधारम् 'ह्रींफट्' इति मन्त्रेण संस्थाप्य, पूर्व्वोक्तवह्निमण्डलमन्त्रे णतत्तन्मण्डलमभ्यर्च्चर्य, तत्रशङ्खम् 'हूंफट्' इतिमन्त्रेणप्रक्षा

लितं संस्थाप्य, मन्त्रचतुष्टयञ्जपन्शङ्खमर्च्चयेत् ॥ तद्यथा 'ह्रांह्रींहूंकालीकपालायनमः, स्त्रांस्त्रींस्त्रूंतारिणीकपालायनमः, हाँहींहूँनीलकपालायनमः; ह्रांस्त्रींहूंस्वर्गकपालायसर्व्वाधाराय सर्व्वोद्भवाय सर्व्वशुद्धिमयायसर्व्वासुररुधिरारुणाय शुभ्राय सुराभाजनाय देवीकपालायनमः' इतिमन्त्रचतुष्टयम् ॥ ततः पूर्व्वोक्तार्कमण्डलमन्त्रेण तन्मण्डलंसम्पूज्य, ततो मूलमन्त्रेण शङ्खे जलन्निधाय, स्वधाबुद्ध्या, तत्रगन्धपुष्पाक्षतान्क्षिपेत् ॥ तत्र त्रिखण्डाम्मुद्राम्प्रदर्श्य तत्रपूर्व्वोक्तचन्द्रमण्डलमन्त्रेण तन्मण्डलं सम्पूज्य, 'ऐंह्रींश्रींह्रौंआंह्रींत्रींहूंफट् ह्लौंहूं इत्यनेनाष्टकृत्वो जलमभिमन्त्र्य, ह्रीमितिमन्त्रेण शङ्खमुद्रान्धेनुमुद्राँय्योनिमुद्रान्दर्शयित्वा, मत्स्यमुद्रया आच्छाद्य, दशवारम्मूलमन्त्रञ्जपेत् ॥ तत्रवृत्ताष्टदलषट्कोणन्ध्यात्वा, देवीम्प्रविचिन्त्य, सम्पूज्य, मूलेन चतुर्व्वारं सन्तर्प्य, 'ऐंह्रौंह्लौंनमआनन्दभैरवन्तर्प्पयामि' इतिमन्त्रेणसन्तर्प्य, तेनार्ग्घतोयेन पूजासाधनानि प्रोक्षयेत् ॥ इतिविशेषार्ग्घस्थापनाविधिः ॥ 'ॐयथागताभिषेकममाग्निमेहूँफट्' इतिमन्त्रेण पुष्पं संशोध्य, 'ॐआंह्रींस्वाहा' इतिचित्तशोधनङ्कुर्य्यात् ॥ ततऋष्यादिन्यासः ॥ तद्यथा—शिरसि वसिष्ठाय ऋषयेनमः ॥ मुखे अनुष्टुप्छन्दसेनमः ॥ हृदयेत्र्यम्बकदेवतायैनमः ॥ ततो हृदयादिन्यासः ॥ ह्रांहृदयायनमः । ह्रींशिरसेस्वाहा । ह्रूंशिखायैवषट् । ह्रैंकवचायहूम् ॥ ह्रौंनेत्रत्रयायवौषट् । ह्रःअस्त्रायफट् ॥ ततःकरन्यासः ॥ यथा ॥ ह्रांअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ह्रींतर्जनीभ्यांस्वाहा । ह्रूंमध्यमाभ्यां वषट् । ह्रैंअनामिकाभ्यांहूम् । ह्रौंकनिष्ठाभ्यांवौषट् । ह्रःकरतलकरपृष्ठाभ्यांफट् ॥ ततो मूलेन त्रिधाव्यापकन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ ततो मूलेन स्वबीजेन वा प्राणायामत्रयङ्कुर्य्यात् । तद्यथा च

तुर्व्वारजपेन पूरकः, षोडशवारजपेन कुम्भकः, अष्टवारजपेनरेचकः ॥ तद्विपरीतोद्वितीयः ॥ तद्विपरीतस्तृतीयः ॥ ततः षट्कोणाष्टदलभूपुरात्मकयन्त्रं विलिख्य, मध्येह्लौंबीजँव्विलिख्य यन्त्रसंस्कारञ्चकृत्वा ॥ तत्र मध्ये मेधाप्रज्ञाविद्याधीधृतिस्मृति बुद्धिविद्यैश्वर्य्यः पूज्याः ॥ ततःपुष्पङ्गृहीत्वा 'ह्लौं सरस्वतीयोगपीठाय नमः इति यन्त्रमध्ये पुष्पम्प्राक्षिपेत् ॥ ततो देवीन्ध्यायेत् ॥ तद्यथा 'विश्वव्यापकवारिमध्यविलसच्छ्वेताम्बुजन्मास्थिताम् कर्त्रींखड्गकपालनीलनालिनै राजत्करामिन्दुभाम् ॥ काञ्चीकुण्डलहारकङ्कणलसत्केयूरमञ्जीरतामातैर्न्नागवरैर्व्विभूषिततनूमारक्तनेत्रत्रयाम् ॥ १ ॥ पिङ्गोग्रैकजटाल्लसत्स्वरसनान्दंष्ट्राकरालानना श्चर्म्म द्वैपि वरङ्कटौ विदधतीं श्वेतास्थिपट्टालिकाम् ॥ अक्षोभ्येण विराजमानशिरसं स्मेराननाम्भोरुहान्तारांशावहृदासनान्दृढकुचामम्बान्त्रिलोक्याःस्मरेत् ॥ इतिध्यात्वाकरकक्षपिकाम्बद्ध्वा तत्र पुष्पाक्षतङ्गृहीत्वा ॥ ततो मूलाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य, द्वितीयाम्मूर्त्तिन्निस्सार्य्य, तन्मुखे 'सोहम्' इति प्रदीपकलिकाञ्जीवमूर्त्तिन्निःक्षिप्य तां सहस्रदलपद्मस्थब्रह्मणा सँय्योज्य, चन्द्रमण्डलस्थामृतेन सन्तोष्य, कुण्डलिन्याजीवमूर्त्तिँव्वियोज्य, दक्षिणनासापुटेनानिस्सृतम्पुष्पाक्षतव्विभाव्य; तत्पुष्पाक्षतषट्कोणाष्टदलभूगृहात्मकयन्त्रे निःक्षिप्य, तत्र देवीमावाहयेत् ॥ तद्यथा 'महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे ॥ सर्व्वभूतहितेमातरेह्येहिपरमेश्वरि ॥ इतिपठित्वा मूलञ्च पठन्'अमुकदेवि इहागच्छ इहतिष्ठ ममपूजाङ्गृहाण' इह सन्निधेहि इहसन्निरुध्यस्व इहसम्मुखीभव' इति तत्तन्मुद्राःप्रदर्श्य, एषपुष्पाञ्जलिः मूलमन्त्रमुच्चार्य्य, अमुकदेविवज्रपुष्पम्प्रतीक्ष्यहूँफट्स्वाहा अमुकदेव्यैनमः' इतिपठन् पु

ष्पाञ्जलिपञ्चकङ्क्षिपेत् ॥ इदम्पाद्यम्मूलमन्त्रमुच्चार्य्य 'अमुकदेव्यै नमः' । इदमाचमनीयम् मूलमन्त्रमुच्चार्य्य 'अमुकदेव्यैनमः' इति पठित्वादद्यात्। एष मधुपर्कः मूलमन्त्रमुच्चार्य्य अमुकदेव्यैनम इतिपठित्वामधुपर्कन्दद्यात् । इदंस्नानीयम्मूलमन्त्रमुच्चार्य्यअमु कदेव्यैनमः इतिदेवींस्नापयेत् । एवंवसनभूषणेदद्यात् । इमानिपु ष्पाणिमूलमन्त्रमुच्चार्य्य वज्रपुष्पम्प्रतीक्ष्यहूँफट्स्वाहा अमुकदे व्यैवौषट्इतिपठित्वापुष्पाणिदद्यात् । तत आवरणपूजा ॥ पू र्व्वेगणेशम्पूजयेत् ॥ तद्यथा गणेशइहागच्छइहतिष्ठेत्यादिनापूज येत् पुष्पदाने विशेषमनुः 'गंगणेशवज्रपुष्पम्प्रतीक्ष्यफट्स्वाहा' इत्यनेनपुष्पन्दद्यात् ।एवम्बटुकन्दक्षिणेपूजयेत् । एवङ्क्षेत्रपालम्प श्चिमेपूजयेत् । उत्तरेयोगिनीम्पूजयेत् । ततोदेव्यामस्तकेअक्षो भ्यम्पूजयेत् । 'अक्षोभ्यव्वँज्रपुष्पम्प्रतीक्ष्यस्वाहा' इतिमन्त्रेणाक्षो भ्यम्पूजयेत् । ततषट्कोणेषु षडङ्गम्पूजयेत्॥ तद्यथा 'एकजटा यैनम' इतिहृदयाय। 'तारिण्यैनम' इतिशिरसि 'वज्रोदकायैनम' इ तिशिखायाम् । उग्रतारायैनमइतिकवचे । 'महापरिशरायैनम' इतिनेत्रे 'पिङ्गोग्रैकजटायैनम' इतिदिक्षुपूजयेत् । ततोदिग्दले षु 'वैरोचनमसिताभम्पद्मनाभंशङ्खपाण्डुरव्वैरोचनवज्रपुष्पम्प्रती क्ष्यस्वाहा' इत्यादिपुष्पदानेमन्त्रः । नामकम्मामकम्पाण्डुर न्तारकँव्विदिक्षु पूजयेत् । पुष्पदाने मन्त्रः प्राग्वत् । ततोभूगृह स्यचतुर्द्वारेषु पूर्व्वादितः पद्मान्तकजन्मान्तकविघ्नान्तकनर कान्तकान् पूजयेत् ॥ पुष्पदानेमन्त्रःप्राग्वत्ततस्तद्बाह्येइ न्द्रादीन्दिक्पालान्पूजयेत् ॥ तद्बहिः वज्रशक्तिदण्डखड्गपाशा ङ्कुशगदाशूलचक्राणिपूजयेत् ॥ ततोधूपः साङ्गायैसायुधायैसप रिवारायै सवाहनायै मूलम् अमुकदेवतायैनमः॥एवन्दीपन्दद्यात्। ततोनैवेद्यन्दद्यात् । तद्यथास्वर्णादिभाजनेनैवेद्यम्परिवेष्य वायु

बीजन्द्वादशवारञ्जपन् तज्जातमारुतेन नैवेद्यं संशोध्य दक्षिण करतले वामकरतलं सन्न्यस्य तदुत्थेनाग्निनाअग्निबीजन्द्वाद शवारञ्जपन्अखिलन्नैवेद्यदोषं सन्दह्य पुनर्व्वामकरपृष्ठे द क्षिणहस्तङ्कत्वा तत्र प्रदश्र्य वंबीजन्द्वादशवारञ्जपन् त दुत्थयामृतधारयानैवेद्यमभिषिच्य, पुनर्म्मूलेनाभिषिच्यतत्स्पृ ष्ट्वाअष्टशो मूलमन्त्रञ्जपेत् ॥ धेनुमुद्राम्प्रदश्र्य गन्धपुष्पैस्तद र्च्चयेत् ततोनैवेद्यभाजनव्वाँमाङ्गुष्ठेनसंस्पृश्यदक्षिणहस्तेनजलन्धृ त्वामूलम्पठन्' इदन्नैवेद्यंसाङ्गायैसायुधायैसपरिवारायैसवाहनायै सावरणायै अमुकदेव्यैनम इतिनैवेद्यमुत्सृज्य अङ्गुष्ठानामिका भ्यान्नैवेद्यमुद्राम्प्रदश्र्य सपुष्पकराभ्यान्त्रिः प्रोद्धरन् ग्रासमुद्रा व्वाँमहस्तेन प्रदर्शयेत् ॥ ततःप्राणादिमुद्रान्दर्शयेत् ॥ ओंप्रा णायस्वाहा इतिपठन्कनिष्ठानामिकाङ्गुष्ठैः प्राणमुद्रान्दर्शयेत् । तत ओंअपानायस्वाहा इतिपठन्तर्ज्जनीमध्यमाङ्गुष्ठैः अपानमुद्रा न्दर्शयेत् । तत ओंउदानायस्वाहा इतिपठन्ननामामध्यमाङ्गु ष्ठैरुदानमुद्रान्दर्शयेत् ओंव्यानायस्वाहा इतिपठन्तर्ज्जन्यना मामध्यमाङ्गुष्ठैर्व्यानमुद्रान्दर्शयेत्। ततःओंसमानायस्वाहाइति पठन् सर्व्वाङ्गुलीभिस्समानमुद्राम्प्रदर्शयेत् ॥ ततोदेवींसन्तुष्टा ङ्विवभाव्य पानीयन्दद्यात्। मूलमन्त्रमुच्चार्य्यइदम्पानीयममुकदे व्यैनमः। इदमाचमनीयममुकदेव्यैनमः। इदन्ताम्बूलञ्चएषपुष्पा ञ्जलिः ॥ अथजपविधिः ॥ पूर्व्ववत् ऋष्यादिन्यासकरन्यास षडङ्गन्यासान् ध्यानञ्च विधाय 'ह्रींमालेमहामाले सर्व्वतत्त्वस्व रूपिणि ॥ चतुर्व्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव' इ तिपठन् मूलमन्त्रेण मालां सम्पूज्य यथाशक्ति जपङ्कुर्य्यात् ॥ जपान्ते पुनःप्राणायामादिकँव्विधाय देवीन्ध्यात्वा 'ॐगुह्या तिगुह्यगोप्त्रीत्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम्। सिद्धिर्भवतुमेदेवित्वत्प्र

सादान्महेश्वरि' इतिपठन् तेजोमयञ्जलन्ध्यायन् देव्यावामह स्ते जपं समर्प्पयेत् ॥ पुष्पाञ्जल्यष्टकन्दत्त्वा स्तोत्रकवचादि कम्पठेत् । ततः प्रदक्षिणीकृत्य दण्डवत्प्रणिपत्य, ॐइतः पूर्व्वं प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसावा चाहस्ताभ्यांपद्भ्यामुदरेणशिश्ना यत्स्मृतँय्यदुक्तँय्यत्कृतन्त त्सर्व्वंब्रह्मार्प्पणम्भवतुस्वाहामदीयञ्चसकलन्देव्यैतेसमर्प्पयेत् ॥ ततःपुष्पाञ्जलिङ्गृहीत्वा 'ओंमन्त्रहीनङ्क्रियाहीनँ विधिहीनंसु रेश्वरि ॥ यदर्च्चितम्मयादेवि परिपूर्णन्तदस्तुमे ॥ आवाहनञ्च पूजाञ्चतन्माहात्म्यञ्जपन्तथा ॥ विसर्ज्जनन्नजानामि श्रीदेवित्व ङ्क्षमस्वमे ॥ अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्यायन्न्यूनमधिकङ्कृतम् ॥ विप रीतञ्चतत्सर्व्वंक्षमस्वपरमेश्वरि ॥ एषपुष्पाञ्जलिः अमुकदेव्यैन मइतिक्षमाप्य, ततः ' ओंगच्छगच्छपरंस्थानंस्वस्थानम्परमे श्वरि । पूजाराधनकालेचपुनरागमनायच ' इतिसंहारमुद्रया पुष्पमेकङ्गृहीत्वादेवींव्विँसृज्य तत्पुष्पम् ऐशान्याम्पात्रान्तरेक्षि पेत् । तत्रपात्रेचण्डेश्वरींसमभ्यर्च्य' ओंचण्डेश्वरि महादेवि नि र्म्माल्यैश्चन्दनादिभिः । लेह्यचोष्यान्नपानादि निर्म्माल्यं स्रग्वि लेपनम् ॥ निर्म्माल्यभोजनन्तुभ्यन्ददामिश्रीशिवाज्ञया ' इद न्निर्म्माल्यं श्रीचण्डेश्वर्य्यैनम ' इतिपठन्निर्म्माल्यङ्क्षिपेत् ॥ ततः किञ्चिद्देवीनैवेद्यम् 'उच्छिष्टचाण्डाल्यैनम' इतिपठन्तस्यै दद्यात् ॥ ततोनैवेद्यं स्वयम्भुञ्जीत ॥

॥ अथ तारास्तोत्रम् ॥

मातर्न्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसम्पत्प्रदे प्रत्यालीढप दस्थितेशवहृदि स्मेराननाम्भोरुहे ॥ फुल्लेन्दीवरलोचने[१] त्रिनय नेकर्त्रीं कपालोत्पले खड्गञ्चादधती त्वमेव शरणन्त्वामीश्वरीमाश्र

१ लोचनत्रययुते इति वा पाठः ।

ये ॥१॥ वाचामीश्वरि भक्तकल्पलतिके सर्व्वार्त्थसिद्धीश्वरि गद्य प्राकृतपद्यजातरचनासर्व्वार्त्थसिद्धिप्रदे[2] ॥ नीलेन्दीवरलोचनत्रय युतेकारुण्यवारान्निधेसौभाग्यामृतवर्द्धनेनकृपयासिञ्चत्वमस्माद्दृशम् ॥ २ ॥ खर्व्वे गर्व्वसमूहपूरिततनौ सर्प्पादिवेषोज्ज्वले व्याघ्रत्वक्परिवीतसुन्दरकटिव्याधूतघण्टाङ्किते ॥ सद्यः कृत्तगलद्रजः परिमिलन्मुण्डद्वयीमूर्द्धजग्रन्थिश्रेणिनृमुण्डदामललितेभीमे भयन्नाशय ॥ ३ ॥ मायानङ्गविकाररूपललना विन्द्वर्द्धचन्द्राम्बिके हूँफट्कारमयित्वमेवशरणम्मन्त्रात्मिके माद्दृशः ॥ मूर्त्तिस्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलातिसूक्ष्मापरा वेदानान्नहिगोचरा कथमपि प्राज्ञैर्नुतामाश्रये ॥४॥ त्वत्पादाम्बुजसेवयासुकृतिनो गच्छन्तिसायुज्यतान्तस्याः श्रीपरमेश्वरत्रिनयनब्रह्मादिसाम्यात्मनः ॥ संसाराम्बुधिमज्जनेऽपटतनुर्देवेन्द्रमुख्यान्सुरान्मातस्त्वत्पदसेवने हि विमुखान् किम्मन्दधीस्सेवते ॥ ५ मातस्त्वत्पदपङ्कजद्वयरजोमुद्राङ्ककोटीरिणस्ते देवाजयसङ्गरे विजयिनो निःशङ्कमङ्के गताः ॥ देवोहम्भुवने न मे सम इतिस्पर्द्धाव्वँहन्तःपरास्तत्तुल्यान्नियतय्यँथाशुचिरवी नाशँव्व्रजन्तिस्वयम् ॥ ६ ॥ त्वन्नामस्मरणात्पलायनपरा द्रष्टुञ्चशक्ता न ते भूतप्रेतपिशाचराक्षसगणा यक्षाश्चनागाधिपाः । दैत्यादानवपुङ्गवाश्च खचरा व्याघ्रादिका जन्तवो डाकिन्यःकुपितान्तकश्चमनुजोमातःक्षणम्भूतले ॥ ७ ॥ लक्ष्मीः सिद्धिगणश्च पादुकमुखाःसिद्धास्तथावैरिणांस्तम्भश्चापिवराङ्गनेगजघटास्तम्भस्तथामोहनम् मातस्त्वत्पदसेवयाखलुनृणां सिध्यन्तितेतेगुणाःक्लान्तःकान्तमनोभवस्यभवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः ॥ ८ ॥ ताराष्टकमिद

१ सिद्धिप्रदे इति वा पाठः। २ सर्व्वार्त्यसिद्धिप्रदे इति वा पाठः। ३ वर्षणेन इति वा पाठः। ४ इङ्किते इति वा पाठः।

म्पुण्यम्भक्तिमान् यः पठेन्नरः ॥ प्रातर्म्मध्याह्नकाले च सायाह्ने नियतः शुचिः ॥ ९ ॥ लभतेकविताव्विँद्यां सर्व्वशास्त्रार्त्थविद्भवेत् ॥ लक्ष्मीमनश्वराम्प्राप्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ॥ १० ॥ कीर्त्तिङ्कान्तिञ्च नैरुज्यम्प्राप्यान्ते मोक्षमाप्नुयात् ॥ ११ ॥ इतिनीलतन्त्रेतारास्तोत्रंसमाप्तम् ॥

॥ अथ ताराकवचम् ॥

ईश्वर उवाच ॥ कोटितन्त्रेषु गोप्या हि विद्यातिभयमोचिनी ॥ दिव्यं हि कवचन्तस्याः शृणुष्व सर्व्वकामदम् ॥ १ ॥ ताराकवचस्याक्षोभ्यऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोभगवतीतारादेवता सर्व्वमन्त्रसिद्धयेविनियोगः ॥ ओंप्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी ॥ ह्रींकारः पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी ॥ २ ॥ स्त्रींकारः पातु वदने लज्जारूपा महेश्वरी ॥ हूँकारः पातु हृदये भवानी शक्तिरूपधृक् ॥ ३ ॥ फट्कारः पातु सर्व्वाङ्गे सर्व्वसिद्धिफलप्रदा ॥ खर्व्वा माम्पातु देवेशी भ्रूमध्ये सर्व्वसिद्धिदा ॥ ॥ ४ ॥ नीला माम्पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा ॥ लम्बोदरी सदा पातु कर्ण्णयुग्मम्भयापहा ॥ ५ ॥ व्याघ्रचर्म्मावृतकटिः पातुदेवी शिवप्रिया ॥ पीनोन्नतस्तनी पातुपार्श्वयुग्मे महेश्वरी ॥ ६ ॥ रक्तवर्त्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदावतु ॥ ललज्जिह्वा सदा पातुनाभौमाम्भुवनेश्वरी ॥ ७ ॥ करालास्या सदा पातु लिङ्गे देवी हरप्रिया ॥ पिङ्गोग्रैकजटा पातुजङ्घायाँव्विघ्ननाशिनी ॥ ८ ॥ खड्गहस्ता महादेवी जानुचक्रे महेश्वरी ॥ नीलवर्ण्णा सदा पातु जानुनी सर्व्वदा मम ॥ ९ ॥ नागकुण्डलधर्त्री चपातुपादयुगे ततः ॥ नागहारधरादेवीसर्व्वाङ्गम्पातु सर्व्वदा ॥ १० ॥ नागाङ्गदधरा देवी पातु पाण्डवदेशतः ॥ च

तुर्भुजा सदा पातुगमने शत्रुनाशिनी ॥ ११ ॥ खड्गहस्ता महादेवी पातु माँव्विजयप्रदा ॥ नीलाम्बरधरा देवी पातु माँ विघ्ननाशिनी ॥ १२ ॥ कर्त्तृहस्ता सदा पातु विवादे शत्रुमध्यतः ॥ ब्रह्मरूपधरा देवी सङ्ग्रामे पातु सर्व्वदा ॥ १३ ॥ नागकङ्कणधर्त्री च भोजने पातु सर्व्वदा॥शवकर्ण्णा महादेवी शयने पातु सर्व्वदा ॥ १४ ॥ वीरासनधरा देवी निद्रायां पातु सर्व्वदा ॥ १५ ॥ धनुर्व्वाणधरा देवी पातु माँव्विघ्नसङ्कुले ॥ नागाञ्चितकटिः पातु देवी मां सर्व्वकर्म्मसु ॥ १६ ॥ छिन्नमुण्डधरा देवी कानने सर्व्वदाऽवतु ॥ चितामध्यस्थिता देवी मारणे पातु सर्व्वदा ॥ १७ ॥ द्वीपिचर्म्मधरा देवी पुत्रदारधनादिषु ॥ अलङ्कारान्वितादेवीपातु मां हरवल्लभा ॥ १८ ॥ रक्षरक्ष नदीकुञ्जे हूँहूँहूँफट्समन्विते ॥ बीजरूपा महादेवी पर्व्वते पातु सर्व्वदा ॥ १९ ॥ मणिधरिवज्रिणीदेवी महाप्रतिसरे तथा ॥ रक्ष रक्ष सदा हूँहूँओंह्रींस्वाहा महेश्वरी ॥ २० ॥ पुष्पकेतुराजार्हते कानने पातु सर्व्वदा ॥ ॐवज्रपुष्पे हूँफट्चपाण्डवे पातु सर्व्वदा ॥ २१ ॥ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पातु पुत्रान्महेश्वरी ॥ ॐस्वाहाशक्तिसँय्युक्ता दारान्रक्षतु सर्व्वदा ॥ २२ ॥ ॐ पवित्रवज्रभूमे हूँफट्स्वाहासमन्विता ॥ पूरिका पातु मान्देवी सर्व्वविघ्नविनाशिनी ॥ २३ ॥ आसुरेखे वज्ररेखे हूँफट्स्वाहासमन्विता ॥ पातालेपातुमान्देवीनागिनी मानसञ्चिता ॥ २४ ॥ ह्रींकारी पातु पूर्व्वे मां शक्तिरूपा महेश्वरी ॥ स्त्रींकारी दक्षिणे पातु स्त्रीरूपा परमेश्वरी ॥ २५ ॥ हूँस्वरूपा महामाया पातु मां क्रोधरूपिणी ॥ क स्वरूपा महामायापश्चिमे पातु सर्व्वदा ॥ २६ ॥ उत्तरे पातु मान्देवी ढस्वरूपा हरप्रिया ॥ मध्ये माम्पातु देवेशी हूँस्वरूपा नगात्मजा ॥ २७ ॥ नीलवर्ण्णा

सदा पातु सर्व्वत्र वाग्भवी सदा ॥ तारिणी पातु भवने सर्व्वैश्व
र्य्यप्रदायिनी ॥ २८ ॥ विद्यादानरता देवी पातु वक्त्रेसरस्वती ॥
शास्त्रे वादे च सङ्ग्रामे जले च विषमेगिरौ ॥ २९ ॥ भीमरूपा
सदा पातु श्मशाने भयनाशिनी ॥ भूतप्रेतालयेघोरे दुर्ग्गे
माम्भीषणावतु ॥ ३० ॥ पातु नित्यम्महेशानी सर्व्वत्र शिवदू
तिका ॥ कवचस्य च माहात्म्य न्नाहँव्वर्षशतैरपि ॥ ३१ ॥ श
क्नोमि कथितुन्देवि भवेत्तस्य फलन्तु यत् ॥ पुत्रदारेषु बन्धूनां
सर्व्वदेशे च सर्व्वदा ॥ ३२ ॥ न विद्यते भयन्तस्य नृपपूज्यो
भवेच्च सः ॥ शुचिर्भ्भूत्वाऽशुचिर्व्वापि कवचं सर्व्वकामदम् ॥ ३३ ॥
प्रपठन्वास्मरन्मर्त्त्यो दुःखशोकविवर्ज्जितः ॥ सर्व्वशास्त्रे महे
शानि कविराड्भवति ध्रुवम् ॥ ३४ ॥ सर्व्ववागीश्वरो मर्त्त्यो
लोकवश्यो धनेश्वरः ॥ रणे द्यूते विवादे च जयस्तस्य भवेद्ध्रुव
म् ॥ ३५ ॥ पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्त्यो विलासी सर्व्वयोषिताम् ॥
शत्रवो दासतां यान्ति सर्व्वेषां वल्लभः सदा ॥ ३६ ॥ गर्व्वी
खर्व्वी भवत्येव वादी ज्वलति दर्शनात् ॥ मृत्युश्च वश्यतां
य्याति दासस्तस्यावनीश्वरः ॥ ३७ ॥ प्रसङ्गात्कथितं सर्व्वं
ङ्कवचं सर्व्वकामदम् ॥ प्रपठन्वास्मरन्मर्त्त्यः शापानुग्रहणे क्ष
मः ॥ ३८ ॥ आनन्दवृन्दसिन्धूनामधिपऽकविराड्भवेत् ॥ स
र्व्वयोगीश्वरो मर्त्त्यो लोकबन्धुस्सदासुखी ॥ ३९ ॥ गुरोऽप्रसा
दमासाद्य विद्याम्प्राप्य सुगोपिताम् ॥ तत्रापि कवचन्देवि दुर्ल्लभ
म्भुवनत्रये ॥ ४० ॥ गुरुर्द्देवो हरस्साक्षात् पत्नीतस्य हरप्रिया ॥
अभेदेन यजेद्यस्तु तस्यसिद्धिरदूरतः ॥ ४१ ॥ मन्त्राचारा
महेशानि कथिताऽपूर्व्वतऽप्रिये ॥ नाभौ ज्योतिस्तथावक्त्रे हृ
दये परिचिन्तयेत् ॥ ४२ ॥ ऐश्वर्य्यं सुकवित्वञ्च रुद्रश्च सि
द्धिदायकः ॥ तन्दृष्ट्वा साधकन्देवि लज्जायुक्ता भवन्ति ते ॥ ४३ ॥

स्वर्ग्गे मर्त्त्ये च पाताले ये देवास्सुरसत्तमाः ॥ प्रशंसन्ति सदा सर्व्वे तन्दृष्ट्वा साधकोत्तमम् ॥ ४४ ॥ विघ्नात्मानश्चये देवाः स्वर्ग्गे मर्त्त्ये रसातले ॥ प्रशंसन्ति सदा सर्व्वे तन्दृष्ट्वासाधकोत्तमम् ॥ ४५ ॥ इति ते कथितन्देवि मया सम्यक्प्रकीर्त्तितम्॥ भुक्तिमुक्तिकरंसाक्षात्कल्पवृक्षस्वरूपकम् ॥ ४६ ॥ आसाद्याद्य गुरुम्प्रसाद्य य इदन्तल्पद्रुमालम्बनम्मोहेनापि मदेन वा न हिजनो जाड्येन वा मुह्यति ॥ सिद्धोऽसौ भुवि सर्व्वदुःखविपदाम्पारम्प्रयात्यन्तके मित्रन्तस्य नृपश्च देवि विपदो नश्यन्ति तस्याशु च ॥ ४७ ॥ तद्गात्रम्प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि वै भुवि ॥ तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्व्वाणी वक्त्रे वसेद्ध्रुवम् ॥ ४८ ॥ इदङ्कवचमज्ञात्वा ताराँय्यो भजते नरः ॥ अल्पायुर्न्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः ॥ ४९ ॥ लिखित्वा धारयेद्यस्तु कण्ठे वा मस्तके भुजे ॥ तस्य सर्व्वार्त्थसिद्धिःस्याद्यद्यन्मनसि वर्त्तते ॥ ५० ॥ गोरोचनाकुङ्कुमेन रक्तचन्दनकेन वा ॥ यावकैर्व्वा महेशानि लिखेन्मन्त्राँव्विशेषतः ॥ ५१ ॥ अष्टम्याम्मङ्गलदिने चतुर्द्दश्यामथापि वा ॥ सन्ध्यायान्देवदेवेशि लिखेन्मन्त्रं समाहितः ॥ ५२ ॥ मघायां श्रवणायाव्वाँ रेवत्याञ्च विशेषतः ॥ सिंहराशौ गते चन्द्रे कर्क्कटस्थे दिवाकरे ॥ ५३ ॥ मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे ॥ लिखित्वा धारयेद्यस्तु साधको भक्तिभावतः ॥ अचिरात्तस्यसिद्धिः स्यान्नात्र कार्य्या विचारणा॥ ५४ ॥ वादीमूकति पोषकःस्तवयाति क्षोणीपति र्दासाति गर्व्वी खर्व्वति सर्व्ववित्त्व जडति वैश्वानरः शीतति ॥ आचाराद्भवसिद्धिरूपमपरं सिद्धो भवेद्दुर्ल्लभान्त्वाव्वँन्देभवभीतिभञ्जनकरीन्नीलाद्रिरीशप्रियाम् ॥ ५५ ॥ इति नीलतन्त्रे परमरहस्यवमुग्रताराकवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्रीताराहृदयम् ॥

श्रीशिव उवाच ॥ शृणु पार्व्वति भद्रन्ते लोकानां हितकारकम् ॥ कथ्यते सर्व्वदा गोप्यन्ताराहृदयमुत्तमम् ॥ ॥ श्रीपार्व्वत्युवाच ॥ स्तोत्रङ्कथं समुत्पन्नङ्कृतङ्केन पुरा प्रभो ॥ कथ्यतां सर्व्वसद्वृत्तङ्कृपाङ्कृत्वा ममोपरि ॥ २ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ रणे देवासुरे पूर्व्वङ्कृतमिन्द्रेण सुप्रिये ॥ दुष्टशत्रुविनाशार्त्थम्बलवृद्धियशस्करम् ॥ ३ ॥ ओमस्य श्रीमदुग्रताराहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीभैरव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीमदुग्रतारा देवता स्त्रींबीजं हूँशक्तिः नमः कीलकं सकलशत्रुविनाशार्थे पाठे विनियोगः ॥ ॐस्त्रींहृदयायनमः । ओंह्रींशिरसेस्वाहा । ओंहूंशिखायैवषट् । ॐत्रींकवचायहूम् । ॐऐंनेत्रत्रयायवौषट् । ॐहंसःअस्त्राय फट् ॥ अथ ध्यानम्' ध्यायेत्कोटिदिवाकरद्युतिनिभान्बालेन्दुयुक्छेखरां रक्ताङ्गीं रसनां सुरक्तवसनाम्पुर्णेन्दुविम्बाननाम् ॥ पाशङ्कर्त्तृमहाङ्कुशादि दधतीन्दोर्भिश्चतुर्भिर्य्युतन्नानाभूषणभूषिताम्भगवतीन्ताराञ्जगत्तारिणीम् ॥ एवन्ध्यात्वा शुभान्तारान्ततस्तुहृदय म्पठेत् ॥ तारिणीतत्त्वनिष्ठानां सर्व्वतत्त्वप्रकाशिका ॥ रामाभिन्ना पराशक्तिश्शत्रुनाशङ्करोतु मे ॥ सर्व्वदा शत्रुसंरम्भे तारा मे कुरुताञ्जयम् ॥ स्त्रींत्रींस्वरूपिणी देवी त्रिषु लोकेषु विश्रुता ॥ तव स्नेहान्मयाख्यातन्नपशूनम्प्रकाश्यताम् ॥ शृणु देवि तव स्नेहात्तारानामानि तत्त्वतः ॥ वर्ण्णयिष्यामि गुप्तानि दुर्ल्लभानि जगत्त्रये ॥ तारिणी तरला तारा त्रिरूपा तरणिप्रभा ॥ सत्त्वरूपा महासाध्वी सर्व्वसज्जनपालिका ॥ रमणीया रजोरूपा जगत्सृष्टिकरी परा ॥ तमोरूपा महामाया घोररावा भयानका ॥ कालरूपा कालिकाख्या जगद्विध्वंसकारिका ॥ तत्त्वज्ञानपरानन्दा तत्त्वज्ञानप्रदानघा ॥ रक्ताङ्गी

रक्तवस्त्रा च रक्तमालाप्रशोभिता ॥ सिद्धिलक्ष्मीश्चब्रह्माणी महा काली महालया ॥ नामान्येतानि येमर्त्त्या स्सर्व्वदैकाग्रमानसाः ॥ प्रपठन्ति प्रिये तेषाङ्किङ्करत्वङ्करोम्यहम् ॥ तारान्तारपरान्दे वीन्तारकेश्वरपूजिताम् ॥ तारिणीम्भवपाथोधेरुग्रताराम्भजाम्य हम् ॥ स्त्रींह्रींहूँत्रींफण्मन्त्रेणजलञ्जप्त्वाऽभिषेचयेत् ॥ सर्व्वेरोगाः प्रणश्यन्ति सत्यं सत्यव्वँदाम्यहम् ॥ त्रींस्वाहान्तैर्म्महामन्त्रैश्च न्दनं साधयेत्ततः ॥ तिलकङ्कुरुते प्राज्ञो लोको वश्यो भवेत्प्रि ये॥ स्त्रींह्रींत्रींस्वाहामन्त्रेण श्मशानम्भस्म मन्त्रयेत् ॥ शत्रोर्ग्गृ हे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोर्म्मृत्युर्भविष्यति ॥ ह्रींहूँस्त्रीम्फडन्तमन्त्रैः पुष्पंसंशोध्य सप्तधा ॥ उच्चाटनन्नयत्याशु रिपूणान्नैव संशयः ॥ स्त्रींत्रींह्रींमन्त्रवर्य्येण अक्षताश्चाभिमन्त्रिताः ॥ तत्प्रतिक्षेपमात्रे ण शीघ्रमायाति मानिनी ॥ (हंसःओंह्रींस्त्रींहूंहंसः) इतिमन्त्रे णजप्तेनशोधितङ्कज्जलम्प्रिये ॥ तस्यैव तिलकङ्कृत्वा जगन्मोहं समाचरेत्॥ताराया हृदयन्देवि सर्व्वपापप्रणाशनम् ॥ वाजपेया दियज्ञानाङ्कोटिकोटिगुणोत्तरम् ॥ गङ्गादिसर्व्वतीर्त्थानाम्फल ङ्कोटिगुणं स्मृतम् ॥ महादुःखे महारोगे सङ्कटे प्राणसंशये ॥ महा भये महाघोरे पठेत्स्तोत्रम्महोत्तमम्॥सत्यं सत्यम्मयोक्तन्तेपार्व्व ति प्राणवल्लभे॥गोपनीयम्प्रयत्नेन न प्रकाश्यमिदङ्क्वचित्॥इति श्रीभैरवीतन्त्रेशिवपार्व्वतीसव्वाँदेश्रीमदुग्रताराहृदयंसम्पूर्णम्॥

अथ तारोपनिषत् ॥

ओंतँत्सद्ब्रह्मतद्रूपम्प्रक्कातिपरङ्गगनाभन्तत्परम्परमम्महत्सत्य न्तदहंह्रींकारं रक्तवर्ण्णं त्रान्नाभि स्त्रींकारम्पिङ्गलाभंहूङ्काराव्विँश दाभम्मद्धृदयरूपम् भूमण्डलम्फट्कारन्धूम्रवर्ण्णम्मतखङ्ग मों ङ्कारज्वलद्रूपम्मन्मस्तकँ व्वेदा मद्धस्ता श्चन्द्रार्कानला मन्नेत्रा दि

वानक्तम्मत्पादौ सन्ध्या मत्कर्णौ सर्वत्सरो मदुदरो मद्दंष्ट्रापङ्क्तौ मत्पार्श्वौ वार्त्तवो मदङ्गुल्यो विद्या मन्नखाः पावकोमन्मुखम्मही मद्रसना द्यौर्म्मन्मुखङ्गगनम्मद्धृदयम् भक्तिर्म्ममचर्म्म रसम्मद्रुधिरँव्वान्नव्वाँसांसिफलानिनिरहङ्काराअस्थीनि सुधामन्मज्जास्थावराणिमद्रोमाणि पातालादिलोकौ मत्कुचौ ब्रह्मनादम्मन्नाढ्यं ज्ञानम्मन्मनः क्षमाबुद्धिः शून्यम्मदासनन्नक्षत्राणि मद्भूषणानि ॥ एतद्वैराटकम्मद्वपुः मज्जलं सत्वं बिन्दुस्वरूपम्महाकारस्वरूपज्ज्योतिर्म्मयँ व्विद्धि शिरः उग्रताराम्महोग्रान्नीलाञ्जनामेकजटाम्महामायाम्प्रकृतिम्माँ व्विदित्वा यो जपति मद्रूपाणि यो वेत्तिमन्मन्त्रँ य्यो जपतिमद्रूपकल्पितायँय्यो जपति भगम्भजति निर्व्विकल्पः साधकः सदा मद्रूपो भवति ॥ सर्व्वाणि कर्म्माणि साध्यानि निर्भयो भवति गुरुन्नत्वा स्तुत्वा वस्त्रभूषणानि दत्त्वा इमामुपनिषद्विद्याम्प्राप्य माँ य्यो जपति स जीवन्मुक्तो भवति॥इत्यथर्व्वणवेदे सौभाग्यकाण्डेतारोपनिषत्समाप्ता ॥

अथ ताराशतनामस्तोत्रम् ॥

श्रीशिवउवाच ॥ तारणीतरलातन्वी तारातरुणवल्लरी ॥ तीररूपातरीश्यामातनुक्षीणपयोधरा ॥ १ ॥ तुरीयातरलातीव्रगमनानीलवाहिनी ॥ उग्रताराजयाचण्डी श्रीमदेकजटाशिरा ॥ ॥ २ ॥ तरुणीशाम्भवीछिन्नभालाचभद्रतारिणी ॥ उग्राउग्रप्रभानीला कृष्णानीलसरस्वती ॥ ३ ॥ द्वितीयाशोभनानित्यानवीनानित्यनूतना ॥ चण्डिकाविजयाराध्यादेवीगगनवाहिनी ॥ ॥ ४ ॥ अट्टहास्याकरालास्या चरास्यादितिपूजिता ॥ सगुणासगुणाराध्याहरीन्द्रदेवपूजिता ॥५॥ रक्तप्रियाचरक्ताक्षीरुधिरास्यविभूषिता ॥ बलिप्रियाबलिरता दुर्द्धाबलवतीबला ॥ ६ ॥

बलप्रियाबलरता बलरामप्रपूजिता॥अर्द्धकेशेश्वरीकेशा केशवा सविभूषिता ॥ ७ ॥ पद्ममालाचपद्माक्षी कामाख्या गिरिनन्दिनी ॥ दक्षिणाचैवदक्षाच दक्षजादक्षिणेरता ॥ ८ ॥ वज्रपुष्पप्रियारक्तप्रियाकुसुमभूषिता ॥ माहेश्वरीमहादेवाप्रियापञ्चविभूषिता ॥ ९ ॥ इडाचपिङ्गलाचैवसुषुम्नाप्राणरूपिणी ॥ गान्धारोपञ्चमीपञ्चाननादिपरिपूजिता ॥ १० ॥ तथ्यविद्यातथ्यरूपातथ्यमार्ग्गानुसारिणी ॥ तत्त्वरूपातत्त्वप्रियातत्त्वज्ञानात्मिकानघा ॥ ११ ॥ ताण्डवाचारसन्तुष्टा ताण्डवप्रियकारिणी ॥ तालदानरताक्रूरतापिनीतरणिप्रभा ॥ १२ ॥ त्रपायुक्तात्रपामुक्ता तर्पितातृप्तिकारिणी ॥ तारुण्यभावसन्तुष्टाशक्तिभक्तानुरागिणी ॥ १३ ॥ शिवासक्ताशिवरतिः शिवभक्तिपरायणा ॥ ताम्रद्युतिस्ताम्ररागा ताम्रपात्रप्रभोजिनी ॥ १४ ॥ बलभद्रप्रेमरता बलिभुग्बलिकल्पिनी ॥ रामरूपारामशक्तो रामरूपानुकारिणी ॥ ॥ १५ ॥ इत्येतत्कथितन्देविरहस्यम्परमाद्भुतम् ॥ श्रुत्वामोक्षमवाप्नोतितारादेव्याःप्रसादतः ॥ १६ ॥ यइदम्पठतिस्तोत्रं तारास्तुतिरहस्यकम् ॥ सर्व्वसिद्धियुतोभूत्वा विहरेत् क्षितिमण्डले ॥ १७ ॥ तस्यैवमन्त्रसिद्धिःस्यान्ममसिद्धिरनुत्तमा ॥ भवत्येवमहामायेसत्यंसत्यन्नसंशयः ॥१८॥ मन्देमङ्गलवारेचयः पठेन्निशिसँय्यतः ॥ तस्यैवमन्त्रसिद्धिस्स्याद्गाणपत्यल्लँभेतसः ॥ १९ ॥ श्रद्धयाश्रद्धयावापि पठेत्ताररहस्यकम् ॥ सोऽचिरेणैवकालेनजीवन्मुक्तः शिवोभवेत् ॥ २० ॥ सहस्रावर्त्तनाद्देविपुरश्चर्य्याफलल्लँभेत् ॥ एवंसततयुक्ताये ध्यायन्तस्त्वामुपासते ॥ तेकृतार्थामहेशानिमृत्युसंसारवर्त्मनः ॥ २१ ॥ इतिस्वर्णमालातन्त्रे तारणीशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

अथ श्रीतारातकारादिसहस्रनाम ॥

वसिष्ठउवाच ॥ नाम्नांसहस्रन्तारायामुखाम्भोजाद्विनिर्ग्गतम् ॥ मन्त्रसिद्धिकरम्प्रोक्तन्तन्मेवदपितामह ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणुवत्सप्रवक्ष्यामिरहस्यंसर्व्वसिद्धिदम् ॥ यस्योपदेशमात्रेणतवसिद्धिर्भविष्यति ॥ २ ॥ महाप्रलयकालादौनष्टेस्थावरजङ्गमे ॥ महाकारंसमाकर्ण्ण्य कृपयासंहृतन्तनौ ॥ ३ ॥ नाम्नातेनमहातारा ख्यातासाब्रह्मरूपिणी ॥ महाशूलत्रयङ्कृत्वातत्रचैकाकिनीस्थिता ॥ ४ ॥ पुनःसृष्टेश्चिकीर्षाभूद्दिव्यसाम्राज्यसञ्ज्ञकम् ॥ नाम्नांसहस्रमस्यास्तुतकाराद्यम्मयास्मृतम् ॥ ५ ॥ तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डन्निर्म्मितंसुदृढम्महत् ॥ आविर्भूतावयन्तत्रयन्त्रैस्तस्याऽ पुराद्विज ॥ ६ ॥ स्वस्यकार्य्यार्त्थिनस्तत्रभ्रान्ताभूम्याव्यँथावयम् ॥ तयोपदिष्टाऽकृपया भवामस्सृष्टिकारकाः ॥ ७ ॥ तस्याःऽप्रसादाद्विप्रेन्द्रत्रयोब्रह्माण्डनायकाः ॥ अन्येसुरगणास्सर्व्वे तस्याःऽपादप्रसेवकाः ॥ ८ ॥ पठनाद्धारणात्सृष्टेऽकर्त्ताहम्पालको हरिः ॥ तत्त्वाक्षरोपदेशेनसंहर्त्ताशङ्करस्स्वयम् ॥ ९ ॥ ऋषिच्छन्दादिकध्यानम्मूलवत्परिकीर्त्तितम् ॥ नियोगेमात्रसिद्धौचपुरुषार्त्थचतुष्टये ॥ १० ॥ तारातारादिपञ्चार्ण्णातारान्यावेदवीर्य्यजा ॥ तारातारहितावर्ण्णा ताराद्यातारुरूपिणी ॥ ११ ॥ तारारात्रिसमुत्पान्ना तारारात्रिवरोद्यता ॥ तारारात्रिजपासक्ता तारारात्रिस्वरूपिणी ॥ १२ ॥ ताराराज्ञीस्वसन्तुष्टाताराराज्ञीवरप्रदा ॥ ताराराज्ञोस्वरूपाच ताराराज्ञीप्रसिद्धिदा ॥ १३ ॥ ताराहृत्पङ्कजागारा ताराहृत्पङ्कजापरा ॥ ताराहृत्पङ्कजाधारा ताराहृत्पङ्कजातथा ॥ १४ ॥ तारेश्वरीचताराभा तारागणस्वरूपिणी ॥ तारागणसमाकीर्णा तारागणनिषेविता ॥ १५ ॥ तारातारान्वितातारारत्नान्वितविभूषणा ॥ तारागणरणासन्नाता

राकृत्यप्रपूजिता ॥ १६ ॥ तारागणकृताहारा तारागणकृताश्र
या ॥ तारागणकृतागारातारागणनतत्परा ॥ १७ ॥ तारागु
णगणाकीर्ण्णातारागुणगणप्रदा ॥ तारागुणगणासक्ता तारागुण
गणालया ॥ १८ ॥ तारेश्वरीतारपूज्या ताराजप्यातुतारणा ॥
तारमुख्यातुताराख्या तारदक्षातुतारिणी ॥ १९ ॥ ताराग
म्यातुतारस्थातारामृततरङ्गिणी ॥ तारभव्यातुताराण्र्णा तारह
व्यातुतारिर्णी ॥ २० ॥ तारकातारकान्तस्स्था तारकाराशिभू
षणा ॥ तारकाहारशोभाढ्या तारकावेष्टिताङ्गणा ॥ २१ ॥ ता
रकाहंसकाकीर्ण्णातारकाकृतभूषणा ॥ तारकाङ्गदशोभाङ्गीतार
काश्रितकङ्कणा ॥ २२ ॥ तारकाञ्चितकाञ्चीच तारकान्वितभ
क्षणा ॥ तारकाचित्रवसना तारकासनमण्डला ॥ २३ ॥ तार
काकीर्ण्णमुकुटा तारकाश्रितकुण्डला ॥ तारकान्विततताटङ्कयुग्म
गण्डस्थलोज्ज्वला ॥ २४ ॥ तारकाश्रितपादाब्जातारकावरदा
यिका ॥ तारकादत्तहृदया तारकाञ्चितसायका ॥ २५ ॥ ता
रकान्यासकुशला तारकान्यासविग्रहा ॥ तारकान्याससन्तुष्टा
तारकान्याससिद्धिदा ॥ २६ ॥ तारकान्यासनिलया तारका
न्यासपूजिता ॥ तारकान्याससंहृष्टा तारकान्यासासिद्धिदा २७ ॥
तारकान्याससम्मग्ना तारकान्यासवासिनी ॥ तारकान्यास
सम्पूर्णमन्त्रसिद्धिविधायिनी ॥ २८ ॥ तारकोपासकप्राणा ता
रकोपासकप्रिया ॥ तारकोपासकासाध्या तारकोपासकष्टदा ॥
॥ २९ ॥ तारकोपासकासक्ता तारकोपासकार्त्थिनी ॥ तारको
पासकाराध्या तारकोपासकाश्रया ॥ ३० ॥ तारकासुरसन्तुष्टा
तारकासुरपूजिता ॥ तारकासुरनिर्म्माणकर्त्रीतारकवन्दिता ॥
॥ ३१ ॥ तारकासुरसम्मान्या तारकासुरमानदा ॥ तारकासु
रसंसिद्धा तारकासुरदेवता ॥ ३२ ॥ तारकासुरदेहस्था

तारकासुरस्वर्गदा ॥ तारकासुरसंसृष्टा तारकासुरगर्व्वदा ॥
॥ ३३ ॥ तारकासुरसंहन्त्रीतारकासुरमर्द्दिनी ॥ तारकासुरस
ङ्ग्रामनर्त्तकीतारकापहा ॥ ३४ ॥ तारकासुरसङ्ग्रामकारिणी
तारकारिभृत् ॥ तारकासुरसङ्ग्रामकबन्धवृन्दवन्दिता ॥
॥ ३५ ॥ तारकारिप्रसूतारिकारिमातातुकारिका ॥ तारकारी
मनोहारीवस्त्रभूषानुशासिका ॥ ३६ ॥ तारकारिविधात्रीच ता
रकारिनिषेविता ॥ तारकारिवचस्तुष्टा तारकारिसुशिक्षिता ॥
॥ ३७ ॥ तारकारिसुसन्तुष्टा तारकारिविभूषिता ॥ तारकारि
कृतोत्सङ्गी तारकारिप्रहर्षदा ॥ ३८ ॥ तमःसम्पूर्णसर्व्वाङ्गी त
मोलिप्तकलेवरा ॥ तमोव्याप्तस्थलासङ्गा तमःपटलसन्निभा ॥
॥ ३९ ॥ तमोहन्त्रीतमःकर्त्रीतमःसञ्चारकारिणी ॥ तमोगा
त्रीतमोदात्री तमःपात्रीतमोपहा ॥ ४० ॥ तमोराशिपूर्णशशि
स्तमोराशिविनाशिनी ॥ तमोराशिकृतध्वंसी तमोराशिभयङ्करी
॥ ४१ ॥ तमोगुणप्रसन्नास्या तमोगुणसुसिद्धिदा ॥ तमोगुणो
त्कमार्ग्गस्था तमोगुणविराजिता ॥ ४२ तमोगुणस्तुतिपरा
तमोगुणविवर्द्धिनी ॥ तमोगुणाश्रितपरा तमोगुणविनाशिनी ॥
॥ ४३ ॥ तमोगुणाक्षयकरी तमोगुणकलेवरा ॥ तमोगुणध्वं
सतुष्टा तमःपारेप्रतिष्ठिता ॥ ४४ ॥ तमोभवभवप्रीता तमो
भवभवप्रिया ॥ तमोभवभवश्रद्धा तमोभवभवाश्रया ॥ ४५ ॥
तमोभवभवप्राणा तमोभवभवार्च्चिता ॥ तमोभवभवप्रीत्याली
ढकुम्भस्थलस्थिता ॥ ४६ ॥ तपस्विवृन्दसन्तुष्टा तपस्विवृन्द
पुष्टिदा ॥ तपस्विवृन्दसंस्तुत्या तपस्विवृन्दवन्दिता ॥ ४७ ॥ त
पस्विवृन्दसम्पन्ना तपस्विवृन्दहर्षदा ॥ तपस्विवृन्दसम्पूज्या त
पस्विवृन्दभूषिता ॥ ४८ ॥ तपस्विचित्ततल्पस्था तपस्विचि
त्तमध्यगा ॥ तपस्विचित्तचित्तार्हा तपस्विचित्तहारिणी ॥ ४९ ॥

तपस्विकल्पवल्लीभातपस्विकल्पपादपी ॥ तपस्विकामधेनुश्च तपस्विकामपूर्त्तिदा ॥ ५० ॥ तपस्वित्राणनिरतातपस्विगृहसंस्थिता॥तपस्विगृहराजश्रीस्तपस्विराज्यदायिका ॥ ५१ ॥ तपस्विमानसाराध्यातपस्विमानदायिका ॥ तपस्वितापसंहर्त्री तपस्वितापशान्तिकृत् ॥५२॥ तपस्विसिद्धिविद्याच तपस्विमन्त्रसिद्धिकृत्॥तपस्विमन्त्रतन्त्रेशी तपस्विमन्त्ररूपिणी ॥५३॥ तपस्विमन्त्रनिपुणा तपस्विकर्म्मकारिणी ॥ तपस्विकर्म्मसम्भूता तपस्विकर्म्मसाक्षिणी ॥ ५४ ॥ तपस्सेव्यातपोभव्या तपोभाव्यातपस्विनी ॥ तपोवश्यातपोगम्या तपोगेहनिवासिनी ॥ ५५ ॥ तपोधन्यातपोमान्या तपऽकन्यातपोवृता ॥ तपस्तथ्या तपोगोप्यातपोजप्यातपोनृता ॥ ५६ ॥ तपस्साध्यातपोराध्या तपोवन्द्यातपोमयी ॥ तपस्सन्ध्यातपोवन्ध्या तपस्सान्निध्यकारिणी ॥५७॥ तपोध्येयातपोगेया तपस्तप्तातपोवला ॥ तपोलेयातपोदेया तपस्तत्त्वफलप्रदा ॥ ॥५८॥ तपोविघ्नवरघ्नीच तपोविघ्नविनाशिनी ॥ तपोविघ्नचयध्वंसी तपोविघ्नभयङ्करी ॥५९॥ तपोभूमिवरप्राणातपोभूमिपतिस्तुता ॥ तपोभूमिपतिध्येया तपोभूमिपतीष्टदा ॥ ६० ॥ तपोवनकुरङ्गस्था तपोवनविनाशिनी ॥ तपोवनगतिप्रीता तपोवनविहारिणी ॥ ६१ ॥ तपोवनफलासक्ता तपोवनफलप्रदा॥ तपोवनसुसाध्याच तपोवनसुसिद्धिदा ॥ ६२ ॥ तपोवनसुसेव्याचतपोवननिवासिनी ॥ तपोधनसुसंसेव्या तपोधनसुसाधिता ॥ ६३ ॥ तपोधनसुसँल्लीना तपोधनमनोमयी ॥ तपोधननमस्कारातपोधनविमुक्तिदा ॥ ६४ ॥ तपोधनधनासाध्यातपोधनधनात्मिका ॥ तपोधनधनाराध्यातपोधनफलप्रदा ॥ ६५ ॥ तपोधनधनाढ्याच तपोधनधनेश्वरी तपोधनधन

प्रीता तपोधनधनालया ॥ ६६ ॥ तपोधनजनाकीर्ण्णा तपोधन जनाश्रया ॥ तपोधनजनाराध्या तपोधनजनप्रसूः ॥ ६७ ॥ तपोधनजनप्राणा तपोधनजनेष्टदा ॥ तपोधनजनासाध्या तपोधनजनेश्वरी ॥ ६८ ॥ तरुणासृक्प्रपानार्त्तातरुणासृक्प्रतर्प्पिता ॥ तरुणासृक्समुद्रस्था तरुणासृक्प्रहर्षदा ॥ ६९ ॥ तरुणासृक्सुसन्तुष्टातरुणासृग्विलेपिता ॥ तरुणासृङ्नदीप्राणा तरुणासृग्विभूषणा ॥ ७० ॥ तरुणैणबलिप्रीता तरुणैणबलिप्रिया ॥ तरुणैणबलिप्राणा तरुणैणबलीष्टदा ॥ ७१ ॥ तरुणाजबलिप्रीता तरुणाजबलिप्रिया ॥ तरुणाजबलिप्राणा तरुणाजबलिप्रभुक् ॥ ७२ ॥ तरुणादित्यसङ्काशा तरुणादित्यविग्रहा ॥ तरुणादित्यरुचिरा तरुणादित्यनिर्म्मला ॥ ७३ ॥ तरुणादित्यनिलया तरुणादित्यमण्डला ॥ तरुणादित्यललिता तरुणादित्यकुण्डला ॥ ७४ ॥ तरुणार्क्कसमज्योत्स्ना तरुणार्क्कसमप्रभा॥तरुणार्क्कप्रतीकारा तरुणार्क्कप्रवर्द्धिता ॥७५॥ तरुणातरुणनेत्राच तरुणातरुणलोचना ॥ तरुणातरुणनेत्राच तरुणातरुणभूषणा ॥ ७६ ॥ तरुणीदत्तसङ्केता तरुणीदत्तभूषणा ॥ तरुणीगणसन्तुष्टा तरुणीतरुणीमणिः ॥ ७७ ॥ तरुणीमणिसंसेव्या तरुणीमणिवन्दिता ॥ तरुणीमणिसन्तुष्टातरुणीमणिपूजिता ॥ ७८ ॥ तरुणीवृन्दसर्व्वाँद्या तरुणीवृन्दवन्दिता ॥ तरुणीवृन्दसंस्तुत्या तरुणीवृन्दमानदा ॥ ७९ ॥ तरुणीवृन्दमध्यस्था तरुणीवृन्दवेष्टिता ॥ तरुणीवृन्दसम्प्रीता तरुणीवृन्दभूषिता ॥ ८० ॥ तरुणीजपसंसिद्धा तरुणीजपमोक्षदा ॥ तरुणीपूजकासक्ता तरुणीपूजकार्त्थिनी ॥ ८१ ॥ तरुणीपूजकश्रीदा तरुणीपूजकार्त्तिहा ॥ तरुणीपूजकप्राणा तरुणीनिन्दकार्त्तिदा ॥ ८२ ॥ तरुणीकोटिनिलया तरुणीकोटिविग्रहा ॥ तरु

णीकोटिमध्यस्था तरुणीकोटिवेष्टिता ॥ ८३ ॥ तरुणीकोटिदुस्साध्या तरुणीकोटिविग्रहा ॥ तरुणीकोटिरुचिरा तरुणीतरुणीश्वरी ॥ ८४ ॥ तरुणीमणिहाराढ्या तरुणीमणिकुण्डला ॥ तरुणीमणिसन्तुष्टा तरुणीमणिमण्डिता ॥ ८५ ॥ तरुणीसरणीप्रीता तरुणीसरणीरता ॥ तरणीसरणीस्थाना तरुणीसरणीरता ॥ ८६ ॥ तरणीमण्डलश्रीदा तरणीमण्डलेश्वरी ॥ तरणीमण्डलश्रद्धा तरणीमण्डलस्थिता ॥ ८७ ॥ तरणीमण्डलार्घ्याढ्या तरणीमण्डलार्च्चिता ॥ तरणीमण्डलध्येया तरणीभवसागरा ॥८८॥ तरणीकारणासक्ता तरणीतक्षकार्च्चिता ॥ तरणीतक्षकश्रीदा तरणीतक्षकार्त्थिनी ॥ ८९ ॥ तरणीतरणशीलाच तरीतरणतारिणी ॥ तरीतरणसँव्वेद्या तरीतरणकारिणी ॥ ९० ॥ तरुरूपा तरूपस्था तरुस्तरुलतामयी ॥ तरुरूपातरुस्थाच तरुमध्यनिवासिनी ॥९१॥ तप्तकाञ्चनगेहस्था तप्तकाञ्चनभूमिका ॥ तप्तकाञ्चनप्राकारा तप्तकाञ्चनपादुका॥९२॥तप्तकाञ्चनदीप्ताङ्गी तप्तकाञ्चनसन्निभा ॥ तप्तकाञ्चनगौराङ्गीतप्तकाञ्चनमञ्चगा ॥९३॥ तप्तकाञ्चनवस्त्राढ्या तप्तकाञ्चनरूपिणी ॥ तप्तकाञ्चनमध्यस्था तप्तकाञ्चनकारिणी॥९४॥तप्तकाञ्चनमासार्घ्या तप्तकाञ्चनपात्रभुक् ॥ तप्तकाञ्चनशैलस्था तप्तकाञ्चनकुण्डला ॥९५॥ तप्तकाञ्चनक्षत्राढ्या तप्तकाञ्चनदण्डधृक् ॥ तप्तकाञ्चनभूषाढ्या तप्तकाञ्चनदानदा ॥ ९६ ॥ तप्तकाञ्चनदेशेशी तप्तकाञ्चनचापधृक् ॥ तप्तकाञ्चनतूणाढ्या तप्तकाञ्चनबाणभृत् ॥ ९७ ॥ तलातलविधात्रीचतलातलविधायिनी ॥ तलातलस्वरूपेशी तलातलविहारिणी ॥ ९८ ॥ तलातलजनासाध्या तलातलजनेश्वरी ॥ तलातलजनाराध्या तलातलजनार्त्थदा ॥ ९९ ॥ तलातलजयाभाक्षी तलातलजचञ्चला ॥ तलातलजरत्नाढ्या तलातल

जदेवता ॥ १०० ॥ तटिनीस्थानरसिका तटिनीतटवासिनी ॥ तटिनीतटिनीतीरगामिनीतटिनीप्रिया ॥ १०१ ॥ तटिनीप्लुवनप्रीता तटिनीप्लुवनोद्यता ॥ तटिनीप्लुवनश्लाघ्या तटिनीप्लुवनार्त्थदा ॥ १०२॥ तटलास्थातटस्थाना तटेशी तटवासिनी ॥ तटपूज्यातटाराध्या तटरोमसुखार्त्थिनी ॥ १०३ ॥ तटजातटरूपाच तटस्थातटचञ्चला ॥ तटसान्निधिगेहस्थसाहिता तटशायिनी ॥ १०४ ॥ तरङ्गिणीतरङ्गाभा तरङ्गायतलोचना ॥ तरङ्गसमदुर्द्धर्षातरङ्गसमचञ्चला ॥१०५॥ तरङ्गसमदीर्घाङ्गी तरङ्गसमवर्द्धिता ॥ तरङ्गसमसर्व्वृद्धिस्तरङ्गसमनिर्म्मला ॥१०६॥ तडागमध्यनिलया तडागमध्यसम्भवा ॥ तडागरचनश्लाघ्या तडागरचनोद्यता ॥ १०७॥ तडागकुसुदामोदी तडागेशीतडागिनी ॥ तडागनीरसंस्नाता तडागनीरनिर्म्मला ॥ १०८॥ तडागकमलागारा तडागकमलालया॥ तडागकमलान्तस्स्था तडागकमलोद्यता ॥ १०९ ॥ तडागकमलाङ्गीच तडागकमलानना ॥ तडागकमलप्राणा तडागकमलेक्षणा ॥ ११० ॥ तडागरक्तपद्मस्था तडागश्वेतपद्मगा ॥ तडागनीलपद्माभा तडागनीलपद्मभृत्॥ १११॥तनुस्तनुगतातन्वी तन्वङ्गीतनुधारिणी॥ तनुरूपातनुगता तनुधृक्तनुरूपिणी॥ ११२॥ तनुस्थातनुमध्याङ्गीतनुकृत्तनुमङ्गला॥ तनुसेव्यातुतनुजा तनुजातनुसम्भवा॥११३॥ तनुभृत्तनुसम्भूता तनुदातनुकारिणी ॥ तनुभृत्तनुसंहन्त्री तनुसञ्चारकारिणी ॥ ११४॥ तथ्यवाक्तथ्यवचना तथ्यकृत्तथ्यवादिनी ॥ तथ्यभृत्तथ्यचरिता तथ्यधर्म्मानुवर्त्तिनी ॥११५॥ तथ्यभुक्तथ्यगमना तथ्यभक्तिवरप्रदा ॥ तथ्यनीचेश्वरीतथ्यचित्ताचाराशुसिद्धिदा ॥११६॥ तर्कचर्चातर्कचर्चस्वभावाच तर्कदायातुतर्ककृत् ॥ तर्काध्यापनमध्यस्था तर्काध्यापनकारिणी ॥ ११७॥

तर्क्काध्यापनसन्तुष्टा तर्क्काध्यापनरूपिणी ॥ तर्क्काध्यापनसंशीला तर्क्कार्त्थप्रतिपादिता ॥ ११८ ॥ तर्क्काध्यापनसन्तृप्ता तर्क्कार्त्थप्रतिपादिका ॥ तर्क्कवादाश्रितपदा तर्क्कवादविवर्द्धिनी॥११९॥ तर्क्कवादैकनिपुणा तर्क्कवादप्रचारिणी ॥ तमालदलश्यामाङ्गी तमालदलमालिनी ॥ १२० ॥ तमालवनसङ्केतातमालपुष्पपूजिता ॥ तगरीतगराराद्ध्या तगरार्च्चितपादुका ॥ १२१ ॥ तगरस्रक्सुसन्तुष्टा तगरस्रग्विराजिता ॥ तगराहुतिसन्तुष्टा तगराहुतिकीर्त्तिदा ॥ १२२ ॥ तगराहुतिसंसिद्धा तगराहुतिमानदा ॥ तडित्तडिल्लताकारातडिच्चञ्चललोचना ॥ १२३ ॥ तडिल्लतातडित्तन्वी तडिद्दीप्तातडित्प्रभा ॥ तद्रूपातत्स्वरूपेशी तन्मयीतत्त्वरूपिणी ॥ १२४ ॥ तत्स्थानदाननिरता तत्कर्म्मफलदायिनी ॥ तत्त्वकृत्तत्त्वदातत्त्वा तत्त्ववित्तत्त्वतर्प्पिता॥१२५॥ तत्त्वाच्चर्यातत्त्वपूजाच तत्त्वाग्र्यातत्त्वरूपिणी ॥ तत्त्वज्ञानप्रदानेशी तत्त्वज्ञानसुमोक्षदा ॥ १२६ ॥ त्वरितात्वरितप्रीता त्वरितार्त्तिविनाशिनी ॥ त्वरितासवसन्तुष्टात्वरितासवतर्प्पिता ॥ १२७ ॥ त्वग्वस्त्रात्वग्परीधाना तरलातरलेक्षणा ॥ तरक्षुचर्म्मवसना तरक्षुत्वग्विभूषणा ॥ १२८ ॥ तरक्षुस्तरक्षुप्राणा तरक्षुपृष्ठगामिनी॥तरक्षुपृष्ठसंस्थाना तरक्षुपृष्ठवासिनी ॥१२९॥ तर्प्पितोदैस्तर्प्पणाशा तर्प्पणासक्तमानसा ॥ तर्प्पणानन्दहृदया तर्प्पणाधिपतिस्तातिः ॥ १३० ॥ त्रयीमयीत्रयीसेव्या तयीपूज्यात्रयीकथा ॥ त्रयीभव्यात्रयीभाव्या त्रयीहव्यात्रयीयुता ॥ १३१ ॥ त्र्यक्षरीत्र्यक्षरेशानी त्र्यक्षरीशीघ्रसिद्धिदा ॥ त्र्यक्षरेशीत्र्यक्षरीस्था त्र्यक्षरीपुरुषापदा ॥ १३२ ॥ तपनातपनेष्टाच तपस्तपनकन्यका ॥ तपनांशुसमासह्या तपनकोटिकान्तिकृत् ॥ १३३ ॥ तपनीयातलपगता तलपतलपविधायि

नी ॥ तल्पकृत्तल्पगातल्पदात्रीतल्पतलाश्रया ॥ १३४ ॥ तपनीयतलाराात्री तपनीयांशुप्रार्त्थिनी ॥ तपनीयप्रदातप्ता तपनीयाद्रिसंस्थिता ॥ १३५ ॥ तल्पेशीतल्पदातल्पसंस्थितातल्पवल्लभा ॥ तल्पप्रियातल्परता तल्पनिर्म्माणकारिणी॥१३६॥ तरसापूजनासक्तातरसावरदायिनी ॥ तरसासिद्धिसन्धात्रीतरसामोक्षदायिनी ॥ १३७ ॥ तापसीतापसाराध्या तापसार्त्तिविनाशिनी ॥ तापसार्त्तातापसश्रीस्तापसप्रियवादिनी ॥ ॥ १३८ ॥ तापसानन्दहृदया तापसानन्ददायिनी ॥ तापसाश्रितपादाब्जा तापसासक्तमानसा ॥ १३९ ॥ तामसीतामसीपूज्या तामसीप्रयणोत्सुका ॥ तामसीतामससीता तामसीशीघ्रसिद्धिदा ॥ १४० ॥ तालेशीतालभुक्तालदात्रीतालोपमस्तनी ॥ तालवृक्षस्थितातालवृक्षजातालरूपिणी ॥ १४१ ॥ तार्क्षीतार्क्षसमारुढा तार्क्षेशीतार्क्षपूजिता ॥ तार्क्षेश्वरीतार्क्षमाता तार्क्षेशीवरदायिनी ॥ १४२ ॥ तापीतुतपिनीतापसंहन्त्रीतापनाशिनी ॥ तापदात्रीतापकर्त्री तापविध्वंसकारिणी ॥१४३॥ त्रासकर्त्रीत्रासदात्री त्रासहर्त्रीचत्रासहा ॥ त्रासितात्रासरहिता त्रासनिर्म्मूलकारिणी ॥ १४४ ॥ त्राणकृत्त्राणसंशीला तानेशी तानदायिनी॥तानगानरतातानकारिणीतानगायिनी ॥ १४५ ॥ तारुण्यामृतसम्पूर्णा तारुण्यामृतवारिधिः ॥ तारुण्यामृतसन्तुष्टा तारुण्यामृततर्पिता ॥ १४६ ॥ तारुण्यामृतपूर्णाङ्गी तारुण्यामृतविग्रहा ॥ तारुण्यगुणसम्पन्नातारुण्योक्तिविशारदा ॥ १४७ ॥ ताम्बूलीताम्बुलेशानी ताम्बूलचर्व्वणोद्यता ॥ ताम्बूलपूरितास्याच ताम्बूलारुणिताधरा ॥ १४८ ॥ ताटङ्करत्नावल्यातिस्ताटङ्करत्नभूषिणी ॥ ताटङ्करत्नमध्यस्था ताटङ्कद्वयभूषिता ॥ १४९ ॥ तिथीशातिथिसम्पू

ज्या तिथिस्थातिथिरूपिणी ॥ त्रितिथिवासिनीसेव्या तिथीशवरदायिनी ॥ १५० ॥ तिलोत्तमादिकाराध्यातिलोत्तमादिकप्रभा ॥ तिलोत्तमातिलप्रक्षा निलाराध्यातिलार्च्चिता ॥ ॥ १५१ ॥ तिलभूकृतिलसन्दात्री तिलतुष्टातिलालया ॥ तिलदातिलसङ्काशा तिलतैलविधायिनी ॥ १५२ ॥ तिलतैलोपलिप्ताङ्गी तिलतैलसुगन्धिनी ॥ तिलाज्यहोमसन्तुष्टा तिलाज्यहोमसिद्धिदा ॥ १५३ ॥ तिलपुष्पाञ्जलिप्रीता तिलपुष्पाञ्जलिप्रिया ॥ तिलपुष्पाञ्जलिश्रेष्ठा तिलपुष्पाभनाशिनी ॥ १५४ ॥ तिलकाश्रितसिन्दूरा तिलकाङ्कितचन्दना ॥ तिलकाहृतकस्तूरी तिलकामोदमोहिनी ॥ १५५ ॥ त्रिगुणात्रिगुणाकारा त्रिगुणान्वितविग्रहा ॥ त्रिगुणाकारविख्याता त्रिमूर्त्तिस्त्रिगुणात्मिका ॥ १५६ ॥ त्रिशिरा त्रिपुरेशानी त्रिपुरात्रिपुरेश्वरी ॥ त्रिपुरेशीत्रिलोकस्था त्रिपुरीत्रिपुराम्बिका ॥ १५७ ॥ त्रिपुरारिसमाराध्यात्रिपुरारिवरप्रदा ॥ त्रिपुरारिशिरोभूषा त्रिपुरारिवरप्रदा ॥ १५८ ॥ त्रिपुरारीष्टसन्दात्री त्रिपुरारीष्टदेवता ॥ त्रिपुरारिकृतार्द्धाङ्गी त्रिपुरारिविलासिनी ॥ १५९ ॥ त्रिपुरासुरसंहन्त्री त्रिपुरासुरमर्द्दिनी ॥ त्रिपुरासुरसंसेव्या त्रिपुरासुरवर्य्यया॥१६०॥ त्रिकुटात्रिकुटाराध्या त्रिकूटार्च्चितविग्रहा ॥ त्रिकूटाचलमध्यस्था त्रिकूटाचलवासिनी ॥ १६१ ॥ त्रिकूटाचलसञ्जाता त्रिकूटाचलनिर्ग्गता ॥ त्रिजटात्रिजटेशानी त्रिजटावरदायिनी ॥ ॥ १६२ ॥ त्रिनेत्रेशीत्रिनेत्राच त्रिनेत्रवरवर्ण्णिनी ॥ त्रिवलीत्रिवलीयुक्तात्रिशूलवरधारिणी ॥ १६३ ॥ त्रिशूलेशीत्रिशूलीशी त्रिशूलभृत्रिशूलिनी ॥ त्रिमनुस्त्रिमनूपास्यात्रिमनूपासकेश्वरी ॥ ॥ १६४ ॥ त्रिमनुजपसन्तुष्टा त्रिमनुस्तूर्ण्णसिद्धिदा ॥ त्रिमनुपूजनप्रीता त्रिमनुध्यानमोक्षदा ॥ १६५ ॥ त्रिविधात्रिविधाभ

त्रिस्त्रिमतात्रिमतेश्वरी ॥ त्रिभावस्थात्रिभावेशी त्रिभावपरिपूरिता ॥१६६॥ त्रितत्त्वात्मात्रितत्त्वेशी त्रितत्त्वज्ञात्रितत्त्वधृक् ॥ त्रितत्त्वाचमनप्रीता त्रितत्त्वाचमनेष्टदा ॥ १६७ ॥ त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणचक्रवासिनी ॥ त्रिकोणचक्रमध्यस्था त्रिकोणबिन्दुरूपिणी ॥ १६८ ॥ त्रिकोणयन्त्रसंस्थाना त्रिकोणयन्त्ररूपिणी ॥ त्रिकोणयन्त्रसम्पूज्या त्रिकोणयन्त्रसिद्धिदा ॥१६९॥ त्रिवर्णाढ्यात्रिवर्णेशी त्रिवर्णोपासिरूपिणी ॥ त्रिवर्णस्थात्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णवरदायिनी ॥ १७० ॥ त्रिवर्णाद्यात्रिवर्णार्च्या त्रिवर्गफलदायिनी ॥ त्रिवर्गाढ्यात्रिवर्गेशीत्रिवर्गाद्यफलप्रदा ॥ १७१ ॥ त्रिसन्ध्यार्च्यात्रिसन्ध्येशी त्रिसन्ध्याराधनेष्टदा ॥ त्रिसन्ध्यार्च्चनसन्तुष्टा त्रिसन्ध्याजपमोक्षदा ॥ १७२ ॥ त्रिपदाराधितपदा त्रिपदात्रिपदेश्वरी ॥ त्रिपदाप्रतिपाद्येशी त्रिपदाप्रतिपादिका ॥ १७३ ॥ त्रिशक्तिश्चत्रिशक्तेशीत्रिशक्तेष्टफलप्रदा ॥ त्रिशक्तेष्टात्रिशक्तीष्टा त्रिशक्तिपरिवेष्टिता ॥ १७४ ॥ त्रिवेणीचात्रिवेणीस्त्री त्रिवेणीमाधवार्च्चिता ॥ त्रिवेणीजलसन्तुष्टा त्रिवेणीस्नानपुण्यदा ॥ १७५ ॥ त्रिवेणीजलसंस्नाता त्रिवेणीजलरूपिणी ॥ त्रिवेणीजलपूताङ्गी त्रिवेणीजलपूजिता ॥ ॥ १७६ ॥ त्रिनाडीस्थात्रिनाडीशी त्रिनाडीमध्यगामिनी ॥ त्रिनाडीसन्ध्यसम्छेया त्रिनाडीचत्रिकोटिनी ॥ १७७ ॥ त्रिपञ्चाशत्त्रिरेखाच त्रिशक्तिपथगामिनी ॥ त्रिपथस्थात्रिलोकेशी त्रिकोटिकुलमोक्षदा ॥ १७८ ॥ त्रिरामेशीत्रिरामार्च्या त्रिरामवरदायिनी ॥ त्रिदशाश्रितपादाब्जा त्रिदशालयचञ्चला ॥ ॥ १७९ ॥ त्रिदशात्रिदशप्रार्त्थ्यात्रिदशाशुवरप्रदा ॥ त्रिदशैश्वर्य्यसम्पन्ना त्रिदशेश्वरसेविता ॥ १८० ॥ त्रियामाच्चर्या त्रियमेशी त्रियामानन्तसिद्धिदा ॥ त्रियामेशाधिकज्योत्स्ना

त्रियामेशाधिकानना ॥ १८१ ॥ त्रियामान्नाथवत्सौम्या त्रिया मानाथभूषणा ॥ त्रियामानाथलावण्यारत्नकोटियुतानना ॥ ॥ १८२ ॥ त्रिकालस्थात्रिकालज्ञा त्रिकालज्ञत्वकारिणी ॥ त्रिकालेशी त्रिकालाड्यां त्रिकालज्ञत्वदायिनी ॥ १८३ ॥ तीरभुक्तीरगातीरसरितातीरवासिनी ॥ तीरभुग्देशसञ्जातातीरभुग्देशसंस्थिता ॥ १८४ ॥ तिग्मातिग्मांशुसङ्काशा तिग्मांशुक्रोडसंस्थिता ॥ तिग्मांशुकोटिदीप्ताङ्गीतिग्मांशुकोटिविग्रहा ॥ ॥ १८५ ॥ तीक्ष्णातीक्ष्णतरातीक्ष्णमहिषासुरमर्द्दिनी ॥ तीक्ष्णकर्त्रीलसत्पाणिस्तीक्ष्णासिवरधारिणी ॥ १८६ ॥ तीव्रातीव्रगतिस्तीव्रासुरसङ्घविनाशिनी ॥ तीव्राष्टनागाभरणातीव्रमुण्डाविभूषणा ॥१८७॥ तीर्त्थात्मिकातीर्त्थमयी तीर्त्थेशीतीर्त्थपूजिता ॥तीर्त्थराजेश्वरीतीर्त्थफलदातीर्त्थदानदा ॥१८८॥ तुमुलीतुमुलप्राज्ञीतुमुलासुरघातिनी॥ तुमुलक्षतजप्रीतातुमुलाङ्गणनर्त्तकी ॥१८९॥ तुरगीतुरगारूढा तुरङ्गपृष्ठगामिनी ॥ तुरङ्गगमनाह्लादातुरङ्गवेगगामिनी ॥१९०॥ तुरीयातुलनातुल्यातुल्यवृत्तिस्तुतुल्यकृत्॥तुलेनेशीतुलाराशिस्तुलाराशीत्वसूक्ष्मवित् ॥१९१॥ तुम्बिकातुम्बिकापात्रभोजनातुम्बिकार्त्थिनी ॥ तुलसीतुलसीवर्य्यातुलजातुलजेश्वरी ॥ १९२ ॥ तुषाग्निव्रतसन्तुष्टातुषाग्निस्तुषराशिकृत् ॥ तुषारकरसीताङ्गी तुषारकरपूर्त्तिकृत् ॥ १९३ ॥ तुषाराद्रिस्तुषाराद्रिसुतातुहिनदीधितिः ॥ तुहिनाचलकन्या च तुहिनाचलवासिनी ॥ १९४ ॥ तूर्य्यवर्गेश्वरीतूर्य्यवर्गदा तूर्य्यवेददा ॥ तूर्य्यवर्य्यात्मिकातूर्य्यतूर्य्येश्वरस्वरूपिणी ॥ ॥ १९५ ॥ तुष्टिदातुष्टिकृत्तुष्टिस्तूणीरद्वयपृष्ठधृक् ॥ तुम्बुराज्ञानसन्तुष्टा तुष्टसंसिद्धिदायिनी ॥ १९६ ॥ तूर्णराज्यप्रदातूर्णगद्गदातूर्णपद्यदा ॥ तूर्णपाण्डित्यसन्दात्री तूर्णापूर्णबलप्रदा

त्रिस्त्रिमतात्रिमतेश्वरी ॥ त्रिभावस्थात्रिभावेशी त्रिभावपरिपूरिता ॥१६६॥ त्रितत्त्वात्मात्रितत्त्वेशी त्रितत्त्वज्ञात्रितत्त्वधृक् ॥ त्रितत्त्वाचमनप्रीता त्रितत्त्वाचमनेष्टदा ॥ १६७ ॥ त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणचक्रवासिनी ॥ त्रिकोणचक्रमध्यस्था त्रिकोणबिन्दुरूपिणी ॥ १६८ ॥ त्रिकोणयन्त्रसंस्थाना त्रिकोणयन्त्ररूपिणी ॥ त्रिकोणयन्त्रसम्पूज्या त्रिकोणयन्त्रसिद्धिदा ॥१६९ ॥ त्रिवर्णाढ्यात्रिवर्णेशी त्रिवर्णोपासिरूपिणी ॥ त्रिवर्णस्थात्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णवरदायिनी ॥ १७० ॥ त्रिवर्णाद्यात्रिवर्णार्च्या त्रिवर्गफलदायिनी ॥ त्रिवर्गाढ्यात्रिवर्गेशीत्रिवर्गाद्यफलप्रदा ॥ १७१ ॥ त्रिसन्ध्यार्च्यात्रिसन्ध्येशी त्रिसन्ध्याराधनेष्टदा ॥ त्रिसन्ध्यार्च्चनसन्तुष्टा त्रिसन्ध्याजपमोक्षदा ॥ १७२ ॥ त्रिपदाराधितपदा त्रिपदात्रिपदेश्वरी ॥ त्रिपदाप्रतिपाद्येशी त्रिपदाप्रतिपादिका ॥ १७३ ॥ त्रिशक्तिश्चत्रिशक्तेशीत्रिशक्तेष्टफलप्रदा ॥ त्रिशक्तेष्टात्रिशक्तीष्टा त्रिशक्तिपरिवेष्टिता ॥ १७४ ॥ त्रिवेणीचात्रिवेणीस्त्री त्रिवेणीमाधवार्च्चिता ॥ त्रिवेणीजलसन्तुष्टा त्रिवेणीस्नानपुण्यदा ॥ १७५ ॥ त्रिवेणीजलसंस्नाता त्रिवेणीजलरूपिणी ॥ त्रिवेणीजलपूताङ्गी त्रिवेणीजलपूजिता ॥ ॥ १७६ ॥ त्रिनाडीस्थात्रिनाडीशी त्रिनाडीमध्यगामिनी ॥ त्रिनाडीसन्ध्यसञ्छेया त्रिनाडीचत्रिकोटिनी ॥ १७७ ॥ त्रिपञ्चाशत्त्रिरेखाच त्रिशक्तिपथगामिनी ॥ त्रिपथस्थात्रिलोकेशी त्रिकोटिकुलमोक्षदा ॥ १७८ ॥ त्रिरामेशीत्रिरामार्च्या त्रिरामवरदायिनी ॥ त्रिदशाश्रितपादाब्जा त्रिदशालयचञ्चला ॥ ॥ १७९ ॥ त्रिदशात्रिदशप्रार्त्थ्यात्रिदशाशुवरप्रदा ॥ त्रिदशैश्वर्य्यसम्पन्ना त्रिदशेश्वरसेविता ॥ १८० ॥ त्रियामार्च्या त्रियामेशी त्रियामानन्तसिद्धिदा ॥ त्रियामेशाधिकज्योत्स्ना

त्रियामेशाधिकानना ॥ १८१ ॥ त्रियामान्नाथवत्सौम्या त्रियामानाथभूषणा ॥ त्रियामानाथलावण्यारत्नकोटियुतानना ॥ ॥ १८२ ॥ त्रिकालस्थात्रिकालज्ञा त्रिकालज्ञत्वकारिणी ॥ त्रिकालेशी त्रिकालाद्यर्या त्रिकालज्ञत्वदायिनी ॥ १८३ ॥ तीरभुक्तीरगातीरसरितातीरवासिनी ॥ तीरभुग्देशसञ्जातातीरभुग्देशसंस्थिता ॥ १८४ ॥ तिग्मातिग्मांशुसङ्काशा तिग्मांशुक्रोडसंस्थिता ॥ तिग्मांशुकोटिदीप्ताङ्गीतिग्मांशुकोटिविग्रहा ॥ ॥ १८५ ॥ तीक्ष्णातीक्ष्णतरातीक्ष्णमहिषासुरमर्द्दिनी ॥ तीक्ष्णकर्त्रीलसत्पाणिस्तीक्ष्णासिवरधारिणी ॥ १८६ ॥ तीव्रातीव्रगतिस्तीव्रासुरसङ्घविनाशिनी ॥ तीव्राष्टनागाभरणातीव्रमुण्डविभूषणा ॥१८७॥ तीर्त्थात्मिकातीर्त्थमयी तीर्त्थेशीतीर्त्थपूजिता ॥तीर्त्थराजेश्वरीतीर्त्थफलदातीर्त्थदानदा ॥१८८॥ तुमुलीतुमुलप्राज्ञीतुमुलासुरघातिनी॥ तुमुलक्षतजप्रीतातुमुलाङ्गणनर्त्तकी ॥१८९॥ तुरगीतुरगारूढा तुरङ्गपृष्ठगामिनी ॥ तुरङ्गगमनाह्लादातुरङ्गवेगगामिनी ॥१९०॥ तुरीयातुलनातुल्यातुल्यवृत्तिस्तुतुल्यकृत्॥तुलनेशीतुलाराशिस्तुलाराशीत्वसूक्ष्मवित् ॥१९१॥ तुम्बिकातुम्बिकापात्रभोजनातुम्बिकार्त्थिनी ॥ तुलसीतुलसीवर्य्यातुलजातुलजेश्वरी ॥ १९२ ॥ तुषाग्निव्रतसन्तुष्टातुषाग्निस्तुषराशिकृत् ॥ तुषारकरसीताङ्गी तुषारकरपूर्त्तिकृत् ॥ १९३ ॥ तुषाराद्रिस्तुषाराद्रिसुतातुहिनदीधितिः ॥ तुहिनाचलकन्या च तुहिनाचलवासिनी ॥ १९४ ॥ तूर्य्यवर्गेश्वरीतूर्य्यवर्गदातूर्य्यवेददा ॥ तूर्य्यवर्य्यात्मिकातूर्य्यतूर्य्येश्वरस्वरूपिणी ॥ ॥ १९५ ॥ तुष्टिदातुष्टिकृत्तुष्टिस्तूणीरद्वयपृष्ठधृक् ॥ तुम्बुराज्ञानसन्तुष्टा तुष्टसंसिद्धिदायिनी ॥ १९६ ॥ तूर्णराज्यप्रदातूर्णगद्गदातूर्णपद्यदा ॥ तूर्णपाण्डित्यसन्दात्री तूर्णापूर्णबलप्रदा

॥ १९७ ॥ तृतीयाचतृतीयेशी तृतीयातिथिपूजिता ॥ तृतीया चन्द्रचूडेशी तृतीयाचन्द्रभूषणा ॥ १९८ ॥ तृप्तिस्तृप्तिकरीतृप्ता तृष्णतृष्णाविवर्द्धिनी ॥ तृष्णापूर्णकरीतृष्णानाशिनीतृषितातृषा ॥ १९९ ॥ त्रेतासंसाधितात्रेता त्रेतायुगफलप्रदा ॥ त्रैलोक्यपूजात्रैलोक्यदात्रीत्रैलोक्यसिद्धिदा ॥ २०० ॥ त्रैलोक्येश्वरतादात्रीत्रैलोक्यपरमेश्वरी ॥ त्रैलोक्यमोहनेशानीत्रैलोक्यराज्यदायिनी ॥ २०१ ॥ तैत्रिशाखेश्वरीतैत्रीशाखातैत्राविवेकदा ॥ तोरणान्वितगेहस्था तोरणासक्तमानसा ॥ २०२ ॥ तोलकास्वर्णसन्दात्री तौलकास्वर्णकङ्कणा॥तोमरायुधरूपाच तोमरायुधधारिणी ॥ २०३ ॥ तौर्य्यत्रिकेश्वरीतौर्य्यन्त्रिकीतौर्य्यन्त्रिकोत्सुकी ॥ तन्त्रकृत्तन्त्रवत्सूक्ष्मा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी ॥ २०४ ॥ तन्त्रकृत्तन्त्रसम्पूज्या तन्त्रेशीतन्त्रसम्मता तन्त्रज्ञातन्त्रवित्तन्त्रसाध्यातन्त्रस्वरूपिणी ॥ २०५ ॥ तन्त्रस्थातन्त्रजातन्त्रीतन्त्रभृत्तन्त्रमन्त्रदा ॥ तन्त्राद्यातन्त्रगातन्त्रातन्त्राच्चर्या तन्त्रासिद्धिदा॥ २०६ ॥इतितेकथितन्दिव्यङ्क्रतुकोटिफलप्रदम् ॥ नाम्नांसहस्त्रन्तारायास्तकाराद्यंसुगोपितम् ॥२०७॥ दानँय्यज्ञस्तपस्तीर्थव्व्रँतञ्चानशनादिकम् ॥ एकैकनामजम्पुण्यंसन्ध्यातुगदितम्मया ॥ २०८ ॥ गुरौदेवेतथामन्त्रे यस्यस्यान्निश्चलामतिः ॥ तस्यैवस्तोत्रपाठेस्मिन्सम्भवेदाधिकारिता ॥ २०९ ॥ महाचीनक्रमाभिन्नषोढान्यस्तकलेवरः ॥ क्रमदीक्षान्वितोमन्त्री पठेदेतन्नचान्यथा ॥ २१० ॥ गन्धपुष्पादिभिर्द्रव्यैर्म्मकारैः पञ्चकैर्द्विजः ॥ सम्पूज्यताराव्विँधिवत्पठेदेतदनन्यधीः ॥ ॥ २११ ॥ अष्टम्याञ्चचतुर्द्दश्यांसङ्क्रान्तौरविवासरे ॥ शनिभौमदिने रात्रौ ग्रहणेचन्द्रसूर्य्ययोः ॥ २१२ ॥ तारारात्रौकालरात्रौ मोहरात्रौविशेषतः ॥ पठनान्मन्त्रसिद्धिःस्यात्सर्व्वज्ञत्वम्प्र

जायते ॥ २१३॥ श्मशानेप्रान्तरेरम्येशून्यागारेविशेषतः॥ देवा गारेगिरौवापि स्तवपारायणञ्चरेत् ॥ २१४ ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंस्त्रीगमनादिकम् ॥ गुरुतल्पेतथाचान्यत्पातकन्नश्यतिध्रुवम् ॥ २१५ ॥ लतामध्यगतोमन्त्री श्रद्धयाचार्च्चयेद्यदि ॥ आकर्षयेत्तदारम्भाम्मेनामपितथोर्व्वशीम् ॥२१६॥ संग्राम समयेवीरस्तारासाम्राज्यकीर्त्तनात् ॥ चतुरङ्गचयञ्जित्वासर्व्वसाम्राज्यभाग्भवेत् ॥ २१७ ॥ निशार्द्धेपूजनान्तेच प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत् ॥ एकैककरवीराद्यैम्र्मन्दारैर्न्नीलवारिजैः ॥ २१८ ॥ गद्यपद्यमयीवाणीभूभोज्याचप्रवर्त्तते ॥ पाण्डित्यंसर्व्वशास्त्रेषु वादीत्रस्यतिदर्शनात् ॥ २१९ ॥ वह्निजायान्तकैरेतैस्ताराद्यैःप्रतिनामभिः ॥ राजन्यंसर्व्वराजेषु परकायप्रवेशनम् ॥ ॥ २२० ॥ अन्तर्द्धानङ्खेचरत्वम्बहुकायप्रकाशनम् ॥ गुटिकापादुकापद्मावतीमधुमतीतथा ॥ २२१ ॥ रसंरसायनाः सर्व्वाः सिद्धयःसमुपस्थिताः ॥ कर्पूरागरुकस्तुरीचन्दनैःसंयुतैर्ज्जलैः ॥ २२२ ॥ मूलंसम्पुटितेनैव प्रतिनाम्नाप्रपूजयेत् ॥ यक्षराक्षस गन्धर्व्वा विद्याधरमहोरगाः ॥ २२३ ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या डाकिनीशाकिनीगणाः ॥ दुष्टाभैरववेताला कुष्माण्डा किन्नरीगणाः ॥ २२४ ॥ भयभीताः पलायन्तेतेजसासाधकस्यच ॥ मन्त्रज्ञानेसमुत्पन्ने प्रतिनाम्नाविचारयेत् ॥ २२५ ॥ मन्त्रसम्पुटितेनैव तस्यशान्तिर्भ्भवेद्ध्रुवम्॥ललितावश मायातिदास्यतायाँन्तिपार्त्थिवाः॥ २२६ ॥ अग्नयःशीततांय्यान्ति जापकस्य चभाषणात् ॥ एकावर्त्तनमात्रेणराजभीतिनिवारणम् ॥ २२७ ॥ वेलावर्त्तनमात्रेण पशुवृद्धिः प्रजायते ॥ दशावृत्त्याधनप्राप्तिर्व्विंशत्याराज्यमाप्नुयात् ॥ २२८॥ शतावृत्त्यागृहेतस्य चञ्चलानिश्चलाभवेत् ॥ गङ्गाप्रवाहवद्वाणी प्रलापादपिजायते ॥ २२९ ॥ पुत्रपौत्रान्वितोमन्त्री चिरञ्जीवीतुदेववत् ॥ शतद्वयावर्त्तनेन देववत्पूज्यतेजनैः ॥ २३० ॥ शतपञ्चकमावर्त्त्य सभवेद्भैरवोपमः ॥

सहस्रावर्त्तनेनैवमन्त्रस्तस्यस्वसिद्धिदः ॥ २३१ ॥ तस्मि न्प्रवर्त्ततेसर्व्वसिद्धिःसर्व्वार्थसाधिनी ॥ पादुकाञ्जनवेतालपाताल गगनादिकम् ॥ २३२ ॥ विविधायक्षिणीसिद्धिर्व्वाक्सिद्धिस्तस्यजायते ॥ शोषणंसागराणाञ्च धारायाभ्रमणन्तथा ॥ ॥ २३३ ॥ नवीनसृष्टिनिर्म्माणं सर्व्वङ्कर्त्तुङ्क्षमोभवेत् ॥ अयुतावर्त्तनेनैव ताराम्पश्यतिचक्षुषा ॥ २३४ ॥ लक्षावर्त्तनमात्रेण तारापातिसमोभवेत् ॥ नकिञ्चिद्दुर्ल्लभन्तस्यजीवन्मुक्तोहि भूतले ॥ २३५ ॥ कल्पान्तेनतुतत्पश्चात्तारासायुज्यमाप्नुयात् ॥ यद्धितारासमाविद्या नास्तितारुण्यरूपिणी ॥ २३६ ॥ न चैतत्सदृशंस्तोत्रम्भवेद्ब्रह्माण्डमण्डले ॥ वक्रकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि ॥ २३७ ॥ नशक्यतेफलँव्वक्तुम्मयाकल्पशतैरपि ॥ चुम्बकेनिन्दकेदुष्टेपिशुनेजीवहिंसके ॥ २३८ ॥ सङ्गोप्यंस्तोत्रमेतत्तद्दर्शनेनैवकुत्रचित् ॥ राज्यन्देयन्धनन्देयंशिरोदेयमथापिवा ॥ २३९ ॥ नदेयंस्तोत्रवर्य्यन्तुमन्त्रादपिमहोद्यतम् ॥ अनुलोमविलोमाभ्याम्मूलसम्पुटितन्त्विदम् ॥ २४० ॥ लिखित्वाभूर्ज्जपत्रादौगन्धाष्टकपुरस्सरैः ॥ धारयेद्दक्षिणेबाहौ कण्ठे वामभुजेतथा ॥ २४१ ॥ तस्यसर्व्वार्त्थसिद्धिस्स्याद्वह्निनानैवदह्यते ॥ तद्गात्रंशस्त्रसङ्घैश्चभिद्यतेनकदाचन ॥ २४२ ॥ सभूमिवलयेपुत्र विचरेद्भैरवोपमः ॥ वन्ध्यापिलभतेपुत्रान्निर्द्धनोधनमाप्नुयात् ॥ २४३ ॥ निर्व्विघ्नोलभतेविद्यान्तर्क्कव्याकरणादिकाम् ॥ इतिनिगदितमस्यास्तादिनाम्नांसहस्रँव्वरदमनुनिदानन्दिव्यसाम्राज्यसञ्ज्ञम् ॥ विधिहरिगिरिशाद्यै शक्तिदानैकदक्षं समविधि पठनीयङ्कालितारासमज्ञैः ॥ २४४ ॥ इतिश्रीब्रह्मयामले तारायास्तकारादिसहस्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

इति श्रीतारातन्त्रं समाप्तम् ॥

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहवहादूरनराधिप-

संगृहीतविराचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

तृतीयं

षोडशीतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुवेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँवत् १९५० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ।



षोडशीतन्त्रम् ॥

अथ षोडशीध्यानम् ॥

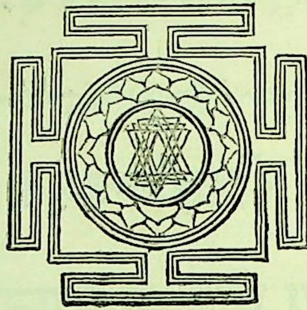
बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहान्त्रिलोचनाम् ॥ पाशाङ्कुशशरांश्चापन्धारयन्तींशिवाम्भजे ॥



अथ यन्त्रोद्धारः ॥

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्मँव्वस्वस्रनागदलसङ्गतषोड

शारम् ॥ वृत्तत्रयञ्चधरणीसदनत्रयञ्चश्रीचक्रराजमुदितम्परदेवतायाः ॥



अथ मन्त्रोद्धारः ॥

आदौलज्जांसमुच्चार्य्यकएईलततऽपरम् ॥ पुनश्चलज्जामुच्चार्य्यहसकहल्तुतत्परम् ॥ १ ॥ ततोलज्जाम्पुनऽप्रोच्यलज्जान्तं सकलन्ततः ॥ षोडशाक्षरमन्त्रोयंषोडश्यास्समुदाहृतः ॥ २ ॥ इयन्तुसुन्दरीविद्यादेवानामपिदुर्ल्लभा ॥ गोपनीयाप्रयत्नेनसर्व्वसम्पत्करीमता ॥ ३ ॥

अथ मन्त्रः ॥

ह्रींकएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ॥

अथ पूजाविधिः ॥

ब्राह्ममुहूर्त्ते उत्थायशय्यायामेवास्थित्वा शिरसिमहासहस्रदलकमलेश्रीगुरुन्ध्यायेत् द्विनेत्रन्द्विभुजंशान्तङ्गुरुम्पद्मासनस्थितम् ॥ यथावर्णसुखासीनम्मुक्तम्भास्वररूपिणम्॥ वराभयकरम्ब्रह्मविष्णुशङ्कररूपिणम् ॥ वामेनोत्पलधारिण्याशक्त्यावामाङ्गसँय्युतमितिध्यात्वा । अखण्डमण्डलाकारँ व्याप्तय्येनचराचरम् ॥ तत्पदन्दर्शितय्येनतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ अज्ञानतिमिरान्धस्यज्ञानाञ्जनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मीलितय्येनतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ नमोस्तुगुरवेतस्मैइष्टदेवस्वरूपिणे ॥ यस्यवागमृतंहन्तिविषसंसार

सङ्कुलम् ॥ अनन्तरात्मागुरुन्नमस्कृत्य अन्तर्भावनाङ्कुर्य्यात् । मूलमष्टोत्तरशतञ्जपेत् । समुद्रमेखलेदेविपर्व्वतस्तनमण्डले ॥ विष्णुपत्निनमस्तुभ्यम्पादस्पर्शंक्षमस्वमेइतिपठन् वामपादपुरस्सरम्भूमिन्स्पृशेत् । तत्रमन्त्रः । लसहह्रीं ऐंकइक्लीं स इतिस्मृत्वा । तत्रचासनमास्तीर्य्योपविश्यमूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तम्मूलविद्याँविचिन्तयेत् । उद्यतादित्यसङ्काशान्तडित्कोटिसमप्रभाम् ॥ तत्प्रभापटलव्याप्तन्देहंसुपरिचिन्तयेत् ॥ षट्चक्रभेदनङ्कुर्य्यात्। तद्यथा । गुदलिङ्गान्तरे वंशंषंसं इतिचतुर्द्दलम्पीतवर्ण्णम्मूलाधारम् अत्रदेवताडाकिनीगणेशश्चतुर्द्दन्तस्त्रिकोणविद्युद्वर्ण्णन्तन्मध्येबिसतन्तुतनीसीशषावर्त्तनिभां सार्द्धत्रिवलान्वितामप्रसुप्तभुजगाकारांसोमसूर्य्याग्निरूपिणीङ्कुण्डलिनींशक्तिंहूंकारेणमनो मयदण्डेनाहत्योत्थाप्य हँसइतिजप्त्वा ॥ १ ॥ लिङ्गमूले वंभंमंयंरंलमितिरक्तंस्वाधिष्ठानम् तत्रडाकिनीदेवीब्रह्माच॥२॥नाभौडंढंणंतंथंदंधंनंपंफमितिनीलंमणिपूरम् तत्रलाकिनीदेवीविष्णुश्च ॥ ३ ॥ हृदये कंखंगंघंङंचंछंजंझंञंटंठमितिद्वादशदलन्धूम्रमनाहतचक्रमृतत्रकाकिनीदेवीरुद्रश्च ॥४॥ कण्ठे अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअःइतिषोडशदलंपिङ्गलवर्ण्णंविशुद्धचक्रम्तत्रशाकिनी देवी शिवात्मा॥५॥ भ्रूमध्येहंळमितिद्विदलमाज्ञाचक्रम् तत्रहाकिनीदेवीपरात्माच ६ एवंषट्चक्रम्भित्वासहस्रदलकमलकर्ण्णिकान्तर्गतबिन्दुरूपेपरमाशिवेसँय्योज्य लक्षाभयरमामृतेनकुण्डलिनींसन्तर्प्यपुनराज्ञाविशुद्धानाहतन्त्रिपुरस्वाधिष्ठानमूलाधारन्नयेत् इतिभावनादेवीन्ध्यात्वामानसोपचारैस्सम्पूज्यजप्त्वास्तुत्वानत्वा आवश्यकशौचादिकङ्कृत्वादन्तधावनङ्गृहीत्वाक्लींसर्व्वजनप्रियायैरतिकामस्वरूपायैनम इतिमन्त्रेणदन्तधावनङ्कुर्य्यात् । ततोमूलेनमुखप्रक्षालनङ्कृत्वा यथाकालेजलाशयङ्गत्वा

सूर्य्याभिमुखम्मुशलवदेकवारन्निमज्ज्य पुरतश्चतुर्हस्तप्रमाणञ्च तुरस्रम्प्रकल्प्य तन्मध्येत्रिकोणँव्विलिख्यसूर्य्यमण्डलादङ्कुशमु द्रयातीर्त्थमानयेत् ॐगङ्गेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्वति॥ नर्म्मदे सिन्धुकावेरिजलेऽस्मिन्सन्निधिङ्कुरु ॥ वमितिधेनुमुद्राम्प्रदर्श्यर्य मूलमष्टधाजपित्वा ॥ कलशमुद्रयामूलेनसप्तधाशिरस्सिञ्चये त् । सप्तच्छिद्राणिनिरुध्यत्रिधानिमज्जयेत् पात्रप्रोक्षणङ्कृत्वास न्ध्याङ्कुर्य्यात् ॥ प्राणायामत्रयङ्कृत्वावमितिधेनुमुद्रयाजलममृती कृत्यत्रिभिः शिरोमूलेनाभ्युक्ष्यनवधाऽचम्यतज्जलन्दक्षिणकरेकृ त्वालंवंरंयंहमितिपाञ्चभौतिकमन्त्रमष्टधाजपित्वा मूलन्दशधाज पेत् । वामहस्तानामिकाङ्गुष्ठाभ्याञ्छोटिकायोगेनत्रिः शिरोभ्यु क्ष्यावशिष्टजलँव्वामहस्तेईडया अन्तर्गतम्मत्वा तेनैवनिश्शेष कलुषन्दग्धँव्विचिन्त्य पिङ्गलयाम्बहिर्गतँव्विभाव्य तज्जलन्द क्षिणकरेकृत्वातत्रपापपुरुषँव्विचिन्त्यवामभागेभूमौवज्राशिला न्ध्यात्वातत्रनि ः क्षिप्यपापपुरुषञ्चूर्ण्णितम्भावयेदित्यघमर्षं णम् । ततोदेवादीन्यथाविधिसन्तर्प्य । ॐ गणेशन्तर्प्पयामि ब टुकन्तर्प्पयामि योगिनीन्तर्प्पयामि सर्व्वान्देवगणांस्तर्प्पयामि सर्व्वान्पितृगणाँस्तर्प्पयामि सर्व्वान्मातृगणाँस्तर्प्पयामि सर्व्वा न्मनुष्यगणाँस्तर्प्पयामि सर्व्वान्तर्य्यामिमूलमुच्चार्य्य श्रीम हात्रिपुरसुन्दरीन्तर्प्पयामिनम इतित्रिवारान्तर्प्पयित्वा ऐंआत्म तत्त्वंशोधयामि क्लींविद्यातत्त्वंशोधयामि सौंशिवतत्त्वंशोधयामि ऐंक्लींसौं सर्व्वतत्त्वंशोधयामि । ततोजलादुत्थायधौतवाससीपरि धाय मूलेनतिलकङ्कृत्वा गन्धपुष्पाक्षतैरर्घ्यंसम्पाद्यओंऐंह्रींश्रीं कुलमार्तण्डभैरवायतिथिवारनक्षत्रयोगकरणप्रकाशशक्तिसहि तायएषोऽर्घ्योनम इतिमन्त्रेणसूर्य्यार्ग्घन्दत्त्वायथाशक्तिदेवता गायत्रीञ्जपेत् । क्लींकामेश्वरीँव्विद्महे वागीश्वरीन्धीमहि॥तन्नः क्लि

न्नाप्रचोदयात् रात्रौचन्द्रार्घ्यन्दत्त्वा । क्षीरोदार्णवसम्भूत अ
त्रिगोत्रसमुद्भव ॥ गृहाणार्घ्यमिदन्देवरोहिण्यासहितप्रभो ॥ इति
चन्द्रार्घ्यन्दद्यात् । एवंसन्ध्याकालत्रयेपिकुर्य्यात् । ततोदिक्प
तीन्नमस्कृत्यपूजागृहद्वारमागत्य हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य अ
स्त्रायफट्नम इतिद्वारंसम्प्रोक्ष्यपूजयेत् । वामेशाखायांगंगणे
शायनमः दक्षिणेक्षंक्षेत्रपालायनमः ऊर्द्धेद्वांद्वारश्रियैनमः दे
हलीमध्येदेहल्यैनमः वामपार्श्वेक्लींकामदेवायनमः रंरत्यैनमःवां
वसन्तायनमः प्रींप्रीत्यैनमः ओंशङ्खनिधयेनमः दक्षपार्श्वे प
द्मनिधयेनमःसरस्वत्यैनमः श्रियैनमः मायायैनमः दुर्गायैनमः
भद्रकाल्यैनमः स्वाहायैनमः शुभकर्य्यैनमः गौर्य्यैनमः लोकधा
त्र्यैनमः वागीश्वर्य्यैनमः दक्षपादपुरस्सरमङ्गानिसङ्कोचयन् गृ
हान्तः प्रविशेत् ततोगृहान्तर्धूपयेत् ऐशान्याम्पूजयेत् ॐवा
स्तुपुरुषायनमःॐब्रह्मणेनमः ॥ ततः अपसर्प्पन्तुतेभूतायेभूता
भुविसँस्थिताः येभूताविघ्नकर्त्तारस्तेनश्यन्तुशिवाज्ञया ॥ इ
तितण्डुलांश्चतुर्दिक्षुविकिरेदितिभूतापसारणम् । ऊर्द्धोर्द्धताल
त्रयन्दत्त्वात्रिविघ्नान्वामपादात्रिघातादुत्सारयेत् । ततोऽयाग्राजि
नरक्तकम्बलाद्यासनमास्तीर्य्यासनन्धृत्वापठेत् । अस्यासनम
न्त्रस्यमेरुपृष्ठऋषिः सुतलञ्छन्दःकूर्म्मोदेवताआसनोपवेशने
विनियोगः ॥ ॐपृथिवित्वयाधृतालोकादेवित्वँविष्णुनाधृता ॥
त्वञ्चधारयमान्नित्यम्पवित्रङ्कुरुचासनम् ॥ ततःपूजयेत् । कूंकू
र्म्मासनायनमः आधारशक्तिकमलासनायनमः ऐंह्रींश्रीं सर्व्वश
क्तिकमलासनायनमः ॐपृथिव्यैनमः ततस्स्वास्तिकाद्यासने
नोपविश्यऐंह्रींश्रींअमृतार्णवात्मकायनम इतिपादयोः ऐंह्रीं
श्रींश्वेताम्बुजासनायनम इतिजान्वोः ऐंह्रींश्रींदेव्यासनायनमइति
पार्श्वयोः ऐंह्रींश्रींचक्रासनायनम इतिगुह्येआसनस्यचतुःकोणे

षुपूजयेत् ॐगणपतयेनमः दुर्गायैनमः बटुकभैरवायनमः क्षेत्र पालायनम इतिवायव्यादिनैर्ऋत्यन्तम् ततःह्रींकएईलह्रींहसक हलह्रींसकलह्रीं गंगणपतयेनमः पृष्ठेक्षेत्रपालायनमः सम्मुखेश्रीम हात्रिपुरसुन्दर्य्यैनमः ॥ अथभूतशुद्धिः ॥ स्वाङ्केउत्तानौहस्तौकृ त्वासोहमितिमन्त्रेणमूलाधारेयथोक्तरूपाङ्कुण्डलिनीं हूँकारेणम नोमयदण्डेनाहत्योत्थाप्य स्वाधीनमणिपूरानाहतप्रदीपकलि काकारंजीवात्मानन्तयासहविशुद्धारुयचक्रम्भित्त्वा सहस्रदलक मलान्तर्गतविन्दुरूपेपरमशिवेसँय्योज्यशरीरंशून्यँविचिन्त्य कु क्षौपापपुरुषन्ध्यायेत्॥वामकुक्षौस्थितम्पापपुरुषङ्कज्जलप्रभम्।ब्र ह्महत्याशिरस्कञ्चस्वर्णस्तेयभुजद्वयम्। सुरापानहृदायुक्तङ्गुरुत ल्पकटिद्वयम्॥तत्सँय्योगिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम् ॥उपपात करोमाणंरक्तश्मश्रुविलोचनम् ॥ अचेतनमधोवक्रन्दग्धपादपस न्निभम् ॥ खड्गचर्म्मधरङ्क्रूरम्पापङ्कुक्षौविचिन्तयेत् ॥इतिध्यात्वा तेनसहशोषणादिकङ्कुर्य्यात् ॥ वामनासापुटेनयमितिवायुबीज न्धूम्रवर्णंषोडशवारान्जपन् वायुमुत्तोलयनाभौदशदलेनियोज्य समस्तशरीरम्पापपुरुषेणसंशोषयेत्। नासापुटौधृत्वारमितिबीजं रक्तवर्णञ्चतुःषष्टिवारान्जपन् कुम्भकयोगेनशरीरन्तेनसहभ स्मीकुर्य्यात् । वायुमुत्तोल्यहृदिद्वादशदलेनियोज्यवमितिवरुण बीजंशुक्लवर्णन्द्वात्रिंशद्वारञ्जपन् अमृतधाराम्पातयित्वाचमिति चन्द्रबीजञ्चतुःषष्टिवारान्जपन् अमृतवृष्ट्याकुम्भकयोगेनाप्लाव्य लमितिभूमिबीजम्पीतवर्णम्मूलाधारस्तम्भूमण्डलेनियोज्य सम स्तशरीरम्पुनर्दैवताराधनयोग्यंशरीरन्दृढीकुर्वन् हंस इतिमन्त्रेण जीवात्मानंहृदयचक्रेनयेत् कुण्डलिनीम्मूलचक्रन्नयेत् ॥ इतिभूत शुद्धिः ॥ ततोहृदिहस्तन्दत्त्वाप्राणप्रतिष्ठाङ्कुर्य्यात् । अस्यप्राणप्र तिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वराऋषयः ऋग्यजुःसामानिच्छन्दां

सि चैतन्यशक्तिः परमात्मादेवताप्राणप्रतिष्ठायाँविनियोगः । आँ ह्रींक्रींयँरँलँवँशँषँसँहँळँक्षँहँसः ममप्राणाइहप्राणाः ममजीवइहस्थितः ॥ १६ ॥ ममेहसर्व्वेन्द्रियाणि ॥ १६ ॥ ममवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणत्वग्रसनाप्राणाइहागत्यसुखञ्चिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ ॥ अथप्राणायामः ॥ वामनासापुटन्धृत्वाकएईलह्रीमितिषोडशवारञ्जपन् वायुनाशनैश्शनैःपूरयेदितिपूरकः । नासापुटौधृत्वाहसकहलह्रींइतिचतुःषष्टिवारञ्जपन्वायुङ्कुम्भयेत्।इतिकुम्भकः। सकलह्रीमितिबीजंद्वात्रिंशद्वारञ्जपन्वायुन्दक्षनासापुटेनशनैरेचयेत् ॥ इतिरेचकः । एवम्प्राणायामत्रयङ्कुर्य्यात् । अथमातृकान्यासः । अस्यश्रीमातृकान्यासमन्त्रस्यब्रह्मर्षिर्गायत्रीछन्दोवर्णजननीमातृकादेवता हलोबीजानिस्वराःशक्तयःकर्म्मसाद्गुण्येविनियोगः। ब्रह्मर्षयेनमः शिरसि गायत्रीछन्दसेनमःमुखे वर्णजननीमातृकादेवतायैनमःहृदि हलबीजेभ्योनमः गुह्ये स्वरेभ्यःशक्तिभ्योनमः गुदे कर्म्मसाद्गुण्येविनियोगःपादयोः । मातृकान्ध्यायेत् । पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोष्कान्मध्यवक्षस्थलाम् भासन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनापिङ्गस्तनीम् ॥ अद्रामक्षगुणंसुधाढ्यकलशाँविद्यांसुहस्ताम्बुजेबिभ्राणाँविशदप्रभान्त्रिनयनाँव्वाग्देवतामाश्रये ॥अंनमःललाटे।आंनमःमुखवृत्ते।इंनमःदक्षनेत्रे।ईंनमः वामनेत्रे। उँनमः दक्षकर्णे।ऊंनमः वामकर्णे। ऋंनमः दक्षनासापुटे।ॠंनमः वामनासापुटे। ऌंनमःदक्षगण्डे।ॡंनमः वामगण्डे। एँनमः ओष्ठे।ऐँनमः अधरे। ओँनमः ऊर्द्ध्वदन्तपङ्क्तौ। औँनमः अधोदन्तपङ्क्तौ। अँनमः शिरसि।अःनमःमुखे। दक्षबाहुपञ्चसन्ध्यग्रेषु—कँनमः खँनमः गँनमः घँनमः ङँनमः। वामबाहुपञ्चसन्ध्यग्रेषु—चँनमः छँनमः जँनमःझँनमः ञँनमः। दक्षपादपञ्चसन्ध्यग्रेषु टँनमः ठँनमः डँनमः ढँनमः णँनमः। वामपादपञ्चस

न्ध्यग्रेषु—तँनमः थँनमः दँनमः धँनमः नँनमः। दक्षपार्श्वे पँनमः। फँनमः वामपार्श्वे। बँनमः पृष्ठे। भँनमः नाभौ। मँनमः उदरे। यँनमः हृदये। रँनमः दक्षांसे। लँनमः ककुदि। वँनमः वामांसे। शँनमः हृदयादिदक्षहस्ते। षँनमः हृदयादिवामहस्ते। सँनमः हृदयादिदक्षपादे। हँनमः हृदयादिवामपादे। ळँनमः हृदयादि उदरे। क्षँनमः हृदयादिमुखे। इतिमातृकान्यासः॥ अथान्तर्म्मातृकान्यासः। कण्ठेषोडशस्वरान्रक्तवर्ण्णान्। हृदिकादिठान्तान् सिन्दूरवर्ण्णान्। नाभौडादिफान्तान्नीलवर्ण्णान्। लिङ्गेबादिलान्तान्ताडिद्वर्ण्णान् गुदेवादिसान्तान्रक्तवर्ण्णान्भ्रूमध्येहँक्षँविमलवर्णान्। सहस्रारेसहस्रदले अकारादिक्षकारान्ताँल्लाक्षारसवर्ण्णान्पश्चाशद्वर्ण्णान्। एवङ्क्रमेणद्विरावृत्तौतृतीयावृत्तौच विंशत्यावृत्तिपर्य्यन्तंसहस्रधान्यसेत्। मूलाधारमारभ्यसहस्रदलपर्य्यन्तंसर्व्वत्र सर्व्वदलेषुमूलमन्त्रन्न्यसेत्। प्रतिदलम्प्रतिकमलम्प्रतिचक्रकुण्डलिन्यागतागतेनएकविंशतिशतंजपम्प्रतिश्वासान्भावयेदित्यजपा॥अन्तर्म्मातृकान्यासश्चसदासावधानेनकर्त्तव्यः॥इत्यन्तर्म्मातृकान्यासः॥ अथकुलकान्यासः। ऐंक्लींह्रींश्रींभगवतिमहात्रिपुरसुन्दरिस्वाहा इतिकुलकांशिरसि ओंहृदिसेतुं ह्रींमहासेतुंकण्ठे ह्रींमहासेतुंसहस्रारे ओंश्रींअँएँक्लींसौंएँअँआँइँईँउँऊँऋँॠँलृँ ॡँएँऐँओँऔँअँअः कँखँगँघँङँचँछँजँझँञँटँठँडँढँणँतँथँदँधँनँपँफँबँभँमँयँरँलँवँशँषँसँहँक्षँइतिनिर्व्वाणनाभौ लिङ्गेकामबीजं जिह्वायांमूलविद्याँविचिन्त्य यथाशक्तिजपेत्। इतिकुलकान्यासः॥अथपीठन्यासः॥ललाटे अँकामरूपपीठाय,नमःसर्व्वत्र। मुखवृत्तेआँवाराणसीपीठाय, दक्षनेत्रे इँनेपालपीठाय, वामनेत्रे ईँपौण्डवर्द्धनपीठाय, दक्षकर्ण्णे उँपुरस्तिरपीठाय, वामकर्ण्णे ऊँकालिकुब्जिपीठाय, दक्षिणनासिकायांऋँपूर्ण्णशैलपीठाय,वामनासापुटे ॠँअर्व्बुदपीठा

य,दक्षगण्डेलृँआम्रातकेश्वरपीठाय,वामगण्डेलृंएकाम्रपीठाय,ओष्ठे एँत्रिस्रोतपीठाय, अधरे ऐंकामकोटपीठाय, उर्द्ध्वदन्तपङ्क्तौ ओंकेदारपीठाय, अधोदन्तपङ्क्तौ औंगुप्तनगरपीठाय, शिरसिअँचन्द्रपुरपीठाय, मुखेअः श्रीपीठाय, दक्षकरपञ्चसन्ध्यग्रेषु कँओंकारपीठाय, खँजालन्धरपीठाय, गँमानपीठाय, घँभद्रकोटपीठाय, ङँदेवीकोटपीठाय, ॥ वामकरपञ्चसन्ध्यग्रेषु चँगोकर्ण्णपीठाय, छँमारुतेश्वरपीठाय, जँमङ्गलकोटपीठाय, झंअट्टहासपीठाय, ञंविरजपीठाय, ॥ दक्षपादपञ्चसन्ध्यग्रेषु टंराजगृहपीठाय, ठंमहापथपीठाय, डंकोणगिरिपीठाय, ढंएलापुरपोठाय णंरामेश्वरपीठाय ॥ वामपादपञ्चसन्ध्यग्रेषु तंजपतीपीठाय, थंउज्जयिनीपीठाय, दँचरित्रीपीठाय, धंक्षीरिकापीठाय, नंहस्तिनापुरपीठाय॥ दक्षपार्श्वे पंउड्डीशपीठाय वामपार्श्वे फंप्रयागपीठाय, पृष्ठे बंषष्ठीशपीठाय, नाभौ भंमायापुरपीठाय, उदरे मंनिर्ज्जनपीठाय, हृदये यंमलयपीठाय, दक्षांसे रं श्रीशैलपीठाय, ककुदि लंमहामेरुपीटाय, वामांसे वंगिरिपोठाय, ॥ हृदयादिदक्षहस्तपर्य्यन्तम् शंमहेन्द्रपीठाय, हृदयादिवामहस्तपर्य्यन्तं षंरसेनपीठाय। हृदयादिदक्षपादपर्य्यन्तं संबदरीपीठाय,हृदयादिवामपादपर्य्यन्तं हंमहालक्ष्मीपुरपीठाय, हृदयादिउदरपर्य्यन्तं ळंउड्डीयानपुरपीठाय, हृदयादिमुखपर्य्यन्तं क्षंसौम्यपीठायनमः। ततोमूलाधारेध्यानपीठायनमः स्वाधिष्ठानेकामपीठायनमः मणिपूरेज्ञानपीठायनमः अनाहतेविदेहपोठायनमः विशुद्धौनन्दिनीपीठाय० आज्ञायांनन्दापीठाय० ततः सहस्रदलेषुक्षीरनिधिपीठायन० कल्पवनपीठाय० चिन्तामणिपीठाय० पर्य्यङ्कपीठाय० शिवासनपीठाय० मूर्त्तिमयपोठाय० सर्व्वव्यापकपीठाय० इतिपीठन्यासः ॥ अथरहस्यन्यासः ॥ अस्यश्रीरहस्यन्या

समन्त्रस्यब्रह्मविष्णुमहेश्वराऋषयः ऋग्यजुस्सामानिछन्दांसिचै तन्यशक्तिमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायैकृताकृतन्यासपूर्णतासिद्धिये विनियोगः। ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्योनमः शिरसि, ऋग्यजुस्सा मभ्यश्छन्दोभ्योनमःमुखे, चैतन्यशक्तिमाहत्रिपुरसुन्दर्य्यैदेवता यैनमःहृदये, कृताकृतन्यासपूर्णतासिद्धयेविनियोगःपादयोः। ऐं क्लींसौंसौंक्लींऐंश्रींह्रींहंसःसोहं सदाशिवासनायैमहात्रिपुरसुन्दर्य्यै नमः इतिमूलाधारे ॥१॥ ऐंक्लींसौंसौंक्लींऐंश्रींह्रींहंसःसोहंरतिप्रिया यैमहात्रिपुरसुन्दर्य्यैनम इतिस्वाधिष्ठाने ॥ २॥ ऐंक्लींसौंसौं क्लींऐं श्रींह्रींहंसःसोहं ज्ञानस्वरूपायैमहात्रिपुरसुन्दर्य्यैनम इतिमणि पूरे॥ ३॥ ऐंक्लींसौंसौं क्लींऐंश्रींह्रींहंसः सोहं ध्यानस्वरूपायैमहात्रि पुरसुन्दर्य्यैनम इतिअनाहते ॥ ४॥ ऐंक्लींसौंसौंक्लींऐंश्रींह्रींहंसः सोहं विशुद्धस्वरूपायैमहात्रिपुरसुन्दर्य्यैनम इतिविशुद्धौ ॥ ५॥ ऐंक्लींसौंसौंक्लींऐंश्रींह्रींहंसःसोहं स्वतन्त्रस्वरूपायैमहात्रिपुरसु न्दर्य्यैनम इत्याज्ञायाम् ॥ ६॥ ऐंक्लींसौंसौं क्लींऐंश्रींह्रींहंसः सोहं आनन्दस्वरूपायै महासुन्दर्य्यैनम इतिसहस्रारेन्यसेत् ॥ इ तिरहस्यन्यासः ॥ अथकामन्यासः ॥ ह्रींकामायनमः क्लींमन्म थाय० ऐंकन्दर्प्पाय० क्लूंमकरध्वजायनमः स्त्रींमीनकेतवेनमः ॥ तत ऐंहृदयायनमः क्लींशिरसेस्वाहा सौं शिखायैवषट् ऐंकव चायहूम् क्लींनेत्रत्रयायवौषट् सौं अस्त्रायफट्। इतिद्विरावृत्यमन्त्रेण करयोर्व्विन्यसेत् ॥ इतिकामन्यासः ॥ अथरत्यादिन्यासः ॥ लि ङ्गेऐंरत्यैनमः हृदिक्लींप्रीत्यैनमः भ्रूमध्येसौंमनोभवायै० भ्रूमध्ये सौं अमृतायै० हृदिक्लींयोगिन्यै० लिङ्गेऐंविश्वयोन्यैनमइ तिरतिन्यासः ॥ अथमनोभवन्यासः । शिरसि स्हौंईशानायम नोभवायनमः,मुखे स्हौंतत्पुरुषायमकरध्वजायनमः, हृदि स्हुंअ घोरकुमारायकन्दर्प्पाय०, गुह्येस्ह्रींवामदेवायमन्मथाय०, पाद

योः स्हूंसद्योजातायकामदेवायनमः, ऊर्ध्ववक्त्रेमस्तके स्ह्रौंईशा नायमनोभवाय०, पूर्ववक्त्रेभाले स्ह्रैंतत्पुरुषायमकरध्वजाय०, दक्षिणवक्त्रेदक्षकर्णे स्हुंअघोरकुमारायकन्दर्पाय०, उत्तरवक्त्रे वामकर्णेस्ह्रींवामदेवायमन्मथाय०, पश्चिमवक्त्रेचूडाधः स्हुंस द्योजातायकामदेवायनमः ॥ इतिमनोभवन्यासः ॥ अथवाणन्या सः ॥ ह्रांक्षोभणबाणायनमः ह्रींद्रावणबाणाय० क्लींआकर्षण बाणाय० क्लूंमोहनबाणाय० सःउन्मादनबाणायनमः ॥ इति अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तङ्करयोर्न्यसेत् ॥ इतिवाणन्यासः ॥ अथ स्वतन्त्रन्यासः ॥ अस्यश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीस्वतन्त्रन्यासस्य आनन्दभैरवऋषिर्देवीगायत्री छन्दः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी दे वता ऐंबीजं सौःशक्तिः क्लींकीलकं धर्म्मार्त्थकाममोक्षार्त्थेविनियो गः॥ आनन्दभैरवऋषयेनमःशिरसि, देवीगायत्रीछन्दसेनमःमुखे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः हृदये, ऐंबीजायनमः नाभौ, सौः शक्तयेनमः स्वाधिष्ठाने, क्लींकीलकायनमः मूलाधारे, ध र्म्मार्त्थकाममोक्षार्त्थेविनयोगः पादयोः ॥ ऐंह्रींक्लींअङ्गुष्ठाभ्यान्न मः क्लींश्रींसौःऐंतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा, सौःऔंह्रींश्रींमध्यमाभ्या व्वँषट्, ऐंकएलह्रींहसकलह्रीं अनामिकाभ्यांहूम्, क्लींसकलह्रीं कनिष्ठिकाभ्यांवौषट्, सौः सौः ऐंक्लींह्रींश्रीं करतलकरपृष्ठाभ्या म्फट्, ऐंह्रींश्रींऐंकएलह्रींसर्व्वज्ञायैमहात्रिपुरसुन्दर्य्यैहृदयायनमः ऐंह्रींश्रींक्लींसहकहलह्रींनित्यतृप्तायैमहात्रिपुरसुन्दर्य्यै शिरसे स्वाहा ऐंह्रींश्रींसौःसकलह्रींअनादिबोधायैमहात्रिपुरसुन्दर्य्यैशि खायैवषट् ऐंह्रींश्रींऐंकएलह्रींस्वतन्त्रायैमहात्रिपुरसुन्दर्य्यैकवचा यहूँम् ऐंह्रींश्रींक्लींहसकहलह्रींनित्यमलुप्तशक्तयेमहात्रिपुरसुन्द र्य्यैनेत्रत्रयायवौषट् ऐंह्रींश्रींसौः सकलह्रीं अनन्तायै महात्रिपुरसु न्दर्य्यैअस्त्रायफट् हःअस्त्रायफट् इतिदिग्बन्धः ॥ इतिस्वतन्त्र

न्यासः ॥ अथचतुर्द्दशारचक्रन्यासः ॥ ऐंशिरसि । क्लींसौः भ्रुवोः,ऐंललाटे, क्लींसौःश्रोत्रयोः, ऐंभ्रूमध्ये, क्लींसौः नेत्रयोः, ऐंशिरसि, क्लींसौःनासिकयोः,ऐंचिबुके,क्लींसौः ओष्ठयोः,ऐंनासिकायाम्, क्लींसौः गण्डयोः, ऐंगले, क्लींसौः बाहुमूलयोः, ऐंकण्ठे, क्लींसौः बाह्वोः, ऐंचिबुके, क्लींसौः स्तनयोः, ऐंहृदये, क्लींसौः पार्श्वयोः, ऐंनाभौ, क्लींसौः स्तनयोः, ऐंहृदये, क्लींसौः करयोः, ऐंलिङ्गे, क्लींसौःत्रिकयोः, ऐंपृष्ठे, क्लींसौःनितम्बयोः, ऐंक्लींसौः मूलञ्चसर्व्वाधारायनम इतिमूलाधारे ॥ इतिचतुर्द्दशारन्यासः ॥ ततोङ्गदेवतान्यासः ॥ अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः क्लींरसिनीवाग्देवतायैनमःशिरसि, कंखंगंघंङं क्लींकोमइवरीवाग्देवतायैनमः ललाटे, चंछंजंझंभं श्रींमोदनीवाग्देवतायैनमः मुखे, टंठंडंढंणंकुंविमलाननावाग्देवतायैनमः कण्ठे, तंथंदंधंनं श्रींअव्ययावाग्देवतायैनमः हृदये, पंफंबंभंमं श्रींजयिनीवाग्देवतायैनमः नाभौ, यंरंलंवं क्ष्मींवाग्देवतायैनमः मूलाधारे, शँषंसंहंळंसंक्षंहं क्ष्मींकौलिनीवाग्देवतायैनमःइतिपादयोः ॥ इत्यङ्गदेवतान्यासः ॥ अथमन्त्रन्यासः ॥ प्रथमबीजंशिरसि । द्वितीयबीजंमुखे तृतीयबीजंहृदये ॥ततःसमस्तमूलमन्त्रंशिरस्तःऽपादपर्य्यन्तन्न्यसेत् ॥ इतिमन्त्रन्यासङ्कृत्वा पीठन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ प्रथमंहृदये ऐं आधारशक्तिकमलासनायनमः ऐंअनन्तायनमः ऐंपृथिव्यैनमः ऐंरससमुद्रायनमः ऐंरत्नद्वीपायनमः ऐंकल्पवृक्षायनमः ऐंरत्नमण्डपायनमः दक्षस्कन्धेधर्म्मायनमः वामस्कन्धे ज्ञानायनमः दक्षोरौ वैरासनायनमः वामोरौ ऐश्वर्य्यायनमः मुखे अधर्म्मायनमः दक्षपार्श्वेज्ञानायनमः वामपार्श्वेअनैश्वर्य्याय नमः नाभौ अवैराग्यायनमः हृदयेअनन्तायनमः पद्मायनमः ॐअर्कमण्डलायनमः ॐसोममण्डलायनमः मँवन्हिमण्डलाय

नमः सँसत्वायनमः रंरजसेनमः तँतमसेनमः ह्रैंह्रेंछ्रींहसौः चक्रासनायनमः सत्वमन्त्रासनायनमः साध्यासिद्धासनायनमः ॥ ततोहृत्पद्मचक्रन्ध्यात्वातदुपरिदेवीङ्गन्धपुष्पाक्षतैः करकच्छपमुद्राम्बद्ध्वाध्यायेत् ॥ सकुङ्कुममित्यादि । बालार्कमण्डलाभासाञ्चतुर्ब्बाहुन्त्रिलोचनाम् ॥ पाशाङ्कुशौशरांश्चापन्धारयन्तीं शिवां श्रये ॥ शिरसिपुष्पन्दत्त्वा० गुरुभ्योनमः परमगुरुभ्योनमः परात्परगुरुभ्योनमः परमेष्ठिगुरुभ्योनमः। मनसादेवींसम्पूज्यआवाहनमुद्राद्यैर्योनिमुद्राम्प्रदर्श्य ततोर्ग्घस्थापनङ्कुर्य्यात् । सौः अस्त्रायफट्इतिशङ्खम्प्रक्षाल्यभूमौत्रिकोणमण्डलङ्कृत्वाओंआधारशक्त्यैनमः कूर्म्मायनमः अनन्तायनमः पूजयेत् । तदुपरि नमइतिप्रक्षालितान्त्रिपदीन्निधायतदुपरिशङ्खन्निधायत्रिधामूलेनापूर्य्यदूर्व्वाक्षतादिनिःक्षिप्यमंदशकलात्मनेसूर्य्यमण्डलायनमइतित्रिपदींसम्पूज्यअँद्वादशकलात्मनेवह्निमण्डलायनमइतिजलेपूजयेत् । उँसोममण्डलायषोडशकलात्मनेनमः । ॐगङ्गेचयमुनेचैवगोदावरिसरस्वति ॥ नर्म्मदेसिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिङ्कुरु ॥ इतिसूर्य्यमण्डलात्तीर्थमङ्कुशमुद्रयानीयअवगुण्ठनमुद्रयावगुण्ठ्यमूलमष्टधाजप्त्वायोनिमुद्रान्प्रदर्श्यअमृतीकृत्यधेनुमुद्रयापुनर्म्मूलमष्टधाजपित्वातेनोदकेनाभ्युक्ष्यस्थापयेदिति । ततोविशेषार्ग्घस्थापनम् स्वपुरतः किञ्चिद्वामभागे सामान्यार्ग्घस्यतोयेनाभ्युक्ष्यत्रिकोणवृत्तगर्ब्भितवृत्तात्मकंषट्कोणवृत्तचतुरस्रमण्डलङ्कृत्वाअग्न्यादिकोणचतुष्टयेपूजयेत्। ॐ उड्डीयानश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः जांजालन्धरश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । पूंपूर्णशैलश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः कांकामरूपश्रीपादुकांपूजयामिनमः । मूलेननामोच्चार्य्य आधारमण्डलायनम इत्याधारंसम्पूज्य सौःअस्त्रायफट्नम इतित्रिपदींसम्पू

ज्यमण्डलेस्थापयित्वापूजयेत् । मँवह्निमण्डलायदशकलात्मने नमः । ततःसौःअस्त्रायफट्नम इतिशङ्खम्प्रक्षाल्यस्थापयित्वा अंसूर्य्यमण्डलायद्वादशकलात्मेनमः श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्य्यर्घ्य पात्रायनम इतिशङ्खेसम्पूज्य उंसोममण्डलायषोडशकलात्म नेश्रीमहात्रिपुरसुन्दर्य्यऽर्घामृतायनम इतिजलेनापूर्य्य तत्रज लेदूर्व्वाक्षतादिदत्त्वा ओंगङ्गेचयमुनेचैवेत्यादिनासूर्य्यमण्डलाद ङ्कुशमुद्रयातीर्थमावाह्यधेनुमुद्रयामृतीकृत्ययोनिमुद्राम्प्रदश्यर्य तदुपरिमूलमष्टधाजपित्वादक्षाङ्गुष्ठेनजलंस्पृष्ट्वामूलंस्मृत्वा अर्घ्य जलस्यआग्नेयकोणमारभ्यविन्यसेत्।हृदयायनमः। शिरसेस्वाहा शिखायैवौषट्अस्त्रायफट् ॥ इतिचतुर्दिक्षुविन्यस्य 'ह्रीं'इतिमन्त्रे णसम्पूज्यपञ्चरत्नानिविन्यसेत् । ग्लूं इलूं प्लूं म्लूं ज्लूमितिपञ्च रत्नानिस्वर्ग्गमर्त्त्यपातालगमनरत्नानिविन्यसेत् । मत्स्यमुद्रया च्छाद्यसंरक्षणमुद्रयासंरक्ष्य अवगुण्ठनमुद्रयाअवगुण्ठ्य अमृती करणमुद्रयाअमृतीकृत्य प्रबोधनमुद्रयाप्रबोध्य मूलंस्मृत्वा ।अकु लस्थामृताकारेसिद्धिज्ञानकरेपरे ॥ अमृतत्वनिधे त्वस्मिन्वस्तु निक्लिन्नरूपिणि ॥ इतिजलमभिमन्त्र्यतज्जलेनात्मानम्पूजोपकर णञ्चाभ्युक्ष्य पीठपूजामारभेत् । ऐंह्रींनम इतिकुशजलेनभूमिं शोधयित्वा त्रिपदीमारोप्यपूजयेत् ॥ ऐंआधारशक्तिकमलास नायनमः कूर्म्मायनमः अनन्तायनमः पृथिव्यैरसाम्बुधयेनमः रत्नद्वीपायनमः नन्दनोद्यानायनमः रत्नमण्डपायनमः रत्नवे दिकायैनमः रत्नसिंहासनायनमः श्रीचक्रायनमः ततोऽहूमिति मन्त्रेणताम्रपीठँव्विशोध्यश्रीयन्त्रंस्थापयित्वापीठस्यआग्नेयादि कोणचतुष्टयम्पूजयेत् । धर्मायनमः ज्ञानायनमः वैराग्याय नमः ऐश्वर्य्यायनमः। तत ९ पूर्व्वादिचतुर्दिक्षु । अधर्म्मायन मः अज्ञानायनमःअवैराग्यायनमः। अनैश्वर्य्यायनमः।पीठस्यो

परि । आनन्दकन्दायनमः सँव्विन्नालायनमः सर्व्वंतत्त्वानुक म्पायनमः पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायैनमः विकारमयकेसरेभ्योन मः प्रकृतिमयपत्रेभ्योनमः । मंवन्हिमण्डलायनमः अँसूर्य्यमण्ड लायनमः अँसोममण्डलायनमः संसत्त्वायनमः रंरजसेनमः तँ तमसेनमः आंआत्मनेनमः अंअन्तरात्मनेनमः पंपरमात्मनेन मः ह्रींज्ञानात्मनेनमः ऐंकामरूपपीठायनमः ऐंपूर्णगिरिपीठा यनमः ऐंजालन्धरपीठायनमः ऐंउड्डीयानपीठायनमः ॥ इतिसम्पू ज्य ॥ ऐंत्रिपुरेश्वरीमध्यमाभ्यान्नमः क्लींत्रिपुरेश्वरीअनामिका भ्यान्नमः। सौः त्रिपुरेश्वरीकनिष्ठाभ्यान्नमः । ऐंत्रिपुरेश्वरीअङ्गु ष्ठाभ्यान्नमः । क्लींत्रिपुरेश्वरीतर्ज्जनीभ्यान्नमः । सौः त्रिपुरे श्वरीकरतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः। ह्रींक्लींसौः देव्यासनायनमः । च क्रासनायनमः सर्व्वमन्त्रासनायनमः साध्यसिद्धासनायनमः । ऐंत्रिपुरेश्वरीहृदयायनमः। क्लींत्रिपुरेश्वरीशिरसेस्वाहा । सौः त्रि पुरेश्वरी शिखायैवषट् । ऐंत्रिपुरेश्वरीकवचायहूम् । क्लींत्रिपुरे श्वरी नेत्रत्रयायवौषट् । सौःत्रिपुरेश्वरीअस्त्रायफट् । ततोध्या त्वापुष्पाञ्जलिनादेवीतेजःसमानीय यन्त्रेकल्पितमूर्त्तौआवाह नमुद्रयाआवाह्य स्थापनमुद्रयासँस्थाप्य त्रिखण्डमुद्राम्बद्ध्वा । महापद्मवनान्तस्थेकरुणामध्यविग्रहे ॥ सर्व्वभूतहितेमातरेह्ये हिपरमेश्वरि ॥ अमृतीकरणपरमीकरणमुद्राम्प्रदर्श्यमूलमुच्चा र्य्यश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीप्राणाइहसुप्रतिष्ठिताभवन्तु । मूलमुच्चा र्य्यपाद्यन्नमः मूलमर्घोंनमः मूलङ्गन्धोनमः मूलम्पुष्पन्नमः मू लन्धूपोनमःमूलन्दीपोनमःमूलन्नैवेद्यन्नमः।लम्पृथिव्यात्मकङ्गन्धं समर्प्पयामिनमःहंआकाशात्मकम्पुष्पंसमर्प्पयामिनमः यँव्वाय्वा त्मकन्धूपंसमर्प्पयामिनमः रंवह्न्यात्मकन्दीपंसमर्प्पयामिनमःवं अबात्मकममृतंसमर्प्पयामिनमः । इतिपञ्चोपचारान्निवेद्य ।

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि तवाज्ञाम्प्राप्यपरिवारानर्च्चयामि । आज्ञाम्प्राप्यपूजयेत् । मध्येह्रींश्रींकामेश्वर्य्यैनमः भगमालिन्यैनमः क्लिन्नायै ० भेरुण्डायै ० विन्ध्यवासिन्यै ० महाविद्येश्वर्य्यै ० शिवदूत्यै ० त्वरितायै ० नित्यायै ० नीलपताकायै ० विजयायै० श्रियै० सर्व्वमङ्गलायै० ज्वालांशुमालिन्यै० ह्रींश्रींविचित्रायैनम इतिसम्पूज्य। पूर्व्वद्वारे गङ्गणपतयेनमः। पश्चिमद्वारे बम्बटुकायनमः । उत्तरद्वारे ह्रींदुर्ग्गायैनमः । दक्षिणद्वारेक्षंक्षेत्रपालायनमः । बाह्यचतुरस्रस्यबाह्यरेखायांपश्चिमादिद्वारचतुष्टये ह्रींश्रींअणिमादिसिद्धिश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः । लघिमासिद्धिम्पूजयामिनमः। महिमासिद्धिम्पूजयामिनमः। ईशासिद्धिम्पूजयामिनमः। बाह्यादिकोणचतुष्टयेवशित्वसिद्धिश्रीम्पूजयामिनमः। प्राकाश्यसिद्धिश्रीम्पूजयामिनमः। भक्तिसिद्धिश्रीम्पूजयामिनमः। इच्छासिद्धिश्रीम्पूजयामिनमः । अधस्तात्प्राप्तिसिद्धिश्रीम्पूजयामिनमः। ऊर्द्ध्वसर्व्वकामसिद्धिम्पूजयामिनमः । मध्यचतुरस्रस्यपश्चिमादिद्वारचतुष्टये । ह्रींश्रींआंब्राम्हचैनमः । ईंमाहेश्वर्य्यैनमः। ऊँकौमारीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः। ऋंवैष्णवीश्री ० मध्यचतुरस्रस्यबाह्यादिकोणे ह्रींश्रींलृंवाराहीश्री ० ऐंइन्द्राणीश्री० औंचामुण्डाश्री० अःमहालक्ष्मीश्री० । अभ्यन्तरचतुरस्रस्यपश्चिमादिद्वारचतुष्टये। त्रिखण्डाक्षमुद्राश्री० ह्रींसर्व्वसङ्क्षोभिणीमुद्राश्री० ह्रींसर्व्वविद्राविणीमुद्राश्री० क्लींसर्व्वाकर्षिणीमुद्राश्री० । अभ्यन्तरचतुरस्रस्य बाह्यादिकोणचतुष्टयेक्लुंसर्व्वावेशकरीमुद्राश्री० सर्व्वोन्मादकरीमुद्राश्री० क्रौंमहाङ्कुशमुद्राश्रीपादु० क्लुंखेचरीमुद्राश्री० ततस्त्रिवलये बीजमुद्राश्री० योनिमुद्राश्री० चार्व्वाकदर्श्शनायनमः। ततोहस्तेनार्ग्घंजलङ्गृहीत्वा। अत्रत्रैलोक्यमोहनचतुरस्रचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी

समधिष्ठिते एताईशित्वाद्याः प्रकटयोगिन्यःसमुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्व्वोपचारैस्सम्पूजितास्सन्तु । इतिमूलेनार्प्पयेत् । ततःषोडशदलेषुपाश्चिमदलादारभ्य देव्याःप्रदक्षिणाक्रमेणपूजयेत् । ह्रींश्रींअंकामाकर्षिणीनित्याकलाश्री० आंबुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलाश्री० इंअहङ्काराकर्षिणीनित्याकलाश्री० ईंशब्दाकर्षिणीनित्याकलाश्री० उंरूपाकर्षिणीनित्याकलाश्री. ऊंस्पर्शाकर्षिणीनित्याकलाश्री०ऋंरसाकर्षिणीनित्याकलाश्री० ॠंगन्धाकर्षिणीनित्याकलाश्री० लृंचिन्ताकर्षिणीनित्याकलाश्री० ॡंधैर्य्याकर्षिणीनित्याकलाश्री० एंस्मृत्याकर्षिणीनित्याकलाश्री० ऐंनामाकर्षिणीनित्याकलाश्री ओंबीजाकर्षिणीनित्याकलाश्री० ? अंअमृताकर्षिणीनित्याकलाश्री० अःशरीराकर्षिणीनित्याकश्री० रेखायाम्बौद्धदर्शनायनमः । ततोहस्तेनार्ग्यजलङ्गृहीत्वा । अत्रसर्व्वाशापरिपूरके षोडशदलचक्रेश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठितेएताः कामाकर्षिण्याद्यागुप्तयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्व्वोपचारैः पूजितास्सन्तु । इतिमूलमन्त्रेणदेव्यैनिवेदयेत् । ततोष्टदलचक्रे पूर्व्वदलेषु ह्रींश्रींकँखँगँघँङँअनङ्गकुसुमादेवीश्री० चँछँजँझँञँअनङ्गमेखलादेवीश्री० टँठँडँढँणँअनङ्गमदनादेवीश्री० तँथँदँधँनँअनङ्गमदनातुरादेवीश्री० पँफँबँभँमँअनङ्गरेखादेवीश्री० यँरँलँवँअनङ्गवेगिनीदेवीश्री० शँषँसँहँअनङ्गांकुशादेवीश्री०ळँक्षँअनङ्गमालिनीदेवीश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः॥ अत्रसङ्क्षोभकरेऽष्टदलचक्रेश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठितेएताअनङ्गकुसुमाद्याः गुप्ततरायोगिन्यः समुद्रास्ससिद्धयः सायुधास्सवाहनास्सपरिवारास्सर्व्वोपचारैःपूजितास्सन्तु इत्यर्ग्यजलेनदेव्यै समर्प्पयेत् । ह्रींश्रींसर्व्वसङ्क्षोभिणीशक्तिश्री० सर्व्वद्रा

विणीशक्तिश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः सर्व्वाकर्षिणीशक्तिश्रीपादुकाम्पूजयामिनमः सर्व्वाल्हादिनीशक्तिश्री० सर्व्वसम्मोहिनीशक्तिश्री०सर्व्वस्तम्भिनीशक्तिश्री०सर्व्वजृम्भणीशक्तिश्री ०सर्व्ववशङ्करीशक्तिश्री० सर्व्वरञ्जिनीशक्तिश्री० सर्व्वोन्मादिनीशक्तिश्री० सर्व्वार्त्थसाधनीशक्तिश्री० सर्व्वाशापरिपूरणीशक्तिश्री ० सर्व्वमन्त्रमयीशक्तिश्री० सर्व्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्तिश्री० बहिःसाङ्ख्यनैय्यायिकदर्शनेभ्योनमः । अत्रसौभाग्यदायकेचतुर्द्दशचक्रेश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठितेएतास्सङ्क्षोभिन्याद्याश्शक्तयः सम्प्रदाययोगिन्यः समुद्रास्ससिद्धयः सायुधास्सवाहनास्सपरिवारास्सर्व्वोपचारैस्सम्पूजितास्सन्तु । इत्यर्घ्यजलेनमूलन्देव्यैसमर्प्पयेत् ॥ ततोबहिर्द्दशारचक्रेपश्चिमादिदशान्तंपूजयेत् । ह्रींश्रीं सर्व्वसिद्धिप्रदादेवीश्री० सर्व्वसम्पत्प्रदादेवीश्री० सर्व्वप्रियङ्करीशङ्करीदेवीश्री० सर्व्वमङ्गलकारिणीदेवीश्री० सर्व्वकामप्रदादेवीश्री० सर्व्वदुःखविमोचनीदेवीश्री० सर्व्वाङ्गसुन्दरीदेवीश्री० सर्व्वमृत्युविनाशिनीदेवीश्री० सर्व्वदुःखविनाशिनीदेवीश्री० सर्व्वसौभाग्यदायिनी देवीश्री० । अत्रसर्व्वाशापरिपूरकेचक्रेश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एतास्सर्व्वसिद्धिप्रदाद्यादेव्यःकुलकौलिनीयोगिन्यः समुद्रास्ससिद्धयस्सायुधास्सवाहनास्सपरिवारास्सर्व्वोपचारैस्सम्पूजितास्सन्तु ।इत्यर्घ्यजलेनमूलेनदेव्यैसमर्प्पयेत् । ततोऽन्तर्द्दशारचक्राग्राद्दक्षिणान्तय्यावत्पूजयेत् । ह्रींश्रीं सर्व्वज्ञादेवीश्री० सर्व्वशक्तिमयीदेवीश्री० सर्व्वैश्वर्य्यप्रदादेवीश्री ० सर्व्वज्ञानमयीदेवीश्री० सर्व्वव्याधिविनाशिनीदेवीश्री ० सर्व्वाशापरिपूरणीदेवीश्री ० सर्व्वपापहरादेवीश्री ० सर्व्वानन्दमयीदेवीश्री ० सर्व्वान्तकामरूपिणीदेवीश्री ० सर्व्वेप्सितफलप्रदादेवीश्री० । अत्रसर्व्वरक्षाकरेअन्तर्द्दशारचक्रेत्रिपुरमालि

नीश्रीत्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एतास्सर्व्वज्ञाद्यानिर्भ्भययोगिन्य स्समुद्राःससिद्धयःसायुधाःसवाहनाःसपरिवाराः सर्व्वोंपचारैःसम्पूजिताःसन्तु । इत्यर्ग्घजलेनमूलेनदेव्यै समर्प्पयेत् । ततोऽष्टारचक्रेचक्रात्पश्चिमादिदक्षणान्तंयावत्पूजयेत् । ह्रींश्रींअँआँ इँईँउँऊँऋँॠँऌँॡँएँऐंओंऔंअँअः वशिनीवाग्देवताश्री० कँ खँगँघँङँकामेश्वरीवाग्देवताश्री० चँछँजँझँञँमोदिनीवाग्देवता श्री० टँठँडँढँणँ विमलावाग्देवताश्री० तँथँदँधँनँअव्ययावाग्देवताश्री० पँफँबँभँमँजयिनीवाग्देवताश्री० यँरँलँवँ सर्व्वेश्वरी वाग्देवताश्री० शँषँसँहँक्षँकौलिनीवाग्देवताश्री० ॥ अत्रसर्व्वे रोगहरेअष्टारचक्रेश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एतावशिन्याद्यारहस्ययोगिन्यःसमुद्राःससिद्धयस्सायुधास्सवाहनाः सपरिवाराः सर्व्वोंपचारैःसम्पूजितास्सन्तु । इत्यर्ग्घजलेनमूलेनदेव्यैसमर्प्पयेत् । अभ्यन्तरकोणत्रये पुष्पाञ्जलिंव्वारत्रयन्दद्यात् । चक्रमध्ये दक्षिणे उत्तमबाणायनमः । वामेमोहधनुषेनमः । तदधः कर्क्कशायनमः । दक्षिणेस्तम्भाङ्कुशायनमः । अग्रेक्लीं कामेश्वर्य्यैनमः । आंचक्रिण्यैनमः । ऐंभगशालिन्यैनमः । मूलेनश्रीमहात्रिपुरसुन्दर्य्यैनमः । ततः त्रिकोणमध्ये कामकलामीकाररूपांध्यायेत् । ततोब्रह्मविष्णुरुद्रेशानसदाशिवेभ्यः पञ्चप्रेतेभ्योनमः नवग्रहेभ्योनमइत्यभ्यर्च्यमालाङ्गृहीत्वा यथाशक्तिजपेत् । ततः।गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् । सिद्धिर्भ्भवतुमेदेवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ इतिजलेनदेव्यावामहस्तेसमर्प्पयेत् । जपन्देव्यागृहीतन्तेजोमयंव्विभाव्य । विधिहीनांक्रियाहीनम्भक्तिहीनञ्चयद्भवेत् ॥ पूर्ण्णंभवतुतत्सर्व्वं त्वत्प्रसादात्रिलोचने ॥ इतियथाशक्तिस्तुत्वाप्रदक्षिणन्त्रिःप्रणम्यकृतार्त्थमात्मानम्भावयेत् । योनिमुद्राम्प्रदर्श्शयेत् । संहारमुद्रयाविसर्ज्जयेत् । नि

र्म्माल्यङ्गृहीत्वाऐशान्यान्त्रिकोणमण्डलङ्कृत्वा ऐंचँचण्डेश्वर्य्यैन मः इत्यभ्यर्च्य निर्म्माल्यंशिरसिधृत्वायथासुखँव्विहरेत् । श्री विद्याज्ञानमात्रेणसर्व्वसिद्धिःप्रजायते ॥ अतोविद्याप्रदातव्यानाभ क्तायकदाचन ॥ इतिपूजापद्धतिः ॥

अथ स्तोत्रम् ॥

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभिर्ल्लक्ष्मीस्वयँव्वरणमङ्गलदी पिकाभिः ॥ सेवाभिरम्बतवपादसरोजमूले नाकारिकिम्मनसि भक्तिमताञ्जनानाम् ॥ १ ॥ एतावदेवजननिस्पृहणीयमास्ते त्वद्वन्दनेषुसलिलस्थसरोजनेत्रे ॥ सान्निध्यमुद्यदरुणाम्बुजसोद रस्य त्वद्विग्रहस्यसुधयापरयाप्लुतस्य ॥ २ ॥ ईषत्प्रभावकलु षाःकतिनामसन्ति ब्रह्मादयःप्रतिदिनम्प्रलयाभिभूताः ॥ एक स्सएवजननिस्थिरसिद्धिरास्ते यःपादयोस्तवसकृत्प्रणतिङ्करो ति ॥ ३ ॥ लब्ध्वासकृत्त्रिपुरसुन्दरितावकीनङ्कारुण्यकन्दल तिकान्तिभरङ्कटाक्षम्॥ कन्दर्प्पभावसुभगास्त्वयिभक्तिभाजः स म्मोहयन्तितरुणीम्भुवनत्रयेऽपि ॥ ४ ॥ ह्रीङ्कारमेवतवनामगृण न्तियेवामातस्त्रिकोणनिलयेत्रिपुरेत्रिनेत्रे ॥ त्वत्संस्मृतौयमभ टाभिभवँव्विहाय दीव्यन्तिनन्दनवनेसहलोकपालैः ॥५॥ हन्तुः पुरामधिगलत्परिपूर्ण्णमानःक्रूरःकथन्नभवितागरलस्यवेगः ॥ नाश्वासनाययदिमातरिदन्तवार्द्धदेहस्यशश्वदमृताप्लुतशीतल स्य ॥ ६ ॥ सर्व्वज्ञतांसदसिवाक्पटुताम्प्रसूते देवित्वदङ्घ्रि सरसीरुहयोःप्रणामः॥ किञ्चस्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रन्द्वेचाम रेचमहतीँव्वसुधान्दधाति ॥ ७ ॥ कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपाद नेषु कारुण्यवारिधिभिरम्बभवत्कटाक्षैः ॥ आलोकयत्रिपुरसु न्दरिमामनाथन्त्वय्येवभक्तिभरितन्त्वयिबद्धदृष्टिम् ॥ ८ ॥ ह न्तेतरेष्वपिनिधायमनांसिचान्ये भक्तिँव्वहन्तिकिलसापरदैवते

षु ॥ त्वामेवदेविमनसाहमनुस्मरामित्वामेवनौमिशरणञ्जननि त्वमेव ॥ ९ ॥ लक्षेषुसत्स्वपितवाक्षिविलोकनानामालोकय त्रिपुरसुन्दरिमाङ्कथञ्चित् ॥ नूनम्मयाचसदृशङ्करुणैकपात्रञ्जातोजनिष्यतिजनोनचजायतेवा ॥ १० ॥ ह्रींह्रीमितिप्रतिदिनञ्जपतान्तवाख्याङ्किन्नामदुर्लभमिहत्रिपुराभिधाने ॥ माला किरीटमदवारणमाननीयाँस्तान्सेवतेमधुमतोस्वयमेवलक्ष्मीः ॥ ॥ ११ ॥ सम्पत्कराणिसकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानकुशलानिसरोरुहाक्षि ॥ त्वद्वन्दनानिदुरितोद्धरणोद्यतानिमामेव मातरनिशङ्कलयन्तुनान्यम् ॥ १२ ॥ कल्पोपसंहरणकल्पित ताण्डवस्यदेवस्यखण्डपरशोऽपरभैरवस्य ॥ पाशाङ्कुशैक्षवशरासनपुष्पबाणाः सासाक्षिणी विजयते तवमूर्त्तिरेका ॥ १३ ॥ लग्नंसदाभवतुमातरिदन्त्वदीयन्तेजऽपरम्बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम् भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं रूपं त्रिकोणमुदितम्परमामृतात्कम् ॥ १४ ॥ ह्रीङ्कारत्रयसम्पुटेनमहतामन्त्रेणसन्दीपितं स्तोत्रँय्यऽप्रतिवासरन्तवपुरोमातर्ज्जपेन्मन्त्रवित् ॥ तस्यक्षोणिभुजोभजन्तिवशगालक्ष्मीश्चिरंस्थायिनो वाणीनिर्म्मलसूक्तिभावभरिताजागर्त्तिदीर्ग्घय्यँशः ॥ १५ ॥ इतिब्रह्मविरचितंषोडशीकल्याणीस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथ कवचम् ॥

देव्युवाच ॥ देवदेवमहादेवभक्तानाम्प्रीतिदायक ॥ सुचिन्तयन्महादेव्याः कवचङ्कथयस्वमे ॥ १ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिकवचन्देवदुर्ल्लभम् ॥ २ ॥ अप्रकाश्यम्परङ्गुह्यं साधकाभीष्टसिद्धिदम् ॥ २ ॥ कवचस्यऋषिर्देवि दक्षिणामूर्त्तिरव्ययः ॥ छन्दऽपाङ्क्तिः समुद्दिष्टन्देवीत्रिपुरसुन्दरी ॥ ३ ॥ धर्म्मार्त्थकाममोक्षाणाँव्विनियोगस्तुसाधने ॥ वाग्भवङ्कामबीजञ्चशक्ति

बीजंसुरेश्वर ॥ ४ ॥ वाग्भवम्पातुशीर्षेमाङ्कामबीजन्तथाहृदि ॥ शक्तिबीजंसदापातुनाभौगुह्येचपादयोः ॥ ५ ॥ ऐँक्लीँसौँवदनेपातुबालामांसर्व्वसिद्धये ॥ हसोःसकलह्रींपातुभैरवीकण्ठदेशतः ॥ ६ ॥ सुन्दरीनाभिदेशेचशीर्षेकामकलासदा ॥ भ्रूनासयोरन्तरालेमहात्रिपुरसुन्दरी ॥ ७ ॥ ललाटेसुभगापातु भगामङ्कापण्ठदेशतः ॥ भगोदयातुहृदयेउदरेभगसर्प्पिणी ॥ ८ ॥ भगमालानाभिदेशे लिङ्गेपातुमनोभवा ॥ गुह्येपातुमहादेवीराजराजेश्वरीशिवा ॥ ९ ॥ चैतन्यरूपिणीपातु पादयोर्ज्जगदम्बिका ॥ नारायणीसर्व्वगात्रेसर्व्वकायेशुभङ्करी ॥ १० ॥ ब्रह्माणीपातुमाम्पूर्वेदक्षिणेवैष्णवीतथा ॥ पश्चिमेपातुवाराही उत्तरेचमहेश्वरी ॥ ११ ॥ आग्नेय्याम्पातुकौमारी महालक्ष्मीस्तुनैर्ऋते ॥ वायव्याम्पातुचामुण्डाइन्द्राणीपातुईशके ॥ १२ ॥ जलेपातुमहामायापृथिव्यांसर्व्वमङ्गला ॥ आकाशेपातुवरदा सर्व्वत्रिभुवनेश्वरी ॥ १३ ॥ इदन्तुकवचन्देव्यादेवानामपिदुर्ल्लभम् ॥ यःपठेत्प्रातरुत्थाय शुचिःप्रयतमानसः ॥ १४ ॥ नाधयोव्याधयस्तस्य नभयञ्चक्कचिद्भवेत् ॥ नतुमारीभयन्तस्यपातकानाम्भयन्तथा ॥ १५ ॥ नदारिद्र्यवशङ्गच्छेत्तिष्ठेन्मृत्युवशेनच ॥ गच्छेत्स्थिरपुरन्देविसत्यंसत्यँव्वदाम्यहम् ॥ १६ ॥ इदङ्कवचमज्ञात्वाश्रीविद्याँय्योजपेत्प्रिये ॥ सनाप्नोतिफलन्तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्रघातनम् ॥ १७ ॥ इतिसिद्धयामलेश्रीषोडशीविद्याकवचं समाप्तम् ॥

अथहृदयम् ॥

कैलासेकरुणाक्रान्ता परोपकृतिमानसा ॥ पप्रच्छकरुणासिन्धुंसुप्रसन्नम्महेश्वरम् ॥ १ ॥ श्रीपार्व्वत्युवाच ॥ आगामिनिकलौब्रह्मन्धर्म्मकर्म्मविवर्ज्जिताः ॥ भविष्यन्तिजनास्तेषाङ्कथंश्रे

योभविष्यति ॥ २ ॥ श्रीशिवउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामितव स्नेहान्महेश्वरि ॥ दुर्ल्लभन्त्रिषुलोकेषुसुन्दरीहृदयस्तवम् ॥ ३ ॥ येनराःदुःखसन्तप्तादारिद्र्यहतमानसाः ॥ अस्यैवपाठमात्रेणते षांश्रेयोभविष्यति ॥ ४ ॥ ओमस्यश्रीमहाषोडषीहृदयस्तोत्र मन्त्रस्यआनन्दभैरवऋषिर्दैवीगायत्रीच्छन्दः श्रीमहात्रिपुरसुन्द रीदेवता ऐंबीजं सौःशक्तिः क्लींकीलकं धर्म्मार्त्थकाममोक्षार्त्थेवि नियोगः ॥ आनन्दभैरवऋषयेनमश्शिरसि ॥ दैवीगायत्रीछन्द सेनमःमुखे ॥ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायैनमः हृदये ॥ ऐंबीजाय नमः नाभौ । सौःशक्तयेनमः स्वाधिष्ठाने । क्लींकीलकायनमः मूलाधारे। धर्म्मार्त्थकाममोक्षार्त्थेविनियोगः पादयोः ॥ अथकरा ङ्गन्यासौ ॥ ऐंह्रींक्लींअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । क्लींश्रींसौःऐंतर्ज्जनीभ्यां स्वाहा । सौःॐह्रींश्रींमध्यमाभ्याँव्वषट् । ऐंकएह्रींहसकलह्रीं अनामिकाभ्यांहूम् । क्लींसकलकनिष्ठाभ्याँव्वौषट् । सौःसौःऐंक्लीं ह्रींश्रींकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ॥ एवमङ्गन्यासः ॥ ध्यानम् । बा लव्यक्तविभाकरामितनिभाम्भव्यप्रदाम्भारतीमीषत्फुल्लमुखाम्बु जस्मितकरैराशाभवान्धापहाम् ॥ पाशंसाभयमङ्कुशञ्चवर दंसम्बिभ्रतीम्भूतिदाम् भ्राजन्तीञ्चतुरम्बुजाकृतिकरैर्भक्त्या भजेषोडशीम् ॥ ५ ॥ सुन्दरीसकलकल्मषापहाकोटिकञ्ज प्रियकाम्यकान्तिका ॥ कोटिकल्पकृतपुण्यकर्म्मणापूजनी यपदपुण्यपुष्करा ॥ ६ ॥ शर्व्वरीशसमसुन्दराननाश्रीशशक्ति सुकृताश्रयश्रिता ॥ सज्जनानुशरणीयसत्पदा सङ्कटेसुरग णैःसुवन्दिता ॥ ७ ॥ यासुरासुररणेजवान्विता आजघानजगद म्बिकाऽजिता ॥ ताम्भजामिजगताञ्जनिञ्जयाय्युँद्धयुक्तदिति जान्सुदुर्ज्जयान् ॥ ८ ॥ योगिनांहृदयसङ्गतां शिवाँय्योगयुक्तमन साय्यँतात्मनाम् ॥ जाग्रतीञ्जगतियत्नतोद्विजा याञ्जपन्तिहृदि

ताम्भजाम्यहम् ॥ ९ ॥ कल्पकास्तुकलयन्तिकालिकाँय्यत्क लाकालिजनोपकारिकाम् ॥ कौलिकालिकालिताङ्घ्रिकञ्जका न्ताम्भजामिकलिकल्मषापहाम् ॥ १० ॥ बालार्क्कानन्तशोचि र्न्निजतनुकिरणैर्द्दीपयन्तीन्दिशन्तान् दीप्तैर्द्देदीप्यमानान्दनुजद लवनानल्पदावानलाभाम् ॥ दान्तोदन्तोग्रचित्तान्दलितदि तिसुतान्दर्शनीयान्दुरन्तान्देवीन्दीनार्द्रचित्तांहृदिमुदितमनाः षोडशींसँस्मरामि ॥ ११ ॥ धीरान्धन्यान्धरित्रीधवविधृताशिरोधू तधूल्यब्जपादान्धृष्टान्धाराधराधोविनिधृतचपलाचारुचन्दत्प्र भाभाम् ॥ धर्म्म्यान्धूतोपहारान्धरणिसुरधवोद्धारिणीध्येयरूपा न्धीमद्धन्यातिधन्यान्धनदधनवृतां सुन्दरीञ्चिन्तयामि ॥ १२ ॥ जयतुजयतुजल्पायोगिनीयोगयुक्ताजयतुजयतुसौम्यासुन्दरीसु न्दरास्या ॥ जयतुजयतुपद्मापद्मिनीकेशवस्य जयतुजय तुकालीकालिनीकालकान्ता ॥ १३ ॥ जयतुजयतुखर्व्वा षोडशींवेदहस्ता जयतुजयतुधात्रीधर्म्मिणीधातृशान्तिः ॥ जयतुजयतुवाणी ब्राह्मणाब्रह्मवन्द्या जयतुजयतुदुर्ग्गादारि णीदेवशत्रोः ॥ १४ ॥ देवित्वंसृष्टिकालेकमलभवभृता राज सीरक्तरूपा रक्षाकालेत्वमम्बाहरिहृदयधृतासात्त्विकीश्वेतरूपा॥ भूरिक्रोधाभवान्तेभवभवनगतातामसीकृष्णरूपा एताश्चान्या स्त्वमेवाक्षितिमनुजमतासुन्दरीकेवलाद्या ॥ १५ ॥ सुमलशमन मेतद्देविगोप्यङ्गुणज्ञे ग्रहणमननयोग्यं षोडशीयङ्कलग्नम् ॥ सुरतरुसमशीलंशम्प्रदम्पाठकानाम्प्रभवतिहृदयाख्यं स्तोत्रम त्यन्तमान्यम् ॥ १६ ॥ इदन्त्रिपुरसुन्दर्य्याःषोडश्याऽपरमाद्भुत म् ॥ यःशृणोतिनरस्तोत्रंससदासुखमश्नुते ॥ १७ ॥ नशूद्रायप्रदा तव्यंशठाय समलात्मने ॥ देयन्दान्तायभक्ताय ब्राह्मणायाविशेष तः॥ १८ ॥ इतिश्रीत्रिपुरसुन्दरीतन्त्रे षोडशीहृदयस्तोत्रंसमाप्तम्॥

॥ अथोपनिषत् ॥

ॐ परमकारणभूताशक्तिः केननवचक्ररूपोदेहः नवचक्रशक्तिमयंश्रीचक्रँव्वाराहीपितृरूपा कुरुकुल्लाचीलदेवता माता पुरुषार्त्थाः सागराः देहोनवरत्नद्वीपः आधारनवकमुद्राः शक्तयः त्वगादिसप्तधातुभिरनेकैः सँय्युक्ताः सङ्कल्पाः कल्पतरवः तेजः कल्पकोद्यानंरसनयाभासमानामधुराम्लतिक्तकटुकषायलवणरसाः षड्रसाः क्रियाशक्तिपीठङ्कुण्डलिनीज्ञानशक्तिः अहमूइच्छाशक्तिर्म्महात्रिपुरसुन्दरीज्ञाताहोता ज्ञानमर्घ्यंज्ञेयंहविः ज्ञातृज्ञानज्ञेयानमोभेदभावनं श्रीचक्रपूजनान्नियतिसहितश्रृङ्गारादयोनवरसा अणिमादयः कामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्य्यपुण्यपापमयाब्राह्म्याद्यष्टशक्तयः आधारनवकमुद्राशक्तयः पृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाशश्रोत्रत्वक्चक्षुर्ज्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थविकाराः षोडशशक्तयः वचनादानगमनविसर्गानन्दादानोपादानोपेक्षाबुद्धयोऽनङ्गकुसुमादिशक्तयोष्टौ अलम्बुषाकुहूविश्वोदरीवरुणाहस्तिजिह्वायशस्विनीगान्धारीपूषासरस्वतीइडापिङ्गलासुषुम्नाचेतिचतुर्द्दशनाड्यः सर्व्वसङ्क्षोभिण्यादिचतुर्द्दशारदेवताः प्राणापानव्यानोदानसमाननागकूर्म्मकृकलदेवदत्तधनञ्जयादशवायवः सर्व्वसिद्धिप्रदादिबहिर्द्दशारदेवताः एतद्वायुदशकसंसर्ग्गोपाधिभेदेनरेचकपूरकपोषकदाहकालपावकामृतामितिप्राणसख्यत्वेनपञ्चविधोस्ति जाठराग्निर्म्मनुष्याणाम्मोहकोभक्ष्यभोज्यलेह्यचोष्यात्मकञ्चतुर्व्विधमन्नम्पाचयति तदाकाशवान्सकलाः सर्व्वज्ञत्वाद्यन्तर्द्दशारदेवताः शीतोष्णसुखदुःखेच्छासत्वरजस्तमोगुणादिवशिन्यादिशक्तयोष्टौशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः पञ्चतन्मात्राः पञ्चपुष्पबाणाः मनेक्षुधनुर्व्वल्यो

बाणेरागः पाशोद्वेषोऽङ्कुशोऽव्यक्तमहत्तत्त्वाहङ्कारकामेश्वरीवज्रे श्वरीभगमालिन्योऽन्तस्त्रिकोणाग्रदेवताः पञ्चदशतिथिरूपेण कालस्यपरिणामावलोकनपञ्चदशनित्याशुद्धानुरूपाधिदेवता निरुपाधिसार्व्वदेवकामेश्वरी सदानन्दपूर्णाः स्वात्म्यैक्यरूपल लिताकामेश्वरीसदानन्दघनपूर्णाः स्वात्म्यैक्यरूपादेवताललि तामिति साहित्यकरणंसत्त्वं कर्त्तव्यमकर्त्तव्यमितिभावनाशुक्ता उपचाराअहन्त्वमस्तिनास्तिकर्त्तव्याकर्त्तव्यमुपासितव्यानुपा सितव्यमितिविकल्पनामनोविलापनंहोमःबाह्याभ्यन्तरकरणानां रूपग्रहणयोग्यतास्तीत्यावाहनम् तस्य बाह्याभ्यन्तरकरणाना मेकरूपविषयग्रहणमासनम् रक्तशुक्लपदैकीकरणम्पाद्यम् उज्ज्व लदामोदानन्दासानन्दनमर्घ्यम् स्वच्छास्वतःशक्तिरित्या चमनम् चिच्चन्द्रमयीस्मरणंस्नानम् चिदग्निस्वरूपपरमानन्दश क्तिस्मरणँव्वस्त्रम् प्रत्येकंसप्तविंशतिधा भिन्नत्वेनइ च्छाक्रि यात्मकब्रह्मग्रन्थिमयीसतन्तुब्रह्मनाडीब्रह्मसूत्रम् सव्यातिरिक्त वस्त्रसङ्गरहितस्मरणँव्विभूषणम् स्वच्छन्दपरिपूर्णस्मरणङ्गन्धः समस्ताविषयाणाम्मनःस्थैर्य्येणानुसन्धानङ्कुसुमन्तेषामेवसर्व्वदा स्वीकरणन्धूपः पवनाच्छिन्नोर्द्ध्वज्वलसच्चिदाल्हादाकाशदेहोदी पः समस्तयातायातिवर्ज्जनन्नैवेद्यम् अवस्थात्रयैकीकरणन्ताम्बूल म् मूलाधारादाब्रह्मरन्ध्रपर्य्यन्तम्ब्रह्मरन्ध्रादामूलाधारपर्य्यन्तङ्ग तागतरूपेणप्रादक्षिण्यन्तुरीयावस्थानंसँस्कारदेहशून्यप्रमादिता वातिमज्जनम्बलिहरणंसत्त्वमास्तिकर्त्तव्यमकर्त्तव्यमौदासीन्यमा त्मविलापनंहोमःभावनाविषयाणामभेदभावनातर्प्पणम् स्वयन्त त्पादुकानिमज्जनम्परिपूर्णध्यानम् एवम्मूर्त्तित्रयम्भावनयायुक्तो मुक्तोभवति तस्यदेवतात्मैक्यासिद्धिःचितिकार्य्याण्यप्रयत्नेनसि द्ध्यन्तिसएवशिवयोगीतिकथ्यते॥इतिषोडश्युपनिषत्समाप्ता॥

अथशतनाम ॥

भृगुरुवाच ॥ चतुर्व्वक्त्रजगन्नाथ स्तोत्रँव्वदमयिप्रभो ॥ यस्यानुष्ठानमात्रेणनरोभक्तिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सहस्रनाम्नामाकृष्य नाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥ गुह्याद्गुह्यतरङ्गुह्यंसुन्दर्य्याःपरिकीर्त्तितम् ॥ २ ॥ ओमस्यश्रीषोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्यशम्भुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीषोडशीदेवताधर्म्मार्त्थकाममोक्षसिद्धयेविनियोगः ॥ ॐत्रिपुराषोडशीमातात्र्यक्षरात्रितयात्रयी ॥ सुन्दरीसुमुखीसेव्यासामवेदपरायणा ॥ ३ ॥ शारदाशब्दनिलया सागरासरिताम्वरा ॥ शुद्धाशुद्धतनुस्साध्वीशिवध्यानपरायणा ॥ ४ ॥ स्वामिनीशम्भुवनिताशाम्भवीचसरस्वती ॥ समुद्रमथिनीशीघ्रगामिनी शीघ्रसिद्धिदा ॥ ५ ॥ साधुसेव्यासाधुगम्या साधुसन्तुष्टमानसा ॥ खट्वाङ्गधारिणीखर्व्वाखड्गखर्प्परधारिणी ॥ ६ ॥ षड्वर्ग्गभावरहिताषड्वर्ग्गपरिचारिका ॥ षड्वर्ग्गाचषडङ्गाचषोढाषोडशवार्षिकी ॥ ७ ॥ क्रतुरूपाक्रतुमतीऋभुक्षाक्रतुमण्डिता ॥ कवर्ग्गादिपवर्ग्गान्ताअन्तस्थानन्तरूपिणी ॥ ८ ॥ अकाराकाररहिताकालमृत्युजरापहा ॥ तन्वीतत्त्वेश्वरीतारात्रिवर्षाज्ञानरूपिणी ॥ ९ ॥ कालीकरालीकामेशीच्छायासञ्ज्ञाप्यरुन्धती ॥ निर्व्विकल्पामहावेगामहोत्साहामहोदरी ॥ १० ॥ मेघाबलाकाविमलाविमलज्ञानदायिनी ॥ गौरीवसुन्धरागोप्त्रीगवाम्पतिनिषेविता ॥ ११ ॥ भगाङ्गाभगरूपाचभक्तिभावपरायणा ॥ छिन्नमस्तामहाधूमातथाधूम्रविभूषणा ॥ १२ ॥ धर्मकर्म्मादिरहिताधर्म्मकर्म्मपरायणा ॥ सीतामातङ्गिनीमेधामधुदैत्यविनाशिनी ॥ १३ ॥ भैरवीभुवनामाताऽभयदाभवसुन्दरी ॥ भावुकाबगलाकृत्याबाला

त्रिपुरसुन्दरी ॥ १४ ॥ रोहिणीरेवतीरम्यारम्भारावणवन्दिता ॥ शतयज्ञमयीसत्वाशतक्रतुवरप्रदा ॥ १५ ॥ शतचन्द्रानना देवीसहस्रादित्यसन्निभा ॥ सोमसूर्य्याग्निनयना व्याघ्रचर्म्माम्बरावृता ॥ १६ ॥ अर्द्धेन्दुधारिणी मत्तामदिरामदिरेक्षणा ॥ इतितेकथितङ्गोप्यन्नाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥ १७ ॥ सुन्दर्य्याःसर्व्वदंसेव्यम्महापातकनाशनम् ॥ गोपनीयङ्गोपनीयङ्गोपनीयङ्कलौ युगे ॥ सहस्रनामपाठस्यफलँय्यद्वैप्रकीर्त्तितम् ॥ १८ ॥ तस्मात्कोटिगुणम्पुण्यंस्तवस्यास्यप्रकीर्तनात् ॥ १९ ॥ पठेत्सदाभक्तियुतोनरोयो निशीथकालेऽप्यरुणोदयेवा ॥ प्रदोषकाले नवमीदिनेऽथवा लभेतभोगान्परमाद्भुतान्प्रियान् ॥ २० ॥ इति ब्रह्मयामलेपूर्व्वखण्डे षोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथसहस्रनाम ॥

कैलासशिखरेरम्येनानारत्नोपशोभिते ॥ कल्पपादपमध्यस्थेनानापुष्पोपशोभिते ॥ मणिमण्डपमध्यस्थेमुनिगन्धर्व्वसेविते ॥ तङ्कश्चित्सुखमासीनम्भगवन्तञ्जगद्गुरुम् ॥ कपालखट्वाङ्गधरञ्चन्द्रार्द्धकृतशेखरम्॥त्रिशूलडमरूहस्तम्महावृषभवाहनम् ॥ जटाजूटधरन्देवँव्वासुकीकण्ठभूषणम् ॥ विभूतिभूषणन्देवन्नीलकण्ठन्त्रिलोचनम् ॥ द्वीपिचर्म्मपरीधानंशुद्धस्फटिकसन्निभम् ॥ सहस्रादित्यसङ्काशङ्गिरिजार्द्धाङ्गभूषणम् ॥ प्रणम्यशिरसा नाथङ्कारणँव्विश्वरूपिणम् ॥ कृताञ्जलिपुटोभूत्वाप्राहैनंशिखिवाहनः ॥ कार्त्तिकेयउवाच ॥ देवदेवजगन्नाथसृष्टिस्थितिलयात्मक ॥ त्वमेवपरमात्माच त्वङ्गतिस्सर्व्वदेहिनाम् ॥ त्वङ्गतिस्सर्व्वलोकानान्दीनानाञ्चत्वमेवहि ॥ त्वमेवजगदाधारस्त्वमेवविश्वकारणः ॥ त्वमेवपूज्यस्सर्व्वेषान्त्वदन्योनास्तिमेगतिः ॥ किङ्गुह्यम्परमँल्लोकेकिमेकंसर्व्वसिद्धिदम्॥ किमेकम्परमंश्रेष्ठङ्कियो

गंस्वर्ग्गमोक्षदम् ॥ विनातीर्त्थैनतपसाविनादानैर्व्विनामखैः ॥ विनालयेनध्योनेननरः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ कस्मादुत्पद्यते सृष्टिःकस्मिंश्चप्रलयोभवेत्॥कस्मादुत्तीर्य्यतेदेवसंसाराण्र्णवसङ्कटात् ॥ तदहंश्रोतुमिच्छामिकथयस्वमहेश्वर ॥ ईश्वरउवाच ॥ साधुसाधुत्वयापृष्टम्पार्व्वतीप्रियनन्दन॥ अस्तिगुह्यतमम्पुत्रकथयिष्याम्यसंशयम् ॥सत्वंरजस्तमश्चैवयेचान्येमहदादयः ॥ येचान्येबहवोभूताःसर्व्वेप्रकृतिसम्भवाः ॥ सैवदेवीपराशक्तिर्म्महात्रिपुरसुन्दरी ॥ सैवप्रसूयतेविश्वँव्विश्वंसैवप्रयास्यति ॥ सैवसंहरते विश्वञ्जगदेतच्चराचरम् ॥ आधारस्सर्व्वभूतानांसैवरोगार्त्तिहारिणी॥इच्छाज्ञानक्रियाशक्तिर्ब्रह्मविष्णुशिवादयः॥ त्रिधाशक्तिस्वरूपेणसृष्टिस्थितिविनाशिनी ॥ सृज्यतेब्रह्मरूपेणविष्णुरूपेणपाल्यते ॥ संहरेद्रुद्ररूपेणजगदेतच्चराचरम् ॥ यस्यायोनौजगत्सर्व्वमद्यापिपरिवर्त्तते ॥ यस्याम्प्रलीयतेचान्तेयस्याञ्चजायतेपुनः ॥ यांसमाराध्यत्रैलोक्यंसम्प्रातम्पदमुत्तमम् ॥ तस्यानामसहस्रन्तु कथयामिशृणुष्वतत् ॥ ॐअस्यश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्यश्रीभगवान्दक्षिणामूर्त्तिर्ऋषिः जगतीच्छन्दः समस्तप्रकटगुप्तसम्प्रदायकुलकौलोत्तीर्ण्णनिर्ग्गर्भरहस्याचिन्त्यप्रभावतीदेवता ॐबीजम्।मायाशक्तिः कामराजबीजकीलकम् जीवोबीजम्सुषुम्नानाडीसरस्वतीशक्तिर्द्धर्म्मार्त्थकाममोक्षार्त्थेजपेविनियोगः ॥ आधारेतरुणार्क्कबिम्बरुचिरंहेमप्रभम्वाग्भवम् बीजम्मन्मथमिन्द्रगोपसदृशंहृत्पङ्कजेसंस्थितम्॥ विष्णुब्रह्मपदस्थशक्तिकलितंसोमप्रभाभासुरँय्येध्यायन्तिपदत्रयन्तवशिवेतेयान्तिसौख्यम्पदम् ॥ कल्याणीकमलाकालीकरालीकामरूपिणी ॥ कामाख्याकामदाकाम्या कामना कामचारिणी ॥ कालरात्रिर्म्महारात्रिः कपालीकालरूपिणी ॥ कौमारी करुणामुक्तिः कलिकल्म

षनाशिनी ॥ कात्यायनीकराधाराकौमुदीकमलप्रिया ॥ कीर्त्तिदा बुद्धिदामेधानीतिज्ञानीतिवत्सला ॥ माहेश्वरीमहामायामहातेजामहेश्वरी ॥ महाजिह्वामहाघोरामहादंष्ट्रामहाभुजा ॥ महामोहान्धकारघ्नीमहामोक्षप्रदायिनी ॥ महादारिद्र्यनाशाचमहाशत्रुविमर्द्दिनी ॥ महामायामहावीर्य्यामहापातकनाशिनी ॥ महामखामन्त्रमयी मणिपूरकवासिनी ॥ मानसीमानदा मान्यामनश्चक्षूरणेचरा ॥गणमाताचगायत्रीगणगन्धर्व्वसेविता ॥ गिरिजागिरिशासाध्वीगिरिस्थागिरिवल्लभा ॥ चण्डेश्वरीचण्डरूपाप्रचण्डाचण्डमालिनी ॥ चर्व्विकाचर्च्चिकाकाराचण्डिकाचारुरूपिणी ॥ यज्ञेश्वरीयज्ञरूपाजपयज्ञपरायणा ॥ यज्ञमातायज्ञभोक्त्रीयज्ञेशीयज्ञसम्भवा ॥ सिद्धयज्ञक्रियासिद्धिर्य्यज्ञाङ्गीयज्ञरक्षिका ॥ यज्ञक्रियायज्ञरूपायज्ञाङ्गीयज्ञरक्षिका ॥ यज्ञक्रियाचयज्ञाचयज्ञायज्ञक्रियालया ॥ जालन्धरीजगन्माता जातवेदाजगत्प्रिया ॥ जितेन्द्रियाजितक्रोधाजननीजन्मदायिनी ॥ गङ्गागोदावरीचैवगोमतीचशतद्रुका ॥ घर्घरावेदगर्भाचरेचिकासमवासिनी ॥ सिन्धुर्म्मन्दाकिनीक्षिप्रायमुनाचसरस्वती ॥ भद्रारागविपाशाचगण्डकीविन्ध्यवासिनी॥ नर्म्मदासिन्धुकावेरीवेत्रवत्यासुकौशिकी ॥ महेन्द्रतनयाचैवअहल्याचर्म्मकावती ॥ अयोध्यामथुरामायाकाशीकाञ्चीअवन्तिका ॥ पुरीद्वारावतीतीर्त्थामहाकिल्बिषनाशिनी ॥ पद्मिनीपद्ममध्यस्थापद्मकिञ्जल्कवासिनी ॥ पद्मवक्त्राचकोराक्षीपद्मस्थापद्मसम्भवा ॥ ह्रीङ्कारीकुण्डलीधारी हृत्पद्मस्थासुलोचना ॥ श्रीङ्कारीभूषणालक्ष्मीःक्लीङ्कारीक्लेशनाशिनी ॥ हरिवक्त्रोद्भवाशान्ताहरिवक्त्रकृतालया ॥ हरिवक्त्रोद्भवाशान्ताहरिवक्षस्स्थलस्थिता ॥ वैष्णवीविष्णुरूपाचविष्णुमातृस्वरूपिणी ॥ विष्णुमायाविशालाक्षी विशालनयनो

ज्ज्वला ॥ विश्वेश्वरी च विश्वात्मा विश्वेशीविश्वरूपिणी ॥ विश्वेश्वरीशिवाराध्याशिवनाथाशिवप्रिया ॥ शिवमाताशिवाख्याचशिवदाशिवरूपिणी ॥ भवेश्वरीभवाराध्याभवेशीभवनायिका ॥ भवमाताभवगम्याभवकण्टकनाशिनी ॥ भवप्रियाभवानन्दाभवानीभवमोहिनी ॥ गायत्रीचैवसावित्रीब्रह्माणीब्रह्मरूपिणी ॥ ब्रह्मेशीब्रह्मदाब्रह्माब्रह्माणीब्रह्मवादिनी ॥ दुर्गस्थादुर्गरूपाचदुर्गादुर्गार्त्तिनाशिनी ॥ सुगमादुर्गमादान्तादयादोग्ध्रीदुरापहा ॥ दुरितघ्नीदुराध्यक्षादुरादुष्कृतनाशिनी ॥ पञ्चास्यापञ्चमीपूर्णापूर्णपीठनिवासिनी ॥ सत्त्वस्थासत्त्वरूपाचसत्त्वस्थासत्त्वसम्भवा ॥ रजस्स्थाचरजोरूपारजोगुणसमुद्भवा ॥ तमस्स्थाचतमोरूपा तामसीतामसप्रिया ॥ तमोगुणसमुद्भूता सात्त्विकीराजसीकला ॥ काष्ठामुहूर्त्तानिमिषाअनिमेषाततः परम् ॥ अर्द्धमासाचमासाचसँव्वत्सरस्वरूपिणी ॥ योगस्थायोगरूपाचकल्पस्थाकल्परूपिणी ॥ नानारत्नविचित्राङ्गीनानाभरणमण्डिता ॥ विश्वात्मिकाविश्वमाताविश्वपाशविनाशिनी ॥ विश्वासकारिणीविश्वाविश्वशक्तिविचक्षणा ॥ यवाकुसुमसङ्काशादाडिमीकुसुमोपमा ॥ चतुरङ्गीचतुर्ब्बाहुश्चतुराचारवासिनी ॥ सर्व्वेशीसर्व्वदासर्व्वासर्व्वदासर्व्वदायिनी ॥ माहेश्वरीचसर्व्वाद्याशर्व्वाणीसर्व्वमङ्गला ॥ नलिनीनन्दिनीनन्दाआनन्दानन्दवर्द्धिनी ॥ व्यापिनीसर्व्वभूतेषुभवभारविनाशिनी ॥ सर्व्वशृङ्गारवेषाढ्यापाशाङ्कुशकरोद्यता ॥ सूर्य्यकोटीसहस्राभाचन्द्रकोटिनिभानना ॥ गणेशकोटिलावण्याविष्णुकोट्यरिमर्द्दिनी ॥ दावाग्निकोटिनलिनी रुद्रकोटयुग्ररूपिणी ॥ समुद्रकोटिगम्भीरा वायुकोटिमहाबला ॥ आकाशकोटिविस्तारायमकोटिभयङ्करी ॥ मेरुकोटिसमुच्छ्रायागणकोटिसमृद्धिदा ॥ निष्कस्तोकानिरा

धारानिर्गुणागुणवर्ज्जिता ॥ अशोकाशोकरहितातापत्रयाविव र्ज्जिता ॥ वसिष्ठाविश्वजननीविश्वाख्याविश्ववर्द्धिनी ॥ चि त्राविचित्राचित्राङ्गीहेतुगर्भाकुलेश्वरी ॥ इच्छाशक्तिर्ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिःशुचिस्मिता ॥ शुचिःस्मृतिमयीसत्याश्रुतिरूपाश्रु तिप्रिया ॥ महासत्त्वमयीसत्त्वापञ्चतत्त्वोपरिस्थिता ॥ पार्व्व तीहिमवत्पुत्रीपारस्थापाररूपिणी ॥ जयन्तीभद्रकालीचअह ल्याकुलनायिका ॥ भूतधात्रीचभूतेशी भूतस्थाभूतभावना ॥ महाकुण्डलिनीशक्तिर्म्महाविभववर्द्धिनी ॥ हंसाक्षीहंसरूपा चहंसस्थाहंसरूपिणी ॥ सोमसूर्य्याग्निमध्यस्था मणिमण्डल वासिनी ॥ द्वादशारसरोजस्था सूर्य्यमण्डलवासिनी ॥ अकल ङ्काशशाङ्काभाषोडशारनिवासिनी ॥ डाकिनीराकिनीचैवलाकि नीकाकिनीतथा ॥ शाकिनीहाकिनीचैवषट्चक्रेषुनिवासिनी ॥ सृष्टिस्थितिविनाशायसृष्टिस्थित्यन्तकारिणी ॥ श्रीकण्ठप्रिय हृत्कण्ठानन्दाख्याविन्दुमालिनी ॥ चतुष्षष्टिकलाधारादेहद ण्डसमाश्रिता ॥ मायाकालीधृतिर्म्मेधाक्षुधातुष्टिर्म्महाद्युतिः ॥ हिङ्गुलामङ्गलासीतासुषुम्नामध्यगामिनी ॥ परघोराकराला क्षीविजयाजयदायिनी ॥ हृत्पद्मनिलयाभीमामहाभैरवनादि नी ॥ आकाशलिङ्गसम्भूताभुवनोद्यानवासिनी ॥ महत्सूक्ष्मा चकङ्कालीभीमरूपामहाबला ॥ मेनकागर्भसम्भूतातप्तकाञ्चन सन्निभा ॥ अन्तरस्थाकूटबीजात्रिकूटाचलवासिनी ॥ वर्णा ख्यावर्णरहितापञ्चाशद्वर्णभेदिनी ॥ विद्याधरीलोकधात्रीअप्स राअप्सरःप्रिया ॥ दीक्षादाक्षायणीदक्षादक्षयज्ञविनाशिनी ॥ यशःपूर्णायशोदाचयशोदागर्भसम्भवा ॥ देवकीदेवमाताचरा धिकाकृष्णवल्लभा ॥ अरुन्धतीशचीन्द्राणीगान्धारीगन्धमालि नी ॥ ध्यानातीताध्यानगम्याध्यानज्ञाध्यानधारिणी ॥ लम्बो

दरीचलम्बोष्ठीजाम्बवन्तीजलोदरी ॥ महोदरीमुक्तकेशीमुक्त कामार्त्थसिद्धिदा ॥ तपस्विनीतपोनिष्ठासुपर्णाधर्म्मवासिनी ॥ बाणचापधराधीरापाञ्चालीपञ्चमप्रिया ॥ गुह्याङ्गीचसुभीमाच गुह्यतत्त्वानिरञ्जना ॥ अशरीराशरीरस्थासंसाराण्र्णवतारिणी ॥ अमृतानिष्कलाभद्रासकलाकृष्णपिङ्गला ॥ चक्रप्रियाचचक्राह्वापञ्चचक्रादिदारिणी ॥ पद्मरागप्रतीकाशानिर्म्मलाकाशसन्निभा ॥ अधःस्थाऊर्द्धरूपाच ऊर्द्धपद्मनिवासिनी ॥ कार्य्यकारणकर्त्तृत्वेशश्वद्रूपेषुसंस्थिता ॥ रसज्ञारसमध्यस्थागन्धस्थागन्धरूपिणी ॥ परब्रह्मस्वरूपाचपरब्रह्मनिवासिनी ॥ शब्दब्रह्मस्वरूपाचशब्दस्थाशब्दवर्ज्जिता ॥ सिद्धिर्ब्बुद्धिःपराबुद्धिः सन्दीतिर्म्मध्यसंस्थिता ॥ स्वगुह्याशाम्भवीशक्तिस्तत्त्वस्थातत्त्वरूपिणी ॥ शाश्वतीभूतमाताचमहाभूताधिपप्रिया ॥ शुचिप्रेताधर्म्मसिद्धिर्द्धर्म्मवृद्धिःपराजिता ॥ कामसन्दीपिनीकामासदाकौतूहलप्रिया ॥ जटाजूटधरामुक्तासूक्ष्माशक्तिविभूषणा ॥ द्वीपिचर्म्मपरीधानाचीरवल्कलधारिणी ॥ त्रिशूलडमरुधरानरमालाविभूषणा ॥ अत्युग्ररूपिणीचोग्राकल्पान्तदहनोपमा ॥ त्रैलोक्यसाधिनीसाध्यासिद्धिसाधकवत्सला ॥ सर्व्वविद्यामयीसाराचासुराणाँव्विनाशिनी ॥ दमनीदामनीदान्तादयादोग्ध्रीदुरापहा ॥ अग्निजिह्वोपमाघोराघोरघोरतरानना ॥ नारायणीनारसिंहीनृसिंहहृदयेस्थिता ॥ योगेश्वरीयोगरूपायोगमाताचयोगिनी ॥ खेचरीखचरीखेलानिर्व्वाणपदसंश्रया ॥ नागिनीनागकन्याचसुवेशानागनायिका ॥ विषज्वालावतीदीप्ता कलाशतविभूषणा ॥ तीव्रवक्त्रामहावक्त्रानागकोटित्वधारिणी ॥ महासत्त्वाचधर्म्मज्ञाधर्म्मातिसुखदायिनी ॥ कृष्णमूर्द्धामहामूर्द्धाघोरमूर्द्धावरानना ॥ सर्व्वेन्द्रियमनोन्मत्तासर्व्वेन्द्रियमनोमयी ॥

सर्व्वसङ्ग्रामजयदासर्व्वप्रहरणोद्यता॥सर्व्वपीडोपशमनीसर्व्वारिष्टनिवारिणी ॥ सर्व्वैश्वर्य्यसमुत्पन्नासर्व्वग्रहविनाशिनी ॥ मातङ्गीमत्तमातङ्गीमातङ्गीप्रियमण्डला ॥ अमृतोदधिमध्यस्थाकटिसूत्रैरलङ्कृता ॥ अमृतोदधिमध्यस्थाप्रवालवसनाम्बुजा ॥ मणिमण्डलमध्यस्थाईषत्प्रहसिताननाः ॥ कुमुदाललितालोलालाक्षालोहितलोचना ॥ दिग्वासादेवदूतीचदेवदेवाधिदेवता ॥ सिंहोपरिसमारूढा हिमाचलनिवासिनी ॥ अट्टाट्टहासिनीघोराघोरदैत्यविनाशिनी ॥ अत्युग्ररक्तवस्त्राभानागकेयूरमण्डिता ॥ मुक्ताहारलतोपेतातुङ्गपीनपयोधरा ॥ रक्तोत्पलदलाकारामदाघूर्णितलोचना ॥ समस्तदेवतामूर्त्तिःसुरारिक्षयकारिणी ॥ खड्गिनीशूलहस्ताचचक्रिणीचक्रमालिनी ॥ शङ्खिनीचापिनीबाणीवज्रिणीवज्रदण्डिनी ॥ आनन्दोदधिमध्यस्थाकटिसूत्रैरलङ्कृता ॥ नानाभरणदीप्ताङ्गानानामणिविभूषिता ॥ जगदानन्दसम्भूताचिन्तामणिगुणान्विता ॥ त्रैलोक्यनमितातुर्य्याचिन्मयानन्दरूपिणी ॥ त्रैलोक्यनन्दिनीदेवीदुःखदुस्स्वप्ननाशिनी ॥ घोराग्निदाहशमनीराज्यदेवार्थसाधिनी ॥ महापराधराशिघ्नोमहाचौरभयापहा ॥ रागादिदोषरहिताजरामरणवर्ज्जिता ॥ चन्द्रमण्डलमध्यस्थापीयूषार्णवसम्भवा ॥ सर्व्वदेवैःस्तुतादेवीसर्व्वसिद्धैर्न्नमस्कृता ॥ अचिन्त्यशक्तिरूपाचमणिमन्त्रमहौषधी ॥ अस्तिस्वस्तिमयीबालामलयाचलवासिनी ॥ धात्रीविधात्रीसंहारी रतिज्ञारतिदायिनी ॥ रुद्राणीरुद्ररूपाचरुद्ररौद्रार्त्तिनाशिनी ॥ सर्व्वज्ञाचैवधर्म्मज्ञारसज्ञादीनवत्सला ॥ अनाहतात्रिनयनानिर्भारानिर्व्वृतिः परा ॥ पराघोराकरालाक्षीसुमतीश्रेष्ठदायिनी ॥ मन्त्रालिकामन्त्रगम्यामन्त्रमालासुमन्त्रिणी ॥ श्रद्धानन्दामहाभद्रानिर्द्वन्द्वानिर्गुणात्मिका ॥ धरिणीधारिणीपृथ्वीधरा

धात्रीवसुन्धरा॥मेरुमन्दरमध्यस्थास्थितिःशङ्करवल्लभा॥श्रीमती
श्रीमयीश्रेष्ठाश्रीकरीभावभाविनी ॥ श्रीदाश्रीमाश्रीनिवासाश्री
मतीश्रीमताङ्गतिः॥उमासारङ्गिणीकृष्णाकुटिलाकुटिलालका ॥
त्रिलोचनात्रिलोकात्मापुण्यपुण्याप्रकीर्त्तिता ॥ अमृतासत्यस
ङ्कल्पासासत्याग्रन्थिभेदिनी ॥ परेशीपरमासाध्यापराविद्यापरा
त्परा ॥ सुन्दराङ्गीसुवर्ण्णाभासुरासुरनमस्कृता ॥ प्रजाप्रजावती
धन्याधनधान्यसमृद्धिदा ॥ ईशानीभुवनेशानीभवानीभुवने
श्वरी ॥ अनन्तानन्तमहिताजगत्साराजगद्भवा ॥ अचिन्त्या
त्माचिन्त्यशक्तिश्चिन्त्याचिन्त्यस्वरूपिणी ॥ ज्ञानगम्याज्ञानमू
र्त्तिर्ज्ज्ञानिनीज्ञानशालिनी ॥ असिताघोररूपाचसुधाधारासुधाव
हा॥भास्करी भास्वतीभीतिर्भास्वदक्षानुशायिनी ॥ अनसूयाक्ष
मालज्जादुर्लभाभरणात्मिका ॥ विश्वघ्नीविश्ववीराचविश्वघ्नीवि
श्वसंस्थिता ॥ शीलस्थाशीलरूपाचशीलाशीलप्रदायिनी ॥
बोधनीबोधकुशलारोधनीबोधनीतथा ॥ विद्योतिनीविचित्रात्मा
विद्युत्पटलसन्निभा ॥ विश्वयोनिर्म्महायोनिःकर्म्मयोनिः प्रिया
त्मिका ॥ रोहिणीरोगशमनीमहारोगज्वरापहा ॥ रसदापुष्टिदापु
ष्टिर्म्मानदामानवप्रिया ॥ कृष्णाङ्गवाहिनीकृष्णाकृष्णाकृष्णसहो
दरी ॥ शाम्भवीशम्भुरूपाचशम्भुस्थाशम्भुशम्भवा॥विश्वोदरी
योगमाता योगमुद्राग्नयोगिनी ॥ वागीश्वरीयोगनिद्रायोगिनी
कोटिसेविता ॥ कौलिकामन्दकन्याचशृङ्गारपीठवासिनी ॥ क्षेम
ङ्करीसर्व्वरूपादिव्यरूपादिगम्बरी ॥ धूम्रवक्राधूम्रनेत्राधूम्रके
शीचधूसरा ॥ पिनाकीरुद्रवेतालीमहावेतालरूपिणी ॥ तपिनी
तापिनीदीक्षाविष्णुविद्यात्मनाश्रिता ॥ मन्थराजठरातीव्राअग्नि
जिह्वाभयापहा ॥ पशुघ्नीपशुरूपाचपशुहापशुवाहिनी ॥ पिता
माताचधीराचपशुपाशविनाशिनी ॥ चन्द्रप्रभा चन्द्ररेखाचन्द्र

कान्तिविभूषिणी ॥ कुङ्कुमाङ्कितसर्वाङ्गीसुधासद्गुरुलोचना ॥ शुक्लाम्बरधरादेवीवीणापुस्तकधारिणी ॥ ऐरावतपद्मधाराश्वेतपद्मासनस्थिता ॥ रक्ताम्बरधरादेवीरक्तपद्मविलोचना ॥ दुस्तरातारिणीतारातरुणीताररूपिणी ॥ सुधाधाराचधर्म्मज्ञाधर्म्मसङ्गोपदेशिनी ॥ भगेश्वरीभगाराध्याभागिनीभगनायिका ॥ भगबिम्बाभगक्लिन्नाभगयोनिर्भगप्रदा ॥ भगेश्वरीभगाराध्याःभगिनी भगनायका ॥ भगेशीभगरूपाचभगगुह्याभगावहा ॥ भगोदरीभगानन्दाभगस्थाभगशालिनी ॥ सर्व्वसङ्क्षोभिणीशक्तिस्सर्व्वविद्राविणीतथा ॥ मालिनीमाधवीमाध्वीमधुरूपामहोत्कटा ॥ भरुण्डचन्द्रिकाज्योत्स्नाविश्वचक्षुस्तमोपहा ॥ सुप्रसन्नामहादूतीयमदूतीभयङ्करी ॥ उन्मादिनीमहारूपादिव्यरूपासुरार्च्चिता ॥चैतन्यरूपिणीनित्याक्लिन्नाकाममदोद्धता ॥ मदिरानन्दकैवल्यामदिराक्षीमदालसा ॥ सिद्धेश्वरीसिद्धविद्यासिद्धाद्यासिद्धसम्भवा ॥ सिद्धर्द्धिःसिद्धमाताचसिद्धिस्सर्व्वार्त्थसिद्धिदा ॥ मनोमयीगुणातीतापरञ्ज्योतिःस्वरूपिणी ॥ परेशीपरगापारापरासिद्धिःपरागतिः ॥ विमलामोहिनीआद्यामधुपानपरायणा ॥ वेदवेदाङ्गजननीसर्व्वशास्त्रविशारदा ॥ सर्व्वदेवमयीविद्यासर्व्वशास्त्रमयी तथा ॥ सर्व्वज्ञानमयीदेवीसर्व्वधर्म्ममयीश्वरी ॥ सर्व्वयज्ञमयी यज्ञासर्व्वमन्त्राधिकारिणी ॥ सर्व्वसम्पत्प्रतिष्ठात्रीसर्व्वविद्राविणी परा ॥ सर्व्वसङ्क्षोभिणीदेवीसर्व्वमङ्गलकारिणी ॥ त्रैलोक्याकर्षिणीदेवी सर्व्वाह्लादनकारिणी ॥ सर्व्वसम्मोहिनीदेवीसर्व्वस्तम्भनकारिणी ॥ त्रैलोक्यजृम्भिणीदेवीतथासर्व्ववशङ्करी ॥ त्रैलोक्यरञ्जिनीदेवी सर्व्वसम्पत्तिदायिनी ॥ सर्व्वमन्त्रमयीदेवीसर्व्वद्वन्द्वक्षयङ्करी ॥ सर्व्वसिद्धिप्रदादेवीसर्व्वसम्पत्प्रदायिनी॥ सर्व्वप्रियकरीदेवी सर्व्वमङ्गलकारिणी ॥सर्व्वकामप्रदादेवीसर्व्वदुःखविमोचिनी सर्व्व

मृत्युप्रशमनीसर्व्वविघ्नविनाशिनी ॥ सर्व्वाङ्गसुन्दरीमातासर्व्वसौभाग्यदायिनी॥सर्व्वज्ञासर्व्वशक्तिश्चसर्व्वैश्वर्य्यफलप्रदा ॥ सर्व्वज्ञानमयीदेवीसर्व्वव्याधिविनाशिनी ॥सर्व्वाधारस्वरूपाचसर्व्वपापहरातथा ॥ सर्व्वानन्दमयीदेवीसर्व्वेक्षायाः स्वरूपिणी ॥ सर्व्वलक्ष्मीमयीविद्यासर्व्वेप्सितफलप्रदा ॥ सर्व्वारिष्टप्रशमनीपरमानन्ददायिनी ॥ त्रिकोणनिलयात्रिस्थात्रिमात्रात्रितनुस्थिता ॥ त्रिवेणी त्रिपथात्रिस्थात्रिमूर्त्तिस्त्रिपुरेश्वरी ॥ त्रिधाम्नीत्रिदशाध्यक्षात्रिवित्रिपुरवासिनी ॥ त्रयीविद्याचत्रिशिरात्रैलोक्याचत्रिपुष्करा ॥ त्रिकोटरस्थात्रिविधात्रिपुरात्रिपुरात्मिका ॥ त्रिपुराश्रीत्रिजननी त्रिपुरात्रिपुरसुन्दरी ॥ इदन्त्रिपुरसुन्दर्य्यास्तोत्रन्नामसहस्रकम् ॥ गुह्याद्गुह्यतरम्पुत्रतवप्रीत्यैप्रकीर्त्तितम् ॥ गोपनीयम्प्रत्नेन पठनीयम्प्रयत्नतः ॥ नात ऽ परतरम्पुण्यन्नातऽपरतरन्तपः ॥ नातऽपरतरंस्तोत्रन्नातःपरतरागतिः ॥ स्तोत्रं सहस्रनामाख्यंममवक्राद्विनिर्गतम् ॥ यऽपठेत्प्रयतोभक्त्याशृणुयाद्वासमाहितः ॥ मोक्षात्र्थीलभतेमोक्षंस्वर्ग्गार्त्थीस्वर्ग्गमाप्नुयात् ॥ कामांश्चप्राप्नुयात्कामीधनार्त्थीचलभेद्धनम् ॥ विद्यार्त्थीलभतेविद्याय्यशोर्त्थीलभतेयशः ॥ कन्यार्त्थीलभतेकन्यांसुतार्त्थीलभतेसुतम्। गुर्व्विणीजनयेत्पुत्रङ्कन्याविन्दातिसत्पतिम्॥मूर्खोऽपिलभतेशास्त्रं हीनोऽपिलभतेगतिम् ॥ सङ्क्रान्त्यांव्वार्कामावस्यामष्टम्याञ्चविशेषतः॥ पौर्णमास्याञ्चतुर्द्दश्यान्नवम्याम्भौमवासरे॥पठेद्वापाठयेद्वापिशृणुयाद्वासमाहितः॥ समुक्तस्सर्वपापेभ्यऽ कामेश्वरसमोभवेत् ॥ लक्ष्मीवान्धनवांश्चैववल्लभस्सर्व्वयोषिताम् ॥ तस्यवश्यम्भवेदाशुत्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ रुद्रन्दृष्ट्वायथादेवाविष्णुन्दृष्ट्वाचदानवाः ॥ यथाहिर्ग्गरुडन्दृष्ट्वासिंहन्दृष्ट्वायथागजाः ॥ कीटवत्प्रपलायन्तेतस्यवक्त्रावलोकनात्॥ अग्निचौरभयन्तस्यकदा

चिन्नैवसम्भवेत्॥ पातकाविविधाःशान्तिम्मेरुपर्व्वतसन्निभाः॥ यस्मात्तच्छृणुयाद्विद्वांस्तृणँव्वह्निहुतँय्यथा॥ एकदापठनादेवसर्व्वं पापक्षयोभवेत्॥ दशधापठनादेववाचासिद्धिःप्रजायते॥ शतधापठनाद्वापिखेचरोजायतेनरः॥सहस्रदशसङ्ख्यतय्यःपठेद्भक्तिमानसः॥ मातास्यजगतान्धात्री प्रत्यक्षाभवतिध्रुवम्॥ लक्षपूर्णेयथापुत्रस्तोत्रराजम्पठेत् सुधीः॥ भवपाशविनिर्म्मुक्तोममतुल्योनसंशयः॥ सर्व्वतीर्त्थेषुयत्पुण्यंसकृज्जप्त्वालभेन्नरः॥ सर्व्ववेदेषुयत्प्रोक्तन्तत्फलम्परिकीर्त्तितम्॥ भूत्वाचबलवान्पुत्रधनवान्सर्व्वसम्पदः॥देहान्तेपरमंस्थानँय्यत्सुरैरपिदुर्ल्लभम्॥सयास्यतिनसन्देहःस्तवराजस्यकीर्त्तनात्॥ इतिश्रीवामकेश्वरतन्त्रेहरकुमारसँव्वादेमहात्रिपुरसुन्दर्य्याःषोडश्याःसहस्रनामस्तोत्रंसमाप्तम्॥

इति शाक्तप्रमोदे त्रिपुरसुन्दरीषोडशी
तन्त्रं समाप्तम्॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.
खेमराज श्रीकृष्णदास.
श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना.
बम्बई.

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-
श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-
संगृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं
चतुर्थं
भुवनेश्वरीतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-
दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्
श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन
मुम्बय्यां
स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ॥

भुवनेश्वरीतन्त्रम् ॥



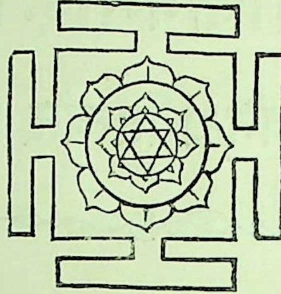
अथ भुवनेश्वरीध्यानम् ॥

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटान्तुङ्गकुचान्नयनत्रययुक्ताम् ॥ स्मेरमुखीँव्वरदाङ्कुशपाशाभीतिकराम्प्रभजेभुवनेशीम् ॥



अथ यन्त्रोद्धारः ॥

पद्ममष्टदलम्बाह्येवृत्तंषोडशभिर्द्दलैः ॥ विलिखेत्कर्णिकामध्ये षट्कोणमतिसुन्दरम् ॥ चतुरस्रञ्चतुर्द्वारमेवम्मण्डलमालिखेत् ॥



अथ मन्त्रोद्धारः ॥

नकुलीशोग्निमारूढोवामनेत्रार्द्धचन्द्रवत् ॥ वीजन्तस्याःस माख्यातंसेवितंसिद्धिकाङ्क्षिभिः ॥

अथ मन्त्रः " ह्रीँ "

अथ पूजाप्रयोगः ॥

प्रातःकृत्यादिपीठन्यासान्तङ्कर्म्मविधायकेसरेषुमध्येच पीठ शक्तीन्न्यसेत् । ॐजयायैनमः एवँविजयायैनमः अजितायै०अ पराजितायै०नित्यायै० विलासिन्यै० दोग्ध्र्यै०अघोरायै०मङ्गला यै०कर्णिकायाम्ह्रीँसर्व्वशक्तिकमलासनायनमः।ततः ऋष्यादि न्यासः । अस्यभुवनेश्वरीमन्त्रस्यशक्तिर्ऋषिर्ग्गायत्रीछन्दोभुवने श्वरीदेवताहकारोवीजम् ईकारःशक्तिःरेफःकीलकम् चतुर्व्वर्गसि द्ध्यर्त्थेविनियोगः । शिरसिशक्तयेऋषयेनमः । मुखेगायत्रीछन्द सेनमः । हृदिभुवनेश्वर्य्यै देवतायैनमः । गुह्येहकाराय वीजाय नमः । पादयोःईकारायशक्तयेनमः । सर्व्वाङ्गेरकारायकीलका यनमः । ततोन्यासः । शिरसिॐह्ल्लेखायैनमः वदनेऐँगगनायै नमः हृदयेऊँरक्तायैनमः गुह्येइँकरालिकायैनमः पादयोः अँम

ह्रोच्छुष्मायैनमः ऊर्द्धप्राग्दक्षिणोदीच्यपश्चिमेषु मुखेषु ता वि न्यसेत् । हृल्लेखाम्मूर्द्धिवदनेगगनां हृदयाम्बुजे ॥ रक्ताङ्गरालि काङ्गुह्ये महोच्छुष्माम्पदद्वये ॥ सत्यादिपञ्चन्हस्वाढ्यान्यस्तव्या भूतसप्रभाः ॥ ततःकराङ्गन्यासौ । ह्रांअङ्गुष्ठाभ्यान्नम ह्रींत र्ज्जनीभ्यांस्वा० ह्रूँमध्यमाभ्यांवषट् ह्रैंअनामिकाभ्यांहूम् ह्रौं कनिष्ठिकाभ्याँव्वौषट् ह्रःकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् एवँहृदयादि षु॥षड्दीर्ग्घभाजाबीजेनकुर्य्यादङ्गक्रियाम्मनोः।स्वच्छन्दसङ्ग्रहे ॥ स्वरँव्विहायबीजन्तुदीर्ग्घषट्केनयोजयेत् । षडङ्गानिविधेयानि सर्व्वत्रायँव्विधिःस्मृतः । अङ्गुलीनियमस्तु पूर्व एवोक्तः । क राङ्गन्यासे एवङ्क्रमः । ततःभाले ॐगायत्रीसहितब्रह्मणेनमः । दक्षिणकपोले ॐसावित्रीसहितविष्णवेनमः । वामकपोले ॐवा गीश्वरीसहितमहेश्वरायनमः । वामकर्ण्णे ॐश्रीसहितधनपतयेन मः । मुखे ॐरतिसहितस्मरायनमः । दक्षिणकर्ण्णोपरि ॐपुष्टिस हितगणपतयेनमः । इतिन्यसेत् । एवङ्कण्ठमूले दक्षस्तनवामां सहृदयदक्षिणांसदक्षिणपार्श्ववामपार्श्वनाभिदेशेषुब्राह्म्यादि न्यसेत्॥ वर्ण्णभिन्नन्यासोविश्वसारे । ॐकारादिनमोन्तश्चविन्यसे त्तुयथास्थिति ॥ विधिनाविन्यसेत्सर्व्वंशङ्करस्यमतेनच ॥ ए वंसर्व्वत्र ॥ ततो ललाटे ॐब्राह्म्यैनमः । वामांसे ॐमाहे श्वर्य्यैनमः । वामपार्श्वे ॐकौमार्य्यैनमः । जठरे ॐवैष्णव्यैन मः । दक्षिणपार्श्वे ॐवाराह्यैनमः । दक्षिणांसे ॐइन्द्राण्यैनमः । ककुदि ॐ चामुण्डायैनमः।हृदि ॐमहालक्ष्म्यैनम ः । इतिविन्य स्य मूलेनव्यापकत्रयङ्कुर्य्यात् ॥ ततोध्यानम्॥ "उद्यदिनद्युतिमि न्दुकिरीटान्तुङ्गकुचान्नयनत्रययुक्ताम् ॥ स्मेरमुखीँव्वरदाङ्कुशपा शाभीतिकराम्प्रभजेभुवनेशीम् ॥१॥" एवन्ध्यात्वा मानसैः सम्पू ज्यबहिःपूजामारभेत्।पूजायन्त्रम् ॥पद्ममष्टदलम्बाह्येवृत्तंषोडश

भिर्द्दलैः ॥ विलिखेत्कर्ण्णिकामध्येषट्कोणमतिसुन्दरम् ॥ चतुरस्र श्चतुर्द्वारमेवम्मण्डलमालिखेत् ॥ ततोदीक्षापद्धत्युक्तपीठपूजाङ्कृत्वा पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा । पूर्वादिकेसरेषु जयायै० विजयायै०अजितायै०अपराजितायै० नित्यायै० विलासिन्यै ० दोग्ध्र्यै० अघोरायै० मध्ये मङ्गलायै० प्रणवादिनमोन्तेनपूजयेत् । तदुपरिह्रीँ सर्वशक्तिकमलासनायनमः ॥ निबन्धे ॥ ततस्सम्पूजयेत्पीठन्नानाशक्तिसमन्वितम् ॥ जयाख्यांविजयांपश्चादजितां चापराजिताम् ॥ नित्याँव्विलासिनीन्दोग्ध्रीमघोराम्मङ्गलामपि ॥ वीजाद्यमासनन्दत्वामूर्त्तिन्तत्रैवकलपयेत् । ततः पूर्ववद्ध्यात्वाऽऽवाहनादिपञ्चपुष्पाञ्जलिदानपर्य्यन्ताँव्विधाय । केसरेषु ऐशान्यादिकोणे मध्ये दिक्षुच । ततोह्रीँहृदयायनम इत्यादिनाषडङ्गेनपूजयित्वापञ्चपुष्पाञ्जलीन्दद्यात् । तत आवरणपूजा । कर्ण्णिकामध्ये ॐ हृल्लेखायैनमः । पूर्वे ऐंगगनायै० । दक्षिणे ऊंरक्तायै० । उत्तरे ईंकरालिकायै० । पश्चिमेहूँम होच्छुष्मायै ० । षट्कोणे पूर्वे ॐगायत्र्यैनमः ॐब्रह्मणेनमः । नैर्ऋत्ये ॐसावित्र्यैनमः ॐ विष्णवेनमः । वायव्ये ॐसरस्वत्यै नमः ॐ रुद्रायनमः । वन्हिकोणे ॐ श्रियैनमः ॐधनपतयेनमः । पश्चिमे ॐ रत्यैनमः ॐ स्मरायनमः । ऐशान्यामुपुष्ट्यैनम ॐ ॐगणपतयेनमः । षट्कोणस्योभयपार्श्वयोः ॐशङ्खनिधयेनमः ॐपद्मनिधयेनमः । केसरेषुअग्निनैर्ऋतिवाय्वीशानाग्रेषुचतुर्द्दिक्षुचह्रीँहृदयायनमइत्यादिनाषडङ्गेनपूजयेत् । तथाचनिबन्धे। केसरेष्वग्निकोणादिहृदयादीनिपूजयेत् ॥नेत्रमग्निदिशाद्यन्तन्ध्यातव्याश्चाङ्गदेवताः॥एवंसर्वत्र ॥ भैरव्यादौतुविशेषोवक्तव्यः । अष्टदलेषुपूर्वादिक्रमेण । ॐअनङ्गकुसुमायैनमः एवमनङ्गकुसुमातुरायैनमः अनङ्गमदनायै ० अनङ्गमदनातुरायै० भुवनपालायै०

गगनवेगायै ० शशिरेखायै ० ॥ षोडशदलेषुपूर्व्वादिदिक्षु ॐक्रालिन्यै ० एवं विकरालिन्यै ० उमायै० सरस्वत्यै ० श्रियै ० दुर्गायै ० उषायै ० लक्ष्म्यै ० श्रुत्यै ० स्मृत्यै०धृत्यै ० श्रद्धायै० मेधायै ० मत्यै० कान्त्यै० आर्य्यायै० । पश्चाद्बहिः पूर्व्वादिदिक्षु अनङ्गरूपायै० अनङ्गमदनायै०मदनातुरायै० भुवनवेगायै० भुवनपालिकायै०सर्व्वशिशिरायै० अनङ्गवेदनायै० अनङ्गमेखलायै०प्रणवादिनमोन्तेनपूजयेत् तद्बहिर्ग्गृहेपूर्व्वादि ॐलांइन्द्रायदेवाधिपतयेसायुधायेत्यादि०रंअग्नयेतेजोधिपतयेसायुधायेत्यादि० यंयमायप्रेताधिपतयेसायुधायेत्यादि ० क्षांनिर्ऋतयेरक्षोधिपतयेसायुधायेत्यादि ० वंवरुणायजलाधिपतयेसायुधायेत्यादि० वां वायवेप्राणाधिपतयेसायुधायेत्यादि० संसोमायताराधिपतयेसायुधायेत्यादि० हांईशानायगणाधिपतयेसायुधायेत्यादि० इन्द्रेशानयोर्म्मध्ये आँब्रह्मणेप्रजाधिपतयेसायु० निर्ऋतिवरुणयोर्म्मध्ये ह्रींअनन्तायनागाधिपतयेसायु० । तथाच । लोकपालाबहिः पूज्याःसमस्ताश्चतुरस्रके ॥ पुरुहूतेशयोर्म्मध्ये रक्षोवरुणयोस्तथा ॥ ब्रह्मविष्णूसदापूज्यौ दिगीशार्च्चाँव्विदुर्ब्बुधाः ॥ इन्द्रादिलोकपालानाँय्येमन्त्रास्तेध्रुवादिकाः ॥ स्वस्वबीजान्विताःसर्व्वेचतुर्थ्यन्तनमोन्तकाः इति वचनात् । सर्व्वत्रप्रणवादि । एतेषाम्बीजान्याहु ऽ क्रियासारे । पृथ्व्यग्निपवनाद्यन्तवरुणानिलसेश्वरैः ॥ अनन्तबिन्दुसँयुक्तैरच्चर्याऽपाशेनमायया ॥ तथाचयामले । अन्तेयज्ञेलोकपालान्मूलपारिदधान्वितान् ॥ हेतिजात्यधिपोपेतान् दिक्षुपूर्व्वादितोयजेत् ॥ सवाहनायेतिदीपिका । तद्बहिःपूर्व्वादि वज्राय शक्तये दण्डाय खड्गाय पाशाय अङ्कुशाय गदायै शूलाय पद्माय चक्राय प्रणवादिनमोऽन्तेनपूजयेत्। ततोधूपादिविसर्ज्जनान्तङ्कर्म्मसमापयेत् । अस्यपुरश्चरणन्द्वा

त्रिंशल्लक्षजपम्प्रजपेत् मन्त्रन्द्वात्रिंशल्लक्षमानसः ॥ त्रिस्वादुयुक्तै र्ज्जुहुयादष्टद्रव्यैर्द्दशांशतः ॥ अष्टद्रव्याणियथा । अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधसमिधस्तिलाः ॥ सिद्धार्त्थपायसाज्यानिद्रव्याण्यष्टौविदुर्ब्बुधाः ॥ त्रिस्वाद्विति घृतमधुशर्क्करेति ॥ इतिभुवनेश्वरीपूजापद्धतिः ॥

अथ स्तोत्रम् ॥

अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥ ईडे सकलसम्पत्त्यै जगत्कारणमम्बिकाम् ॥ १ ॥ विद्यामशेषजननीमरविन्दयोनेर्व्विष्णोः शिवस्यचवपुः प्रतिपादयित्रीम् ॥ सृष्टिस्थितिक्षयकरीञ्जगतान्त्रयाणां स्तुत्वागिरँव्विमलयाम्यहमम्बिके त्वाम् ॥ २ ॥ पृथ्व्याजलेनशिखिनामरुताम्बरेणहोत्रेन्दुनादिनकरेणचमूर्त्तिभाजः ॥ देवस्यमन्मथरिपोरपिशक्तिमत्ताहेतुस्त्वमेव खलुपर्व्वतराजपुत्रि ॥ ३ ॥ त्रिस्रोतसः सकलदेवसमर्च्चिताया वैशिष्टचकारणमवैमितदेवमातः ॥ त्वत्पादपङ्कजपरागपवित्रितासुशम्भोर्ज्जटासुसततम्परिवर्त्तनँय्यत् ॥ ४ ॥ आनन्दयेत्कुमुदिनीमधिपः कलानान्नान्यामिनः कमलिनीमथनेतराँव्वा ॥ एकस्यमोदनविधौपरमेकमीष्टे त्वन्तुप्रपञ्चमभिनन्दयसिस्वदृष्ट्या ॥ ५ ॥ आद्याप्यशेषजगतान्नवयौवनासिशैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि ॥ त्रय्याःप्रसूरपितयानसमीक्षितासिध्येयासिगौरिमनसोनपथिस्थितासि ॥ ६ ॥ आसाद्यजन्ममनुजेषुचिराद्दुरापन्तत्रापिपाटवमवाप्यनिजेन्द्रियाणाम् ॥ नाभ्यर्च्चयन्तिजगताञ्जनयित्रियेत्वान्निश्रेणिकाग्रमधिरुह्यपुनः पतन्ति ॥ ७ ॥ कर्प्पूरचूर्णहिमवारिविलोडितेन येचन्दनेनकुसुमैश्चसुजातगन्धैः ॥ आराधयन्तिहिभवानिसमुत्सुकास्त्वान्तेखल्वखण्डभुवनाधि

भुवःप्रथन्ते ॥ ८ ॥ आविश्यमध्यपदवीम्प्रथमेसरोजेसुप्ताहिराजसदृशीविरचय्यविश्वम् ॥ विद्युल्लतावलयविभ्रममुद्वहन्तीपद्मानिपञ्चविदलय्यसमश्नुवाना ॥ ९ ॥ तन्निर्ग्गतामृतरसैरभिषिच्यगात्रम्मार्ग्गेणतेनविलयम्पुनरप्यवाप्ता ॥ येषांहृदिस्फुरसिजातुनतेभवेयुर्म्मातर्म्महेश्वरकुटुम्बिनिगर्भभाजः ॥१०॥ आलम्बिकुण्डलभराभिरामवक्त्रामापीवरस्तनतटीन्तनुवृत्तमध्याम् ॥ चिन्ताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्तामावर्त्तयामिमनसातवगौरिमूर्त्तिम् ॥ ११ ॥ आस्थाययोगमविजित्यचवैरिषट्कमाबध्यचेन्द्रियगणम्मनसिप्रसन्ने ॥ पाशाङ्कुशाभयवराढ्यकरांसुवक्त्रामालोकयन्तिभुवनेश्वरियोगिनस्त्वाम् ॥ १२ ॥ उत्तप्तहाटकनिभाङ्करिभिश्चतुर्भिरावर्त्तितामृतघटैरभिषिच्यमाना ॥ हस्तद्वयेननलिनेरुचिरेवहन्तीपद्मापिसाभयकराभवसित्वमेव ॥ १३ ॥ अष्टाभिरुग्रविविधायुधवाहिनीभिर्दोर्व्वल्लरीभिरधिरुह्यमृगाधिवासम् ॥ दूर्व्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान्न्यक्कुर्व्वतीत्वमासिदेविभवानिदुर्गे ॥ १४ ॥ आविर्न्निदाघजलशीकरशोभिवक्त्राङ्गुञ्जाफलेनपरिकल्पितहारयष्टिम् ॥ रत्नांशुकामसितकान्तिमलङ्कृतान्त्वामाद्यामपुलिन्दतरुणीमसकृन्नमामि ॥ १५ ॥ हंसैर्ग्गतिःक्वणितनूपुरदूरदृष्टेमूर्त्तैरिवाप्तवचनैरनुगम्यमानौ ॥ पद्माविवोर्द्ध्वमुखरूढसुजातनालौ श्रीकण्ठपत्निशिरसैवदधेतवाङ्घ्री ॥ १६ ॥ द्वाभ्यांसमीक्षितुमतृप्तिमतेवदृग्भ्यामुत्पाद्यतात्रिनयनँव्वृषकेतनेन ॥ सान्द्रानुरागभवनेननिरीक्ष्यमाणे जङ्घे उभेअपिभवानितवानतोऽस्मि ॥ १७ ॥ ऊरूस्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ स्थौल्येनमार्द्दवतयापरिभूतरम्भौ ॥ श्रोणीभरस्यसहनौपरिकल्प्यदत्तौ स्तम्भाविवाङ्गवयसातवमध्यमेन ॥ १८ ॥ श्रोण्यौस्तनौचयुगपत्प्रथयिष्यतोच्चैर्ब्बाल्यात्परेणवयसापरिकृष्णसारः ॥

रोमावलीविलसितेनविभाव्यमूर्त्तिर्म्मध्यन्तवस्फुरतुमेहृदयस्य मध्ये ॥ १९ ॥ सख्यास्स्मरस्यहरनेत्रहुताशभीरोर्ल्लावण्यवारिभरितन्नवयौवनेन ॥ आपाद्यदत्तमिवपल्लवमप्रविष्टन्नाभिङ्कदापितवदेविनविस्मरेयम् ॥ २० ॥ ईशोपिगेहपिशुनम्भासितन्दधाने काश्मीरकर्द्दममनुस्तनपङ्कजेते ॥ स्नानोत्थितस्यकरिणःक्षणलक्षफेनौ सिन्दूरितौस्मरयतः समदस्यकुम्भौ ॥ २१ ॥ कण्ठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकान्तिधाराशोभौभुजौ निजरिपोर्म्मकरध्वजेन ॥ कण्ठग्रहायरचितौ किलदीर्ग्घपाशौ मातर्म्ममस्मृतिपथन्नविलज्जयेताम् ॥ २२ ॥ नात्यायतंरुचिरकम्बुविलासचौर्य्यं भूषाभरेणविविधेनविराजमानम्॥ कण्ठम्मनोहरगुणङ्गिरिराजकन्ये सञ्चिन्त्यतृप्तिमुपयामिकदापिनाहम् ॥ २३ ॥ अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टम्मन्दस्मितेनदरफुल्लकपोलरेखम्॥बिम्बाधरंखलुसमुन्नतदीर्ग्घनासँय्यत्तेस्मरत्यसकृदम्बसएवजातः ॥ २४ ॥ आविस्त्वयारकरलेखमनल्पगन्धपुष्पोपरिभ्रमदलिव्रजनिर्व्विशेषम् ॥ यश्चेतसाकलयतेतवकेशपाशन्तस्यस्वयङ्गलतिदेविपुराणपाशः ॥ २५ ॥ श्रुतिसुरचितपाकन्धीमतां स्तोत्रमेतत् पठतियइहमर्त्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ॥ सभवतिपदमुच्चैस्सम्पदाम्पादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मीर्ल्लक्षणानाञ्चिराय ॥ २६ ॥ इतिभुवनेश्वरीस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथ कवचम् ॥

देव्युवाच ॥ भुवनेश्याश्चदेवेश यायाविद्याःप्रकाशिताः ॥ श्रुताश्चाधिगताः सर्व्वाः श्रोतुमिच्छामिसाम्प्रतम् ॥ १ ॥ त्रैलोक्यमङ्गलन्नामकवचँय्यत्पुरोदितम् ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुपार्व्वतिवक्ष्यामिसावधानाऽवधारय ॥ २ ॥ त्रैलोक्यमङ्गलन्नामकव

चम्मन्त्रविग्रहम् ॥ सिद्धविद्यामयन्देविसर्व्वैश्वर्य्यप्रदायकम् ॥ ॥ ३ ॥ पठनाद्धारणान्मर्त्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्य्यभाग्भवेत् ॥ ४ ॥ त्रैलोक्यमङ्गलस्यास्यकवचस्यऋषिश्शिवः ॥ छन्दोविराट्जगद्धात्रीदेवताभुवनेश्वरी ॥ ५ ॥ धर्म्मार्त्थकाममोक्षेषुविनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥ ह्रींबीजम्मेशिरः पातुभुवनेशीललाटकम् ॥ ६ ॥ ऐंपातुदक्षनेत्रम्मेह्रींपातुवामलोचनम् ॥ श्रींपातुदक्षकर्ण्णम्मेत्रिवर्णात्मामहेश्वरी ॥ ७ ॥ वामकर्ण्णंसदापातुऐंघ्राणम्पातुमेसदा॥ ह्रींपातुवदनन्देवीऐंपातुरसनाम्मम ॥ ८ ॥ वाक्पुटाचत्रिवर्ण्णात्माकण्ठम्पातुपराम्बिका ॥ श्रींस्कन्धौपातुनियतंह्रींभुजौपातु सर्व्वदा ॥ ९ ॥ क्लींकरौत्रिपुटेशानीत्रिपुटैश्वर्य्यदायिनी ॥ ओम्पातुहृदयंह्रींमे मध्यदेशंसदाऽवतु ॥ १० ॥ क्रौंपातुनाभिदेशंसात्र्यक्षरीभुवनेश्वरी ॥ सर्व्वबीजप्रदापृष्ठम्पातुसर्व्ववशङ्करी ॥११॥ ह्रींपातुगुददेशम्मेनमोभगवतीकटी ॥ माहेश्वरीसदापातुसक्थिनीजानुयुग्मकम् ॥ १२ ॥ अन्नपूर्णासदापातुस्वाहापातुपदद्वयम् ॥ सप्तदशाक्षरीपायादन्नपूर्ण्णात्मिकापुरा ॥ १३ ॥ तारम्मायारमाकामः षोडशार्ण्णा ततः परम् ॥ शिरःस्थासर्व्वदापातु विंशत्यर्ण्णात्मिकापरा ॥ १४ ॥ तारन्दुर्ग्गेयुगंरक्षिणिस्वाहेतिच दशाक्षरी ॥ जयदुर्ग्गाघनश्यामापातुमाम्पूर्व्वतोमुदा ॥१५॥ मायाबीजादिकाचैषादशार्ण्णा चपरातथा ॥ उत्तप्तकाञ्चनाभासाजयदुर्ग्गाननेवतु ॥ १६ ॥ तारंह्रींदुन्दुर्ग्गायैनमोष्टार्ण्णात्मिकापरा ॥ शङ्खचक्रधनुर्ब्बाणधरामान्दक्षिणेऽवतु ॥ १७ ॥ महिषमर्द्दिनिस्वाहावसुवर्ण्णात्मिकापरा ॥ नैर्ऋत्यांसर्व्वदापातुमहिषासुरनाशिनी ॥ १८ ॥ मायापद्मावतीस्वाहा सप्तार्ण्णापरिकीर्त्तिता ॥ पद्मावतीपद्मसँस्थापश्चिमेमांसदावतु ॥ २० ॥ पाशाङ्कुशपुटामायेहिपरमेश्वरिस्वाहा ॥ त्रयोदशार्ण्णातारायाद्या अश्वारू

ढाननेऽवतु ॥ २० ॥ सरस्वतीपञ्चशरेनित्यक्लिन्नेमदद्रवे ॥ स्वाहारव्यक्षरीविद्यामामुत्तरेसदावतु ॥ २१ ॥ तारम्मायातुक वचङ्केरक्षेत्सततँव्वधूः ॥ हूँक्षेह्रींफट्महाविद्याद्वादशार्णाखिल प्रदा ॥ २२ ॥ त्वरिताष्टाहिभिःपायाच्छिवकोणेसदाचमाम् ॥ ऐंक्लींसौःसाततोबालामामूर्द्धदेशतोऽवतु ॥ २३ ॥ बिन्द्वन्ताभैर वीबालाभूमौचमांसदावतु ॥ इतितेकथितम्पुण्यन्त्रैलोक्यमङ्गल म्परम् ॥२४॥ सारंसारतरम्पुण्यम्महाविद्यौघविग्रहम् ॥ अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोपिधनेश्वरः ॥ २५ ॥ इन्द्राद्याःसकलादेवाः पठनाद्धारणाद्यतः ॥ सर्व्वसिद्धीश्वराःसन्तःसर्व्वैश्वर्य्यमवाप्नुयुः ॥ २६ ॥ पुष्पाञ्जल्यष्टकन्दत्त्वामूलेनैवपठेत्सकृत् ॥ सँव्वत्सर कृतायास्तुपूजायाःफलमाप्नुयात् ॥ २७ ॥ प्रीतिमन्योन्यतः कृत्वाकमलानिश्चलागृहे ॥ वाणीचनिवसेद्वक्त्रे सत्यंसत्यन्नसंश यः ॥ २८ ॥ योधारयतिपुण्यात्मात्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ॥ कव चम्परमम्पुण्यंसोऽपिपुण्यवताँव्वरः ॥ २९ ॥ सर्व्वैश्वर्य्ययुतो भूत्वात्रैलोक्यविजयीभवेत् ॥ पुरुषोदक्षिणेबाहौनारीवामभुजे तथा ॥ ३० ॥ बहुपुत्रवतीभूत्वावन्ध्यापिलभतेसुतम् ॥ ब्रह्मा स्त्रादीनिशस्त्राणिनैवकृन्तन्तितज्जनम् ॥ ३१ ॥ एतत्कवचम ज्ञात्वायोजपेद्भुवनेश्वरीम् ॥ दारिद्र्यम्परमम्प्राप्यसोऽचिरान्मृत्यु माप्नुयात् ॥ ३२ ॥ इतिरुद्रयामलेदेवीश्वरसँव्वादेत्रैलोक्यमङ्ग लन्नामभुवनेश्वरीकवचंसमाप्तम् ॥

अथ हृदयम् ॥

देव्युवाच ॥ भगवन्ब्रूहितत्स्तोत्रंसर्व्वकामप्रसाधनम् ॥ य स्यश्रवणमात्रेणनान्यच्छ्रोतव्यमिष्यते ॥ १ ॥ यदिमेऽनुग्रहः कार्य्यःप्रीतिश्चापिममोपरि ॥ तदिदङ्कथयब्रह्मन्विमलँय्यन्महीं

तले ॥ २ ॥ ईश्वरउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामि सर्व्वकामप्रसाधनम् ॥ हृदयम्भुवनेश्वर्य्यास्स्तोत्रमस्तियशोदयम् ॥ ३ ॥ ॐ अस्यश्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्यशक्तिर्ऋषिर्ग्गायत्रीच्छन्दोभुवनेश्वरीदेवताहकारोबीजंईकारःशक्तीरेफऽकीलकंसकलमनोवाञ्छितसिद्ध्यर्थेपाठेविनियोगः ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयायनमः ॐ श्रींशिरसेस्वाहा ॐऐंशिखायैवषट् ॐह्रींकवचायहूम् ॐश्रींनेत्रत्रयायवौषट् ॐऐंअस्त्रायफट् ॥ एवङ्करन्यासः ॥ अथध्यानम् ॥ ध्यायेद्ब्रह्मादिकानाङ्कृतजनिजननींय्योगिनींय्योगयोनिन्देवानाञ्जीवनायोज्ज्वलितजयपरज्योतिरुग्राङ्गधात्रीम् ॥ शङ्खञ्चक्रञ्चबाणन्धनुरपिदधतीन्दोश्चतुष्काम्बुजातैर्म्मायामाद्याँव्विशिष्टाम्भवभवभुवनाम्भूभवाभारभूमिम् ॥४॥ यदाज्ञयायोजगदाद्यशेषंसृजत्यजश्श्रीपतिरौरसँव्वा ॥ बिभर्त्तिसंहन्तिभवस्तदन्ते भजामहेश्रीभुवनेश्वरीन्ताम् ॥ ५ ॥ जगज्जनानन्दकरीञ्जयाख्यँय्यशस्विनींय्यन्त्रसुयज्ञयोनिम् ॥ जितामितामित्रकृतप्रपञ्चाम्भजामहेश्रीभुवनेश्वरीन्ताम् ॥ ६ ॥ हरौप्रसुप्तेभुवनत्रयान्ते अवातरन्नाभिजपद्मजन्मा ॥ विधिस्ततोऽन्धेविदधारयत्पदम्भजामहेश्रीभुवनेश्वरीन्ताम् ॥ ७ ॥ नविद्यतेक्कापितुजन्मयस्या नवास्थितिस्सान्ततिकीहयस्याः ॥ नवानिरोधेऽखिलकर्म्मयस्या भजा० ॥ ८ ॥ कटाक्षमोक्षाचरणोग्रवित्तानिवेशितार्ण्णाःऽकरुणार्द्रचित्ता ॥ सुभक्तयेएतिसमीप्सितँय्या भजा० ॥ ९ ॥ यतो जगज्जन्मबभूवयोनेस्तदेवमध्येप्रतिपातियाँव्वा ॥ तदत्तियान्तेऽखिलमुग्रकाली भ० ॥ १० ॥ सुषुप्तिकालेजनमध्ययन्त्या ययाजनस्वप्नमवैतिकिञ्चित् ॥ प्रबुद्ध्यतेजाग्रतिजीवएष भ० ॥ ११ ॥ दयास्फुरत्कोरकटाक्षलाभान्नकेत्रयस्याऽप्रलभन्तिसिद्धाः ॥ कवित्वमीशित्वमपिस्वतन्त्रा

भ० ॥ १२ ॥ लसन्मुखाम्भोरुहमुत्फुरन्तंहृदिप्रणिध्यायदिशि स्फुरन्तः ॥ यस्याः कृपार्द्रम्प्रविकाशयन्ति भ० ॥ १३ ॥ यदानुरागानुगतालिचित्राश्चिरन्तनप्रेमपरिप्लुताङ्गाः ॥ सुनिर्भया स्सन्तिप्रमुद्ययस्या भ० ॥ १४ ॥ हरिर्विरञ्चिर्हरईशितारः पुरोऽवतिष्ठन्तिपरन्नताङ्गाः ॥ यस्यास्समिच्छन्तिसदानुकूल्यम्भजा० ॥ १५ ॥ मनुँय्यदीयंहरमग्निसँस्थन्ततश्चवामश्रुतिचन्द्रसक्तम् ॥ जपन्तियेस्युस्सुरवन्दितास्ते भजा० ॥ १६ ॥ प्रसीदतुप्रेमरसार्द्रचित्तासदाहिसाश्रीभुवनेश्वरीमे ॥ कृपाकटाक्षेण कुबेरकल्पाभवन्तियस्याः पदभक्तिभाजः ॥ १७ ॥ मुदासुपाव्यंभुवनेश्वरीयंसदासतांस्तोत्रमिदंसुसेव्यम् ॥ सुखप्रदंस्यात्कलिकल्मषघ्नं सुश्रृण्वतांसम्पठताम्प्रशस्यम् ॥ १८ ॥ एतत्तुहृदयस्तोत्रम्पठेद्यस्तुसमाहितः ॥ भवेत्तस्येष्टदादेवीप्रसन्नाभुवनेश्वरी ॥ १९ ॥ ददातिधनमायुष्यम्पुण्यम्पुण्यमतिन्तथा ॥ नैष्ठिकीन्देवभक्तिञ्चगुरुभक्तिँव्विशेषतः ॥ २० ॥ पूर्णिमायाञ्चतुर्दश्याङ्कुजवारेविशेषतः ॥ पठनीयमिदंस्तोत्रन्देवसद्मनियत्नतः ॥ २१ ॥ यत्रकुत्रापिपाठेन स्तोत्रस्यास्यफलम्भवेत् ॥ सर्व्वस्थानेषुदेवेश्याः पूतदेहस्सदापठेत् ॥ इतिनीलसरस्वतीतन्त्रेभुवनेश्वरीपटलेश्रीदेवीश्वरसँव्वादे श्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथ शतनाम ॥

कैलासशिखरेरम्ये नानारत्नोपशोभिते ॥ नरनारीहितार्त्थायशिवम्पप्रच्छपार्व्वती ॥ १ ॥ देव्युवाच ॥ भुवनेश्वरीमहाविद्यानाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥ कथयस्वमहादेवयद्यहन्तववल्लभा ॥ २ ॥ ईश्वरउवाच ॥ श्रृणुदेविमहाभागेस्तवराजमिदंशुभम् ॥

सहस्रनाम्नामधिकंसिद्धिदम्मोक्षहेतुकम् ॥ ३ ॥ शुचिभिः प्रातरुत्थायपठितव्यंसमाहितैः ॥ त्रिकालंश्रद्धयायुक्तैः सर्व्वकामफलप्रदम् ॥ ४ ॥ ओंअस्यश्रीभुवनेश्वर्य्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्यशक्तिऋंषिर्ग्गायत्रीच्छन्दोभुवनेश्वरीदेवताचतुर्व्वर्ग्गसाधने जपेविनियोगः ॥ महामायामहाविद्यामहायोगामहोत्कटा ॥ माहेश्वरीकुमारीचब्रह्माणीब्रह्मरूपिणी ॥ ५ ॥ वागीश्वरीयोगरूपायोगिनीकोटिसेविता ॥ जयाचविजयाचैवकौमारीसर्व्वमङ्गला ॥ ६ ॥ हिङ्गुलाचविलासीच ज्वालिनींज्वालरूपिणी ॥ ईश्वरीक्रूरसंहारीकुलमार्ग्गप्रदायिनी ॥ ७ ॥ वैष्णवीसुभगाकारी सुकुल्याकुलपूजिता ॥ वामाङ्गावामचाराचवामदेवप्रियातथा ॥ ८ ॥ डाकिनीयोगिनीरूपाभूतेशीभूतनायिका॥पद्मावती पद्मनेत्राप्रबुद्धाचसरस्वती ॥ ९ ॥ भूचरीखेचरीमायामातङ्गी भुवनेश्वरी॥कान्तापतिव्रतासाक्षीसुचक्षुः कुण्डवासिनी॥ १० ॥ उमाकुमारीलोकेशीसुकेशीपद्मरागिणी ॥ इन्द्राणीब्रह्मचाण्डालीचण्डिकावायुवल्लभा ॥ ११ ॥ सर्व्वधातुमयीमूर्त्तिर्ज्जलरूपाजलोदरी ॥ आकाशीरणगाचैवनृकपालविभूषणा ॥ १२ ॥ नर्म्मदामोक्षदाचैवकामधर्म्मार्त्थदायिनी ॥ गायत्रीचाथसावित्री त्रिसन्ध्यातीर्त्थगामिनी ॥ १३ ॥ अष्टमीनवमीचैवदशम्यैकादशीतथा ॥ पौर्णमासीकुहूरूपातिथिमूर्त्तिस्वरूपिणी ॥ १४ ॥ सुरारिनाशकारीचउग्ररूपाचवत्सला ॥ अनलाअर्द्धमात्राच अरुणापीतलोचना ॥ १५ ॥ लज्जासरस्वतीविद्याभवानीपापनाशिनी ॥ नागपाशधरामूर्त्तिरगाधाधृतकुण्डला ॥ १६ ॥ क्षत्ररूपीक्षयकरीतेजस्विनीशुचिस्मिता ॥ अव्यक्ताव्यक्तलोकाचशम्भुरूपामनस्विनी ॥ १७ ॥ मातङ्गीमत्तमातङ्गी महादेवप्रियासदा ॥ दैत्यहाचैववाराहीसर्व्वशास्त्रमयीशुभा ॥ १८ ॥

यइदम्पठतेभक्त्याशृणुयाद्वासमाहितः ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रन्निर्द्धनोधनवान्भवेत् ॥ १९ ॥ मूकखोंपिलभतेशास्त्रञ्चौरोपिलभतेगतिम् ॥ वेदानाम्पाठकोविप्रःक्षत्रियोविजयीभवेत् ॥ २० ॥ वैश्यस्तुधनवान्भूयाच्छूद्रस्तुसुखमेधते ॥ अष्टम्याञ्चचतुर्द्दश्यान्नवम्याञ्चैकचेतसः ॥ २१ ॥ येपठन्तिसदाभक्त्यानतेवैदुःखभागिनः ॥ एककालन्द्विकालँव्वात्रिकालँव्वाचतुर्त्थकम् ॥ २२ ॥ येपठन्तिसदाभक्त्यास्वर्ग्गलोकेचपूजिताः ॥ रुद्रन्दृष्ट्वायथादेवाःपन्नगागरुडँय्यथा ॥ २३ ॥ शत्रवःप्रपलायन्तेतस्यवक्त्रविलोकनात् ॥ इतिश्रीरुद्रयामलेदेवीशङ्करसँव्वादेभुवनेश्वर्य्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथ सहस्रनाम ॥

ओमस्यश्रीभुवनेश्वरीसहस्रनाममन्त्रस्यसदाशिवऋषिरनुष्टुप्छन्दःभुवनेश्वरीदेवता लज्जाबीजम् कमलाशक्तिः वाग्भवङ्कीलकम् सर्व्वार्त्थसाधनेजपेविनियोगः ॥ भुवनेशीभुवाराध्याभवानीभयनाशिनी ॥ भवरूपाभवानन्दाभवसागरतारिणी ॥ १ ॥ भवोद्भवाभवरताभवभारनिवारिणी ॥ भव्यानाभव्यनयनाभव्यरूपाभवौषधिः ॥ २ ॥ भव्याङ्गनाभव्यकेशी भवपाशविमोचिनी ॥ भव्यासनाभव्यवस्त्राभव्याभरणभूषिता ॥ ३ ॥ भगरूपाभगानन्दाभगेशीभगमालिनी ॥ भगविद्याभगवतीभगक्लिन्नाभगावहा ॥ ४ ॥ भगाङ्कुराभगक्रीडाभगाद्याभगमङ्गला ॥ भगलीला भगप्रीताभगसम्पद्भगेश्वरी ॥ ५ ॥ भगालयाभगोत्साहाभगस्थाभगपोषिणी ॥ भगोत्सवाभगविद्याभगमाताभगस्थिता ॥ ६ ॥ भगशक्तिर्भगनिधिर्भगपूजाभगेषणा ॥ भगास्वपाभगाधीशाभगाढ्याभगसुन्दरी ॥ ७ ॥ भगरेखाभगस्ने

हाभगस्नेहविवर्द्धिनी ॥ भगिनीभगवीजस्थाभगभोगविलासिनी ॥ ८ ॥ भगाचाराभगाधाराभगाचाराभगाश्रया ॥ भगपुष्पा भगश्रीदाभगपुष्पानिवासिनी ॥ ९ ॥ भव्यरूपधराभव्या भव्यपुष्पैरसंस्कृता ॥भव्यलीलाभव्यमालाभव्याङ्गीभव्यसुन्दरी ॥ १० ॥ भव्यशीलाभव्यलीलाभव्याक्षीभव्यनाशिनी ॥ भव्याङ्गिकाभव्यवाणीभव्यकान्तिर्भगालिनी ॥ ११ ॥ भव्यत्रपाभव्यनदीभव्यभोगविहारिणी ॥ भव्यस्तनी भव्यमुखीभव्यगोष्ठीभयापहा ॥ १२ ॥ भक्तेश्वरी भक्तिकरीभक्तानुग्रहकारिणी ॥ भक्तिदाभक्तिजननीभक्तानन्दविवर्द्धिनी ॥ १३ ॥ भक्तिप्रियाभक्तिरताभक्तिभावविहारिणी ॥ भक्तिशीलाभक्तिलीलाभक्तेशी भक्तिपालिनी ॥१४॥ भक्तिविद्याभक्तविद्याभक्तिर्भक्तिविनोदिनी ॥ भक्तिरीतिर्भक्तिप्रीतिर्भक्तिसाधनसाधिनी ॥१५॥ भक्तिसाध्याभक्तसाध्याभक्तिरालीभवेश्वरी ॥ भटविद्याभटानन्दाभटस्थाभटरूपिणी ॥ १६ ॥ भटमान्याभटस्थान्याभटस्थानानिवासिनी ॥ भटिनीभटरूपेशीभटरूपविवर्द्धिनी ॥ १७ ॥ भटवेशीभटेशाचिभगभाग्भवसुन्दरी ॥ भटप्रीत्याभटरीत्याभटानुग्रहकारिणी ॥ १८ ॥ भटैराध्याभटबोध्याभटबोधविनोदिनी ॥ भटैस्सेव्याभटवराभटाच्चर्याभटबोधिनी ॥ १९ ॥ भटकीर्त्याभटकला भटपाभटपालिनी ॥ भटैश्वर्य्याभटाधीशाभटेक्षाभटतोषिणी ॥ २० ॥ भटेशीभटजननीभटभाग्याविवर्द्धिनी ॥ भटमुक्तिर्भटयुक्तिर्भटप्रीतिविवर्द्धिनी ॥ २१ ॥ भाग्येशीभाग्यजननीभाग्यस्थाभाग्यरूपिणी ॥ भावनाभावकुशलाभावदाभाववार्द्धिनी ॥ २२ ॥ भावरूपाभावरसाभावान्तरविहारिणी ॥ भावाङ्कुराभावकलाभावस्थाननिवासिनी ॥ २३ ॥ भावातुराभावधृताभावमध्यव्यवस्थिता ॥ भावऋद्धिर्भावसिद्धिर्भा

वादिभिर्भावभाविनी ॥ २४ ॥ भावालयाभावपराभावसाधनतत्प
रा ॥ भावेश्वरीभावगम्याभावस्थाभावगर्व्विता ॥ २५ ॥ भा
विनीभावरमणी भारतीभारतेश्वरी ॥ भागीरथीभाग्यवतीभाग्यो
दयकरीकला ॥ २६ ॥ भाग्याश्रयाभाग्यमयीभाग्याभाग्यफ
लप्रदा ॥ भाग्यचाराभाग्यसाराभाग्यधाराचभाव्यदा ॥ २७ ॥
भाग्येश्वरीभाग्यनिधिर्भाग्याभाग्यसुमातृका ॥ भाग्येक्षाभाग्य
नाभाग्यभाग्यदाभाग्यमातृका ॥ २८ ॥ भाग्येक्षाभाग्यमनसा
भाग्यादिर्भाग्यमध्यगा ॥भ्रातेश्वरीभ्रातृवतीभ्रात्र्यम्बाभ्रातृपालि
नी ॥२९॥ भ्रातृस्थाभ्रातृकुशलाभ्रामरीभ्रमराम्बिका॥ भिल्लरूपा
भिल्लवतीभिल्लस्थाभिल्लपालिनी ॥३०॥ भिल्लमाताभिल्लधात्रीभि
ल्लनीभिल्लकेश्वरि ॥ भिल्लकीर्त्तिर्भिल्लकलाभिल्लमन्दरवासिनी ॥
॥ ३१ ॥ भिल्लक्रीडाभिल्ललीलाभिल्लाच्चर्याभिल्लवल्लभा ॥ भि
ल्लस्नुषाभिल्लपुत्रीभिल्लनीभिल्लपोषिणी ॥ ३२ ॥ भिल्लपौत्री
भिल्लगोष्ठी भिल्लचारनिवासिनी ॥ भिल्लपूज्याभिल्लवाणीभिल्ला
नीभिल्लभीतिहा ॥ ३३ ॥ भीतस्थाभीतजननीभीतिर्भीतिवि
नाशिनी ॥ भीतिदाभीतिहाभीत्याभीत्याकारविहारिणी ॥ ३४ ॥
भीतेशीभीतिशमनीभीतस्थाननिवासीनी ॥ भीतिरीत्याभीति
कलाभीतीक्षाभीतिहारिणी ॥ ३५ ॥भीमेशीभीमजननीभीमाभी
मनिवासिनी ॥ भीमेश्वरीभीमरताभीमाङ्गीभीमपालिनी ॥३६॥
भीमनादीभीमतन्त्रीभीमैश्वर्य्यविवर्द्धिनी ॥ भीमगोष्ठीभीमधा
त्रीभीमविद्याविनोदिनी ॥ ३७ ॥ भीमविक्रमदात्रीचभीमवि
क्रमवासिनी ॥ भीमानन्दकरीदेवीभीमानन्दविहारिणी ॥ ३८ ॥
भीमोपदेशिनीनित्याभीमभाग्यप्रदायिनी ॥ भीमसिद्धिर्भीमऋ
द्धिर्म्भीमभक्तिविवर्द्धिनी ॥ ३९ ॥ भीमस्थाभीमवरदाभीमधर्म्मो
पदेशिनी ॥ भीष्मेश्वरीभीष्मभृतीभीष्मबोधप्रबोधिनी ॥ ४० ॥

भीष्मश्रीर्भीष्मजननीभीष्मज्ञानोपदेशिनी ॥ भीष्मस्थाभीष्म तपसाभीष्मेशीभीष्मतारिणी ॥ ४१ ॥ भीष्मलीलाभीष्मशीला भीष्मरोदिनिवासिनी ॥ भीष्माश्रयाभीष्मवराभीष्महर्षविवर्द्धिनी ॥ ४२ ॥ भुवनाभुवनेशानीभुवनानन्दकारिणी ॥ भुविस्थाभुविरूपाचभुविभारनिवारिणी ॥ ४३ ॥ भुक्तिस्थाभुक्तिदा भुक्तिर्भुक्तेशीभुक्तिरूपिणी ॥भुक्तेश्वरीभुक्तिदात्रीभुक्तिराकाररूपिणी ॥४४॥भुजङ्गस्थाभुजङ्गेशीभुजङ्गाकाररूपिणी॥भुजङ्गीभुजगावासाभुजङ्गानन्ददायिनी ॥४५॥भूतेशीभूतजननीभूतस्थाभूतरूपिणी ॥ भूतेश्वरीभूतलीलाभूतवेषकरीसदा॥४६॥भूतदात्री भूतकेशीभूतधात्रीमहेश्वरी ॥ भूतरीत्याभूतपत्नीभूतलोकानिवासिनी ॥ ४७ ॥ भूतसिद्धिर्भूतऋद्धिर्भूतानन्दनिवासिनी॥भूत कीर्त्तिर्भूतलक्ष्मीर्भूतभाग्यविवर्द्धिनी ॥ ४८ ॥ भूताराध्याभूतरमणीभूतविद्याविनोदिनी ॥ भूतपौत्रीभूतपुत्रीभूतभार्य्याविधेश्वरी ॥ ४९ ॥ भूपस्थाभूपरमणीभूपेशीभूपपालिनी ॥ भूपमाताभूपनिभाभूपैश्वर्य्यप्रदायिनी ॥ ५० ॥ भूपचेष्टाभूपनेष्ठाभूपभावविवर्द्धिनी ॥ भूपभगिनीभूपभूरीभूपपौत्रीतथावधूः ॥ ५१ ॥ भूपकीर्त्तिर्भूपनीतिर्भूपभाग्यविवर्द्धिनी ॥ भूपक्रियाभूपक्रीडाभूपमन्दरवासिनी ॥ ५२ ॥ भूपाराध्याभूपसँराध्याभूपभोगविवर्द्धिनी ॥ भूपाश्रयाभूपकलाभूपकौतुकदण्डिनी ॥ ५३ ॥ भूषणस्थाभूषणेशीभूषाभूषणधारिणी ॥ भूषणाधारधर्म्मेशीभूषणाकाररूपिणी ॥ ५४ ॥ भूपताचारनिलयाभूपताचारभूषिता ॥ भूपताचाररचनाभूपताचारमण्डिता ॥ ५५ ॥ भूपताचारधर्म्मेशीभूपताचारकारिणी ॥ भूपताचारचरिताभूपताचारवर्ज्जिता ॥५६॥ भूपताचारवृद्धिस्थाभूपताचारवृद्धिदा ॥ भूपताचारकरणाभूपताचारकर्म्मदा ॥ ५७ ॥ भूपताचारकर्म्मेशीभूपताचारकर्म्मदा ॥ भूपताचार

देहस्थाभूपताचारकर्म्मिणी ॥ ५८ ॥ भूपताचारसिद्धिस्थाभूपताचारसिद्धिदा ॥ भूपताचारधर्म्माणीभूपताचारधारिणी ॥ ॥ ५९ ॥ भूपतानन्दलहरीभूपतेश्वररूपिणी ॥ भूपतेर्न्नीतिनीतिस्थाभूपतिस्थानवासिनी ॥ ६० ॥ भूपतिस्थानगीर्व्वाणीभूपतेर्व्वरधारिणी ॥ ६१ ॥ भेषजानन्दलहरीभेषजानन्दरूपिणी ॥ भेषजानन्दमहिषीभेषजानन्दरूपिणी ॥ ६२ ॥ भेषजानन्दकर्म्मेशीभेषजानन्ददायिनी॥भेषजीभेषजाकन्दाभेषजस्थानवासिनी ॥ ६३ ॥ भेषजेश्वररूपाचभेषजेश्वरसिद्धिदा ॥ भेषजेश्वरधर्म्मेशीभेषजेश्वरकर्म्मदा ॥ ६४ ॥ भेषजेश्वरकर्म्मेशीभेषजेश्वरकर्म्मिणी ॥ भेषजाधीशजननीभेषजाधीशपालिनी ॥ ६५ ॥ भेषजाधीशरचनाभेषजाधीशमङ्गला ॥ भेषजारण्यमध्यस्थाभेषजारण्यरक्षिणी ॥ ६६ ॥ भैषज्यविद्याभैषज्याभैषज्येप्सितदायिनी ॥ भैषज्यस्थाभैषजेशीभैषज्यानन्दवर्द्धिनी ॥ ६७ ॥ भैरवीभैरवाचाराभैरवाकाररूपिणी ॥ भैरवाचारचतुराभैरवाचारमण्डिता ॥ ६८ ॥ भैरवाच भैरवेशीभैरवानन्ददायिनी ॥ भैरवानन्दरूपेशीभैरवानन्दरूपिणी ॥ ६९ ॥ भैरवानन्दनिपुणाभैरवानन्दमन्दिरा॥ भैरवानन्दतत्त्वज्ञाभैरवानन्दतत्परा ॥ ७० ॥ भैरवानन्दकुशलाभैरवानन्दनीतिदा ॥ भैरवानन्दप्रीतिस्थाभैरवानन्दप्रीतिदा ॥ ७१ ॥ भैरवानन्दमहिषीभैरवानन्दमालिनी ॥ भैरवानन्दमतिदाभैरवानन्दमातृका ॥ ७२ ॥ भैरवाधारजननीभैरवाधाररक्षिणी ॥ भैरवाधाररूपेशीभैरवाधाररूपिणी ॥ ॥ ७३ ॥ भैरवाधारनिचयाभैरवाधारनिश्चया ॥ भैरवाधारतत्त्वज्ञाभैरवाधारतत्त्वदा ॥७४॥ भैरवाश्रयतन्त्रेशीभैरवाश्रयमन्त्रिणी॥भैरवाश्रयरचनाभैरवाश्रयरञ्जिता ॥७५॥ भैरवाश्रयनिर्द्धारा भैरवाश्रयनिर्भरा ॥ भैरवाश्रयनिर्द्धाराभैरवाश्रयनिर्द्धरा ॥७६॥

भैरवानन्दबोधेशीभैरवानन्दबोधिनी ॥ भैरवानन्दबोधस्थाभैरवानन्दबोधदा ॥ ७७ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यवरदाभैरव्यैश्वर्य्यदायिनी ॥ भैरव्यैश्वर्य्यरचनाभैरव्यैश्वर्य्यवर्द्धिनी ॥ ७८ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यसिद्धिस्थाभैरव्यैश्वर्य्यसिद्धिदा ॥ भैरव्यैश्वर्य्यसिद्धेशीभैरव्यैश्वर्य्यरूपिणी ॥ ७९ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यसुपथाभैरव्यैश्वर्य्यसुप्रभा ॥ भैरव्यैश्वर्य्यवृद्धिस्थाभैरव्यैश्वर्य्यवृद्धिदा ॥ ८० ॥ भैरव्यैश्वर्य्यकुशलाभैरव्यैश्वर्य्यकामदा ॥ भैरव्यैश्वर्य्यसुलभाभैरव्यैश्वर्य्यसम्प्रदा ॥ ८१ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यविशदाभैरव्यैश्वर्य्यविक्रिता ॥ भैरव्यैश्वर्य्यविनयाभैरव्यैश्वर्य्यवेदिता ॥ ८२ ॥ भैरव्यैश्वर्य्यमहिमाभैरव्यैश्वर्य्यमानिनी ॥ भैरव्यैश्वर्य्यनिरताभैरव्यैश्वर्य्यनिर्म्मिता ॥ ८३ ॥ भोगेश्वरीभोगमाताभोगस्थाभोगरक्षिणी ॥ भोगक्रीडाभोगलीलाभोगेशीभोगवर्द्धिनी ॥ ८४ ॥ भोगाङ्गीभोगरमणीभोगाचारविचारिणी ॥ भोगाश्रयाभोगवतीभोगिनीभोगरूपिणी ॥ ८५ ॥ भोगाङ्कुराभोगाविधाभोगाधारनिवासिनी ॥ भोगाम्बिकाभोगरताभोगसिद्धिविधायिनी ॥ ८६ ॥ भोजस्थाभोजनिरताभोजनानन्ददायिनी ॥ भोजनानन्दलहरीभोजनान्तर्व्विहारिणी ॥ ८७ ॥ भोजनानन्दमहिमा भोजनानन्दभोग्यदा ॥ भोजनानन्दरचनाभोजनानन्दहर्षिता ॥ ८८ ॥ भोजनाचारचतुराभोजनाचारमण्डिता ॥ भोजनाचारचरिताभोजनाचारचर्च्चिता ॥ ८९ ॥ भोजनाचारसम्पन्ना भोजनाचारसँय्युता ॥ भोजनाचारचित्तस्थाभोजनाचाररीतिदा ॥ ९० ॥ भोजनाचारविभवाभोजनाचारविस्तृता ॥ भोजनाचाररमणीभोजनाचाररक्षिणी ॥ ९१ ॥ भोजनाचारहरिणी भोजनाचारभक्षिणी ॥ भोजनाचारसुखदाभोजनाचारसुस्पृहा ॥ ९२ ॥ भोजनाहारसुरसाभोजनाहारसुन्दरी ॥ भोजनाहारच

रिताभोजनाहारचञ्चला ॥ ९३ ॥ भोजनास्वादविभवाभोजनास्वादवल्लभा ॥ भोजनास्वादसन्तुष्टाभोजनास्वादसम्प्रदा॥९४॥ भोजनास्वादसुपथाभोजनास्वादसंश्रया ॥ भोजनास्वादनिरताभोजनास्वादनिर्ण्णिता ॥ ९५ ॥ भौक्षराभौक्षरेशानीभौकाराक्षररूपिणी ॥ भौक्षरस्थाभौक्षरादिर्भौक्षरस्थानवासिनी ॥ ॥ ९६ ॥ भङ्कारीभर्म्मिणीभर्म्मीभस्मेशीभस्मरूपिणी ॥ भङ्काराभञ्जनाभस्माभस्मस्थाभस्मवासिनी ॥ ९७ ॥ भक्षरीभक्षराकाराभक्षरस्थानवासिनी ॥ भक्षराढ्याभक्षरेशीभरूपाभस्वरूपिणी ॥ ९८ ॥ भूधरस्थाभूधरेशीभूधरीभूधरेश्वरी ॥ भूधरानन्दरमणीभूधरानन्दपालिनी ॥ ९९ ॥ भूधरानन्दजननीभूधरानन्दवासिनी ॥ भूधरानन्दरमणीभूधरानन्दरक्षिता ॥ १०० ॥ भूधरानन्दमहिमाभूधरानन्दमन्दिरा ॥ भूधरानन्दसर्व्वेशीभूधरानन्दसर्व्वसूः ॥ १०१ ॥ भूधरानन्दमहिषीभूधरानन्ददायिनी ॥ भूधराधीशधर्म्मेशीभूधरानन्दधर्म्मिणी ॥ १०२ ॥ भूधराधीशधर्म्मेशी भूधराधीशसिद्धिदा ॥ भूधराधीशकर्म्मेशीभूधराधीशकामिनी ॥ १०३ ॥ भूधराधीशनिरताभूधराधीशनिर्ण्णिता ॥ भूधराधीशनीतिस्थाभूधराधीशनीतिदा ॥ १०४ ॥ भूधराधीशभाग्येशीभूधराधीशभामिनी ॥ भूधराधीशबुद्धिस्थाभूधराधीशबुद्धिदा ॥ १०५ ॥ भूधराधीशवरदाभूधराधीशवन्दिता ॥ भूधराधीशाऽऽराध्याचभूधराधीशचर्च्चिता ॥१०६॥ भङ्गेश्वरीभङ्गमयीभङ्गस्थाभङ्गरूपिणी ॥ भङ्गाक्षताभङ्गरताभङ्गाच्च्याभङ्गरक्षिणी ॥ ॥ १०७ ॥ भङ्गावतीभङ्गलीलाभङ्गभोगविलासिनी ॥ भङ्गरङ्गप्रतीकाशाभङ्गरङ्गनिवासिनी ॥ १०८ ॥ भङ्गाशिनीभङ्गमूलीभङ्गभोगविधायिनी ॥ भङ्गाश्रयाभङ्गबीजाभङ्गबीजाङ्कुरेश्वरी ॥ ॥ १०९ ॥ भङ्गयन्त्रचमत्काराभङ्गयन्त्रेश्वरीतथा ॥ भङ्गयन्त्र

विमोहिस्थाभङ्गयन्त्रविनोदिनी ॥ ११० ॥ भङ्गयन्त्रविचारस्था भङ्गयन्त्रविचारिणी ॥ भङ्गयन्त्ररसानन्दाभङ्गयन्त्ररसेश्वरी ॥ ॥ १११ ॥ भङ्गयन्त्ररसस्वादाभङ्गयन्त्ररसस्थिता ॥ भङ्गयन्त्र रसाधाराभङ्गयन्त्ररसाश्रया ॥ ११२ ॥ भूधरात्मजरूपेशीभूधरा त्मजरूपिणी ॥ भूधरात्मजयोगेशीभूधरात्मजपालिनी ॥११३॥ भूधरात्मजमहिमाभूधरात्मजमालिनी ॥ भूधरात्मजभूतेशीभूधरा त्मजरूपिणी ॥ ११४ ॥ भूधरात्मजसिद्धिस्था भूधरात्मजसिद्धि दा ॥ भूधरात्मजभावेशीभूधरात्मजभाविनी ॥ ११५ ॥ भूधरा त्मजभोगस्थाभूधरात्मजभोग्यदा ॥ भूधरात्मजभोगेशीभूधरात्म जभोगिनी ॥ ११६ ॥ भव्याभव्यतराभव्याभाविनीभववल्लभा ॥ भावातिभावाभावाख्याभातिभाभीतिभान्तिका ॥ ११७ ॥ भा क्षान्तिभासाभासस्थाभासाभाभास्करोपमा॥भास्करस्थाभास्क रेशीभास्करैश्वर्य्यवर्द्धिनी ॥ ११८॥ भास्करानन्दजननभिास्क रानन्ददायिनी ॥ भास्करानन्दमहिमाभास्करानन्दमातृका ॥ ॥ ११९ ॥ भास्करानन्दनैश्वर्य्याभास्करानन्दनेश्वरा ॥ भास्क रानन्दसुपथाभास्करानन्दसुप्रभा॥१२०॥ भास्करानन्दनिचया भास्करानन्दनिर्म्मिता ॥ भास्करानन्दनीतिस्थाभास्करानन्द नीतिदा ॥ १२१ ॥ भास्करोदयमध्यस्थाभास्करोदयमध्यगा ॥ भास्करोदयतेजःस्थाभास्करोदयतेजसा ॥ १२२ ॥ भास्करा चारचतुराभास्कराचारचन्द्रिका ॥ भास्कराचारपरमाभास्करा चारचण्डिका ॥ १२३ ॥ भास्कराचारपरमाभास्कराचारपार दा ॥ भास्कराचारमुक्तिस्थाभास्कराचारमुक्तिदा ॥१२४॥ भा स्कराचारसिद्धिस्थाभास्कराचारसिद्धिदा ॥ भास्कराचरणाधा राभास्कराचरणाश्रिता ॥१२५॥ भास्कराचारमन्त्रेशीभास्करा चारमन्त्रिणी ॥ भास्कराचारवित्तेशीभास्कराचाराचित्रिणी ॥

॥ १२६ ॥ भास्कराधारधर्म्मेशीभास्काराधारधारणी ॥ भास्कराधाररचनाभास्कराधाररक्षिता ॥ १२७ ॥ भास्कराधारकर्म्माणीभास्कराधारकर्म्मदा ॥ भास्कराधाररूपेशीभास्कराधाररूपिणी ॥ १२८ ॥ भास्कराधारकाम्येशीभास्कराधारकामिनी ॥ भास्कराधारसांशेशीभास्कराधारसांशिनी ॥ १२९ ॥ भास्कराधारधर्म्मेशीभास्कराधारधामिनी ॥ भास्कराधारचक्रस्था भास्कराधारचाक्रिणी ॥ १३० ॥ भास्करेश्वरक्षत्रेशीभास्करेश्वरक्षात्रिणी ॥ भास्करेश्वरजननी भास्करेश्वरपालिनी ॥ १३१ ॥ भास्करेश्वरसर्वेशीभास्करेश्वरशर्व्वरी ॥ भास्करेश्वरसद्भामाभास्करेश्वरसन्निभा ॥ १३२ ॥ भास्करेश्वरसुपथाभास्करेश्वरसुप्रभा ॥ भास्करेश्वरयुवतीभास्करेश्वरसुन्दरी ॥ १३३ ॥ भास्करेश्वरमूर्त्तेशीभास्करेश्वरमूर्त्तिनी ॥ भास्करेश्वरमित्रेशीभास्करेश्वरमन्त्रिणी ॥ १३४ ॥ भास्करेश्वरसानन्दाभास्करेश्वरसाश्रया ॥ भास्करेश्वरचित्रस्थाभास्करेश्वरचित्रदा ॥ १३५ ॥ भास्करेश्वरचित्रेशीभास्करेश्वरचित्रिणी ॥ भास्करेश्वरभाग्यस्थाभास्करेश्वरभाग्यदा ॥ १३६ ॥ भास्करेश्वरभाग्येशीभास्करेश्वरभाविनी ॥ भास्करेश्वरकीर्त्त्येशीभास्केरश्वरकीर्त्तिनी ॥१३७॥ भास्करेश्वरकीर्त्तिस्थाभास्करेश्वरकीर्त्तिदा॥भास्करेश्वरकरुणाभास्करेश्वरकारिणी ॥ १३८ ॥ भास्करेश्वरगीर्व्वाणीभास्करेश्वरगारुडी ॥ भास्करेश्वरदेहस्थाभास्करेश्वदेहदा ॥ १३९ ॥ भास्करेश्वरनादस्थाभास्करेश्वरनादिनी ॥ भास्करेश्वरनादेशीभास्करेश्वरनादिनी ॥ १४० ॥ भास्करेश्वरकोशस्थाभास्करेश्वरकोशदा ॥ भास्करेश्वरकोशेशीभास्करेश्वरकोशिनी ॥ १४१ ॥ भास्करेश्वरशक्तिस्थाभास्करेश्वरशक्तिदा ॥ भास्करेश्वरतोषेशीभास्करेश्वतोषिणी ॥१४२॥ भास्करेश्व

रक्षेत्रेशीभास्करेश्वरक्षत्रिणी ॥ भास्करेश्वरयागस्थाभास्करेश्वरयोगदा ॥ १४३ ॥ भास्करेश्वरयोगेशीभास्करेश्वरयोगिनी ॥ भास्करेश्वरपद्मेशीभास्करेश्वरपद्मिनी ॥ १४४ ॥ भास्करेश्वरहृद्बीजाभास्करेश्वरहृद्धरा ॥ भास्करेश्वरहृद्योनिर्भास्करेश्वरहृद्युतिः ॥ १४५ ॥ भास्करेश्वरबुद्धिस्थाभास्करेश्वरसद्विधा ॥ भास्करेश्वरसद्वाणीभास्करेश्वरसद्धरा ॥ १४६ ॥ भास्करेश्वरराज्यस्थाभास्करेश्वरराज्यदा ॥ भास्करेश्वरराज्येशीभास्करेश्वरपोषिणी ॥ १४७ ॥ भास्करेश्वरज्ञानस्थाभास्करेश्वरज्ञानदा ॥ भास्करेश्वरज्ञानेशीभास्करेश्वरगामिनी ॥ १४८ ॥ भास्करेश्वरलक्षेशीभास्करेश्वरक्षालिता ॥ भास्करेश्वरलक्षिताभास्करेश्वररक्षिता ॥ १४९ ॥ भास्करेश्वरखड्गस्थाभास्करेश्वरखड्गदा ॥ भास्करेश्वरखड्गेशीभास्करेश्वरखड्गिनी ॥ १५० ॥ भास्करेश्वरकार्य्येशीभास्करेश्वरकामिनी ॥ भास्करेश्वरकायस्थाभास्करेश्वरकायदा ॥ १५१ ॥ भास्करेश्वरचक्षुःस्थाभास्करेश्वरचक्षुषा ॥ भास्करेश्वरसन्नाभाभास्करेश्वरसार्च्चिता ॥ १५२ ॥ भ्रूणहत्याप्रशमनीभ्रूणपापविनाशिनी ॥ भ्रूणदारिद्र्यशमनीभ्रूणरोगविनाशिनी ॥ १५३ ॥ भ्रूणशोकप्रशमनीभ्रूणदोषनिवारिणी ॥ भ्रूणसन्तापशमनीभ्रूणविभ्रमनाशिनी ॥ १५४ ॥ भवाब्धिस्थाभवाब्धीशाभवाब्धिभयनाशिनी ॥ भवाब्धिपारकरणी भवाब्धिसुखवर्द्धिनी ॥ १५५ ॥ भवाब्धिकार्य्यकरणी भवाब्धिकरुणानिधिः ॥ भवाब्धिकालशमनीभवाब्धिवरदायिनी ॥ १५६ ॥ भवाब्धिभजनस्थानाभवाब्धिभजनस्थिता॥ भवाब्धिभजनाकाराभवाब्धिजननक्रिया ॥ १५७ ॥ भवाब्धिभजनाचाराभवाब्धिभजनाङ्कुरा ॥ भवाब्धिभजनानन्दाभवाब्धिभजनाधिपा ॥ १५८ ॥ भवाब्धिभजनै

श्वर्य्याभवाब्धिभजनेश्वरी ॥ भवाब्धिभजनासिद्धिर्भवाब्धिभज नारतिः ॥ १५९ ॥ भवाब्धिभजनानित्याभवाब्धिभजनानिशा ॥ भवाब्धिभजनानिम्नाभवाब्धिभवभीतिहा ॥ १६० ॥ भवाब्धिभ जनाकाम्याभवाब्धिभजनाकला ॥ भवाब्धिभजनाकीर्त्तिर्भवा ब्धिभजनाकृता ॥१६१॥ भवाब्धिशुभदानित्याभवाब्धिशुभदा यिनी ॥ भवाब्धिसकलानन्दाभवाब्धिसकलाकला ॥ १६२ ॥ भ वाब्धिसकलासिद्धिर्भवाब्धिसकलानिधिः ॥ भवाब्धिसकलासा राभवाब्धिसकलार्त्थदा ॥१६३॥ भवाब्धिभवनामूर्त्तिर्भवाब्धि भवनाकृतिः ॥ भवाब्धिभवनाभव्याभवाब्धिभवनाम्भसा ॥ ॥ १६४ ॥ भवाब्धिमदनारूपाभवाब्धिमदनातुरा ॥ भवाब्धिम दनेशानीभवाब्धिमदनेश्वरी ॥ १६५ ॥ भवाब्धिभाग्यरचनाभ वाब्धिभाग्यदासदा ॥ भवाब्धिभाग्यदाकूलाभवाब्धिभाग्यनि र्भरा ॥ १६६ ॥ भवाब्धिभाग्यनिरताभवाब्धिभाग्यभाविता ॥ भवाब्धिभाग्यसञ्चाराभवाब्धिभाग्यसञ्चिता ॥ १६७ ॥ भवाब्धि भाग्यसुपथाभवाब्धिभाग्यसुप्रदा ॥ भवाब्धिभाग्यरीतिज्ञाभवा ब्धिभाग्यनीतिदा ॥१६८॥ भवाब्धिभाग्यरीत्येशीभवाब्धिभाग्य रीतिनी ॥भवाब्धिभोगनिपुणाभवाब्धिभोगसम्प्रदा॥१६९॥भवा ब्धिभाग्यगहनाभवाब्धिभोग्यगुम्फिता॥भवाब्धिभोगगान्धारीभ वाब्धिभोगगुम्फिता॥१७०॥ भवाब्धिभोगसुरसाभवाब्धिभोगसु स्पृहा ॥ भवाब्धिभोगग्रथिनीभवाब्धिभोगयोगिनी ॥ १७१ ॥ भवाब्धिभोगरसनाभवाब्धिभोगराजिता ॥ भवाब्धिभोगाविभ वाभवाब्धिभोगविस्तृता ॥ १७२ ॥ भवाब्धिभोगवरदाभवाब्धि भोगवन्दिता ॥ भवाब्धिभोगकुशलाभवाब्धिभोगशोभिता ॥ ॥१७३॥ भवाब्धिभेदजननीभवाब्धिभेदपालिनी ॥ भवाब्धिभे दरचनाभवाब्धिभेदरक्षिता ॥ १७४ ॥ भवाब्धिभेदनियताभवा

ब्धिभेदानिस्पृहा ॥ भवाब्धिभेदरचनाभवाब्धिभेदरोपिता १७५॥
भवाब्धिभेदराशिघ्नीभवाब्धिभेदराशिनी ॥ भवाब्धिभेदकर्म्मेशी
भवाब्धिभेदकर्म्मिणी ॥१७६॥ भद्रेशीभद्रजननीभद्राभद्रनिवा
सिनी ॥ भद्रेश्वरीभद्रवतीभद्रस्थाभद्रदायिनी ॥ १७७ ॥ भद्र
रूपाभद्रमयीभद्रदाभद्रभाषिणी ॥भद्रकर्ण्णाभद्रवेशाभद्राम्बाभ
द्रमन्दिरा ॥ १७८ ॥ भद्रक्रियाभद्रकलाभद्रिकाभद्रवर्द्धिनी ॥भ
द्रक्रीडाभद्रकलाभद्रलीलाभिलाषिणी ॥ १७९ ॥ भद्राङ्कुराभद्र
ताभद्राङ्गीभद्रमन्त्रिणी ॥ भद्राविद्याभद्रविद्याभद्रवाग्भद्रवादिनी
॥ १८० ॥ भूपमङ्गलदाभूपाभूलताभूमिवाहिनी ॥ भूपभोगाभूप
शोभाभूपाशाभूपरूपदा ॥ १८१ ॥ भूपाकृतिर्भूपरतिर्भूपश्री
र्भूपश्रेयसी ॥ भूपनीतिर्भूपरीतिर्भूपभीतिर्भयङ्करी ॥१८२॥
॥ भवदानन्दलहरीभवदानन्दसुन्दरी ॥ भवदानन्दकरणीभवदा
नन्दवर्द्धिनी ॥ १८३ ॥ भवदानन्दरमणीभवदानन्ददायिनी ॥
भवदानन्दजननीभवदानन्दरूपिणी ॥ १८४ ॥ यइदम्पठते
स्तोत्रम्प्रत्यहम्भक्तिसँय्युतः ॥ गुरुभक्तियुतोभूत्वागुरुसेवापराय
णः ॥ १८५ ॥ सत्यवादीजितेन्द्रीचताम्बूलपूरिताननः ॥ दि
वारात्रौचसन्ध्यायांसभवेत्परमेश्वरः ॥ १८६ ॥ स्तवमात्रस्य
पाठेनराजावश्योभवेद्ध्रुवम् ॥ सर्व्वागमेषुविज्ञानीसर्व्वतन्त्रेस्व
यंहरः ॥ १८७ ॥ गुरोर्म्मुखात्समभ्यस्य स्थित्वाचगुरुसन्निधौ॥
॥ शिवस्थानेषुसन्ध्यायांशून्यागारेचतुष्पथे ॥ १८८ ॥ यःपठे
च्छृणुयाद्वापिसयोगीनात्रसंशयः ॥ सर्व्वस्वन्दक्षिणान्दद्यात्स्त्री
पुत्रादिकमेवच ॥ १८९ ॥ स्वच्छन्दमानसोभूत्वास्तवमेतत्स
मुद्धरेत् ॥ एतत्स्तोत्ररतोदेविहररूपोनसंशयः ॥ १९० ॥ यःप
ठेच्छृणुयाद्वापिएकचित्तेनसर्व्वदा ॥ सदीर्घायुःसुखीवाग्मीवा
णीतस्यनसंशयः ॥ १९१ ॥ गुरुपादरतोभूत्वाकामिनीनाम्भवे

त्प्रियः॥धनवान्गुणवान्श्रीमान्धीमानिवगुरुःप्रिये ॥१९२॥ सर्व्वेषान्तुप्रियोभूत्वापूजयेत्सर्व्वदास्तवम् ॥ मन्त्रसिद्धिःकरस्थैव तस्यदेविनसंशयः ॥ १९३ ॥ कुबेरत्वम्भवेत्तस्यतस्याधीनाहि सिद्धयः ॥ मृतपुत्राचयानारीदौर्भाग्यपरिपीडिता ॥ १९४ ॥ वन्ध्यावाकाकवन्ध्यावामृतवत्साचयाङ्गना ॥ धनधान्यविहीनाचरोगशोकाकुलाचया॥१९५॥ताभिरेतन्महादेविभूर्ज्जपत्रेविलेखयेत्॥सव्येभुजेचबध्नीयात्सर्व्वसौख्यवतीभवेत्॥१९६॥ एवम्पुनःपुनःप्रायादुःखेनपरिपीडिता ॥ सभायांव्यसनैर्व्वाणीविवादेशत्रुसङ्कटे ॥१९७॥ चतुरङ्गेतथायुद्धेसर्व्वत्रापदिपीडिते ॥ स्मरणादस्यकल्याणिसंशयँय्यातिदूरतः ॥ १९८ ॥ नदेयम्परशिष्यायनाभक्तायचदुर्ज्जने ॥ दाम्भिकायकुशीलायकृपणायसुरेश्वरि ॥ १९९ ॥ दद्याच्छिष्यायशान्तायविनीतायजितात्मने ॥ भक्तायशान्तियुक्तायजपपूजारतायच ॥ २०० ॥ जन्मान्तरसहस्रैस्तुवर्ण्णितुन्नैवशक्यते ॥ स्तवमात्रस्यमाहात्म्यँव्वक्त्रकोटिशतैरपि ॥ २०१ ॥ विष्णवेकथितम्पूर्व्वंब्रह्मणापिप्रियँव्वदे ॥ अधुनापितवस्नेहात्कथितम्परमेश्वरि ॥ २०२ ॥ गोपितव्यम्पशुभ्यश्चसर्व्वथान प्रकाशयेत्॥२०३॥इतिश्रीमहातन्त्रार्ण्णवेईश्वरपार्व्वतीसँव्वादे भुवनेश्वरीभकारादिसहस्रनामस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

इति शाक्तप्रमोदे भुवनसुन्दरीतन्त्रं समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना-बम्बई.

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-
श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-
संगृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

पञ्चम्

छिन्नमस्तातन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-
दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्
श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन
मुम्बय्यां
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शाके १८१५

त्प्रियः॥धनवान्गुणवान्श्रीमान्धीमानिवगुरुःप्रिये ॥१९२॥ सर्व्वेषान्तुप्रियोभूत्वापूजयेत्सर्व्वदास्तवम् ॥ मन्त्रसिद्धिःकरस्थैव तस्यदेविनसंशयः ॥ १९३ ॥ कुबेरत्वम्भवेत्तस्यतस्याधीनाहि सिद्धयः ॥ मृतपुत्राचयानारीदौर्भाग्यपरिपीडिता ॥ १९४ ॥ वन्ध्यावाकाकवन्ध्यावामृतवत्साचयाङ्गना ॥ धनधान्यविहीनाचरोगशोकाकुलाचया॥१९५॥ताभिरेतन्महादेविभूर्ज्जपत्रेविलेखयेत्॥सव्येभुजेचबध्नीयात्सर्व्वसौख्यवतीभवेत् ॥१९६॥ एवम्पुनःपुनःप्रायाद्दुःखेनपरिपीडिता ॥ सभायांव्यसनैर्व्वाणीविवादेशत्रुसङ्कटे ॥१९७॥ चतुरङ्गेतथायुद्धेसर्व्वत्रापदिपीडिते ॥ स्मरणादस्यकल्याणिसंशयँय्यातिदूरतः ॥ १९८ ॥ नदेयम्परशिष्यायनाभक्तायचदुर्ज्जने ॥ दाम्भिकायकुशीलायकृपणायसुरेश्वरि ॥ १९९ ॥ दद्याच्छिष्यायशान्तायविनीतायजितात्मने ॥ भक्तायशान्तियुक्तायजपपूजारतायच ॥ २०० ॥ जन्मान्तरसहस्रैस्तुवर्ण्णितुन्नैवशक्यते ॥ स्तवमात्रस्यमाहात्म्यँव्वक्त्रकोटिशतैरपि ॥ २०१ ॥ विष्णवेकथितम्पूर्व्वंब्रह्मणापिप्रियँव्वदे ॥ अधुनापितवस्नेहात्कथितम्परमेश्वरि ॥ २०२ ॥ गोपितव्यम्पशुभ्यश्चसर्व्वथान प्रकाशयेत्॥२०३॥इतिश्रीमहातन्त्रार्ण्णवेईश्वरपार्व्वतीसँव्वादे भुवनेश्वरीभकारादिसहस्रनामस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

इति शाक्तप्रमोदे भुवनसुन्दरीतन्त्रं
समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना-बम्बई.

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-
श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-
संगृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

पञ्चम्

छिन्नमस्तातन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-
दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्
श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन
मुम्बय्यां
स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ शाक्तप्रमोदः ।

छिन्नमस्तातन्त्रम् ।

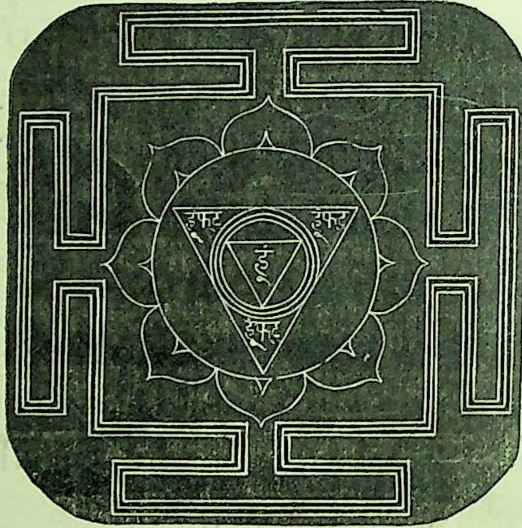
अथछिन्नमस्ताध्यानम् ।

प्रत्यालीढपदांसदैवदधतीञ्छिन्नंशिरः कर्त्तृकान्दिग्वस्त्रांस्वकबन्धशोणितसुधाधाराम्पिबन्तीम्मुदा ॥नागाबद्धशिरोमणिन्त्रिनयनांहृद्युत्पलालङ्कृताम् रत्यासक्तमनोभवोपरिदृढान्ध्यायेज्जवासन्निभाम् ॥ दक्षे चातिसिताविमुक्तचिकुराकर्त्रीन्तथाखर्प्परम् हस्ताभ्यान्दधतीरजोगुणभवा नाम्नापिसावर्ण्णिनी ॥ देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धाराम्पिबन्तीमुदा नागाबद्धशिरोमणिर्म्मनुविदाध्येयासदासासुरैः ॥ प्रत्यालीढपदाकबन्धाविगलद्रक्ताम्पिबन्तीमुदा सैषायाप्रलयेसमस्तभुवनम्भोक्तुंक्षमातामसी ॥ शक्तिः सापिपरात्परा भगवती नाम्नापराडाकिनी ॥



अथयन्त्रोद्धारः ॥

त्रिकोणँव्विन्यसेदादौ तन्मध्येमण्डलत्रयम् ॥ तन्मध्येविन्यसेद्योनिन्द्वारत्रयसमन्विताम् ॥ बहिरष्टदलम्पद्मम्भूबिम्बत्रितयम्पुनः ॥ कूर्च्चबीजल्लिखेन्मध्ये त्रिकोणेफट्समन्वितम् ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

लक्ष्मी ᳲ प्रथमबीजेऽस्तिलज्जाबीजेमनोभवः ॥ तृतीयेऽस्मिन्सदादेवी महापातकनाशिनी ॥ चतुर्थेतुगुणातीता मुक्तिविद्याप्रदायिका ॥ वकारेवरुणःसाक्षात् जकारेतुसुराधिपः ॥ रेफेहुताशनोदेवो वकारेवसुधाधिपः ॥ ऐकारेत्रिपुरादेवीरेफेत्रिपुरसुन्दरी ॥ त्रैलोक्यविजयादेवी सदैवौकारसंस्थिता ॥चकारेचन्द्रमादेवो नकारेहिविनायकः ॥ ईकारेकमलासाक्षाद्यकारेचसरस्वती ॥ मायायुग्मेसदादेवी प्रकृत्यासहसङ्गता॥ वैखरीचैवफट्कारेस्वाकारेकुसुमायुधः ॥ हाकारेचरतिस्तिष्ठेदेवंमन्त्रसमुच्चये ॥

अथमन्त्रः ॥

श्रींह्रींक्लींऐंवज्रवैरोचनीयेहूंहूंफट्स्वाहा ॥

अथपूजाविधिः॥

प्रातःकृत्यादिकङ्कृत्वामन्त्राचमनङ्कुर्य्यात् ॥ यथा ॥ लक्ष्मी मायाकूर्च्चबीजैस्त्रिभिः पीत्वाम्बुसाधकः ॥ वाग्भवेनोष्ठौसम्मृज्य मायाभ्यान्तुद्विरुन्मृजेत् ॥ कूर्च्चेनक्षालयेत्पाणीएभिर्म्मन्त्रैश्चवि न्यसेत् ॥ श्रीमायाकूर्च्चवाक्कामत्रिपुटाभगवर्ण्णकैः ॥ कामक लाङ्कुशाभ्याञ्चवक्त्रनासाक्षिकर्ण्णकान् ॥ नाभिहृन्मस्तकञ्चांसौ स्पृष्टाशम्भुर्भवेत्क्षणात् ॥ आचम्यैवञ्छिन्नमस्तव्वँत्सरात्ताम्प्रप श्यति ॥ ततःप्राणायामान्तँव्विधायषोढान्यासङ्कुर्य्यात् ॥ म न्त्रषोढान्ततःकुर्य्यात्त्रैलोक्यवशकारिणीम् ॥ श्रीबालात्रिपु टायोनिप्रासादप्रणवैस्तथा ॥ कालीवध्वङ्कुशैः कामकलाकूर्च्चा स्त्रकैः क्रमात् ॥ षोडशोमनुवर्ण्णैश्चपृथगष्टादशाक्षरी ॥ एभिर्व्वी जैर्म्मातृकार्ण्णान् स्वेषुस्थानेषुविन्यसेत् ॥ एषाब्रह्मस्वरूपाहि बीजषोढाप्रकीर्त्तिता ॥ अस्याः संन्यसनात्सर्व्वे वज्रदेहाभवन्ति हि ॥ सर्व्वैश्वर्य्ययुतास्तेहि जीवन्मुक्तादशाब्दतः ॥ ततः ऋष्या दिन्यासः ॥ अस्यमन्त्रस्यभैरवऋषिः सम्राट्छन्दः छिन्नमस्ता देवता हूंकारद्वयंबीजंस्वाहाशक्तिरभीष्टार्थसिद्धयेविनियोगः । यथा॥शिरसिभैरवऋषयेनमः मुखेसम्राट्छन्दसेनमः हृदिछिन्नम स्तादेवतायैनमः गुह्ये हूंहूंबीजायनमः पादयोः स्वाहाशक्तयेन मः । ततःकराङ्गन्यासौ । ओंआंखड्गायहृदयायस्वाहाइतिकनी यसि । ओंइँसुखड्गायशिरसेस्वाहा इतिपवित्राङ्गुल्योः । ओंऊँसु वज्रायशिखायैस्वाहा इतिमध्यमयोः । ओंऐंपाशायकवचाय स्वाहा इतितर्ज्जन्योः । ओंऔंअङ्कुशायनेत्रत्रयायस्वाहा इत्य ङ्गुष्ठयोः । ओंअःसुरक्षारक्षासुरक्षायास्त्रायफट् इतिकरतलकरपृष्ठ योः । एवंहृदयादिषु ॥ तदुक्तम्भैरवतन्त्रे । उच्चरेत्पूर्व्वमाकारम्बि

त्रयसमन्विताम् ॥ बहिरष्टदलम्पद्मम्भूविम्बत्रितयम्पुनः॥कूर्च्चबीजँल्लिखेन्मध्येत्रिकोणेफट्समन्वितम् ॥ यद्वाएतद्ध्यानोक्तय्यँन्त्रम् । तथाच । अपरञ्चप्रवक्ष्यामिशृणुदेवियथाक्रमम् ॥ स्वनाभौनीरजंध्यायेद्भानुमण्डलसन्निभम् । योनिचक्रसमायुक्तङ्गुणत्रितयसंज्ञितम् ॥ तत्रमध्येमहादेवींश्छिन्नमस्तांस्मरेद्यतिः ॥ प्रदीपकलिकाकारामद्वितीयव्यवस्थिताम् ॥ योनिमुद्रासमायुक्तांहृदयस्थितलोचनाम् ॥ ध्येयमेतद्यतीनाञ्च गृहस्थानान्निशामय ॥ यथा । अन्तरेस्वशरीरस्यनाभिनीरजसङ्गताम् ॥ निर्लेपान्निर्गुणांसूक्ष्माम्बालचन्द्रसमप्रभाम् ॥ समाधिमात्रगम्यान्तुगुणत्रितयवेष्टिताम् ॥ कलातीताङ्गुणातीताम्मुक्तिमात्रप्रदायिनीम् ॥ एवन्ध्यात्वामानसैःसम्पूज्यतारिणीवच्छङ्खस्थापनङ्कुर्य्यात् ॥ ततऽपीठपूजा ॥ आधारशक्तयेनमः प्रकृतयेनमः कूर्म्मा० अनन्ताय० पृथिव्यै० क्षीरसमुद्राय० रत्नद्वीपाय० कल्पवृक्षाय० । तदधःस्वर्णसिंहासनायआनन्दकन्दायसम्बिल्वलाय० सर्व्वतत्त्वात्मकपद्माय० संसत्वाय० रंरजसे० तंतमसे० आँ आत्मने० अंअन्तरात्मने० पंपरमात्मने० ह्रींज्ञानात्मनेनमः । पद्ममध्येरतिकामार्त्तौ । भैरवमतेतु । आधारशक्तिङ्कूर्म्मन्तुनागराजमतऽपरम् ॥ पद्मनालञ्च पद्मञ्चपूजयेन्मन्त्रविन्नरः ॥ मण्डलञ्चतुरस्रन्तु रजस्सत्वन्तमस्तथा ॥ रतिकामौचसम्पूज्यशक्तिपूजांसमाचरेत् ॥ रतिकामोपरिवज्रवैरोचनीयेदेहि २ एहि २ गृह्ण २ ममसिद्धिन्देहि २ ममशत्रून् मारय २ करालिकेहूँफट्स्वाहा इति पीठमन्त्रस्सर्वत्रप्रणवादिनमोन्तेनपूजयेत्॥ पुनर्ध्यात्वावाहयेत्॥ सर्व्वसिद्धिवर्ण्णनीयेसर्व्वसिद्धिडाकिनीये वज्रवैरोचनीयेइहावह आवह ॥ पुनस्तन्मन्त्रमुचार्य्य इहतिष्ठ २ इहसन्निधेहि इह सन्निरुध्यस्वइत्यनेनावाह्य ओंआँह्रींक्रोंहंसःइत्यनेनप्राणप्रति

ष्टांकृत्वा । ओंआंषडङ्गायहृदयायस्वाहा॥ इत्यादिनाषडङ्गान्वि न्यस्ययथाशक्तिपूजाङ्कृत्वाबलिन्दद्यात् । तथा । वज्रवैरोचनीयेदे हिर एहि २ गृह्ण२ बलिम्ममसिद्धिन्देहि २ ममशत्रून्मारयमारय करालिकेहूँ फट्स्वाहा ॥ इतिमन्त्रेणततोदेव्यादक्षिणेओंव र्णिण्यैनमः वामेओंडाकिन्यै० ॥ ततोदेव्यङ्गेषडङ्गंसम्पूज्यदक्षि णे ओंशङ्खनिधयेनमः वामेओंपद्मनिधयेनमःपूर्वादिदिक्षुल क्ष्मींलज्जाम्मायव्वाँणीञ्चपूजयेत् । विदिक्षुब्रह्मविष्णुरुद्रेश्वरान् म ध्येसदाशिवंसर्वत्रप्रणवादिनमोन्तेनपूजयेत्।ततः पञ्चपुष्पाञ्जली न्दत्वा आवरणान्पूजयेत् ॥ अग्नीशासुरवायुषु मध्येदिक्षुचओं आँखड्गायहृदयायस्वाहाइत्यादिनाषडङ्गानिसम्पूज्य अष्टपत्रे षुपूर्वादिक्रमेण ओंह्रींकाल्यैनमःएवंवर्णिन्यै०डाकिन्यै०भैरव्यै० महाभैरव्यै०इन्द्राक्ष्यै०पिङ्गाक्ष्यै० संहारिण्यै० । सर्व्वत्रप्रणवादि नमोन्तेनपूजयेत् । यथा एकान्नामाभिधाङ्कालीव्वँर्णिनीण्डाकि नीन्तथा ॥ भैरवीञ्चमहापूर्वाम्भैरवीन्तदनन्तरम् ॥ इन्द्राक्षीञ्चस पिङ्गाक्षीन्ततःसंहारकारिणीम् ॥ पूर्वादिकेदलेपूज्याःशक्तयश्चय थाक्रमम् ॥ प्रणवादिनमोन्तेनलज्जाबीजं समुच्चरन् ॥ पद्ममध्ये हूँहूँफट्नमःस्वाहानमःदेव्यादक्षिणेसम्राट्छन्दसेनमः देव्याउत्त रेसर्ववर्णेभ्योनमःपुनर्दक्षिणे ओंबीजशक्तिभ्यान्नमः। पद्माग्रेषुपू र्व्वादिक्रमेण ब्राह्म्यै० माहेश्वर्य्यै० वैष्णव्यै० वाराह्यै०इन्द्राण्यै० चामुण्डायै ० महालक्ष्म्यै ० । सर्वत्रप्रणवादिनमोन्तेन पूजयेत ततश्चतुर्द्दिक्षुद्वारेषुओंकरालायनमः विकरालायनमः एवंअतिक राळाय०महाकरालाय० ॥ यथाभैरवीये । पूर्वद्वारेकरालञ्चविका रालञ्चदक्षिणे ॥ पश्चिमेऽतिकरालञ्चमहाकरालमुत्तरे ॥ ततोधू पादिविसर्ज्जनान्तङ्कर्म्मसमापयेत् । विसर्ज्जनेत्वयव्विँशेषः । सं हारमुद्राम्प्रदर्श्य अञ्जलावारोप्यवामनासापुटेन । योनिमुद्रास

माऽऽरूढाम्प्रदीपकलिकोज्ज्वलाम् ॥ कृष्णपक्षेविधुमिवक्रमेणक्षीणताङ्गताम् ॥ इमम्मन्त्रंसमुच्चार्य्यचण्डरश्मिन्निवेशयेत् ॥ उत्तरेशिखरेइत्यादि । अस्यपुरश्चरणंलक्षजपःसिद्धविद्यात्वात् । बलिदानेतुभैरवीये । रात्रौबलिःप्रदातव्योमत्स्यमांससुरादिभिः ॥ अथवामधुपानाद्यैर्म्मधुरैर्व्विभवक्रमैः॥ मन्त्रस्तु । उच्चरेत्प्रणवम्पूर्वंसर्वसिद्धिप्रदेऽन्वितम् ॥ वर्णिनीयेततोवाच्यं सर्वसिद्धिप्रदेततः ॥ डाकिनीयेततोवाच्यन्देवीनामततःपरम् ॥ एह्येहीतिततोवाच्यमिमम्बलिमनन्तरम् ॥ गृह्णगृह्णततःप्रोक्त्वाममसिद्धिमनन्तरम् ॥ देहिदेहीतिमायाचततःफट्स्वाहयायुतः ॥ बलिमन्त्रःसमाख्यातः पूजितोऽयंसुरेश्वरि ॥ इतिपूजा ॥

अथस्तोत्रम् ॥

ईश्वरउवाच॥स्तवराजमहव्वँन्देवैरोचन्याः शुभप्रदम्॥ नाभौशुभ्रारविन्दन्तदुपरिविलसन्मण्डलञ्चण्डरश्मेः संसारस्यैकसारान्त्रिभुवनजननीन्धर्म्मकामार्थदात्रीम्। तस्मिन्मध्येत्रिभागेत्रितयतनुधराञ्छिन्नमस्ताम्प्रशस्तान्ताव्वँन्देछिन्नमस्तां शमनभयहराय्योँगिनीय्योँगमुद्राम् ॥१॥ नाभौशुद्धसरोजवक्त्रविलसद्बन्धूकपुष्पारुणम्भास्वद्भास्करमण्डलन्तदुदरे तद्योनिचक्रम्महत् ॥तन्मध्येविपरीतमैथुनरतप्रद्युम्नसत्कामिनीपृष्ठस्थान्तरुणार्क्ककोटिविलसत्तेजःस्वरूपाम्भजे ॥ २ ॥ वामेछिन्नशिरोधरान्तदितरे पाणौमहत्कर्त्तृकाम्प्रत्यालीढपदान्दिगन्तवसनामुन्मुक्तकेशव्रजाम्। छिन्नात्मीयशिरस्समुच्छलदसृग्धाराम्पिबन्तीम्पराम् बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्रयोद्भासिनीम् ॥ ३ ॥ वामादन्यत्रनालम्बहुगहनगलद्रक्तधाराभिरुच्चैर्ग्गायन्तीमस्थिभूषाङ्करकमललसत्कर्त्तृकामुग्ररूपाम्॥रक्तामारक्तकेशीमपगतवसनाव्वँर्णिनीमात्मश

क्तिम्प्रत्यालीढोरुपादामरुणितनयनाय्यँयोगिनीय्यँयोगनिद्राम् ॥४॥ दिग्वस्त्राम्मुक्तकेशीम्प्रलयघनघटाघोररूपाम्प्रचण्डान्दंष्ट्रादुःप्रेक्ष्यवक्त्रोदरविवरलसल्लोलजिह्वाग्रभासाम् ॥ विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्भोगिनीम्भीममूर्त्तिं सद्यश्छिन्नात्मकण्ठप्रगलितरुधिरैर्डाकिनीर्व्वर्द्धयन्तीम् ॥ ५ ॥ ब्रह्मेशानाच्युताद्यैःशिरसिविनिहितामन्दपादारविन्दैराज्ञैर्योगीन्द्रमुख्यैः प्रतिपदमनिशाश्चिन्तिताञ्चिन्त्यरूपाम् ॥ संसारेसारभूतान्त्रिभुवनजननीञ्छिन्नमस्ताम्प्रशस्तामिष्टान्तामिष्टदात्रीङ्कलिकलुषहराञ्चेतसा चिन्तयामि ॥ ६ ॥ उत्पत्तिस्थितिसंहृतीर्घटयितुन्धत्तेत्रिरूपान्तनुन्त्रैगुण्याज्जगतोयदीयविकृतिर्ब्रह्माच्युतः शूलभृत् ॥ तामाद्याम्प्रकृतिंस्मरामिमनसासर्व्वार्त्थसंसिद्धये यस्याःस्मेरपदारविन्दयुगले लाभम्भजन्तेनराः ॥ ७ ॥ अभिलषितपरस्त्रीयोगपूजापरोऽहम्बहुविधजनभावारम्भसम्भावितोऽहम् ॥ पशुजनविरतोऽहम्भैरवीसंस्थितोऽहङ्गुरुचरणपरोऽहम्भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥८॥ इदंस्तोत्रम्महापुण्यम्ब्रह्मणाभाषितम्पुरा ॥ सर्व्वसिद्धिप्रदंसाक्षान्महापातकनाशनम्॥९॥यः पठेत्प्रातरुत्थाय देव्यास्सन्निहितोऽपिवा ॥ तस्यसिद्धिर्भवेद्देवि वाञ्छितार्त्थप्रदायिनी ॥१०॥ धनन्धान्यंसुतञ्जायां हयंहस्तिनमेवच ॥ वसुन्धराम्महाविद्यामष्टसिद्धिर्लभेद्ध्रुवम् ॥ ११ ॥ वैयाघ्राजिनरञ्जितस्वजघनेऽरण्येप्रलम्बोदरे खर्व्वेऽनिर्व्वचनीयपर्व्वसुभगे मुण्डावलीमण्डिते ॥ कर्त्रीङ्कुन्दरुचिंविचित्रवनिताञ्ज्ञानेदधानेपदेमातर्भक्तजनानुकम्पिनिमहामायेऽस्तुतुभ्यन्नमः ॥ १२ ॥ इति छिन्नमस्तास्तोत्रंसमाप्तम् ॥ ७ ॥

अथकवचम् ॥

श्रीदेव्युवाच ॥ कथिताश्छिन्नमस्ताया यायाविद्यास्सुगोपिताः ॥ त्वयानाथेनजीवेशश्रुताश्चाधिगतामया॥ १॥इदानींश्रोतुमिच्छामिकवचंपूर्व्वसूचितम् ॥ त्रैलोक्यविजयन्नाम कवचङ्कथ्यताम्प्रभो ॥ २ ॥ भैरवउवाच ॥ शृणुवक्ष्यामिदेवेशिसर्व्वदेवनमस्कृते ॥ त्रैलोक्यविजयन्नाम कवचंसर्वमोहनम् ॥ ३॥सर्व्वविद्यामयंसाक्षात्सुरासुरजयप्रदम् ॥ धारणात्पठनादीशस्त्रैलोक्यविजयीविभुः ॥ ४ ॥ ब्रह्मानारायणोरुद्रोधारणात्पठनाद्यतः ॥ कर्त्तापाताचसंहर्त्ताभुवनानांसुरेश्वरि ॥ ५ ॥ नदेयंपरशिष्येभ्यअभक्तेभ्योविशेषतः ॥ देयंशिष्याय भक्ताय प्राणेभ्योऽप्यधिकायच ॥ ६ ॥ देव्याश्चच्छिन्नमस्तायाःकवचस्यचभैरवः ॥ ऋषिर्विराट्चछन्दश्चदेवताछिन्नमस्तका ॥ ७ ॥ त्रैलोक्यविजयेमुक्तौ विनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ ओंहूँकारोमेशिरःपातुछिन्नमस्ताबलप्रदा ॥ ८ ॥ ह्रींह्रींऐंत्र्यक्षरीपातु भालव्वँकन्दिगम्बरी ॥ श्रींह्रींहूँऐंद्दशौपातुमुण्डङ्कर्त्तृधरापिसा ॥ ९ ॥ साविद्याप्रणवाद्यन्ता श्रुतियुग्मंसदाऽवतु ॥ वज्रवैरोचनीयेहूँफट्स्वाहाचभ्रुवादिकम् ॥ १० ॥ घ्राणम्पातुच्छिन्नमस्ता मुण्डकर्त्तृविधारिणी॥ ॥ ११ ॥ श्रीमाकूर्च्चवाग्बीजवज्रवैरोचनीये(?)हूं ॥हूंफट्स्वाहामहाविद्याषोडशीब्रह्मरूपिणी ॥ १२ ॥ स्वपार्श्वेवर्णिकाचासृग्धाराम्पाययतीमुदा ॥ वदनंसर्व्वदापातु च्छिन्नमस्तास्वशक्तिका ॥ १३ ॥ मुण्डकर्त्तृधरारक्ता साधकाभीष्टदायिनी॥वर्ण्णिनीडाकिनीयुक्तासापिमामभितोऽवतु ॥ १४ ॥ रामाद्यापातुजिह्वाञ्चलज्जाद्यापातुकण्ठकम् ॥ कूर्च्चाद्याहृदयम्पातु वागाद्यास्तनयुग्मकम् ॥ १५ ॥ रमयापुटितात्रिद्या पार्श्वौपातुसुरेश्वरी ॥

मायया पुटिता विद्या नाभिदेशन्दिगम्बरी ॥ १६ ॥ कूर्चेन पुटिता देवी पृष्ठदेशंसदावतु ॥ वाग्बीजपुटितातेषाम्मध्यम्पातुसशक्तिका ॥ १७ ॥ ईश्वरीकूर्चवाग्बीजेवज्रवैरोचनीयेहूं ॥ हूंफट्स्वाहा महाविद्यासूर्य्यकोटिसमप्रभा ॥ १८॥ छिन्नमस्तासदापायादूरुयुग्मंसशक्तिका ॥ ह्रींहूंवर्णिनीजानूश्रीं ह्रंह्रींह्रूंचडाकिनीपदम् ॥१९॥ सर्व्वविद्यास्थितानित्या सर्व्वाङ्गम्मेसदावतु ॥ प्राच्याम्पायादेकलिङ्गायोगिनीपावकेवतु ॥ २० ॥डाकिनीदक्षिणेपातु श्रीमहाभैरवीचमाम्॥नैर्ऋत्यांसततम्पातुभैरवीपश्चिमेऽवतु॥२१ इन्द्राणीपातुवायव्येऽसिताङ्गीपातुचोत्तरे ॥ संहारिणीसदापातु शिवकोणेसकर्त्तृका ॥२२॥ इत्यष्टशक्तयःपान्तु दिग्विदिक्षुसकर्त्तकाः॥क्रींक्रींक्रींसापातुपूर्वेहूंहूंमाम्पातुपावके॥२३॥ह्रींह्रींमान्दक्षिणेपातु दक्षिणेकालिकाऽवतु॥क्रींक्रींक्रींचैवनैर्ऋत्यांह्रींह्रींमाम्पश्चिमेऽवतु ॥ २४ ॥ ह्रींह्रींम्पातुमरुत्कोणेस्वाहापातुसदोत्तरे ॥ महाकालीखड्गहस्ताशिवकोणेसदाऽवतु ॥ २५ ॥ तारामायावधूःकूर्चफट्कारोमांमहामनुः॥ खड्गकर्त्तृधरातारा चोर्द्धदेशंसदावतु ॥२६॥ ह्रींस्त्रींहूंफट्चपातालेमांपातुचैकजटासती ॥ तारातु सहिताखेऽव्यान्महानीलसरस्वती ॥ २७ ॥ इतितेकथितन्देव्याः कवचम्मन्त्रविग्रहम् ॥यद्धृत्वापठनाद्भीमः क्रोधाख्योभैरवप्रभुः॥२८॥सुरासुरमुनीन्द्राणाङ्कर्त्ताहर्त्ताभवेत्स्वयम् ॥ यस्याज्ञयामधुमतीयातिसासाधकालयम् ॥ २९ ॥ भूतिन्याद्याश्चयोगिन्योयक्षिण्याद्याश्चखेचराः ॥ आज्ञांगृह्णन्तितास्तस्य कवचस्यप्रसादतः ॥ ३० ॥ एतदेवपरम्ब्रह्मकवचम्मन्मुखोदितम् ॥ देवीमभ्यर्च्यगन्धाद्यैर्मूलेनैवपठेत्सकृत् ॥ ३१ ॥ सँव्वत्सरकृतायाश्च पूजायाः फलमाप्नुयात्॥ भूर्ज्जेविलिखितञ्चैवगुटिकाङ्काञ्चनीस्थिताम् ॥ ३२ ॥ धारयेद्दक्षिणेबाहौकण्ठेवायदिवान्यतः ॥ सर्व्वैं

श्वर्य्यंयुतोभूत्वात्रैलोक्यव्वँशमानयेत् ॥ ३३ ॥ तस्यगेहेवसेल्लक्ष्मीर्वाणीचवदनाश्रमे ॥ ब्रह्मास्त्रादीनिशस्त्राणितद्गात्रेयान्तिसौम्यताम् ॥ ३४ ॥ इदङ्कवचमज्ञात्वा योभजेच्छिन्नमस्तकाम् ॥ सोऽपिशस्त्रप्रहारेणमृत्युमाप्नोतिसत्वरम्॥३५॥ इतिश्रीभैरवतन्त्रे भैरवीभैरवसँव्वादेत्रैलोक्यविजयन्नाम छिन्नमस्ताकवचंसमाप्तम्

अथ हृदयम् ॥

श्रीपार्व्वत्युवाच॥श्रुतम्पूजादिकंसम्यग्भवद्वक्त्राब्जनिस्सृतम् ॥ हृदयञ्छिन्नमस्तायाश्श्रोतुमिच्छामिसाम्प्रतम् ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ नाद्यावधिमयाप्रोक्तङ्कस्यापिप्राणवल्लभे ॥ यत्त्वया परिपृष्टोहँव्वक्ष्येप्रीत्यैतवप्रिये॥ ओमस्यश्रीछिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रमन्त्रस्यभैरवऋषिस्सम्राट्छन्दश्छिन्नमस्तादेवता हूंबीजंओं शक्तिः ह्रींकीलकम् शत्रुक्षयकरणार्त्थेपाठेविनियोगः ॥ ओंहृदयायनमःओंहूंशिरसेस्वाहा ओं ह्रींशिखायैवषट् ओंक्लींनेत्रत्रयायवौषट् ओंऐंकवचायहुम् ओंहूंअस्त्रायफट् ॥ एवङ्करन्यासः ॥ अथध्यानम्॥रक्ताभांरक्तकेशीङ्करकमललसत्कर्तृकांकालकान्तिव्विँच्छिन्नात्मीयमुण्डासृगरुणवहुलादग्रधाराम्पिबन्तीम् ॥ विघ्नाभ्रौघप्रचण्डश्वसनसमनिभां सेवितांसिद्धसङ्घैः पद्माक्षीञ्छिन्नमस्ताञ्छलकरदितिजच्छेदिनींसंस्मरामि ॥ १ ॥ वन्देऽहञ्छिन्नमस्तान्ताञ्छिन्नमुण्डधराम्पराम् ॥ छिन्नग्रीवोच्छटाच्छन्नां क्षौमवस्त्रपरिच्छदाम् ॥ १ ॥ सर्व्वदासुरसङ्घेन सेविताङ्घ्रिसरोरुहाम् ॥ सेवेसकलसम्पत्त्यैछिन्नमस्तां शुभप्रदाम् ॥ २ ॥ यज्ञानाय्योगयज्ञाय यातुजातायुगेयुगे ॥दानवान्तकरीदेवी छिन्नमस्ताम्भजामिताम् ॥ ३ ॥ वैरोचनीव्वँरारोहां वामदेवविवर्द्धिताम् ॥ कोटिसूर्य्यप्रभाव्वँन्दे विद्युद्वर्णाक्षिमण्डिताम् ॥ ४ ॥

निजकण्ठोच्छलद्रक्तधारयायामुहुर्म्मुहुः ॥ योगिनीस्तर्पयन्त्यु ग्रातस्याश्चरणमाश्रये ॥ ५ ॥ हूमित्येकाक्षरंमन्त्रं यदीयँय्युक्तमानसः ॥ योजपेत्तस्यविद्वेषी भस्मताँय्यातिताम्भजे ॥ ६ ॥ हूं स्वाहेतिमनुंसम्यग्यःस्मरत्यार्त्तिमान्नरः ॥ छिनत्तिछिन्नमस्तायातस्यबाधांनमामिताम् ॥ ७ ॥ यस्याऽकटाक्षमात्रेणक्रूरभूतादयोद्रुतम् ॥ दूरतस्सम्पलायन्ते छिन्नमस्तांभजामिताम् ॥ ८ ॥ क्षितितलपरिरक्षा क्षान्तरोषासुदक्षा छलयुतखलकक्षाछेदने क्षांतिलक्ष्या ॥ क्षितिदितिजसुपक्षा क्षोणिपाक्ष्य्यशिक्षा जयतुजयतुचाक्षाछिन्नमस्तारिभक्षा ॥ ९ ॥ कलिकलुषकलानां कर्त्तनेकर्त्तृहस्ता सुरकुवलयकाशा मन्दभानुप्रकाशा ॥ असुरकुलकलापत्रासिकाकालमूर्त्तिर्जयतुजयतुकाली छिन्नमस्ताकराली ॥ १० ॥ भुवनभरणभूरिभ्राजमानानुभावा भवभवविभवानां भारणोद्भातभूतिः ॥ द्विजकुलकमलानां भासिनी भानुमूर्त्तिर्म्भवतुभवतुवाणीच्छिन्नमस्ताभवानी ॥ ११ ॥ममरिपुगणमाशुच्छेत्तुमुग्रङ्कृपाणं सपदिजननितीक्ष्णञ्छिन्नमुण्डङ्गृहाण॥भवतुतवयशोल ञ्छिन्धिशत्रून्खलान्मे ममचपरिदिशेष्टं छिन्नमस्तेक्षमस्व ॥ १२ ॥ छिन्नग्रीवाछिन्नमस्ता छिन्नमुण्डधराक्षता ॥ क्षोदक्षेमकरीस्वक्षा क्षोणीशाच्छादनक्षमा ॥ १३ ॥ वैरोचनीवरारोहाबलिदानप्रहर्षिता ॥ बलिपूजितपादाब्जावासुदेवप्रपूजिता ॥ १४ ॥ इतिद्वादशनामानि छिन्नमस्ताप्रियाणियः ॥ स्मरेत्प्रातस्समुत्थाय तस्यनश्यन्तिशत्रवः ॥ १५ ॥ यांस्मृत्वासन्तिसद्यस्सकलसुरगणास्सर्व्वदासम्पदाढ्याः शत्रूणांसङ्घमाहत्यविशदवदनास्स्वस्थचित्ताश्श्रयन्ति ॥ तस्यास्सङ्कल्पवन्तस्सरसिजचरणसन्ततंसंश्रयन्ति साद्याश्रीशादिसेव्यासुफलतुसुतरांछिन्नमस्ताप्रशस्ता ॥ १६ ॥ हृदयमिदम

ज्ञात्वाहन्तुमिच्छतियोद्विषम् ॥ कथंतस्याचिरंशत्रुर्न्नाशमेष्य तिपार्व्वति ॥ १७ ॥ यदीच्छेन्नाशनंशत्रोश्शीघ्रमेतत्पठेन्नरः ॥ छिन्नमस्ताप्रसन्नापि ददातिफलमीप्सितम् ॥ ॥ १८ ॥ शत्रुप्रश मनंपुण्यं समीप्सितफलप्रदम् ॥ आयुरारोग्यदञ्चैव पठतांपु ण्यसाधनम् ॥ १९ ॥ इतिश्रीनन्द्यावर्त्ते महादेवपार्व्वतीसँव्वादे श्रीछिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

अथाष्टोत्तरशतनाम ॥

श्रीपार्व्वत्युवाच ॥ नाम्नांसहस्रंपरमं छिन्नमस्ताप्रियंशुभम् ॥ कथितम्भवताशम्भोसद्यश्शत्रुनिकृन्तनम् ॥ १ ॥ पुनःपृ च्छाम्यहन्देवकृपाङ्कुरुममोपरि ॥ सहस्रनामपाठेचअशक्तोयः पुमान्भवेत् ॥ २ ॥ तेनकिम्पठ्यतेनाथतन्मेब्रूहिकृपामय ॥ श्रीसदाशिवउवाच ॥ अष्टोत्तरशतन्नाम्नांम्पठ्यतेतेनसर्व्वदा ॥ ॥ ३ ॥ सहस्रनामपाठस्यफलम्प्राप्नोतिनिश्चितम् ॥ ओमस्यश्री छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्यसदाशिवऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीछिन्नमस्तादेवताममसकलसिद्धिप्राप्तयेजपेविनियोगः ॥ ओम् छिन्नमस्तामहाविद्यामहाभीमामहोदरी ॥ चण्डेश्वरीचण्डमा ताचण्डमुण्डप्रभञ्जिनी ॥ ४ ॥ महाचण्डाचण्डरूपाचण्डिका चण्डखण्डिनी॥क्रोधिनीक्रोधजननीक्रोधरूपाकुहूःकला ॥ ५ ॥ कोपातुराकोपयुताकोपसंहारकारिणी ॥ वज्रवैरोचनीवज्रावज्रक ल्पाचडाकिनी ॥ ६॥ डाकिनीकर्म्मनिरताडाकिनीकर्म्मपूजिता ता ॥ डाकिनीसङ्गनिरताडाकिनीप्रेमपूरिता ॥ ७ ॥ खट्वाङ्गधा रिणीखर्व्वाखड्गखर्प्परधारिणी ॥ प्रेताशनाप्रेतयुताप्रेतसङ्गविहा रिणी ॥ ८ ॥ छिन्नमुण्डधराछिन्नचण्डविद्याचाचित्रिणी ॥ ८ ॥ घोर रूपाघोरदृष्टिर्घोररावाघनोदरी ॥ ९ ॥ योगिनीयोगनिरताजप

यज्ञपरायणा ॥ योनिचक्रमयीयोनिर्य्योनिचक्रप्रवर्त्तिनी ॥ १० ॥ योनिमुद्रायोनिगम्यायोनियन्त्रनिवासिनी ॥ यन्त्ररूपायन्त्रमयी यन्त्रेशीयन्त्रपूजिता ॥ ११ ॥ कीर्त्याकपर्दिनीकालीक ङ्कालीकलविकारिणी ॥ आरक्तारक्तनयनारक्तपानपरायणा ॥ ॥ १२ ॥ भवानीभूतिदाभूतिर्भूतिदात्रीचभैरवी ॥ भैरवा चारनिरताभूतभैरवसेविता ॥ १३ ॥ भीमाभीमेश्वरीदेवीभीम नादपरायणा ॥ भवाराध्याभवनुता भवसागरतारिणी ॥ १४ ॥ भद्रकालीभद्रतनुर्भद्ररूपाचभद्रिका ॥ भद्ररूपामहाभद्रासुभद्रा भद्रपालिनी ॥ १५ ॥ सुभव्याभव्यवदनासुमुखीसिद्धसेविता ॥ सिद्धिदासिद्धिनिवहा सिद्धासिद्धनिषेविता ॥ १६ ॥ शुभदाशु भगाशुद्धा शुद्धसत्त्वाशुभावहा ॥ श्रेष्ठादृष्टिमयीदेवी दृष्टिसंहार कारिणी ॥ शर्व्वाणीसर्व्वगासर्व्वा सर्व्वमङ्गलकारिणी ॥ शिवा शान्ताशान्तिरूपामृडानी मदनातुरा ॥ १८ ॥ इतितेकथितन्दे विस्तोत्रम्परमदुर्ल्लभम् ॥ गुह्याद्गुह्यतरङ्गोप्यङ्गोपनीयम्प्रयत्नतः ॥ १९ ॥ किमत्रबहुनोक्तेन त्वदग्रेप्राणवल्लभे ॥ मारणम्मोहन न्द्वेविद्युच्चाटनमतः परम् ॥ २० ॥ स्तम्भनादिककर्म्माणिऋद्ध यस्सिद्धयोऽपिच ॥ त्रिकालपठनादस्यसर्व्वेसिद्ध्यन्त्यसंशयः ॥ ॥ २१ ॥ महोत्तमंस्तोत्रमिदँव्वरानने मयेरितन्नित्यमनन्यबुद्ध यः ॥ पठन्तियेभक्तियुतानरोत्तमा भवेन्नतेषांरिपुभिः पराजयः ॥ ॥ २२ ॥ इतिश्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथसहस्रनाम ॥

श्रीदेव्युवाच ॥ वददेवमहादेव सर्व्वशास्त्रविदाँव्वर ॥ कृपा ङ्कुरुजगन्नाथ कथयस्वममप्रभो ॥ प्रचण्डचण्डिकादेवी सर्व्व लोकहितैषिणी ॥ तस्याश्चकथितंसर्व्वंस्तवञ्चकवचादिकम् ॥

इदानीञ्छिन्नमस्ताया नाम्नांसाहस्रकंशुभम् ॥ मेप्रकाशयदेवेश कृपयाभक्तवत्सल ॥ शिवउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामि छिन्नायास्सुमनोहरम् ॥ गोपनीयम्प्रयत्नेनयदीच्छेदात्मनोहितम् ॥ न वक्तव्यञ्चकुत्रापि प्राणैःकण्ठगतैरपि ॥ तच्छृणुष्वमहेशानि सर्व्वन्तत्कथयामिते ॥ विनापूजाँव्विनाध्यानँव्विनाजाप्येनसिद्धयति ॥ विनाध्यानन्तथादेविविनाभूतादिशोधनम् ॥ पठनादेवसिद्धिः स्यात्सत्यंसत्यँव्वरानने ॥ पुराकैलासशिखरेसर्व्वदेवसभालये ॥ परिपप्रच्छकथितंयथाशृणुवरानने ॥ अस्यश्रीप्रचण्डचण्डिकासहस्रनामस्तोत्रस्यभैरवऋषिः सम्म्राट्छन्दः प्रचण्डचण्डिकादेवता धर्म्मार्थकाममोक्षार्थे जपेविनियोगः ॥ प्रचण्डचण्डिकाचण्डाचण्डदेव्यविनाशिनी ॥ चामुण्डाचसुचण्डाच चपलाचारुदेहिनी ॥ ललज्जिह्वाचलद्रक्ताचारुचन्द्रनिभानना ॥ चकोराक्षीचण्डनादाचञ्चलाचमनोन्मदा ॥ चेतनाचितिसंस्थाचचित्कलाज्ञानरूपिणी ॥ महाभयङ्करीदेवीवरदाभयधारिणी ॥ भयाढ्याभयरूपाच भयबन्धविमोचिनी ॥ भवानीभुवनेशीचभवसंसारतारिणी ॥ भवाब्धिर्भवमोक्षाच भवबन्धविघातिनी ॥ भागीरथी भगस्थाचभाग्यभोग्यप्रदायिनी ॥ कमलाकामदादुर्ग्गादुर्ग्गबन्धविमोचिनी ॥ दुर्द्दर्शनादुर्ग्गरूपा दुर्ज्ञेयादुर्ग्गनाशिनी ॥ दीनदुःखहरानित्यानित्यशोकविनाशिनी ॥ नित्यानन्दमयोदेवी नित्यङ्कल्याणकारिणी ॥ सर्व्वार्त्थसाधनकरीसर्व्वसिद्धिस्वरूपिणी ॥ सर्व्वक्षोभनशक्तिश्चसर्व्वविद्रावणीपरा ॥ सर्व्वरञ्जनशक्तिश्चसर्व्वोन्मादस्वरूपिणी ॥ सर्व्वज्ञासिद्धिदात्रीचासिद्धिविद्यास्वरूपिणी ॥ सकलानिष्कलासिद्धाकलातीताकलामयी ॥ कुलज्ञाकुलरूपाचचक्षुरानन्ददायिनी ॥ कुलीनासामरूपाच कामरूपामनोहरा ॥ कमलस्थाकञ्जमुखीकुञ्जरेश्वरगामिनी ॥

कुलरूपाकोटराक्षीकमलैश्वर्य्यदायिनी ॥ कुन्तीककुद्मिनीकुल्ला कुरुकुल्लाकरालिका ॥ कामेश्वरीकाममाता कामतापविमोचिनी ॥ कामरूपाकामसत्त्वाकामकौतुककारिणी ॥ कारुण्यहृदयाक्रींक्रींमन्त्ररूपाच कोटरा ॥ कौमोदकीकुमुदिनीकैवल्याकुलवासिनी ॥ केशवीकेशवाराध्याकेशीदैत्यनिषूदिनी ॥ क्लेशहाक्लेशरहिताक्लेशसङ्घविनाशिनी ॥ करालीचकरालास्याकरालासुरनाशिनी ॥ करालचर्म्मासिधरा करालकुलनाशिनी । कङ्किनीकङ्कनिरताकपालवरधारिणी । खड्गहस्तात्रिनेत्राच खण्डमुण्डासिधारिणी । खलहाखलहन्त्रीच क्षरतीखगतीसदा ॥ गङ्गागौतमपूज्याचगौरीगन्धर्व्ववासिनी ॥ गन्धर्व्वागगणाराध्या गणागन्धर्व्वसेविता ॥ गणत्कारगणादेवीनिर्ग्गुणाचगुणात्मिका ॥ गुणतागुणदात्रीचगुणगौरवदायिनी ॥ गणेशमातागम्भीरागगणाज्योतिकारिणी ॥ गौराङ्गीचगयागम्यागौतमस्थानवासिनी ॥ गदाधरप्रियाज्ञेया ज्ञानगम्यागुहेश्वरी ॥ गायत्रीचगुणवती गुणातीतागुणेश्वरी ॥ गणेशजननीदेवीगणेशवरदायिनी ॥ गणाध्यक्षनुतानित्यागणाध्यक्षप्रपूजिता ॥ गिरीशरमणीदेवी गिरीशपरिवन्दिता ॥ गतिदागतिहागीता गौतमीगुरुसेविता ॥ गुरुपूज्यागुरुयुतागुरुसेवनतत्परा ॥ गन्धद्वाराचगन्धाढ्या गन्धात्मागन्धकारिणी ॥ गीर्व्वाणपतिसम्पूज्यागीर्व्वाणपतितुष्टिदा ॥ गीर्व्वाणाधीशरमणीगीर्व्वाणाधीशवन्दिता ॥ गीर्व्वाणाधीशसंसेव्यागीर्व्वाणाधीशहर्षदा ॥ गानशक्तिर्ग्गानगम्यागानशक्तिप्रदायिनी ॥ गानविद्यागानसिद्धागानसन्तुष्टमानसा ॥ गानातीतागानगीतागानहर्षप्रपूरिता ॥ गन्धर्व्वपतिसंहृष्टागन्धर्व्वगुणमण्डिता ॥ गन्धर्व्वगणसंसेव्यागन्धर्व्वगणमध्यगा । गन्धर्व्वगणकुशलागन्धर्व्वगणपूजिता ॥ गन्धर्व्वगण

निरतागन्धर्व्वगणभूषिता ॥ घर्घराघोररूपाचघोरघुर्घुरनादिनी ॥ घर्म्मबिन्दुसमुद्भूताघर्म्मबिन्दुस्वरूपिणी ॥ घण्टारवाघनरवा घनरूपाघनोदरी ॥ घोरसत्त्वाचघनदाघण्टानादविनोदिनी ॥ घोरचाण्डालिनीघोराघोरचण्डविनाशिनी । घोरदानवदमनीघोरदानवनाशिनी ॥ घोरकर्म्मादिरहिताघोरकर्म्मनिषेविता घोरतत्त्वमयीदेवीघोरतत्त्वविमोचिनी ॥ घोरकर्म्मादिरहिताघोरकर्म्मादिपूरिता ॥ घोरकर्म्मादिनिरताघोरकर्म्मप्रवर्द्धिनी ॥ घोरभूतप्रमथनीघोरवेतालनाशिनी ॥ घोरदावाग्निदमनीघोरशत्रुनिषूदिनी ॥ घोरमन्त्रयुताचैवघोरमन्त्रप्रपूजिता । घोरमन्त्रमनोऽभिज्ञाघोरमन्त्रफलप्रदा ॥ घोरमन्त्रनिधिश्चैवघोरमन्त्रकृतास्पदा ॥ घोरमन्त्रेश्वरीदेवीघोरमन्त्रार्त्थमानसा ॥ घोरमन्त्रार्त्थतत्त्वज्ञाघोरमन्त्रार्त्थपारगा ॥ घोरमन्त्रार्त्थविभवाघोरमन्त्रार्त्थबोधिनी ॥ घोरमन्त्रार्त्थनिचयाघोरमन्त्रार्त्थजन्मभूः ॥ घोरमन्त्रजपरताघोरमन्त्रजपोद्यता ॥ ङकारवर्ण्णनिलयाङकाराक्षरमण्डिता ॥ ङकारापररूपाचङकाराक्षररूपिणी ॥ चित्ररूपाचित्रनाडी चारुकेशीचयप्रभा ॥ चञ्चलाचञ्चलाकाराचारुरूपाचचण्डिका ॥ चतुर्व्वेदमयीचण्डाचाण्डालगणमण्डिता ॥ चाण्डालछेदिनीचण्डतपानिर्म्मूलकारिणी॥ चतुर्भुजाचण्डरूपाचण्डमुण्डविनाशिनी ॥ चन्द्रिकाचन्द्रकीर्त्तिश्च चन्द्रकान्तिस्तथैवच । चन्द्रास्याचन्द्ररूपाचचन्द्रमौलिस्वरूपिणी ॥ चन्द्रमौलिप्रियाचन्द्रमौलिसन्तुष्टमानसा ॥ चकोरबन्धुरमणीचकोरबन्धुपूजिता । चक्ररूपाचक्रमयीचक्राकारस्वरूपिणी ॥ चक्रपाणिप्रियाचक्रपाणिप्रीतिप्रदायिनी।चक्रपाणिरसाभिज्ञाचक्रपाणिवरप्रदा। चक्रपाणिवरोन्मत्ताचक्रपाणिस्वरूपिणी ॥ चक्रपाणीश्वरीनित्यंचक्रपाणिनमस्कृता।चक्रपाणिसमुद्भूताचक्रपाणिगुणास्पदा । चन्द्राव

लीचन्द्रवतीचन्द्रकोटिसमप्रभा । चन्दनार्च्चितपादाब्जाचन्दना न्वितमस्तका।चारुकीर्त्तिश्चारुनेत्राचारुचन्द्रविभूषणा । चारुभू षाचारुवेषाचारुवेषप्रदायिनी । चारुभूषाभूषिताङ्गीचतुर्व्व क्त्रवरप्रदा ॥ चतुर्व्वक्त्रसमाराध्याचतुर्व्वक्त्रसमाश्रिता । चतुर्व्व क्त्राचतुर्व्वाहाचतुर्थीचचतुर्दशी । चित्राचर्मण्वतीचैत्रीचन्द्रभा गाचचम्पका । चतुर्दशयमाकाराचतुर्दशयमानुगा । चतुर्दशय मप्रीताचतुर्दशयमप्रिया । छलस्थाछिद्ररूपाचछद्मदाछद्मरा जिका । छिन्नमस्तातथाछिन्नाछिन्नमुण्डविधारिणी । जयदाज यरूपाचजयन्तीजयमोहिनी । जयाजीवनसंस्थाचजालन्धरनि वासिनी । ज्वालामुखीज्वालदात्रीजाज्वल्यदहनोपमा । जग द्वन्द्याजगत्पूज्याजगत्त्राणपरायणा । जगतीजगदाधाराजन्ममृ त्युजरापहा । जननीजन्मभूमिश्चजन्मदाजयशालिनी । ज्वर रोगहराज्वालाज्वालामालाप्रपूरिता । जम्भारातीश्वरीजम्भा रातिवैभवकारिणी । जम्भारातिस्तुताजम्भारातिशत्रुनिषूदिनी जयदुर्ग्गाजयाराध्याजयकालीजयेश्वरी । जयताराजयातीता जयशङ्करवल्लभा । जलदाजह्नुतनयाजलधित्रासकारिणी । जल धिव्याधिदमनीजलधिज्वरनाशिनी । जङ्गमेशीजाड्यहराजा ड्यसङ्घनिवारिणी । जाड्यग्रस्तजनातीताजाड्यरोगनिवारि णी । जन्मदात्रीजन्महर्त्रीजयघोषसमन्विता । जपयोगसमायु क्ताजपयोगविनोदिनी । जपयोगप्रियाजाप्याजपातीताजयस्व ना । जायाभावस्थिताजायाजायाभावप्रपूरिणी । जपाकुसुमस ङ्काशाजपाकुसुमपूजिता । जपाकुसुमसम्प्रीताजपाकुसुममण्डि ता । जपाकुसुमवद्भासाजपाकुसुमरूपिणी । जमदग्निस्वरूपाच जानकीजनकात्मजा । झञ्झावातप्रमुक्ताङ्गीझोरझङ्कारवासि नी ॥ झङ्कारकारिणीझञ्झावातरूपाचझङ्करी । ञकाराणुस्वरू

पाचटनट्टङ्कारनादिनी । टङ्कारीटकुवाणीचठकाराक्षररूपिणी । डिण्डिमाचतथाडिम्भाडिण्डुडिण्डिमनादिनी । ढक्कामयीढिल मयीनृत्यशब्दाविलासिनी । ढक्काढक्केश्वरीढक्काशब्दरूपातथैव च ॥ ढक्कानादप्रियाढक्कानादसन्तुष्टमानसा । णकाराणाक्षरमयी णाक्षरादिस्वरूपिणी ॥ त्रिपुरात्रिपुरमयीत्रिशक्तिस्त्रिगुणात्मि का ॥ तामसीचत्रिलोकेशीत्रिपुराचत्रयोश्वरी ॥ त्रिविद्याचत्रि रूपाचत्रिनेत्राचत्रिरूपिणी ॥ तारिणीतरलातारातारकारिप्रपू जिता ॥ तारकारिसमाराध्यातारकारिवरप्रदा ॥ तारकारिप्रसू स्तन्वीतरुणीतरलप्रभा ॥ त्रिरूपाचत्रिपुरगात्रिशूलवरधारि णी ॥ त्रिशूलिनीतन्त्रमयीतन्त्रशास्त्रविशारदा ॥ तन्त्ररूपातपो मूर्तिस्तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी ॥ तडित्तडिल्लताकारातत्त्वज्ञानप्रदा यिनी ॥ तत्त्वज्ञानेश्वरीदेवीतत्त्वज्ञानप्रमोदिनी ॥ त्रयीमयीत्र यीसेव्यात्र्यक्षरीत्र्यक्षरेश्वरी ॥ तापविध्वंसिनीतापसङ्घनिर्म्मू लकारिणी ॥ त्रासकर्त्रींत्रासहर्त्रींत्रासदात्रीचत्रासहा ॥ ति थीशातिथिरूपाचतिथिस्थातिथिपूजिता ॥ तिलोत्तमाचतिल दातिलप्रीतातिलेश्वरी ॥ त्रिगुणात्रिगुणाकारात्रिपुरीत्रिपुरात्मि का ॥ त्रिकुटात्रिकुटाकारात्रिकुटाचलमध्यगा॥ त्रिजटाचत्रिनेत्रा चत्रिनेत्रवरसुन्दरी ॥ तृतीयाचत्रिवर्षाचत्रिविधात्रिमतेश्वरी त्रिकोणस्थात्रिकोणेशीत्रिकोणयन्त्रमध्यगा ॥ त्रिसन्ध्याचत्रि सन्ध्यार्च्यात्रिपदात्रिपदास्पदा ॥ स्थानस्थितास्थलस्थाचध न्यस्थलनिवासिनी ॥ थकाराक्षररूपाचस्थूलरूपातथैवच ॥ स्थूलहस्तातथास्थूलास्थैर्य्यरूपप्रकाशिनी ॥ दुर्गादुर्गार्त्तिह न्त्रीचदुर्गबन्धविमोचिनी ॥ देवीदानवसंहन्त्रीदनुजेशनिषूदि नी ॥ दारापत्यप्रदानित्याशङ्करार्द्धाङ्गधारिणी ॥ दिव्याङ्गीदेव माताचदेवदुष्टविनाशिनी ॥ दीनदुःखहरादीनतापनिर्म्मूलका

रिणी ॥ दीनमातादीनसेव्यादीनदम्भविनाशिनी ॥ दनुजध्वंसिनीदेवीदेवकीदेववल्लभा ॥ दानवारिप्रियादीर्ग्घादानवारिप्रपूजिता ॥ दीर्ग्घस्वरादीर्ग्घतनुर्द्दीर्ग्घदुर्ग्गतिनाशिनी ॥ दीर्ग्घनेत्रादीर्ग्घचक्षुर्द्दीर्ग्घकेशीदिगम्बरी ॥ दिगम्बरप्रियादान्तादिगम्बरस्वरूपिणी ॥ दुःखहीनादुःखहरादुःखसागरतारिणी ॥ दुःखदारिद्र्यशमनीदुःखदारिद्र्यकारिणी ॥ दुःखदादुस्सहादुष्टखण्डनैकस्वरूपिणी ॥ देववामादेवसेव्यादेवशक्तिप्रदायिनी ॥ दामिनीदामिनीप्रीतादामिनीशतसुन्दरी ॥ दामिनीशतसंसेव्यादामिनीदामभूषिता ॥ देवताभावसन्तुष्टादेवताशतमध्यगा ॥ दयार्द्राचदयारूपादयादानपरायणा ॥ दयाशीलादयासारादयासागरसंस्थिता ॥ दशविद्यात्मिकादेवीदशविद्यास्वरूपिणी ॥ धरणीधनदाधात्रीधन्याधान्यपराशिवा ॥ धर्म्मरूपाधनिष्ठाचधेयाचधीरगोचरा ॥ धर्म्मराजेश्वरीधर्म्मकर्म्मरूपाधनेश्वरी ॥ धनुर्व्विद्याधनुर्ग्गम्याधनुर्द्धरवरप्रदा ॥ धर्म्मशीलाधर्म्मलीलाधर्म्मकर्म्मविवर्ज्जिता ॥ धर्म्मदाधर्म्मनिरताधर्म्मपाखण्डखण्डिनी ॥ धर्म्मेशीधर्म्मरूपाचधर्म्मराजवरप्रदा ॥ धर्म्मिणीधर्म्मगेहस्थाधर्म्माधर्म्मस्वरूपिणी ॥ धनदाधनदप्रीताधनधान्यसमृद्धिदा ॥ धनधान्यसमृद्धिस्थाधनधान्यविनाशिनी ॥ धर्म्मनिष्ठाधर्म्मधीराधर्म्ममार्ग्गरतासदा ॥ धर्म्मबीजकृतस्थानाधर्म्मबीजसुरक्षिणी ॥ धर्म्मबीजेश्वरीधर्म्मबीजरूपाचधर्म्मगा ॥ धर्म्मबीजसमुद्भूताधर्म्मबीजसमाश्रिता ॥ धराधरपतिप्राणाधराधरपतिस्तुता ॥ धराधरेन्द्रतनुजाधराधरेन्द्रवन्दिता ॥ धराधरेन्द्रगेहस्थाधराधरेन्द्रपालिनी । धराधरेन्द्रसर्व्वार्त्तिनाशिनधिर्म्मपालिनी । नवीनानिर्म्मलानित्यानगराजप्रपूजिता । नागेश्वरीनागमातानागकन्याचनग्निका । निर्ल्लेपानिर्व्विकल्पाच निर्ल्लोमानिरु

पद्रवा । निराहारानिराकारानिरञ्जनस्वरूपिणी । नागिनीनागवि भवानागराजपरिस्तुता । नागराजगुणज्ञाच नागराजसुखप्रदा । नागलोकगतानित्यंनागलोकनिवासिनी । नागलोकेश्वरीनाग भगिनीनागपूजिता । नागमध्यस्थितानागमोहसङ्क्षोभदायि नी । नृत्यप्रियानृत्यवती नृत्यगीतपरायणा । नृत्येश्वरीनर्त्तकी च नृत्यरूपानिराश्रया । नारायणीनरेन्द्रस्थानरमुण्डास्थिमा लिनी । नरमांसप्रियानित्यानररक्तप्रियासदा । नरराजेश्वरी नारीरूपानारीस्वरूपिणी । नारीगणार्च्चितानारीमध्यगानूत नाम्बरा । नर्म्मदाचनदीरूपा नदीसङ्गमसंस्थिता । नर्म्मदेश्व रसम्प्रीतानर्म्मदेश्वररूपिणी । पद्मावतीपद्ममुखीपद्मकिञ्ज ल्कवासिनी । पट्टवस्त्रपरीधाना पद्मरागविभूषिता । परमाप्रीति दानित्याप्रेतासननिवासिनी । परिपूर्णरसोन्मत्ताप्रेमाविह्वलवल्ल भा । पवित्राशवनिःपूताप्रेयसीपरमात्मिका । प्रियव्रतपरानि त्यापरमप्रेमदायिनी । पुष्पप्रियापद्मकोशा पद्मधर्म्मनिवासिनी। फेत्कारिणीतन्त्ररूपा फेरुफेरवनादिनी । वंशिनीवेशरूपाचवग लाकामरूपिणी । वाङ्मयीवसुधाधृष्यावाग्भवाख्यावरानरा । बु द्धिदाबुद्धिरूपाचविद्यावादस्वरूपिणी । बालावृद्धमयीरूपावा णीवाक्यनिवासिनी । वरुणावाग्वतीवीरावीरभूषणभूषिता । वी रभद्रार्च्चितपदावीरभद्रप्रसूरपि ॥ वेदमार्ग्गरतावेदमन्त्ररूपावषट् प्रिया । वीणावाद्यसमायुक्तावीणावाद्यपरायणा । वीणारवातथा वीणाशब्दरूपाचवैष्णवी । वैष्णवाचारनिरतावैष्णवाचारतत्प रा ॥ विष्णुसेव्याविष्णुपत्नी विष्णुरूपावरानना ॥ विश्वेश्वरी विश्वमाताविश्वनिर्म्माणकारिणी ॥ विश्वरूपाचविश्वेशीवि श्वसंहारकारिणी ॥ भैरवीभैरवाराध्या भूतभैरवसेविता ॥ भै रवेशीतथाभीमाभैरवेश्वरतुष्टिदा ॥ भैरवाधीशरमणी भैरवाधी

शपालिनी ॥ भीमेश्वरीभीममाताभीमशब्दपरायणा ॥ भीम
रूपाचभीमेशीभीमाभीमवरप्रदा ॥ भीमपूजितपादाब्जाभीमभैर
वपालिनी ॥ भीमासुरध्वंसकरीभीमदुष्टविनाशिनी ॥ भुवनाभु
वनाराध्याभवानीभूतिदाप्तदा ॥ भयदाभयहन्त्रीच अभयाभय
रूपिणी ॥ भीमनादाविह्वलाचभयभीतिविनाशिनी ॥ मत्ताप्रम
त्तरूपाच मदोन्मत्तस्वरूपिणी ॥ मान्यामनोज्ञामानाच मङ्गला
चमनोहरा ॥ माननीयामहापूज्यामहिषीदुष्टमर्द्दिनी ॥ महिषा
सुरहन्त्रीचमातङ्गीमयवासिनी ॥ माध्वीमधुमयीमुद्रामुद्रिकाम
न्त्ररूपिणी ॥ महाविश्वेश्वरीदूती मौलिचन्द्रप्रकाशिनी ॥ यशः
स्वरूपिणीदेवी योगमार्ग्गप्रदायिनी ॥ योगिनीयोगगम्याच
याम्येशीयोगरूपिणी ॥ यज्ञाङ्गीचयोगमयी जपरूपाजपा
त्मिका ॥ युगाख्याचयुगान्ताचयोनिमण्डलवासिनी ॥ अयो
निजायोगनिद्रायोगानन्दप्रदायिनी ॥ रमारतिप्रियानित्यार
तिरागविवर्द्धिनी ॥ रमणीराससम्भूतारम्यारासप्रियारसा ॥ र
णोत्कण्ठारणस्थाच वराराङ्गप्रदायिनी ॥ रेवतीरणजैत्रीचरसोद्भू
तारणोत्सवा ॥ लतालावण्यरूपाच लवणाब्धिस्वरूपिणी ॥ ल
वङ्गकुसुमाराध्यालोलजिह्वाचलेलिहा ॥ वशिनीवनसंस्थाचव
नपुष्पप्रियावरा ॥ प्राणेश्वरीबुद्धिरूपाबुद्धिदात्रीबुधात्मिका ॥
शमनीश्वेतवर्णाचशाङ्करीशिवभाषिणी ॥ शाम्यरूपाशक्तिरू
पा शक्तिबिन्दुनिवासिनी ॥ सर्व्वेश्वरीसर्व्वदात्री सर्व्वमाताच
शर्व्वरी ॥ शाम्भवीसिद्धिदासिद्धा सुषुम्नास्वरभासिनी ॥ सहस्र
दलमध्यस्थासहस्रदलवर्त्तिनी ॥ हरप्रियाहरध्येयाहूङ्कारबीज
रूपिणी ॥ लङ्केश्वरीचतरलालोममांसप्रपूजिता ॥ क्षेम्याक्षेमक
रीक्षामाक्षीरबिन्दुस्वरूपिणी ॥ क्षिप्तचित्तप्रदानित्याक्षौमवस्त्र
विलासिनी ॥ छिन्नाचछिन्नरूपाच क्षुधाक्षौत्काररूपिणी ॥ स

र्व्ववर्ण्णमयीदेवी सर्व्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ सर्व्वसम्पत्प्रदात्रीचस म्पदापदभूषिता ॥ सत्त्वरूपाचसर्व्वार्त्था सर्व्वदेवप्रपूजिता ॥ स र्व्वेश्वरीसर्व्वमाता सर्व्वज्ञासुरसात्मिका ॥ सिन्धुर्म्मन्दाकिनी गङ्गानदीसागररूपिणी ॥ सुकेशीमुक्तकेशीचडाकिनीवरवर्ण्णि नी ॥ ज्ञानदाज्ञानगगनासोममण्डलवासिनी ॥ आकाशनि लयानित्या परमाकाशरूपिणी ॥ अन्नपूर्ण्णामहानित्या महा देवरसोद्भवा ॥ मङ्गलाकालिकाचण्डा चण्डनादातिभीषणा ॥ चण्डासुरस्यमथिनी चामुण्डाचपलात्मिका ॥ चण्डीचामरं केशीच चलत्कुण्डलधारिणी ॥ मुण्डमालाधरानित्या खण्ड मुण्डविलासिनी ॥ खड्गहस्तामुण्डहस्तावरहस्तावरप्रदा ॥ असिचर्म्मधरानित्या पाशाङ्कुशधरापरा ॥ शूलहस्ताशिवह स्ता घण्टानादविलासिनी ॥ धनुर्व्वाणधरादित्या नागहस्तान गात्मजा । महिषासुरहन्त्री च रक्तवीजविनाशिनी ॥ रक्तरूपा रक्तगात्रा रक्तहस्ताभयप्रदा ॥ असिताचधर्म्मधरा पाशाङ्कु शधरापरा ॥ धनुर्व्वाणधरानित्या धूम्रलोचननाशिनी ॥ पर स्थादेवतामूर्त्तिः शर्व्वाणीशारदापरा ॥ नानावर्ण्णविभूषाङ्गीना नारागसमापिनी ॥ पशुवस्त्रपरीधानापुष्पायुधधरापरा ॥ मुक्त रञ्जितमालाढ्या मुक्ताहारविलासिनी । स्वर्ण्णकुण्डलभूषाच स्वर्ण्णसिंहासनास्थिता ।सुन्दराङ्गीसुवर्ण्णाभाशाम्भवीशकटात्मि का । सर्व्वलोकेशविद्याचमोहसम्मोहकारिणी । श्रेयसीसृष्टि रूपाच छिन्नछद्ममयीछला । छिन्नमुण्डधरानित्यानित्यानन्द विधायिनी ॥ नन्दापूर्ण्णाचरिक्ताचतिथयः पूर्ण्णषोडशी । कुहूःस क्रान्तिरूपाच पञ्चपर्व्वविलासिनी । पञ्चवाणधरानित्यापञ्च मप्रीतिदापरा । पञ्चपत्रमभीलाषापञ्चामृतविलासिनी । पा ञ्चालीपञ्चमीदेवी पञ्चरक्तप्रसारिणी । पञ्चवाणधरानित्यानि

त्यदात्रीदयापरा । पललादिप्रियानित्या पशुगम्यापरेशिता। परापररहस्याच परमप्रेमविह्वला । कुलीनाकेशिमार्ग्गस्थाकुलमार्ग्गप्रकाशिनी । कुलाकुलस्वरूपाच कुलार्णवमयीकुला। रुक्माचकालरूपाच कालकम्पनकारिणी । विलासरूपिणीभद्राकुलाकुलनमस्कृता । कुबेरवित्तधात्रीचकुमारजननीपरा । कुमारीरूपसंस्थाचकुमारीपूजनाम्बिका। कुरङ्गनयनादेवीदिनेशास्यापराजिता । कुण्डलीकदलीसेनाकुमार्ग्गरहितावरा । अनन्तरूपानन्तस्थाआनन्दसिन्धुवासिनी । ईलास्वरूपिणीदेवी ईईभेदभयङ्करी । इङ्गलापिङ्गलानाडीइकाराक्षररूपिणी ॥ उमाउत्पत्तिरूपाचउच्चभावविनाशिनी । ऋग्वेदाचनिराराध्या यजुर्व्वेदप्रपूजिता। सामवेदेनसङ्गीता अथर्व्ववेदभाषिणी । ऋकाररूपिणीऋक्षा निरक्षरस्वरूपिणी । अहिदुर्ग्गासमाचाराइकारार्णस्वरूपिणी । ओङ्काराप्रणवस्थाच ओङ्कारादिस्वरूपिणी अनुलोमविलोमस्थाथकारवर्णसम्भवा। पञ्चाशद्वर्णवीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्डमालिका । प्रत्येकादशसङ्ख्याचषोडशीछिन्नमस्तका । षडङ्गयुवतीपूज्या षडङ्गरूपवर्ज्जिता। षड्वक्रसंश्रिता नित्याविश्वेशीषङ्गदालया । मालामन्त्रमयीमन्त्रजपमातामदालसा । सर्व्वविश्वेश्वरीशक्तिः सर्व्वानन्दप्रदायिनी ॥ इति श्रीछिन्नमस्तायाःसहस्रनाममुत्तमम् ॥ पूजाक्रमेणकथितंसाधकानांसुखावहम् ॥ गोपनीयङ्गोपनीयङ्गोपनीयंनसंशयः ॥ अर्द्धरात्रेमुक्तकेशो भक्तियुक्तोभवेन्नरः ॥ जपित्वापूजयित्वाच पठेन्नामसहस्रकम् ॥ विद्यासिद्धिर्भवेत्तस्यषण्मासाभ्यासयोगतः ॥ येनकेनप्रकारेणदेवीभक्तिपरोभवेत् ॥ अखिलान्स्तम्भयेल्लोकान् राजानमपिमोहयेत् ॥ आकर्षयेद्देवशक्तिम्मारयेद्देविविद्विषम् ॥ शत्रवोदासताँय्यान्तिपापानियान्तिसङ्क्षयम् ॥ मृत्यु

श्चक्षयतार्य्यांति पठनाद्भाषणात्प्रिये ॥ प्रशस्तायाःप्रसादेन किन्नसिद्ध्यतिभूतले ॥ इदंरहस्यम्परमम्परंस्वस्त्ययनम्महत् ॥ धृत्वाबाहौमहासिद्धिः प्राप्यतेनात्रसंशयः ॥ अनयासदृशीविद्या नविद्येतमहेश्वरि ॥ वारमेकन्तुयोऽधीतेसर्व्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥ कुलवारेकुलाष्टम्याङ्कुहूसङ्क्रान्तिपूर्ण्णिमा ॥ यश्चेमाम्पठते विद्यान्तस्यसम्यक्फलंशृणु ॥ अष्टोत्तरशतञ्जप्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥ भक्त्यास्तुत्वामहादेवींसर्व्वपापात्प्रमुच्यते ॥ सर्व्वपापैर्व्विनिर्म्मुक्तः सर्व्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥ अष्टम्याव्वांनिशीथेचचतुष्पथगतोनरः ॥ माषभक्तबलिन्दत्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥ सुदर्शवामवेद्यान्तु मासत्रयविधानतः ॥ दुर्ज्जयःकामरूपश्चमहाबलपराक्रमः ॥ कुमारीपूजनन्नाममन्त्रमात्रम्पठेन्नरः ॥ एतन्मन्त्रस्यपठनात्सर्व्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥ इतितेकथितन्देविसर्व्वसिद्धिपरन्नरः ॥ जप्त्वास्तुत्वामहादेवींसर्व्वपापैः प्रमुच्यते ॥ न प्रकाश्यमिदन्देवि सर्व्वदेवनमस्कृतम् ॥ इदंरहस्यम्परमङ्गोप्तव्यम्पशुसङ्कटे॥ इतिसकलविभूतिर्हेतुभूतम्प्रशस्तम्पठतियइहमर्त्त्यश्छिन्नमस्तास्तवञ्च ॥ धनदइवधनाढ्योमाननीयोनृपाणांसभवतिचजनानामाश्रयः सिद्धिवेत्ता । इतिश्रीविश्वसारतन्त्रेशिवपार्व्वतीसव्वांदे श्रीछिन्नमस्तासहस्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

इति शाक्तप्रमोदेछिन्नमस्तातन्त्रं समाप्तम् ॥

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-
श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-
संगृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

षष्ठम्

त्रिपुरभैरवीतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-
दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्
श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन
मुम्बय्यां
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

श्चक्षयताय्यॉाति पठनाद्भाषणात्प्रिये ॥ प्रशस्तायाऽप्रसादेन कि न्नसिद्ध्यतिभूतले ॥ इदंरहस्यम्परमम्परंस्वस्त्ययनम्महत् ॥ धृ त्वावाहौमहासिद्धिः प्राप्यतेनात्रसंशयः ॥ अनयासदृशीविद्या नविद्येतमहेश्वरि ॥ वारमेकन्तुयोऽधीतेसर्व्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥ कुलवारेकुलाष्टम्याङ्कुहूसङ्क्रान्तिपूर्णिमा ॥ यश्चेमाम्पठते विद्यान्तस्यसम्यक्फलंशृणु ॥ अष्टोत्तरशतञ्जप्त्वा पठेन्नामसहस्र कम् ॥ भक्त्यास्तुत्वामहादेवींसर्व्वपापात्प्रमुच्यते ॥ सर्व्वपा पैर्व्विनिर्म्मुक्तः सर्व्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥ अष्टम्याव्वॉनिशीथेचचतु ष्पथगतोनरः ॥ माषभक्तबलिन्दत्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥ सु दर्शवामवेद्यान्तु मासत्रयविधानतः ॥ दुर्ज्जयःकामरूपश्चमहाब लपराक्रमः ॥ कुमारीपूजनन्नाममन्त्रमात्रम्पठेन्नरः ॥ एतन्म न्त्रस्यपठनात्सर्व्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥ इतितेकथितन्देविसर्व्वसि द्धिपरन्नरः ॥ जप्त्वास्तुत्वामहादेवींसर्व्वपापैःप्रमुच्यते ॥ न प्रकाश्यमिदन्देवि सर्व्वदेवनमस्कृतम् ॥ इदंरहस्यम्परमङ्गोप्तव्य म्पशुसङ्कटे॥ इतिसकलविभूतिर्हेतुभूतम्प्रशस्तम्पठतियइहमर्त्य श्छिन्नमस्तास्तवञ्च ॥ धनदइवधनाढ्योमाननीयोनृपाणांसभ वतिचजनानामाश्रयः सिद्धिवेत्ता । इतिश्रीविश्वसारतन्त्रेशिव पार्व्वतीसव्वॉदे श्रीछिन्नमस्तासहस्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

इति शाक्तप्रमोदेछिन्नमस्तातन्त्रं समाप्तम् ॥

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहवहादूरनराधिप-

संगृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

षष्ठम्

त्रिपुरभैरवीतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ।

अथ त्रिपुरभैरवीतन्त्रम् ॥

अथभैरवीध्यानम् ॥

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमांशिरोमालिकाम् रक्तालिप्त पयोधराञ्जपपटीव्विंद्यामभीतिव्वँरम् ॥ हस्ताब्जैर्द्दधतीन्त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियम् ॥ देवीम्बद्धहिमांशुरत्नमुकुटाव्वँन्देसमन्दस्मिताम् ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ।

अथ त्रिपुरभैरवीतन्त्रम् ॥



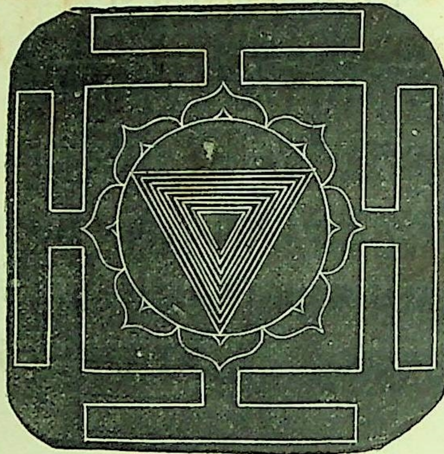
अथभैरवीध्यानम् ॥

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमांशिरोमालिकाम् रक्तालिप्त पयोधराञ्जपपटीव्विँद्यामभीतिव्वँरम् ॥ हस्ताब्जैर्द्दधतीन्त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियम् ॥ देवीम्बद्धहिमांशुरत्नमुकुटाव्वँन्देसमन्दस्मिताम् ॥



अथयन्त्रोद्धारः ॥

पद्ममष्टदलोपेतन्नवयोन्याढ्यकर्ण्णिकम् ॥ चतुर्द्वारसमायुक्त भूगृहव्विँलिखेत्ततः ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

ईशानोऽकारसँय्युक्तः पश्चात्सैमितियोजयेत् ॥ हसकरीमिति ततो हसैंपश्चात्समुच्चरेत् ॥ अष्टाक्षरस्तुमन्त्रोऽयम्भैरव्यास्समुदाहृतः ॥ जपतोधारणाद्वापि सर्व्वसम्पत्प्रदायकः ॥

अथमन्त्रः ॥

हसैंहसकरींहसैं ॥

अथपूजाविधिः ॥

प्रातःकृत्यादिप्राणायामान्तँव्विधाय पीठन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ पूर्व्वोक्तक्रमेणाधारशक्त्यादि ह्रींज्ञानात्मनेनमइत्यन्तव्विन्यस्य। हृत्पद्मस्यपूर्व्वादिकेशरेषु ॐइच्छायैनमः एवंज्ञानायैनमः क्रियायै ० कामदायिन्यै ० रत्यै ० रतिप्रियायै ० नन्दायै ० मध्ये ऐंपरायै ० अपरायै ० हसौंसदाशिवमहाप्रेतपद्मासनायनमइत्यन्तँव्विन्यस्यऋष्यादिन्यासङ्कुर्य्यात् । यथा शिरसिदक्षिणामूर्त्त

येनमः मुखेपङ्क्तिछन्दसेनमः हृदित्रिपुरभैरव्यैदेवतायैनमः गुह्येवाग्भवबीजायनमः पादयोः शाक्तिकशक्तयेनमः सर्वाङ्गे कामराजायकीलकायनमः। तथाच दक्षिणामूर्त्तिसंहितायाम्। ऋषिस्तुदक्षिणामूर्त्तिश्शिरसिविन्यसेत्क्रमात् ॥ छन्दः पङ्क्तिस्तुविज्ञेयोमुखेविन्यस्यदेवताम् ॥ हृदिमेत्रिपुरेशानीवाग्भवम्बीजमुच्यते ॥ शक्तिबीजंशक्तिरेव कामराजश्चकीलकम् ॥ ततो नाभ्यादिचरणपर्य्यन्तंहंसरेनमः ॥ हृदादिनाभिपर्य्यतङ्काम बीजम्प्रविन्यसेत् ॥ सकलः रिंनमः शिरसिहृदयान्तंहंसरेनमः ॥ एवन्दक्षिणकरेआद्यबीजं। वामकरेद्वितीयम्। उभयकरेतृतीयम् ॥ यथा मूर्द्ध्निमूलाधारे हृदियथाशङ्केनत्रीणिबीजानिविन्यसेत् ॥ यथानिवन्धे ॥ नाभेराचरणन्तद्वद्वाग्भवन्मन्त्रवित्तमः ॥ हृदयान्नाभिपर्य्यन्तङ्कामबीजम्प्रविन्यसेत् ॥ शिरसोहृत्प्रदेशान्तन्तत्रयँव्विन्यसेत्ततः ॥ आद्यन्द्वितीयङ्करयोस्ततस्तिसृभयोर्न्यसेत् ॥ मूर्ध्न्याधारेचहृदयेभूयोबीजत्रयङ्क्रमात् ॥ ततोनवयोन्यात्मकविन्यासः॥ आद्यम्बीजन्दक्षकर्णे द्वितीयम्बीजँव्वामकर्णेतृतीयं म्बीजञ्चिबुके।एवंशङ्खयोर्व्वदनेनेत्रयोर्न्नसिअंसयोर्ज्जठरेकूर्प्परयोः कुक्षौजानुनोर्ल्लिङ्गेपादयोर्ग्गुह्येपाश्र्वयोर्हृदिस्तनयोःकण्ठे ॥ यथानिबन्धे ॥ नवयोन्यात्मकन्न्यासङ्कुर्य्याद्बीजैस्त्रिभिःक्रमात् ॥ कर्ण्णयोश्चिबुकेभूयः शङ्खयोर्व्वदनेपुनः॥नेत्रयोरपिविन्यसेदंसयोर्ज्जठरेपुनः ॥ ततःकूर्प्परयोः कुक्षौजानुनोर्म्मूर्द्धमूर्द्धनि ॥ पादयोर्ग्गुह्यदेशेचपाश्र्वयोर्हृदयाम्बुजे ॥ स्तनद्वये कण्ठदेशेरत्यादिमथविन्यसेत् ॥ अथरत्त्यादिन्यासः ॥ मूलाधारे ऐंरत्त्यैनमः हृदिक्लींप्रीत्यैनमः भ्रुवोर्म्मध्येमनोभवायैनमः पुनः भ्रूमध्येसौः अमृतेश्यैनमः हृदिक्लींयोगेश्यैनमः मूलाधारेऐंविश्वयोन्यैनमः यथानिवन्धे। मुखेरतिंहृदिप्रीतिम्भ्रुवोर्म्मध्येमनोभवाम् ॥ बा

लाबीजैस्त्रिभिर्न्यस्यस्थानेष्वेषुविलोमतः॥अमृतेशीश्चयोगेशींवि
श्वयोर्निक्रमादिमाः ॥ विलोमबीजैर्विन्यस्यमूर्त्तिन्यासंसमाचरे
त् ॥ अथमूर्त्तिन्यासः ॥ मूर्ध्निहसरोंईशानमनोभवायनमः व
क्त्रेहसरें तत्पुरुषमकरध्वजायनमः हृदि हसरूं अघोरकन्दर्पकु
मारायनमः गुह्येहसरींवामदेवमन्मथायनमः पादयोः हसरां सद्यो
जातकामदेवायनमः ॥ एवंऊर्द्ध्वप्राग्दक्षिणोत्तरपश्चिमेषु मुखेषुई
शानमनोभवादिपञ्चमूर्त्तीस्तत्तद्बीजादिपूर्व्वकान्यसेत् ॥ यथा
निबन्धे ॥ स्वस्वपूजादिकंसर्व्वंमूर्द्धिशानमनोभवम् ॥ न्यसेद्व
क्त्रेतत्पुरुषमकरध्वजमेवच ॥ हृद्यघोरकुमारादिकन्दर्पन्तदन
न्तरम् ॥ गुह्यदेशेप्रविन्यस्यवामदेवादिमन्मथम् ॥ सद्योजातङ्का
मदेवम्पादयोर्विन्यसेत्ततः ॥ ऊर्द्ध्वप्राग्दक्षिणोत्तरपाश्चिमेषुमुखेषु
तान् ॥ प्रविन्यसेद्यथापूर्वम्भृगुर्व्योमाग्निसंस्थितः ॥ सत्यादिप
ञ्चह्रस्वाख्यम्बीजमेषाम्प्रकल्पितम् ॥ ततः करयोरङ्गुलीषुपञ्च
बाणान् पञ्चकामांश्चन्यसेत् ॥ यथा द्रांद्राविणेश्यैनमः अङ्गुष्ठयोः
द्रींशोभिन्यैनमस्तर्ज्जन्योः क्लींवशीकरिण्यैनमः मध्यमयोःब्लूंआक
र्षिण्यैनमः अनामिकयोः स्त्रींउन्मादिन्यैनमः कनिष्ठयोः । ए
वंह्रींकामायनमः क्लींमन्मथायनमः ऐंकन्दर्पायनमः ब्लूंमकरध्व
जायनमः स्त्रींमीनकेतनायनमः यथाज्ञानार्णवे ॥ पञ्चबाणा
न् क्रमेणैवकराङ्गुलीषुविन्यसेत् ॥ न्यासस्तुस्त्रीलिङ्गेनात्रप्रयो
गः ॥ तन्त्रेतथादर्शनात् ॥ अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तङ्क्रमेणपरमे
श्वरीम्॥ थान्तद्वयंसमालिख्यवह्निस्थन्तङ्क्रमेणतु ॥ मुखवृत्तेनने
त्रेण वामेनपरिमण्डितम् ॥ बाणद्वयमितिप्रोक्तम्मादनम्भूमिसं
स्थितम् ॥ चतुर्थं स्वरविद्याढ्यन्नादरूपवँरानने ॥ कान्तव
क्त्रेणसँय्युक्तव्वाँमकर्णविभूषितम्॥ बिन्दुनादसमायुक्तं सर्वाङ्गश्च
न्द्रमाः प्रिये ॥ पञ्चबाणान्महेशानिनामानिशृणुपार्व्वति ॥ क्षो

भणोद्रावणोवश्यस्तथाकर्षणसञ्ज्ञकः ॥ उन्मादश्चक्रमेणैवना मानिपरमेश्वरि ॥ कामस्तत्रैवविज्ञेयस्तेषाम्बीजानित्वंशृणु ॥ पराबीजम्मध्यबाणँव्वाग्भवम्परमेश्वरि ॥तुर्य्यबाणन्ततश्चैवह्रीबीजन्तुक्रमात्प्रिये ॥ त्रिपुरासारे ॥ कपञ्चमंशुचिनयनान्तसँय्युतं सवामदृक्पवनगुणान्वितकरा ॥ रविश्चरोहरिहयःखबिन्दुनान्तँय्यंन्नन्तंस्थलंडम्परान्वितोभृगुः॥ पञ्चकामाइमेदेवि नामानिशृणुवल्लभे॥काममन्मथकन्दर्पमकरध्वजसञ्ज्ञकाः॥ मीनकेतुम्महेशानि पञ्चमःपरिकीर्त्तितः॥पञ्चकामान्ततोदेविनामानिशृणुवल्लभे॥कामम न्मथकन्दर्पबाणस्थानेषुविन्यसेत्॥एतानिविन्यसेदेवकरन्यासस्ततःपरम्॥ ततःकराङ्गन्यासौ॥हसरांअङ्गुष्ठाभ्यां नमः स्वाहा हसरींतर्जनीभ्यांनमःहसरूंमध्यमाभ्यांवषट् हसरैंअनामिकाभ्यांहूम् हसरौंकनिष्ठाभ्यांवौषट् हसरःकरतलकरपृष्ठाभ्यांफट्॥ एवंहृदयादि । यथानिबन्धे ॥ षड्दीर्घयुक्तेनाद्येनबीजेनाङ्गक्रिया मता॥ ततोबाणन्यासः । मूर्ध्निद्रांद्राविण्यैनमः गुह्येक्लींआकर्षिण्यै नमःहृदिसम्मोहिन्यैनमः । यथानिबन्धे । रामाद्याद्राविणीम्मूर्ध्नि द्रामाद्याङ्क्षोभिणीम्मते॥क्लींवशीकरणींवक्रेगुह्येक्लींबीजपूर्वकम् ॥ आकर्षिणींहृदिपुनः सर्गालःभृगुसँय्युतः॥सम्मोहिनीक्रमादेवंबाणन्यासोयमीरितः ॥ एतेनउन्मादसम्मोहनयोरेकपर्य्यायः एषु स्थानेषुकामाँश्चविन्यस्य । यथाश्रीक्रमे । ललाटेवदनेदोविहृदिनाभौचगुह्यके॥ एषुकामाँश्चविन्यस्यताराद्यास्सुभगादिकाः ॥ न्यसेदितिशेषः । ततःसुभगादिन्यासः । भालेऐंक्लींलूंस्त्रींसुभगायैनमः, भ्रूमध्येओंक्लींव्रूंस्त्रीं भगायैनमः, वदने भगसर्पिण्यैनमः, कण्ठिकायाम् भगमालिन्यैनमः, कण्ठेअनङ्गायैनमः, हृदि ५ अनङ्गकुसुमायैनमः नाभौ ५ अनङ्गमेखलायैनमः लिङ्गमूले ५ अनङ्गमदनायैनमः हृदि ५। यथानिबन्धे । भालेभ्रूमध्यवदनेक

ण्ठिकाकण्ठहृत्सु च ॥ नाभ्यधिष्ठानयोः पञ्चतारााद्याः सुभगादिकाः ॥ न्यस्तव्याविधिनादेवि मान्त्रिणासुभगाभगा ॥ भगसर्प्पिण्यथपरा भगमालिन्यनन्तरम् ॥ अनङ्गानङ्गकुसुमाभूयश्चानङ्गमेखला ॥ अनङ्गमदनासर्प्पामन्दविभ्रममन्थरा ॥ वाक्कामबीजंक्लूंत्रींसस्तारापञ्चोदितास्त्वमी ॥ अथभूषणन्यासः ॥ शिरसिअंनमः भालेआँनमः इंईंभ्रुवोः एवंकर्ण्णयोः उँऊँनेत्रयोः ऋंॠंनासिकायाम्गण्डयोः लृंॡंएंओष्ठयोः ऐंओंदन्तपङ्क्तौ औंअंआस्ये अःचिबुके कंगले खंकण्ठे गंपार्श्वयोः घंङंस्तनद्वये चंछंदोर्म्मूलयोः जंझंकूर्प्परयोः जंझंपादयोः भंचरणाङ्गुष्ठयोः भंटंपादयोः ठंडंकरपृष्ठयोः ढंणंनाभौ तंगुह्ये थंऊर्व्वोः दंधंजान्वोः नंपंजङ्घयोः फंबंग्रन्थिस्थानयोः भंमंचरणयोः यञ्चरणाङ्गुष्ठयोः रंकट्याम् लंकण्ठे वंग्रीवायाम् लंहृदिशंगुह्येक्षंकर्ण्णयोः षंगण्डयोः संमौलौ ॥ हयस्थानिबन्धे ॥ न्यसेत्शिरसि भालेभ्रूकर्ण्णाक्षियुगलेवक्षगण्डयोरूरुपृष्ठयोः दन्तपङ्क्तौरास्येथ स्येश्वरान् चिबुकेथपार्श्वयोःस्तनयुग्मकेदोर्म्मूलयो:कूर्प्परयोः पृष्ठदेशेततोनाभौ गुह्येपुनश्चोर्व्वोर्ज्जानुनोर्ज्जपयेस्ततःस्फिचोः पदतलयोःपश्चात् चरणाङ्गुल्योर्द्वयोः ॥ कादिवान्तान्न्यसेद्वर्णान्स्थानेष्वेषुसमाहितः ॥ कट्यांग्रैवेयके पश्चात्कटितटेहृदि गुह्यके॥कर्ण्णयोर्ग्गण्डयोर्मौलौवलवान्राक्षसासहौ ॥ अस्याविमानान्प्रविन्यस्येदेवन्देशिकसत्तमः ॥ ततस्त्रिखण्डाम्मुद्राम्बध्वाध्यायेत् ॥ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमांशिरोमालिकांरक्तालिप्तपयोधराञ्जपपटीव्विँद्यामभीतिव्वँरम् ॥ हस्ताब्जैर्दधतीन्त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियन्देवीम्बद्धहिमांशुरत्नमुकुटाँव्वन्देसमन्दास्मिताम् ॥ एवन्ध्यात्वा मानसःसम्पूज्यशङ्खस्थापनङ्कुर्य्यात् ॥ आधारशक्त्यादिह्रींज्ञानात्मनेनम इत्येवंसम्पूज्यपूर्व्वादि

केशरेषु मध्येच । इच्छाज्ञानक्रियापश्चात् कामिनीकामहाविनी ॥ रतीरतिप्रियानन्दानवमीचमनोन्मनी ॥ एताःप्रणवादिनमोऽन्तेनपूजयेत् ॥ तदेवम् ॥ परायै० अपरायै० परायै० परावत्यै० सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनायनमः इतिसम्पूज्य प्रायोस्थोनिरन्तरालेश्रीविद्योक्तगुरुपङ्क्तिम्पूजयेत् । यथानिबन्धे । वाग्भवंरोहितोवापिश्रीकण्ठोलोहितोनलः ॥ दीर्घवाण्यैपरायै पश्चादपरायैपुनः ॥सदाशिवम्महाप्रेतङेःन्तम्पद्मासनम्मम॥ अनेनमनुनादद्यादासनंश्रीगुरूत्तमम् ॥ प्राङ्मध्ययोरन्तरालेपूजयेत्कल्पयेत्ततः ॥ पञ्चभिःप्रणवैः पूर्वन्तस्यामावाह्यदेवताम् ॥तारोवाक्छक्तिकमलाहसखफ्रैंयशःस्मृताः ॥ तदशक्तौअँगुरुभ्योनमः ओंगुरुपादुकाभ्यान्नमः एवम्परमगुरुभ्योनमः परमगुरुपादुकाभ्यान्नमः ओंपरमेष्ठिगुरुभ्योनमः परमेष्ठिगुरुपादुकाभ्यान्नमः आचार्य्येभ्यो० आचार्य्यपादुकाभ्यो० ॥ अस्यपूजायन्त्रन्निबन्धे ॥ पद्ममष्टदलोपेतन्नवयोन्याढ्यकर्णिकम् ॥ चतुर्द्वारसमायुक्तम्भूगृहँव्विलिखेत्ततः ॥ ऐंह्रींसहसषह क्रेह्रौं इतिमन्त्रेणबिन्दुचक्रेमूर्त्तिसङ्कल्पन्त्रिखण्डमुद्रयादेवीन्ध्यात्वावाहयेत् ॥ ओंदेवेशिभद्रसुलभे परिवारसमन्विते ॥ यावत्त्वाम्पूजयिष्यामि तावत्त्वंसुस्थिराभव ॥ इत्यावाह्य प्रीत्यैनमः उग्रकोणे मनोभवायैनमः ततः केशरेषुअग्न्यादिकोणेषुमध्येदिक्षुच पूर्वोक्ताङ्गमन्त्रेणपूजामारभेत् ॥ अथज्ञानार्णवे ॥ अग्नीशासुरवायुमध्येदिग्बन्धम्पूजयेत् ॥ ततः उत्तरेद्रांद्राविण्यैनमः द्रींक्षोभिण्यैनमः दक्षिणेक्लींवशीकरिण्यैनमः ब्लूंआकर्षिण्यैनमः । आग्नेय्याम् ॥ सम्मोहिन्यैनमः ॥ एवंउत्तरेह्रींकामायनमःक्लींमन्मथायनमः ॥ दक्षिणेऐंकन्दर्प्पायनमःब्लूंमकरध्वजायनमः ॥ आग्नेय्याम् स्त्रींमीनकेतनायनमः ॥ यथाज्ञानार्णवे ॥ उत्तरस्यान्द्वयन्दिशि

आग्न्येचैकङ्कमेणैवपञ्चबाणान्क्रमाद्यजेत् ॥ पञ्चबाणस्तथादेवबाणवत्परिपूजयेत् ॥ बाणवत् ॥ ततो ऽष्टयोनिषुपूर्व्वादि ऐंक्लींस्त्रींसः सुभगायैनमः ॥ एवंऐं० ४ भगायैनमः ऐं० भगसर्पिण्यैनमः ऐं०भगमालिन्यैनमः ऐं० ४ अनङ्गायैनमः एवंऐं०४ अनङ्गकुसुमायैनमः ऐं० ४अनङ्गमेखलायैनमःऐं०४अनङ्गमदनायैनमः ॥ ततोष्टपत्रेषुपूर्व्वादि ओंअसिताङ्गब्राह्मीभ्यान्नमः ओं उमामहेश्वराभ्यान्नमः ओंचण्डकौमारीभ्यान्नमः ओंक्रोधवैष्णवीभ्यान्नमः ओंउत्तरवाराहीभ्यान्नमः ओंकापालीन्द्राणीभ्यान्नमः ओंभीषणचामुण्डाभ्यान्नमः ओंसंहारमहालक्ष्मीभ्यान्नमः यथानिबन्धे ॥ अष्टमेषष्ठशक्तौचपूजयेत्सुभगादिकाः मातरोभैरव्याद्याश्चः मदविभ्रमविह्वलाः ॥ अष्टपत्रेषुसम्पूज्ययथावत्कुसुमावधि ॥ तद्बहिरिन्द्रादीन्सम्पूज्यधूपादिविसर्ज्जनान्तंकर्म्मसमापयेत् ॥ किन्तुनैवेद्यानन्तरंश्रीविद्योक्तबलिचतुष्टयन्देयमिति ॥ अस्यपुरश्चरणं दशलक्षजपःहोमस्तुद्वादशसहस्रम् ॥ यथानिबन्धे ॥ दीक्षाम्प्राप्यजपेन्मन्त्रन्तत्त्वलक्षञ्जितेन्द्रियः ॥ पुष्पैर्भानुसहस्राणिजुहुयादक्षमक्षजैः ॥ इतिपूजा ॥

अथ स्तोत्रम् ॥

श्रीभैरवउवाच ॥ ब्रह्मादयःस्तुतिशतैरपिसूक्ष्मरूपाञ्जानन्ति नैवजगदादिमनादिमूर्तिम् ॥ तस्मादयम्कुचनतान्तवकुङ्कुमास्यांस्थूलांस्तुतेसकलवाङ्मयमातृभूताम् ॥ १ ॥सद्यःसमुद्यतसहस्रदिवाकराभां विद्याक्षसूत्रवरदाभयचिन्हहस्ताम् ॥ नेत्रोपलैस्त्रिभिरलङ्कृतवक्त्रपद्मात्वांहारभाररुचिरान्त्रिपुरेभजामः ॥२ ॥ सिन्दूरपूररुचिरङ्कुचभारनम्रञ्जन्मान्तरेषुकृतपुण्यफलैकगम्यम् अन्योन्यभेदकलहाकुलमानभेदैर्जानन्तिकिञ्जडधियस्तवरूपम

स्य ॥ ३ ॥ स्थूलांवदन्तिमुनयःश्रुतयोगृणन्ति सूक्ष्मांवदन्ति वचसामधिवासमन्ये ॥ त्वाम्मूलमाहुरपरेजगताम्भवानि मन्यामहेवयमपारकृपाम्बुराशिम् ॥ ४ ॥ चन्द्रावतंसकलितांशरदिन्दुशुभ्राम्पञ्चाशदक्षरमयीं हृदिभावयन्ति ॥ त्वाम्पुस्तकञ्जपपटीममृताम्भकुम्भां व्याख्याञ्चहस्तकमलैर्दधतींत्रिनेत्राम् ॥ ५ ॥ शम्भुस्त्वमद्रितनयाकलितार्द्धभागेविष्णुस्त्वमम्बकमलापरिणद्धदेहः ॥ पद्मोद्भवस्त्वमसिवागधिवासभूमियेंषांक्रियाश्चजगति त्रिपुरेत्वमेव ॥ ६ ॥ आश्रित्यवाग्भवभवांश्चतुरःपरादीन्भावान्पदात्तुविहितान्समुदारयन्तीम् ॥ कालादिभिश्चकरणैः परदेवतान्त्वां सर्व्विँन्मयींहृदिकदापिनविस्मरामि ॥ ७ ॥ आकुञ्च्यवायुमभिजित्यचवैरिषट्कमालोक्यनिश्चलधियानिजनासिकाग्रम्॥ध्यायन्तिमूर्द्ध्निकलितेन्दुकलावतंसं त्वद्रूपमम्बकृतिनस्तरुणार्कमित्रम् ॥ ८ ॥ त्वम्प्राप्यमन्मथरिपोर्व्वपुरर्द्धभागंसृष्टिंकरोषिजगतामितिदेववादः ॥ सत्यन्तदद्रितनयेजगदेकमातर्नोंचेदशेषजगतः स्थितिरेवनस्यात् ॥ ९ ॥ पूजाँव्विधायकुसुमैः सुरपादपानाम्पीठेतवाम्बकनकाचलकन्दरेषु ॥ गायन्तिसिद्धवनिताःसहकिन्नरीभिरास्वादितामृतरसारुणपद्मनेत्राः ॥ १० ॥ विद्युद्विलासवपुषः श्रियमावहन्तीय्याँन्तीसुवासभवनाच्छिवराजधानीम् ॥ सौन्दर्य्यमार्ग्गकमलानिलकासयन्तीन्देवीम्भजेतपरमामृतसिक्तगात्राम् ॥ ११ ॥ आनन्दजन्मभवनम्भवनंश्रुतीनाञ्चैतन्यमात्रतनुमम्बतवाश्रयामि ॥ ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां सौभाग्यजन्मवसातिन्त्रिपुरेयथावत् ॥ ॥ १२ ॥ सर्व्वार्त्थभाविभुवनंसृजतीन्दुरूपायातद्विभर्त्तिपुनरर्क्कतनुःस्वशक्त्या ॥ ब्रह्मात्मिकाहरतितं सकलय्युँगान्ते तांशारदाम्मनसिजातुनविस्मरामि ॥ १३ ॥ नारायणीतिनरकार्णवतारि

णीतिगौरीतिखेदशमनीतिसरस्वतीति ॥ ज्ञानप्रदेतिनयनत्रयभूषितेति त्वामद्रिराजतनयेविबुधावदन्ति ॥ १४ ॥ येस्तुवन्तिजगन्मातः श्लोकैर्द्वादशभिःक्रमात् ॥ त्वामनुप्राप्यवाक्सिद्धिम्प्राप्नुयुस्तेपरांश्रियम् ॥ १५ ॥ इतितेकथितन्देवि पञ्चाङ्गम्भैरवीमयम् ॥ गुह्यङ्गोप्यतमङ्गोप्यङ्गापनीयंस्वयोनिवत् ॥ १६ ॥ इति श्रीरुद्रयामलेउमामहेश्वरसँव्वादे पञ्चाङ्गखण्डनिरूपणेश्रीभैरवीस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

अथकवचम् ॥

श्रीपार्व्वत्युवाच ॥ देवदेवमहादेव सर्व्वशास्त्रविशारद ॥ कृपाङ्कुरुजगन्नाथ धर्म्मज्ञोसिमहामते ॥ १ ॥ भैरवीयापुराप्रोक्ताविद्यात्रिपुरपूर्व्विका ॥ तस्यास्तुकवचन्दिव्यम्मह्यङ्कथयतत्त्वतः ॥२॥ तस्यास्तुवचनंश्रुत्वाजगादजगदीश्वरः ॥ अद्भुतङ्कवचन्देव्या भैरव्यादिव्यरूपिवै ॥ ३ ॥ ईश्वरउवाच ॥ कथयामिमहाविद्याकवचंसर्व्वदुर्ल्लभम् ॥ शृणुष्वत्वञ्चविधिना श्रुत्वागोप्यन्तरापितम् ॥ ४ ॥ यस्याःप्रसादात्सकलंबिभर्म्मिभुवनत्रयम् ॥ यस्याः सर्व्वसमुत्पन्नय्यँस्यामद्यापितिष्ठति ॥ ५ ॥ मातापिताजगद्धन्याजगद्ब्रह्मस्वरूपिणी ॥ सिद्धिदात्रीचासिद्धास्यादसिद्धादुष्टजन्तुषु ॥ ६ ॥ सर्व्वभूतहितकरीसर्व्वभूतस्वरूपिणी ॥ ककारीपातुमान्देवीकामिनीकामदायिनी ॥ ७ ॥ एकारीपातुमान्देवी मूलाधारस्वरूपिणी ॥ इकारीपातुमान्देवी भूरिसर्व्वसुखप्रदा ॥ ८ ॥ लकारीपातुमान्देवी इन्द्राणीवरवल्लभा ॥ ह्रींकारीपातुमान्देवीसर्व्वदाशम्भुसुन्दरी ॥ ९ ॥ एतैर्व्वर्णैर्म्महामाया शाम्भवीपातुमस्तकम् ॥ ककारेपातुमान्देवीशर्व्वाणीहरगेहिनी ॥ १० ॥ मकारेपातुमान्देवी सर्व्वपापप्रणाशि

नी ॥ ककारेपातुमान्देवी कामरूपधरासदा ॥ ११ ॥ कका रे पातुमान्देवीशम्बरारिप्रियासदा ॥ पकारोपातुमान्देवी धरा धरणिरूपधृक् ॥ १२ ॥ ह्रींकारोपातुमान्देवी आकरार्द्धश रीरिणी ॥ एतैर्व्वर्णैर्म्महामायाकामराहुप्रियावतु ॥ १३ ॥ मका रः पातुमान्देवी सावित्रीसर्व्वदायिनी ॥ ककारःपातुसर्व्वत्रकला म्बरस्वरूपिणी ॥ १४ ॥ लकारःपातुमान्देवी लक्ष्मीःसर्वसुल क्षणा ॥ ह्रींपातुमान्तुसर्व्वत्र दवोत्रिभुवनेश्वरी ॥ १५ ॥ एतैर्व्व र्णैर्म्महामाया पातुशक्तिस्वरूपिणी ॥ वाग्भवम्मस्तकम्पातु वद नङ्कामराजिका ॥ १६ ॥ शक्तिस्वरूपिणीपातुहृदयय्यँन्त्रसिद्धि दा ॥ सुन्दरीसर्व्वदापातु सुन्दरीपरिरक्षति ॥ १७ ॥ रक्त वर्ण्णासदापातु सुन्दरीसर्व्वदायिनी ॥ नानालङ्कारसँय्युक्तासु न्दरीपातुसर्व्वदा ॥ १८ ॥ सर्व्वाङ्गसुन्दरीपातु सर्व्वत्राशिवदायि नी ॥ जगदाह्लादजननी शम्भुरूपा च मां सदा ॥ १९ ॥ सर्व्वम न्त्रमयीपातु सर्व्वसौभाग्यदायिनी ॥ सर्व्वलक्ष्मीमयीदेवी परमा नन्ददायिनी ॥ २० ॥ पातुमांसर्व्वदादेवी नानाशङ्खनिधिःशि वा ॥ पातुपद्मनिधिर्द्देवी सर्व्वदाशिवदायिनी ॥ २१ ॥ दक्षिणा मूर्त्तिर्म्मांपातुऋषिःसर्व्वत्रमस्तके ॥ पङ्क्तिश्छन्दःस्वरूपातुमुखे पातुसुरेश्वरी ॥ २२ ॥गन्धाष्टकात्मिकापातुहृदयंशङ्करीसदा ॥ सर्व्वसम्मोहिनीपातु पातुसङ्क्षोभिणीसदा॥२३॥सर्व्वसिद्धिप्रदा पातु सर्व्वाकर्ष्षणकारिणी॥क्षोभिणीसर्व्वदापातुवशिनीसर्व्वदाव तु ॥ २४॥ आकर्षिणीसदापातु सम्मोहिनीसदावतु॥ रतिर्द्देवी सदापातु भगाङ्गासर्व्वदावतु ॥ २५ ॥ महेश्वरीसदापातु कौ मारीसर्व्वदावतु॥सर्व्वाह्लादनकारीमाम्पातुसर्व्ववशङ्करी॥ २६ ॥ क्षेमङ्करीसदापातुसर्व्वाङ्गसुन्दरीतथा ॥सर्व्वाङ्गयुवतिःसर्व्वसर्व्व सौभाग्यदायिनी॥२७॥वाग्देवीसर्व्वदापातु वाणिनीसर्व्वदावतु॥

वशिनीसर्व्वदापातुमहासिद्धिप्रदासदा ॥ २८॥ सर्व्वविघ्नविणोपा तुगणनाथःसदावतु ॥ दुर्गादेवीसदापातुबटुकःसर्व्वदावतु॥२९॥ क्षेत्रपालःसदापातु पातुचावरिशान्तिका ॥ अनन्तःसर्व्वदापा तु वराहःसर्व्वदावतु ॥ ३० ॥ पृथिवीसर्व्वदापातु स्वर्णसिंहासन न्तथा ॥ रक्तामृतञ्चसततम्पातुमांसर्व्वकालतः॥३१॥ सुरार्णवः सदापातुकल्पवृक्षःसदावतु॥श्वेतच्छत्रंसदापातुरक्तदीपःसदावतु ॥ ३२ ॥ नन्दनोद्यानंसततम्पातुमांसर्व्वसिद्धये॥दिक्पालाः सर्व्व दापान्तुद्वन्द्वौघाःसकलास्तथा ॥३३॥ वाहनानिसदापान्तुअस्त्रा णिपान्तुसर्व्वदा ॥ शस्त्राणिसर्व्वदापान्तुयोगिन्यऽपान्तुसर्व्वदा ॥ ॥ ३४ ॥ सिद्धाऽपान्तुसदादेवी सर्व्वसिद्धिप्रदावतु ॥ सर्व्वाङ्गसु न्दरीदेवी सर्व्वदावतुमान्तथा ॥ ३५ ॥ आनन्दरूपिणी देवीचि त्स्वरूपाचिदात्मिका ॥ सर्व्वदासुन्दरीपातुसुन्दरीभवसुन्दरी ॥ ॥ ३६ ॥ पृथग्देवालयेघोरेसङ्कटेदुर्गमेगिरौ ॥ अरण्येप्रान्तरेवा पि पातुमांसुन्दरीसदा ॥ ३७ ॥ इदङ्कवचमित्युक्तम्मन्त्रोद्धारश्च पार्व्वति ॥ यऽपठेत्प्रयतोभूत्वात्रिसन्ध्यन्नियतःशुचिः ॥ ३८ ॥ तस्यसर्व्वार्थसिद्धिःस्याद्यद्यन्मनसिवर्त्तते ॥ गोरोचनाकुङ्कुमेन रक्तचन्दनकेनवा ॥३९॥ स्वयम्भूकुसुमैःशुक्रैर्भूमिपुत्रेशनौसुरे ॥ श्मशानेप्रान्तरेवापिशून्यागारे शिवालये ॥ ४० ॥ स्वश क्त्यागुरुणायन्त्रम्पूजयित्वाकुमारिकाः॥तन्मनुम्पूजयित्वाचगुरु पङ्क्तिन्तथैवच ॥ ४१ ॥ देव्यैबलिन्निवेद्याथनरमार्जारशूकरैः ॥ नकुलैर्म्महिषैर्म्मेषैऽपूजयित्वाविधानतः ॥ ४२ ॥ धृत्वासुवर्णम ध्यस्थङ्कण्ठेवादक्षिणेभुजे ॥ सुतिथौशुभनक्षत्रेसूर्य्यस्योदयने तथा ॥ ४३ ॥ धारयित्वाचकवचंसर्व्वसिद्धिल्लँभेन्नरः ॥ कवच स्यचमाहात्म्यन्नाहव्वँर्षशतैरपि ॥ ४४ ॥ शक्नोमितुमहेशानि वक्तुन्तस्यफलन्तुयत् ॥ नदुर्भिक्षफलन्तत्र नचापिपीडनन्तथा॥

सर्व्वविघ्नप्रशमनं सर्व्वव्याधिविनाशनम् ॥४९ ॥ सर्व्वरक्षाकरञ्जन्तोश्चतुर्व्वर्गफलप्रदम् ॥ यत्रकुत्रनवक्तव्यन्नदातव्यङ्कदाचन ॥ ॥ ४६ ॥ मन्त्रम्प्राप्यविधानेन पूजयेत्सततंसुधीः ॥ तत्रापिदुर्ल्लभम्मन्ये कवचन्देवरूपिणम् ॥ ४७ ॥ गुरोःप्रसादमासाद्यविद्याम्प्राप्यसुगोपिताम् ॥ तत्रापिकवचन्दिव्यन्दुर्ल्लभम्भुवनत्रये ॥ ॥४८॥श्लोकव्वाँस्तवमेकव्वाँयःपठेत्प्रयतः शुचिः ॥ तस्यसर्व्वार्त्थसिद्धिःस्याच्छङ्करेणप्रभाषितम् ॥ ४९ ॥ गुरुर्द्देवोहरःसाक्षात्पत्नीतस्यचपार्व्वती ॥ अभेदेनयजेद्यस्तुतस्यसिद्धिरदूरतः ॥ ५० ॥ इतिश्रीरुद्रयामलेभैरवभैरवीसँवादेश्रीभैरवीकवचं सम्पूर्ण्णम् ॥ ५१ ॥

अथहृदयम् ॥

मेरौगिरिवरेशानी शिवन्ध्यानपरायणम् ॥ पार्व्वतीपारिपप्रच्छपरानुग्रहवाञ्छया ॥१ ॥ श्रीपार्व्वत्युवाच ॥ भगवंस्त्वन्मुखाम्भोजाच्छ्रुताधर्म्माअनेकशः ॥ पुनश्श्रोतुंसमिच्छामिभैरवीस्तोत्रमुत्तमम् ॥ २ ॥ श्रीशङ्करउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामि भैरवीहृदयाह्वयम् ॥ स्तोत्रन्तुपरमम्पुण्यंसर्व्वकल्याणकारकम् ॥ ॥ ३ ॥ यस्यश्रवणमात्रेणमङ्गलम्भवतिध्रुवम् ॥ विनाध्यानादिनावापिभैरवीपरितुष्यति ॥ ४ ॥ ओमस्यश्रीभैरवीहृदयमन्त्रस्यदक्षिणामूर्त्तिर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दोभयाविध्वंसिनीभैरवीदेवताहकारोबीजंरींशक्तिरैंःकीलकंसर्व्वभयविध्वंसनार्त्थेपाठेविनियोगः ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ ओंह्रींहृदयायनमःओंश्रींशिरसेस्वाहा ओंऐंशिखायैवषट् ओंह्रींकवचायहुम् ओंश्रींनेत्रत्रयायवौषट् ओंऐंअस्त्रायफट् ॥ एवंकरन्यासः ॥ अथध्यानम् ॥ देवैद्ध्येया न्त्रिनेत्रामसुरदलघनारण्यरोराग्निरूपां रौद्रींरक्ताम्बराढ्यांरति

घटघटितोरोजयुग्मोग्ररूपाम् ॥ चन्द्रार्द्धभ्राजिभव्याभरणकर लसद्भालबिम्बाम्भवानींसिन्दूरापूरिताङ्गीन्त्रिभुवनजननीम्भैरवी म्भावयामि ॥ १ ॥ भवभ्रमत्समस्तभूतवेदमार्ग्गदायिनीन्दुर न्तदु ४ खदारिणीव्विँदारिणींसुरद्रुहाम् ॥भवप्रदाम्भवान्धकारभे दनप्रभाकरामितप्रभाम्भवच्छिदाम्भजामिभैरवींसदा ॥ १ ॥ उर ४ प्रलम्बिताहिमाल्यचन्द्रभालभूषणान्नवाम्बुदप्रभांसरोज चारुलोचनत्रयाम् ॥ सुपर्व्ववृन्दवन्दितां सुरापदन्तकारिकाम्भ वानुभावभाविनीम्भ० ॥ २ ॥ अखण्डभूमिमण्डलैकभारधीरधा रिणींसुभक्तिभावितात्मनाव्विँभूतिभव्यदायिनीम् ॥भवप्रपञ्चका रिणीव्विँहारिणीम्भवाम्बुधौ भवस्यहृद्यभाविनीम्भ० ॥ ३ ॥ श रच्चमत्कृतार्च्यचन्द्रचन्द्रिकाविरोधिकप्रभावतीमुखाब्जमञ्जुमा धुरीमिलद्गिराम् ॥ भुजङ्गमालयानृमुण्डमालयाचमण्डितां सुभ क्तिमुक्तिभूतिदाम्भजामिभैरवींसदा ॥४॥ सुधांशुसूर्य्यवन्हिलोच नत्रयान्वितानानान्नरान्तकान्तकप्रभूतिपर्व्वदत्तदक्षिणाम् ॥ समु ण्डचण्डखण्डनप्रचण्डचन्द्रहासिनीन्तमोमतिप्रकाशिनीम्भजा मिभैरवींसदा ॥५॥ त्रिशूलिनीन्त्रिपुण्ड्रनीन्त्रिखण्डिनीन्त्रिदण्डि नीङ्गुणत्रयातिरक्तमत्यचिन्त्यचित्स्वरूपिणीम् ॥ सवासवा दितेयवैरिवृन्दवंशभेदिनीम्भवप्रभावभाविनीम्भजामिभैरवींसदा ॥ ६ ॥ सुदीप्तकोटिबालभानुमण्डलप्रभाङ्गभादिगन्तदारिता न्धकारभूरिपुञ्जपद्धतिम् ॥ द्विजन्मनित्यधर्म्मनीतिवृद्धिलग्नमा नसां सरोजरोचिराननाम्भजामिभैरवींसदा ॥ ७ ॥ चल त्सुवर्ण्णकुण्डलप्रभोल्लसत्कपोलरुक्समाकुलाननाम्बुजस्थशुभ्र कीरनासिकाम् ॥ सचन्द्रभालभैरवास्यदर्शनस्पृहच्चकोरनील कञ्जदर्शनाम्भजामिभैरवींसदा ॥ ८ ॥ इमंहृदाख्यसङ्गतस्त वम्पठन्तियेऽनिशम्पतन्तितेकदापिनान्धकूपरूपवद्भवे ॥ भव

न्ति चप्रभूतिभक्तिमुक्तिमन्तउज्ज्वलास्ततःप्रसीदातिप्रमोदमान साच भैरवी॥९॥यशोजगत्यजस्रमुज्ज्वलञ्जयत्यलंसमेनतस्यजाय तेपराजयोऽस्साजगत्त्रये॥सदास्तुतिंशुभामिमाम्पठत्यनन्यमान सोभवन्तितस्यसम्पदोपि सन्ततंसुखप्रदाः ॥ १० ॥ जपपूजादि कास्सर्व्वाः स्तोत्रपाठादिकाश्चयाः ॥ भैरवीहृदयस्यास्य कला न्नार्हन्तिषोडशीम् ॥ किमत्रबहुनोक्तेन शृणुदेविमहेश्वरि ॥ ना तःपरतरङ्किञ्चित्पुण्यमस्तिजगत्त्रये ॥ इतिश्रीभैरवकुलसर्व्व स्वेश्रीभैरवीहृदयस्तोत्रंसमातम् ॥

अथशतनाम ॥

श्रीदेव्युवाच ॥ कैलासवासिन्भगवन्प्राणेश्वरकृपानिधे ॥ भ क्तवत्सलभैरव्यानाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥ १ ॥ नश्रुतन्देवदेवेश व दमान्दीनवत्सल ॥ श्रीशिवउवाच ॥ शृणुप्रियेमहागोप्यन्नाम्ना मष्टोत्तरंशतम् ॥ २ ॥ भैरव्याःशुभदंसेव्यं सर्व्वसम्पत्प्रदायकम् ॥यस्यानुष्टानमात्रेण किन्नसिद्ध्यतिभूतले ॥ ३ ॥ ओम् भैर वीभैरवाराध्याभूतिदाभूतभावना ॥ आर्य्याब्राह्मीकामधेनुःस र्व्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ ४ ॥ त्रैलोक्यवन्दितादेवी महिषासुरम र्द्दिनी ॥ मोहघ्नीमालतीमाला महापातकनाशिनी ॥ ५ ॥ क्रो धिनीक्रोधनिलया क्रोधरक्तेक्षणाकुहूः ॥ त्रिपुरा त्रिपुराधारा त्रिनेत्राभीमभैरवी ॥ ६ ॥ देवकीदेवमाताचदेवदुष्टविनाशिनी ॥ दामोदरप्रियादीर्घादुर्ग्गादुर्ग्गतिनाशिनी ॥ ७ लम्बोद रीलम्बकर्ण्णा प्रलम्बितपयोधरा ॥ प्रत्याङ्गिराप्रतिपदा प्रणतक्ले शनाशिनी ॥ ८ ॥ प्रभावतीगुणवतीगणमातागुहेश्वरी ॥ क्षी राब्धितनयाक्षेम्याजगत्त्राणविधायिनी ॥ ९ ॥ महामारीमहा मोहा महाक्रोधामहानदी ॥ महापातकसंहन्त्रीमहामोहप्रदायि

नी ॥ १० ॥ विकरालामहाकाला कालरूपाकलावती ॥ कपालखट्वाङ्गधराखड्गखर्प्परधारिणी ॥ ११ ॥ कुमारीकुङ्कुमप्रीता कुङ्कुमारुणरञ्जिता ॥ कौमोदकीकुमुदिनी कीर्त्याकीर्त्तिप्रदायिनी ॥ १२ ॥ नवीनानीरदानित्यानन्दिकेश्वरपालिनी ॥ घर्घराघर्घरारावा घोराघोरस्वरूपिणी ॥ १३ ॥ कलिघ्नीकलिधर्मघ्नी कलिकौतुकनाशिनी ॥ किशोरीकेशवप्रीताक्लेशसङ्घनिवारणी ॥ १४ ॥ महोन्मत्तामहामत्ता महाविद्यामहीमयी ॥ महायज्ञा महावाणीमहामन्दरधारिणी ॥ १५ ॥ मोक्षदामोहदामोहाभुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ अट्टाट्टहासनिरता क्वणन्नूपुरधारिणी ॥१६॥ दीर्घदंष्ट्रादीर्घमुखीदीर्घघोणाचदीर्घिका ॥ दनुजान्तकरीदुष्टादुःखदारिद्र्यभञ्जिनी ॥ १७ ॥ दुराचाराचदोषघ्नी दमपत्नीदयापरा ॥ मनोभवामनुमयी मनुवंशप्रवर्द्धिनी ॥ १८ ॥ श्यामाश्यामतनुः शोभा सौम्याशम्भुविलासिनी ॥ इतितेकथितन्दिव्यन्नाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥ १९ ॥ भैरव्यादेवदेवश्यास्तवप्रीत्यैसुरेश्वरि ॥ अप्रकाश्यमिदङ्गोप्यम्पठनीयम्प्रयत्नतः ॥ २० ॥ देवीन्ध्यात्वासुराम्पीत्वा मकारपञ्चकैः प्रिये ॥ पूजयेत्सततम्भक्त्या पठेत्स्तोत्रमिदंशुभम् ॥ २१ ॥ षण्मासाभ्यन्तरेसोपि गणनाथसमोभवेत् ॥ किमत्रबहुनोक्तेन त्वदग्रेप्राणवल्लभे ॥ २२ ॥ सर्व्वञ्जानासिसर्व्वज्ञे पुनर्म्मांम्परिपृच्छसि ॥ नदेयम्पराशिष्येभ्यो निन्दकेभ्योविशेषतः ॥ २३ ॥ इतिश्रीभैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥ ७ ॥

अथसहस्रनाम ॥

महाकालभैरवउवाच ॥ अथवक्ष्येमहेशानि देव्यानामसहस्रकम् ॥ यत्प्रसादान्महादेवि चतुर्व्वर्गफलँल्लभेत् ॥ १ ॥सर्व्वरोग

प्रशमनं सर्व्वमृत्युविनाशनम्॥सर्व्वसिद्धिकरंस्तोत्रन्नातऽ परतरः स्तवः ॥ २ ॥ नातऽपरतराविद्यातोर्त्थन्नातऽपरंस्मृतम् ॥ यस्यां सर्व्वंसमुत्पन्नँय्यस्यामद्यापितिष्ठति ॥ ३ ॥ लयमेष्यतितत्सर्व्वँयकालेमहेश्वरि ॥ नमामित्रिपुरान्देवीभ्भैरवींभयमोचिनीम् ॥ ॥ ४ ॥ सर्व्वसिद्धिकरींसाक्षान्महापातकनाशिनीम् ॥ अस्यश्री त्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रस्यभगवानृषिः ॥ पङ्क्तिश्छन्दआद्याशक्तिः भगवतीत्रिपुरभैरवीदेवता ॥सर्व्वकामार्त्थसिद्ध्यर्त्थेजपेविनियोगः ॥ त्रिपुरापरमेशानी योगसिद्धिनिवासिनी ॥ सर्व्वमन्त्रमयीदेवीसर्व्वसिद्धिप्रवर्त्तिनी ॥ सर्व्वाधारमयीदेवी सर्व्वसम्पत्प्रदाशुभा ॥ योगिनीयोगमाताच योगसिद्धिप्रवर्त्तिनी ॥ योगिध्येयायोगमयी योगयोगनिवासिनी ॥ हेलालीलातथा क्रीडा कालरूपप्रवर्तिनी॥कालमाताकालरात्रिऽ कालीकमलवासिनी ॥ कमलाकान्तिरूपाच कामराजेश्वरीक्रिया ॥ कटुऽकपटकेशाच कपटाकुलटाकृतिः ॥ कुमुदाचर्च्चिकाकान्तिऽकालरात्रिप्रियासदा ॥ घोराकाराघोरतरा धर्म्माधर्म्मप्रदामतिः ॥ घण्टाघर्ग्घरदाघण्टाघण्टानादप्रियासदा ॥सूक्ष्मासूक्ष्मतरास्थूला अतिस्थूलासदामतिः॥अतिसत्यासत्यवती सत्यसङ्केतवासिनी ॥ क्षमाभीमातथाभीमा भीमनादप्रवर्त्तिनी ॥ भ्रमरूपाभयहरा भयदाभयनाशिनी ॥ श्मशानवासिनीदेवीश्मशानालयवासिनी ॥ शवासनाशवाहारा शवदेहाशिवाशिवा ॥ कण्ठदेशशवाहारा शवकङ्कणधारिणी ॥ दन्तुरासुदतीसत्या सत्यसङ्केतवासिनी ॥ सत्यदेहासत्यहारा सत्यवादनिवासिनी ॥ सत्यालयासत्यसङ्गा सत्यसङ्गरकारिणी ॥ असङ्गसाङ्गरहिता सुसङ्गासङ्गमोहिनी ॥ मायामतिर्म्महामाया महामखविलासिनी ॥ गलद्रुधिरधाराच मुखद्वयनिवासिनी ॥ सत्यायासासत्यसङ्गा सत्यसङ्गतिकारिणी

॥ असङ्गासङ्गनिरता सुसङ्गासङ्गवासिनी ॥ सदासत्यामहासत्या मांसपाशासुमांसका ॥ मांसाहारामांसधरा मांसाशीमांसभक्षका ॥ रक्तपानारक्तरुचिरारक्तारक्तवल्लभा ॥ रक्ताहाराररक्तप्रिया रक्तनिन्दकनाशिनी ॥ रक्तपानप्रियाबाला रक्तदेशासुरक्तिका ॥ स्वयम्भूकुसुमस्थाच स्वयम्भूकुसुमोत्सुका ॥ स्वयम्भूकुसुमाहारास्वयम्भूनिन्दकासना ॥ स्वयम्भूपुष्पकप्रीता स्वयम्भूपुष्पसम्भवा ॥ स्वयम्भूपुष्पहाराढ्या स्वयम्भूनिन्दकान्तका ॥ कुण्डगोलविलासीच कुण्डगोलसदामतिः ॥ कुण्डगोलप्रियकरी कुण्डगोलसमुद्भवा ॥ शुक्रात्मिकाशुक्रकरासुशुक्राचसुशुक्तिका ॥ शुक्रपूजकपूज्याच शुक्रनिन्दकनिन्दका ॥ रक्तमाल्यारक्तपुष्पा रक्तपुष्पकपुष्पका ॥ रक्तचन्दनसिक्ताङ्गी रक्तचन्दननिन्दका ॥ मत्स्यामत्स्यप्रियामान्या मत्स्यभक्षा महोदया ॥ मत्स्याहारामत्स्यकामा मत्स्यनिन्दकनाशिनी ॥ केकराक्षीतथाक्रूरा क्रूरसैन्यविनाशिनी ॥ क्रूराङ्गीकुलिशाङ्गी च चक्राङ्गीचक्रसम्भवा ॥ चक्रदेहाचक्रहारा चक्रकङ्कालवासिनी ॥ निम्ननाभीभीतिहरा भयदाभयहारिका ॥ भयप्रदाभयाभीता अभीमाभीमनादिनी ॥ सुन्दरीशोभनासत्या क्षेम्याक्षेमकरीतथा ॥ सिन्दूराञ्चितसिन्दूरा सिन्दूरसदृशाकृतिः ॥ रक्तारञ्जितनासाच सुनासानिम्ननासिका ॥ खर्व्वालम्बोदरीदीर्घा दीर्घघोणामहाकुचा ॥ कुटिलाचञ्चलाचण्डी चण्डनादप्रचण्डिका ॥ अतिचण्डामहाचण्डा श्रीचण्डाचण्डवेगिनी ॥ चाण्डाली चण्डिकाचण्डशब्दरूपाचचञ्चला ॥ चम्पाचम्पावतीचोस्तातीक्ष्णतीक्ष्णाप्रियाक्षतिः । जलदाजयदायोगाजगदानन्दकारिणी । जगद्वन्द्याजगन्माता जगतीजगतक्षमा ॥ जन्याजयजनेत्रीचजयिनीजयदातथा ॥ जननीचजगद्धात्री जयाख्याजयरूपिणी । ज

गन्माताजगन्मान्याजयश्रीर्ज्जयकारिणी । जयिनीजयमाताच जयाचविजयातथा । खड्गिनीखड्गरूपाच सुखड्गाखड्गधारिणी । खड्गरूपाखड्गकराखड्गिनीखड्गवल्लभा ॥खड्गदाखड्गभावाच खड्गदेहसमुद्भवा॥ खड्गाखड्गधराखेलाखड्गिनीखड्गमण्डिनी। शंखिनी चापिनीदेवीवज्रिणीशूलिनीमतिः ॥ वालिनीभिन्दिपालीचपाशीचअङ्कुशीशरी॥धनुषीचटकीचर्म्मादन्तीचकर्ण्णनालिकी॥मुशलीहलरूपाच तूणीरणसिवानिनी ॥ तूणालयातूणहरातूणसम्भवरूपिणी ॥ सुतूणीतूणखेदाचतूणाङ्गीतूणवल्लभा ॥ नानास्त्रधारिणीदेवी नानाशस्त्रसमुद्भवा ॥ लाक्षालक्षहरालाभा सुलाभा लाभनाशिनी ॥ लाभहारालाभकरा लाभिनीलाभरूपिणी ॥ धरित्रीधनदाधान्याधान्यरूपाधराधनुः । धुरशब्दाधुरामान्याधराङ्गोधननाशिनी । धनहाधनलाभाच धनलभ्यामहाधनुः । अशान्ताशान्तिरूपाचश्वासमार्ग्गनिवासिनी । गगणागणसेव्या च गणाङ्गावागवल्लभा । गणदागणहागम्या गमनागमसुन्दरी ॥ गम्यदागणनाशीचगदहागदवर्द्धिनी ॥ स्थैर्य्याचस्थैर्य्यनाशाच स्थैर्य्यान्तकरणीकुला । दात्रीकर्त्रीप्रियाप्रेमा प्रियदाप्रियवर्द्धिनी । प्रियहाप्रियभव्याचप्रियप्रेमाङ्घ्रिपातनुः । प्रियजाप्रियभव्याच प्रियस्थाभवनस्थिता । सुस्थिरास्थिररूपाचस्थिरदास्थैर्य्यबर्हिणी । चञ्चलाचपलाचोला चपलाङ्गनवासिनी । गौरीकाली तथाछिन्नामायामान्याहरप्रिया । सुन्दरीत्रिपुराभव्यात्रिपुरेश्वरवासिनी॥त्रिपुरनाशिनीदेवीत्रिपुरप्राणहारिणी ॥ भैरवीभैरवस्था चभैरवस्यप्रियातनुः । भवाङ्गीभैरवाकाराभैरवप्रियवल्लभा।कालदाकालरात्रिश्चकामाकात्यायनीक्रिया । क्रियदाक्रियहाक्लैव्या प्रियप्राणक्रियातथा । क्रीङ्कारीकमलालक्ष्मीःशक्तिःस्वाहाविभुऽ प्रभुः। प्रकृतिऽपुरुषश्चैवपुरुषापुरुषाकृतिः।परमऽपुरुषश्चैव माया

नारायणीमतिः ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीचैव कौमारीवैष्णवीतथा । वाराहीचैवचामुण्डा इन्द्राणीहरवल्लभा । भर्गीमाहेश्वरीकृष्णा कात्यायन्यपिपूतना ॥ राक्षसीडाकिनीचित्राविचित्राविभ्रमातथा ॥ हाकिनीराकिनीभीतागन्धर्व्वागन्धवाहिनी ॥ केकरीकोटराक्षीच निर्म्मांसालूकमांसिका ॥ ललजिह्वासुजिह्वाच बालदा बालदायिनी ॥ चन्द्राचन्द्रप्रभाचान्द्री चन्द्रकान्तिषुतत्परा ॥ अमृतामानदापूषातुष्टिः पुष्टीरतिर्धृतिः॥शशिनीचन्द्रिकाकान्तिज्ज्योत्स्नाश्रीः प्रीतिरङ्गदा ॥ पूर्णापूर्णामृताकल्पलतिकाकल्पदानदा ॥ सुकल्पाकल्पहस्ताच कल्पवृक्षकरीहनुः ॥ कल्पाख्याकल्पभव्याच कल्पानन्दकवन्दिता ॥ सूचीमुखी प्रेतमुखी उल्कामुखीमहामुखी ॥ उग्रमुखीचसुमुखीकाकास्याविकटानना ॥ कृकलास्याचसन्ध्यास्यामुकुलीशारमाकृतिः ॥ नानामुखीचनानास्यानानारूपप्रधारिणी ॥ विश्वार्च्याविश्वमाताचविश्वाख्याविश्वभाविनी ॥ सूर्य्यासूर्य्यप्रभाशोभासूर्य्यमण्डलसंस्थिता ॥ सूर्य्यकान्तिः सूर्य्यकरा सूर्य्याख्यासूर्य्यभावना ॥ तपिनीतापिनीधूम्रा मरीचिज्ज्वालिनीरुचिः ॥ सुरदाभोगदाविश्वाबोधिनीधारिणीक्षमा ॥ युगदायोगहायोग्यायोग्यहायोगवर्द्धिनी ॥ वह्निमण्डलसंस्थाचवह्निमण्डलमध्यगा ॥ वह्निमण्डलरूपाचवह्निमण्डलसञ्ज्ञका ॥ वन्हितेजावह्निरागा वह्निदावह्निनाशिनी ॥ वह्निक्रियावह्निभुजा कलावह्नौस्थितासदा ॥ धूम्रार्चिषाउज्ज्वलिनी तथाचविस्फुलिङ्गिनी ॥ शूलिनीचसुरूपाचकपिलाहव्यवाहिनी ॥ नानातेजास्विनीदेवी परब्रह्मकुटुम्बिनी ॥ ज्योतिर्ब्रह्ममयीदेवीपरब्रह्मस्वरूपिणी ॥ परमात्मापरापुण्यापुण्यदापुण्यवर्द्धिनी ॥ पुण्यदापुण्यनाम्नीच पुण्यगन्धाप्रियातनुः ॥ पुण्यदेहापुण्यकरा पुण्याने

न्दकनिन्दका ॥ पुण्यकालकरापुण्यासुपुण्यापुण्यमालिका ॥ पुण्यखेलापुण्यकेली पुण्यनामसमापुरा ॥ पुण्यसेव्यापुण्यखेल्या पुराणपुण्यवल्लभा ॥ पुरुषापुरुषप्राणापुरुषात्मस्वरूपिणी॥ पुरुषाङ्गीचपुरुषी पुरुषस्यकलासदा ॥ सुपुष्पापुष्पकप्राणापुष्पहापुष्पवल्लभा ॥ पुष्पप्रियापुष्पहारापुष्पवन्दकवन्दका ॥ पुष्पहापुष्पमालाच पुष्पनिन्दकनाशिनी ॥ नक्षत्रप्राणहन्त्रीचनक्षत्रालक्षवन्दका ॥ लक्ष्यमाल्यालक्षहारालक्षालक्षस्वरूपिणी ॥ नक्षत्राणीसुनक्षत्रा नक्षत्राहामहोदया ॥ महामाल्यामहामान्या महतीमातृपूजिता ॥ महामहाकनीयाच महाकालेश्वरीमहा ॥ महास्यावन्दनीयाच महाशब्दनिवासिनी ॥ महाशङ्खेश्वरीमीना मत्स्यगन्धामहोदरी ॥ लम्बोदरीचलम्बोष्ठीलम्बनिम्नतनूदरी ॥ लम्बोष्ठीलम्बनासाचलम्बवोणाललत्सुका ॥अतिलम्बामहालम्बा सुलम्बालम्बवाहिनी ॥ लम्बार्हालम्बशक्तिश्चलम्बस्थालम्बपूर्व्विका ॥ चतुर्घण्टामहाघण्टा घण्टानादप्रियासदा ॥ वाद्यप्रियावाद्यरतासुवाद्यावाद्यनाशिनी ॥ रमारामासुवालाचरमणीयस्वभाविनी ॥ सुरम्यारम्यदारम्भारम्भोरूरामवल्लभा ॥ कामप्रियाकामकराकामाङ्गीरमणीरतिः ॥ रतिप्रियारतिरतीरतिसेव्यारतिप्रिया ॥ सुरभिःसुरभीशोभादिक्शोभाशुभनाशिनी ॥ सुशोभाचमहाशोभाऽतिशोभाप्रेततापिनी ॥लोभिनीचमहालोभा सुलोभालोभवर्द्धिनी । लोभाङ्गीलोभवन्द्याचलोभाहीलोभवासका ॥ लोभप्रियामहालोभालोभनिन्दकनिन्दका । लोभाङ्गवासिनीगन्धाविगन्धागन्धनाशिनी । गन्धाङ्गीगन्धपुष्टाच सुगन्धाप्रेमगन्धिका । दुर्गन्धापूतिगन्धाच विगन्धाअतिगन्धिका ॥ पद्मान्तिकापद्मवहा पद्मप्रियप्रियङ्करी । पद्मनिन्दकनिन्दाच पद्मसन्तोषवाह

ना । रक्तोत्पलवरादेवी रक्तोत्पलप्रियासदा । रक्तोत्पलसुगन्धा च रक्तोत्पलनिवासिनी । रक्तोत्पलग्रहामाला रक्तोत्पलमनोहरा ॥ रक्तोत्पलसुनेत्राच रक्तोत्पलस्वरूपधृक् ॥ वैष्णवीविष्णुपूज्याचवैष्णवाङ्गनिवासिनी ॥ विष्णुपूजकपूज्याच वैष्णवेसंस्थितातनुः । नारायणस्यदेहस्था नारायणमनोहरा ॥ नारायणस्वरूपाच नारायणमनःस्थिता ॥ नारायणाङ्गसम्भूता नारायणप्रियातनुः ॥ नारीनारायणीगण्या नारायणगृहप्रिया ॥ हरपूज्याहरश्रेष्ठा हरस्यवल्लभाक्षमा ॥ संहारीहरदेहस्था हरपूजनतत्परा ॥ हरदेहसमुद्भूता हराङ्गवासिनीकुहूः ॥ हरपूजकपूज्याच हरवन्दकतत्परा ॥ हरदेहसमुत्पन्ना हरक्रीडासदागतिः ॥ सुगणासङ्गरहिता असङ्गासङ्गनाशिनी ॥ निर्ज्जनाविजनादुर्ग्गा दुर्ग्गक्लेशनिवारिणी ॥ दुर्ग्गदेहान्तकादुर्ग्गारूपिणीदुर्ग्गतस्थिका ॥ प्रेतकराप्रेतप्रिया प्रेतदेहसमुद्भवा ॥ प्रेताङ्गवासिनीप्रेता प्रेतदेहविमर्द्दका ॥ डाकिनीयोगिनीकालरात्रि ॱ कालप्रियासदा ॥ कालरात्रिहराकाला कृष्णदेहामहातनुः ॥ कृष्णाङ्गीकुटिलाङ्गीच वज्राङ्गीवज्ररूपधृक् ॥ नानादेहधराधन्या षट्चक्रक्रमवासिनी ॥ मूलाधारनिवासीच मूलाधारस्थितासदा ॥ वायुरूपामहारूपा वायुमार्ग्गनिवासिनी ॥ वायुयुक्तावायुकरा वायुपूरकपूरका ॥ वायुरूपधरादेवी सुषुम्नामार्ग्गगामिनी ॥ देहस्थादेहरूपाच देहध्येयासुदेहिका ॥ नाडीरूपामहीरूपा नाडीस्थाननिवासिनी ॥ इङ्गलापिङ्गलाचैव सुषुम्नामध्यवासिनी ॥ सदाशिवप्रियकरी मूलप्रकृतिरूपधृक् ॥ अमृतेशीमहाशाली शृङ्गाराङ्गनिवासिनी ॥ उत्पत्तिस्थितिसंहन्त्री प्रलयापदवासिनी ॥ महाप्रलययुक्ताच सृष्टिसंहारकारिणी ॥ स्वधास्वाहा हव्यवाहा हव्याहव्यप्रियासदा ॥ हव्यस्थाहव्यभक्षाच हव्यदेह

समुद्भवा ॥ हव्यक्रीडाकामधेनुस्वरूपारूपसम्भवा ॥ सुरभी नन्दनीपुण्या यज्ञाङ्गीयज्ञसम्भवा ॥ यज्ञस्थायज्ञदेहाच योनि जायोनिवासिनी ॥ अयोनिजासतीसत्या असतीकुटिलातनुः ॥ अहल्यागौतमीगम्या विदेहादेहनाशिनी ॥ गान्धारीद्रौपदीदूती शिवप्रियात्रयोदशी ॥ पञ्चदशीपौर्ण्णमासीचतुर्द्दशीचपञ्चमी ॥ षष्ठीचनवमीचैवअष्टमीदशमीतथा ॥ एकादशीद्वादशीच द्वाररूपीभयप्रदा॥सङ्क्रान्त्यासामरूपाच कुलीनाकुलनाशिनी ॥ कुलकान्ताकृशाकुम्भा कुम्भदेहविवर्द्धिनी ॥ विनीताकुलवत्यर्थी अन्तरीचानुगाप्युषा ॥ नदीसागरदाशान्तिः शान्तिरूपासुशान्तिका ॥ आशातृष्णाक्षुधाक्षोभ्या क्षोभरूपनिवासिनी ॥ गङ्गासागरगाकान्तिः श्रुतिःस्मृतिर्द्धृतिर्म्मही॥दिवारात्रिः पञ्चभूतदेहाचैवसुदेहका ॥ तण्डुलाछिन्नमस्ताच नागयज्ञोपवीतिनी ॥ वर्ण्णनीडाकिनीशक्तिः कुरुकुल्लासुकुल्लका ॥ प्रत्यङ्गिराऽपरादेवी अजिताजयदायिनी ॥ जयाचविजयाचैव महिषासुरघातिनी ॥ मधुकैटभहन्त्रीचचण्डमुण्डाविनाशिनी ॥ निशुम्भशुम्भहननी रक्तबीजक्षयङ्करी ॥ काशीकाशीनिवासीच मधुरापार्व्वतीपरा ॥ अपर्ण्णाचण्डिकादेवी मृडानीचाम्बिकाकला ॥ शुक्लाकृष्णावर्ण्णवर्ण्णा शरदिन्दुकलाकृतिः ॥ रुक्मिणीराधिकाचैव भैरव्याः परिकीर्त्तितम्॥अष्टाधिकसहस्रन्तुदेव्यानामानुकीर्त्तनात्॥महापातकयुक्तोऽपि मुच्यतेनात्रसंशयः॥ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयङ्गुर्व्वङ्गनागमः ॥ महापातककोटयस्तु तथाचैवोपपातकाः ॥ स्तोत्रेणभैरवोक्तेन सर्व्वन्नश्यतितत्क्षणात् ॥ सर्व्वाँश्लोकमेकँव्वापठनात्स्मरणादपि॥ पठेद्वापाठयेद्वापि सद्योमुच्येतबन्धनात् ॥ राजद्वारेरणेदुर्गे सङ्कटेगिरिदुर्गमे ॥ प्रान्तरेपर्व्वतेवापि नौकायाव्वाँमहेश्वरि ॥ वन्हिदुर्गभयेप्राप्ते सिंहव्या

ग्रभयाकुले ॥ पठनात्स्मरणान्मर्त्यो मुच्यतेसर्व्वसङ्कटात् ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रन्दरिद्रोधनवान्भवेत् ॥सर्वशास्त्रपरोविप्रः सर्व्वयज्ञफलँल्लभेत् ॥ अग्निवायुजलस्तम्भङ्गतिस्तम्भँव्विवस्वतः ॥ मारणेद्वेषणेचैव तथोच्चाटेमहेश्वरि ॥ गोरोचनाकुङ्कुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥ गुरुणावैष्णवैर्व्वापि सर्व्वयज्ञफलँल्लभेत्॥ वशीकरणमत्रैव जायन्तेसर्व्वसिद्धयः ॥ प्रातःकालेशुचिर्भूत्वा मध्याह्नेचनिशामुखे ॥ पठेद्वापाठयेद्वापिसर्व्वयज्ञफलँल्लभेत् ॥ वादीमूकोभवेद्दुष्टोराजाचसेवकोयथा ॥ आदित्यमङ्गलदिने गुरौवापिमहेश्वरि ॥ गोरोचनाकुङ्कुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥ गुरुणावैष्णवैर्व्वापि सर्व्वयज्ञफलँल्लभेत्॥धृत्वासुवर्णमध्यस्थं सर्व्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ स्त्रीणाँव्वामकरेधार्य्यं पुमान्दक्षकरेतथा ॥ आदित्यमङ्गलदिने गुरौवापिमहेश्वरि ॥ शनैश्चरेलिखेद्वापि सर्व्वसिद्धिंलभेद्ध्रुवम् ॥ प्रान्तरेवाश्मशानेवा निशायामर्द्धरात्रके ॥ शून्यागारेचदेवेशि लिखेद्यत्नेनसाधकः ॥ सिंहराशौगुरुगते कर्क्कटस्थेदिवाकरे ॥ मीनराशौगुरुगतेलिखेद्यत्नेनसाधकः ॥ [illegible]जस्वलाभगन्दृष्ट्वातत्रस्थोविलिखेत्सदा ॥ सुगन्धिकुसुमैःशुक्रैः सुग[illegible]गन्धचन्दनैः ॥ मृगनाभिमृगमदैर्व्विलिखेद्यत्नपूर्व्वकम् ॥ लिखित[illegible]चपठित्वाच धारयेच्चाप्यनन्यधीः ॥ कुमारीम्पूजयित्वाच [illegible]नारीश्चापिप्रपूजयेत् ॥ पूजयित्वाचकुसुमैर्गन्धचन्दनवस्त्रकैः ॥ सिन्दूररक्तकुसुमैः पूजयेद्भक्तियोगतः ॥ अथवापूजयेद्देवि कुमारीर्दशमावधीः ॥ सर्व्वाभीष्टफलन्तत्र लभतेतत्क्षणादपि ॥ नात्रसिद्धाद्यपेक्षास्ति नवामित्रारिदूषणम् ॥ नविचार्य्यञ्चदेवेशिजपमात्रेणसिद्धिदम्॥सर्व्वदासर्व्वकालेषु षट्साहस्रप्रमाणतः ॥ बलिन्दत्त्वाविधानेन प्रत्यहम्पूजयेच्छिवाम् ॥ स्वयम्भूकुसुमैःपुष्पैर्व्वलिदानन्दिवानिशम्॥ पूजयेत्पार्व्वतीन्देवीम्भैरवीन्त्रिपुरा

तिमकाम् ॥ ब्राह्मणान्भोजयेन्नित्यन्दशकन्द्वादशन्तथा॥अनेनवि धिनादेवि बालान्नित्यम्प्रपूजयेत्॥मासमेकम्पठेद्यस्तुत्रिसन्ध्यँवि धिनामुना ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रन्निर्द्धनोधनवान्भवेत् ॥ सदाचा नेनाविधिना तथामासत्रयेणच ॥ कृतकार्य्यंभवेद्देवि तथामास चतुष्टये ॥ दीर्ग्घरोगात्प्रमुच्येत पञ्चमेकाविराड्भवेत् ॥ सर्व्वैश्व र्य्यंलभेद्देविमासषट्केतथैवच ॥ सप्तमेखेचरत्वञ्च अष्टमेचबृहद्यु तिः ॥ नवमेसर्व्वसिद्धिःस्याद्दशमेलोकपूजितः ॥ एकादशेरा जवश्योद्वादशेतुपुरन्दरः ॥ वारमेकम्पठेद्यस्तुप्राप्नोतिपूजनेफल म् ॥ समग्रंश्लोकमेकँव्वायः पठेत्प्रयतःशुचिः ॥ सपूजाफलमा प्नोति भैरवेणचभाषितम् ॥ आयुष्मत्प्रीतियोगेच ब्राह्मैन्द्रेचवि शेषतः ॥ पञ्चम्याञ्चतथाषष्ठ्याँय्यत्रकुत्रापितिष्ठति ॥ श ङ्कानविद्यतेतत्र नचमायादिदूषणम् ॥ वारमेकंपठेन्मर्त्त्योमुच्य तेसर्व्वसङ्कटात् ॥ किमन्यद्बहुनादेविसर्व्वाभीष्टफलँल्लभेत्॥ इति श्रीविश्वसारे महाभैरवविरचितंश्रीमत्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तो त्रंसमाप्तम् ॥ ७ ॥ ॥ ॥

इति शाक्तप्रमोदे त्रिपुरभैरवीतन्त्रं
समाप्तम् ॥

ग्रभयाकुले ॥ पठनात्स्मरणान्मर्त्त्यो मुच्यतेसर्व्वसङ्कटात् ॥ अ
पुत्रोलभतेपुत्रन्दरिद्रोधनवान्भवेत् ॥सर्वशास्त्रपरोविप्रः सर्व्वयज्ञ
फलँल्लभेत् ॥ अग्निवायुजलस्तम्भङ्गतिस्तम्भँव्विवस्वतः ॥ मा
रणेद्वेषणेचैव तथोच्चाटेमहेश्वरि ॥ गोरोचनाकुङ्कुमेन लिखे
त्स्तोत्रमनन्यधीः ॥ गुरुणावैष्णवैर्व्वापि सर्व्वयज्ञफलँल्लभेत्॥ व
शीकरणमत्रैव जायन्तेसर्व्वसिद्धयः ॥ प्रातःकालेशुचिर्भूत्वा म
ध्याह्नेचनिशामुखे ॥ पठेद्वापाठयेद्वापिसर्व्वयज्ञफलँल्लभेत् ॥ वा
दीमूकोभवेद्दुष्टोराजाचसेवकोयथा ॥ आदित्यमङ्गलदिने गुरौ
वापिमहेश्वरि ॥ गोरोचनाकुङ्कुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥
गुरुणावैष्णवैर्व्वापि सर्व्वयज्ञफलँल्लभेत्॥धृत्वासुवर्णमध्यस्थं स
र्व्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ स्त्रीणाँव्वामकरेधार्य्यं पुमान्दक्षकरेतथा
॥ आदित्यमङ्गलदिने गुरौवापिमहेश्वरि ॥ शनैश्चरेलिखेद्वापि
सर्व्वसिद्धिँलभेद्ध्रुवम् ॥ प्रान्तरेवाश्मशानेवा निशायामर्द्धरात्र
के ॥ शून्यागारेचदेवेशि लिखेद्यत्नेनसाधकः ॥ सिंहराशौगुरुग
ते कर्क्कटस्थेदिवाकरे ॥ मीनराशौगुरुगतेलिखेद्यत्नेनसाधकः ॥
रजस्वलाभगन्दृष्ट्वातत्रस्थोविलिखेत्सदा ॥ सुगन्धिकुसुमैःशुक्रैः
सुग[illegible]गन्धचन्दनैः ॥ मृगनाभिमृगमदैर्व्विलिखेद्यत्नपूर्व्वकम् ॥
लिखित[illegible]चपठित्वाच धारयेच्चाप्यनन्यधीः ॥ कुमारीम्पूजयि
त्वाच[illegible]नारीश्चापिप्रपूजयेत् ॥ पूजयित्वाचकुसुमैर्ग्गन्धचन्दनव
स्त्रकैः ॥ सिन्दूररक्तकुसुमैः पूजयेद्भक्तियोगतः ॥ अथवापूजयेद्दे
वि कुमारीर्द्दशमावधीः ॥ सर्व्वाभीष्टफलन्तत्र लभतेतत्क्षणादपि
॥ नात्रसिद्धाद्यपेक्षास्ति नवामित्रारिदूषणम् ॥ नविचार्य्यञ्चदे
वेशिजपमात्रेणसिद्धिदम्॥सर्व्वदासर्व्वकालेषु षट्साहस्रप्रमाणतः
॥ बलिन्दत्त्वाविधानेन प्रत्यहम्पूजयेच्छिवाम् ॥ स्वयम्भूकुसुमैः
पुष्पैर्व्वलिदानन्दिवानिशम्॥ पूजयेत्पार्व्वतीन्देवीम्भैरवीन्त्रिपुरा

त्तिमकाम् ॥ ब्राह्मणान्भोजयेन्नित्यन्दशकन्द्वादशन्तथा॥अनेनावि
धिनादेवि बालान्नित्यम्प्रपूजयेत्॥मासमेकम्पठेद्यस्तुत्रिसन्ध्यँव्वि
धिनामुना ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रन्निर्द्धनोधनवान्भवेत् ॥ सदाचा
नेनाविधिना तथामासत्रयेणच ॥ कृतकार्य्यंभवेद्देवि तथामास
चतुष्टये ॥ दीर्ग्घरोगात्प्रमुच्येत पञ्चमेकाविराड्भवेत् ॥ सर्व्वैश्व
र्य्यंलभेद्देविमासषट्केतथैवच ॥ सप्तमेखेचरत्वञ्च अष्टमेचबृहद्यु
तिः ॥ नवमेसर्व्वसिद्धिःस्याद्दशमेलोकपूजितः ॥ एकादशेरा
जवश्योद्वादशेतुपुरन्दरः ॥ वारमेकम्पठेद्यस्तुप्राप्नोतिपूजनेफल
म् ॥ समग्रंश्लोकमेकँव्वायः पठेत्प्रयतःशुचिः ॥ सपूजाफलमा
प्नोति भैरवेणचभाषितम् ॥ आयुष्मत्प्रीतियोगेच ब्राह्मैन्द्रेचवि
शेषतः ॥ पञ्चम्याञ्चतथाषष्ठ्याँय्यत्रकुत्रापितिष्ठति ॥ श
ङ्कानविद्यतेतत्र नचमायादिदूषणम् ॥ वारमेकंपठेन्मर्त्त्योमुच्य
तेसर्व्वसङ्कटात् ॥ किमन्यद्बहुनादेविसर्व्वाभीष्टफलँल्लभेत्॥ इति
श्रीविश्वसारे महाभैरवविरचितंश्रीमत्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तो
त्रंसमाप्तम् ॥ छ ॥ ॥ ॥

इति शाक्तप्रमोदे त्रिपुरभैरवीतन्त्रं
समाप्तम् ॥

इति शाक्तप्रमोदे
त्रिपुरभैरवीतन्त्रं
समाप्तम् ॥



श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

संगृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

सप्तमम्

धूमावतीतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ।

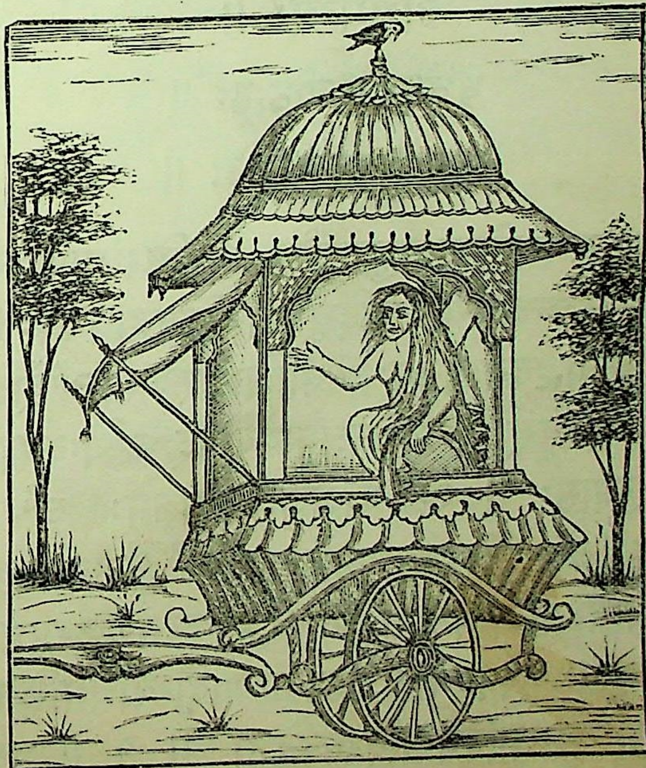
अथ शाक्तप्रमोदः ।

अथ धूमावतीतन्त्रम् ॥



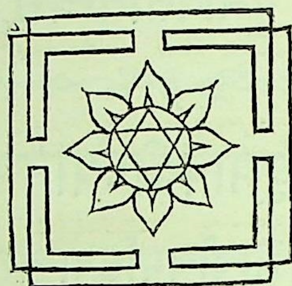
अथ धूमावतीध्यानम् ॥

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ॥ विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ॥ काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा ॥ शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता ॥ प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ॥ क्षुत्पिपासार्दिता नित्यम्भयदा कलहास्पदा ॥



अथयन्त्रोद्धारः ॥

अनुक्तकल्पेयन्त्रन्तु लिखेत्पद्मन्दलाष्टकम् ॥ षट्कोणकर्णिण कन्तत्रवेदद्वारोपशोभितम् ॥



अथ मन्त्रोद्धारः ॥

दान्तौसाव्वींशबिन्द्वन्तौबीजेधूमावतीद्विठः ॥ धूमावतीमनुः प्रोक्तोवैरिनिग्रहकारकः ॥

अथमन्त्रः ॥

धूँधूँधूमावतीठःठः ॥

अथपूजाविधिः ॥

तत्रप्रथमंऋष्यादिन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ शिरसिपिप्पलादमुनये नमःमुखेनिचृच्छन्दसेनमः हृदिधूमावत्यैदेवतायैनमः ॥ अथाङ्ग न्यासः ॥ ॐधाँहृदयायनमः ॐधींशिरसेस्वाहा ॐधूँशिखायैवष ट् ॐधैंकवचायहूम् ॐधौंनेत्रत्रयायवौषट् ॐधःअस्त्रायफट् । ततः करन्यासः ॥ ॐ धाँअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ॐ धींतर्ज्जनी भ्यांस्वाहा ॐ धूँमध्यमाभ्याँव्वषट् ॐ धैंअनामिकाभ्यांहूम् ॐ धौंकनिष्ठाभ्याँव्वौषट् ॥ ॐ धः करतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ततोध्यानम् ॥ विवर्णाचञ्चलाकृष्णादीर्घाचमलिनाम्बरा ॥ विमुक्तकुन्तलारूक्षाविधवाविरलद्विजा ॥ १ ॥ काकध्वजर

थारूढाविलम्बितपयोधरा ॥ शूर्प्पहस्तातिरूक्षाक्षाधूतहस्ता वरान्विता ॥ २ ॥ प्रवृद्धघोणातुभृशङ्कुटिलाकुटिलेक्षणा ॥ क्षुत्पिपासार्द्दितानित्यम्भयदाकलहास्पदा ॥ ३ ॥ इतिध्यात्वा प्राणादीन्प्रतिष्ठापयेत् ॥ तद्यथा ॥ आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँ हों ॐक्षँसँहँसः ह्रींॐहँसःश्रीमद्धूमावत्याःप्राणाइहप्राणाः ॥ आँ ह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँहों ॐक्षँसँहँसःह्रींओंहँसः श्रीमद्धूमावत्याजीव इहस्थितः । ॐह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँहों ॐक्षँसँहँसःह्रींॐहँसःश्रीमद्धूमावत्याःसर्वेन्द्रियाणिइहस्थितानि । आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँस हौंॐक्षँसँहँसःह्रींॐहँसः श्रीमद्धूमावत्यावाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रघ्राणप्राणाइहागत्यसुखञ्चिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ ततोदेवतारूपमात्मानन्ध्यात्वाप्राणायामंऋष्यादिन्यासषडङ्गन्यासकरन्यासान्विधाय मातृकान्यासमाचरेत् ॥ तत्रओमस्यमातृकामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्रीछन्दोमातृकासरस्वतीदेवताहलोबीजानिस्वराश्शक्तयस्तदुभयङ्कीलकमभीष्टसिद्ध्यर्त्थेविनियोगः । शिरसिब्रह्मणेऋषयेनमः मुखेगायत्रीछन्दसेनमः । हृदिमातृकासरस्वत्यै देवतायैनमः ॥ लिङ्गेहल्भ्योबीजेभ्योनमः पादयोस्स्वरेभ्यश्शक्तिभ्योनमः। सर्व्वाङ्गेतदुभयकीलकायनमः॥अथषडङ्गन्यासः॥ अँकँखँगँघँङँआँहृदयायनमःइँचँछँजँझँञँईशिरसेस्वाहा उँटँठँडँ ढँणँऊँशिखायैवषट् एँतँथँदँधँनँऐंकवचायहूम् ओंपँफँबँभँमँऔंनेत्रत्रयायवौषट् अँयँरँलँवँशँषँसँहँक्षँअःअस्त्रायफट् ॥ एवङ्करन्यासोयथा ॥ अँकँखँगँघँङँआँअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः इँचँछँजँझँञँईतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा उँटँठँडँढँणँऊँमध्यामाभ्यांव्वषट् एँतँथँदँधँनँऐंअनामिकाभ्यांहूम्ओंपँफँबँभँमँऔंकानिष्ठिकाभ्यांव्वौषट् अँयँरँलँवँशँ षँसँहँक्षँअःकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ॥अथमातृकान्यासः॥ ललाटेअँनमः मुखवृत्तेआँमनः दक्षनेत्रेइँनमः वामनेत्रेईनमः दक्षकर्णे

उँनमः वामकर्णेऊँनमः दक्षनासायाम्ऋँनमः वामनासायाम्ॠँ नमःदक्षगण्डेलृँनमः वामगण्डेलॄँनमः ऊर्ध्वोष्ठेएँनमः अधरोष्ठेऐँ नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौओंनमः अधोदन्तपङ्क्तौऔंनमः शिरसिअँ नमः मुखेअःनमः दक्षिणबाहुमूले कँनमः कूर्प्परेखँनमः मणि बन्धेगँनमः अङ्गुलीमूलेघँनमः अङ्गुल्यग्रेङँनमः वामबाहुमूले चँनमःकूर्प्परेछँनमः मणिबन्धेजंनमः अङ्गुलीमूलेझँनमः अङ्गु ल्यग्रेञँनयः दक्षिणोरुमूलेटँनमः जानुनिठँनम गुल्फेडँनमः अङ्गुलीमूलेढँनमः अङ्गुल्यग्रेणँनमः वामोरुमूलेतँनमः जानुनि थँनमः गुल्फेदँनमः अङ्गुलीमूलेधँनमः अङ्गुल्यग्रेनँनमः दक्षपा र्श्वेपँनमः वामपार्श्वेफँनमः पृष्ठेबँनमः नाभौभँनमः उदरेमँनमः हृदयेयँत्वगात्मनेनमः दक्षांसेरँअसृगात्मनेनमः ककुदिलँमांसा त्मनेनमः वामांसेवँमेदआत्मनेनमः हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तम्शम स्थ्यात्मनेनमः हृदयाद्वामभुजाग्रान्तम्षँमज्जात्मनेनमः हृदयाद्द क्षपादाग्रान्तम्सँशुक्रात्मनेनमः हृदादिवामपादाग्रान्तम्हँआत्म नेनमः हृदयान्मस्तकान्तम् क्षंपरमात्मनेनमः ॥ इतिबहिर्म्मातृ कान्यासः ॥ ततोमानसैरुपचारैर्देवीम्पूजयेत् ॥ तत्रप्रार्थयेदनेन मन्त्रेण ॥ धूमावतिस्वागतन्ते सन्निधौभवसाम्प्रतम् ॥ गृहाण मानसीम्पूजाय्यँथार्त्थपरिभाविताम् ॥ ततोऽष्टोत्तरशतम्मूलम न्त्रव्वँर्ण्णमय्यामालयाजपेत् ॥ इतिमानसीपूजाविधिः ॥ अथब हिःपूजा ॥ तत्रप्राणायामषडङ्गन्यासादिविधाय प्रथमञ्चतुःषोड शाष्टवारजप्तेनमूलमन्त्रेणपूरककुम्भकरेचकाख्यम्प्राणायामत्रय ङ्कृत्वा ततः षडङ्गन्यासादिकुर्य्यात् । तद्यथा । धाँहृदयायनमः धींशिरसेस्वाहा धूँशिखायैवषट् धैंकवचायहूम् धौंनेत्रत्रयायवौ षट् धःअस्त्रायफट् ॥ इतिछोटिकयादिग्बन्धनङ्कुर्य्यात् ॥ एवङ्करन्यासः ॥ धांअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः धींतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा धूँ

मध्यमाभ्याँव्वषट् धैंअनामिकाभ्यांहूम् धौंकनिष्ठिकाभ्याँव्वौ षट् धःकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ॥ एवन्न्यासादिकृत्वाअर्ग्घस्था पनङ्कुर्य्यात् ॥ तद्यथा ॥ त्रिकोणवृत्तषट्कोणचतुरस्रमण्ड लँव्विरच्यइमितिविलिख्यमूलमन्त्रेणत्रिकोणंसम्पूज्यषडङ्गेषुषड ङ्गंसम्पूज्य । चतुरस्रेपूर्ण्णगिरिपीठायनम इतिपूर्व्वे उड्डीया नपीठायनमइतिदक्षिणे कामरूपपीठायनमइतिपश्चिमे जाल न्धरपीठायनमइत्युत्तरे ॥ इतिसम्पूज्य ॥ मध्येॐआधारशक्त येनम इतिसम्पूज्य त्रिकोणगर्ब्भषट्कोणभूषितार्य्यन्त्रिकाम्मूले नसँस्थाप्यनमइतिसामान्यार्ग्घस्थजलेनाभ्युक्ष्य ॥ गङ्गेचयमुने चैवगोदावरिसरस्वति ॥ नर्म्मदेसिन्धुकावेरिजलेस्मिन्सन्निधि ङ्कुरु ॥ ॐब्रह्माण्डोदरतीर्त्थानिकरैस्स्पृष्टानितेरवे ॥ तेनसत्ये नमेदेवतीर्त्थन्देहिदिवाकर ॥ इत्यादिभिस्तीर्त्थान्यावाह्याङ्कुश मुद्रयावौषडितिपुष्पम् ॥वषडित्यनेनगालिनीमुद्राम्प्रदर्श्यवमि तिधेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य इष्टदेवतान्ध्यात्वासम्पूज्य सकलीकृत्य शङ्खमुद्राम्प्रदर्श्यषट्कोणेषडङ्गञ्चसम्पूज्य पूर्व्ववद्धूमावती न्देवीन्ध्यात्वाआवाहयेत् ॥ तद्यथा॥ मूलमन्त्रम्पठन् ॐभगवति धूमावतिइहागच्छइतिप्रसारितसंहताङ्गुलीमूलपर्व्वणोरङ्गुष्ठौनिः क्षिप्यआवहयेत् ॥ मूलम्पठन् धूमावतिदेविइहातिष्ठ इत्यधो मुख्यामुद्रयास्थापयेत् ॥ मूलम्पठन् पद्ममुद्रयापुष्पाद्यासनन्द द्यात् ॥ ततः ॐअस्मिन्वरासनेदेविसुखासीनेऽक्षरात्मिके ॥ प्रति ष्ठिताभवेःसात्वंप्रसीदपरमेश्वरि ॥ मूलञ्चपठन्इहप्रतिष्ठिताभवे तिपूर्वोक्तयामुद्रयाप्रतिष्ठापयेत् ॥ पूर्व्वोक्तप्राणप्रतिष्ठाविधिनाप्रा णान्प्रतिष्ठाप्य ततोमूलमन्त्रेणार्ग्घोदकेनत्रिःप्रोक्षणम् ॥ ततःपा द्यम् ॥ मूलम्पठन् इदम्पाद्यंश्रीधूमावत्यैनिवेदयामिनम इति पादयोर्द्दद्यात् ॥ ततोमूलम्पठन् इदमाचनीयं श्रीधूमावत्यैनिवे

दयामिनमइतिमुखेदद्यात्॥मूलम्पठन् साङ्गायैसायुधायै सवाहना यै सपरिवारायैश्रीधूमावत्यैइमम्मधुघृतशर्क्करादधिदुग्धसङ्घात्म कम्मधुपर्कन्निवेदयामिनमइतिमुखेदद्यात्॥मूलम्पठन् इदम्पुनरा चमनीयंसाङ्गायैइत्यादिश्रीधूमावत्यैनिवेदयामिनमइतिमुखेदद्या त् ॥ मूलम्पठन् इदमर्घ्यं साङ्गायैइत्यादिश्रीधूमावत्यैनिवेदया मिनमइतिशिरसिदद्यात् ॥ मूलम्पठन् इदंहरिद्राद्युद्वर्त्तनंसाङ्गायै इत्यादिश्रीधूमावत्यैनिवेदयामिनमः ॥ ॐपरमानन्दबोधाब्धिनि मग्ननिजमूर्त्तये ॥ साङ्गोपाङ्गमिदंस्नानङ्कल्पयाम्यहमीश्वरि ॥ मूलम्पठन् इदंस्नानीयंसा[illegible]धूमावत्यैनिवेदयामिनम इतिशतकृत्वः सहस्रकृत्वोयथाशक्तिवास्नापयेत् ॥ मूलम्पठन् इदँ व्वासस्साङ्गायैइत्यादिश्रीधूमावत्यैनिवेदयामिनमइतिवासोदद्या त् ॥ मूलम्पठन् इदमुत्तरीयंसाङ्गायैइत्यादिश्रीधूमावत्यैनिवेद यामिनमइत्युत्तरीयन्दद्यात् ॥ मूलम्पठन् इदञ्चन्दनंसाङ्गायैइत्या दिश्रीधूमावत्यैनिवेदयामिनमः ॥ मूलम्पठन् एतान् अक्षतान्सा ङ्गायैइत्यादिश्रीधूमावत्यैनिवेदयामिनमः ॥ मूलम्पठन् एतानि पुष्पाणिसाङ्गायैइत्यादिश्रीधूमावत्यैवौषट् ॥ जयध्वनिमातः स्वाहेतिघण्टां सम्पूज्य मूलम्पठन्ॐवनस्पतिरसोपेतोगन्धा ढ्यःसुमनोहरः ॥ आघ्रेयःसर्व्वदेवानन्धूपोऽयम्प्रतिगृह्यताम् ॥ ए षधूपस्साङ्गायैइत्यादिश्रीधूमावत्यैनिवेदयामिनमइतिवामहस्ते नघण्टाँव्वादयन् दक्षतर्ज्जन्यङ्गुष्ठयोगेनधूपमुद्राम्प्रदर्श्शयन्देवता गुणान्कीर्त्तयन्नाभिदेशतोधूपयेत् ॥ मूलम्पठन् एषपुष्पाञ्जलि स्साङ्गायैइत्यादिश्रीधूमावत्यैनिवेदयामिनमइतिपुष्पाञ्जलित्रय न्दद्यात्॥ॐसुप्रकाशोमहादीपः सर्व्वतस्तिमिरापहः॥सबाह्याभ्य न्तरज्योतिर्द्दीपोयम्प्रतिगृह्यताम् ॥ मूलञ्चपठन् मध्याङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्राम्प्रदर्श्शयन् नेत्रप्रदेशेदीपन्दर्श्शयेत्॥ घृतदीपोदक्षिणेतै

लदीपोवामतः॥ ॐसत्पात्रसिद्धंसहविर्व्विविधानेकभक्षणम्॥निवे दयामिदेवेशिकृपयात्वङ्गृहाणतत् ॥ मूलञ्चपठन् ग्रासमुद्राम्प्रद र्श्यशङ्खोदकेननिवेदयेत् ॥ॐसमस्तंदेवदेवेशिसर्व्वावात्तिकरम्प रम् ॥ अखण्डानन्दसम्पूर्णंगृहाणजलमुत्तमम् ॥ इतिपानीयञ्च दत्वाचुलुकँव्विधिवद्दद्यात् ॥ ॐएलालवङ्गकर्प्पूरनागवल्लीदलै र्य्युतम् ॥ पूगभागेरितन्देवितांम्बूलम्प्रतिगृह्यताम्॥मूलञ्चपठन् इदन्ताम्बूलंसाङ्गायैइत्यादिश्रीधूमवत्यैनिवेदयामिनमइतिमुखप्र देशेतत्वमुद्रयादद्यात् ॥ ततः पुष्पाञ्जलित्रयन्दद्यात् ॥ बलि दानप्रकारेणयथाशक्तिबलिमपिदद्यात् ॥ इतिश्रीमद्धूमावतीपूजा विधानंसम्पूर्णम् ॥

अथस्तोत्रम् ॥

प्रातर्य्यास्यात्कुमारीकुसुमकलि कयाजापमालाजपन्तीम ध्यान्हेप्रौढरूपाविकसितवदनाचारुनेत्रानिशायाम् ॥ सन्ध्या याँव्वृद्धरूपागलितकुचयुगामुण्डमालाँव्वहन्ती सादेवीदेवदेवी त्रिभुवनजननीकालिकापातुयुष्मान् ॥ १ ॥ बद्धाखट्वाङ्गको टौकपिलवरजटामण्डलम्पद्मयोनेः कृत्वादैत्योत्तमाङ्गैस्स्रजमुर सिशिरश्शेखरन्तार्क्ष्यपक्षैः ॥पूर्णंरक्तैस्सुराणाँय्यममहिषमहाशृ ङ्गमादायपाणौ पायाद्वोवन्द्यमानप्रःलयमुदितयाभैरवःकालरा त्र्याम् ॥ २ ॥ चर्व्वन्तीमास्थिखण्डम्प्रकटकटकटाशब्दसङ्घा तमुग्रङ्कुर्व्वाणप्रेतमध्येकहहकहहकहाहास्यमुग्रङ्कृशाङ्गी ॥ नि त्यन्नित्यप्रसक्ताडमरुडिमडिमान्स्फारयन्तीमुखाब्जम् पाया न्नश्चण्डिकेयंझझमझमझमाजल्पमानाभ्रमन्ती ॥ ३ ॥ टण्ट ण्टण्टण्टटण्टाप्रकरटमटमानाटघण्टाँव्वहन्ती स्फेंस्फेंस्फेंस्कार काराटकटकितहसानादसङ्घट्टभीमा ॥ लोलम्मुण्डाग्रमालाललह लहलहालोललोलाग्रवाचञ्चर्व्वन्तीचण्डमुण्डंमटमटमटितेचर्व्वय

न्तीपुनातु ॥ ४ ॥ वामेकर्ण्णेमृगाङ्कप्रलयपरिगतन्दक्षिणेसूर्य्यं
बिम्बङ्कण्ठेनक्षत्रहारँवरविकटजटाजूटकेमुण्डमालाम् ॥ स्कन्धे
कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतम्ब्रह्मकङ्कालभारंसंहारेधारयन्तीममह
रतुभयम्भद्रदाभद्रकाली ॥ ५ ॥ तैलाभ्यक्तैकवेणीत्रपु
मयविलसत्कर्ण्णिकाक्रान्तकर्ण्णालौहेनैकेनकृत्वाचरणनलिनका
मात्मन ऽ पादशोभाम् ॥ दिग्वासारासभेनग्रसतिजगदिदँय्या
यवाकर्ण्णपूरा वर्षिषण्यातिप्रवृद्धाध्वजविततभुजासासिदेवित्व
मेव ॥ ६ ॥ सङ्ग्रामेहेतिकृत्वैस्सरुधिरदशनैर्य्यद्भटानांशिरो
भिर्म्मालामाबद्धयमूर्ध्निध्वजविततभुजात्वंश्मशानेप्रविष्टा॥ दृष्टा
भूतप्रभूतै ऽ पृथुतरजघनाबद्धनागेन्द्रकाञ्ची शूलाग्रव्यग्रहस्ताम
धुरुधिरसदाताम्रनेत्रानिशायाम् ॥ ७ ॥ दंष्ट्रारौद्रेमुखेऽस्मिंस्त
वविशतिजगद्देविसर्व्वंक्षणार्द्धात् संसारस्यान्तकालेनररुधिरवशा
सम्प्लुवे भूमधूम्रे ॥ कालीकापालिकीसाशवशयनतरायोगिनी
योगमुद्रा रक्तारुद्धिःसभास्थामरणभयहरात्वंशिवाचण्डघण्टा ॥
॥ ८ ॥ धूमावत्यष्टकम्पुण्यंसर्व्वापद्विनिवारकम् ॥ यऽपठेत्सा
धकोभक्त्यासिद्धिंव्विन्दतिवाञ्छिताम् ॥ ९ ॥ महापदिमहा
घोरेमहारोगेमहारणे ॥ शत्रूच्चाटेमारणादौजन्तूनाम्मोहनेतथा ॥
॥ १० ॥ पठेत्स्तोत्रमिदन्देविसर्व्वत्रसिद्धिभाग्भवेत् ॥ देवदान
वगन्धर्व्वायक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ११ ॥ सिंहव्याघ्रादिकास्सर्व्वे
स्तोत्रस्मरणमात्रतः ॥ दूराद्दूरतरँयान्तिकिम्पुनर्म्मानुषाद
यः ॥ १२ ॥ स्तोत्रेणानेनदेवेशि किन्नसिद्ध्यतिभूतले ॥ सर्व्व
शान्तिर्भवेद्देवअन्तेनिर्व्वाणताँव्व्रजेत् ॥ १३ ॥ इत्यूर्द्धाम्नायेधू
मावतीस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथकवचम् ॥

श्रीपार्व्वत्युवाच ॥ धूमावत्यर्च्चनंशम्भोश्रुतँव्विस्तरतोमया॥

कवचंश्रोतुमिच्छामितस्यादेववदस्वमे ॥ श्रीभैरवउवाच ॥ शृणुदेविपरङ्गुह्यन्नप्रकाश्यङ्कलौयुगे ॥ कवचंश्रीधूमावत्या श्शत्रुनिग्रहकारकम् ॥ ब्रह्माद्यादेविसततँय्यद्वशादरिघातिनः ॥ योगिनोभवञ्छत्रुघ्नायस्याध्यानप्रभावतः ॥ ओमस्यश्रीधूमावतीकवचस्यपिप्पलादऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीधूमावतीदेवताधूँबीजं स्वाहाशक्तिःधूमावतीकीलकं शत्रुहननेपाठेविनियोगः ॥ ॐ धूँबीजंमेशिरःपातु धूंललाटंसदावतु ॥ धूमानेत्रयुगम्पातुवती कर्णौसदावतु ॥ दीर्घातूदरमध्येतुनाभिम्मेमलिनाम्बरा ॥ शूर्पहस्तापातुगुह्यंरूक्षारक्षतुजानुनी ॥ मुखम्मेपातुभीमाख्यास्वाहारक्षतुनासिकाम् ॥ सर्वाविद्याऽवतुकण्ठँ विवर्णाबाहुयुग्मकम् ॥ चञ्चलाहृदयम्पातुदुष्टापार्श्वँसदाऽवतु ॥धूमहस्तासदापातुपादौपातुभयावहा ॥प्रवृद्धरोमातुभृशङ्कुटिलाकुटिलेक्षणा ॥ क्षुत्पिपासार्दिंतादेवीभयदाकलहप्रिया॥ सर्वाङ्गम्पातुमेदेवीसर्वशत्रुविनाशिनी ॥ इतितेकवचम्पुण्यङ्कथितम्भुविदुर्ल्लभम् ॥ न प्रकाश्यन्नप्रकाश्यन्नप्रकाश्यङ्कलौयुगे ॥ पठनीयम्महादेवित्रिसन्ध्यन्ध्यानतत्परैः ॥ दुष्टाभिचारोदेवेशितद्गात्रन्नैवसंस्पृशेत् ॥ इतिभैरवीभैरवसँव्वादेधूमावतीतत्वेधूमावतीकवचंसम्पूर्णम् ॥

अथहृदयम् ॥

ओमस्यश्रीधूमावतीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्यपिप्पलादऋषिरनुष्टुप्छन्दश्श्रीधूमावतीदेवताधूम्बीजंह्रींशक्तिःक्लींकीलकंसर्व्वशत्रुसंहारणेपाठेविनियोगः ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ ओंधाँहृदयायनमः धींशिरसेस्वाहा धूँशिखायैवषट् धैंकवचायहूम् धौंनेत्रत्रयायवौषट् धःअस्त्रायफट् ॥ एवङ्करन्यासोयथा ॥ धांअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः धींतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा धूंमध्यमाभ्याँव्वषट् धैंअनामिकाभ्यांहूम्

धौंकनिष्ठाभ्याँव्वौषट् धःकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ॥ अथध्यानम् ॥ धूम्राभान्धूम्रवस्त्राम्प्रकटितदशनाम्मुक्तबालाम्बराढचाङ्काकाङ्कस्यन्दनस्थान्धवलकरयुगांशूर्प्पहस्तातिरूक्षाम् ॥ नित्यङ्क्षुत्क्षान्तदेहाम्मुहुरतिकुटिलाँव्वारिवाञ्छाविचित्ताम् ध्यायेद्धूमावतीँव्वामनयनयुगलाम्भीतिदाम्भीषणास्याम् ॥ १ ॥ कल्पादौयाकालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ ॥ कल्पान्तेत्रिजगत्सर्व्वंधूमावतीम्भजामिताम् ॥ २ ॥ गुणागारागम्यगुणा याशुणागुणवर्द्धिनी ॥ गीतावेदार्त्थतत्वज्ञैर्द्धूमावतीम्भजामिताम् ॥३ ॥ खट्वाङ्गधारिणीखर्व्वाखण्डिनीखलरक्षसाम् ॥ धारिणीखेटकस्यापिधूमावतीम्भजामिताम् ॥४॥ घूर्ण्णघूर्ण्णकराघोराघूर्ण्णिताक्षीघनस्वना ॥ घातिनीघातकानाँय्या धूमावतीम्भजामिताम् ॥ ॥ ५ ॥ चर्व्वन्तीमस्थिखण्डानाञ्चण्डमुण्डविदारिणीम् ॥ चण्डाट्टहासिनीन्देवीम्भजेधूमावतीमहम् ॥ ६ ॥ छिन्नग्रीवाङ्कताच्छन्नाञ्छिन्नमस्तास्वरूपिणीम् ॥ छेदिनीन्दुष्टसङ्घानाम्भजेधूमावतीमहम् ॥ ७ ॥ जातायायाचितादेवैरसुराणाँव्विघातिनीम् ॥ जल्पन्तींबहुगर्ज्जन्तीभजेतान्धूम्ररूपिणीम् ॥ ८ ॥ झङ्कारकारिणाझञ्झाझञ्झमाझमवादिनीम् ॥ झटित्याकर्षिणीन्देवीम्भजेधूमावतीमहम् ॥ ९ ॥ टीपटङ्कारसंय्युक्तान्धनुष्टङ्कारकारिणीम् ॥ घोराघनघटाटोपाँव्वन्देधूमावतीमहम् ॥ १० ॥ ठण्ठण्ठण्ठम्मनुप्रीतिण्ठःठःमन्त्रस्वरूपिणीम् ॥ ठमकाह्वगतिप्रीताम् भजेधूमावतीमहम् ॥ ११॥ डमरूडिण्डिमारावाण्डाकिनीगणमण्डिताम् ॥ डाकिनीभोगसन्तुष्टाम्भजेधूमावतीमहम् ॥ ॥ १२ ॥ ढक्कानादेनसन्तुष्टाण्ढक्कावादकसिद्धिदाम् ॥ ढक्कावादचलच्चित्ताम्भजेधूमावतीमहम् ॥ १३ ॥ तत्त्ववार्त्ताप्रियप्राणाम्भवपाथोधितारिणीम् ॥ तारस्वरूपिणीन्ताराम्भजेधूमावतीम

हम् ॥ १४ ॥ थांथीं थूंथेमन्त्ररूपांथैंथौंथंथःस्वरूपिणीम् ॥ थकारवर्णसर्व्वस्वाम्भजेधूमावतीमहम् ॥१५॥ दुर्ग्गास्वरूपिणीन्देवीन्दुष्टदानवदारिणीम् ॥देवदैत्यकृतध्वंसाँव्वन्देधूमावतीमहम् ॥ १६ ॥ ध्वान्ताकारान्धकध्वंसाम्मुक्तधम्मालधारिणीम् ॥ धूमधाराप्रभान्धीराम्भजेधूमावतीमहम् ॥ १७ ॥ नर्त्तकीनटनप्रीतान्नाटचकर्म्मविवर्द्धिनीम् ॥ नारसिंहीन्नराराध्यान्नौमि धूमावतीमहम् ॥ १८ ॥ पार्व्वतीपतिसम्पूज्याम्पर्व्वतोपरिवासिनीम् ॥ पद्मारूपाम्पद्मपूज्यान्नौमिधूमावतीमहम् ॥ १९ ॥ फूत्कारसहितश्वासाम्फट्मन्त्रफलदायिनीम् ॥ फेत्कारिगणसंसेव्यांसेवेधूमावतीमहम् ॥ २० ॥ बलिपूज्याम्बलाराध्याम्बगलारूपिणीँव्विराम् ॥ ब्रह्मादिवन्दिताँव्विद्याँव्वन्देधूमावतीमहम् ॥ २१ ॥ भव्यरूपाम्भवाराध्याम्भुवनेशीस्वरूपिणीम् ॥ भक्तभव्यप्रदान्देवीम्भजेधूमावतीमहम् ॥ २२ ॥ मायाम्मधुमतीम्मान्याम्मकरध्वजमानिताम् ॥ मत्स्यमांसमदास्वादाम्मन्येधूमावतीमहम् ॥ २३ ॥ योगयज्ञप्रसन्नास्याँय्योगिनीपरिसेविताम् ॥ यशोदाँय्यज्ञफलदाँय्यजेधूमावतीमहम्॥ २४ ॥ रामाराध्यपदद्वन्द्वांरावणध्वंसकारिणीम् ॥ रमेशरमणीपूज्यामहन्धूमावतींश्रये ॥ ॥ २५ ॥ लक्षलीलाकलालक्ष्याँल्लोकवन्द्यपदाम्बुजाम् ॥ लम्बिताम्बीजकोशाढ्याँव्वन्देधूमावतीमहम् ॥ २६ ॥ बकपूज्यपदाम्भोजाम्बकध्यानपरायणाम् ॥ बालाम्बकारिसन्ध्येयाँव्वन्देधूमावतीमहम् ॥ २७ ॥ शङ्करींशङ्करप्राणांसङ्कटध्वंसकारिणीम् ॥ शत्रुसंहारिणींशुद्धांश्रयेधूमावतीमहम् ॥ २८ ॥ षडाननारिसंहन्त्रींषोडशीरूपधारिणीम् ॥ षड्रसास्वादिनींसौम्यांसेवेधूमावतीमहम् ॥ २९ ॥ सुरसेवितपादाब्जांसुरसौख्यप्रदायिनीम् सुन्दरीगणसंसेव्याँसेवेधूमावतीमहम् ॥ ३० ॥ हेरम्बजननीँय्यो

ग्यांहास्यलास्यविहारिणीम् ॥ हारिणींशत्रुसङ्घानांसेवेधूमा वतीमहम् ॥ ३१ ॥ क्षीरोदतीरसँव्वासङ्क्षीरपानप्रहर्षिषताम् ॥ क्षणदेशेज्यपादाब्जांसेवेधूमावतीमहम् ॥ ३२ ॥ चतुस्त्रिंश द्वर्णकानाम्प्रतिवर्णादिनामभिः ॥ कृतन्तुहृदयस्तोत्रन्धूमाव त्यास्सुसिद्धिदम् ॥ ३३ ॥ यइदम्पठतिस्तोत्रम्पवित्रम्पापना शनम् ॥ सप्राप्नोतिपरांसिद्धिन्धूमावत्याःऽप्रसादतः ॥ ३४ ॥ पठन्नेकाग्रचित्तोयोयद्यादिच्छतिमानवः ॥ तत्सर्वंसमवाप्नोतिस त्यंसत्यँव्वदाम्यहम् ॥ ३५ ॥ इति धूमावतीहृदयंसमाप्तम् ॥

अथशतनाम ॥

ईश्वरउवाच ॥ ॐधूमावतीधूम्रवर्णाधूम्रपानपरायणा ॥ धू म्राक्षमथिनीधन्याधन्यस्थाननिवासिनी ॥ १ ॥अघोराचारसन्तु ष्टाअघोराचारमण्डिता ॥ अघोरमन्त्रसम्प्रीताअघोरमन्त्रपूजि ता ॥ २ ॥ अट्टाट्टहासनिरतामलिनाम्बरधारिणी ॥ वृद्धाविरू पाविधवाविद्याचविरलद्विजा ॥ ३ ॥ प्रवृद्धघोणाकुमुखीकुटिला कुटिलेक्षणा ॥ करालीचकरालास्याकङ्कालीशूर्पधारिणी ॥ ॥ ४ ॥ काकध्वजरथारूढाकेवलाकठिनाकुहूः ॥ क्षुत्पिपासा र्दितानित्याललज्जिह्वादिगम्बरी ॥ ५॥दीर्घोदरीदीर्घरवादीर्घा ङ्गीदीर्घमस्तका ॥ विमुक्तकुन्तलाकीर्त्याकैलासस्थानवासिनी ॥ ६ ॥ क्रूराकालस्वरूपाचकालचक्रप्रवर्त्तिनी ॥ विवर्णाचञ्च लादुष्टादुष्टविध्वंसकारिणी ॥ ७ ॥ चण्डीचण्डस्वरूपाचचामु ण्डाचण्डनिस्स्वना ॥ चण्डवेगाचण्डगतिश्चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ ८ ॥ चाण्डालिनीचित्ररेखाचित्राङ्गीचित्ररूपिणी ॥ कृष्णाक पर्दिनीकुल्लाकृष्णारूपाक्रियावती ॥ ९ ॥ कुम्भस्तनीमहोन्म त्तामदिरापानविह्वला ॥ चतुर्भुजाललज्जिह्वाशत्रुसंहारकारिणी

॥ १० ॥ शवारूढाशवगताश्मशानस्थानवासिनी ॥ दुराराध्यादुराचारादुर्ज्जनप्रीतिदायिनी ॥ ११ ॥ निर्म्मांसाचनिराकाराधूतहस्तावरान्विता ॥ कलहाचकलिप्रीताकलिकल्मषनाशिनी ॥ १२ ॥ महाकालस्वरूपाचमहाकालप्रपूजिता ॥ महादेवप्रियामेधामहासङ्कटनाशिनी ॥ १३ ॥ भक्तप्रियाभक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी ॥ भैरवीभुवनाभीमाभारतीभुवनात्मिका ॥१४॥ भेरुण्डाभीमनयनात्रिनेत्राबहुरूपिणी ॥ त्रिलोकेशीत्रिकालज्ञात्रिस्वरूपात्रयीतनुः ॥ १५ ॥ त्रिमूर्त्तिश्चतथातन्वीत्रिशक्तिश्चत्रिशूलिनी ॥ इतिधूमामहत्स्तोत्रन्नाम्नामष्टशतात्मकम् ॥ १६ ॥ मयातेकथितन्देविशत्रुसङ्घविनाशनम् ॥ कारागारेरिपुग्रस्तेमहोत्पातेमहाभये ॥ १७ ॥ इदंस्तोत्रम्पठेन्मर्त्त्योमुच्यतेसर्व्वसङ्कटैः ॥ गुह्याद्गुह्यतरङ्गुह्यङ्गोपनीयम्प्रयत्नतः ॥ १८॥ चतुष्पदार्त्थदन्नॄणांसर्व्वसम्पत्प्रदायकम् ॥ १९ ॥ इतिधूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसम्पूर्णम्

अथसहस्रनाम ॥

श्रीभैरव्युवाच ॥ धूमावत्याधर्म्मरात्र्याऽकथयस्वमहेश्वर ॥ सहस्रनामस्तोत्रम्मेसर्व्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १ ॥ श्रीभैरवउवाच शृणुदेविमहामायेप्रियेप्राणस्वरूपिणि ॥ सहस्रनामस्तोत्रम्मेभवशत्रुविनाशनम् ॥ २ ॥ ओमस्यश्रीधूमावतीसहस्रनामस्तोत्रस्यपिप्पलादऋषिःपङ्क्तिश्छन्दोधूमावतीदेवताशत्रुविनिग्रहेपाठेविनियोगः । धूमाधूमवतीधूमाधूमपानपरायणा ॥ धौताधौतगिराधाम्नीधूमेश्वरनिवासिनी ॥ ३ ॥ अनन्ताऽनन्तरूपाचअकाराकाररूपिणी ॥ आद्याआनन्ददानन्दाइकाराइन्द्ररूपिणी ॥ ४ ॥ धनधान्यार्त्थवाणीदायशोधर्म्मप्रियेष्टदा ॥ भाग्यसौभा

ग्यभक्तिस्थागृहपर्व्वतवासिनी ॥ ५ ॥ रामरावणसुग्रीवमोहदाह
नुमत्प्रिया ॥ वेदशास्त्रपुराणज्ञाज्योतिश्छन्दःस्वरूपिणी ॥ ६ ॥
चातुर्य्यचारुरुचिरारञ्जनप्रेमतोषदा ॥ कमलासनसुधावक्राच
न्द्रहासास्मितानना ॥ ७ ॥ चतुराचारुकेशीचचतुर्व्वर्गप्रदासु
दा ॥ कलाकालधराधीराधारिणीवसुनीरदा ॥ ८ ॥ हीराहीरकव
र्णाभाहरिणायतलोचना ॥ दम्भमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेषहरापरा॥
॥ ९ ॥ नरदेवकरीरामारामानन्दमनोहरा । योगभोगक्रोधलोभ
हराहरनमस्कृता ॥ १० ॥ दानमानज्ञानमानपानगानसुखप्रदा
॥ गजगोश्वपदागञ्जाभूतिदाभूतनाशिनी ॥ ११ ॥ भवभावात
थावालावरदाहरवल्लभा॥ भगभङ्गभयामालामालतीतालनाह्लदा
॥ १२ ॥ जालवालहालकालकपालप्रियवादिनी ॥ करञ्जशील
गुञ्जाढ्याचूताङ्कुरनिवासिनी ॥ १३ ॥ पनसस्थापानसक्तापन
सेशकुटुम्बिनी ॥ पावनीपावनाधारापूर्ण्णापूर्ण्णमनोरथा ॥ १४॥
पूतापूतकलापौरापुराणसुरसुन्दरी ॥ परेशीपरदापारापरात्मा
परमोहिनी ॥ १५ ॥ जगन्मायाजगत्कर्त्रीजगत्कीर्त्तिर्ज्जगन्मयी
॥ जननीजायिनीजायाजिताजिनजयप्रदा ॥ १६ ॥ कीर्त्तिर्ज्ञान
ध्यानमानदायिनीदानवेश्वरी ॥ काव्यव्याकरणज्ञाकाप्रज्ञाप्रा
ज्ञानदायिनी ॥ १७ ॥ विज्ञाज्ञाविज्ञजयदाविज्ञाविज्ञप्रपूजिता
॥ परावरेज्यावरदापारदाशारदादरा ॥ १८ ॥ दारिणीदेवदूती
चमदनामदनामदा॥परमज्ञानगम्याचपरेशीपरगापरा ॥१९॥ य
ज्ञायज्ञप्रदायज्ञज्ञानकार्य्यकरीशुभा ॥ शोभिनीशुभ्रमथिनीनि
शुम्भासुरमर्द्दिनी ॥ २० ॥ शाम्भवीशम्भुपत्नीचशम्भुजायाशु
भानना ॥ शाङ्करीशङ्कराराध्यासन्ध्यासन्ध्यासुधर्म्मिणी ॥२१॥
शत्रुघ्नीशत्रुहाशत्रुप्रदाशात्रवनाशिनी ॥ शैवीशिवलयाशैलाशैल
राजप्रियासदा ॥ २२ ॥ शर्व्वरीशवरीशम्भुःसुधाढ्यासौधवा

सिनी ॥ सगुणागुणरूपाचगौरवीभैरवीरवा ॥ २३ ॥ गौराङ्गी गौरदेहाचगौरीगुरुमतीगुरुः ॥ गौग्गौंग्गंव्यस्वरूपाचगुणानन्द स्वरूपिणी॥२४॥ गणेशगणदागुण्यागुणागौरववाञ्छिता ॥ गण मातागणाराध्यागणकोटिविनाशिनी ॥ २५ ॥ दुर्गादुर्ज्जनह न्त्रीचदुर्ज्जनप्रीतिदायिनी ॥ स्वर्ग्गापवर्ग्गदादात्रीदीनादीनद यावती ॥ २६ ॥ दुर्न्निरीक्ष्यादुरादुःस्थादौःस्थभञ्जनकारिणी ॥ श्वेतपाण्डुरकृष्णाभाकालदाकालनाशिनी ॥२७॥कर्म्मनर्म्मकरी नर्म्माधर्म्माधर्म्मविनाशिनी ॥ गौरीगौरवदागोदागणदागायनप्रि या ॥ २८ ॥ गङ्गाभागीरथीभङ्गाभगाभाग्यविवर्द्धिनी ॥ भवानी भवहन्त्रीचभैरवीभैरवासमा ॥ २९ ॥ भीमाभीमरवाभैमीभीमान न्दप्रदायिनी ॥ शरण्याशरणाशम्याशशिनीशङ्खनाशिनी ॥ ॥ ३० ॥ गुणागुणकरी गौणीप्रियाप्रीतिप्रदायिनी ॥ जनमोहन कर्त्रीचजगदानन्ददायिनी ॥ ३१ ॥ जिताजायाचविजयावि जयाजयदायिनी ॥ कामाकालीकरालास्याखर्व्वाखञ्जाखरागदा ॥ ३२ ॥ गर्व्वागरुत्मतीधर्म्माघर्ग्वराघोरनादिनी ॥ चराचरी चराराध्याछिन्नाछिन्नमनोरथा ॥ ३३ ॥ छिन्नमस्ताजयाजा प्याजगज्जायाचझर्झरी ॥ झकाराझीष्कृतिष्टीकाटङ्काटङ्कारना दिनी ॥ ३४ ॥ ठीकाठक्कुरठक्काङ्गीठठठाङ्कारढुण्ढुरा ढुण्ढीता राजतीर्ण्णाचतालस्थाभ्रमनाशिनी ॥ ३५ ॥ थकाराथकरादात्री दीपादीपविनाशिनी ॥ धन्याधनाधनवतीनर्म्मदानर्म्ममोदिनी ॥ ३६ ॥ पद्मापद्मावतीपीतास्फान्ताफूत्कारकारिणी ॥ फुल्ला ब्रह्ममयीब्राह्मीब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥ ३७ ॥ भवाराध्याभवाध्य क्षाभगालीमन्दगामिनी ॥ मदिरामदिरेक्षाचयशोदायमपूजिता ॥ ३८ ॥ याम्याराम्यारामरूपारमणीललितालता ॥ लङ्केश्वरी वाक्प्रदावाच्यासदाश्रमवासिनी ॥ ३९ ॥ श्रान्ताशकाररूपा

चषकाराखरवाहना ॥ सह्याद्रिरूपासानन्दाहरिणीहरिरूपिणी ॥ ४० ॥ हराराध्यावालवाचलवङ्गप्रेमतोषिता ॥ क्षपाक्षयप्रदा क्षीराअकारादिस्वरूपिणी ॥ ४१ ॥ कालिकाकालमूर्त्तिश्चकलहाकलहप्रिया ॥ शिवाशन्दायिनीसौम्याशत्रुनिग्रहकारिणी ॥ ॥ ४२ ॥ भवानीभवमूर्त्तिश्चसर्व्वाणीसर्व्वमङ्गला ॥ शत्रुविद्राविणीशैवीशुम्भासुरविनाशिनी ॥ ४३ ॥ धकारमन्त्ररूपाचधूम्बीजपरितोषिता ॥ धनाध्यक्षस्तुताधीराधरारूपाधरावती ॥ ४४ ॥ चर्व्विणीचन्द्रपूज्याचछन्दोरूपाछटावती ॥ छायाछायावती स्वच्छाछेदिनीभेदिनीक्षमा ॥ ४५ ॥ वल्गिनीवर्द्धिनीवन्द्यावेदमाताबुधस्तुता॥धाराधारावतीधन्याधर्म्मदानपरायणा ॥ ४६ ॥ गर्व्विणीगुरुपूज्याचज्ञानदात्रीगुणान्विता ॥ धर्म्मिणीधर्म्मरूपाचघण्टानादपरायणा ॥ ४७॥ घण्टानिनादिनीघूर्ण्णाघूर्ण्णिता घोररूपिणी ॥ कलिघ्नीकलिदूतीचकलिपूज्याकलिप्रिया ॥४८॥ कालनिर्ण्णाशिनीकाल्याकाव्यदाकालरूपिणी ॥वर्षिणीवृष्टिदा वृष्टिर्म्महावृष्टिनिवारिणी ॥४९॥ घातिनीघाटिनीघोण्टाघातकी घनरूपिणी ॥ धूम्बीजाधूञ्जपानन्दाधूम्बीजजपतोषिता ॥ ५० ॥ धून्धूम्बीजजपासक्ताधून्धूम्बीजपरायणा॥ धूङ्कारहर्षिणीधूमाधनदाधनगर्व्विता ॥५१॥ पद्मावतीपद्ममालापद्मयोनिप्रपूजिता ॥ अपारापूरणीपूर्ण्णापूर्ण्णिमापरिवन्दिता ॥ ५२ ॥ फलदाफलभोक्रीचफलिनीफलदायिनी ॥ फूत्कारिणीफलावाप्त्रीफलभोक्रीफलान्विता ॥ ५३ ॥ वारिणीवारणप्रीतावारिपाथोधिपारगा ॥ विवर्ण्णाधूम्रनयनाधूम्राक्षीधूम्ररूपिणी ॥५४ ॥ नीतिर्न्नीतिस्वरूपाचनीतिज्ञानयकोविदा ॥ तारिणीताररूपाचतत्त्वज्ञानपरायणा ॥५५॥ स्थूलास्थूलाधरास्थात्रीउत्तमस्थानवासिनी॥स्थूलापद्मपदस्थानास्थानभ्रष्टास्थलस्थिता ॥ ५६ ॥ शोषिणीशोभि

नीशीताशीतपानीयपायिनी ॥ शारिणीशाङ्खिनीशुद्धाशङ्खासुरविनाशिनी ॥ ५७ ॥ शर्व्वरीशर्व्वरीपूज्याशर्व्वरीशप्रपूजिता ॥ शर्व्वरीजाग्रितायोग्यायोगिनीयोगिवन्दिता ॥ ५८ ॥ योगिनीगणसंसेव्यायोगिनीयोगभाविता ॥ योगमार्ग्गरतायुक्तायोगमार्ग्गानुसारिणी ॥ ५९ ॥ योगभावायोगयुक्तायामिनीपतिवन्दिता ॥ अयोग्यायोधिनीयोद्धीयुद्धकर्म्मविशारदा ॥ ॥ ६० ॥ युद्धमार्ग्गरतानन्तायुद्धस्थाननिवासिनी ॥ सिद्धासिद्धेश्वरीसिद्धिःसिद्धिगेहनिवासिनी ॥ ६१ ॥ सिद्धरीतिस्सिद्धप्रीतिःसिद्धासिद्धान्तकारिणी ॥ सिद्धगम्यासिद्धपूज्यासिद्धवन्द्यासुसिद्धिदा ॥ ६२ ॥ साधिनीसाधनप्रीतासाध्यासाधनकारिणी ॥ साधनीयासाध्यसाध्यासाध्यसङ्घसुशोभिनी ॥ ६३ ॥ साध्वीसाधुस्वभावासासाधुसन्ततिदायिनी ॥ साधुपूज्यासाधुवन्द्यासाधुसन्दर्शनोद्यता ॥ ६४ ॥ साधुदृष्टासाधुपृष्टासाधुपोषणतत्परा ॥ सात्विकीसत्त्वसंसिद्धासत्त्वसेव्यासुखोदया ॥ ६५ ॥ सत्ववृद्धिकरीशान्तासत्वसंहर्षमानसा॥ सत्वज्ञानासत्वविद्यासत्वसिद्धान्तकारिणी ॥ ६६ ॥ सत्ववृद्धिस्सत्वसिद्धिस्सत्वसम्पन्नमानसा ॥ चारुरूपाचारुदेहाचारुचञ्चललोचना ॥ ६७ ॥ छद्मिनीछद्मसङ्कल्पाछद्मवार्त्ताक्षमाप्रिया ॥ हठिनीहठसम्प्रीतिर्हठवार्त्ताहठोद्यमा ॥ ६८ ॥ हठकार्य्याहठधर्म्माहठकर्म्मपरायणा ॥ हठसम्भोगनिरताहठात्काररतिप्रिया ॥ ६९ ॥ हठसम्भेदिनीहृद्याहृद्यवार्त्ताहरिप्रिया ॥ हरिणीहरिणीदृष्टिर्हरिणीमांसभक्षणा ॥ ७० ॥ हरिणाक्षीहरिणपाहरिणीगणहर्षदा ॥ हरिणीगणसंहर्त्रीहरिणीपरिपोषिका ॥ ७१ ॥ हरिणीमृगयासक्ताहरिणीमानपुरस्सरा ॥ दीनादीनाकृतिर्द्दूनाद्राविणीद्रविणप्रदा ॥ ७२ ॥ द्रविणाचलसंव्वासाद्रविताद्रव्यसँय्युता ॥ दी

र्घादिर्ग्घपदादृश्यादर्शनीयादृढाकृतिः ॥७३॥ दृढाद्रिष्टमतिर्दुष्टाद्वेषिणीद्वेषिभञ्जिनी ॥ दोषिणीदोषसँय्युक्तादुष्टशत्रुविनाशिनी ॥ ७४ ॥ देवतार्त्तिहरादुष्टदैत्यसङ्घविदारिणी ॥ दुष्टदानवहन्त्रीचदुष्टदैत्यनिषूदिनी ॥ ७५ ॥ देवताप्राणदादेवीदेवदुर्ग्गतिनाशिनी ॥ नटनायकसंसेव्यानर्त्तकीनर्त्तकप्रिया॥७६॥ नाट्यविद्यानाट्यकर्त्रीनादिनीनादकारिणी ॥ नवीननूतनानव्यानवीनवस्त्रधारिणी ॥ ७७ ॥ नव्यभूषानव्यमाल्यानव्यालङ्कारशोभिता ॥ नकारवादिनीनम्यानवभूषणभूषिता ॥७८॥ नीचमार्ग्गानीचभूमिर्न्नीचमार्ग्गगतिर्ग्गतिः ॥ नाथसेव्यानाथभक्तानाथानन्दप्रदायिनी ॥ ७९ ॥ नम्रानम्रगतिर्न्नेत्रीनिदानवाक्यवादिनी ॥ नारामध्यास्थितानारीनारीमध्यगताऽनघा ॥ ॥ ८० ॥ नारीप्रीतिर्न्नराराध्यानरनामप्रकाशिनी ॥ रतीरतिप्रियारम्यारतिप्रेमारतिप्रदा ॥ ८१ ॥ रतिस्थानस्थिताराध्यारतिहर्षप्रदायिनी ॥ रतिरूपारतिध्यानारतिरीतिसुधारिणी ॥ ॥ ८२ ॥ रतिरासमहोल्लासारतिरासविहारिणी रतिकान्तस्तुताराशीराशिरक्षणकारिणी ॥ ८३ ॥ अरूपाशुद्धरूपाचसुरूपारूपगर्व्विता ॥ रूपयौवनसम्पन्नारूपराशीरमावती ॥ ॥ ८४ ॥ रोधिनीरोषिणीरुष्टारोषिरुद्धारसप्रदा ॥ मादिनीमदनप्रीतामधुमत्तामधुप्रदा ॥ ८५ ॥ मद्यपामद्यपध्येयामद्यपप्राणरक्षिणी ॥ मद्यपानन्दसन्दात्रीमद्यपप्रेमतोषिता ॥८६ ॥ मद्यपानरतामत्तामद्यपानविहारिणी ॥ मदिरामदिरारक्तामादिरापानहर्षिणी ॥ ८७ ॥ मदिरापानसन्तुष्टामदिरापानमोहिनी ॥ मदिरामानसामुग्धामाध्वीपामदिराप्रदा ॥ ८८ ॥ माध्वीदानसदानन्दामाध्वीपानरतामदा ॥ मोदिनीमोदसन्दात्रीमुदितामोदमानसा ॥८९ ॥ मोदकर्त्रीमोददात्रीमोदमङ्गलकारिणी ॥

मोदकादानसन्तुष्टामोदकग्रहणक्षमा ॥९०॥ मोदकालब्धिसङ्क्रुद्धामोदकप्राप्तितोषिणी ॥ मांसादामांससम्भक्षामांसभक्षणहर्षिणी ॥ ९१ ॥ मांसपाकपरप्रेमामांसपाकालयस्थिता ॥ मत्स्यमांसकृतास्वादामकारपञ्चकान्विता ॥ ९२ ॥ मुद्रामुद्रान्विता मातामहामोहामनस्विनी ॥ मुद्रिकामुद्रिकायुक्तामुद्रिकाकृतलक्षणा ॥ ९३ ॥ मुद्रिकालङ्कृतामाद्रीमन्दराचलवासिनी ॥ मन्दराचलसंसेव्यामन्दराचलवासिनी ॥ ९४ ॥ मन्दरध्येयपादाब्जामन्दरारण्यवासिनी ॥ मन्दुरावासिनीमन्दामारिणीमारिकामिता ॥ ९५ ॥ महामारीमहामारीशमिनीशवसंस्थिता ॥ शवमांसकृताहाराश्मशानालयवासिनी ॥ ९६ ॥ श्मशानसिद्धिसंहृष्टाश्मशानभवनस्थिता ॥ श्मशानशयनागाराश्मशानभस्मलेपिता ॥ ९७ ॥ श्मशानभस्मभीमाङ्गीश्मशानावासकारिणी ॥ शामिनीशमनाराध्याशमनस्तुतिवन्दिता ॥ ९८ ॥ शमनाचारसन्तुष्टाशमनागारवासिनी ॥ शमनस्वामिनीशान्तिः शान्तसज्जनपूजिता ॥ ९९ ॥ शान्तपूजापराशान्ताशान्तागारप्रभोजिनी ॥ शान्तपूज्याशान्तवन्द्याशान्तग्रहसुधारिणी ॥ ॥ १०० ॥ शान्तरूपाशान्तियुक्ताशान्तचन्द्रप्रभाऽमला ॥ अमलाविमलाम्लानामालतीकुञ्जवासिनी ॥ १०१ ॥ मालतीपुष्पसम्प्रीतामालतीपुष्पपूजिता ॥ महोग्रामहतीमध्यामध्यदेशनिवासिनी ॥ १०२ ॥ मध्यमध्वानिसम्प्रीतामध्यमध्वानिकारिणी ॥ मध्यमामध्यमप्रीतिर्म्मध्यमप्रेमपूरिता ॥ १०३ ॥ मध्याङ्गचित्रवसनामध्यखिन्नामहोद्धता ॥ महेन्द्रकृतसम्पूजामहेन्द्रपरिवन्दिता ॥ १०४ ॥ महेन्द्रजालसँय्युक्तामहेन्द्रजालकारिणी ॥ महेन्द्रमानिताऽमानामानिनीगणमध्यगा ॥ १०५ ॥ मानिनीमानसम्प्रीतामानविध्वंसकारिणी ॥ मानिन्याकर्षिणी

मुक्तिर्म्मुक्तिदात्रीसुमुक्तिदा ॥ १०६ ॥ मुक्तिद्वेषकरीमूल्यकारिणीमूल्यहारिणी ॥ निर्म्मूलामूलसँय्युक्तामूलिनीमूलमन्त्रिणी ॥ १०७॥ मूलमन्त्रकृताहाद्यामूलमन्त्राग्र्यहर्षिणी ॥ मूलमन्त्रप्रतिष्ठात्रीमूलमन्त्रप्रहर्षिणी ॥ १०८ ॥ मूलमन्त्रप्रसन्नास्यामूलमन्त्रप्रपूजिता ॥ मूलमन्त्रप्रणेत्रीचमूलमन्त्रकृतार्च्चना ॥ १०९ ॥ मूलमन्त्रप्रहृष्टात्मामूलविद्यामलापहा ॥ विद्याऽविद्यावटस्थाचवटवृक्षनिवासिनी ॥ ११० ॥ वटवृक्षकृतस्थानावटपूजापरायणा ॥ वटपूजापरिप्रीतावटदर्शनलालसा ॥ १११ ॥ वटपूजाकृताल्हादावटपूजाविवर्द्धिनी ॥ वशिनीविवशाराध्यावशिकरणमन्त्रिणी ॥ ११२ ॥ वशीकरणसम्प्रीतावशीकारकसिद्धिदा ॥ बटुकाबटुकाराध्याबटुकाहारदायिनी ॥ ११३ ॥ बटुकार्च्चापरापूज्याबटुकार्च्चाविवर्द्धिनी ॥ बटुकानन्दकर्त्रीचबटुकप्राणरक्षिणी ॥ ११४ ॥ बटुकेज्याप्रदाऽपारापारिणीपार्व्वतीप्रिया॥ पर्व्वताग्रकृतावासापर्व्वतेन्द्रप्रपूजिता ॥ ११५ ॥ पार्व्वतीपतिपूज्याचपार्व्वतीपतिहर्षदा ॥ पार्व्वतीपतिबुद्धिस्थापार्व्वतीपतिमोहिनी ॥ ११६ ॥ पार्व्वतीयद्विजाराध्यापर्व्वतस्थाप्रतारिणी ॥ पद्मलापद्मिनीपद्मापद्ममालाविभूषिता ॥ ११७ ॥ पद्मजेड्यपदापद्ममालालङ्कृतमस्तका ॥ पद्मार्च्चितपदद्वन्द्वापद्महस्तापयोधिजा ॥ ११८ ॥ पयोधिपारगन्त्रीचपाथोधिपरिकीर्त्तिता ॥ पाथोधिपारगापूतापल्वलाम्बुप्रतर्प्पिता ॥ ११९ ॥ पल्वलान्तःपयोमग्नापवमानगतिर्ग्गतिः ॥ पयःपानापयोदात्रीपानीयपरिकाङ्क्षिणी ॥ १२० ॥ पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा ॥ मुण्डिनीमुण्डहन्त्रीचमुण्डितामुण्डशोभिता ॥ ॥ १२१ ॥ मणिभूषामणिग्रीवामणिमालाविराजिता ॥ महामोहामहामर्षामहामायामहाहवा ॥ १२२ ॥ मानवीमानवीपूज्या

मनुवंशविवार्द्धिनी ॥ माठिनीमठसंहन्त्रीमठसम्पत्तिहारिणी ॥ ॥ १२३ ॥ महाक्रोधवतीमूढामूढशत्रुविनाशिनी ॥ पाठोनभोजिनीपूर्णापूर्णहारविहारिणी ॥ १२४ ॥ प्रलयानलतुल्याभाप्रलयानलरूपिणी ॥ प्रलयार्णवसम्मग्नाप्रलयाब्धिविहारिणी ॥ ॥ १२५ ॥ महाप्रलयसम्भूता महाप्रलयकारिणी ॥ महाप्रलयसम्प्रीतामहाप्रलयसाधिनी ॥ १२६ ॥ महामहाप्रलयेज्यामहाप्रलयमोदिनी ॥ छेदिनीछिन्नमुण्डोग्राछिन्नाछिन्नरुहार्त्थिनी ॥ १२७ ॥ शत्रुसञ्छेदिनीछन्नाक्षोदिनोक्षोदकारिणी ॥ लक्षिणी लक्षसम्पूज्यालक्षितालक्षणान्विता ॥ १२८ ॥ लक्षशस्त्रसमायुक्तालक्षबाणप्रमोचिनी ॥ लक्षपूजापराऽलक्ष्यालक्षकोदण्डखण्डिनी ॥ १२९ ॥ लक्षकोदण्डसँय्युक्तालक्षकोदण्डधारिणी ॥ लक्षलीलालयालभ्यालाक्षागारनिवासिनी ॥ १३० ॥ लक्षलोभपरालोलालक्षभक्तप्रपूजिता ॥ लोकिनीलोकसम्पूज्यालोकरक्षणकारिणी ॥ १३१ ॥ लोकवन्दितपादाब्जालोकमोहनकारिणी ॥ ललितालालितालीनालोकसंहारकारिणी ॥ ॥ १३२ ॥ लोकलीलाकरीलोक्यालोकसम्भवकारिणी ॥ भूतशुद्धिकरीभूतरक्षिणीभूतपोषिणी ॥ १३३ ॥ भूतवेतालसँय्युक्ताभूतसेनासमावृता ॥ भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनीभूतपूजिता ॥ १३४ ॥ डाकिनीशाकिनीडेयाडिण्डिमारावकारिणी ॥ डमरूवाद्यसन्तुष्टाडमरूवाद्यकारिणी ॥ १३५ ॥ हूङ्कारकारिणीहोत्रीहाविनीहवनार्त्थिनी ॥ हासिनीह्रासिनीहास्यहर्षिणी हठवादिनी ॥ १३६ ॥ अट्टाट्टहासिनीटीकाटीकानिर्म्माणकारिणी ॥ टङ्किनीटङ्कितादङ्काटङ्कमात्रसुवर्णदा ॥ १३७ ॥ टङ्कारिणीटकाराढ्याशत्रुत्रोटनकारिणी ॥ त्रुटितात्रुटिरूपाचत्रुटिसन्देहकारिणी ॥ १३८ ॥ तर्षिणीतृट्परिक्रान्ताक्षुत्क्षामाक्षुत्प

मुक्तिर्म्मुक्तिदात्रीसुमुक्तिदा ॥ १०६ ॥ मुक्तिद्वेषकरीमूल्यकारिणीमूल्यहारिणी ॥ निर्म्मूलामूलसँय्युक्तामूलिनीमूलमन्त्रिणी ॥ १०७॥ मूलमन्त्रकृतार्हाद्यामूलमन्त्रार्ग्यहर्षिणी ॥ मूलमन्त्रप्रतिष्ठात्रीमूलमन्त्रप्रहर्षिणी ॥ १०८ ॥ मूलमन्त्रप्रसन्नास्यामूलमन्त्रप्रपूजिता ॥ मूलमन्त्रप्रणेत्रीचमूलमन्त्रकृतार्च्चना ॥ १०९ ॥ मूलमन्त्रप्रहृष्टात्मामूलविद्यामलापहा ॥ विद्याऽविद्यावटस्थाचवटवृक्षनिवासिनी ॥ ११० ॥ वटवृक्षकृतस्थानावटपूजापरायणा ॥ वटपूजापरिप्रीतावटदर्शनलालसा ॥ १११ ॥ वटपूजाकृताल्हादावटपूजाविवर्द्धिनी ॥ वशिनीविवशाराध्यावशीकरणमन्त्रिणी ॥ ११२ ॥ वशीकरणसम्प्रीतावशीकारकसिद्धिदा ॥ बटुकाबटुकाराध्याबटुकाहारदायिनी ॥ ११३ ॥ बटुकार्च्चापरापूज्याबटुकार्च्चाविवर्द्धिनी ॥ बटुकानन्दकर्त्रीचबटुकप्राणरक्षिणी ॥ ११४ ॥ बटुकेज्याप्रदाऽपारापारिणीपार्व्वतीप्रिया॥ पर्व्वताग्रकृतावासापर्व्वतेन्द्रप्रपूजिता ॥ ११५ ॥ पार्व्वतीपतिपूज्याचपार्व्वतीपतिहर्षदा ॥ पार्व्वतीपतिबुद्धिस्थापार्व्वतीपतिमोहिनी ॥ ११६ ॥ पार्व्वतीयद्विजाराध्यापर्व्वतस्थाप्रतारिणी ॥ पद्मलापद्मिनीपद्मापद्ममालाविभूषिता ॥ ११७ ॥ पद्मजेज्यपदापद्ममालालङ्कृतमस्तका ॥ पद्मार्च्चितपदद्वन्द्वापद्महस्तापयोधिजा ॥ ११८ ॥ पयोधिपारगन्त्रीचपाथोधिपरिकीर्त्तिता ॥ पाथोधिपारगापूतापल्वलाम्बुप्रतर्प्पिता ॥ ११९ ॥ पल्वलान्तःपयोमग्नापवमानगतिर्ग्गतिः ॥ पयःपानापयोदात्रीपानीयपरिकाङ्क्षिणी ॥ १२० ॥ पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा ॥ मुण्डिनीमुण्डहन्त्रीचमुण्डितामुण्डशोभिता ॥ ॥ १२१ ॥ मणिभूषामणिग्रीवामणिमालाविराजिता ॥ महामोहामहामर्षामहामायामहाहवा ॥ १२२ ॥ मानवीमानवीपूज्या

मनुवंशविवर्द्धिनी ॥ माठिनीमठसंहन्त्रीमठसम्पत्तिहारिणी ॥ ॥ १२३ ॥ महाक्रोधवतीमूढामूढशत्रुविनाशिनी ॥ पाठीनभोजिनीपूर्णापूर्णहारविहारिणी ॥ १२४ ॥ प्रलयानलतुल्याभाप्रलयानलरूपिणी ॥ प्रलयार्णवसम्मग्नाप्रलयाब्धिविहारिणी ॥ ॥ १२५ ॥ महाप्रलयसम्भूता महाप्रलयकारिणी ॥ महाप्रलयसम्प्रीतामहाप्रलयसाधिनी ॥ १२६ ॥ महामहाप्रलयेज्यामहाप्रलयमोदिनी ॥ छेदिनीछिन्नमुण्डोग्राछिन्नाछिन्नरुहार्त्थिनी ॥ १२७ ॥ शत्रुसञ्छेदिनीछिन्नाक्षोदिनोक्षोदकारिणी ॥ लक्षिणी लक्षसम्पूज्यालक्षितालक्षणान्विता ॥ १२८ ॥ लक्षशस्त्रसमायुक्तालक्षबाणप्रमोचिनी ॥ लक्षपूजापराऽलक्ष्यालक्षकोदण्डखण्डिनी ॥ १२९ ॥ लक्षकोदण्डसँय्युक्तालक्षकोदण्डधारिणी ॥ लक्षलीलालयालभ्यालाक्षागारनिवासिनी ॥ १३० ॥ लक्षलोभपरालोलालक्षभक्तप्रपूजिता ॥ लोकिनीलोकसम्पूज्यालोकरक्षणकारिणी ॥ १३१ ॥ लोकवन्दितपादाब्जालोकमोहनकारिणी ॥ ललितालालितालीनालोकसंहारकारिणी ॥ ॥ १३२ ॥ लोकलीलाकरीलोक्यालोकसम्भवकारिणी ॥ भूतशुद्धिकरीभूतरक्षिणीभूतपोषिणी ॥ १३३ ॥ भूतवेतालसँय्युक्ताभूतसेनासमावृता ॥ भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनीभूतपूजिता ॥ १३४ ॥ डाकिनीशाकिनीडेयाडिण्डिमारावकारिणी ॥ डमरूवाद्यसन्तुष्टाडमरूवाद्यकारिणी ॥ १३५ ॥ हूङ्कारकारिणीहोत्रीहाविनीहवनार्त्थिनी ॥ हासिनीह्रासिनीहास्यहर्षिणी हठवादिनी ॥ १३६ ॥ अट्टाट्टहासिनीटीकाटीकानिर्म्माणकारिणी ॥ टङ्किनीटङ्किताटङ्काटङ्कमात्रसुवर्णदा ॥ १३७॥ टङ्कारिणीटकाराढ्याशत्रुत्रोटनकारिणी ॥ त्रुटितात्रुटिरूपाचत्रुटिसन्देहकारिणी ॥ १३८ ॥ तर्षिणीतृट्परिक्रान्ताक्षुत्क्षामाक्षुत्प

रिपुता ॥ अक्षिणीतक्षिणीभीक्षाप्रार्त्थिनीशत्रुभक्षिणी ॥ १३९ ॥ काङ्क्षिणीकुट्टनीक्रूराकुट्टनीवेश्मवासिनी ॥ कुट्टनीकोटिसम्पूज्याकुट्टनीकुलमार्गिणी १४० ॥ कुट्टनीकुलसंरक्षाकुट्टनीकुलरक्षिणी॥कालपाशावृताकन्याकुमारीपूजनप्रिया॥१४१ ॥कौमुदीकौमुदीहृष्टाकरुणादृष्टिसँय्युता ॥ कौतुकाचारनिपुणाकौतुकागारवासिनी ॥१४२॥ काकपक्षधराकाकरक्षिणीकाकसँव्वृता ॥ काकाङ्करथसंस्थानाकाकाङ्कस्यन्दनस्थिता ॥१४३ ॥ काकिनीकाकदृष्टिश्चकाकभक्षणदायिनी ॥काकमाताकाकयोनिःकाकमण्डलमण्डिता ॥१४४॥ काकदर्शनसंशीलाकाकसङ्कीर्ण्णमन्दिरा॥ काकध्यानस्थदेहाादध्यानगम्याधमावृता ॥ १४५ ॥ धनिनीधनिसंसेव्याधनच्छेदनकारिणी ॥ धुन्धुराधुन्धुराकाराधूम्रलोचनघातिनी ॥ १४६ ॥ धूङ्कारिणीचधूम्मन्त्रपूजिताधर्म्मनाशिनी ॥ धूम्रवर्ण्णिनीधूम्राक्षीधूम्राक्षासुरघातिनी ॥ १४७ ॥ धूम्बीजजपसन्तुष्टाधूम्बीजजपमानसा ॥ धूम्बीजजपपूजार्हा धूम्बीजजपकारिणी ॥ १४८ ॥ धूम्बीजाकर्षिताधृष्याधर्षिणीधृष्टमानसा ॥ धूलीप्रक्षेपिणीधूलीव्याप्तधम्मिल्लधारिणी ॥ १४९ ॥ धूम्बीजजपमालाढ्याधूम्बीजनिन्दकान्तका ॥ धर्म्मविद्वेषिणीधर्म्मरक्षिणीधर्म्मतोषिता ॥ १५० ॥ धारास्तम्भकरीधूर्त्ताधारावारिविलासिनी॥ धांधींधूंधैम्मन्त्रवर्ण्णाधौंधः स्वाहास्वरूपिणी ॥ ॥ १५१ ॥ धरित्रीपूजिताधूर्व्वाधान्यच्छेदनकारिणी ॥ धिक्कारिणीसुधीपूज्याधामोद्यानिवासिनी ॥ १५२ ॥ धामोद्यानपयोदात्रीधामधूलीप्रधूलिता ॥ महाध्वनिमतीधूप्याधूपामोदप्रहर्षिणी ॥ १५३ ॥ धूपादानमतिप्रीताधूपदानविनोदिनी ॥ धीवरीगणसम्पूज्याधीवरीवरदायिनी ॥ १५४ ॥ धीवरीगणमध्यस्थाधीवरीधामवासिनी ॥ धीवरीगणगोप्त्रीचधीवरीगणतोषि

ता ॥ १५५ ॥ धीवरीधनदात्रीचधीवरीप्राणरक्षिणी ॥ धात्री शाधातृसम्पूज्याधात्रीवृक्षसमाश्रया ॥ १५६ ॥ धात्रीपूजनकर्त्रीचधात्रीरोपणकारिणी ॥ धूम्रपानरतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा ॥ १५७ ॥ धूम्रपानकरानन्दाधूम्रवर्षणकारिणी ॥ धन्यशब्द श्रुतिप्रीताधुन्धुकारीजनच्छिदा ॥ १५८ ॥ धुन्धुकारीष्टसन्दात्रीधुन्धुकारिसुमुक्तिदा ॥ धुन्धुकार्य्याराध्यरूपाधुन्धुकारिमनस्स्थता ॥ १५९ ॥ धुन्धुकारिहिताकाङ्क्षाधुन्धुकारिहितैषिणी ॥ धिन्धिमाराविणोध्यात्रीध्यानगम्याधनार्त्थिनी ॥ १६० ॥ धोरिणीधोरणप्रीताधारिणीघोररूपिणी ॥ धरित्रीरक्षिणीदेवीधराप्रलयकारिणी ॥ १६१ ॥ धराधरसुताऽशेषधाराधरसमद्युतिः ॥ धनाध्यक्षाधनप्राप्तिर्द्धनधान्यविवर्द्धिनी ॥ १६२ ॥ धनाकर्षणकर्त्रीचधनाहरणकारिणी ॥ धनच्छेदनकर्त्रीच धनहीनाधनप्रिया ॥ १६३ ॥ धनसँव्वृद्धिसम्पन्नाधनदानपरायणा ॥ १६४ ॥ धनहृष्टाधनपुष्टादानाध्ययनकारिणी ॥ धनरक्षाधनप्राणाधनानन्दकरीसदा ॥ १६५ ॥ शत्रुहन्त्रीशवारूढाशत्रुसंहारकारिणी ॥ शत्रुपक्षक्षातिप्रीताशत्रुपक्षनिषूदिनी ॥ १६६ ॥ शत्रुग्रीवाच्छिदाछायाशत्रुपद्धातिखण्डिनी ॥ शत्रुप्राणहराहार्य्या शत्रून्मूलनकारिणी ॥ १६७ ॥ शत्रुकार्य्यविहन्त्रीचसाङ्गशत्रुविनाशिनी ॥ साङ्गशत्रुकुलच्छेत्रीशत्रुसद्मप्रदाहिनी ॥ ॥ १६८ ॥ साङ्गसायुधसर्व्वारिसर्व्वसम्पत्तिनाशिनी ॥ साङ्गसायुधसर्व्वारिदेहगेहप्रदाहिनी ॥ १६९ ॥ इतीदन्धूमरूपिण्यास्स्तोत्रन्नामसहस्रकम् ॥ यःपठेच्छून्यभवने सध्वान्तेयतमानसः ॥ १७० ॥ मदिरामोदयुक्तोवैदेवीध्यानपरायणः ॥ तस्यशत्रुःक्षयंयातियादिशक्रसमोपिवै ॥ १७१ ॥ भवपाशहरम्पुण्यन्धूमावत्याः प्रियम्महत् ॥ स्तोत्रंसहस्रनामाख्यम्ममवक्त्राद्विनि

र्गतम् ॥ १७२ ॥ पठेद्वाशृणुयाद्वापिशत्रुघातकरोभवेत् ॥ न देयम्परशिष्यायाऽभक्तायप्राणवल्लभे ॥ १७३ ॥ देयंशिष्याय भक्तायदेवीभक्तिपरायच ॥ इदंरहस्यम्परमन्दुर्लभन्दुष्टचेतसाम् ॥ १७४ ॥ इतिधूमावतीसहस्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥ ७ ॥

इति शाक्तप्रमोदे धूमावतीतन्त्रं समाप्तम् ॥



श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

अष्टमम्

बगलामुखीतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

३६

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ।

अथ बगलामुखीतन्त्रम् ॥



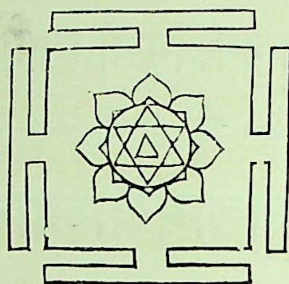
अथबगलामुखीध्यानम् ॥

मध्येसुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदीसिंहासनोपरिगताम्परिपीतवर्णाम् ॥ पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीन्देवीन्नमामिधृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥ १ ॥ जिह्वाग्रमादायकरेणदेवीव्वामेनशत्रून्परिपीडयन्तीम् ॥ गदाभिघातेनचदक्षिणेनपीताम्बराढ्यान्द्विभुजान्नमामि ॥ २ ॥



अथयन्त्रोद्धारः ॥

त्र्यस्त्रंषडस्त्रंवृत्तमष्टदलम्पद्मम्भूपुरान्वितम् ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

प्रणवंस्थिरमायाञ्चततश्चबगलामुखि ॥ तदन्तेसर्व्वदुष्टाना न्ततोवाचम्मुखम्पदम् ॥ स्तम्भयेतिततोजिह्वाङ्कीलयेतिपदद्व यम् ॥ बुद्धिन्नाशयपश्चात्तुस्थिरमायांसमालिखेत् ॥ लिखेच्चपुन रोङ्कारंस्वाहेतिपदमन्ततः ॥ षट्त्रिंशदक्षरीविद्यासर्व्वसम्पत् करीमता ॥

अथमन्त्रः ॥

ॐह्लींबगलामुखिसर्व्वदुष्टानांवाचम्मुखंस्तम्भयजिह्वाङ्कील यकीलयबुद्धिन्नाशयह्लींॐस्वाहा ॥

अथपूजाविधिः ॥

प्रातःकृत्यादिप्राणायामान्तंविधायऋष्यादिन्यासङ्कुर्य्यात् । यथा । शिरसिनारदऋषयेनमः मुखेत्रिष्टुप्छन्दसेनमः हृदिबग लामुख्यैदेवतायैनमः गुह्येह्लींबीजायनमः पादयोःस्वाहाशक्तये नमः ॥ नारदोऽस्यऋषिर्म्मूर्न्द्धित्रिष्टुप्छन्दश्चतन्मुखे ॥ श्रीबगला मुखीन्देवींहृदयेविन्यसेत्ततः ॥ ह्लींबीजङ्गुह्यदेशेतु स्वाहाशक्ति तुपादयोः ॥ ततःकराङ्गन्यासौ ॥ ॐह्लींअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ब

गलामुखीतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा सर्व्वदुष्टानाम्मध्यमाभ्याँव्वषट् वाचम्मुखंस्तम्भयअनामिकाभ्यांहूंम् जिह्वाङ्कीलयकीलयकनिष्ठाभ्याँव्वौषट् बुद्धिन्नाशयह्लींॐस्वाहाकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ॥एवंहृदयादिषु॥ तथाचदिव्यतन्त्रे ॥ युग्मबाणेषुसप्ताद्रिशेषाण्णैश्च मनूद्भवैः ॥ करशाखासुतलयोःकराङ्गन्यासमाचरेत् ॥ ततोमूलान्ते आत्मतत्त्वव्यापिनीबगलामुखीश्रीपादुकाम्पूजयामिइति मूलाधारे मूलान्तेविद्यातत्त्वव्यापिनीबगलामुखीश्रीपादुकाम्पूजयामिशिरसि मूलान्ते शिवतत्त्वव्यापिनीबगलामुखीश्रीपादुकाम्पूजयामिसर्व्वाङ्गे । ततश्च । मूर्द्ध्नि भाले दृशोः श्रोत्रे गण्डयोर्न्नासयोः पुनः ॥ ओष्ठयोर्म्मुखवृत्तेचदक्षिणांसेचकूर्प्परे ॥ मणिबन्धेऽङ्गुलेर्म्मूलेगलेचकुचयोर्हृदि ॥ नाभौकटचाङ्गुह्यदेशेवामांसेकूर्प्परेतथा ॥ मणिबन्धे ऽङ्गुलेर्म्मूलेततश्चविन्यसेत्पुनः ॥ दक्षवामेचोरुजान्वोर्ग्गुल्फयोरङ्गुलिमूलयोः ॥ क्रमेणमन्त्रवर्ण्णांस्तुन्यस्यध्यायेद्यथाविधि ॥ ततोध्यानम् ॥ मध्येसुराब्धिमणिमण्डपरत्नवेदीसिंहासनोपरिगताम्परिपीतवर्ण्णाम् ॥ पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीन्देवींस्मरामिधृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥ जिह्वाग्रमादायकरेणदेवीं वामेनशत्रून्परिपीडयन्तीम् ॥ गदाभिघातेनचदक्षिणेनपीताम्बराढ्यान्द्विभुजान्नमामि ॥ एवंन्ध्यात्वामानसैः सम्पूज्य बहिः पूजामारभेत् ॥ तत्रप्रथमतोऽर्घ्यंस्थापनम् ॥यथा । अष्टाङ्गुलञ्चतुरस्रँव्विधायऐशानादिकोणेषु पूर्व्वादिदिक्षुचकुसुमाक्षतरक्तचन्दनैर्ग्लौंगणपतयेनम इत्यनेनगजवदनंसम्पूज्यतेनमधुनावाअर्घ्यपात्रमापूरयेत् । ततोवारत्रयंविद्ययासम्पूज्यअङ्गानिविन्यसेत् । ततोधेनुयोनिमुद्रेप्रदर्श्यतेनोदकेन आत्मानम्पूजोपकरणञ्चाभ्युक्षयेत् । ततोमूलमुच्चार्य्य ॐआधारशक्तिकमलासनायनमः । एवंशक्तिपद्मासनायनमः

पूर्व्ववद्ध्यात्वापीठे आवाह्यषडङ्गानिन्यसेत् । ततोमुद्राम्प्रदर्श्य पुरतःषडङ्गेनमण्डलँय्यजेत् । ततोमूलेनमन्त्रयित्वाधेनुयोनिमुद्रेप्रदर्श्य आत्मविद्याशिवैस्तत्त्वैर्ब्बिन्दुत्रयम्मुखेक्षिप्त्वातर्ज्जन्यङ्गुष्ठयोगेनसाङ्गावरणाम्बगलामुखींन्तर्प्पयेत् । ततोयथासम्भवोपचारैःसम्पूज्यआवरणपूजामारभेत् । षट्कोणेषुपूर्व्वे ॐ सुभगायैनमः एवमग्निकोणेभगसर्प्पिण्यै० ईशानेभगवाहायै० पश्चिमेभगसिद्धायै० नैर्ऋत्येभगपातिन्यै० वायौभगमालिन्यै० । ततोऽष्टदलपत्रेषुब्राह्म्याद्याःपूज्याः । पत्राग्रेषुॐजयायैनमः एवँव्विजायै० अजितायै० अपराजितायै० स्तम्भिन्यै० जम्भिन्यै० मोहिन्यै० आकर्षिण्यै० । ततोद्वारेषुॐभैरवायनमः तद्वाह्येइन्द्रादीन्वज्रादीन्पूजयेत् ॥ ततोमूलेनधूपादिकन्दत्वा यथाशक्तिजपँव्विधायत्रिशूलमुद्राम्प्रदर्श्यपुष्पाञ्जलित्रयन्दत्वा देव्यैयोनिमुद्राम्प्रदर्शयेत् । ततोभैरवायबलिन्दद्यात् । ततोविसर्ज्जनान्तङ्कर्म्मसमापयेत् । अस्यपुरश्चरणँल्लक्षजपः । तथाच । पीताम्बरधरोभूत्वापूर्व्वाशाभिमुखस्थितः ॥ लक्षमेकञ्जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया ॥ ब्रह्मचर्य्यरतोनित्यम्प्रयतोध्यानतत्परः ॥ प्रियङ्गुकुसुमेनापिपीतपुष्पैश्चहोमयेत् ॥

अथस्तोत्रम् ॥

ॐअस्यश्रीबगलामुखीस्तोत्रस्यनारदऋषिः श्रीबगलामुखी देवता ममसन्निहितानाँव्विरोधिनाँव्वाङ्मुखपदबुद्धीनांस्तम्भनार्त्थेविनियोगः॥ मध्येसुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदींसिंहासनोपरिगताम्परिपीतवर्ण्णाम् ॥ पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं देवीम्भजामिधृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥ १ ॥ जिह्वाग्रमादायकरेणदेवींव्वामेनशत्रून्परिपीडयन्तीम् ॥ गदाभिघातेनचदक्षिणेनपीताम्बराढ्यान्द्विभुजाम्भजामि ॥ २ ॥ चलत्कनककुण्डलोल्लसित

चारुगण्डस्थलाँल्लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम् ॥
गदाहतविपक्षकाङ्कलितलोलजिह्वाञ्चलाम् स्मरामिबगलामुखीं
विमुखवाङ्मनस्स्तम्भिनीम् ॥ ३ ॥ पीयूषोदधिमध्यचारु
विलसद्रक्तोत्पलेमण्डपेसत्सिंहासनमौलिपातितरिपुम्प्रेतासना
ध्यासिनीम् ॥ स्वर्णाभाङ्करपीडितारिरसनाम्भ्राम्यद्गदाँविभ्रमा
मित्थन्ध्यायतियान्तितस्यविलयंसद्योऽथसर्व्वापदः ॥ ४ ॥ दे
वित्वच्चरणाम्बुजार्च्चनकृतेयःपीतपुष्पाञ्जलीन् भक्त्यावामकरे
निधायचमनुम्मन्त्रीमनोज्ञाक्षरम् ॥ पीठध्यानपरोऽथकुम्भकव
शाद्बीजंस्मरेत्पार्थिवस्तस्यामित्रमुखस्यवाचिहृदयेजाडचम्भ
वेत्तत्क्षणात् ॥५॥ वादीमूकतिरङ्कतिक्षितिपतिर्व्वैश्वानरःशीत
तिक्रोधीशाम्यतिदुर्ज्जनःसुजनतिक्षिप्रानुगःखञ्जति ॥ गर्व्वीख
र्व्वतिसर्व्वविच्चजडतित्वद्यन्त्रणायन्त्रितः श्रीनित्येबगलामुखिप्र
तिदिनङ्कल्याणितुभ्यन्नमः ॥ ६ ॥ मन्त्रस्तावदलम्विपक्षद
लनस्तोत्रम्पवित्रञ्चते यन्त्रँव्वादिनियन्त्रणन्त्रिजगताञ्जैत्रञ्चचि
त्रञ्चते ॥ मातः श्रीबगलेतिनामललितंयस्यास्तिजन्तोर्म्मुखेत्व
न्नामग्रहणेनसंसदिमुखस्तम्भोभवेद्वादिनाम् ॥ ७ ॥ दुष्टस्तम्भ
नमुग्रविघ्नशमनन्दारिद्र्यविद्रावणम् भूभृद्भीशमनञ्चलन्मृगदृशा
ञ्चेतस्समाकर्षणम् ॥ सौभाग्यैकनिकेतनंसमदृशः कारुण्यपूर्णा
मृतम्मृत्योर्म्मारणमाविरस्तुपुरतोमातस्त्वदीयँव्वपुः ॥ ८ ॥ मा
तर्भञ्जयमेविपक्षवदनञ्जिह्वाञ्चसङ्कीलय ब्राह्मीम्मुद्रयनाशयाशु
धिषणामुग्राङ्गतिंस्तम्भय ॥ शत्रूंश्चूर्णयदेवितीक्ष्णगदयागौरा
ङ्गिपीताम्बरे विघ्नौघम्बगलेहरप्रणमताङ्कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥ ९ ॥
मातर्भैरविभद्रकालिविजयेवाराहिविश्वाश्रये श्रीविद्येसमयेमहे
शिबगलेकामेशिरामेरमे ॥ मातङ्गित्रिपुरेपरात्परतरे स्वर्ग्गापव
र्ग्गप्रदे दासोऽहंशरणागतः करुणयाविश्वेश्वरित्राहिमाम् ॥१०॥

संरम्भेचौरसङ्घेप्रहरणसमयेबन्धनेवारिमध्ये विद्यावादेविवादे प्रकुपितनृपतौदिव्यकालेनिशायाम् ॥ वश्येवास्तम्भनेवारिपु वधसमयेनिर्ज्जनेवावनेवा गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालँय्यदिपठतिशिव म्प्राप्नुयादाशुधीरः ॥११॥ नित्यंस्तोत्रमिदम्पवित्रमिहयोदेव्याः पठत्यादराद्धृत्वायन्त्रमिदन्तथैवसमरेबाहौकरेवागले ॥ राजानो प्यरयोमदान्धकरिणस्सर्प्पामृगेन्द्रादिकास्तेवैयान्तिविमोहिता रिपुगणालक्ष्मीःस्थिरास्सिद्धयः ॥ १२ ॥ त्वव्विँद्यापरमात्रिलो कजननी विघ्नौघसञ्छेदिनी योषाकर्षणकारिणीत्रिजगतामान न्दसँव्वर्द्धिनी ॥ दुष्टोच्चाटनकारिणी जनमनस्सम्मोहसन्दायि नी जिह्वाङ्कीलनभैरवीविजयतेब्रह्मादिमन्त्रोयथा ॥ १३ ॥ वि द्यालक्ष्मिस्सर्व्वसौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैःसर्व्वसाम्राज्यसिद्धिः॥ मानम्भोगोवश्यमारोग्यसौख्यम्प्राप्तन्तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नरेण ॥ ॥ १४ ॥ यत्कृतञ्जपसन्नाहङ्गदितम्परमेश्वरि ॥ दुष्टानांनिग्रहा र्थायतद्गृहाणनमोऽस्तुते ॥ १५ ॥ ब्रह्मास्त्रमितिविख्यातन्त्रि षुलोकेषुविश्रुतम् ॥ गुरुभक्तायदातव्यन्नदेयँय्यस्यकस्यचित् ॥ ॥ १६॥ पीताम्बरान्द्विभुजाञ्चत्रिनेत्राङ्गात्रकोज्ज्वलाम् ॥ शिला मुद्गरहस्ताञ्चस्मरेत्ताम्बगलामुखीम् ॥ १७ ॥ इतिरुद्रयामले वगलामुखीस्तोत्रंसमाप्तम् ॥ ७ ॥

अथकवचम् ॥

कैलासाचलमध्यगम्पुरवहं शान्तन्त्रिनेत्रंशिवम् वामस्थाक वचम्प्रणम्यगिरिजाभूतिप्रदम्पृच्छति ॥ देवीश्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपाचया तस्याश्चापविमुक्तमन्त्रसहितम्प्री त्याधुनाब्रूहिमाम् ॥ १ ॥ श्रीशङ्करउवाच ॥ देवीश्रीभवव ल्लभेशृणुमहामन्त्रँव्विभूतिप्रदन्देव्यावर्म्मयुतंसमस्तसुखदंसाम्रा

ज्यदम्मुक्तिदम् ॥ तारंरुद्रवधूर्व्विँराञ्चिमहिलाविष्णुप्रियाकाम युक् कान्तेश्रीबगलाननेममरिपुन्नाशाययुग्मन्त्विति ॥ ऐश्वर्य्याणिपदञ्चदेहियुगलंशीघ्रम्मनोवाञ्छितङ्कार्य्यंसाधययुग्मयुक्शिववधूवन्हिप्रियान्तोमनुः ॥ कंसारेस्तनयञ्चबीजमपराशक्तिश्चवाणीतथा कीलंश्रीमतिभैरवर्षिसहितञ्छन्दोविराट्संय्युतम् ॥ स्वेष्टार्थस्यपरस्यवेत्तिनितराङ्कार्य्यस्यसम्प्राप्तये नानासाध्यमहागदस्यनियतन्नाशायवीर्य्याप्तये ॥ ध्यात्वाश्रीबगलाननाम्मनुवरञ्जत्वासहस्राख्यकन्दीर्घैः षट्कयुतैश्चरुद्रमहिलाबीजैर्व्विनश्याङ्गके ॥ ध्यानम् ॥ सौवर्णासनसंस्थितान्त्रिनयनाम्पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमाभाङ्गरुचिंशशाङ्कमुकुटांस्रक्चम्पकस्रग्युताम् ॥ हस्तैर्म्मुद्गरपाशबद्धरसनांसम्बिभ्रतीम्भूषणव्याप्ताङ्गीम्बगलामुखीन्त्रिजगतांसंस्तम्भिनीञ्चिन्तये ॥ ॐअस्यश्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रकवचस्यभैरवऋषिर्व्विराट्छन्दःश्रीबगलामुखीदेवताक्लीँबीजंऐंशक्तिः श्रींकीलकंममपरस्यचमनोभिलषितेष्टकार्य्यसिद्धयेविनियोगः ॥ शिरसिभैरवऋषयेनमः मुखेविराट्छन्दसेनमः हृदिबगलामुखीदेवतायैनमः गुह्ये क्लींबीजाय नमः पादयोःऐंशक्तयेनमःसर्व्वाङ्गेश्रींकीलकायनमः ॐह्रांअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ॐह्रींतर्ज्जनीभ्यान्नमः ॐहूंमध्यमाभ्यान्नमः ॐह्रैं अनामिकाभ्यान्नमः ॐह्रौंकनिष्ठिकाभ्यान्नमः ॐह्रःकरतलककरपृष्ठाभ्यान्नमः ॐह्रांहृदयायनमः ॐह्रींशिरसेस्वाहा ॐहूं शिखायैवषट् ॐह्रैंकवचायहूम् ॐह्रौंनेत्रत्रयायवौषट् ॐह्रःअस्त्रायफट्॥मन्त्रोद्धारः । ॐह्रांऐंश्रींक्लींश्रीबगलाननेममरिपुन्नाशय २ मामैश्वर्य्याणिदेहि २ शीघ्रम्मनोवाञ्छितकार्य्यंसाधय २ ह्रींस्वाहा ॥ शिरोमेपातुॐह्रींऐंश्रींक्लींपातुललाटकम् ॥ सम्बोधनपदम्पातुनेत्रेश्रीबगलानने ॥ श्रुतौममरिपुम्पातुनासि

कान्नाशयद्वयम् ॥ पातुगण्डौसदामामैश्वर्य्याण्यन्तन्तुमस्तकम् ॥ देहिद्वन्द्वंसदाजिह्वाम्पातुशीघ्रँवचोमम ॥ कण्ठदेशंसनः पातुवाञ्छितम्बाहुमूलकम् ॥ कार्य्यंसाधयद्वन्द्वन्तुकरौपातुसदा मम ॥ मायायुक्तातथास्वाहाहृदयम्पातुसर्व्वदा ॥ अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढ्याबगलामुखी ॥ रक्षाङ्करोतुसर्व्वत्रगृहेरण्येसदामम ॥ ब्रह्मास्त्राख्योमनुः पातुसर्व्वाङ्गंसर्व्वसन्धिषु ॥ मन्त्रराजः सदारक्षाङ्करोतुममसर्व्वदा ॥ ॐह्लींपातुनाभिदेशङ्कटिम्मेबगलावतु ॥ मुखीवर्ण्णद्वयम्पातुलिङ्गम्मेमुष्कयुग्मकम् ॥ जानुनीसर्व्वदुष्टानाम्पातुमेवर्ण्णपञ्चकम् ॥ वाचम्मुखन्तथापादंषड्वर्ण्णापरमेश्वरी ॥ जङ्घायुग्मेसदापातुबगलारिपुमोहिनी ॥ स्तम्भयेतिपदम्पृष्ठम्पातुवर्ण्णत्रयम्मम ॥ जिह्वाँवर्ण्णद्वयम्पातुगुल्फौमेकीलयेतिच ॥ पादोर्द्ध्वंसर्व्वदापातुबुद्धिंपादतलेमम ॥ विनाशयपदम्पातुपादाङ्गुल्योर्न्नखानिमे ॥ ह्रींबीजंसर्व्वदापातुबुद्धीन्द्रियवचांसिमे ॥ सर्व्वाङ्गम्प्रणवः पातुस्वाहारोमाणिमेवतु ॥ ब्राह्मीपूर्व्वदलेपातुचाग्नेय्याँविष्णुवल्लभा ॥ माहेशीदक्षिणेपातुचामुण्डाराक्षसेऽवतु ॥ कौमारीपश्चिमेपातुवायव्येचापराजिता ॥ वाराहीचोत्तरेपातुनारसिंहीशिवेऽवतु॥ऊर्द्ध्वम्पातुमहालक्ष्मीःपातालेशारदाऽवतु ॥ इत्यष्टौशक्तयःपान्तुसायुधाश्चसवाहनाः ॥ राजद्वारेमहादुर्गेपातुमाङ्गणनायकः ॥ श्मशानेजलमध्येचभैरवश्चसदावतु ॥ द्विभुजारक्तवसनाःसर्व्वाभरणभूषिताः ॥ योगिन्यःसर्व्वदापान्तुमहारण्येसदामम ॥ इतितेकथितन्देवि कवचम्परमाद्भुतम् ॥ श्रीविश्वविजयन्नामकीर्त्तिश्रीविजयप्रदम् ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रन्धीरंशूरंशतायुषम् ॥ निर्द्धनोधनमाप्नोतिकवचस्यास्यपाठतः ॥ जपित्वामन्त्रराजन्तुध्यात्वाश्रीबगलामुखीम् ॥ पठेदिदंहिकवचन्निशायान्नियमात्तुयः ॥ यद्यत्कामयतेकामंसा

ध्यासाध्येमहीतले ॥ तत्तत्काममवाप्नोतिसप्तरात्रेणशङ्करि ॥ गुरुन्ध्यात्वासुराम्पीत्वारात्रौशक्तिसमन्वितः॥कवचँय्य ऽ पठेद्देवितस्याऽसाध्यन्नकिञ्चन ॥ यन्ध्यात्वाप्रजपेन्मन्त्रंसहस्रङ्कवचम्पठेत् ॥ त्रिरात्रेणवशँय्यातिमृत्युन्तन्नात्रसंशयः ॥ लिखित्वाप्रतिमांशत्रोस्सतालेनहरिद्रया ॥ लिखित्वाहृदितन्नामतन्ध्यात्वाप्रजपेन्मनुम् ॥ एकविंशादिनँय्यावत्प्रत्यहञ्चसहस्रकम् ॥ जप्त्वापठेत्तुकवचञ्चतुर्व्विंशतिवारकम् ॥ संस्तम्भञ्जायतेशत्रोर्न्नात्रकार्य्याविचारणा ॥ विवादेविजयन्तस्यसङ्ग्रामेजयमाप्नुयात् ॥ श्मशानेचभयन्नास्तिकवचस्यप्रभावतः ॥ नवनीतञ्चाभिमन्त्र्यस्त्रीणान्दद्यान्महेश्वरि ॥ वन्ध्यायाञ्जायतेपुत्रोविद्याबलसमन्वितः ॥ श्मशानाङ्गारमादाय भौमेरात्रौशनावथ ॥ पादोदकेनस्पृष्ट्वाचलिखेल्लौहशलाकया ॥ भूमौशत्रोःस्वरूपञ्चहृदिनामसमालिखेत् ॥ हस्तन्तद्धृदयेदत्वाकवचन्तिथिवारकम् ॥ ध्यात्वाजपेन्मन्त्रराजन्नवरात्रम्प्रयत्नतः ॥ म्रियतेज्वरदाहेनदशमेऽह्निनसंशयः ॥ भूर्ज्जपत्रेष्विदंस्तोत्रमष्टगन्धेनसँल्लिखेत् ॥ धारयेद्दक्षिणेबाहौनारीवामभुजेतथा ॥ सङ्ग्रामेजयमाप्नोतिनारीपुत्रवतीभवेत् ॥ ब्रह्मास्त्रादीनिशस्त्राणिनैवकृन्तन्तितञ्जनम् ॥ सम्पूज्यकवचन्नित्यम्पूजायाःफलमालभेत् ॥ बृहस्पतिसमोवापिविभवेधनदोपमः ॥ कामतुल्यश्चनारीणांशत्रूणाञ्चयमोपमः ॥ कवितालहरीतस्यभवेद्गङ्गाप्रवाहवत् ॥ गद्यपद्यमयीवाणीभवेद्देवीप्रसादतः ॥ एकादशशतँय्यावत्पुरश्चरणमुच्यते ॥ पुरश्चर्य्याविहीनन्तुनचेदम्फलदायकम् ॥ नदेयम्परशिष्येभ्योदुष्टेभ्यश्चविशेषतः ॥ देयंशिष्यायभक्तायपञ्चत्वञ्चान्यथाप्नुयात् ॥ इदङ्कवचमज्ञात्वाभजेद्योबगलामुखीम् ॥ शतकोटिजपित्वातुतस्यासिद्धिर्न्नजायते॥दाराढ्योमनुजोस्यलक्षजपतः प्राप्नोतिसिद्धिम्पराँ

विद्यांश्रीविजयन्तथासुनियतन्धारश्ववीरँव्ववरम् ॥ ब्रह्मास्त्राख्य मनुँव्विलिख्यनितराम्भूर्ज्जेष्टगन्धेनवै धृत्वाराजपुरँव्व्रजन्तिखलु येदासोऽस्तितेषान्नृपः ॥ इतिविश्वसारोद्धारतन्त्रेपार्व्वतीश्वरसँ व्वादेबगलामुखीकवचंसम्पूर्ण्णम् ॥ ॥ ७ ॥

अथहृदयम् ॥

ॐअस्यश्रीवगलामुखीहृदयमालमन्त्रस्यनारदऋषिरनुष्टुप्छ न्दःश्रीबगलामुखीदेवता ह्लीँबोजम् क्लीँशक्तिःऐँकीलकम् श्रीव गलामुखीप्रसादसिद्ध्यर्त्थेजपेविनियोगः ॥ अथन्यासः ॥ ॐनार दऋषयेनमःशिरसिॐअनुष्टुप्छदसेनमोमुखे ॐश्रीवगलामुख्यै देवतायैनमोहृदये ॐह्लीँबीजायनमोगुह्येॐक्लीँशक्तयेनमःपाद योःॐऐँकीलकायनमस्सर्वाङ्गे॥अथकराङ्गन्यासौ ॥ ॐह्लीँअङ्गुष्ठा भ्यान्ननः ॐक्लीँतर्ज्जनीभ्यान्नमः ॐऐँमध्यमाभ्यानमः ॐह्लीँअ नामिकाभ्यान्नमः ॐक्लीँकनिष्ठिकाभ्यान्नमः ॐऐँकरतलकरपृ ष्ठाभ्यान्नमः ॥ ॐह्लीँहृदयायनमः ॐक्लीँशिरसेस्वाहा ॐऐँशि खायैवषट्ॐह्लीँकवचायहूम् ॐक्लीँनेत्रत्रयायवौषट् ॐऐँअस्त्राय फट् ॐह्लीँक्लीँऐँ इतिदिग्बन्धः ॥ पीताम्बराम्पीतमाल्याम् पी ताभरणभूषिताम् ॥ पीतकञ्जपदद्वन्द्वाम्बगलाञ्चिन्तयेऽनिशम् इतिध्यात्वासम्पूज्य ॥ पीतशङ्खगदाहस्ते पीतचन्दनचर्च्चिते ॥ बगलेमेवरन्देहि शत्रुसङ्घविदारिणि ॥ इतिसम्प्रार्त्थ्य ॥ ॐ ह्लीँक्लीँ ऐँवँगलामुख्यैगदाधारिण्यैप्रेतासनाध्यासिन्यैस्वाहा॥ इति मन्त्रञ्जपित्वापुनःपूर्ववद्धृदयादिषडङ्गन्यासङ्कृत्वास्तोत्रम्पठेत् ॥ तद्यथा ॥ वन्देऽहम्बगलान्देवीम्पीतभूषणभूषिताम् ॥ तेजो रूपमयीन्देवीम्पीततेजस्स्वरूपिणीम् ॥ १ ॥ गदाभ्रमणभिन्ना भ्राम्भृकुटीभीषणाननाम्॥ भीषयन्तीम्भीमशत्रून्भजेभक्तस्यभ

व्यदाम् ॥ २ ॥ पूर्णचन्द्रसमानास्याम्पीतगन्धानुलेपनाम् ॥ पीताम्बरपरीधानाम्पवित्रामाश्रयाम्यहम् ॥३॥ पालयन्तोमनुप लम्प्रसमीक्ष्यावनीतले ॥ पीताचाररतान्भक्तांस्ताम्भवानीम्भ जाम्यहम् ॥ ४ ॥ पीतपद्मपदद्वन्द्वाञ्चम्पकारण्यरोपिणीम् ॥ पी तावतंसाम्परमाँव्वन्देपद्मजवन्दिताम् ॥ ५ ॥ लसच्चारुसिञ्जत्सु मञ्जीरपादाञ्चलत्स्वर्णकर्णावतंसाञ्चितास्याम् ॥ वलत्पीत चन्द्राननाञ्चन्द्रवन्द्याम् भजेपद्मजादीड्यसत्पादपद्माम् ॥ ६ ॥ सुपीताभयामालयापूतमन्त्रम्परन्तेजपन्तोजयँसँल्लभन्ते ॥ रणे रागरोषाप्लुतानांरिपूणाँव्विवादेबलाद्वैरकृद्घातमातः ॥ ७ ॥ भरत्पीतभास्वत्प्रभाहस्कराभाङ्गदागञ्जितामित्रगर्व्वांगरिष्ठाम् ॥ गरीयो गुणागारगात्राङ्कुणाढ्याङ्गणेशादिगम्यां श्रये निर्ग्गुणा ढ्याम् ॥ ८ ॥ जनायेजपन्त्युग्रबीजञ्जगत्सु परम्प्रत्यहन्तेस्मर न्तःस्वरूपम् ॥ भवेद्वादिनाँव्वाङ्मुखस्तम्भआद्येजयोजायतेज ल्पतामाशुतेषाम् ॥ ९ ॥ तवध्याननिष्ठाप्रतिष्ठात्मप्रज्ञाव ताम्पादपद्मार्च्चनेप्रेमयुक्ताः ॥ प्रसन्नानृपाःप्राकृताःपण्डितावा पुराणादिगादासतुल्याभवन्ति ॥ १० ॥ नमामस्तेमातः कनककमनीयांघ्रिजलजँव्वलद्विद्युद्वर्णङ्घनतिमिरविध्वंसकरण म् ॥ भवाब्धौमग्नात्मोत्तरणकरणंसर्व्वशरणम्प्रपन्नानाम्मातर्ज्जग तिबगलेदुःखदमनम् ॥ ११ ॥ ज्वलज्ज्योत्स्नारत्नाकरमणि विषक्ताङ्कचभवनम् स्मरामस्तेधामस्मरहरहरीन्द्रेन्दुप्रमुखैः ॥ अहोरात्रम्प्रातःप्रणयनवनीयंसुविशदम् परम्पीताकारम्परिचि तमणिद्वीपवसनम् ॥ १२ ॥ वदामस्तेमातश्श्रुतिसुखकर न्नामललितँल्लसन्मात्रावर्णञ्जगतिबगलेतिप्रचरितम् ॥ चल न्तस्तिष्ठन्तोवयमुपविशन्तोपिशयने नभेमोयच्छ्रेयोदिविदुरव लभ्यन्दिविषदाम् ॥ १३ ॥ पदार्च्चायाम्प्रीतिःप्रतिदिनमपूर्व्वा

प्रभवतु यथातेप्रासन्न्यम्प्रातिपलमपेक्ष्यम्प्रणमताम् ॥ अनल्प न्तन्मातर्भवतिभृतभक्त्याभवतुनो दिशातस्सद्भक्तिम्भुविभगव ताम्भूरिभवदाम् ॥ १४ ॥ मम सकलरिपूणाँव्वाङ्मुखेस्तम्भया शु भगवतिरिपुजिह्वाङ्कीलयप्रस्थतुल्याम् ॥ व्यवसितखलबुद्धिं नाशयाशुप्रगल्भाम् ममकुरुबहुकार्य्यंसत्कृपेऽम्बप्रसीद ॥ १५ ॥ व्रजतुममरिपूणांसद्मनिप्रेतसँस्था करधृतगदयातान्घातयित्वा शुरोषात् ॥ सधनवसनधान्यंसद्मतेषाम्प्रदह्य पुनरपिबगला स्वस्थानमायातुशीघ्रम् ॥ १६ ॥ करधृतरिपुजिह्वापीडनव्य ग्रहस्ताम्पुनरपिगदयातांस्ताडयन्तींसुतन्त्राम् ॥ प्रणतसुरग णानाम्पालिकाम्पीतवस्त्राम् बहुबलबगलान्ताम्पीतवस्त्रान्नमामः ॥ १७ ॥ हृदयवचनकायैःकुर्वताम्भक्तिपुञ्जम्प्रकटतिकरुणा र्द्राम्प्रीणतीजल्पतीति ॥ धनमथबहुधान्यम्पुत्रपौत्रादिवृद्धिः सकलमपिकिमेभ्योदेयमेवन्त्ववश्यम् ॥ १८ ॥ तवचरणसरोजं सर्व्वदासेव्यमानन्द्रुहिणहरिहराद्यैर्देववृन्दैश्शरण्यम् ॥ मृदुम पिशरणन्तेशर्म्मदंसूरिसेव्यँ व्वयमिहकरवामोमातरेतद्विधेयम् ॥ १९ ॥ बगलाहृदयस्तोत्रमिदम्भक्तिसमन्वितः ॥ पठेद्यो बगलातस्यप्रसन्नापाठतोभवेत् ॥ २० ॥ पीतध्यानपरोभक्तोय श्शृणोत्यविकल्पतः ॥ निष्कल्मषो भवेन्मर्त्त्योमृतोमोक्षमवाप्नु यात्॥२१॥आश्विनस्यसितेपक्षेमहाष्टम्यान्दिवानिशम् ॥यस्त्वि दम्पठतेप्रेम्णाबगलाप्रीतिमेतिसः ॥ २२ ॥ देव्यालयेपठन्मर्त्त्यो बगलान्ध्यायतीश्वरीम् ॥ पीतवस्त्रावृतोयस्तुतस्यनश्यन्तिशत्र वः ॥ २३ ॥ पीताचाररतोनित्यम्पीतभूषाँव्विचिन्तयन् ॥ बग लाँय्यःपठेन्नित्यंहृदयस्तोत्रमुत्तमम् ॥ २४ ॥ नकिञ्चिद्दुर्ल्लभ न्तस्यदृश्यतेजगतीतले ॥ शत्रवोग्लानिमायान्तितस्यदर्शन

मात्रतः ॥ २९ ॥ इति सिद्धेश्वरतन्त्रे उत्तरखण्डे बगलापटले श्रीबगलाहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ॥

अथ शतनाम ॥

नारद उवाच ॥ भगवन्देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मक ॥ शतमष्टोत्तरन्नाम्नाम्बगलाया वदाधुना ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ पीताम्बर्य्या महादेव्याः स्तोत्रम्पापप्रणाशनम् ॥ २ ॥ यस्य प्रपठनात्सद्यो वादी मूको भवेत्क्षणात् ॥ रिपूणां स्तम्भनँय्याति सत्यं सत्यँव्वदाम्यहम् ॥ ३ ॥ ॐ अस्य श्रीपीताम्बर्य्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीपीताम्बरी देवता श्रीपीताम्बरीप्रीतये जपे विनियोगः ॥ ॐम् बगला विष्णुवनिता विष्णुशङ्करभामिनी ॥ बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि ॥ १ ॥ महामत्स्या महाकूर्म्मा महावाराहरूपिणी ॥ नरसिंहप्रिया रम्या वामना बटुरूपिणी ॥ ॥ २ ॥ जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता ॥ कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कलविकारिणी ॥ ३ ॥ बुद्धिरूपा बुद्धभार्य्या बौद्धपाखण्डखण्डिनी ॥ कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गतिनाशिनी ॥ ४ ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्प्पमोहिनी ॥ केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी ॥ ५ ॥ केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता ॥ रुद्ररूपा रुद्रमूर्त्ती रुद्राणी रुद्रदेवता ॥ ॥ ६ ॥ नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता ॥ नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता ॥ ७ ॥ नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता ॥ नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ॥ ८ ॥ नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता ॥ नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्य्यकारिणी ॥ ९ ॥ रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदा

यिनी ॥ सुन्दरीसौभगासौम्यास्वर्णभास्वर्गगतिप्रदा ॥१०॥ रिपुत्रासकरीरेखाशत्रुसंहारकारिणी ॥ भामिनीचतथामायास्तम्भिनीमोहिनीशुभा ॥ ११ ॥ रागद्वेषकरीरात्रीरौरवध्वंसकारिणी ॥ यक्षिणीसिद्धनिवहासिद्धेशासिद्धिरूपिणी ॥ १२ ॥ लङ्कापतिध्वंसकरीलङ्केशरिपुवन्दिता ॥लङ्कानाथकुलहरा महारावणहारिणी ॥ १३ ॥ देवदानवसिद्धौघपूजितापरमेश्वरी ॥ पराणुरूपापरमापरतन्त्रविनाशिनी ॥ १४ ॥ वरदावरदाराध्यावरदानपरायणा ॥ वरदेशप्रियावीरावीरभूषणभूषिता ॥ १५ ॥ वसुदाबहुदावाणीब्रह्मरूपावरानना ॥ बलदापीतवसनापीतभूषणभूषिता ॥ १६ ॥ पीतपुष्पप्रियापीतहारा पीतस्वरूपिणी ॥ इतितेकथितँविप्रनाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥ १७ ॥ यऽपठेत्पाठयेद्वापिशृणुयाद्वासमाहितः ॥ तस्यशत्रुऽक्षयंसद्यो यातिनैवात्रसंशयः ॥ १८॥ प्रभातकालेप्रयतोमनुष्यऽपठेत्सुभक्त्यापरिचिन्त्यपीताम् ॥ द्रुतम्भवेत्तस्यसमस्तवृद्धिर्व्विनाशमायातिचतस्यशत्रुः ॥ १९ ॥ इतिविष्णुयामलेनारदविष्णुसँव्वादेश्रीवगलाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसम्पूर्ण्णम् ॥

अथसहस्रनाम ॥

सुरालयप्रधानेतुदेवदेवम्महेश्वरम् ॥ शैलाधिराजतनयासङ्ग्रहेतमुवाचह ॥ १ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ परमेष्ठिन्परन्धामप्रधानपरमेश्वर ॥ नाम्नांसहस्रम्बगलामुख्याद्याब्रूहिवल्लभ॥२॥ ईश्वरउवाच॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिनामधेयसहस्रकम् ॥ परब्रह्मास्त्रविद्यायाश्चतुर्व्वर्गफलप्रदम् ॥ ३ ॥ गुह्याद्गुह्यतरन्देविसर्व्वसिद्धैकवन्दितम्॥ अतिगुप्ततराँविद्यासर्व्वतन्त्रेषुगोपिता ॥ ४ ॥ विशेषतऽकलियुगे महासिद्ध्यौघदायिनी ॥ गोपनीयङ्गोपनीयङ्गोपनीयम्प्रयत्नतः ॥

॥ ५ ॥ अप्रकाश्यमिदंसत्यंस्वयोनिरिवसुव्रते ॥ रोधिनीविघ्नसङ्घानांमोहिनीपरयोषिताम् ॥ ६ ॥ स्तम्भिनीराजसैन्यानाँव्वादिनीपरवादिनाम् ॥ पुराचैकार्णवेघोरे कालेपरमभैरवः ॥ ७ ॥ सुन्दरीसहितोदेवऽकेशवऽक्लेशनाशनः ॥ उरगासनमासीनोयोगनिद्रामुपागमत् ॥ ८ ॥ निद्राकालेचतेकालेमयाप्रोक्तऽसनातनः ॥ महास्तम्भकरन्देविस्तोत्रँव्वाशतनामकम् ॥ ९ ॥ सहस्रनामपरमँव्वददेवस्यकस्यचित् ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणुशङ्करदेवेशपरमातिरहस्यकम् ॥ १० ॥ अजोहंयत्प्रसादेनविष्णुःसर्व्वेश्वरेश्वरः ॥ गोपनीयम्प्रयत्नेनप्रकाशात्सिद्धिहानिकृत् ॥ ११ ॥ ओमस्यश्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्यभगवान्सदाशिवऋषिरनुष्टुप्छन्दश्श्रीजगद्वश्यकरीपीताम्बरीदेवतासर्व्वाभीष्टसिद्ध्यर्थेजपेविनियोगः ॥ अथध्यानम् ॥ पीताम्बरपरीधानांपीनोन्नतपयोधराम् ॥ जटामुकुटशोभाढ्याम्पीतभूमिसुखासनाम् ॥ ॥ १२ ॥ शत्रोर्जिह्वांमुद्गरञ्चबिभ्रतीम्परमाङ्कलाम् ॥ सर्व्वागमपुराणेषुविख्याताम्भुवनत्रये ॥ १३ ॥ सृष्टिस्थितिविनाशानामादिभूताम्महेश्वरीम् ॥ गोप्यासर्व्वप्रयत्नेनशृणुताङ्कथयामिते ॥ १४ ॥ जगद्विध्वंसिनीन्देवीमजरामरकारिणीम् ॥ तान्नमामिमहामायाम्महदैश्वर्य्यदायिनीम् ॥ १५ ॥ प्रणवम्पूर्व्वमुद्धृत्यस्थिरमायान्ततोवदेत् ॥ बगलामुखीसर्व्वेतिदुष्टानाँव्वाचमेवच ॥ १६ ॥ मुखम्पदंस्तम्भयेतिजिह्वाङ्कीलयबुद्धिमत् ॥ विनाशयेतितारञ्चस्थिरमायान्ततोवदेत् ॥ १७ ॥ वन्हिप्रियान्ततोमन्त्रश्चतुर्व्वर्ग्गफलप्रदः ॥ ब्रह्मास्त्रम्ब्रह्मविद्याचब्रह्ममातासनातनो ॥ १८ ॥ ब्रह्मेशीब्रह्मकैवल्यबगलाब्रह्मचारिणी ॥ नित्यानन्दानित्यसिद्धानित्यरूपानिरामया ॥ १९ ॥ सन्धारिणीमहामयाकटाक्षक्षेमकारिणी ॥ कमलाविमलानीलारत्नकान्तिगु

णाश्रिता ॥ २० ॥ कामप्रियाकामरताकामकामस्वरूपिणी ॥म ङ्गलाविजयाजायासर्व्वमङ्गलकारिणी ॥ २१ ॥ कामिनीकामिनीकाम्याकामुकाकामचारिणी ॥ कामप्रियाकामरताकामाकामस्वरूपिणी ॥ २२ ॥ कामाख्याकामबीजस्थाकामपीठनिवासिनी॥कामदाकामहाकालीकपालीचकरालिका॥२३॥कंसारिऽकमलाकामाकैलासेश्वरवल्लभा॥कात्यायनीकेशवाचकरुणाकामकेलिभुक् ॥२४॥ क्रियाकीर्त्तिऽकृत्तिकाचकाशिकामथुराशिवा ॥ कालाक्षीकालिकाकालीधवलाननसुन्दरी ॥ २५ ॥ खेचरीचखमूर्त्तिश्चक्षुद्राक्षुद्रक्षुधावरा ॥ खड्गहस्ताखड्गरताखड्गिनीखर्प्परप्रिया ॥ २६ ॥ गङ्गागौरीगामिनीचगीतागोत्रविवर्द्धिनी ॥ गोधरागोकरागोधागन्धर्व्वपुरवासिनी ॥ २७ ॥ गन्धर्व्वागन्धर्व्वकलागोपनीगरुडासना ॥ गोविन्दभावागोविन्दागान्धारीगन्धमादिनी ॥ २८ ॥ गौराङ्गीगोपिकामूर्त्तिगर्गोपीगोष्ठनिवासिनी ॥ गन्धागजेन्द्रगामान्यागदाधरप्रियाग्रहा ॥ २९ ॥ घोरघोराघोररूपाघनश्रोणिघनप्रभा ॥ दैत्येन्द्रप्रबलाघण्टावादिनीघोरनिस्स्वना ॥ ३०॥ डाकिन्युमाउपेन्द्राचउर्व्वशीउरगासना ॥ उत्तमाउन्नता उन्नाउत्तमस्थानवासिनी ॥ ३१ ॥ चामुण्डामुण्डिकाचण्डीचण्डदर्प्पहरेतिच ॥ उग्रचण्डाचण्डचण्डाचण्डदैत्यविनाशिनी ॥ ३२॥ चण्डरूपाप्रचण्डाचचण्डाचण्डशरीरिणी ॥ चतुर्भुजाप्रचण्डाचचराचरनिवासिनी ॥ ३३ ॥ क्षत्रप्रायशिरोवाहाछलाछलतराछली ॥ क्षत्ररूपाक्षत्रधराक्षात्रियक्षयकारिणी ॥ ३४ ॥ जयाचजयदुर्ग्गाचजयन्तीजयदापरा ॥ जायिनीजयिनीज्योत्स्नाजटाधरप्रियाजिता ॥ ३५ ॥ जितेन्द्रियाजितक्रोधाजयमानाजनेश्वरी॥ जितमृत्युर्जरातीताजाह्नवीजनकात्मजा ॥ ३६ ॥ झङ्काराझञ्झरोझण्टाझङ्कारीझकशोभिनी ॥ झखाझमेशाझङ्का

रीयोनिकल्याणदायिनी॥ झर्झ्झराझमुरीझाराझराझरतरापरा॥ झर्झाझमेताझङ्कारीझणाकल्याणदायिनी ॥ ३८ ॥ ईमनामानसीचिन्त्याईमुनाशङ्करप्रिया ॥ टङ्कारीटिटिकाटीकाटङ्किनी चटवर्ग्गगा ॥ ३९ ॥ टापाटोपाटटपतिष्टमनीटमनप्रिया ॥ ठकारधारिणीठीकाठङ्करीठिकरप्रिया ॥ ४० ॥ ठेकठासाठकरतीठामिनीठमनप्रिया ॥ डारहाडाकिनीडाराडामराडामरप्रिया ॥ ४१ ॥ डखिनीडडयुक्ताचडमरूकरवल्लभा ॥ ढक्काढक्कीढक्कनादाढोलशब्दप्रबोधिनी ॥ ४२ ॥ ढामिनीढामनप्रीताढगतन्त्रप्रकाशिनी ॥ अनेकरूपिणीअम्बाअणिमासिद्धिदायिनी ॥ ४३ ॥ अमन्त्रिणीअणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता ॥ तारातन्त्रावतीतन्त्रातत्वरूपातपस्विनी ॥ ४४ ॥ तरङ्गिणी तत्वपरातन्त्रिकातन्त्रविग्रहा ॥ तपोरूपातत्वदात्रीतपप्रीतिप्रधर्षिषणी ॥ ४५ ॥ तन्त्रायन्त्रार्च्चनपरातलातलनिवासिनी ॥ तल्पदात्वल्पदाकाम्या स्थिरास्थिरतरास्थितिः ॥ ॥ ४६ ॥ स्थाणुप्रियास्थपरास्थिलतास्थानप्रदायिनी ॥ दिगम्बरादयारूपादावाग्निदमनीदमा ॥ ४७ ॥ दुर्ग्गादुर्ग्गपरा देवीदुष्टदैत्यविनाशिनी ॥ दमनप्रमदादैत्यदयादानपरायणा ॥ ॥ ४८ ॥ दुर्ग्गार्त्तिनाशिनीदान्तादम्भिनीदम्भवर्ज्जिता ॥ दिगम्बरप्रियादम्भादैत्यदम्भाविदारिणी ॥ ४९ ॥ दमनादशनसौन्दर्य्या दानवेन्द्रविनाशिनी ॥ दयाधराचदमनीदर्भपत्रविलासिनी ॥ ५० ॥ धरिणीधारिणीधात्रीधराधरधरप्रिया ॥ धराधरसुतादेवीसुधर्म्माधर्म्मचारिणी ॥ ५१ ॥ धर्म्मज्ञाधवलाधूलाधनदाधनवर्द्धिनी ॥ धीराधीराधोरतराधीरसिद्धिप्रदायिनी ॥ ५२ ॥ धन्वन्तरिधराधीराध्येयाध्यानस्वरूपिणी ॥ नारायणीनारसिंहीनित्यानन्दनरोत्तमा ॥ ५३ ॥ नक्तानक्तवतीनि

त्यानीलजीमूतसन्निभा ॥ नीलाङ्गीनीलवस्त्राचनीलपर्व्वतवासिनी ॥ ५४ ॥ सुनीलपुष्पखचितानीलजम्बुसमप्रभा ॥ नित्याख्याषोडशीविद्यानित्यानित्यसुखावहा ॥ ५५ ॥ नर्म्मदानन्दनानन्दानन्दानन्दविवर्द्धिनी ॥ यशोदानन्दतनयानन्दनोद्यानवासिनी ॥ ५६ ॥ नागान्तकानागवृद्धानागपत्नीचनागिनी ॥ नमिताशेषजनतानमस्कारवतीनमः ॥ ५७ ॥ पीताम्बरापार्व्वतीचपीताम्बरविभूषिता ॥ पीतमाल्याम्बरधरापीताभापिङ्गमूर्द्धजा ॥ ५८ ॥ पीतपुष्पार्चनरतापीतपुष्पसमर्च्चिता ॥ परप्रभापितृपतिःपरसैन्यविनाशिनी ॥ ५९ ॥ परमापरतन्त्राचपरमन्त्रापरात्परा ॥ पराविद्यापरासिद्धिःपरस्थानप्रदायिनी ॥ ॥ ६० ॥ पुष्पापुष्पवतीनित्यापुष्पमालाविभूषिता ॥ पुरातनापूर्व्वपरापरसिद्धिप्रदायिनी ॥ ६१ ॥ पीतानितम्बिनीपीतापीनोन्नतपयस्तनी ॥ प्रेमाप्रमध्यमाशेषापद्मपत्रविलासिनी ॥ ६२ ॥ पद्मावतीपद्मनेत्रा पद्मापद्ममुखीपरा ॥ पद्मासनापद्मप्रियापद्मरागस्वरूपिणी ॥ ६३ ॥ पावनीपालिकापात्रीपरदावरदाशिवा ॥ प्रेतसंस्थापरानन्दापरब्रह्मस्वरूपिणी ॥ ॥ ६४ ॥ जिनेश्वरप्रियादेवीपशुरक्तरतप्रिया ॥ पशुमांसप्रियापर्णापरामृतपरायणा ॥ ६५ ॥ पाशिनीपाशिकाचापिपशुघ्नीपशुभाषिणी ॥ फुल्लारविन्दवदनीफुल्लोत्पलशरीरिणी ॥ ६६ ॥ परानन्दप्रदावीणापशुपाशविनाशिनी ॥ फुत्कारफुत्पराफेणीफुल्लेन्दीवरलोचना ॥ ६७ ॥ फट्मन्त्रास्फटिकास्वाहा स्फोटाचफट्स्वरूपिणी ॥ स्फाटिकाघुटिकाघोरास्फटिकाद्रिस्वरूपिणी ॥ ६८ ॥ वराङ्गनावरधरावाराहीवासुकीवरा ॥ बिन्दुस्थाबिन्दुनीवाणी बिन्दुचक्रनिवासिनी ॥ ६९ ॥ विद्याधरीविशालाक्षीकाशीवासिजनप्रिया ॥ वेदविद्याविरूपाक्षी विश्वयु

म्बहुरूपिणी ॥ ७० ॥ ब्रह्मशक्तिर्व्विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्राशिवप्रिया ॥ वैकुण्ठवासिनीदेवीवैकुण्ठपददायिनी ॥ ७१ ॥ ब्रह्मरूपाविष्णुरूपापरब्रह्ममहेश्वरी ॥ भवप्रियाभवोद्भावाभवरूपाभवोत्तमा ॥ ७२ ॥ भवपाराभवधाराभाग्यवतिप्रियकारिणी ॥ भद्रासुभद्राभवदाशुम्भदैत्यविनाशिनी ॥ ७३ ॥ भवानोभैरवीभीमाभद्रकालीसुभद्रिका ॥ भगिनीभगरूपाचभगमानाभगोत्तमा ॥ ७४ ॥ भगप्रियाभगवतीभगवासाभगाकरा ॥ भगसृष्टाभाग्यवतीभगरूपाभगासिनी ॥ ७५ ॥ भगलिङ्गप्रियादेवोभगलिङ्गपरायणा॥ भगलिङ्गस्वरूपाचभगलिङ्गविनोदिनी ॥ ७६ ॥ भगलिङ्गरतादेवोभगलिङ्गनिवासिनी ॥ भगमालाभगकलाभगाधाराभगाम्बरा ॥ ७७ ॥ भगवेगाभगाभूषाभगेन्द्राभाग्यरूपिणी ॥ भगलिङ्गाङ्गसम्भोगाभगलिङ्गासवावहा ॥ ७८ ॥ भगलिङ्गसमाधुर्य्याभगलिङ्गनिवेशिता ॥ भगलिङ्गसुपूजाचभगलिङ्गसमन्विता ॥७९॥ भगलिङ्गविरक्ताचभगलिङ्गसमावृता ॥ माधवोमाधवीमान्यामधुरामधुमानिनी ॥८० ॥मन्दहासामहामायामोहिनीमहदुत्तमा ॥ महामोहामहाविद्यामहाघोरामहास्मृतिः ॥ ८१ ॥ मनस्विनीमानवतोमोदिनीमधुरानना ॥ मेनिकामानिनीमान्यामणिरत्नविभूषणा ॥ ८२ ॥ मल्लिकामौलिकामालामालाधरमदोत्तमा ॥ मदनासुन्दरीमेधामधुमत्तामधुप्रिया ॥ ८३ ॥ मत्तहंसासमोन्नासामत्तसिंहमहासनी ॥ महेन्द्रवल्लभाभीमामौल्यञ्चमिथुनात्मजा ॥ ८४ ॥ महाकाल्यामहाकालीमनोबुद्धिर्म्महोत्कटा ॥ माहेश्वरीमहामायामहिषासुरघातिनी ॥ ८५ ॥ मधुराकीर्त्तिमत्ताचमत्तमातङ्गगामिनी ॥ मदप्रियामांसरतामत्तयुक्कामकारिणी ॥ ॥ ८६ ॥ मैथुन्यवल्लभादेवीमहानन्दामहोत्सवा ॥ मरीचिम्मारतिम्मायामनोबुद्धिप्रदायिनी ॥ ८७ ॥ मोहामोक्षामहालक्ष्मी

महत्पदप्रदायिनी ॥ यमरूपाचयमुनाजयन्तीचजयप्रदा ॥८८॥ याम्यायमवतीयुद्धायदोऽकुलाविवर्द्धिनी ॥ रमारामारामपत्नीरत्नमालारतिप्रिया ॥ ८९ ॥ रत्नसिंहासनस्थाचरत्नाभरणमण्डिता ॥ रमणीरमणीयाचरत्यारसपरायणा ॥ ९० ॥ रतानन्दारतवतीरघूणाङ्कुलवर्द्धिनी ॥ रमणारिपरिभ्राज्यारैधाराधिकरत्नजा ॥ ९१ ॥ रावीरसस्वरूपाचरात्रिराजसुखावहा ॥ ऋतुजाऋतुदाऋद्धाऋतुरूपाऋतुप्रिया ॥ ९२ ॥ रक्तप्रियारक्तवतीरङ्गिणीरक्तदन्तिका ॥ लक्ष्मोर्लज्जालतिकाचलीलालग्नानिताक्षिणी ॥ ॥ ९३ ॥ लीलालीलावतीलोमाहर्षाह्लादनपट्टिका ॥ ब्रह्मस्थिताब्रह्मरूपाब्रह्मणावेदवन्दिता ॥ ९४ ॥ ब्रह्मोद्भवाब्रह्मकलाब्रह्माणीब्रह्मबोधिनी ॥ वेदाङ्गनावेदरूपावनिताविनतावसा ॥ ९५ ॥ बालाचयुवतीवृद्धाब्रह्मकर्म्मपरायणा ॥ विन्ध्यस्थाविन्ध्यवासी च बिन्दुयुक्बिन्दुभूषणा ॥ ९६ ॥ विद्यावतीवेदधारीव्यापिकाबर्हिणीकला ॥ वामाचारप्रियावन्हिर्व्वामाचारपरायणा ॥ ॥ ९७ ॥ वामाचाररतादेवीवामदेवप्रियोत्तमा ॥ बुद्धेन्द्रियाविबुद्धाचबुद्धाचरणमालिनी ॥ ९८ ॥ बन्धमोचनकर्त्रीचवारुणावरुणालया ॥ शिवाशिवप्रियाशुद्धाशुद्धाङ्गीशुक्लवर्णिणका ॥ ९९ ॥ शुक्लपुष्पप्रियाशुक्लाशिवधर्म्मपरायणा ॥ शुक्लस्थाशुक्लिनीशुक्लरूपाशुक्लपशुप्रिया ॥ १०० ॥ शुक्रस्थाशुक्रिणीशुक्राशुक्ररूपाचशुक्रिका ॥ षण्मुखीचषडङ्गाच षट्चक्रविनिवासिनी ॥ १०१ ॥ षड्ग्रन्थियुक्ताषोढाचषण्माताचषडात्मिका ॥ षडङ्गयुवतीदेवीषडङ्गप्रकृतिर्व्वशी ॥ १०२ ॥ षडाननाषड्रसाचषष्ठीषष्ठेश्वरीप्रिया ॥ षड्गवादाषोडशीचषोढान्यासस्वरूपिणी ॥ १०३ ॥ षट्चक्रभेदनकरीषट्चक्रस्थस्वरूपिणी ॥ षोडशस्वररूपाचषण्मुखीषड्रदान्विता ॥ १०४ ॥ सनकादिस्वरूपाचशिवधर्म्मपरा

यणा ॥ सिद्धासत्तस्वरीशुद्धासुरमातास्वरोत्तमा ॥ १०५ ॥ सिद्धविद्यासिद्धमातासिद्धासिद्धस्वरूपिणी ॥ हराहरिप्रियाहारा हरिणीहारयुक्तथा ॥ १०६ ॥ हरिरूपाहरिधाराहरिणाक्षोह रिप्रिया ॥ हेतुप्रियाहेतुरताहिताहितस्वरूपिणो ॥ १०७ ॥ क्ष माक्षमावतीक्षीताक्षुद्रघण्टाविभूषणा ॥ क्षयङ्करीक्षितीशाचक्षी णमध्यसुशोभना ॥ १०८ ॥ अजानन्ताअपर्णाचअहल्याशेष शायिनी ॥ स्वान्तर्गताचसाधूनामन्तरानन्तरूपिणी ॥१०९ ॥ अरूपाअमलाचार्द्धाअनन्तगुणशालिनी ॥ स्वविद्याविद्यकाविद्या विद्याचार्विन्दलोचना ॥११०॥ अपराजिताजातवेदाअजपाअम रावती॥अल्पास्वल्पाअनल्पाद्याअणिमासिद्धिदायिनी ॥१११॥ अष्टसिद्धिप्रदादेवीरूपलक्षणसँय्युता ॥अरविन्दमुखादेवीभोगसौ ख्यप्रदायिनी ॥ ११२ ॥ आदिविद्याआदिभूताआदिसिद्धिप्रदा यिनी॥सित्काररूपिणीदेवीसर्व्वासनविभूषिता॥११३॥इन्द्रप्रिया चइन्द्राणीइन्द्रप्रस्थनिवासिनी ॥इन्द्राक्षीइन्द्रवज्राचइन्द्रमद्योक्षणी तथा ॥ ११४ ॥ ईलाकामनिवासाचईश्वरीश्वरवल्लभा ॥ जननी चेश्वरीदीनाभेदाचेश्वरकर्म्मकृत् ॥ ११५ ॥ उमाकात्यायनीऊ र्द्धामीनाचोत्तरवासिनी ॥ उमापतिप्रियादेवीशिवाचोङ्काररूपि णी ॥ ११६ ॥ उरगेन्द्राशिरोरत्नाउरगोरगवल्लभा ॥ उद्यानवासि नीमालाप्रशस्तमणिभूषणा ॥ ११७॥ ऊर्द्धदन्तोत्तमाङ्गीचउत्त माचोर्ध्वकेशिनी ॥ उमासिद्धिप्रदायाचउरगासनसंस्थता ॥ ॥११८॥ऋषिपुत्रीऋषिछन्दाऋद्धिसिद्धिप्रदायिनी ॥उत्सवोत्सव वसीमन्ताकामिकाचगुणान्विता ॥ ११९ ॥ एलाएकारविद्याच एणीविद्याधरातथा॥ॐङ्कारवलयोपेताॐङ्कारपरमाकला ॥२०॥ ॐवदवदवाणीचॐङ्काराक्षरमण्डिता ॥ ऐन्द्रीकुलिशहस्ताचॐ लोकपरवासिनी ॥१२१॥ ॐङ्कारमध्यबीजा ॐनमोरूपधारिणी

परब्रह्मस्वरूपाच अंशुकाशुकवल्लभा ॥ १२२ ॥ ॐकाराअः फड्मन्त्राचअक्षाक्षरविभूषिता ॥ अमन्त्रामन्त्ररूपाचपदशोभा समन्विता ॥१२३॥ प्रणवोङ्काररूपाचप्रणवोच्चारभाक्पुनः ॥ह्रींकाररूपाह्रीङ्कारीवाग्बीजाक्षरभूषणा ॥ १२४ ॥ हृल्लेखासिद्धि योगाचहृत्पद्मासनसँस्थिता॥ बीजाख्यानेत्रहृदया ह्रीम्बीजाभुवनेश्वरी ॥ १२५ ॥ क्लींकामराजाक्लिन्नाचचतुर्व्वर्ग्गफलप्रदा ॥ क्लींक्लींक्लींरूपिकादेवीक्रींक्रींक्रींनामधारिणी ॥ १२६ ॥ कमलाशक्ति बीजाचपाशाङ्कुशविभूषिता ॥ श्रींश्रींकारामहाविद्याश्रद्धाश्रद्धावतीतथा ॥ १२७ ॥ ॐऐंक्लींह्रींश्रींपराच क्लीङ्कारीपरमाकला ॥ ह्रींक्लींश्रीङ्कारस्वरूपासर्व्वकर्म्मफलप्रदा॥१२८॥ सर्व्वाढ्यासर्व्व देवीचसर्व्वसिद्धिप्रदातथा ॥ सर्व्वज्ञासर्व्वशक्तिश्चवाग्विभूतिप्रदायिनी ॥ १२९ ॥ सर्वमोक्षप्रदादेवीसर्वभोगप्रदायिनी ॥ गुणेन्द्र वल्लभावामासर्व्वशक्तिप्रदायिनी ॥ १३० ॥ सर्व्वानन्दमयीचैवस र्व्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ सर्व्वचक्रेश्वरीदेवीसर्व्वसिद्धेश्वरीतथा ॥ १३१ ॥ सर्व्वप्रियङ्करीचैवसर्व्वसौख्यप्रदायिनी ॥ सर्व्वानन्द प्रदादेवीब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥ १३२ ॥ मनोवाञ्छितदात्रीच मनोवृद्धिसमन्विता ॥ अकारादिक्षकारान्तादुर्ग्गादुर्ग्गार्त्तिनाशि शिनो ॥ १३३ ॥ पद्मनेत्रासुनेत्राचस्वधास्वाहावषट्करी ॥ स्ववर्ग्गादेववर्ग्गाचतवर्ग्गाचसमन्विता ॥ १३४ ॥ अन्त स्स्थावेश्मरूपाचनवदुर्ग्गानरोत्तमा ॥ तत्त्वसिद्धिप्रदानीलात थानीलपताकिनी ॥ १३५ ॥ नित्यरूपानिशाकारीस्तम्भिनी मोहिनीतिच ॥वशङ्करीतथोच्चाटीउन्मादीकर्षिणीतिच॥१३६॥ मातङ्गीमधुमत्ताचअणिमालघिमातथा ॥ सिद्धामोक्षप्रदानित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ॥ १३७ ॥ रक्ताङ्गीरक्तनेत्राचरक्तचन्दनभू

षिता॥स्वल्पसिद्धिस्सुकल्पाचदिव्यचारणशुक्रभा ॥ १३८ ॥ सङ्क्रान्तिस्सर्व्वविद्याचसस्यवासरभूषिता॥ प्रथमाचाद्वितीयाचतृतीयाचचतुर्त्थिका ॥१३९॥ पञ्चमीचैवषष्ठीचविशुद्धासप्तमीतथा॥ अष्टमीनवमीचैवदशम्येकादशीतथा ॥ १४० ॥ द्वादशीत्रयोदशीचचतुर्दश्यथपूर्णिमा ॥ अमावस्यातथापूर्व्वाउत्तरापरिपूर्णिमा ॥ १४१ ॥ खड्गिनीचक्रिणीघोरागदिनीशूलिनीतथा ॥ भुशुण्डीचापिनीबाणासर्व्वायुधविभूषणा ॥ १४२ ॥ कुलेश्वरीकुलवतीकुलाचारपरायणा ॥ कुलकर्म्मसुरक्ताचकुलाचारप्रवर्द्धिनी ॥ ॥ १४३ ॥ कीर्त्तिश्श्रीश्वरमारामाधर्म्मायैसततन्नमः ॥ क्षमाधृतिःस्मृतिर्म्मेधाकल्पवृक्षनिवासिनी ॥ १४४ ॥ उग्राउग्रप्रभागौरीवेदविद्याविबोधिनी ॥ साध्यासिद्धासुसिद्धाचविप्ररूपातथैवच ॥ १४५ ॥ कालीकरालीकाल्याचकालदैत्यविनाशिनी ॥ कौलिनीकालिकीचैवकचटतपवर्णिका ॥ १४६ ॥ जयिनीजययुक्ताचजयदाजृम्भिणीतथा ॥ स्राविणीद्राविणीदेवीभरुण्डाविन्ध्यवासिनी ॥१४७ ॥ ज्योतिर्भूताचजयदाज्वालामालासमाकुला॥भिन्नाभिन्नप्रकाशाचविभिन्नभिन्नरूपिणी ॥१४८॥ अश्विनीभरणीचैवनक्षत्रसम्भवानिला ॥ काश्यपीविनताख्यातादितिजादितिरेवच ॥ १४९ ॥ कीर्त्तिःकामप्रियादेवीकीर्त्त्याकीर्त्तिविवर्द्धिनी ॥ सद्योमांससमालब्धासद्यश्छिन्नासिशङ्करा ॥१५०॥दक्षिणाचोत्तरापूर्व्वापश्चिमादिक्तथैवच ॥ अग्निनैर्ऋतिवायव्याईशान्यादिक्तथास्मृता ॥ १५१॥ ऊर्ध्वाङ्गाधोगताश्वेताकृष्णारक्ताचपीतका॥चतुर्व्वर्ग्गाचतुर्व्वर्ण्णाचतुर्म्मात्रात्मिकाक्षरा॥१५२॥ चतुर्म्मुखीचतुर्व्वेदाचतुर्विद्याचर्म्मुखा ॥ चतुर्ग्गणाचतुर्म्माताचतुर्व्वर्ग्गफलप्रदा ॥ १५३ ॥ धात्रीविधात्रीमिथुनानारीनायक

वासिनी ॥ सुरासुदासुदवतीमोदिनीमेनकात्मजा ॥ १५४ ॥
ऊर्द्धकालीसिद्धिकालीदक्षिणाकालिकाशिवा ॥ नीलयासरस्व
तीसात्वम्बगलाछिन्नमस्तका ॥ १५५ ॥ सर्व्वेश्वरीसिद्धविद्याप
रापरमदेवता॥हिङ्गुलाहिङ्गुलाङ्गीचहिङ्गुलाधरवासिनी ॥ १५६॥
हिङ्गुलोत्तमवर्णाभाहिङ्गुलाभरणाचसा ॥जाग्रतीचजगन्माताज
गदीश्वरवल्लभा ॥ १५७ ॥ जनार्द्दनप्रियादेवीजययुक्ताजयप्रदा॥
जगदानन्दकारीचजगदाह्लादकारिणी ॥ १५८ ॥ ज्ञानदानक
रीयज्ञाजानकीजनकप्रिया ॥ जयन्तीजयदानित्याज्वलदग्निसम
प्रभा ॥ १५९ ॥ विद्याधराचबिम्बोष्ठीकैसलाशाचलवासिनी ॥
विभवावडवाग्निश्चअग्निहोत्रफलप्रदा ॥ १६० ॥ मन्त्ररूपापरा
देवीतथैवगुरुरूपिणी ॥ गयागङ्गागोमतीचप्रभासापुष्करापिच
॥ १६१ ॥ विन्ध्याचलरतादेवीविन्ध्याचलनिवासिनी ॥ बहूब
हुसुन्दरीचकंसासुरविनाशिनी ॥ १६२ ॥ शूलिनीशूलहस्ताच
वज्रावज्रहरापिच ॥ दुर्गाशिवाशान्तिकरीब्रह्माणीब्राह्मणप्रिया
॥१६३॥सर्व्वलोकप्रणेत्रीचसर्व्वरोगहरापिच॥ मङ्गलाशोभनाशु
द्धानिष्कलापरमाकला॥१६४॥ विश्वेश्वरीविश्वमाताललितावासि
तानना ॥ सदाशिवाउमाक्षेमाचण्डिकाचण्डविक्रमा ॥ १६५ ॥
सर्व्वदेवमयीदेवीसर्व्वागमभयापहा ॥ ब्रह्मेशविष्णुनमितासर्व्वक
ल्याणकारिणी ॥१६६॥ योगिनीयोगमाताचयोगीन्द्रहृदयस्थि
ता ॥ योगिजायायोगवतीयोगीन्द्रानन्दयोगिनी ॥ १६७ ॥
इन्द्रादिनमितादेवीईश्वरीचेश्वरप्रिया ॥ विशुद्धिदाभयहराभ
क्तद्वेषिभयङ्करी ॥ १६८ ॥ भववेषाकामिनीचभरुण्डाभयका
रिणी ॥ बलभद्रप्रियाकारासंसारार्णवतारिणी ॥ १६९ ॥ पञ्च
भूतासर्व्वभूताविभूतिर्भूतिधारिणी ॥ सिंहवाहामहामोहामोहपा

शोकनाशिनी॥१७०॥मन्दुरामदिरामुद्रामुद्रामुद्गरधारिणी॥सावित्रीचमहादेवीपराप्रियनिनायका ॥१७१॥यमदूतीचापिङ्गाक्षीवैष्णवीशङ्करीतथा॥चन्द्रप्रियाचन्द्ररताचन्दनारण्यवासिनी ॥१७२॥ चन्दनेन्द्रसमायुक्ताचण्डदैत्यविनाशिनी ॥ सर्व्वेश्वरीयक्षिणीच किरातीराक्षसीतथा ॥ १७३ ॥ महाभोगवतीदेवीमहामोक्षप्रदायिनी ॥ विश्वहन्त्रीविश्वरूपाविश्वसंहारकारिणी ॥ १७४ ॥ धात्रीचसर्वलोकानांहितकारणकामिनी ॥ कमलासूक्ष्मदादेवी धात्रीहरविनाशिनी ॥ १७५ ॥ सुरेन्द्रपूजितासिद्धामहातेजोवतीतिच ॥ परारूपवतीदेवीत्रैलोक्याकर्षकारिणी ॥ १७६ ॥ इतितेकथितन्देविपीतानामसहस्रकम् ॥ पठेद्वापाठयेद्वापिसर्व्वसिद्धिर्भवेत्प्रिये ॥ १७७ ॥ इतिमेविष्णुनाप्रोक्तम्महास्तम्भकरम्परम्॥प्रातःकालेचमध्याह्नेसन्ध्याकालेचपार्व्वति॥१७८॥ एकचित्तःपठेदेतत्सर्व्वसिद्धिर्भविष्यति ॥ एकवारम्पठेद्यस्तुसर्व्वपापक्षयोभवेत् ॥ १७९ ॥ द्विवारम्प्रपठेद्यस्तुविघ्नेश्वरसमोभवेत् ॥ त्रिवारम्पठनाद्देविसर्व्वंसिध्यतिसर्व्वथा ॥ १८० ॥ स्तवस्यास्यप्रभावेणसाक्षाद्भवतिसुव्रते ॥ मोक्षार्थीलभतेमोक्षन्धनार्थीलभतेधनम् ॥ १८१ ॥ विद्यार्थीलभतेविद्यान्तर्कव्याकरणान्विताम् ॥ महित्वँव्वत्सरनताच्चशत्रुहानिःप्रजायते ॥१८२॥क्षोणीपतिर्व्वशस्तस्यस्मरणेसदृशोभवेत् ॥ यःपठेत्सर्व्वदाभक्त्याश्रेयस्तुभवतिप्रिये ॥ १८३ ॥ गणाध्यक्षप्रतिनिधिःकविकाव्यपरोवरः ॥ गोपनीयम्प्रयत्नेनजननीजारवत्ससदा ॥ १८४ ॥ हेतुयुक्तोभवेन्नित्यंशक्तियुक्तःसदाभवेत् ॥ यइदम्पठतेनित्यंशिवेनसदृशाभवेत् ॥ १८५ ॥ जीवन्धर्म्मार्त्थभोगीस्यान्मृतोमोक्षपतिर्भवेत् ॥ सत्यंसत्यम्महादेविसत्यंसत्यन्नसंशयः ॥ १८६ ॥

स्तवस्यास्यप्रभावेणदेवेनसहमोदते ॥ सुचित्ताश्चसुरास्सर्व्वैस्त वराजस्यकीर्त्तनात् ॥ १८७ ॥ पीताम्बरपरीधानापीतगन्धानु लेपना ॥ परमोदयकीर्तिःस्यात्परतस्सुरसुन्दरि ॥ १८८ ॥ इति श्रीउत्कटशम्बरेनागेन्द्रप्रयाणतन्त्रेषोडशसहस्रेविष्णुशङ्करसँव्वा देपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रंसमाप्तम् ॥ ॥ छ ॥ ॥

इति शाक्तप्रमोदे बगलामुखीतन्त्रं समाप्तम् ॥



श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

नवमम्

मातङ्गीतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९९० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ शाक्तप्रमोदः ।

अथ मातङ्गीतन्त्रम् ॥



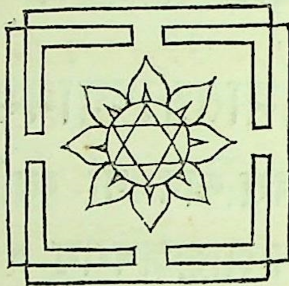
अथमातङ्गीध्यानम् ॥

श्यामाङ्गींशशिशेखरान्त्रिनयनां रत्नसिंहासनस्थिताम् ॥ वेदैर्बाहुदण्डैरसिखेटकपाशाङ्कुशधराम् ॥



अथयन्त्रोद्धारः ॥

षट्कोणाष्टदलम्पद्मँल्लिखेद्यन्त्रम्मनोरमम् ॥ तत्रपूजाप्रकर्त्तव्याजवापुष्पेणमन्त्रवित् ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

प्रणवञ्चततोमायाङ्कामबीजञ्चकूर्च्चकम् ॥ मातङ्गीङेयुताचास्त्रँव्वह्निजायावधिर्म्मनुः ॥

अथमन्त्रः ॥

ॐह्रींक्लींहूँमातङ्ग्यैफट्स्वाहा ॥

अथपूजाविधिः ॥

अथवक्ष्येमहादेवीम्मातङ्गींसर्व्वसिद्धिदाम् ॥ अस्याःपूजनमात्रेणवाक्सिद्धिँल्लभतेध्रुवम् ॥ प्रणवञ्चततोमायाङ्कामबीजञ्चकूर्च्चकम् ॥ मातङ्गीङेयुताचास्त्रंवह्निजायावधिर्म्मनुः ॥ ऋषिरस्यदक्षिणामूर्त्तिर्व्विराट्छन्दः प्रकीर्त्तितम् ॥ मातङ्गीदेवतादेवी सर्व्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ अङ्गन्यासकरन्यासौकुर्य्यान्मन्त्रीसमाहितः॥षड्दीर्घभाजाबीजेन प्रणवाद्येनकल्पयेत् ॥ षट्कोणाष्टदलम्पद्मँल्लिखेद्यन्त्रम्मनोरमम् ॥तत्रपूजाप्रकर्त्तव्या जवापुष्पेणमन्त्रवित् ॥ अष्टशक्तीश्चाष्टदलेपूजयेत्सुसमाहितः ॥ रतिःप्रीतिर्म्मनोभवा क्रियाशुद्धाचशक्तयः ॥ अनङ्गकुसुमानङ्गमदनामदनाल

सा ॥ इत्यष्टशक्तीः सम्पूज्य उपहारसमन्वितः ॥ ततोदेवीम्परां ध्यायेत् साधकः स्थिरमानसः॥ श्यामाङ्गींशशिशेखरान्त्रिनयनां रत्नसिंहासनस्थिताम् ॥ वेदैर्बाहुदण्डैरसिखेटकपाशाङ्कुशवराम्॥ एवन्ध्यात्वामहादेवीङ्गन्धपुष्पैर्म्मनोरमैः ॥ नैवेद्यन्तुमहादेव्यैपाय संशर्क्करान्वितम् ॥ पुरश्चरणकालेतुषट्सहस्रंमनुञ्जपेत् ॥ तद्द शांशंहुनेदाज्यैः शर्क्करामधुभिःसह॥ ब्रह्मवृक्षोद्भवैः काष्ठैःसाधकः शक्तिभिः सह ॥ एवंपुरस्क्रियाङ्कृत्वा प्रयोगविधिमाचरेत्॥चतुः पथेश्मशानेवा कलामध्येचमान्त्रिकः ॥ मत्स्यम्मासम्पायसञ्च दद्याद्धूपञ्चगुग्गुलुम् ॥ रात्रियोगेनकर्त्तव्यं सदापूर्णश्चसाधकः ॥ एवम्प्रयोगमात्रेण कविताजायतेध्रुवम् ॥ अग्निस्तम्भञ्जलस्तम्भँ व्वाक्स्तम्भङ्कारयेद्ध्रुवम् ॥ मन्त्रीजयतिशत्रूंश्च तार्क्ष्योभोगिकुलँ य्यथा ॥शास्त्रेवादेकवित्वेच बृहस्पतिरिवापरः ॥ अनेनैवविधाने न मातङ्गीसिद्धिदायिनी ॥ नूनन्तद्गृहमागत्य कुबेरैर्दीयतेवसु ॥ विनामत्स्यैर्व्विनामांसैर्न्नार्च्चयेत्परदेवताम् ॥ इतितन्त्रसारः ॥

अथमातङ्गीस्तोत्रम् ॥

ईश्वरउवाच ॥ आराध्यमातश्चरणाम्बुजेते ब्रह्मादयोविस्तृ तकीर्त्तिमापुः ॥ अन्येपरँव्वाविभवम्मुनीन्द्राः परांश्रियंभक्तिप रेणचान्ये ॥ १ ॥ नमामिदेवीन्नवचन्द्रमौलेर्म्मातङ्गिनीश्चन्द्रक लावतंसाम्॥ आम्नायप्रातिप्रतिपादितार्त्थम्प्रबोधयन्तीम्प्रियमाद रेण॥२॥ विनम्रदेवस्थिरमौलिरन्तैर्व्विराजितन्तेचरणारविन्दम्॥ अकृत्रिमाणाँव्वचसाँव्विशुक्कम्पदाम्पदंशिक्षितनूपुराभ्याम् ॥ ॥ ३ ॥ कृतार्त्थयन्तीम्पदवीम्पदाभ्यामास्फालयन्तीङ्कलवल्ल कीन्ताम् ॥ मातङ्गिनींसद्धृदयान्धिनोमि लीलांशुकांशुद्धनितम्ब बिम्बाम्॥४॥तालीदलेनार्प्पितकर्ण्णभूषाम्माध्वामदोद्घूर्ण्णितने

त्रपन्नाम् ॥ घनस्तनींशम्भुवधूंन्नमामितडिल्लताकान्तिमनर्घ्यभूषाम् ॥ ५ ॥ चिरेणलक्ष्यान्नवलोमराज्या स्मरामिभक्त्याजगतामधीशे ॥ बलित्रयाढ्यन्तवमध्यमम्ब नीलोत्पलांशुश्रियमावहन्तीम् ॥ ६ ॥ कान्त्याकटाक्षैःकमलाकराणाङ्कदम्बमालाञ्चितकेशपाशाम् ॥ मातङ्गकन्यांहृदिभावयामि ध्यायेयमारक्तकपोलबिम्बम् ॥ ७ ॥ बिम्बाधरन्यस्तललामवश्यमालोललीलालकमायताक्षम्॥मन्दस्मितन्तेवदनम्महेशिस्तुत्यानयाशङ्करधर्म्मपत्नीम् ॥ ८ ॥ मातङ्गिनींव्वागधिदेवतान्तांस्तुवन्तियेभक्तियुतामनुष्याः ॥ परांश्रियन्नित्यमुपाश्रयन्ति परत्रकैलासतले वसान्त ॥ ९ ॥ इतिरुद्रयामलेमातङ्गीस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथमातङ्गीकवचम् ॥

श्रीदेव्युवाच ॥ साधुसाधुमहादेवकथयस्वसुरेश्वर॥मातङ्गीकवचन्दिव्यंसर्व्वसिद्धिकरन्नृणाम् ॥ १ ॥ श्रीइश्वरउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिमातङ्गीकवचंशुभम् ॥ गोपनीयम्महादेविमौनीजापंसमाचरेत् ॥ २ ॥ अस्यश्रीमातङ्गीकवचस्यदक्षिणामूर्त्तिर्ऋषिर्व्विराट्छन्दोमातङ्गीदेवताचतुर्व्वर्गसिद्धयेविनियोगः ॥ ॐशिरोमातङ्गिनीपातुभुवनेशीतुचक्षुषी ॥ तोडलाकर्णयुगलन्त्रिपुरावदनम्मम ॥ ३ ॥ पातुकण्ठेमहामायाहृदिमाहेश्वरीतथा ॥ त्रिपुष्पापाइर्श्वयोःपातुगुदेकामेश्वरीमम ॥ ४ ॥ ऊरुद्वयेतथाचण्डीजङ्घयोश्चहरप्रिया ॥ महामायापादयुग्मेसर्व्वाङ्गेषुकुलेश्वरी ॥ ५ ॥ अङ्गम्प्रत्यङ्गकञ्चैवसदारक्षतुवैष्णवी ॥ ब्रह्मरन्ध्रेसदारक्षेन्मातङ्गीनामसंस्थिता ॥ ६ ॥ ललाटेरक्षयेन्नित्यम्महापिशाचिनीतिच ॥ नेत्राभ्यांसुमुखीरक्षेद्देवीरक्षतुनासिकाम् ॥ ७ ॥ महापिशाचिनीपायान्मुखेरक्षतुसर्व्वदा ॥ लज्जारक्षतुमान्दन्ते

चोष्ठौसम्मार्ज्जनीकरी ॥ ८ ॥ चिबुकेकण्ठदेशेतुचकारत्रितयम्पु नः ॥ सविसर्गम्महादेवीहृदयम्पातुसर्व्वदा ॥ ९ ॥ नाभिंरक्षतु मालोलाकालिकावतुलोचने ॥ उदरेपातुचामुण्डालिङ्गेकात्या यनीतथा ॥ १० ॥ उग्रताराग्गुदेपातुपादौरक्षतुचाम्बिका ॥ भुजौ रक्षतुशर्व्वाणीहृदयञ्चण्डभूषणा ॥ ११ ॥ जिह्वायाम्मातृकारक्षेत् पूर्व्वेरक्षतुपुष्टिका ॥ विजयादक्षिणेपातुमेधारक्षतुवारुणे ॥ १२ ॥ नैर्ऋत्यांसुदयारक्षेद्वायव्याम्पातुलक्ष्मणा ॥ ऐशान्यांरक्षयेद्दे वीमातङ्गीशुभकारिणी ॥ १३ ॥ रक्षेत्सुरेशाचाग्नेयेबगलापातु चोत्तरे ॥ ऊर्द्धम्पातुमहादेवीदेवानांहितकारिणी ॥ १४ ॥ पाताले पातुमान्नित्यँव्वशिनीविश्वरूपिणी ॥ प्रणवञ्चततोमायाकामबी जञ्चकूर्चकम् ॥ १५ ॥ मातङ्गिनीङेयुतास्त्रँव्वन्हिजायावधिर्म्म नुः ॥ सार्द्धैकादशवर्णासासर्व्वत्रपातुमांसदा ॥ १६ ॥ इतितेकथित न्देविगुह्याद्गुह्यतरम्परम् ॥ त्रैलोक्यमङ्गलन्नामकवचन्देवदुर्ल्लभम् । ॥ १७ ॥ यइदम्प्रपठेन्नित्यञ्जायतेसम्पदालयम् ॥ परमैश्वर्य्यमतु लम्प्राप्नुयान्नात्रसंशयः ॥ १९ ॥ गुरुमभ्यर्च्यविधिवत्कवचम्प्रप ठेद्यदि ॥ ऐश्वर्य्यंसुकवित्वञ्चवाक्सिद्धिँल्लभतेध्रुवम् ॥ २० ॥ नि त्यन्तस्यतुमातङ्गीमहिलामङ्गलञ्चरेत् ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च येदेवाःसुरसत्तमाः ॥ २१ ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाग्रहाद्याभूतजातयः ॥ तन्दृष्ट्वासाधकन्देविलज्जायुक्ताभवन्तिते ॥ २२ ॥ कवचन्धारयेद्य स्तुसर्व्वसिद्धिँल्लभेद्ध्रुवम् ॥ राजानोऽपिचदासत्वंषट्कर्म्माणिच साधयेत् ॥ २३ ॥ सिद्धोभवतिसर्व्वत्रकिमन्यैर्ब्बहुभाषितैः ॥ इदं कवचमज्ञात्वामातङ्गीँय्योभजेन्नरः ॥ २४ ॥ अल्पायुर्निर्द्धनोमू र्खोभवत्येवनसंशयः ॥ गुरौभक्तिःसदाकार्य्याकवचेचदृढामतिः ॥ २५ ॥ तस्मैमातङ्गिनीदेवीसर्व्वसिद्धिम्प्रयच्छति ॥ २६ ॥ इतिन न्द्यावर्त्तेउत्तरखण्डेत्वरितफलदायिनीमातङ्गिनीकवचंसमाप्तम् ॥

अथहृदयम् ॥

एकदाकौतुकाविष्टाभैरवंभूतसेवितम् ॥भैरवीपरिपप्रच्छसर्व्वभूताहितेरेता ॥ १ ॥ श्रीभैरव्युवाच॥भगवन्सर्व्वधर्म्मज्ञभूतवात्सल्यभावन ॥ अहंवेदितुमिच्छामि सर्व्वभूतोपकारकम् ॥ २ ॥ केनमन्त्रेणजप्तेनस्तोत्रेणपठितेनच ॥ सर्व्वथाश्रेयसाम्प्राप्तिर्भूतानाम्भूतिमिच्छताम् ॥ ३ ॥ श्रीभैरवउवाच ॥ शृणुदेवितवस्नेहात्प्रायोगोप्यमपिप्रिये ॥ कथयिष्यामितत्सर्व्वं सुखसम्पत्करंशुभम् ॥ ४ ॥ पठतांशृण्वतान्नित्यंसर्व्वसम्पत्तिदायकम् ॥ विद्यैश्वर्य्यसुखावाप्तिमङ्गलप्रदमुत्तमम् ॥ ५ ॥ मातङ्ग्याहृदयस्तोत्रं दुःखदारिद्र्यभञ्जनम् ॥ मङ्गलम्मङ्गलानाञ्चअस्तिसर्व्वसुखप्रदम् ॥६॥ ॐअस्यश्रीमातङ्गीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्यदक्षिणामूर्तिर्ऋषिर्व्विराट्छन्दोमातङ्गीदेवताह्रींबीजंहूंशक्तिःक्लींकीलकंसर्व्वाञ्छितार्थसिद्ध्येपाठेविनियोगः ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ ॐह्रीं हृदयायनमः ॐक्लींशिरसेस्वाहा ॐहूंशिखायैवषट् ॐह्रीं नेत्रत्रयायवौषट् ॐक्लींकवचायहूम् ॐहूंअस्त्रायफट् ॥ एवंकरन्यासः ॥ अथध्यानम् ॥ श्यामांशुभ्रांशुभालान्त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थाम्भक्ताभीष्टप्रदात्रींसुरनिकरकरासेव्यकञ्जाङ्घ्रियुग्माम् ॥ नीलाम्भोजांशुकान्तिन्निशिचरनिकरारण्यदावाग्निरूपाम्पाशङ्खड्गञ्चतुर्भिर्व्वरकमलकरैःखेटकञ्चाङ्कुशञ्च ॥ मातङ्गीमावहन्तीमभिमतफलदाम्मोदिनीञ्चिन्तयामि ❀ ॥७॥ नमस्तेमातङ्ग्यैमृदुमुदिततन्वैतनुमताम्परश्रेयोदायैकमलचरणध्यानमनसाम् ॥ सदासंसेव्यायैसदसिविबुधैर्द्दिव्यधिषणैर्द्दयार्द्रायैदेव्यैदुरितदलनोद्दण्डमनसे ॥ ८ ॥ परम्मातस्तेयोजपतिमनुमवोग्रहृदयः कवित्वङ्कल्पानाङ्कलयतिसुकल्पःप्रतिपदम् ॥ अपिप्रायोरम्यामृतमयपदातस्यललितानटीम्मन्यावाणीन

टतिरसनायाश्चपलिता ॥ ९ ॥ तवध्यायन्तोयेवपुरनुजपन्तिप्रवलितं सदामन्त्रम्मातर्न्नहिभवतितेषाम्परिभवः ॥ कदम्बानाम्माल्यैश्शिरअपिचयुञ्जन्तियदियेभवन्तिप्रायस्तेयुवतिजनयूथस्ववशगाः ॥१०॥ सरोजैस्साहस्त्रैस्सरसिजपदद्वन्द्वमपियेसहस्त्रन्नाम्नोच्चातदपितवदेऽन्तम्मनुमितम्॥ पृथङ्नाम्नातेनायुतकलितमर्च्चन्तिप्रसुतेसदादेवव्रातप्रणमितपदाम्भोजयुगलाः ॥ ११ ॥ तवप्रीत्यैमातर्द्ददतिबलिमाधायबलिनासमत्स्यम्मांसँव्वासुरुचिरासितंराजरुचितम् ॥ सुपुण्यायेस्वान्तस्तवचरणप्रेमैकरसिका अहोभाग्यन्तेषा न्त्रिभुवनमलंवश्यमखिलम्॥ १२॥लसल्लोलश्रोत्राभरणकिरणक्रान्तिकलिताम्मितास्मित्यापन्नप्रतिभितममन्न्नंविकरितम् ॥ मुखाम्भोजम्मातस्तवपरिलुठद्भ्रूमधुकरंरमायेध्यायन्तित्यजतिनहितेषांसुभवनम् ॥ १३ ॥ परःश्रीमातङ्ग्याजपतिहृदयाख्यस्सुमनसामयेसव्यस्सद्योभिमतफलदश्चातिललितः ॥ नरायेशृण्वन्तिस्तवमपिपठन्तीममनिशन्नतेषान्दुःप्राप्यञ्जगतियदलभ्यन्दिविषदाम् ॥१४॥ धनार्थीधनमाप्नोति दारात्थीसुन्दरीम्प्रियाम्॥ सुतात्थीलभतेपुत्रंस्तवस्यास्यप्रकीर्त्तनात्॥१५॥विद्यात्थीलभतेविद्याँव्विविधाँव्विभवप्रदाम्॥ जयात्थीपठनादस्य जयम्प्राप्नोतिनिश्चितम् ॥ १६ ॥ नष्टराज्योलभेद्राज्यं सर्व्वसम्पत्समाश्रितम् ॥ कुबेरसमसम्पत्तिः सभवेद्धृदयम्पठन् ॥ १७ ॥ किमत्रबहुनोक्तेनयद्यदिच्छतिमानवः ॥ मातङ्गीहृदयस्तोत्रपाठात्तत्सर्व्वमाप्नुयात् ॥ १८ ॥ इतिश्रीदक्षिणमूर्तिसंहितायांश्रीमातङ्गीहृदयस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथशतनामस्तोत्रम् ॥

श्रीभैरव्युवाच ॥ भगवन्श्रोतुमिच्छामि मातङ्ग्याःशतना

मकम् ॥ यद्गुह्यंसर्व्वतन्त्रेषुकेनापिनप्रकाशितम् ॥ १ ॥ श्रीभैरवउवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम् ॥ नाख्येयँय्यत्रकुत्रापि पठनीयम्परात्परम् ॥२॥ यस्यैकवारपठनात्सर्व्वेविघ्नाउपद्रवाः ॥ नश्यन्तितत्क्षणाद्देवि वह्निनातूलराशिवत्॥३॥ प्रसन्नाजायतेदेवी मातङ्गीचास्यपाठतः ॥ सहस्रनामपठनेयत्फलम्परिकीर्त्तितम् ॥४॥ तत्कोटिगुणितन्देवि नामाष्टशतकंशुभम् ॥ अस्यश्रीमातङ्गीशतनाम्नाम्भगवान्मतङ्गऋषिरनुष्टुप्छन्दो मातङ्गीदेवतामातङ्गीप्रीतयेजपेविनियोगः ॥ महामत्तमातङ्गिनी सिद्धिरूपा तथायोगिनीभद्रकालीरमाच ॥ भवानीभयप्रीतिदाभूतियुक्ता भवाराधिताभूतिसम्पत्करीच ॥ जनाधीशमाताधनागारदृष्टिर्द्धनेशार्च्चिताधीरवापीवरांगी ॥ प्रकृष्टाप्रभारूपिणीकामरूपा प्रहृष्टामहाकीर्त्तिदाकर्ण्णनाली ॥ कालीभागाघोररूपाभगाङ्गीभगाह्वाभगप्रीतिदाभीमरूपा॥भवानीमहाकौशिकीकोशपूर्ण्णा किशोरीकिशोरप्रियानन्दईहा॥महाकारणाकारणाकर्म्मशीला कपालीप्रसिद्धामहासिद्धखण्डा॥ मकारप्रियामानरूपामहेशी महोल्लासिनीलास्यलीलालयाङ्गी ॥ ४ ॥ क्षमाक्षेमशीलाक्षपाकारिणी चाक्षयप्रीतिदाभूतियुक्ताभवानी ॥ भवाराधिताभूतिसत्यात्मिका चप्रभोद्भासिताभानुभास्वत्कराच ॥ ६ ॥ धराधीशमाताधनागारदृष्टिर्द्धनेशार्च्चिताधीवराधीवराङ्गी ॥ प्रकृष्टाप्रभारूपिणीप्राणरूपा प्रकृष्टस्वरूपास्वरूपप्रियाच ॥ चलत्कुण्डलाकामिनीकान्तयुक्ता कपालाचलाकालकोद्धारिणीच ॥ कदम्बप्रियाकोटरीकोटदेहा क्रमाकीर्त्तिदाकर्ण्णरूपाचकाक्ष्मी ॥ क्षमाङ्गीक्षयप्रेमरूपाक्षपाच क्षयाक्षाक्षयाह्वाक्षयप्रान्तराच ॥ क्षवत्कामिनीक्षारिणीक्षरिपूपाशिवाङ्गीचशाकम्भरीशाकदेहा ॥ महाशाकयज्ञाफलप्राशकाचशकाह्वाशकाह्वाशकाख्याशकाच ॥ शकाक्षान्तरोषासुरो

षासुरेखामहाशेषयज्ञोपवीतप्रियाच ॥ जयन्तीजयाजाग्रतीयोग्य रूपाजयाङ्गाजपध्यानसन्तुष्टसञ्ज्ञा ॥ जयप्राणरूपाजयस्वर्ण्ण देहाजयज्वालिनीयामिनीयाम्यरूपा ॥ जगन्मातृरूपाजगद्रक्षणा चस्वधावौषडन्ताविलम्बाविलम्बा ॥ षडङ्गामहालम्बरूपासि हस्तापदाहारिणीहारिणीहारिणीच ॥महामङ्गलामङ्गलप्रेमकीर्त्ति र्न्निशुम्भक्षिदाशुम्भदर्प्पत्वहाच ॥ तथानन्दबीजादिमुक्तिस्वरू पातथाचण्डमुण्डापदामुख्यचण्डा॥ प्रचण्डाप्रचण्डामहाचण्डवे गाचलच्चामराचामराचन्द्रकीर्त्तिः ॥ सुचामीकराचित्रभूषोज्ज्वला ङ्गीसुसङ्गीतगीतञ्चपायादपायात् ॥ इतितेकथितन्देविनाम्नामष्टो त्तरंशतम् ॥ गोप्यञ्चसर्व्वतन्त्रेषुगोपनीयञ्चसर्व्वदा ॥ एतस्यस तताभ्यासात्साक्षाद्देवोमहेश्वरः ॥ त्रिसन्ध्यञ्चमहाभक्त्यापठनीयं सुखोदयम् ॥ नतस्यदुष्करङ्किञ्चिज्जायतेस्पर्श्शतःक्षणात् ॥ स्व कृतँय्यत्तदेवातन्तस्मादावर्त्तयेत्सदा॥ सदैवसन्निधौतस्यदेवीवस तिसादरम् ॥ अयोगायेतएवाग्रेसुयोगाश्चभवन्तिवै ॥ तएवमित्र भूताश्चभवन्तितत्प्रसादतः ॥ विषाणिनोपसर्प्पन्तिव्याधयोन स्पृशन्तितान् ॥लूताविस्फटोकाःसर्व्वेशमँय्यान्तिचतत्क्षणात्॥ जरापलितनिर्म्मुक्तःकल्पजीवीभवेन्नरः ॥ अपिकिम्बहुनोक्तेनसा न्निध्यम्फलमाप्नुयात्॥यावन्मयापुराप्रोक्तम्फलंसाहस्रनामकम् ॥ तत्सर्वंल्लँभतेमर्त्त्यो महामायाप्रसादतः ॥ इतिश्रीरुद्रयामले मात ङ्गीशतनामस्तोत्रंसम्पूर्ण्णम् ॥

अथसहस्रनाम ॥

ईश्वरउवाच ॥शृणुदेविप्रवक्ष्यामि साम्प्रतन्तत्वतःपरम्॥नाम्नां सहस्रम्परमंसुमुख्याःसिद्धयेहितम् ॥ सहस्रनामपाठीयःसर्व्वत्रवि जयीभवेत् ॥ पराभवोनतस्यास्ति सभायाँव्वामहारणे ॥ यथातु

ष्टाभवेद्देवी सुमुखीचास्यपाठतः ॥ तथाभवतिदेवेशि साधकः शिवएवसः ॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्यकोटयः ॥ सकृत्पाठेनजायन्तेप्रसन्नासुमुखीभवेत् ॥ मतङ्गोऽस्यऋषिश्छन्दोऽनुष्टुब्देवीसमीरिता ॥ सुमुखीविनियोगःस्यात्सर्व्वसम्पत्तिहेतवे ॥ एवन्ध्यात्वापठेदेतद्यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥ देवीषोडशवार्षिकीं शवगताम्माध्वीरसाघूर्णितां श्यामाङ्गीमरुणाम्बराम्पृथुकुचाङ्गुञ्जावलीशोभिताम् ॥ हस्ताभ्यान्दधतीङ्कपालममलन्तीक्ष्णान्तथाकर्त्रिकान्ध्यायेन्मानसपङ्कजेभगवतीमुच्छिष्टचाण्डालिनीम् ॥ ॐसुमुखीशेमुषीसेव्या सुरसाशशिशेखरा॥ समानास्यासाधनीच समस्तसुरसम्मुखी।सर्व्वसम्पत्तिजननीसम्मदासिन्धुसेविनी ॥शम्भुसीमन्तिनीसौम्या समाराध्यासुधारसा ॥ सारङ्गासवलीवेला लावण्यवनमालिनी॥वनजाक्षीवनचरी वनीवनविनोदिनी। वेगिनीवेगदावेगा बगलस्थाबलाधिका ॥ कालीकालप्रियाकेलीकामलाकालकामिनो ॥कमलाकमलस्थाच कमलस्थाकलावती ॥ कुलीनाकुटिलाकान्ता कोकिलाकलभाषिणी ॥ कीराकेलिकराकाली कपालिन्यपिकालिका ॥ केशिनीचकुशावर्त्ताकौशाम्भीकेशवप्रिया । कालीकाशीमहाकालीसङ्काशाकेशदायिनी । कुण्डलाचकुलस्थाच कुण्डलाङ्गदमण्डिता । कुण्डपद्माकुमुदिनो कुमुदप्रीतिवर्द्धिनी ॥ कुण्डप्रियाकुण्डरुचिःकुरङ्गनयनाकुला । कुन्दबिम्बालिनदनीकुसुम्भकुसुमाकरा । काञ्चीकनकशोभाढ्याक्वणत्किङ्किणिकाकटिः । कठोरकरणाकाष्ठा कौमुदीकण्डवत्यपि । कपर्द्दिनीकपटिनी कठिनीकलकण्ठिनी ॥ कीरहस्ताकुमारीच कुरूढकुसुमप्रिया । कुञ्जरस्थाकुजरताकुम्भीकुम्भस्तनीकला । कुम्भिकाङ्गाकरभोरूःकदलीकुशशायिनी ।कुपिताकोटरस्थाच कङ्कालीकन्दलालया । कपालवासिनीकेशी क

म्पमानाशिरोरुहा । कदम्बरीकदम्बस्था कुङ्कुमप्रेमधारिणी ।कुटु म्बिनीकृपायुक्ता क्रतुःक्रतुकरप्रिया । कात्यायनीकृत्तिकाचका र्त्तिकीकुशवर्त्तिनी । कामपत्नीकामदात्री कामेशीकामवन्दिता कामरूपाकामरतिःकामाख्याज्ञानमोहिनी ॥ खड्गिनीखेचरीख ञ्जाखञ्जरीटेक्षणाखगा । खरगाखरनादाच खरस्थाखेलनप्रिया ॥ खरांशुःखेलनीखट्वाखराखट्वाङ्गधारिणी ॥ खरखण्डिन्यपिख्या तिः खण्डिताखण्डनप्रिया ॥ खण्डप्रियाखण्डखाद्याखण्डसिन्धु श्चखण्डिनी । गङ्गागोदावरीगौरी गोतम्यपिचगौतमी ॥ गङ्गा गयागगनगा गारुडीगरुडध्वजा । गीतागीतप्रियागेया गुणप्रीति र्गुरुर्गिरी । गौर्गौरीगण्डसदनागोकुलागोऽप्रतारिणी ॥ गोता गोविन्दिनोगूढागूढविग्रस्तगुञ्जिनी । गजगागोपिनीगोपीगोक्षाज यप्रियागणा ॥ गिरिभूपालदुहिता गोगागोकुलवासिनी ॥ घन स्तनीघनरुचिर्घनोरुर्घननिस्स्वना ॥ घुङ्कारिणी घुक्षकरी घूघूकपरिवारिता ॥ घण्टानादप्रियाघण्टाघोटाघोटकवाहिनी ॥ घोररूपाचघोराचघृतप्रीतिर्घृताञ्जनी ॥ घृताचीघृतवृष्टिश्चघ ण्टाघटघटावृता ॥ घटस्थाघटनाघातकरीघातनिवारिणी ॥ च ञ्चरीकीचकोरीच चामुण्डाचीरधारिणी ॥ चातुरीचपलाचञ्चु श्चिताचिन्तामणिस्थिता ॥ चातुर्वर्ण्यमयीचञ्चुश्चोराचार्य्या चमत्कृतिः ॥ चक्रवर्त्तिवधूश्चित्रा चक्राङ्गीचक्रमोदिनी ॥ चे तश्चरीचित्तवृत्तिश्चेतनाचेतनप्रिया ॥ चापिनीचम्पकप्रीतिश्च ण्डाचण्डालवासिनी ॥ चिरञ्जीविनीतच्चिन्ताचिञ्चामूलनिवा सिनी ॥ छूरिकाछत्रमध्यस्थाछिन्दाछिन्दकरीछिदा ॥ छुच्छु न्दरीछलप्रीतिश्छुच्छुन्दरनिभस्वना।छलिनीछत्रदाछिन्नाछिण्टि च्छेदकरीछटा ॥ छद्मिनीछान्दसीछायाछरूछन्दाकरीत्यपि ॥ जयदाजयदाजातीजायिनीजामलाजतुः ॥ जम्बूप्रियाजीवनस्था

जङ्गमाजङ्गमाप्रिया । जवापुष्पप्रियाजप्याजगज्जीवाजगज्जनिः । जगज्जन्तुप्रधानाचजगज्जीवपराजवा । जातिप्रियाजीवनस्थाजीमूतसदृशीरुचिः । जन्याजनहिताजायाजन्मभूर्ज्जम्भसीजभूः । जयदाजगदावासाजायिनीज्वरकृच्छ्रजित् ॥ जपाचजपतीजप्याजपार्हाजायिनीजना । जालन्धरमयीजानुर्ज्जालौकाजाप्यभूषणा । जगज्जीवमयीजीवाजरत्कारुर्ज्जनाप्रिया । जगतीजननिरताजगच्छोभाकरीजवा । जगतीत्राणकृज्जङ्घाजातीफलविनोदिनी । जातीपुष्पप्रियाज्वालाजातिहाजातिरूपिणी । जीमूतवाहनरुचिर्ज्जीमूताजीर्ण्णवस्त्रकृत् ॥ जीर्ण्णवस्त्रधराजीर्ण्णाज्वलतीजालनाशिनी । जगत्क्षोभकरीजातिर्ज्जगत्क्षोभविनाशिनी । जनापवादाजीवाचजननीगृहवासिनी । जनानुरागाजानुस्थाजलवासाजलार्त्तिकृत् । जलजाजलवेलाचजलचक्रनिवासिनी । जलमुक्ताजलारोहाजलजाजलजेक्षणा । जलप्रियाजलौकाचजलांशोभवती तथा ॥ जलविस्फूर्ज्जितवपुर्ज्ज्वलत्पावकशोभिनी ॥ झिञ्झाझिल्लमयीझिञ्झाझणत्कारकरीजया । झञ्झीझम्पकरीझम्पाझम्पत्रासनिवारिणी ॥ टङ्कारस्थाटङ्ककरीटङ्कारकरणांहसा । टङ्कारोट्टकृतष्ठीवाडिण्डीरवसनावृता । डाकिनीडामरीचैवडिण्डिमध्वनिनादिनी । डकारनिस्स्वनरुचिस्तपिनीतापिनीतथा । तरुणीतुन्दिलातुन्दातामसीचतमःप्रिया । ताम्राताम्रवतोतन्तुस्तुन्दिलातुलसम्भवा।तुलाकोटिसुवेगाचतुल्यकामातुलाश्रया।तुदिनीतुनिनीतुम्बातुल्यकालातुलाश्रया । तुमुलातुलजातुल्यातुलादानकरीतथा । तुल्यवेगातुल्यगतिस्तुलाकोटिनिनादिनी । ताम्रौष्ठाताम्रपर्ण्णीचतमःसङ्क्षोभकारिणी । त्वरिताज्वरहातीरातारकेशीतमालिनी । तमोदानवतोतामतालस्थानवतीतमी । तामसीचतमिस्राचतीव्रातीव्रपराक्रमा । तटस्थातिलतैलाक्ता

तरुणीतपनद्युतिः ॥ तिलोत्तमाचतिलकृत्तारकाधीशशेखरा ॥ तिलपुष्पप्रियातारातारकेशीकुटुम्बिनी ॥ स्थाणुपत्नीस्थिरकरीस्थूलसम्पद्विवर्द्धिनी ॥ स्थितिःस्थैर्य्यस्थविष्ठाचस्थपतिःस्थूलविग्रहा ॥ स्थूलस्थलवतीस्थालीस्थलसङ्गविवर्द्धिनी ॥ दण्डिनीदन्तिनीदामादरिद्रादीनवत्सला ॥ देवादेववधूर्दैत्या दामिनीदेवभूषणा ॥ दयादमवतीदीनवत्सलादाडिमस्तनी ॥ देवमूर्त्तिकरादैत्यादारिणीदेवतानता ॥ दोलाक्रीडादयालुश्चदम्पतीदेवतामयी ॥ दशादीपस्थितादोषादोषहादोषकारीणी ॥ दुर्ग्गादुर्ग्गार्त्तिशमनीदुर्ग्गम्यादुर्ग्गवासिनी ॥ दुर्ग्गान्धनाशिनी दुःस्थादुःखप्रशमकारिणी ॥ दुर्ग्गन्धादुन्दुभीध्वान्तादूरस्थादूरवासिनी ॥ दरदावरदात्रीचदुर्व्व्याधदयितादमी ॥ धुरन्धराधुरीणाचधौरेयीधनदायिनी॥धीरारवाधरित्रीचधर्म्मदाधीरमानसा ॥ धनुर्द्धराचधमनीधमनीधूर्त्तविग्रहा ॥ धूम्रवर्ण्णाधूम्रपानाधूमलाधूममोदिनी ॥ नन्दिनीनन्दिनीनन्दानन्दिनीनन्दबालिका ॥नवीनानर्म्मदानर्म्मनेमिर्न्नियमनिस्स्वना ॥ निर्म्मलानिगमाधारानिम्नगानग्नकामिनी ॥ नीलानिरत्नानिर्व्वाणानिर्ल्लोभानिर्ग्गुणानतिः ॥ नीलग्रीवानिरीहाचनिरञ्जनजमानवा ॥ निर्ग्गुण्डिकाचनिर्ग्गुण्डानिर्न्नासानासिकाभिधा ॥ पताकिनीपताकाचपत्रप्रीतिःपयस्विनी ॥ पीनापीनस्तनीपत्नीपवनाशीनिशामयी ॥ परापरपराकालीपारकृत्यभुजाप्रिया ॥ पवनस्थाचपवनापवनप्रीतिवर्द्धिनी ॥ पशुवृद्धिकरीपुष्पीपोषकापुष्टिवर्द्धिनी ॥ पुष्पिणीपुस्तककरापूर्णिमातलवासिनी ॥ पेशीपाशकरीपाशापांशुहापांशुलापशुः ॥ पटुःपराशापरशुधारिणीपाशिनीतथा ॥ पापघ्नीपतिपत्नीचपतितापतितापतो ॥ पिशाचीचापेशाचघ्नीपिशिताशनतोषिणी ॥ पानदापानपात्रीचपानदानकरोद्यता ॥ पेयाप्र

सिद्धापीयूषापूर्णापूर्णमनोरथा ॥ पतङ्गाभापतङ्गाचपौनःपुन्य पिबापरा ॥ पङ्किलापङ्कमग्नाचपानीयापञ्जरस्थिता ॥ पञ्चमी पञ्चयज्ञाचपञ्चतापञ्चमाप्रिया ॥ पिचुमन्दापुण्डरीकापिकीपिङ्ग ललोचना ॥ प्रियङ्गुमञ्जरीपिण्डीपण्डितापाण्डुरप्रभा ॥ प्रेतास नाप्रियालस्थापाण्डुघ्नीपीनसापहा ॥ फलिनीफलदात्रीच फलश्रीःफलभूषणा ॥ फूत्कारकारिणीस्फारीफुल्लाफुल्लाम्बुजान ना ॥ स्फुलिङ्गहास्फीतमतिः स्फीतकीर्त्तिकरीतथा ॥ बालमा याबलाराति र्बलिनीबलवर्द्धिनी ॥ वेणुवाद्यावनचरी विरञ्चिज नयत्यपि ॥ विद्याप्रदामहाविद्या बोधिनीबोधदायिनी ॥ बुद्ध माताचबुद्धाचवनमालावतीवरा ॥ वरदावारुणीवीणा वीणावा दनतत्परा ॥ विनोदिनीविनोदस्थावैष्णवीविष्णुवल्लभा ॥ वैद्या वैद्याचिकित्साच विवशाविश्वविश्रुता ॥ विद्यौघविह्वलावेलावि त्तदाविगतज्वरा ॥ विरावाविवरीकाराबिम्बोष्ठीबिम्बवत्सला ॥ विन्ध्यस्थावरवन्द्याचवीरस्थानवराचवित् ॥ वेदान्तवेद्याविज या विजयाविजयप्रदा ॥ विरोगीवन्दिनीवन्ध्या वन्ध्यबन्धनिवा रिणी ॥ भगिनीभगमालाचभवानीभवनाशिनी ॥ भीमाभी माननाभीमाभङ्गुराभीमदर्शना ॥भिल्लीभिल्लधराभीरुर्भेरुण्डा भीभयावहा ॥ भगसर्प्पिण्यपिभगाभगरूपाभगालया ॥ भगास नाभवाभोगा भेरीझङ्काररञ्जिता ॥ भीषणाभीषणारावा भगव त्यहिभूषणा ॥ भारद्वाजाभोगदात्री भूतिघ्नीभूतिभूषणा ॥ भूमिदाभूमिदात्रीचभूपतिर्भरदायिनी ॥ भ्रमरीभ्रामरीभाला भूपालकुलसंस्थिता ॥ मातामनोहरामायामानिनीमोहिनीम ही ॥ महालक्ष्मीर्म्मदक्षीबामादिरामदिरालया ॥ मदोद्धतामतङ्ग स्थामाधवीमधुमर्दिनी ॥ मोदामोदकरीमेधा मेध्यामध्याधिप स्थिता ॥ मद्यपामांसलोभस्था मोदिनीमैथुनोद्यता ॥ मूर्द्धा

वतीमहामायामायामहिममन्दिरा ॥ महामालामहाविद्या महामारीमहेश्वरी ॥ महादेववधूमान्या मथुरामेरुमण्डिता ॥ मेदस्विनीमिलिन्दाक्षी महिषासुरमर्द्दिनी ॥ मण्डलस्थाभगस्थाचमदिरारागगर्व्विता ॥ मोक्षदामुण्डमालाच मालामालाविलासिनी ॥ मातङ्गिनीचमातङ्गीमातङ्गतनयापिच ॥ मधुस्रवामधुरसाबन्धूककुसुमप्रिया ॥ यामिनीयामिनीनाथभूषायावकरञ्जिता ॥ यवाङ्कुरप्रियायामायवनीयवनार्द्दिनी ॥ यमघ्नीयमकल्पा च यजमानस्वरूपिणी ॥ यज्ञायज्ञयजुर्य्यक्षीयशोनिःकम्पकारिणी॥यक्षिणीयक्षजननीयशोदायासधारिणी ॥ यशस्सूत्रप्रदायामायज्ञकर्म्मकरीत्यपि ॥ यशस्विनीयकारस्था भूयस्तम्भनिवासिनी ॥ रञ्जिताराजपत्नीचरमारेखारवीरणा ॥ रजोवतीरजश्चित्रारञ्जनीरजनीपतिः ॥ रोगिणीरजनीराज्ञा राज्यदाराज्यवर्द्धिनी ॥ राजन्वतीराजनीतिस्तथारजतवासिनी ॥ रमणीरमणीयाचरामारामावतीरतिः ॥ रेतोरतीरतोत्साहारोगघ्नीरोगकारिणी रङ्गारङ्गवतीरागा रागज्ञारागकृद्दया ॥ रामिकारजकीरेवा रजनीरङ्गलोचना ॥ रक्तचर्म्मधरारङ्गी रङ्गस्थारङ्गवाहिनी ॥ रमारम्भाफलप्रीती रम्भोरूराघवप्रिया॥रङ्गारङ्गाङ्गमधुरारोदसीचमहारवा ॥ रोधकृद्रोगहन्त्रीचरूपभृद्रोगस्राविणी ॥ बन्दोबन्दिस्तुताबन्धुर्व्बन्धूककुसुमाधरा वन्दितावन्द्यमानाच वैद्रावीवेदविद्विधा ॥ विकोपाविकपालाच विङ्कस्थाविङ्कवत्सला ॥ वेदिर्व्विलग्नलग्नाचविधिविङ्ककरीविधा ॥ शङ्खिनीशङ्खवलया शङ्खमालावतीशमी ॥ शङ्खपात्राशिनीशङ्खस्वनशङ्खगलाशशी ॥ शबरीशाम्बरीशम्भुः शम्भुकेशाशरासिनी ॥ शवाश्येनवतीश्यामा श्यामाङ्गीश्यामलोचना ॥ स्मशानस्थास्मशानाच श्मशानस्थानभूषणा ॥ शमदाशमहन्त्रीचशङ्खिनीशङ्खरोषरा ।

शान्तिश्शान्तिप्रदाशेषा शेषाख्याशेषशायिनी ॥ शेमुषीशोषि णीशेषाशौर्य्याशौर्य्यशराशरी ॥ शापदाशापहाशापाशापप न्थासदाशिवा ॥ शृङ्गिणीशृङ्गिपलभुक्शङ्करीशाङ्करीशिवा॥शव स्थाशवभुक्शान्ताशवकर्ण्णाशवोदरी ॥ शाविनीशवशिंशाश्रीः शवाचशमशायिनी ॥ शवकुण्डलिनीशैवाशीकराशिशिराशि ना ॥शवकाञ्चीशवश्रोका शवमालाशवाकृतिः ॥ सवन्तीसङ्कुचा शक्तिश्शन्तनुश्शवदायिनी ॥ सिन्धुस्सरस्वतीसिन्धुस्सुन्दरीसु न्दरानना ॥ साधुःस्सिद्धिप्रदात्रीचसिद्धासिद्धसरस्वती ॥सन्तति स्सम्पदासँव्वच्छङ्किसम्पत्तिदायिनी ॥सपत्नीसरसासारासारस्व तकरीसुधा ॥ सुरासमांसाशनाच समाराध्यासमस्तदा ॥ समधी स्सामदासोक्षा सम्मोहासमदर्शना॥सामतिस्सामधासीमा सावि त्रीसविधासती ॥ सवनासवनासारा सवरासावरासमी ॥ सिमरा सततासाध्वीसध्रीचीससहायिनी ॥ हंसीहंसगतिर्हंसीहंसोज्ज्वल निचोलयुक् ॥ हलिनीहालिनीहालाहलश्रीर्हरवल्लभा ॥ हलाह लवतोह्येषाहेलाहर्षविवर्द्धिनी ॥ हन्तिर्हन्ताहयाहाहाहताहन्ता तिकारिणी ॥ हङ्कारीहङ्कृतिर्हङ्का हीहीहाहाहिताहिता ॥ हीति र्हैमप्रदाहारारावविणीहरिसम्मता॥ होराहोत्रीहोलिकाच होमाहोम हविर्हविः ॥ हरिणीहरिणीनेत्राहिमाचलनिवासिनी ॥ लम्बो दरीलम्बकर्ण्णा लम्बिकालम्बविग्रहा ॥ लीलालीलावतीलो लाललनाललिताला ॥ ललामलोचनालोम्यालोलाक्षीसत्कु लालया ॥ लपत्नीलपतीलम्पालोपामुद्राललन्तिका ॥ ल तिकालङ्घिनीलङ्घालालिमालघुमध्यमा ॥ लघीयसीलघूदर्य्या लूतालूताविनाशिनी ॥ लोमशालोमलम्बीचलुलन्तीचलुलु म्पती ॥ लुलायस्थाचलहरीलङ्कापुरपुरन्दरा ॥ लक्ष्मीर्लक्ष्मी प्रदालभ्यालाक्षाक्षीलुलितप्रभा ॥ क्षणाक्षणक्षुक्षुक्षिणीक्षमाक्षा

न्ति ऽक्षमावती ॥ क्षामाक्षामोदरीक्षेम्या क्षौमभृत्क्षत्रियाङ्गणा ॥ क्षयाक्षायाकरीक्षीराक्षीरदाक्षीरसागरा ॥ क्षेमङ्करीक्षयकरीक्षयकृत्क्षणदाक्षतिः ॥ क्षुद्रिकाक्षुद्रिकाक्षुद्राक्षुत्क्षमाक्षीणपातका ॥ मातुःसहस्रनामेदंसुमुख्याःस्सिद्धिदायकम् ॥ यऽपठेत्प्रयतोनित्यंसएवस्यान्महेश्वरः ॥ अनाचारात्पठेन्नित्यन्दीरद्रोधनवान्भवेत् ॥ मूकस्स्याद्वाक्पतिर्द्देविरोगीनीरोगताँव्व्रजेत् ॥ पुत्रार्त्थीपुत्रमाप्नोतित्रिषुलोकेषुविश्रुतम् ॥वन्ध्यापिसूयतेपुत्रँव्विदुषस्सदृशङ्गुरोः ॥ सत्यञ्चबहुधाभूयाद्गावश्चवहुदुग्धदाः ॥ राजानऽपादनम्राःस्स्युस्तस्यहासाइवस्फुटाः ॥ अरयस्सङ्क्षयँय्यान्ति मनसासंस्मृताअपि ॥ दर्श्शनादेवजायन्तेनरानार्य्योपतद्वशाः॥ कर्त्ताहर्त्तास्वयँव्वीरोजायतेनात्रसंशयः ॥ यँय्यङ्कामयतेकामन्तन्तमाप्नोतिनिश्चितम् ॥ दुरितन्नचतस्यास्तिनास्तिशोकऽकथञ्चन ॥ चतुष्पथेऽर्द्धरात्रेचयऽपठेत्साधकोत्तमः ॥ एकाकीनिर्भयोवीरोदशावर्त्तस्तवोत्तमम् ॥ मनसाचिन्तितङ्कार्य्यंतस्यसिद्धिर्न्नसंशयः ॥ विनासहस्रनाम्नाँय्योजपेन्मन्त्रङ्कदाचन ॥ नसिद्धिर्ज्जायतेतस्यमन्त्रङ्कल्पशतैरपि ॥ कुजवारेश्मशानेवामध्याह्नेयोजपेत्सदा ॥ कृतकृत्यस्सजायेतकर्त्ताहर्त्तानृणामिह ॥ रोगार्त्तोर्द्धनिशायाँय्यऽपठेदासनसंस्थितः ॥ सद्योनीरोगतामेति यदिस्यान्निर्भयस्तदा ॥ अर्द्धरात्रेश्मशानेवाशनिवारेजपेन्मनुम् ॥ अष्टोत्तरसहस्रन्तुदशवारञ्जपेत्ततः ॥ सहस्रनामचैतद्धितदायातिस्वयंशिवा ॥ महापवनरूपेणघोरगोमायुनादिनो ॥ ततोयदिनभीतिःस्यात्तदादेहीतिवाग्भवेत् ॥तदापशुबलिन्दद्यात्स्वयङ्गृह्णातिचण्डिका ॥ यथेष्टञ्चवरन्दत्त्वाप्रयातिसुमुखीशिवा ॥ रोचनागुरुकस्तूरीकर्पूरैश्चसचन्दनैः ॥ कुङ्कुमेनदिनेश्रेष्ठे लिखित्वा भूर्जपत्रके ॥ शुभनक्षत्रयोगेचकृतमारुतसक्रियः ॥ कृत्वासम्पा

तनविधिन्धारयेद्दक्षिणेकरे ॥ सहस्रनामस्वर्णस्थङ्कण्ठेवाविजिते न्द्रियः ॥ तदायम्प्रणमेन्मन्त्रीक्रुद्धस्सम्रियतेनरः ॥ दुष्टश्वाप दजन्तू नान्नभीःकुत्रापिजायते ॥ बालकानामियंरक्षागर्भिणीना मपिप्रिये ॥ मोहनस्तम्भनाकर्षमारणोच्चाटनानिच ॥ यन्त्र धारणतोनूनञ्जायन्तेसाधकस्यतु ॥ नीलवस्त्रेविलिखितेध्वजायाँ य्यदितिष्ठति ॥ तदानष्टाभवत्येव प्रचण्डाप्यरिवाहिनी ॥ एत ज्जप्तम्महाभस्मललाटेयदिधारयेत् ॥ तद्विलोकनएवस्युःप्राणिन स्तस्यकिङ्कराः ॥ राजपत्न्योपिविवशाःकिमन्याःपुरयोषितः॥ एतज्जप्तम्पिबेत्तोयम्मासेनस्यान्महाकविः ॥ पण्डितश्चमहावा दीजायतेनात्रसंशयः ॥ अयुतञ्चपठेत्स्तोत्रम्पुरश्चरणसिद्धये ॥ दशांशङ्कमलैर्हुत्वात्रिमध्वाक्तैर्व्विधानतः॥ स्वयमायातिकमला वाण्यासहतदालये ॥ मन्त्रोनिःकीलतामेति सुमुखीसुमुखीभ वेत् ॥ अनन्तञ्चभवेत्पुण्यमपुण्यञ्चक्षयँव्व्रजेत् ॥ पुष्करादिषु तीर्त्थेषु स्नानतोयत्फलम्भवेत् ॥ तत्फलँल्लभतेजन्तुःसुमुख्याः स्तोत्रपाठतः ॥ एतदुक्तंरहस्यन्तेस्वसर्व्वस्वँव्वरानने ॥ नप्र काश्यन्त्वयादेवि यदिसिद्धिञ्चविन्दसि॥ प्रकाशनादसिद्धिस्स्या त्कुपिता सुमुखीभवेत् ॥ नातःपरतरोलोकेसिद्धिदःप्राणिनामि ह ॥ वन्देश्रीसुमुखीम्प्रसन्नवदनाम्पूर्णेन्दुबिम्बाननांसिन्दूराङ्कि तमस्तकाम्मधुमदोल्लोलाञ्चमुक्तावलीम् ॥श्यामाङ्कञ्जलिकाकरा ङ्करगतञ्चाध्यापयन्तींशुकङ्गुञ्जापुञ्जविभूषणांसकरुणामामुक्तवे णीलताम् ॥ इतिश्रीनन्द्यावर्त्ततन्त्रे उत्तरखण्डेमातङ्गीसहस्र नामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति शाक्तप्रमोदे मातङ्गीतन्त्रं समाप्तम् ॥

श्री ।

शिवहरराजधानीपति-
श्रीराजादेवनन्दनसिंहवहादूरनराधिप-
सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं
दशमं
कमलात्मिकातन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-
दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्
श्रीकृष्णदासात्मज–खेमराजेन
मुम्बय्यां
स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।
सँव्वत् १९६० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ।

अथकमलात्मिकातन्त्रम् ॥



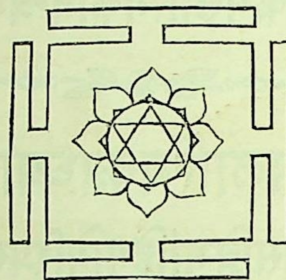
अथकमलात्मिकाध्यानम् ॥

कान्त्याकाञ्चनसन्निभांहिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानांश्रियम् ॥ बिभ्राणाँव्वरमब्जयुग्ममभयंहस्तैः किरीटोज्ज्वलाङ्क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बवलितांव्वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥ १ ॥



अथयन्त्रोद्धारः ॥

अनुक्तकल्पेयन्त्रन्तु लिखेत्पद्मन्दलाष्टकम् ॥ षट्कोणकर्णिण कन्तत्र वेदद्वारोपशोभितम् ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

तारम्पूर्व्वँल्लिखित्वा परमलममलँव्वाग्भवम्बीजमन्यल्लज्जाश्री बीजपूर्व्वव्वँशकरणतमङ्कामबीजम्परस्तात् ॥ह्लौंःपश्चाद्योजनीयं सुयुतमथजगत्पूर्व्विकायाःप्रसूत्याङेन्तंरूपन्नमोन्तान्निखिलमनु विदैर्म्मन्त्रमुक्तंरमायाः ॥

अथमन्त्रः ॥

ॐऐँह्रीँश्रीँक्लीँह्लौःजगत्प्रसूत्यैनमः ॥

अथपूजाप्रयोगः ॥

प्रातःकृत्यादिपीठन्यासान्तङ्कर्म्मविधाय हृत्पद्मस्थपूर्व्वकेश रेषुमध्येचपीठशक्तीः पीठमनुञ्चन्यसेत् ॥ ॐविभूत्यैनमः एवंउ न्नत्यै०कान्त्यै०सृष्ट्यै कीर्त्यै०सन्नत्यै०व्युष्ट्यै० उत्कृष्ट्यै० ऋ द्ध्यै० ततःश्रीकमलासनायनमः इत्यासनँव्विन्यस्य ऋष्यादि न्यासङ्कुर्य्यात् ॥ शिरसिभृगुऋषयेनमः मुखेनिचृच्छन्दसेनमः हृदिश्रियैदेवतायैनमः ततः कराङ्गन्यासौकुर्य्यात् ॥ श्रांअङ्गु ष्ठाभ्यान्नमः श्रींतर्ज्जनीभ्यांस्वाहा श्रूंमध्यमाभ्याँव्वषट् इत्यादि॥

एवंश्रांहृदयायनम इत्यादिनाचन्यसेत्॥तथाचनिबन्धे॥अङ्गानि दीर्घयुक्तेनरमाबीजेनकल्पयेत् ॥ ततोध्यानम् ॥ कान्त्याकाञ्च नसन्निभांहिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघ टैरासिच्यमानांश्रियम् ॥ बिभ्राणांवरमब्जयुग्ममभयंहस्तैः किरीटोज्ज्वलाङ्क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितांवन्देरविन्दास्थिता म् ॥ एवन्ध्यात्वा मानसैःसम्पूज्य शङ्खस्थापनङ्कुर्य्यात् ॥ त तःपीठपूजांविधायकेशरेषुमध्येचविभूत्यादिपीठमन्वन्तपूजां विधाय ॥ पुनर्द्ध्यात्वा आवाहनादिपञ्चपुष्पाञ्जलिदानपर्य्यन्तं विधाय ॥ आवरणपूजामारभेत् ॥ अग्न्यादिकेशरेषुमध्येदिक्षुच श्रांहृदयायनमः ॥ इत्यादिनासम्पूज्यदिग्दलेषुपूर्व्वादिषु ॥ ॐवा सुदेवायनमः एवंसङ्कर्षणाय० प्रद्युम्नाय० अनिरुद्धाय० विदिग्दले षु ॐदमकाय० ॐसलिलाय० ॐगुग्गुलाय० ॐकुरण्टकाय० ॥ ततोदेव्यादक्षिणे ॐशङ्खनिधयेनमः एवंवसुधायै० वामे ॐपद्मनिधये० ॐवसुमत्यै० पत्राग्रेषुपूर्व्वादितः ॐबलाकायैनमः एवंविमलायै० वनमालिकायै० विभीषिकायै० तद्बहिरिन्द्रादीन् व ज्रादींश्चपूजयेत् । ततोधूपादिविसर्ज्जनान्तङ्कर्म्मसमापयेत् ॥ अ स्यपुरश्चरणन्द्वादशलक्षजपः ॥ तथाच भानुलक्षञ्जपेन्मन्त्रन्दीक्षि तोविजितेन्द्रियः ॥ तत्सहस्रञ्चजुहुयात् कमलैर्म्मधुराप्लुतैः ॥ ज पान्तेजुहुयान्मन्त्रीतिलैर्व्वामधुराप्लुतैः ॥ बिल्वैःफलैर्व्वाजहुया त्त्रिभिर्व्वासाधकोत्तमः ॥ इतिपूजाप्रयोगः ॥

अथस्तोत्रम् ॥

त्रैलोक्यपूजितेदेविकमलेविष्णुवल्लभे ॥ यथात्वमचलाकृष्णे तथाभवमयिस्थिरा ॥ १ ॥ ईश्वरीकमलालक्ष्मीश्चलाभूतिर्हरि प्रिया ॥ पद्मापद्मालयासम्यगुच्चैःश्रीपद्मधारिणी ॥ २ ॥ द्वाद

शैतानिनामानिलक्ष्मींसम्पूज्ययःपठेत् ॥ स्थिरालक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिःसह ॥ ३ ॥ इतिश्रीकमलात्मिकास्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथकवचम् ॥

अथवक्ष्येमहेशानिकवचंसर्व्वकामदम् ॥ यस्यविज्ञानमात्रेणभवेत्साक्षात्सदाशिवः ॥ १ ॥ नार्च्चनन्तस्यदेवेशिमन्त्रमात्रञ्जपेन्नरः ॥ सभवेत्पार्व्वतीपुत्रःसर्व्वशास्त्रविशारदः ॥ २ ॥ विद्यार्थिनांसदाविद्याधनदातृविशेषतः ॥ धनार्त्थिभिस्सदासेव्याकमलाविष्णुवल्लभा ॥ ३ ॥ अस्याश्चतुरक्षरीविष्णुवल्लभायाःकवचस्य भगवान्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोवाग्भवीशक्तिर्देवता वाग्भवंबीजम् लज्जारमाकीलकम् कामबीजात्मकङ्कवचम् ममसुपाण्डित्यकवित्वसर्व्वसिद्धिसमृद्धयेविनियोगः ॥ ऐँकारोमस्तकेपातुवाग्भवीसर्व्वसिद्धिदा ॥ ह्रीँपातुचक्षुषोर्म्मध्येचक्षुर्युग्मेचशाङ्करी ॥ ४ ॥ जिह्वायाम्मुखवृत्तेकर्ण्णयोर्दन्तयोर्न्नसि ॥ ओष्ठाधरेदन्तपङ्क्तौतालुमूलेहनौपुनः ॥ ५ ॥ पातुमाँविष्णुवनितालक्ष्मीः श्रीवर्ण्णरूपिणी ॥ ६ ॥ कर्ण्णयुग्मेभुजद्वन्द्वेस्तनद्वन्द्वेचपार्व्वती ॥ हृदयेमणिबन्धेचग्रीवायाम्पार्श्वयोःपुनः ॥ ७ ॥ पृष्ठदेशेतथागुह्येवामेचदक्षिणेतथा ॥ उपस्थेचनितम्बेचनाभौजङ्घाद्वयेपुनः ॥ ८ ॥ जानुचक्रेपदद्वन्द्वेघुटिकेङ्गुलिमूलके ॥ स्वधातुप्राणशक्त्यात्मसीमन्तेमस्तकेपुनः ॥ ९ ॥ विजयापातुभवनेजयापातुसदामम ॥ सर्वाङ्गेपातुकामेशीमहादेवीसरस्वती ॥ १० ॥ तुष्टिःपातुमहामायाउत्कृष्टिःसर्व्वदावतु ॥ ऋद्धिःपातुमहादेवीसर्व्वत्रशम्भुवल्लभा ॥ ११ ॥ वाग्भवीसर्व्वदापातुपातुमांहरगेहिनी ॥ रमापातुसदादेवी पातुमायास्वराट्स्वयम् ॥ १२ ॥ सर्व्वाङ्गेपातुमाँल्लक्ष्मीर्विष्णुमायासुरेश्वरी ॥ शिवदूतीसदापातुसुन्दरीपातुसर्व्वदा ॥

॥ १३ ॥ भैरवीपातुसर्व्वत्रभेरुण्डासर्व्वदावतु ॥ त्वरितापातुमान्नित्यमुग्रतारासदावतु ॥ १४ ॥ पातुमाङ्कालिकानित्यङ्कालरात्रिःसदावतु ॥ नवदुर्ग्गासदापातुकामाक्षीसर्व्वदावतु ॥१५॥ योगिन्यःसर्व्वदापान्तुमुद्राऽपान्तुसदामम ॥ मात्राऽपान्तुसदादेव्यश्चक्रस्थायोगिनीगणाः ॥१६॥सर्व्वत्रसर्व्वकार्य्येषुसर्व्वकर्म्मसुसर्व्वदा॥पातुमान्देवदेवीचलक्ष्मीःसर्व्वसमृद्धिदा॥१७॥ इतितेकथितंदिव्यङ्कवचंसर्व्वसिद्धये ॥ यत्रतत्रनवक्तव्यँय्यदीच्छेदात्मनोहितम् ॥ १८ ॥शठायभक्तिहीनायनिन्दकायमहेश्वरि॥न्यूनाङ्गेचातिरिक्ताङ्गेदर्शयेन्नकदाचन ॥१९॥नस्तवन्दर्शयेद्दिव्यंसन्दर्श्यशिवहाभवेत्॥कुलीनायमहेच्छायदुर्ग्गाभक्तिपरायच॥२०॥ वैष्णवायविशुद्धायदद्यात्कवचमुत्तमम्॥निजशिष्यायशान्तायधनिनेज्ञानिनेतथा ॥ २१ ॥ दद्यात्कवचमित्युक्तंसर्व्वतन्त्रसमन्वितम् ॥ शनौमङ्गलवारेचरक्तचन्दनकैस्तथा ॥ २२॥ यावकेनलिखेन्मत्रंसर्व्वतन्त्रसमन्वितम् ॥ विलिख्यकवचन्दिव्यंस्वयम्भुकुसुमैःशुभैः ॥ २३ ॥ स्वशुक्रैऽपरशुक्रैर्वानानागन्धसमन्वितैः ॥ गोरोचनाकुङ्कुमेनरक्तचन्दनकेनवा ॥ २४ ॥ सुतिथौशुभयोगेवाश्रवणायांरवेर्द्दिने ॥ अश्विन्याङ्कृत्तिकायाँव्वाफल्गुन्याँव्वामघासुच ॥ २५ ॥ पूर्व्वभाद्रपदायोगेस्वात्याम्मङ्गलवासरे ॥ विलिखेत्प्रपठेत्स्तोत्रंशुभयोगेसुरालये ॥ २६ ॥ आयुष्मत्प्रीतियोगेचब्रह्मयोगेविशेषतः ॥ इन्द्रयोगेशुभेयोगेशुक्रयोगेतथैवच ॥ ॥ २७ ॥ कौलवेबालवेचैववणिजेचैवसत्तमः ॥ शून्यागारेश्मशानेच विजनेचविशेषतः ॥ २८ ॥ कुमारीम्पूजयित्वादौयजेद्देवींसनातनीम् ॥ मत्स्यैर्म्मांसैःशाकसूपैःऽपूजयेत्परदेवताम् ॥ ॥ २९ घृताद्यैःसोपकरणैःऽपूपसूपैर्व्विशेषतः ॥ ब्राह्मणान्भोजयित्वाचपूजयेत्परमेश्वरीम् ॥ ३० ॥ अखेटकमुपाख्यानंतत्रकु

ध्यांद्दिनत्रयम् ॥ तदाधरेन्महाविद्यांशङ्करेणप्रभाषिताम् ॥ ३१॥ मारणद्वेषणादीनिलभतेनात्रसंशयः ॥ सभवेत्पार्व्वतीपुत्रःसर्व्वशास्त्रपुरस्कृतः ॥ ३२ ॥ गुरुर्द्देवोहरःसाक्षात्पत्नीतस्यहरप्रिया ॥ अभेदेनभजेद्यस्तुतस्यसिद्धिरदूरतः ॥ ३३ ॥ पठतियइहमर्त्त्योंनित्यमार्द्रान्तरात्माजपफलमनुमेयँल्लप्स्यतेयाद्विधेयम् ॥ सभवतिपदमुच्चैस्सम्पदाम्पादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मील्लक्षणानाञ्चिराय ॥३४॥ इतिविश्वसारतन्त्रेकमलात्मिकाकवचंसमाप्तम्॥

अथहृदयम् ॥

आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीहृदयमालामन्त्रस्यभार्ग्गवऋषिः । आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीर्द्देवता ॥ अनुष्टुबादिनानाछन्दांसि ॥ श्रींबीजं ह्रींशक्तिः ऐंकीलकम् आद्यादिमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्त्थंजपेविनियोगः॥ अथन्यासः॥ ॐभार्ग्गवऋषयेनमः शिरसि अनुष्टुबादिनानाछन्दोभ्योनमः मुखे आद्यादिश्रीमहालक्ष्म्यैदेवतायैनमो हृदये श्रींबीजायनमःगुह्ये ह्रींशक्तयेनमः पादयोः ऐंकीलकायनमः सर्व्वाङ्गे ॥ अथकरन्यासः ॥ ॐश्रींअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ॐह्रींतर्ज्जनीभ्यान्नमः ॐऐंमध्यमाभ्यान्नमः ॐ श्रींअनामिकाभ्यान्नमः ॐह्रींकनिष्ठिकाभ्यान्नमः ॐऐंकरतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः । ॐश्रींहृदयायनमःॐह्रींशिरसेस्वाहा ॐऐंशिखायैवषट् ॐश्रींकवचायहूम् ॐह्रींनेत्रत्रयायवौषट् ॐऐंअस्त्रायफट् ॐश्रींह्रींऐंइतिदिग्बन्धः ॥ अथध्यानम् ॥ हस्तद्वयेनकमले धारयन्तींस्वलीलया ॥ हारनूपुरसँय्युक्ताँल्लक्ष्मीन्देवीँव्विचिन्तये ॥ इतिध्यात्वासम्पूज्य ॥ शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णेसुवासिनि ॥ ममदेहिवरँल्लक्ष्मिसर्व्वसिद्धिप्रदायिनि ॥ इतिसम्प्रार्त्थ्य "ॐश्रींह्रींऐंमहालक्ष्म्यैकमलधारिण्यैसिंहवाहिन्यैस्वाहा।" इतिमन्त्रञ्जपित्वा पु

न्ऽपूर्व्ववद्धृदयादिषडङ्गन्यासङ्कृत्वा स्तोत्रम्पठेत् ॥तादित्थम्॥व न्देलक्ष्मीम्पराशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभान्तेजोरूपाङ्कनकवसनां सर्व्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् ॥ बीजापूरङ्कनककलशं हेमपद्मन्दधानामा द्यांशक्तिंसकलजननीं व्विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥ १ ॥ श्रीमत्सौ भाग्यजननींस्तौमिलक्ष्मींसनातनीम् ॥ सर्व्वकामफलावाप्तिसा धनैकसुखावहाम् ॥ २ ॥ स्मरामिनित्यन्देवेशित्वयाप्रेरितमा नसः ॥ त्वदाज्ञांशिरसाधृत्वाभजामिपरमेश्वरीम् ॥ ३ ॥ समस्त सम्पत्सुखदाम्महाश्रियं समस्तसौभाग्यकरीम्महाश्रियम् ॥ सम स्तकल्याणकरीम्महाश्रियम्भजाम्यहंज्ञानकरीम्महाश्रियम्॥४॥ विज्ञानसम्पत्सुखदांसनातनींव्विचित्रवाग्भूतिकरीम्मनोहराम् ॥ अनन्तसामोदसुखप्रदायिनीन्नमाम्यहम्भूतिकरींहरिप्रियाम् ॥५॥ समस्तभूतान्तरसंस्थितात्वं समस्तभोक्त्रीश्वरिविश्वरूपे ॥ त न्नास्तियत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तुत्वत्पादपद्मम्प्रणमाम्यहंश्रीः ॥ ६ ॥ दारिद्र्यदुःखौघतमोपहन्त्रि त्वत्पादपद्मम्मयिसान्निधत्स्व॥दीना र्त्तिविच्छेदनहेतुभूतैः कृपाकटाक्षैरभिषिञ्चमांश्रीः ॥७॥ अम्बप्र सीदकरुणासुधयाद्र्द्रदृष्ट्या मान्त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमङ्कुरुष्व ॥ आलोकयप्रणतहृद्गतशोकहन्त्रि त्वत्पादपद्मयुगलम्प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ८ ॥ शान्त्यैनमोस्तुशरणागतरक्षणायै कान्त्यैनमो स्तुकमनीयगुणाश्रयायै ॥ क्षान्त्यैनमोस्तुदुरितक्षयकारणायैधा त्र्यैनमोऽतुधनधान्यसमृद्धिदायै ॥९॥ शक्त्यैनमोस्तुशशिशेखर संस्तुतायैरत्यैनमोऽस्तुरजनीकरसोदरायै ॥ भक्त्यैनमोऽस्तुभव सागरतारकायै मत्यैनमोऽस्तुमधुसूदनवल्लभायै ॥ १० ॥ लक्ष्म्यै नमोस्तुशुभलक्षणलक्षितायै सिद्ध्यैनमोस्तुशिवसिद्धसुपूजि तायै ॥ धृत्यैनमोस्त्वमितदुर्ग्गतिभञ्जनायै गत्यैनमोस्तुवरस द्गतिदायकायै ॥ ११ ॥ देव्यैनमोस्तुदिविदेवगणार्च्चितायै भू

त्यैनमोऽस्तुभुवनार्त्तिविनाशनायै ॥ दात्र्यैनमोस्तुधरणीधरवल्ल भायै पुष्ट्यैनमोऽस्तुपुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ १२ ॥ सुतीव्रदारि द्र्यविदुःखहन्त्र्यै नमोऽस्तुतेसर्व्वभयापहन्त्र्यै ॥ श्रीविष्णुवक्षः स्थलसंस्थितायै नमोनमस्सर्व्वविभूतिदायै ॥ १३ ॥ जयतुज यतुलक्ष्मीर्लक्षणालङ्कृताङ्गी जयतुजयतुपद्मापद्मसद्माभिवन्द्या ॥ जयतुजयतुविद्या विष्णुवामाङ्कसंस्था जयतुजयतुसम्यक्सर्व्व सम्पत्करीश्रीः ॥ १४ ॥ जयतुजयतुदेवी देवसङ्घाभिपूज्या जय तुजयतुभद्राभार्ग्गवीभाग्यरूपा ॥जयतुजयतुनित्यानिर्म्मलज्ञान वेद्या जयतुजयतुसत्यासर्व्वभूतान्तरस्था ॥ १५ ॥ जयतुजय तुरम्यारत्नगर्म्भान्तरस्था जयतुजयतुशुद्धाशुद्धजाम्बूनदाभा ॥ जयतुजयतुकान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी जयतुजयतुशान्ताशी घ्रमागच्छसौम्ये ॥ १६ ॥ यस्याःकलाद्याःकमलोद्भवाद्या रु द्राश्चशक्रप्रमुखाश्चदेवाः ॥ जीवन्तिसर्व्वाअपिशक्तयस्ताः प्र भुत्वमाताःपरमायुषस्ते ॥ १७ ॥ लिलेखनिटिलेविधिर्म्मम लिपिंव्विसृज्यान्तरन्त्वयाविलिखितव्यमेतदितितत्फलप्राप्तये ॥ तदन्तरफलेस्फुटङ्कमलवासिनी श्रीरिमां समर्प्पयसमुद्रिकांस कलभाग्यसंसूचिकाम् ॥ १८ ॥ कलयातेयथादेविजीवन्तिसच राचराः ॥ तथासम्पत्करेलक्ष्मिसर्व्वदासम्प्रसीदमे ॥ १९ ॥ य थाविष्णुर्द्ध्रुवेनित्यं स्वकलांसन्न्यवेशयत् ॥ तथैवस्वकलांलक्ष्मि मयिसम्यक्समर्प्पय ॥ २० ॥ सर्व्वसौख्यप्रदेदेवि भक्तानामभ यप्रदे ॥ अचलाङ्कुरुयत्नेन कलाम्मयिनिवेशिताम् ॥ २१ ॥ मुदास्ताम्मद्भालेपरमपदलक्ष्मीःस्फुटकला सदावैकुण्ठश्रीर्न्निवस तुकलामेनयनयोः॥वसेत्सत्यलोकेममवचासिलक्ष्मीवरकला श्रि यश्श्वेतद्वीपेनिवसतुकलामे स्वकरयोः ॥ २२ ॥ तावन्नित्यम्म माङ्गेषुक्षीराब्धौश्रीकलावसेत् ॥ सूर्य्याचन्द्रमसौयावद्यावल्लक्ष्मी

पतिःश्रिया ॥ २३ ॥ सर्व्वमङ्गलसम्पूर्णासर्व्वैश्वर्य्यसमन्विता
आद्यादिश्रीमहालक्ष्मि त्वत्कलामयितिष्ठतु ॥ २४ ॥ अज्ञान
न्तिमिरंहन्तुंशुद्धज्ञानप्रकाशिका ॥सर्व्वैश्वर्य्यप्रदामेस्तुत्वत्कला
मयिसंस्थिता ॥ २५ ॥ अलक्ष्मींहरतुक्षिप्रन्तमःसूर्य्यप्रभायथा
वितनोतुममश्रेयस्त्वत्कलामयिसंस्थिता ॥ २६ ॥ ऐश्वर्य्यं
मङ्गलोत्पत्तिस्त्वत्कलायान्निधीयते ॥मयितस्मात्कृतार्थोऽस्मि
पात्रमस्मिस्थितेस्तव ॥ २७ ॥ भवदावेशभाग्यार्हो भाग्यवान
स्मिभार्ग्गवि ॥ त्वत्प्रसादात्पवित्रोहंल्लोकमातर्न्नमोस्तुते ॥२८॥
पुनासिमान्त्वङ्कुलयैवयस्मादतः समागच्छममाग्रतस्त्वम् ॥ पर
म्पदंश्रीर्भवसुप्रसन्नामय्यच्युतेनप्रविशादिलक्ष्मि ॥ २९ ॥ श्री
वैकुण्ठेस्थितेलक्ष्मिसमागच्छममाग्रतः ॥ नारायणेनसहमांकृ
पादृष्ट्यावलोकय॥ ३० ॥ सत्यलोकस्थितेलक्ष्मित्वम्ममागच्छ
सन्निधिम् ॥ वासुदेवेनसहिताप्रसीदवरदाभव ॥ ३१ ॥ श्वेत
द्वीपस्थितेलक्ष्मि शीघ्रमागच्छसुव्रते ॥ विष्णुनासहितेदेविज
गन्मातःप्रसीदमे ॥ ३२ ॥ क्षीराम्बुधिस्थितेलक्ष्मि समागच्छ
समाधवे ॥ त्वत्कृपादृष्टिसुधया सततम्माँव्विलोकय ॥ ३३ ॥
रत्नगर्भेस्थितेलक्ष्मिपरिपूर्णेहिरण्मयि ॥ समागच्छसमागच्छ
स्थित्वाशुपुरतोमम ॥ ३४ ॥ स्थिराभवमहालक्ष्मिनिश्चलाभव
निर्म्मले ॥ प्रसन्नेकमलेदेवि प्रसन्नहृदयाभव ॥ ३५ ॥ श्रीध
रेश्रीमहाभूते त्वदन्तःस्थम्महानिधिम् ॥ शीघ्रमुद्धृत्यपुरतःप्रद
र्शयसमर्प्पय ॥ ३६ ॥ वसुन्धरेश्रीवसुधेवसुदोग्ध्रिकृपामयि ॥
त्वत्कुक्षिगतसर्व्वस्वंशीघ्रम्मेसम्प्रदर्शय ॥३७॥ विष्णुप्रियेरत्न
गर्भे समस्तफलदेशिवे ॥त्वद्गर्भगतहेमादीन्सम्प्रदर्शयदर्श
य ॥३८ ॥ रसातलगतेलक्ष्मिशीघ्रमागच्छमेपुरः ॥ नजानेपर
मंरूपम्मातर्म्मेसम्प्रदर्शय ॥ ३९ ॥ आविर्भवमनोवेगाच्छीघ्रमा

गच्छमेपुरः॥मावत्सभैरिहेत्युक्त्वाकामङ्गौरिवरक्षमाम् ॥४०॥देवि शीघ्रंसमागच्छधरणीगर्भसंस्थिते ॥ मातस्त्वद्भृत्यभृत्योहम्मृग येत्वाङ्कुतूहलात्॥४१॥ उत्तिष्ठजागृहित्वम्मेसमुत्तिष्ठसुजागृहि अक्षयान्हेमकलशान् सुवर्णेनसुपूरितान् ॥ ४२॥ निक्षेपान्मेसमा कृष्यसमुद्धृत्यममाग्रतः ॥समुन्नताननाभूत्वासमाधेहिधरान्तरात् ॥ ४३ ॥ मत्सन्निधिंसमागच्छ मदाहितकृपारसात् ॥ प्रसीद श्रेयसान्दोग्ध्रि लक्ष्मिमेनयनाग्रतः ॥ ४४ ॥ अत्रोपविशलक्ष्मि त्वं स्थिराभवहिरण्मयि ॥ सुस्थिराभवसम्प्रीत्याप्रसीदवरदाभ व ॥ ४५ ॥ आनीयत्वन्तथादेवि निधीन्मेसम्प्रदर्शय ॥ अ द्यक्षणेनसहसादत्वासंरक्षमांसदा ॥ ४६ ॥ मयितिष्ठतथानित्यँ य्यथेन्द्रादिषुतिष्ठसि॥ अभयङ्कुरुमे देवि महालक्ष्मिनमोऽस्तु ते ॥ ४७ ॥ समागच्छमहालक्ष्मि शुद्धजाम्बूनदप्रभे ॥ प्रसीद पुरतःस्थित्वा प्रणतम्माँव्विलोकय ॥ ४८ ॥ लक्ष्मिभुवङ्गता भासियत्रयत्रहिरण्मयी ॥ तत्रतत्रस्थितात्वम्मेतवरूपम्प्रदर्शय ॥ ४९ ॥ क्रीडसेबहुधाभूमौ परिपूर्णाहिरण्मयी ॥ ममर्मूर्द्धनिते हस्तमविलम्बितमर्प्पय ॥ ५० ॥ फलद्भाग्योदयेलक्ष्मि समस्त पुरवासिनि ॥ प्रसीदमेमहालक्ष्मि परिपूर्णमनोरथे ॥ ५१ ॥ अयोध्यादिषुसर्व्वेषुनगरेषुसमास्थिते ॥ वैभवैर्व्विविधैर्य्युक्ता स मागच्छबलान्विते ॥ ५२ ॥ समागच्छसमागच्छममाग्रेभवसु स्थिरा ॥ करुणारसनिष्यन्दनेत्रद्वयविलासिनी ॥ ५३ ॥ सन्नि धत्स्वमहालक्ष्मि त्वत्पाणिम्ममस्तके ॥ करुणासुधयामान्त्व मभिषिञ्चस्थिरीकुरु ॥ ५४ ॥ सर्व्वराजगृहेलक्ष्मि समागच्छ मुदान्विते ॥ स्थित्वाशुपुरतोमेऽद्यप्रसादेनाभयङ्कुरु ॥ ५५ ॥ सादरम्मस्तकेहस्तम्ममत्वङ्कृपयार्प्पय ॥ सर्व्वराजगृहेलक्ष्मि त्वत्कलामयितिष्ठतु ॥५६॥ आद्यादिश्रीमहालक्ष्मि विष्णुवामा

ङ्कसंस्थिते ॥ प्रत्यक्षङ्कुरुमेरूपं रक्षमांशरणागतम् ॥ ५७ ॥ प्रसीदमेमहालक्ष्मि सुप्रसीदमहाशिवे ॥ अचलाभवसम्प्रीत्या सुस्थिराभवमद्गृहे ॥ ५८ ॥ यावत्तिष्ठन्तिवेदाश्च यावत्त्वन्नामतिष्ठति ॥ यावद्विष्णुश्चयावत्त्वन्तावत्कुरुकृपाम्मयि ॥ ५९ ॥ चान्द्रीकलायथाशुक्ले वर्द्धतेसादिनेदिने॥तथादयातेमय्येव वर्द्धतामभिवर्द्धताम् ॥ ६० ॥ यथावैकुण्ठनगरे यथावैक्षीरसागरे ॥ तथामद्भवनेतिष्ठस्थिरंश्रीविष्णुनासह ॥ ६१ ॥ योगिनांहृदये नित्यँय्यथातिष्ठसिविष्णुना ॥ तथामद्भवनेतिष्ठस्थिरंश्रीविष्णुनासह ॥ ६२ ॥ नारायणस्यहृदये भवतीयथास्ते नारायणोपि तवहृत्कमलेयथास्ते ॥ नारायणस्त्वमपिनित्यमुभौतथैवतौतिष्ठतांहृदिममापिदयावतिश्रीः ॥ ६३ ॥ विज्ञानवृद्धिंहृदयेकुरुश्रीः सौभाग्यवृद्धिङ्कुरुमेगृहेश्रीः ॥ दयासुवृद्धिङ्कुरुताम्मयिश्रीः सुवर्णवृद्धिङ्कुरुमेगृहेश्रीः ॥ ६४ ॥ नमान्त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि सद्भक्ताचिन्तामणिकामधेनो ॥ विश्वस्यमातर्भवसुप्रन्ना गृहेकलत्रेषुचपुत्रवर्गे ॥ ६५ ॥ आद्यादिमायेत्वमजाण्डबीजन्त्वमेवसाकारनिराकृतिस्त्वम् ॥ त्वयाधृताश्चाब्जभवाण्डसङ्घाश्चित्रञ्चरित्रन्तवदेविविष्णोः ॥ ६६ ॥ ब्रह्मरुद्रादयोदेवावेदाश्चापि नशक्नुयुः ॥ महिमानन्तवस्तोतुम्मन्दोऽहंशक्नुयाङ्कथम् ॥ ६७ ॥ अम्बत्वद्वत्सवाक्यानि सूक्तासूक्तानियानिच ॥ तानिस्वीकुरुसर्वज्ञे दयालुत्वेनसादरम् ॥ ६८ ॥ भवतींशरणङ्गत्वाकृतार्थाः स्युःपुरातनाः ॥ इतिसञ्चिन्त्यमनसात्वामहंशरणँव्व्रजे ॥ ६९ ॥ अनन्तानित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः ॥ इतिवेदप्रमाणाद्धिदेवित्वांशरणँव्व्रजे ॥ ७० ॥ तवप्रतिज्ञामद्भक्तानश्यन्तीत्यपिक्वचित् ॥ इतिसञ्चिन्त्यसञ्चिन्त्यप्राणान्सन्धारयाम्यहम् ॥ ७१ ॥ त्वदधीनस्त्वहंमातस्त्वत्कृपामयिविद्यते ॥ यावत्सम्पूर्णकामः

स्यात्तावद्देहिदयानिधे ॥७२॥क्षणमात्रन्नशक्नोमिजीवितुन्त्वत्कृपाँव्विना॥नजीवन्तीहजलजाजलन्त्यक्काजलग्रहाः॥७३॥यथाहि पुत्रवात्सल्याज्जननीप्रस्नुतस्तनी ॥ वत्सन्त्वरितमागत्यसम्प्रीणयतिवत्सला॥७४॥यदिस्यान्तवपुत्रोऽहम्मातात्वँय्यदिमामकी ॥दयापयोधरस्तन्यसुधाभिरभिषिञ्चमाम् ॥ ७५ ॥ मृग्योनगुण लेशोपिमयिदोषैकमन्दिरे ॥पांसूनाँव्वृष्टिबिन्दूनान्दोषाणाञ्चनमे मितिः ॥ ७६ ॥ पापिनामहमेवाग्र्योदयालूनान्त्वमग्रणीः ॥ दय नीयोमदन्योऽस्तितवकोत्रजगत्रये ॥ ७७ ॥ विधिनाहन्नसृष्टश्चे न्नस्यात्तवदयालुता ॥ आमयोवानसृष्टश्चेदौषधस्यवृथोदयः ॥ ॥ ७८ ॥ कृपामदग्रजाकिन्तेअहङ्किंव्वातदग्रजः ॥ विचार्य्यदेहि मेवित्तन्तवदेविदयानिधे ॥ ७९ ॥ मातापितात्वङ्गुरुसद्गतिः श्री स्त्वमेवसञ्जीवनहेतुभूता ॥अन्यन्नमन्येजगदेकनाथेत्वमेवसर्व्वम्म मदेविसत्ये ॥ ८० ॥ आद्यादिलक्ष्मीर्भवसुप्रसन्नाविशुद्धविज्ञान सुखैकदोग्ध्री ॥ अज्ञानहन्त्रीत्रिगुणातिरिक्ताप्रज्ञाननेत्रीभवसु प्रसन्ना ॥ ८१ ॥ अशेषवाग्जाड्यमलापहन्त्रीनवन्नवंस्पष्टसुवा क्प्रदायिनी ॥ ममेहजिह्वाग्रसुरङ्गनर्त्तकीभवप्रसन्नावदनेचमेश्रीः ॥ ८२ ॥ समस्तसम्पत्सुविराजमानासमस्ततेजश्चयभासमाना ॥ विष्णुप्रियेत्वम्भवदीप्यमानावाग्देवतामेनयनेप्रसन्ना ॥ ८३ ॥ सर्व्वप्रदर्शेसकलार्त्थदेत्वम्प्रभासुलावण्यदयाप्रदोग्ध्री॥सुवर्णदे त्वंसुमुखीभवश्रीर्हिरण्मयीमेनयनेप्रसन्ना॥८४॥सर्व्वार्त्थदासर्व्वज गत्प्रसूतिःसर्व्वेश्वरीसर्व्वभयापहन्त्री ॥ सर्व्वोन्नतात्वंसुमुखीभव श्रीर्हिरण्मयीमेनयनेप्रसन्ना ॥ ८५ ॥ समस्तविघ्नौघविनाशकारि णीसमस्तभक्तोद्धरणेविचक्षणा ॥ अनन्तसौभाग्यसुखप्रदायि नीहिरण्मयीमेनयनेप्रसन्ना ॥ ८६ ॥ देविप्रसीददयनीयतमाय मह्यन्देवाधिनाथभवदेवगणाभिवन्द्ये ॥ मातस्तथैवभवसान्निहिता

दृशोर्म्मेपत्यासमम्ममुखेभवसुप्रसन्ना ॥८७॥ मावत्सभैरभयदा नकरोऽर्प्पितस्तेमौलौममेतिममदीनदयानुकम्पे ॥मातःसमर्प्पय मुदाकरुणाकटाक्षम्माङ्गल्यबीजमिहनःसृजजन्ममातः ॥ ८८ ॥ कटाक्षइहकामधुक्तवमनस्तुचिन्तामणिःकरःसुरतरुः सदानव निधिस्त्वमेवेन्दिरे॥ भवेतवदयारसोममरसायनञ्चान्वहम्मुखन्त व कलानिधिर्व्विविधवाञ्छितार्थप्रदम् ॥८९॥यथारसस्पर्शनतो ऽयसोपिसुवर्णतास्यात्कमलेतथाते ॥ कटाक्षसंस्पर्शनतोज नानाममङ्गलानामपिमङ्गलन्त्वम् ॥ ९० ॥ देहीतिनास्तीति वचःप्रवेशाद्भीतोरमेत्वांशरणम्प्रपद्ये ॥ अतःसदास्मिन्नभयप्रदा त्वंसहैवपत्यामयिसन्निधेहि ॥ ९१॥ कल्पद्रुमेणमणिनासहिता सुरम्याश्रीस्तेकलामयिरसेनरसायनेन ॥ आस्ताँय्यतोममचदृक् शिरपाणिपादस्पृष्टाःसुवर्णवपुषःस्थिरजङ्गमाःस्युः ॥ ९२ ॥ आद्यादिविष्णोःस्थिरधर्म्मपत्नीत्वमेवपत्यामयिसन्निधेहि ॥ आ द्यादिलक्ष्मित्वदनुग्रहेणपदेपदेमेनिधिदर्शनंस्यात् ॥९३ ॥ आ द्यादिलक्ष्मीहृदयम्पठेद्यःसराज्यलक्ष्मीमचलान्तनोति ॥ महाद रिद्रोपिभवेद्धनाढ्यस्तदन्वयेश्रीःस्थिरताम्प्रयाति ॥९४॥ यस्य स्मरणमात्रेणतुष्टास्याद्विष्णुवल्लभा ॥ तस्याभीष्टन्ददात्याशुत म्पालयतिपुत्रवत् ॥ ९५ ॥ इदंरहस्यंहृदयंसर्व्वकामफलप्रदम् ॥ जपःपञ्चसहस्रन्तुपुरश्चरणमुच्यते ॥ ९६॥ त्रिकालमेककालँव्वा नरोभक्तिसमन्वितः ॥ यःपठेच्छृणुयाद्वापिसयातिपरमांश्रियम् ॥ ९७ ॥ महालक्ष्मींसमुद्दिश्यनिशिभार्ग्गववासरे ॥ इदंश्रीहृ दयञ्जप्त्वापञ्चवारन्धनीभवेत् ॥९८॥ अनेनहृदयेनान्नङ्गर्भिण्या अभिमन्त्रितम् ॥ ददातितत्कुलेपुत्रोजायतेश्रीपतिःस्वयम् ॥ ॥ ९९ ॥ नरेणवाथवानार्य्यालक्ष्मीहृदयमन्त्रिते ॥ जलेपीते चतद्वंशेमन्दभाग्योनजायते॥१००॥यआश्विनेमासिचशुक्लपक्षेर

मोत्सवेसन्निहितैकभक्त्या ॥पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्धयालभेत्ससौव र्णमयींसुवृष्टिम् ॥१०१॥यएकभक्तोन्वहमेकवर्षविशुद्धधीःसप्त तिवारजापी ॥समन्दभाग्योपिरमाकटाक्षाद्भवेत्सहस्राक्षशताधिक श्रीः ॥१०२॥श्रीशांघ्रिभक्तिंहरिदासदास्यम्प्रसन्नमन्त्रार्थदृढैक निष्ठाम् ॥ गुरोःस्मृतिन्निर्मलबोधबुद्धिम्प्रदेहिमातःपरमम्पदंश्रीः ॥१०३॥ पृथ्वीपतित्वम्पुरुषोत्तमत्वंविभूतिवासंविविधार्त्थसि द्धिम् ॥ सम्पूर्णकीर्तिम्बहुवर्षभोगंप्रदेहिमेलक्ष्मिपुनःपुनस्त्व ॥१०४॥ वादार्त्थसिद्धिम्बहुलोकवश्यंव्वयःस्थिरत्वंल्ललनासुभो गम् ॥ पौत्रादिलब्धिसकलार्त्थसिद्धिम्प्रदेहिमेभार्गविजन्मजन्म नि ॥ १०५ ॥ सुवर्णवृद्धिङ्कुरुमेगृहेश्रीविभूतिवृद्धिङ्कुरुमेगृहे श्रीः ॥ १०६ ॥ अथशिरोबीजम् ॥ ओंयंहंकंलंपंश्रींध्यायेल्लक्ष्मी म्प्रहसितमुखींङ्कोटिबालार्कभासांविद्युद्वर्णाम्बरवरधराम्भूषणा ढ्यांसुशोभाम् ॥ बीजापूरंसरसिजयुगंबिभ्रतींस्वर्णपात्रम्भर्त्रायु क्ताम्मुहुरभयदाम्मह्यमप्यच्युतश्रीः ॥ १०७ ॥ गुह्यातिगुह्यगो प्त्रीत्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ॥ सिद्धिर्भवतुमेदेवित्वत्प्रसादा न्मयिस्थिता ॥ १०८ ॥ ॥ इतिश्रीअथर्व्वणरहस्येलक्ष्मीहृ दयस्तोसम्पूर्णम् ॥

अथोपनिषत् ॥

अथलोकान्पर्य्यटन्सनत्कुमारोहवैदेहःपुण्याचितांल्लोकान तीत्यवैष्णवन्धामदिव्यगणोपेतंव्विद्रुमवेदिकामणिमुक्तागणार्च्चि तम्प्राप ॥तत्रापश्यन्महामायाम्पराद्धर्च्यवस्त्राभरणोत्तरीयाम्पर्य्य ङ्कस्थाम्परिचरन्तीमादिदेवम्भगवन्तम्परमेश्वरन्दृष्ट्वाचताङ्गद्गद वाक्प्रफुल्लरोमास्तोतुमुपचक्रमे ॥वाचम्मेदिशतुश्रीर्देवीमनोमेदि शतुवैष्णवी ॥ ओजस्तेजोबलन्दाक्ष्यम्बुद्धेर्वैभवमस्तुमे ॥ त्व

त्प्रसादाद्भगवति प्रज्ञानम्मेध्रुवम्भवेत् ॥ शन्नोदिशतुश्रीर्हैवी महामायावैष्णवीशक्तिराद्यायामासाद्यस्वयमादिदेवोभगवान्प रावरज्ञस्त्रिधासम्भिन्नोलोकांस्त्रीन्सृजत्यवत्यत्तिच ॥ यद्भ्रूविक्षेप बलमापन्नोह्यब्जयोनिस्तादितरेचामरामुख्याःसृष्टिचक्रप्रणेता रस्सम्बभूवुःयावैवरदास्वोपायासुप्रसन्नासुखयातिसहस्रपुरुषान्ये लोकाःसन्ततमानमन्तिशिरसाहृदयेनचतामेकाँल्लोकपून्यान्नते दुर्गतिँय्यान्तिभूताःअथमहत्यासँव्वृद्ध्यासाम्राज्येनपुत्रैःपौत्रै रन्वितोभूमिपृष्ठेशतंसमास्तइज्याभिरिष्ट्वादेवान्पितॄन्मनुष्या नथभूरिदक्षिणाभिस्त्वत्प्रसादान्महान्तोगच्छान्तिवैष्णवँल्लोकमपु नर्भवाययेराजर्षयोब्रह्मर्षयस्तेपिचासत्कृत्त्वाम्प्रागसन्तएवसु खमामनन्तिनान्यःपन्थाविद्यतेऽयनायकिम्पुनरिहादिदेवोभगवा न्नारायणस्त्वामाधिदेवाखिलङ्करोतिकिँव्वर्णयेत्वांसहस्रकृत्वो नमस्तेयइमाऋचःपठन्तिप्रातरुत्थायभूरिदानतेषाङ्क्विदिह यावशिष्टँय्यदैश्वर्य्यन्दुर्लभम्प्राणिनांहि ॥ इतिकमलात्मिकोप निषत्समाप्ता ॥

अथश्रीसूक्तम् ॥

ॐहिरण्यवर्णांहरिणींसुवर्णरजतस्रजाम् ॥ चन्द्रांहिरण्म यीँल्लक्ष्मीञ्जातवेदोममावह ॥ १ ॥ ताम्मआवहजातवेदोलक्ष्मी मनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यँव्विन्देयङ्गामश्वम्पुरूषानहम् ॥ ॥ २ ॥ अश्वपूर्णांरथमध्यांहस्तिनादप्रमोदिनीम् ॥ श्रीयन्दे वीमुपह्वयेश्रीर्म्मादेवीजुषताम् ॥ ३ ॥ कांसोस्मितांहिरण्यप्राक रामार्द्राञ्ज्वलन्तीन्तृप्तान्तर्प्पयन्तीम् ॥ पद्मेस्थितताम्पद्मवर्णान्ता मिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ४ ॥ चन्द्राम्प्रभासाँय्यशसाज्वलन्तीँश्रियँ ल्लोकेदेवजुष्टामुदाराम् ॥ ताम्पद्मनेमिंशरणमहम्प्रपद्येअलक्ष्मी

म्मेंनश्यातान्त्वाँव्वृणोमि ॥ ५ ॥ आदित्यवर्णेंतपसोधिजा तोवनस्पतिस्तववृक्षोऽथबिल्वः ॥ तस्यफलानितपसानुदन्तु मायान्तरायाश्चबाह्याअलक्ष्मीः ॥ ६ ॥ उपैतुमान्देवसखः की र्त्तिश्चमणिनासह॥प्रादुर्भूतोसिराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्त्तिँव्वृद्धिन्ददातुमे ॥ ॥ ७ ॥ क्षुत्पिपासामलाज्येष्ठाअलक्ष्मीर्न्नाशयाम्यहम् ॥ अभू तिमसमृद्धिञ्चसर्व्वान्निर्णुदमेगृहात् ॥ ८ ॥ गन्धद्वारान्दुराधर्षां न्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्व्वभूतानान्तामिहोपह्वयेश्रिय म् ॥ ९ ॥ मनसः काममाकूतिंव्वाचःसत्यमशीमहि ॥ पशूनां रूपमन्नस्यमयिश्रीःश्रयताँय्यशः ॥ १० ॥ कर्द्दमेनप्प्रजाभूता मयिसम्भ्रमकर्द्दम ॥ श्रियँव्वासयमेकुलेमातरम्पद्ममालिनीम् ॥ ॥ ११ ॥ आपःसृजन्तुस्निग्धानिचिक्लीतवसमेगृहे ॥ निचेदेवी म्मातरंश्रियँव्वासयमेकुले ॥ १२ ॥ आर्द्राम्पुष्करिणीम्पुष्टिंसु वर्णांहेममालिनीम् ॥ सूर्य्यांहिरणमयींल्लक्ष्मीञ्जातवेदोममावह॥ ॥ १३ ॥ आर्द्राँय्यः करणीँय्यष्टीम्पिङ्गलाम्पद्ममालिनीम्॥चन्द्रां हिरणमयीँलक्ष्मीञ्जातवेदोममावह ॥ १४ ॥ ताम्मआवहजा तवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यांहिरण्यम्प्रभूतङ्गावोदास्यो श्वान्विन्देयम्पुरुषानहम् ॥ १५ ॥ यःशुचिः प्रयतोभूत्वाजुहु यादाज्यमन्वहम् ॥ श्रियःपञ्चदशर्च्चञ्चश्रीकामःसततञ्जपेत् ॥ ॥ १६ ॥ इतिश्रीसूक्तम् ॥ ॥छ॥

अथाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

श्रीशिवउवाच ॥ शतमष्टोत्तरन्नाम्नाङ्कमलायावरानने ॥ प्र वक्ष्याम्यतिगुह्यंहि नकदापिप्रकाशयेत् ॥ १ ॥ महामायामहा लक्ष्मीर्म्महावाणीमहेश्वरी ॥ महादेवीमहारात्रिर्म्महिषासुरम र्द्दिनी ॥ २ ॥ कालरात्रिः कुहूः पूर्णानन्दाद्याभद्रिकानिशा ॥ ज

यारिक्तामहाशक्तिर्देवमाताकृशोदरी ॥ ३ ॥ शचीन्द्राणीशक्रनुता शङ्करप्रियवल्लभा ॥ महावराहजननी मदनोन्मथिनीमही ॥ ॥ ४ ॥ वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षस्स्थलस्थिता ॥ विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाभयदाशिवा ॥५॥ शूलिनीचक्रिणीमाचपाशिनी शङ्खधारिणी ॥ गदिनीमुण्डमालाच कमलाकरुणालया ॥ ६ ॥ पद्माक्षधारिणीह्यम्बा महाविष्णुप्रियङ्करी ॥गोलोकनाथरमणीगोलोकेश्वरपूजिता ॥ ७ ॥ गयागङ्गाचयमुना गोमतीगरुडासना ॥ गण्डकीशरयूतापी रेवाचैवपयस्विनी ॥ ८ ॥ नर्म्मदाचैवकावेरी केदारस्थलवासिनी ॥ किशोरीकेशवनुतामहेन्द्रपरिवन्दिता ॥ ९ ॥ ब्रह्मादिदेवनिर्म्माणकारिणीवेदपूजिता ॥ कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी ॥ १० ॥ श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा ॥ इन्दिरासिन्धुतनया मातङ्गीलोकमातृका ॥ ११ ॥ त्रिलोकजननीतन्त्रातन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी ॥ तरुणीचतमोहन्त्री मङ्गलामङ्गलायना ॥१२॥ मधुकैटभमथनी शुम्भासुरविनाशिनी ॥ निशुम्भादिहरामाताहरिशङ्करपूजिता ॥ ॥ १३ ॥ सर्व्वदेवमयीसर्व्वा शरणागतपालिनी ॥ शरण्याशम्भुवनितासिन्धुतीरनिवासिनी ॥ १४ ॥ गन्धर्व्वगानरसिकागीतागोविन्दवल्लभा ॥ त्रैलोक्यपालिनीतत्त्वरूपातारुण्यपूरिता ॥ १५ ॥ चन्द्रावलीचन्द्रमुखी चन्द्रिकाचन्द्रपूजिता ॥ चन्द्राशशाङ्कभगिनी गीतवाद्यपरायणा ॥ १६ ॥ सृष्टिरूपासृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी॥इतितेकथितन्देवि रमानामशताष्टकम्॥१७॥ त्रिसन्ध्यम्प्रयतोभूत्वापठेदेतत्समाहितः ॥ यंयंकामयतेकामन्तन्तम्प्राप्नोत्यसंशयः ॥ १८॥ इमंस्तवंयःपठतीहमर्त्यो वैकुण्ठपत्न्याःपरमादरेण ॥ धनाधिपाद्यैःपरिवन्दितःस्यात् प्रयास्य

तिश्रीपदमन्तकाले ॥ १९ ॥ इतिकमलायाअष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथसहस्रनाम ॥

ॐतामाह्वयामिसुभगांलक्ष्मीन्त्रैलोक्यपूजिताम् ॥ एह्येहिदेविप द्माक्षिपद्माकरकृतालये ॥ १ ॥ आगच्छागच्छवरदे पश्यमांस्वे नचक्षुषा ॥ आयाह्यायाहिधर्म्मार्त्थकाममोक्षमयेशुभे ॥ २ ॥ ए वँव्विधैःस्तुतिपदैःसत्यैस्सत्यार्त्थसंस्तुता ॥ कनीयसीमहाभागा चन्द्रेणपरमात्मना ॥ ३ ॥ निशाकरश्चसादेवी भ्रातरौद्दौपयोनि धेः ॥ उत्पन्नमात्रौतावास्तांशिवकेशवसंश्रितौ ॥ ४ ॥ सनत्कु मारस्तमृषिं समाभाष्यपुरातनम् ॥ प्रोक्तवानितिहासन्तुलक्ष्म्याः स्तोत्रमनुत्तमम् ॥ ५ ॥ अथेदृशान्महाघोराद्दारिद्र्यान्नरकात्क थम् ॥ मुक्तिर्ब्भवतिलोकेस्मिन् दारिद्र्यँय्यातिभस्मताम्॥ ६ ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ पूर्व्वङ्कृतयुगेब्रह्माभगवान्सर्व्वलोककृत् ॥ सृष्टिन्नानाविधाङ्कृत्वा पश्चाच्चिन्तामुपेयिवान् ॥ ७ ॥ किमाहा राः प्रजास्त्वेताः सम्भविष्यन्तिभूतले ॥ किमत्रचासान्दारिद्र्या त्कथमुत्तारणम्भवेत् ॥ ८ ॥ दारिद्र्यान्मरणंश्रेयस्त्वितिसञ्चि न्त्यत्यचेतसि ॥ क्षीरोदस्योत्तरेकूलेजगामकमलोद्भवः ॥ ९ ॥ त त्रतीव्रन्तपस्तप्त्वा कदाचित्परमेश्वरम्॥ददर्शपुण्डरीकाक्षव्वा सुदेवञ्जगद्गुरुम्॥ १०॥ सर्व्वज्ञंसर्व्वशक्तीनांसर्व्वावासंसनातनम् ॥ सर्व्वेश्वरँव्वासुदेवंव्विष्णुल्लक्ष्मीपतिम्प्रभुम् ॥ ११ ॥ सोमको टिप्रतीकाशं क्षीरोदविमलेजले ॥ अनन्तभोगशयनं विश्रान्तं श्रीनिकेतनम् ॥ १२ ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशम्महायोगेश्वरेश्व रम् ॥ योगनिद्रारतंश्रीशं सर्व्वावासंसुरेश्वरम् ॥ १३ ॥ जगदु त्पत्तिसंहारस्थितिकारणकारणम् ॥ लक्ष्म्यादिशक्तिकरणञ्जा

तमण्डलमण्डितम् ॥ १४ ॥ आयुधैर्द्देहवद्भिश्चचक्राद्यैःपरिवारितम् ॥ दुर्न्निरीक्ष्यंसुरैः सिद्धैर्म्महायोगिशतैरपि ॥१५॥ आधारंसर्व्वशक्तीनाम्परन्तेजःसुदुस्सहम् ॥ प्रबुद्धन्देवमीशानन्दृष्ट्वाकमलसम्भवः ॥ १६ ॥ शिरस्यञ्जलिमाधायस्तोत्रम्पूर्व्वमुवाचह॥ मनोवाञ्छितसिद्धिन्त्वम्पूरयस्वमहेश्वर ॥ १७॥ जितन्तेपुण्डरीकाक्ष नमस्तेविश्वभावन ॥ नमस्तेस्तुहृषीकेशमहापुरुषपूर्व्वज ॥ १८ ॥ सर्व्वेश्वरजयानन्द सर्व्वावासपरात्पर ॥ प्रसीदममभक्तस्यछिन्धिसन्देहजन्तमः ॥ १९ ॥ एवंस्तुतःसभगवान्ब्रह्मणाव्यक्तजन्मना ॥ प्रसादाभिमुखःप्राह हरिर्व्विश्रान्तलोचनः ॥ ॥ २० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ हिरण्यगर्भतुष्टोस्मिब्रूहियत्तेऽभिवाञ्छितम् ॥ तद्वक्ष्यामिनसन्देहोभक्तोसिममसुव्रत ॥ २१ ॥ केशवाद्वचनंश्रुत्वाकरुणाविष्टचेतनः ॥प्रत्युवाचमहाबुद्धिर्भगवन्तञ्जनार्द्दनम् ॥२२॥ चतुर्व्विधभवस्यास्यभूतसर्गस्यकेशव ॥ परित्राणायमेब्रूहि रहस्यम्परमाद्भुतम् ॥ २३ ॥ दारिद्र्यशमनन्धन्यम्मनोज्ञम्पावनम्परम् ॥ सर्व्वेश्वरमहाबुद्धेस्वरूपँव्वैभवम्महत् ॥ २४ ॥ श्रियःसर्व्वार्त्तिशाथिन्यास्तथाज्ञानञ्चशाश्वतम् ॥ नामानिचैवमुख्यानियानिगौणानिचाच्युत ॥ २५ ॥ त्वद्वक्त्रकमलोत्थानिश्रोतुमिच्छामितत्वतः ॥ इतितस्यवचः श्रुत्वाप्रतिवाक्यमुवाचसः ॥ २६ ॥ महाविभूतिसँय्युक्तः षाड्गुण्यवपुषः प्रभोः ॥ भगवद्वासुदेवस्यनित्यञ्चैषानपायिनी ॥ २७ ॥ एकैववर्त्ततेभिन्नाज्योत्स्नेवहिमदीधितेः ॥ सर्व्वशक्त्यात्मिकाचैवविश्वँव्याप्यव्यवस्थिता ॥ २८ ॥ सर्व्वैश्वर्य्यगुणोपेतानित्यशुद्धस्वरूपिणी ॥ प्राणशक्तिः पराह्येषासर्व्वेषाम्प्राणिनाम्भुवि ॥ २९ ॥ शक्तीनाञ्चैवसर्व्वासाँय्योनिभूतापराकला ॥ अहन्तस्याः परन्नाम्नांसहस्रमिदमुत्तमम् ॥ ३० ॥ शृणुष्वावहि

तोभूत्वापरमैश्वर्य्यंभूतिदम् ॥ देव्याख्यास्मृतिमात्रेणदारिद्र्यं
य्यातिभस्मताम् ॥ ३१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ श्रीःपद्माप्रकृतिः
सत्वाशान्ताचिच्छक्तिरव्यया ॥ केवलानिष्कलाशुद्धाव्यापि
पिनीव्योमविग्रहा ॥ ३२ ॥ व्योमपद्मकृताधारापराव्योमामतो
द्भवा ॥ निर्व्योमाव्योममध्यस्थापञ्चव्योमपदाश्रिता ॥ ३३ ॥
अच्युताव्योमनिलयापरमानन्दरूपिणी ॥ नित्यशुद्धानित्यतृ
प्तानिर्व्विकारानिरीक्षणा ॥ ३४ ॥ ज्ञानशक्तिः कर्त्तृशक्तिर्भोक्तृ
शक्तिःशिखावहा ॥ स्नेहाभासानिरानन्दाविभूतिर्व्विमलाचला ॥
॥ ३५ ॥ अनन्तावैष्णवीव्यक्ताविश्वानन्दाविकाशिनी ॥
शक्तिर्व्विभिन्नसर्व्वार्त्तिः समुद्रपरितोषिणी ॥ ३६ ॥ मूर्त्तिःसना
तनीहार्दीनिस्तरङ्गानिरामया ॥ ज्ञानज्ञेयाज्ञानगम्याज्ञानज्ञे
यविकाशिनी ॥ ३७ ॥ स्वच्छन्दशक्तिगहनानिष्कम्पार्च्चिः सुनि
र्म्मला ॥ सुरूपासर्व्वगापारा बृंहिणीसुगुणोर्ज्जिता ॥ ३८ ॥
अकलङ्कानिराधारानिस्सङ्कल्पानिराश्रया ॥ असङ्कीर्णासुशा
न्ताचशाश्वतीभासुरीस्थिरा ॥ ३९ ॥ अनौपम्यानिर्व्विकल्पा
निर्य्यन्त्रायन्त्रवाहिनी ॥ अभेद्याभेदिनीभिन्नाभारतीवैखरीख
गा ॥ ४० ॥ अग्राह्याग्राहिकागूढागम्भीराविश्वगोपिनी ॥
॥ अनिर्देश्याप्रतिहतानिर्व्बीजापावनीपरा ॥ ४१ ॥ अप्रत
र्क्यापरिमिताभवभ्रान्तिविनाशिनी ॥ एकाद्विरूपात्रिविधाअ
सङ्ख्यातासुरेश्वरी ॥ ४२ ॥ सुप्रतिष्ठामहाधात्रीस्थितिर्व्वृद्धि
र्ध्रुवागतिः ॥ ईश्वरीमहिमाऋद्धिःप्रमोदाउज्ज्वलोद्यमा ॥४३॥
अक्षयावर्द्धमानाचसुप्रकाशाविहङ्गमा ॥ निरजाजननीनित्याज
यारोचिष्मतीशुभा ॥४४॥ तपोनुदाचज्वालाचसुदीप्तिश्चांशुमा
लिनी ॥ अप्रमेयात्रिधासूक्ष्मापरानिर्व्वाणदायिनी ॥ ४५ ॥ अ
वदातासुशुद्धाचअमोघाख्यापरम्परा ॥ सन्धानकीशुद्धविद्यास

र्व्वभूतमहेश्वरी ॥ ४६ ॥ लक्ष्मीस्तुष्टिर्म्महाधीराशान्तिरापूरणे नवा॥ अनुग्रहाशक्तिराद्याजगज्ज्येष्ठाजगद्विधिः ॥ ४७ ॥ सत्या पह्वाक्रियायोग्याह्लादिनीचार्प्पणाशिवा ॥ सम्पूर्णाह्लादिनीशुद्धा ज्योतिष्मत्यमतावहा ॥ ४८ ॥ रजोवत्यर्क्कप्रतिभाकर्षिणीकर्षि णीरसा ॥ परावसुमतीदेवीकान्तिःशान्तिर्म्मतिःकला ॥४९॥ क लाकलङ्करहिताविशालोद्दीपनीरतिः ॥ सम्बोधिनीहारिणीचप्र भावाभवभूतिदा ॥ ५० ॥ अमृतस्यन्दिनीजीवाजननीखण्डि कास्थिरा ॥ धूमाकलावतीपूर्णाभासुरासुमतीरसा ॥ ५१ ॥ शुद्धाध्वनिःसृतिःसृष्टिर्व्विकृतिःकृष्टिरेवच ॥ प्रापणीप्राणदाप्रह्वी विश्वापाण्डुरवासिनी ॥ ५२ ॥ अवनीवज्रनलिकाचित्राब्रह्मा ण्डवासिनी ॥ अनन्तरूपाऽनन्तात्मानन्तस्थानन्तसम्भवा ॥ ॥ ५३ ॥ महाशक्तिःप्राणशक्तिःप्राणदात्रीरतिम्भरा ॥ महा समूहानिखिलाइच्छाधारासुखावहा ॥ ५४ ॥ प्रत्यक्षलक्ष्मीर्नि ष्कम्पाप्ररोहाबुद्धिगोचरा ॥ नानादेहामहावर्त्ताबहुदेहविकाशि नी ॥ ५५ ॥ सहस्राणीप्रधानाचन्यायवस्तुप्रकाशिका ॥ सर्व्वा भिलाषपूर्णेच्छासर्व्वासर्व्वार्थभाषिणी ॥५६॥ नानास्वरूपचि द्धात्रीशब्दपूर्व्वापुरातना ॥ व्यक्ताऽव्यक्ताजीवकेशासर्व्वेच्छाप रिपूरिता ॥ ५७ ॥ सङ्कल्पसिद्धासाङ्ख्येयातत्त्वगर्भाधवावहा भूतरूपाचित्स्वरूपात्रिगुणागुणगर्व्विता ॥ ५८ ॥ प्रजापती श्वरीरौद्रीसर्व्वाधारासुखावहा ॥ कल्याणवाहिकाकल्पाकलिक ल्मषनाशिनी ॥ ५९ ॥ निरूपोद्भिन्नसन्तानासुयन्त्रात्रिगुणाल या ॥ महामायायोगमायामहायोगेश्वरीप्रिया ॥ ६० ॥ महा स्त्रीविमलाकीर्त्तिर्ज्जयालक्ष्मीर्न्निरञ्जनी ॥ प्रकृतिर्भगवन्मायाश क्तिर्न्निद्रायशस्करी ॥ ६१ ॥ चिन्ताबुद्धिर्य्यशःप्राज्ञाशान्तिरा प्रीतिवर्द्धनी ॥ प्रद्युम्नमातासाध्वीचसुखसौभाग्यसिद्धिदा ॥६२॥

काष्ठानिष्ठाप्रतिष्ठाचज्येष्ठाश्रेष्ठाजयावहा ॥ सर्व्वातिशायिनीप्रीतिर्व्विश्वशक्तिर्म्महाबला ॥ ६३ ॥ वरिष्ठाविजयावीराजयन्तीविजयप्रदा ॥ हृद्गुहागोपिनीगुह्यागणगन्धर्व्वसेविता ॥ ६४ ॥ योगीश्वरीयोगमायायोगिनीयोगसिद्धिदा ॥ महायोगेश्वरवृतायोगायोगेश्वरप्रिया ॥ ६५ ॥ ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमितासुरासुरवरप्रदा ॥ त्रिवर्त्मगात्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा ६६ ॥ सुतारातारिणीतारादुर्गासन्तारणीपरा ॥ सुतारणीतारयन्तीभूरितारेश्वरप्रभा ॥ ६७ ॥ गुह्यविद्यायज्ञविद्यामहाविद्यासुशोभिता ॥ अध्यात्मविद्याविघ्नेशीपद्मस्थापरमेष्ठिनी ॥ ६८ ॥ आन्वीक्षिकीत्रयीवार्त्तादण्डनीतिर्न्नयात्मिका ॥ गौरीवागीश्वरीगोप्त्रीगायत्रीकमलोद्भवा ॥ ६९ ॥ विश्वम्भराविश्वरूपाविश्वमातावसुप्रदा॥सिद्धिःस्वाहास्वधास्वस्ति सुधासर्व्वार्त्थसाधिनी ॥७०॥ इच्छासृष्टिर्द्युतिर्भूतिःकीर्त्तिःश्रद्धादयामतिः ॥ श्रुतिर्म्मेधाधृतिर्ह्रीश्रीर्व्विद्याविबुधवन्दिता ॥ ७१ ॥ अनसूयाघृणानीतिर्न्निर्वृतिःकामधुक्करा ॥ प्रतिज्ञासन्ततिर्भूतिर्द्यौःप्रज्ञाविश्वमानिनी ॥ ७२ ॥ स्मृतिर्व्वाग्विश्वजननीपश्यन्तीमध्यमासमा ॥ सन्ध्यामेधाप्रभाभीमा सर्व्वाकारासरस्वती ॥ ७३ ॥ काङ्क्षामायामहामायामोहिनीमाधवप्रिया ॥ सौम्याभोगामहाभोगाभोगिनीभोगदायिका ॥ ७४ ॥ सुधौतकनकप्रख्यासुवर्णकमलासना ॥ हिरण्यगर्भासुश्रोणी हारिणीरमणीरमा ॥ ७५ ॥ चन्द्राहिरणमयीज्योत्स्नारम्याशोभाशुभावहा ॥ त्रैलोक्यमण्डनानारीनरेश्वरवरार्च्चिता ॥ ७६ ॥ त्रैलोक्यसुन्दरीरामा महाविभववाहिनी ॥ पद्मस्थापद्मनिलयापद्ममालाविभूषिता ॥ ७७ ॥ पद्मयुग्मधराकान्तादिव्याभरणभूषिता ॥ विचित्ररत्नमुकुटाविचित्राम्बरभूषणा ॥ ७८ ॥ विचित्रमाल्यगन्धाढ्याविचित्रायु

धवाहना ॥ महानारायणीदेवीवैष्णवीवीरवन्दिता ॥ ७९ ॥ कालसङ्कर्षणीघोरातत्त्वसङ्कर्षणीकला ॥ जगत्सम्पूरणीविश्वा महाविभवभूषणा ॥ ८० ॥ वारुणीवरदाव्याख्याघण्टाकर्णविराजिता ॥ नृसिंहीभैरवीब्राह्मीभास्करीव्योमचारिणी ॥ ८१ ॥ ऐन्द्रीकामधनुःसृष्टिःकामयोनिर्म्महाप्रभा ॥ दृष्टाकाम्याविश्वशक्तिर्व्वीजगत्यात्मदर्शना ॥ ८२ ॥ गरुडारूढहृदयाचान्द्रोश्रीर्म्मधुरानना ॥ महोग्ररूपावाराही नारसिंहीहतासुरा ॥ ८३ ॥ युगान्तहुतभुग्ज्वालाकरालापिङ्गलाकला ॥ त्रैलोक्यभूषणीभीमाश्यामात्रैलोक्यमोहिनी ॥ ८४ ॥ महोत्कटामहारक्तामहाचण्डामहासना ॥ शङ्खिनीलेखिनीस्वस्थालिखिनीखेचरेश्वरी ॥ ॥ ८५ ॥ भद्रकालीचैकवीराकौमारीभवमालिनी ॥ कल्याणीकामधुग्ज्वालामुखीचोत्पलमालिका ॥ ८६ ॥ बालिकाधनदासूर्य्याहृदयोत्पलमालिका ॥ अजितावर्षणीरीतिर्भेरुण्डागरुडासना ॥ ८७ ॥ वैश्वानरीमहामायामहाकालीविभीषणा ॥ महामन्दारविभवा शिवानन्दारतिप्रिया ॥ ८८ ॥ उद्रीतिःपद्ममालाच धूमवेगाविभावनी ॥सत्क्रियादेवसेनाचहिरण्यरजताश्रया॥ ॥ ८९ ॥ सहसावर्त्तमानाचहस्तिनादप्रबोधिनी ॥ हिरण्यपद्मवर्णाचहरिभद्रासुदुर्द्धरा ॥ ९० ॥ सूर्य्याहिरण्यप्रकटसदृशीहेममालिनी ॥ पद्माननानित्यपुष्टादेवमातामृतोद्भवा ॥ ९१ ॥ महाधनाचयाशृङ्गीकार्द्दमीकम्बुकन्धरा ॥ आदित्यवर्णाचन्द्राभागन्धद्वारादुरासदा ॥ ९२ ॥ वरार्चितावरारोहावरेण्याविष्णुवल्लभा ॥ कल्याणीवरदावामावामेशीविन्ध्यवासिनी ॥ ९३ ॥ योगनिद्रायोगरतादेवकीकामरूपिणी ॥ कंसविद्रावणीदुर्ग्गाकौमारीकौशिकीक्षमा ॥ ९४ ॥ कात्यायनीकालरात्रिर्न्निशितृप्तासुदुर्ज्जया ॥ विरूपाक्षीविशालाक्षीभक्तानाम्परिरक्षिणी ॥ ९५ ॥ बहुरू

पास्वरूपाचविरूपारूपवर्ज्जिता ॥ घण्टानिनादबहुलाजीमूतध्वनिनिःस्वना ॥ ९६ ॥ महासुरेन्द्रमथनीभ्रुकुटीकुटिलानना ॥ सत्योपायाचिताचैकाकौबेरीब्रह्मचारिणी ॥ ९७ ॥ आर्य्यायशोदासुतदाधर्म्मकामार्थमोक्षदा ॥ दारिद्र्यदुःखशमनीघोरदुर्गार्त्तिनाशिनी ॥ ९८ ॥ भक्तार्त्तिशमनीभव्याभवभर्गापहारिणी ॥ क्षीराब्धितनयापद्माकमलाधरणीधरा ॥ ९९ ॥ रुक्मिणीरोहिणीसीतासत्यभामायशस्विनी ॥ प्रज्ञाधाराऽमिताबुद्धिर्व्वेदमातायशोवती ॥ १०० ॥ समाधिर्भावनामैत्रीकरुणाभक्तवत्सला ॥ अन्तर्व्वेदीदक्षिणाचब्रह्मचर्य्यंपरागतिः ॥ १०१ ॥ दीक्षावीक्षापरीक्षाचसमीक्षावीरवत्सला ॥ अम्बिकासुरभीसिद्धासिद्धविद्याधरार्च्चिता ॥ १०२ ॥ सुदीप्तालेलिहानाचकरालीविश्वपूरकी ॥ विश्वसन्धारणीदीप्तिस्तापनीताण्डवप्रिया ॥ १०३ ॥ उद्भवाविरजाराज्ञी तापनीबिन्दुमालिनी ॥ क्षीरधारासुप्रभावालोकमातासुवर्च्चसा ॥ १०४ ॥ हव्यगर्भाचाज्यगर्भाजुह्वतोयज्ञसम्भवा ॥ आप्यायनीपावनीचदहनीदहनाश्रया ॥ १०५ ॥ मातृकामाधवीमुच्या मोक्षलक्ष्मीर्म्महर्द्धिदा ॥ सर्व्वकामप्रदाभद्रासुभद्रासर्व्वमङ्गला ॥ १०६ ॥ श्वेतासुशुक्लवसनाशुक्लमाल्यानुलेपना ॥ हंसाहीनकरीहँसीहृद्याहृत्कमलालया ॥ १०७ ॥ सितातपत्रासुश्रोणीपद्मपत्रायतेक्षणा ॥ सावित्रीसत्यसङ्कल्पाकामदाकामकामिनी ॥ १०८ ॥ दर्शनीयादृशादृश्यास्पृश्यासेव्यावराङ्गना ॥ भोगप्रियाभोगवतीभोगीन्द्रशयनासना ॥ १०९ ॥ आर्द्रापुष्करिणीपुण्यापावनीपापसूदनी ॥ श्रीमतीचशुभाकारापरमैश्वर्य्यभूतिदा ॥ ११० ॥ अचिन्त्यानन्तविभवाभवभावविभावनी ॥ निश्रेणिसर्व्वदेहस्थासर्व्वभूतनमस्कृता ॥ १११ ॥ बलाबलाधिकादेवीगौतमीगो

कुलालया॥तोषणीपूर्णचन्द्राभाएकानन्दाशतानना॥११२॥ उद्यानगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी ॥ कूष्माण्डीदारुणी चण्डा किरातीनन्दनालया ॥ ११३ ॥ कालायनीकालगम्याभयदाभयनाशनी ॥ सौदामिनीमेघरवादैत्यदानवमर्द्दिनी ॥ ११४ ॥ जगन्माताभयकरीभूतधर्त्रीसुदुर्लभा ॥ काश्यपीशुभदानाचवनमालाशुभावरा ॥११५॥ धन्याधन्येश्वरीधन्यारत्नदावसुवर्द्धिनी ॥ गान्धर्व्वी रेवतीगङ्गाशकुनीविमलानना ॥ ११६ ॥ इडाशान्तिकरीचैवतामसीकमलालया ॥ आज्यपावज्रकौमारीसोमपाकुसुमाश्रया ॥ ११७ ॥ जगत्प्रियाचसरथादुर्ज्जयाखगवाहना ॥ मनोभवाकामचारासिद्धचारणसेविता ॥ ११८ ॥ व्योमलक्ष्मीर्म्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीःसुजाज्वला ॥ रसलक्ष्मीर्ज्जगद्योनिर्ग्गन्धलक्ष्मीर्व्वनाश्रया ॥ ११९ ॥ श्रवणीश्रावणीनेत्रीरसनाप्राणचारिणी ॥ विरिञ्चिमाताविभवावरवारिजवाहना ॥ १२० ॥ वीर्य्यावीरेश्वरीवन्द्याविशोकावसुवर्द्धिनी ॥ अनाहताकुण्डलिनीनलिनीवनवासिनी ॥ १२१ ॥ गान्धारिणीन्द्रनमितासुरेन्द्रनमितासती ॥ सर्व्वमङ्गलमाङ्गल्यासर्व्वकामसमृद्धिदा ॥१२२॥ सर्व्वानन्दामहानन्दासत्कीर्त्तिःसिद्धसेविता ॥ सिनीवालीकुहूराकाअमाचानुमतिर्द्युतिः ॥ १२३ ॥ अरुन्धतीवसुमतीभार्ग्गवीवास्तुदेवता ॥ मायूरीवज्रवेतालीवज्रहस्तावरानना ॥ १२४ ॥ अनघाधरणीधीराधमनीमाणिभूषणा ॥ राजश्रीरूपसहिताब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवन्दिता ॥ १२५ ॥ जयश्रीर्ज्जयदाज्ञेयासर्गश्रीःस्वर्गतिःसताम् ॥ सुपुष्पापुष्पनिलयाफलश्रीर्न्निष्कलप्रिया ॥ १२६ ॥ धनुर्ल्लक्ष्मीस्त्वमिलितापरक्रोधनिवारिणी ॥ कद्रूर्द्धनायुःकपिलासुरसासुरमोहनी ॥ १२७ ॥ महाश्वेतामहानीलामहामूर्त्तिर्व्विषापहा ॥ सुप्रभाज्वालिनीदीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्तिःप्रभाकरी॥१२८॥

तेजोवतीपद्मबोधामदलेखारुणावती ॥ रत्नारत्नावलीभूताशतधा
माशतोपहा ॥ १२९ ॥ त्रिगुणाघोषणीरक्ष्यानर्दिनीघोषवर्ज्जिता
साध्यादितिर्दितिर्देवीमृगवाहामृगाङ्कगा ॥ १३०॥ चित्रनीलोत्प
लगतावृषरत्नाकराश्रया॥ हिरण्यरजतद्वन्द्वाशङ्खभद्रासनस्थिता
॥ १३१ ॥ गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्प्पिर्ज्जलाश्रया ॥ मरीचिश्चीरव
सनापूर्ण्णचन्द्रार्कविष्टरा॥ १३२॥ सुसूक्ष्मानिर्व्वृतिस्स्थूलानिर्व्वृ
तारातिरेवच ॥मरीचिज्वालिनीधूम्राहव्यवाहाहिरण्यदा ॥१३३॥
दायिनीकालिनीसिद्धिःशोषणीसम्प्रबोधिनी ॥भास्वरासंहतिस्ती
क्ष्णाप्रचण्डज्वलनोज्ज्वला॥१३४॥ साङ्गाप्रचण्डादीप्ताचवैद्युतिः
सुमहाद्युतिः॥ कपिलानीररक्ताचसुषुम्नाविस्फुलिङ्गिनी॥१३५॥
अर्च्चिष्मतीरिपुहरीदीर्घाधूमावलीजरा ॥ सम्पूर्ण्णमण्डलीपूषास्त्रं
सिनीसुमनोहरा ॥ १३६ ॥ जयापुष्टिकरीछायामानसीहृदयो
ज्ज्वला ॥ सुवर्ण्णकरणीश्रेष्ठामृतसञ्जीवनीरणे ॥ १३७ ॥
विशल्यकरणीशुभ्रासन्धिनीपरमौषधी ॥ ब्रह्मिष्ठाब्रह्मसहिताऐ
न्दवीरत्नसम्भवा ॥ १३८ ॥ विद्युत्प्रभाबिन्दुमतीत्रिस्वभा
वगुणाम्बिका ॥ नित्योदितानित्यहृष्टानित्यकामकरीषिणी
॥१३९॥ पद्माङ्कावज्रचिन्हाचवक्रदण्डाविभासिनी ॥ विदेहपूजि
ताकन्यामायाविजयवाहिनी ॥१४०॥मानिनीमङ्गलामान्यामा।नि
नीमानदायिनी ॥ विश्वेश्वरीगणवतीमण्डलामण्डलेश्वरी॥१४१॥
हरिप्रियाभौमसुतामनोज्ञामतिदायिनी ॥ प्रत्यङ्गिरासोमगुप्ताम
नोभिज्ञावदन्मतिः ॥ १४२॥ यशोधरीरत्नमालाकृष्णात्रैलोक्य
बन्धनी ॥ अमृताधारणीहर्षाविनतावल्लकीशची ॥ १४३ ॥
सङ्कल्पाभामिनीमिश्राकादम्बर्य्यामृताप्रभा ॥ अगतानिर्ग्गताव
ज्रासुहितासहिताक्षता ॥ १४४ ॥ सर्व्वार्त्थसाधनकरीधातुर्द्धार
णिकामला ॥ करुणाधारसम्भूताकमलाक्षीशशिप्रिया॥ १४५॥

सौम्यरूपामहादीप्तामहाज्वालाविकाशिनी ॥ मालाकाञ्चनमालाचसद्वज्रकनकप्रभा ॥ १४६ ॥ प्राक्रियापरमायोक्रीक्षोभिकाचमुखोदया॥विजृम्भणाचवज्राख्या शृङ्खलाकमलेक्षणा॥१४७॥ जयङ्करीमधुमतीहारिताशशिनीशिवा ॥ मूलप्रकृतिरीशानीयोगमातामनोजवा ॥१४८॥ धर्म्मोदयाभानुमतीसर्व्वाभासासुखावहा ॥धुरन्धराचबालाचधर्म्मसेव्यातथागता॥१४९॥सुकुमारासौम्यमुखीसौम्यसम्बोधनोत्तमा ॥ सुमुखीसर्व्वतोभद्रागुह्यशक्तिर्गुहालया॥१५०॥हलायुधाचकावीरासर्व्वशास्त्रसुधारिणी॥ व्योमशक्तिर्म्महादेहाव्योमगामगुमन्मयी॥१५१॥गङ्गावितस्तायमुनाचन्द्रभागासरस्वती॥ तिलोत्तमोर्व्वशीरम्भास्वामिनीसुरसुन्दरी ॥ १५२ ॥ बाणप्रहरणाबालाविम्बोष्ठीचारुहासिनी ॥ ककुद्मिनीचारुपृष्ठीदृष्टादृष्टफलप्रदा॥ १५३ ॥काम्यचरीचकाम्याचकामाचारविहारिणी॥हिमशैलेन्द्रसङ्काशागजेन्द्रवरवाहना॥१५४॥ अशेषसुखसौभाग्यसम्पदायोनिरुत्तमा॥ सर्व्वोत्कृष्टासर्व्वमयीसर्व्वासर्व्वेश्वरप्रिया ॥ १५५ ॥ सर्व्वाङ्गयोनिःसाव्यक्तासम्प्रधानेश्वरेश्वरी ॥ विष्णुवक्षःस्थलगताकिमतःपरमुच्यते ॥ १५६ ॥ परानिर्म्महिमादेवीहरिवक्षःस्थलाश्रया ॥ सादेवीपापहन्त्रीचसान्निध्यङ्कुरुतान्मम ॥ १५७॥ इतिनाम्नांसहस्रन्तुलक्ष्म्याःप्रोक्तं शुभावहम् ॥ परावरेणभेदेनमुख्यगौणेनभागतः ॥ १५८॥ यश्चैतत्कीर्त्तयेन्नित्यंशृणुयाद्वापिपद्मज॥ शुचिःसमाहितोभूत्वाभक्तिश्रद्धासमान्वितः॥१५९॥ श्रीनिवासंसमभ्यर्च्यपुष्पधूपानुलेपनैः ॥ भोगैश्चमधुपर्काद्यैर्य्यथाशक्त्याजगद्गुरुम्॥ १६० ॥ तत्पार्श्वस्थांश्रियन्देवींसम्पूज्यश्रीधरप्रियाम् ॥ ततोनामसहस्रेणतोषयेत्परमेश्वरीम् ॥१६१॥ नामरत्नावलिस्तोत्रमिदय्यँःसततम्पठेत् ॥ प्रसादाभिमुखीलक्ष्मीःसर्व्वन्तस्मैप्रयच्छति॥१६२॥

यस्यालक्ष्म्याश्चसम्भूताश्शक्तयोविश्वगाःसदा ॥ कारणत्वन्नातिष्ठन्तिजगत्यस्मिंश्चराचरे ॥ १६३ ॥ तस्मात्प्रीताजगन्माताश्रीर्य्यस्याच्युतवल्लभा॥सुप्रीताश्शक्तयस्तस्यासिद्धिमिष्टान्दिशन्ति हि ॥ १६४ ॥ एकएवजगत्स्वामीशक्तिमानच्युतःप्रभुः ॥ तदंशशक्तिमन्तोन्येब्रह्मेशानादयोयथा ॥ १६५ ॥ तथैवैकापराशक्तिश्श्रीस्तस्यकरुणाश्रया ॥ ज्ञानादिषाड्गुण्यमयीयाप्रोक्ताप्रकृतिःपरा ॥ १६६ ॥ एकैवशक्तिश्श्रीस्तस्याद्वितीयात्मनिवर्त्तते ॥ परापरेशासर्व्वेशीसर्व्वाकारासनातनी ॥१६७॥ अनन्तनामधेयाचशक्तिचक्रस्यनायिका ॥ जगच्चराचरमिदंसर्व्वंव्याप्यव्यवस्थिता ॥ १६८ ॥ तस्मादेकैवपरमाश्रीर्ज्ञेयाविश्वरूपिणी ॥ सौम्यासौम्येनरूपेणसंस्थितानटजीववत् ॥ १६९ ॥ योयोजगतिपुम्भावःसविष्णुरितिनिश्चयः॥यायातुनारीभावस्थातत्रलक्ष्मीर्व्यवस्थिता॥१७०॥ प्रकृतेःपुरुषाच्चान्यस्तृतीयोनैवविद्यते ॥ अर्थकिंबहुनोक्तेननरनारीमयोहरिः॥१७१॥अनेकभेदभिन्नस्तुक्रियतेपरमेश्वरः ॥ महाविभूतिन्दयिताँय्येस्तुवन्त्यच्युतप्रियाम् ॥ १७२ ॥ तेप्राप्नुवन्तिपरमाँल्लक्ष्मींसंशुद्धचेतसः ॥ पद्मयोनिरिदम्प्राप्यपठन्स्तोत्रमिदङ्क्रमात् ॥ १७३ ॥ दिव्यमष्टगुणैश्वर्य्यन्तत्प्रसादाच्चलब्धवान् ॥ सकामानाञ्चफलदामकामानाञ्चमोक्षदाम् ॥ १७४ ॥ पुस्तकाख्याम्भयत्रात्रींसितवस्त्रान्त्रिलोचनाम् ॥ महापद्मनिषण्णान्ताँल्लक्ष्मीमजरतान्नमः॥१७५॥करयुगलगृहीतम्पूर्णकुम्भन्दधानाक्वाचिदमलगतस्थाशङ्खपद्माक्षपाणिः ॥ क्वचिदपिदयिताङ्गेचामरव्यग्रहस्ताक्वाचिदपिसृणिपाशम्बिभ्रतीहेमकान्तिः ॥ १७६॥ इत्यादिब्रह्मपुराणेकाश्मीरवर्णनेहिरण्यगर्भहृदयेसर्व्वकामप्रदायिकम्पुरुषोत्तमेनप्रोक्तँल्लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

इति शाक्तप्रमोदे कमलात्मिकातन्त्रं समाप्तम् ॥

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

एकादशं

कुमारिकातन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँवत् १९९० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ।

अथ कुमारीतन्त्रम् ॥



अथ कुमारीपूजा ॥

रुद्रयामलोत्तरखण्डीयषष्ठपटले ॥ एकवर्षाभवेत्सन्ध्याद्विवर्षा चसरस्वती ॥ त्रिवर्षाचात्रिधामूर्त्तिश्चतुर्वर्षाचकालिका ॥ सुभ गापञ्चवर्षातुषड्वर्षाचभवेदुमा ॥ सप्तभिर्म्मालिनीसाक्षादष्टव र्षातुकुब्जिका ॥ नवभिःकालसन्दर्भादशभिश्चापराजिता ॥ एकादशेतुरुद्राणीद्वादशाब्देतुभैरवी ॥ त्रयोदशेमहालक्ष्मीर्द्विस प्तापीठनायिका ॥ क्षेत्रज्ञापञ्चदशभिःषोडशेचाम्बिकामता ॥ ए वङ्क्रमेणसङ्गृह्ययावत्पुष्पन्नजायते ॥ प्रतिपदादिपूर्णान्तँवृद्धि भेदेनपूजयेत् ॥ एकवर्षेत्यादिसर्व्वम्बृहन्नीलतन्त्रेऽपि ॥ केवलं षड्वर्षाचउमाभवेत् द्विसप्तानायिकास्मृता षोडशेचर्च्चिकामते ति पाठभेदोनामभेदश्चेतिकुब्जिकातन्त्रे ॥ सप्तमपटलेतुविशेष उक्तोयथा ॥ पञ्चवर्षात्समारभ्ययावद्द्वादशवार्षिकी ॥ कुमारी साभवेद्देवीनिजरूपप्रकाशिनी ॥ षड्वर्षाच्चसमारभ्ययावच्चनववा र्षिकी ॥ तावच्चैवमहेशानिसाधकाभीष्टसिद्धये॥ अष्टवर्षात्समा रभ्य यावत्त्रयोदशाब्दिकी ॥ कुलजान्ताँविजानीयात्तत्रपूजांस माचरेत् ॥ दशवर्षात्समारभ्ययावत्षोडशवार्षिकी ॥ युवती न्ताँविजानीयाद्देवतान्ताँविचिन्तयेत्॥ अन्नँवस्त्रन्तथानीरङ्कुमा र्य्यैयोददातिहि ॥ अन्नम्मेरुसमन्देविजलञ्चसागरोपमम् ॥ वस्त्रैः कोटिसहस्राब्दंशिवलोकेमहीयते ॥ पूजोपकरणानीहकुमार्य्यैयो

ददातिहि ॥ सन्तुष्टादेवतातस्यपुत्रत्वेसानुकल्प्यते ॥ विश्वसारे तु ॥ अष्टवर्षांतुसाकन्याभवेद्गौरीवरानने ॥ नववर्षारोहिणीस्या दशवर्षातुकन्यका ॥ अतऊर्द्धम्महामायाभवेत्सैवरजस्वला ॥ आरभ्यद्वादशाब्दाच्चयावद्विंशतिसङ्ख्यकम् ॥ सुकुमारीचसाप्रोक्तासर्व्वतन्त्रसमन्विता ॥ यानपाषाणधातूनान्तेजोरूपेणसँस्थिता ॥ जीवजन्तुषुदेवेशिकिँव्वक्तव्यमतःपरम् ॥ यत्रनास्तिमहामायातत्रकिञ्चिन्नविद्यते ॥ इत्युक्तम् ॥ तत्पूजाफलँय्योगिनीतन्त्रेपूर्व्वखण्डेसप्तदशपटले ॥ कुमारीपूजनफलँव्वक्तुन्नार्हामि सुन्दरि ॥ जिह्वाकोटिसहस्रैस्तुवक्त्रकोटिशतैरपि ॥ तस्मात्ताम्पूजयेद्बालांसर्व्वजातिसमुद्भवाम् ॥ जातिभेदोनकर्त्तव्यःकुमारीपूजनेशिवे ॥ जातिभेदान्महेशानिनरकान्ननिवर्त्तते ॥ विचिकित्सापरोमन्त्रीध्रुवंसपातकीभवेत् ॥ देवीबुद्धयामहाभक्तस्तस्मात्ताम्परिपूजयेत् ॥ सर्वविद्यास्वरूपाहिकुमारीनात्रसंशयः ॥ यदिभाग्यवशाद्देविवेश्याकुलसमुद्भवाम् ॥ कुमारीँल्लभतेकान्ते सर्व्वस्वेनापिसाधकः ॥ यत्नतःपूजयेत्तान्तुस्वर्ण्णरौप्यादिभिर्म्मुदा ॥ तदातस्यमहासिद्धिर्ज्जायतेनात्रसंशयः ॥ कुमारीपूजास्थानफलमपितत्रैव ॥ कुमारीपूज्यतेयत्रसदेशःक्षितिपावनः ॥ महापुण्यतमोभूयात्समन्तात्क्रोशपञ्चकम् ॥ यामलेतत्रैव ॥ महापर्व्वसुसर्व्वेषुविशेषाच्चपवित्रके॥महानवम्यान्देवेशिकुमारीश्च प्रपूजयेत् ॥ तस्मात्षोडशपर्य्यन्तँय्युवतीतिप्रचक्षते ॥ तत्रभावप्रकाशस्स्यात्सभावःपरमोयुतः ॥ रक्षितव्याःप्रयत्नेनअक्षत्तास्ताःप्रकारयेत् ॥ महापूजादिकङ्कृत्वावस्त्रालङ्कारभोजनैः ॥ पूजयेन्मन्दभाग्योऽपिलभतेजयमङ्गलम् ॥ अन्येषाङ्कथनेनाथप्रयोजनमहाफलम् ॥ विधिनापूजयेद्यस्तुदिव्यवीरपशुस्थितः ॥ भावत्रयेमहासौख्यन्दिव्यकर्म्मणिसत्फलम् ॥ तथा ॥ अनेक

कुलसम्पन्नान्नानाजातिसमुद्भवाम् ॥ अशेषकुलसम्पन्नान्नाना
जातिसमुद्भवाम् ॥ नानादेशोद्भवाँव्वापिसद्गुणाङ्गुणसँय्युताम् ॥
द्वितीयवत्सरादूर्द्धय्यावत्स्यादष्टमाब्दकम् ॥ तावज्जप्त्वापूज
यित्वाकन्यांसुन्दरमोहिनीम् ॥ दिव्यभावस्थितस्साक्षात्तन्त्रम
न्त्रफलंलभेत् ॥ कुमारीपूजनादेवकुमारीभोजनादिभिः ॥ एक
द्वित्र्यादिबीजानाम्फलदानात्रसंशयः ॥ ताभ्यःपुष्पम्फलन्दत्वा
अनुलेपादिकन्तथा ॥ बालप्रियञ्चनैवेद्यन्दत्वातद्भावभावितः ॥
मृदातदङ्गमात्मानम्बालभावविचेष्टितम् ॥ अतिप्रियकथालाप
क्रीडाकौतूहलान्वितः ॥ यथार्त्थंतत्प्रियन्तत्रकृत्वासिद्धीश्वरोभ
वेत् ॥ कन्यासर्व्वसमृद्धिस्स्यात्कन्यासर्व्वपरन्तपः ॥ होमम्म
न्त्रार्च्चनन्नित्यक्रियाकौलिकसत्क्रियाम् ॥ नानाफलमहाधर्म्मंकु
मारीपूजनँव्विना ॥ तत्तत्कर्म्मफलन्नाथप्राप्नोतिसाधकोत्तमः
॥ फलङ्कोटिगुणँव्वीरःकुमारीपूजयालभेत् ॥ कुसुमाञ्जलिपूर्णां
ञ्चकन्यायैकुलपण्डितः ॥ ददातियदितत्पुष्पङ्कोटिमेरुहिरण्यव
त् ॥ तद्दानजम्महापुण्यङ्क्षणादेवसमालभेत् ॥ कुमारीभोजिता
येनत्रैलोक्यन्तेनभोजितम् ॥ कालीतन्त्रेएकादशपटले ॥ कु
मारीपूजनङ्कुर्य्यात्सर्व्वकर्म्मफलाप्तये ॥ रुद्रयामलेउत्तरखण्डेस
प्तमपटले ॥ अथपूजाम्प्रवक्ष्यामिकुमार्य्याअतिदुर्ल्लभम् ॥ इ
त्यभिधाय पूजास्थानंमहापीठन्देवालयमथापिवा ॥ नटीकन्यां
हीनकन्यान्तथाकापालिकन्यकाम् ॥ रजकस्यापिकन्याञ्चत
थानापितकन्यकाम् ॥ गोपालकन्यकाञ्चैवब्राह्मणस्यापिकन्य
काम् ॥ शूद्रकन्याँव्वैद्यकन्यान्तथावैश्यस्यकन्यकाम् ॥ चा
ण्डालकन्यकाँव्वापियत्रकुत्राश्रमेस्थिताम् ॥ सुहृद्वर्ग्गस्यकन्या
ञ्चसमानीयप्रयत्नतः ॥ पूजयेत्परमानन्दैरात्मध्यानपरायणः ॥
ममपूजाँय्यःकरोतिप्रत्यहंशुद्धभक्तितः ॥ तस्यवश्यङ्कुमारीणा

म्पूजनम्भोजनंरवेः ॥ तेजोरूपैंव्विधोश्चाग्नेःसर्व्वभावेप्रकाशते ॥ तत्पूजनात्तदालापाद्भोजनादपितच्छुभात् ॥ ममप्रीतिर्भवेत्सा क्षाद्देवतागुप्तसंस्थिता ॥ बालभैरवदेवस्यकामिनीवदकस्यच ॥ मत्पुत्रस्यसर्व्वलोकपूजितस्यमहौजसः ॥ पूजाभिर्व्विविधैर्द्दृव्यैः कुमारीदेवपूजिता ॥ कुमारीदेवताप्रोक्तासर्व्वतोजगदीश्वरी ॥ पूजार्थंसर्व्वलोकस्यसमानीयसुरेश्वरीम् ॥ पूजयन्तीम्महादेवीङ्कुत्र भावनिवासिनीम् ॥ सदाभोजनवाञ्छाढ्यामान्यासन्तुष्टहासिनी ॥ वृथानरौतिसादेवीकुमारीदेवनायिका ॥ सरस्वतीस्वरूपासा पूज्यतेसर्व्वनायकैः ॥ शिवभक्तैर्व्विष्णुभक्तैस्तथान्यदेवपूजितैः ॥ सर्व्वलोकैःपूजितासाचावश्यम्पूज्यतेबुधैः ॥ पूजयालभतेपुत्रान्पू जयालभतेश्रियम् ॥ पूजयाधनमाप्नोतिपूजयालभतेमहीम् ॥ पू जयालभतेलक्ष्मींसरस्वतीम्महौजसम् ॥ महाविद्याःप्रसीदन्ति सर्व्वेदेवानसंशयः ॥ कालभैरवब्रह्मेन्द्रब्राह्मणाब्रह्मवेदिनः ॥ रुद्र श्चदेववर्ग्गाश्चवैष्णवाब्रह्मरूपिणः ॥ अवताराश्चद्विभुजावैष्ण वामनुशोभिताः ॥ अन्येदिक्पालदेवाश्चचराचरगुरुस्तथा ॥ ना नाविद्याश्रिताःसर्व्वेदानवाःकूटशालिनः ॥ उपसर्ग्गस्थितायेयेते तेतुष्टानसंशयः ॥ यद्यहंशुद्धरूपाहिअन्यलोकेचकाकथा ॥ कु मारीपूजनङ्कृत्वात्रैलोक्यव्वँशमानयेत् ॥ महाकान्तिर्भवेत्क्षिप्रं सर्व्वपुण्यफलप्रदम् ॥ बृहन्नीलतन्त्रे ॥ महाभयार्तिदुर्भिक्षाद्यु त्पातानिकुलेश्वरी॥ दुःस्वप्नभयमृत्युश्चयेचान्येचसमुद्भवाः ॥ कु मारीपूजनादेवनतेचप्रभवन्तिहि ॥ नित्यङ्क्रमेणदेवेशिपूजयेद्वि धिपूर्व्वकम् ॥ घ्नन्तिविघ्नान्पूजिताश्चभयंशत्रून्महोत्कटान् ॥ ग्रहारोगाःक्षयँय्यान्तिभूतवेतालपन्नगाः ॥ रुद्रयामलेयथा ॥ त त्तन्मन्त्रेसमुल्लेख्यात्क्षणात्पुण्यायुतल्लँभेत् ॥ मन्त्रेणपुटितङ्कृत्वा जप्त्वासिद्धीश्वरोभवेत् ॥ यद्यत्प्रकारमुद्दिश्यवदामिसुरसुन्दरि॥

तत्तत्कार्य्यमवश्यञ्चभिन्नबुद्धिन्नकारयेत् ॥ तथा ॥ शृणुनाथकुलार्त्थम्मेकुमारीपूजनेमनुम् ॥ महाविद्यामहामन्त्रंसिद्धिमन्त्रन्नसंशयः ॥ एतन्मन्त्रप्रभावेणजीवन्मुक्तोभवेत्सुधीः ॥ अतिदेविपदँय्यातिसत्यमानन्दभैरव ॥ ऐहिकेसुखसम्पात्तिर्म्मधुमत्याः प्रसादतः ॥ अवश्यम्प्राप्नुयान्मर्त्त्योविश्रामङ्कुरुशङ्कर ॥ वाग्भवेनवपुःक्षोभम्मायाबीजेत्रिगुणाष्टकम् ॥ श्रियोबीजेश्रियोलाभोमायाबीजेरिपुक्षयः ॥ भैरवेणतुबीजेनखेचरत्वंसुरादिभिः ॥ कुमारिकाह्यहन्नाथसदात्वंहिकुमारकः ॥ शतमष्टोतरँव्वापिएकाँव्वापरिपूजयेत् ॥ पूजिताःपरिपूज्यन्तेह्यवघ्नन्त्यवमानिताः ॥ कुमारीयोगिनीसाक्षात्कुमारीपरदेवता ॥ असुरादुष्टनागाश्चयेयेदुष्टग्रहाअपि ॥ भूतवेतालगन्धर्व्वाडाकिनीयक्षराक्षसाः ॥ याश्चान्यादेवतास्सर्व्वाभूर्भुवस्स्वश्चभैरवाः ॥ पृथिव्यादीनिसर्व्वाणिब्रह्माण्डेसचराचरम् ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चईश्वरश्चसदाशिवः ॥ तन्तुष्टाःसर्व्वेतुष्टाश्चयस्तुकन्याम्प्रपूजयेत् ॥ विधियुक्ताङ्कुमारीन्तुभोजयेच्चैवभैरव ॥ पाद्यार्घ्यञ्चतथाधूपङ्कुङ्कुमञ्चन्दनंशुभम् ॥ भक्तिभावेनसम्पूज्यकुमारीभ्योनिवेदयेत् ॥

॥ कुमारीपूजाक्रमः ॥

तथा ॥ आनीयसुन्दरीन्नारीङ्कुमारीँव्वरनायिकाम् ॥ रत्नालङ्कारसँय्युक्तांशङ्खवस्त्रादिशोभिताम् ॥ वाग्भवेनजलन्नाथतन्नाम्नापरिदापयेत् ॥ देवीबुद्ध्यासदाध्यात्वापूजयेत्साधकोत्तमः ॥ मायाबीजेनतन्नाम्नापाद्यन्दद्यात्तथाप्रभो ॥ लक्ष्मीबीजेनचार्घ्यन्तुकूर्च्चेनचचन्दनम् ॥ मायाबीजेनपुष्पाणिकुमार्य्यैदापयेत्सुधीः ॥ सदाशिवेनमन्त्रेणधूपदीपौमहत्तमौ ॥ दत्वाषडङ्गमन्त्रेणपूजयेद्देवनायक ॥ तत्प्रकारम्महादेवशृणुष्वानन्दरूपधृक् ॥ म

हातेजोमयंशुभ्रंहृदयंहस्तदक्षिणैः ॥ विभाव्यप्रपठेद्भक्त्यातन्मन्त्रंशृणुशङ्कर ॥ आदौवाग्भवमुच्चार्य्यमायाँल्लक्ष्मीञ्चकूर्च्चकम् ॥ प्रेतबीजन्ततोब्रूयात्सविसर्गेन्दुकीलकम् ॥ कुलशब्दंसमुच्चार्य्यकुमारिकेततोवदेत् ॥ हृदयायनमः प्रोच्यततःशिरसिभावयेत् ॥ शुक्लवर्णंसर्व्वमयम्बीजमुच्चार्य्यसन्न्यसेत् ॥ हकारँव्वाग्भवाद्यञ्चरकारँव्वाग्भवात्मकम् ॥ मायाँल्लक्ष्मीँव्वाग्भवञ्चद्विठान्तंशिरसेपदम् ॥ वन्हिजायावाधेर्म्मन्त्रोन्यसेच्छिरसिसाधकः ॥ शिखामध्येकृष्णवर्णन्नीलाञ्जनचयप्रभम् ॥ विभाव्यसन्न्यसेन्मन्त्रीकुमारिकुलसिद्धये ॥ आदौप्रणवमुद्धृत्यतदन्तेविष्णुसुन्दरीम् ॥ शिखायैपदमुद्धृत्यवषट्कारन्ततोवदेत् ॥ ततःकवचमध्येचवलवन्तंसुतेजसम् ॥ प्रथमारुणसङ्काशन्ध्यात्वाचारुकलेवरम् ॥ वाग्भवञ्चसमुच्चार्य्यकुलशब्दन्ततोवदेत् ॥ वागीश्वरिपदम्पश्चात्कवचायततोवदेत् ॥ तारकम्ब्रह्मशब्दञ्चकवचन्यासजालकम् ॥ ततोनेत्रत्रयेध्यात्वामहाबीजम्महाप्रभम् ॥ रक्तवर्णङ्कोटिकोटिजवामण्डलमण्डितम् ॥ विराजितङ्कोटिपुण्यार्ज्जितेतेजसिभास्करे ॥ वाग्भवंहिसमुच्चार्य्यकुलेश्वरिपदन्ततः ॥ नेत्रत्रयायशब्दान्तेवौषड्लोचनमन्त्रकम् ॥ ततस्साधकमन्त्रीचवामहस्ततलेतथा ॥ मध्यमातर्ज्जनीभ्याञ्चतालद्वयमुपाचरेत् ॥ तन्मन्त्रङ्कोटिसूर्य्यौघज्योत्स्नाजालसमप्रभम् ॥ महाकाशोद्भवंशब्दमहोग्रपरिपीडनम् ॥ मायाबीजन्तथास्त्रायपदमुद्धृत्ययत्नतः ॥ फडन्तेचान्तमुद्धृत्यमहामन्त्रम्प्रकीर्त्तितम् ॥ ततस्तस्याःकुण्डबिलेध्यात्वाचपरिवारकान् ॥ पूजयेद्यततोमन्त्रीतेजसामृतधारया ॥ तर्प्पयेत्पूजयेद्भक्त्याभैरवम्बालभैरवम् ॥ देवताभिःपूजयित्वापरिवारान्क्रमेणतु ॥ ततोवाग्भवमुच्चार्य्यसिद्धजयायशब्दतः ॥ पूर्व्वम्पदंसमुच्चार्य्यवक्रायनमईरितम् ॥ ततोवाग्भवमुच्चार्य्यजया

यशब्दमुद्धरेत् ॥ उत्तरेवक्रमुद्धृत्यचतुर्थ्यन्तन्नमःपदम् ॥ ततो वाग्भवमायाश्रीबीजमुच्चार्य्ययतत ॥ कुब्जिकेपश्चिमान्तेचवक्रा यनमईरिताम् ॥ ततोवाग्भवमुच्चार्य्यकालिकेपदमुच्चरेत् ॥ दक्ष वक्रायशब्दान्तेनमोमन्त्रम्प्रकीर्तितम् ॥ एतन्मन्त्राक्षरान्नाथस मुच्चार्य्यकुलेश्वर ॥ पूजयित्वाक्रमेणैवभास्करम्परिपूजयेत् ॥ च ण्डन्दिक्पालदेवञ्चसन्ध्यादीन्परिपूजयेत् ॥ वीरभद्राम्महाकन्या ङ्कौलिनीङ्कुलगामिनीम् ॥ अष्टादशभुजाङ्कालीञ्चण्डदुर्गा म्प्रपूजयेत् ॥ नैवेद्यादीन्समानीयनानाभक्त्यानुराजितम् ॥ दु ग्धञ्चनावृतङ्क्षीरम्पक्वान्नम्पक्वसम्फलम् ॥ यद्यत्कालोपयोग्य ञ्चसर्वदामधुमिश्रितम् ॥ पञ्चतत्त्वङ्कुलद्रव्यान्निजकल्याणवर्द्धन म् ॥ नानाद्रव्यञ्चनैवेद्यंस्वस्वकल्पोक्तसाधितम् ॥ कुमारीभ्यो निवेद्यैवन्नानासौरभशोभितम् ॥ शीतलञ्जलमानीयदद्यात्ताभ्यो महासुधीः ॥ ततोहितम्महामन्त्रङ्कुमार्य्याश्चातिदुर्लभम् ॥ अथवाग्मीसमूलञ्चजप्त्वासिद्धीश्वरोभवेत् ॥ समर्प्यप्राणवायूना न्धारणङ्कारयेत्स्वयम् ॥ अष्टाङ्गादिप्रमाणञ्चकुर्व्वन्स्तोत्र म्पठेन्नमेत् ॥ प्रणाममन्त्रोपितत्रैव ॥ नमामिकुलकामिनी म्परमभाग्यसन्दायिनीङ्कुमाररतिचातुरींसकलसिद्धिमानन्दिनी म्॥प्रवालगुटिकास्रजंरजतरागवस्त्रान्वितांहिरण्यतुलभूषणाम्भुव नवाङ्कुमारीम्भजे ॥ इतिमन्त्रेणसन्नम्यतारिणीम्परिपूजयेत् ॥ शिवाङ्गणेशंसम्पूज्यप्रणमेत्साधकोत्तमः ॥ दक्षिणाँविधिवद्द त्वाकुमारीभ्यःक्रमेणतु ॥ विवाहयेत्स्वयङ्कन्याम्ब्रह्महत्यावि नश्यति ॥ योयश्चपुण्यकालेतुकन्यादानंसमापयेत् ॥ भूमि मुक्तिफलन्तस्यसौभाग्यंसर्व्वसम्पदः ॥ रुद्रलोकेवसेन्नित्यन्त्रि नेत्रोभगवान्हरः ॥ तीर्थकोटिसहस्राणिअश्वमेधशतानिच ॥ त त्फलँलभतेमत्यौयस्तुकन्याँविवाहयेत् ॥ वालुकासागरेज्ञेया

स्तावदब्दसहस्रकम्॥एकैकङ्कुलमुद्धृत्यरुद्रलोकेमहीयते॥तत्तादि ष्टदेवतायाःप्रीतयेतुष्टयेसुधीः ॥ कन्यादानंसमाहृत्यमुक्तिमाप्नो तिभैरव ॥ तत्तद्द्वितीयकन्यायास्तत्तद्बुद्धयाचसाधकः ॥ विभा व्यशिवरूपत्वंसम्प्रदानीयकन्यके ॥ पूर्णरूपंशिवन्ध्यात्वावरंस र्वाङ्गसुन्दरम्॥ तेजोमयय्यंशःकान्ताङ्कालभैरवरूपिणम्॥वटुके शम्महादेवँवरयेत्साधकाग्रणीः ॥ वालरूपाञ्चत्रैलोक्यसुन्दरीँवर वर्ण्णिनीम्॥ नानालङ्कारनम्राङ्गीम्भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥ चारु हास्याम्महानन्दहृदयांशुभदांशुभाम् ॥ध्यात्वाद्वादशपत्राब्जेपू र्णचन्द्रनिभाननाम् ॥ सम्प्रदानंसमानीयतत्तन्मन्त्रेणदापयेत् ॥

॥ इतिकुमारीदानक्रमफलम् ॥

॥ अथकुमारीमन्त्रपुरश्चरणम् ॥

अष्टमपटले ॥ अथवक्ष्येमहादेव्याःकुमार्य्याजपहोमकः ॥ लक्ष सङ्ख्यञ्जपङ्कृत्वामायाव्वाँवाग्भवम्मनुम् ॥ कालीवीजव्वाँपि नाथअथवाकामवीजकम् ॥ सदाशिवेनपुटितम्बिन्दुचन्द्रविभूषि तम् ॥ अथवाप्रणवेनापिपुटितन्त्रिदशेश्वर ॥ तद्दशांशेनजुहुया द्घृताक्तविल्वपत्रकैः॥अथवाश्वेतपुष्पैश्चकुन्दपुष्पैर्म्महाफलम्॥ एवङ्क्रमेणजुहुयात्करवीरप्रसूनकैः ॥ घृताक्तैःकेवलैर्व्वापिच न्दनागरुमिश्रितैः ॥ हविष्याशीदिवाभागेरात्रौपूजापरोभवेत् ॥ निजपूजामशेषैस्तुकुलद्रव्यैःप्रपूजयेत् ॥ रविसंख्यञ्जपेत्तत्रपर मानन्दरूपधृक् ॥ जपान्तेजुहुयान्मन्त्रीमदुक्तद्रव्यसँय्युतैः ॥ ततःप्राणात्मकव्वाँयुंशोधयित्वापुनःपुनः ॥ प्राणायामत्रयङ्कृ त्वा चाष्टाङ्गैःप्रणमेन्मुदा ॥ प्रणामसमयेनाथइदंस्तोत्रम्पठेद्य दि ॥ कवचञ्चतथापाव्यङ्कुमारीणामथापिवा॥निजदेव्यामहास्तो त्रम्पीठाङ्गङ्कवचन्ततः ॥ कुमारीणांमहन्देवसहस्रन्नामसाष्टकम् ॥

पठित्वासिद्धिमाप्नोतिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ तदशक्तौनिजदेव्यास्सहस्त्रंनाममङ्गलम् ॥ अष्टोत्तरम्पठेन्नाथसिद्धयाकाङ्क्षी नसंशयः॥तासांस्तोत्रन्दिव्यनाथशृणुसर्व्वत्रमङ्गलम् ॥ अकस्मात्सिद्धिमाप्नोतिपठित्वासाधकोत्तमः ॥ अग्रेसंस्थाप्यतास्सर्व्वारत्नकोटिसुशीतलाः ॥ ततःस्तोत्रम्पठेद्धीमान्समाहितमनावशी ॥ महादिव्याचाररतोवीरभावोल्वणोऽपिवा ॥ एवङ्क्रमेणप्रपठेद्भक्तिभावपरायणः ॥ महाविद्यामहासेवाभक्तिश्रद्धाप्लुतार्प्पितः ॥ महाज्ञानीभवेत्क्षिप्रव्वाँञ्छासिद्धिमवाप्नुयात् ॥

अथकुमारीपूजाप्रयोगः ॥

तत्रएकवर्षावधिषोडशवर्षपर्य्यन्तमजातपुष्पाकुमारीसञ्ज्ञातत्रवर्षक्रमेणनामानियथा॥ सन्ध्यासरस्वतीत्रिधामूर्त्तिःकालिका सुभगा उमा मालिनी कुब्जिका कालसन्दर्भाअपराजिता रुद्राणी भैरवीमहालक्ष्मीःपीठनायिका क्षेत्रज्ञा अम्बिका॥ प्रतिपदादिपञ्चदश्यन्तँव्वृद्धिक्रमेणपूजनीयाः॥कुमारीतुसर्वजातीयैवपूज्या ॥ प्रशस्तानटीकन्याकापालिकाकन्यारजककन्यानापितकन्यागोपालककन्याब्राह्मणकन्याशूद्रकन्यावैद्यकन्यावणिक्कन्याचाण्डालकन्यासुहृद्वर्गकन्याः ॥ कुमारीमासनेसमुपवेश्यध्यायेद्यथा ॥ बालरूपाञ्चत्रैलोक्यसुन्दरीँव्वरवर्ण्णिनीम् ॥ नानालङ्कारनम्राङ्गीम्भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥ चारुहास्याम्महानन्दहृदयांशुभदांशुभाम् ॥ एवन्ध्यात्वात्माशिरसिपुष्पन्दत्वामानसोपचारेणसम्पूज्यपुनर्द्धर्चात्वाकुमार्य्यङ्गेदत्वाइदमासनम्ऐँह्रीँश्रीँहूँह्लौःसन्ध्यायैकुमार्य्यैनमःएवम्पूर्व्वबीजान्युच्चार्य्यसरस्वत्यैकुमार्य्यैनमइत्यादिवत्सरानुक्रमेणचतुर्थ्यन्तेननाम्नाआसनादिभिः षोडशभिरुपचारैःसम्पूजयेत् ॥ एतज्जलंऐँसन्ध्यायैनमःएतत्पाद्यं

ॐ सन्ध्यायैनमः एतदाभरणंश्रीँसरस्वत्यैएषगन्धः हूँसन्ध्यायैनमः एतानि पुष्पाणिह्लौंस्सन्ध्यायैनमःएषधूपःऐँसन्ध्यायैनमःएषदीपःह्रीँसन्ध्यायैएतन्नैवेद्यम् ऐँह्रीँश्रीँहूँह्लौःसन्ध्यायैनिवेदयामिशङ्खमाल्यकज्जलकुङ्कुमादिकमनेननमोन्तेनमन्त्रेणदेयम् ॥ सर्व्वत्रचतुर्थ्यन्तङ्कुमार्य्यैइतिविशेषणन्दातव्यम् ॥ ततःषडङ्गपूजा ॥ तत्रक्रमस्तुकुमार्य्याहृदयन्दक्षिणहस्तेनधृत्वामहातेजोमयंशुक्लवर्ण्णंव्विभाव्यऐँह्रीँश्रीँहूँह्लौःकुलकुमारिकेहृदयायनमःशिरःशुक्लवर्ण्णंसत्त्वमयंव्विभाव्यहैंह्रीँश्रीँऐँशिरसेस्वाहाशिखान्नीलाञ्जनप्रभाँव्विभाव्यॐ श्रीँशिखायैवषट् कवचम्प्रथमारुणसङ्काशंसुतेजस्कँव्विभाव्यऐँकुलवागीश्वरिकवचायहूम् ततोनेत्रत्रयंसर्व्वबीजमयम्महाप्रभंरक्तवर्णङ्कोटिजवापुष्पोज्ज्वलँव्विभाव्यऐँकुलेश्वरिनेत्रत्रयायवौषट् ह्रीँअस्त्रायफडितिवामहस्ततलेतर्ज्जनीमध्यमाभ्यान्तालद्वयन्दद्यात् ॥ ततस्तस्याःकुण्डबिलेसपरिवारम्बालभैरवन्ध्यात्वाएतेगन्धपुष्पेसपरिवारबालभैरवायनम इतिपूजयेत् एतेगन्धपुष्पेऐँसिद्धजयायपूर्ववक्त्रायनमः एवञ्जयायोत्तरवक्त्राय० ऐँह्रीँश्रीँकुब्जिकेपश्चिमवक्त्राय ०ऐँकालिकेदक्षिणवक्त्राय० ॐभास्करायप्रत्येकन्दिक्पालेभ्यःवीरभद्राय० महाकन्यायै० कौलिन्यै० कुलगामिन्यै० अष्टादशभुजायै० काल्यै० चण्डदुर्ग्गायै० ओङ्कारादिनमोऽन्तेनपूजयेत् ॥ ततःकुमारीमूलमन्त्रंस्वीयमन्त्रँव्वायथाशक्तिजप्त्वाप्राणायामङ्कृत्वाजपंसमर्प्य स्तवकवचादिकम्पठित्वा अष्टाङ्गम्पञ्चाङ्गव्वाँप्रणम्यदक्षिणान्दद्यात् ॥ इतिकुमारीपूजाप्रयोगः ॥

॥ अथ कुमारीतर्प्पणम् ॥

शृणुनाथप्रवक्ष्यामिकुमारीतर्प्पणादिकम् ॥ यासान्तर्प्पणमात्रेणकुलसिद्धिर्भ्भवेद्ध्रुवम् ॥१॥ कुलबालाम्मूलपद्मास्थिता

ङ्कामविहारिणीम् ॥ शतधामूलमन्त्रेणतर्प्पयामितवप्रिये ॥ २ ॥ मूलपङ्कजयोगाङ्गीङ्कुमारींश्रीसरस्वतीम् ॥ तर्प्पयामिकुलद्रव्यै स्तवसन्तोषहेतुना ॥ ३ ॥ चारुमूलाधारपद्मेषड्दलान्तःप्रकाशिनीम् ॥ श्रीबीजेनतर्प्पयामिभोगमोक्षायकेवलम् ॥ ४ ॥ स्वाधिष्ठानकुलोल्लासविष्णुसङ्केतगामिनीम् ॥ कालिकान्निजबीजेनतर्प्पयामिकुलामृतैः ॥ ५ ॥ स्वाधिष्ठानाख्यपद्मस्थाम्महातेजोमयींशिवाम् ॥ सूर्य्याणांशीर्षमधुनातर्प्पयामिकुलेश्वरीम् ॥ ६ ॥ मणिपूराजमध्येषुमनोहरकलेवराम् ॥ उमादेवीन्तर्प्पयामिमायाबीजेनपार्व्वतीम् ॥ ७ ॥ मणिपूराम्भोजमध्येत्रैलोक्यपरपूजिताम् ॥ मानिनीम्मलचित्तस्यसद्बुद्धिस्तर्प्पयाम्यहम् ॥ ८ ॥ मणिपूरस्थितांरौद्रीम्परमानन्दवर्द्धिनीम् ॥ आकाशगामिनीन्देवीङ्काञ्जिकान्तर्प्पयाम्यहम् ॥ ९ ॥ तर्प्पयामिमहादेवीम्मन्त्रसाधनतत्पराम् ॥ योगिनोङ्कालसन्दर्भान्तर्प्पयामिकुलाननाम् ॥ १० ॥ शक्तिमन्त्रप्रदांरौद्रींल्लोलजिह्वासमाकुलाम् ॥ अपराजिताम्महादेवीन्तर्प्पयामिकुलेश्वरीम् ॥ ११ ॥ महाकौलप्रियांसिद्धांरुद्रलोकसुखप्रदाम् ॥ रुद्राणींरुद्रकिरणान्तर्प्पयामिमधुप्रियाम् ॥ १२ ॥ षोडशस्वरसंसिद्धिम्महारौरवनाशिनीम् ॥ महामद्यपानचित्ताम्भैरवीन्तर्प्पयाम्यहम् ॥ १३ ॥ त्रैलोक्यवरदान्देवींश्रीबीजमालयावृताम् ॥ महालक्ष्मीम्भवैश्वर्य्यान्तर्प्पयाम्यहमम्बिके ॥ १४ ॥ लोकानांहितकर्त्रींश्चहिताहितजनप्रियाम् ॥ तर्प्पयामिरमाबीजपीठाद्याम्पीठनायिकाम् ॥ १५ ॥ जयन्तीँव्वेदवेदाङ्गमातरंसूर्य्यमातरम् ॥ तर्प्पयामिसुधाभिश्चक्षेत्रज्ञाम्माययावृताम् ॥ १६ ॥ तर्प्पयामिकुलानन्दपारगाम्परमाननाम् ॥ तर्प्पयाम्यम्बिकान्देवीम्मायालक्ष्मींहृदिस्थिताम् ॥ १७ ॥ सर्व्वासाञ्चरणद्वयाम्बुजतलश्चैतन्य

विद्यावतां सौख्यात्र्थंशुभषोडशस्वरयुतांश्रीषोडशीम्मङ्गलाम् ॥ आनन्दार्णवपद्मरागखचितेसिंहासनेशोभिते त्वान्नित्यम्परितर्प्पयामिसकलंश्वेताब्जमध्यासने ॥ १८ ॥ येनित्यंसुप्रतिष्ठितञ्चसकलस्तोत्राङ्गसन्तर्प्पणंविद्यादाननिदानमोक्षपरमम्मायामयय्यान्तिते ॥ नोसान्तिक्षितिमण्डलेष्वरिगणास्सर्व्वेविपत्कारकाराजानव्वँशयन्तियोगसकलन्नित्याभवन्तिक्षणात् ॥ १९ ॥ तर्प्पणात्मकमोक्षाख्यम्पठतेयदिमानुषः ॥ अष्टैश्वर्य्ययुतोभूत्वा वत्सरान्माम्प्रपश्यति ॥ २० ॥ महायोगीभवेन्नाथमासादभ्यासतःप्रभो ॥त्रैलोक्यङ्क्षोभयेत्क्षिप्रव्वाँञ्छाफलमवाप्नुयात् ॥२१॥ यःपठेदेकभावेनसतर्प्पणफलँल्लभेत् ॥ पूजाफलमवाप्नोतिकुमारीस्तोत्रपाठतः ॥ २२ ॥ योनकुर्य्यात्कुमार्य्यर्च्चाःस्तोत्रञ्चानित्यमङ्गलम् ॥ सभवेत्पाशवःकल्पोमृत्युस्तस्यपदेपदे ॥ २३॥ इतिरुद्रयामलेउत्तरखण्डेमहातन्त्रोद्दीपनेकुमार्य्युपचर्य्याविन्यासेसिद्धमन्त्रप्रकरणेदिव्यभावनिर्णयेभैरवीसँव्वादेकुमारीतर्प्पणात्मकस्तोत्रंसमाप्तम् ॥ ॥छ॥ ॥

॥ अथकुमारीस्तोत्रम् ॥

भैरवउवाच ॥ देवेन्द्रोदयइन्दुकोटिकिरणांव्वाराणसीवासिनींव्विद्याँव्वाग्भवकामिनीन्त्रिनयनांसूक्ष्मक्रियागामिनीम् ॥ चण्डोद्वेगनिकृन्तनीन्त्रिजगतान्धात्रीङ्कुमारींव्वराम् मूलाम्भोरुहवासिनींशशिमुखींसम्पूजयन्तिश्रिये ॥ १ ॥ भाव्यान्देवगणैःशिवेन्द्रयतिभिर्मोक्षार्त्थिभिर्व्वालिकांसन्ध्यान्नित्यगुणोदयान्द्विजगणश्रेष्ठोदयांशारुहाम् ॥ शुक्लाभाम्परमेश्वरींशुभकरीम्भद्रांव्विशालाननाङ्गायत्रीङ्गणमातरन्दिनपतिङ्कृष्णाञ्चवृद्धाम्भजे ॥ २ ॥ बालाम्बालकपूजिताङ्गुणयुतांव्विद्यावताम्मोक्षदान्धात्रींशुक्लसर

स्वतीन्नरवराँव्वाग्वादिनीञ्चण्डिकाम् ॥ स्वाधिष्ठानहरप्रियाम्प्रि यकरीँव्वेदान्तविद्याप्रदान्नित्यम्मोक्षहिताययोगवपुषाचैतन्यरूपा म्भजे ॥ ३ ॥ नानारत्नसमूहनिर्म्मितगृहेपूज्यांसुरैर्ब्बालिकाँव्व न्देनन्दनकाननेमनसिसिद्धान्तैकबीजानने ॥ अत्र्थंदेहिनिरत्र्थका यवपुषेहित्वाकुमारीङ्कलाम् मह्यम्मातृकुमारिकेचत्रिविधामूर्त्त्या चतेजोमयी ॥ ४॥ हालाहालकरालिकाङ्कुलपथोल्लासैःकराब्जो द्भहान्नासामोदकरालिनीँहिभजताङ्कामातिरिक्तप्रदाम् ॥ बालोऽह म्बटुकेश्वरस्यचरणाम्भोजाश्रितोऽहंसदा हित्वाबालकुमारिके शिरसिशुक्लाम्भोरुहेसम्भजे ॥ ५ ॥ सूर्य्याह्लादवलाकिनीङ्कलिम हापापार्द्दितापापहान्तेजोगाम्भुविसूर्य्यगाम्भयहरान्तेजोमयीङ्का लिकाम् ॥ वन्देहृत्कमलेसदारविदलेबालेन्द्रविद्यांसतींसाक्षात्सि द्धिकरीङ्कुमारिविमलेत्वामाद्यरूपेश्वरीम् ॥ ६ ॥ नित्यंश्रीकुलकामि नीङ्कुलवतीङ्कौलासुनामम्बिकान्नानायोगविलासिनींसुरमणीन्नि त्यान्तपस्यान्वित्ताम् ॥ वेदान्तार्त्थविशेषदेशवसनाभाषाविशेष स्थिताँव्वन्देपर्व्वतराजराजतनयाङ्कालप्रियेत्वामहम् ॥ ७ ॥ कौमा रीङ्कुलमालिनींरिपुगणक्षोभाग्निसन्दायिनींरक्ताभानयनांशुभा म्परममार्ग्गाम्मुक्तिसञ्ज्ञाप्रदाम् ॥ भार्य्याम्भोगवतीम्पतिन्त्रिभुव नेष्वामोदपञ्चाननाम् पञ्चास्यप्रियकामिनीम्भयहरांसर्प्पादिहा राम्भजे ॥ ८ ॥ चन्द्रास्याञ्चरणद्वयाभुजमहाशोभाविनोदीन्नदीम् मोहादिक्षयकारिणीँव्वरकरांश्रीकुब्जिकांसुन्दरीम् ॥ येनित्यम्परि पूजयन्तिसहसाराजेन्द्रचूडामणिंसम्पादन्धनमायुषन्त्रिजगताँ व्याप्येश्वरत्वञ्जगुः ॥ ९ ॥ योगीशम्भुवनेश्वरम्प्रियकरंश्रीकालस न्दर्भया शोभासागरगामिनंसुरतरुँव्वाञ्छाफलोद्दीपनम् ॥ लो कानामघनाशनायशिवयाश्रीसञ्ज्ञयाविद्यया धर्म्मप्राणसदैवत म्प्रणमताङ्कल्पद्रुमम्भावये ॥ १० ॥ विद्यान्तामपराजि

ताम्मदनगामामोदमत्ताननांहृत्पद्मासंस्थितपादुकाङ्कुलकलाङ्गा त्यायनीम्भैरवीम् ॥ येयेपुण्यधियोभजन्तिपरमानन्दाब्धिम ध्येमुदा सर्व्वाच्छादिततेजसाभयकरीम्मोक्षायसत्कीर्त्तये॥ ११॥ रुद्राणीम्प्रणमामिपद्मवदनाङ्कोत्थ्यर्कतेजोमयीन्नानालङ्कृतभूषणा ङ्कुलभुजामानन्दसन्दायिनीम् ॥ श्रीमायाकमलान्वितां हृदिगतांसन्तानबीजक्रियाँव्वन्देवाग्भवरूपिणीङ्कुलवधूंहूंकार बीजोद्भवाम् ॥ १२ ॥ नमामिवरभैरवीङ्क्षितितलाघकालानना म् मृणालकुसुमारुणाम्भुवनदोषसंशोधिनीम् ॥ जगद्भयहरा म्परान्त्वरतियाचयोगेश्वरीम् ममापदसहस्रकंसकलभोगदा न्तामहम् ॥ १३ ॥ साम्राज्यम्प्रददातिया भगवतीविद्याम हालक्षणासाक्षादष्टसमृद्धिदाभुविमहालक्ष्मीः कुलक्षोभहा॥ स्वा धिष्ठानसुपङ्कजेविवसिताँव्विष्णोरनन्ताश्रिये वन्देराजपदप्रदांशु भकरीङ्कौलेश्वरींसर्व्वदा॥ १४ ॥ पीठानामधिपाधिपामसुरहाँ व्विद्यांशुभान्नायिकां सर्व्वालङ्करणान्वितान्त्रिजगताङ्क्षोभापहाँ व्वारुणीम्॥ वन्देपीठगनायिकान्त्रिभुवनच्छायाभिराच्छादितां सर्व्वेषांहितकारिणीञ्जयवतामानन्दरूपेश्वरीम् ॥ १५ ॥ क्षेत्र ज्ञाम्मदविह्वलाङ्कुलवतींसिद्धप्रियाम्प्रेयसीं शम्भोश्श्रीबटुकेश्वर स्यमहतामानन्दसञ्चारिणीम् ॥ साक्षादात्मपरोद्गमान्निजमनः क्षोभापहांशाकिनीँव्वाक्यार्थप्रकटामहंरजतभाँव्वन्देमहाभैरवी म् ॥ १६ ॥ सम्पूर्णविधुवन्मुखीङ्कमलमध्यसम्भाविनींशि रोदशशतेदलेऽमृतमहाब्धिधाराधराम् ॥ प्रणामफलदायिनींस कलराज्यवश्याङ्कुणान्नमामिपरमाम्बिकाँव्विषयपाशसंहारिणी म् ॥ १७ ॥ साक्षादहन्त्रिभुवनेऽमृतपूर्णदेहां सन्ध्यादिदेवि कललाःकुलपण्डितेन्द्राम् ॥ तन्नोभजेसुरवरेवरकालिकेत्वांसि द्धानलेप्रातिदिनम्प्रणमामिभक्त्या ॥ भक्तिन्धनञ्जयपदँय्यादिदे

हिदास्यन्तस्मिन्महामधुमतीलघुगेहभार्य्याम् ॥ १८ ॥ एतत्स्तोत्रप्रसादेनकवितावाक्पतिर्भवेत् ॥ महासिद्धीश्वरोदिव्योवीरभावपरायणः ॥ १९ ॥ सर्वत्रजयमाप्नोतिसहिस्याद्धरवल्लभः ॥ वाचामीशोभवेत्क्षिप्रङ्कामरूपीभवेन्नरः ॥ २० ॥ पशुरेवमहावीरोदिव्योभवतिनिश्चितम् ॥ क्रमशोप्यष्टसिद्धिःस्याद्वाग्मीभवतिनिश्चितम् ॥२१॥ सर्व्वविद्याःप्रसीदन्तितुष्टास्सर्व्वदिगीश्वराः ॥ वह्निःशीतलतांय्याँति जलस्तम्भंसकारयेत् ॥२२॥ धनवान्पुत्रवान्राजाइहलोकेभवेन्नरः ॥ परिचरतिवैकुण्ठेकैलासेशिवसान्निधौ ॥ २३ ॥ मुक्तएवमहादेवयोनित्यंसर्व्वदापठेत् ॥ महाविद्यापदाम्भोजंसहिपश्यतिनिश्चितम् ॥ २४ ॥

इतिकुमारीस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथकुमारीकवचम् ॥

अथातस्सम्प्रवक्ष्यामिकुमारीकवचंशुभम् ॥ त्रैलोक्यमङ्गलन्नाममहापातकनाशनम् ॥ १ ॥ पठनाद्धारणाल्लोकामहासिद्धाःप्रभाकराः ॥ शक्रोदेवाधिपः श्रीमान्देवगुरुर्ब्बृहस्पतिः ॥ २ ॥ सम्यक्तेजोमयोवह्निर्द्धर्म्मराजोभयानकः ॥ वरुणोदेवपूज्योहिजलानामाधिपस्स्वयम् ॥ ३ ॥ सर्व्वहर्त्तामहावायुःकुमारःकुञ्जरेश्वरः ॥ धनाधिपःप्रियश्शंभोस्सर्व्वेदेवादिगीश्वराः ॥ ४ ॥ त्वमेकःप्रभुरेकात्मासर्व्वेशोनिर्म्मलोदयः ॥ एतत्कवचपाठेनसर्व्वेभूपाधनाधिपाः ॥ ५ ॥ प्रणवोमेशिरःपातुमायासन्ध्यात्मिकासती ॥ ललाटोर्द्ध्वंमहामायापातुमेश्रीसरस्वती ॥६॥ कामाख्याबटुकेशानीत्रिमूर्त्तिर्भालमेवतु ॥ चामुण्डाबीजरूपाचवदनंकालिकामम ७॥ पातुमांसूर्य्यगानित्यन्तथानेत्रद्वयम्मम ॥ कर्ण्णयुग्मङ्कामबीजस्वरूपोमातपास्विनी ॥ ८ ॥ रसनाग्रन्तथापातुवाग्देवीमालिनी

मम ॥ तामवस्थाकामरूपादन्ताग्रङ्कुब्जिकाममम ॥ ९ ॥ देवी प्रणवरूपासापातुनित्यंशिरोमम ॥ ओष्ठाधरंशक्तिबीजात्मिका स्वाहास्वरूपिणी ॥ १० ॥ गलदेशम्महारौद्रीपातुमेचापरा जिता ॥ क्षौंबीजम्मेसदाकण्ठंरुद्राणीस्वाहयान्विता ॥ ११ ॥ हृदयंषोडशीविद्यापातुषोडशसुस्वरा ॥ द्वौबाहूपातुसर्व्वत्रमहाल क्ष्मीःप्रधानिका ॥ १२ ॥ सर्व्वमन्त्रस्वरूपामेचोदरम्पीठना यिका ॥ पाश्र्वयुग्मन्तथापातुहृद्देवीवाग्भवात्मिका ॥ १३ ॥ कैशोरीकटिदेशम्मेमायाबीजस्वरूपिणी ॥ जङ्घायुग्मञ्जय न्तीमे योगिनीकुल्लुकावृता ॥ १४ ॥ सर्व्वाङ्गमम्बिकादेवीपातुम न्त्रार्त्थगामिनी ॥ केशाग्रङ्कमलादेवीनासाग्रंनरमोहिनी ॥ १५ ॥ चिबुकञ्चण्डिकादेवीकुमारीपातुमेसदा ॥ हृदयँल्ललितादेवीपृष्ठ म्पर्व्वतवासिनी ॥ १६ ॥ त्रिशक्तिःषोडशीदेवीलिङ्गङ्गुह्यंसदा वतु ॥ श्मशानेचाम्बिकादेवीगङ्गागर्भेचभैरवी ॥ १७ ॥ शू न्यागारेपञ्चमुद्रामन्त्रयन्त्रप्रकाशिनी ॥ चतुष्पथेसदापातुमामे ववज्रधारिणी ॥ १८ ॥ शवासनगताचण्डामुण्डमालाविभू षिता ॥ पातुमामेवलिङ्गेचईश्वरीशक्तिरूपिणी ॥ १९ ॥ वनेपातुमहाबालामहारण्येरणप्रिया ॥ महाजलेतडागेचशत्रुम ध्येसरस्वती ॥ २० ॥ महाकाशपथेपृथ्वीपातुमांशीतलासदा ॥ रणमध्येराजलक्ष्मीःकुमारीकुलकामिनी ॥ २१ ॥ अर्द्धनारीश्व रीपातुममपादतलम्मही ॥ नवलक्षमहाविद्याकुमारीरूपधारि णी ॥ २२ ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशाचन्द्रकोटिसुशीतला ॥ पा तुमाँव्वरदावाणीवटुकेश्वरकामिनी ॥ २३ ॥ इतितेकथितन्ना थकवचम्परमाद्भुतम् ॥ कुमार्य्याःकुलदायिन्याःपञ्चतत्त्वार्त्थपा रगम् ॥ २४ ॥ योजपेत्पञ्चतत्त्वेनस्तोत्रेणकवचेनच ॥ आका शगामिनीसिद्धिर्भवेत्तस्यनसंशयः ॥ २५ ॥ वज्रदेहीभवेत्क्षिप्र

ङ्कवचस्यप्रसादतः ॥सर्व्वसिद्धीश्वरोयोगीज्ञानीभवतियःपठेत्॥ ॥ २६ ॥ विवादेव्यवहारेचसङ्ग्रामेकुलमण्डले ॥महापथेश्मशानेचयोगसिद्धयुद्भवेषुच, ॥ २७ ॥ पठित्वाफलमाप्नोतिसत्यंसत्यङ्कुलेश्वर ॥ वशीकरणंकवचंसर्व्वत्रजयदंशुभम् ॥ २८ ॥ पुण्यव्रतीपठेन्नित्यँय्यातिश्रीमान्भवेद्ध्रुवम् ॥ सिद्धविद्याकुमारीचददातिसिद्धिमुत्तमाम् ॥२९॥पठेद्यःशृणुयाद्वापिसभवेत्कल्पपादपः॥ भुक्तिंमुक्तिंतुष्टिंपुष्टिंराजलक्ष्मींसुसम्पदम् ॥३०॥ प्राप्नोतिसाधकश्रेष्ठोधारयित्वाभवेज्जयी ॥ असाध्यंसाधयेद्विद्वान्पठित्वाकवचंशुभम् ॥ ३१ ॥ कुलीनानाम्महासौख्यन्धर्म्मार्त्थकाममोक्षदम् ॥ योगिनान्दिवसेनित्यङ्कुमारीम्पूजयेन्निशि ॥ ३२ ॥ उपचारविशेषेणत्रैलोक्यँव्वशमानयेत् ॥ पललेनाशनेवापिमत्स्येनमुद्रयासह ॥ ३३ ॥ नानाभक्ष्येणभोज्येनगन्धद्रव्येणसाधकः ॥ माल्येनस्वर्णरजतालङ्कारेणसुचैलकैः ॥ ३४॥ पूजयित्वाजपित्वाचतर्प्पयित्वावराननाम् ॥ यज्ञदानतपस्याभिःप्रयोगेणमहेश्वर ॥ ३५ ॥ स्तुत्वाकुमारीकवचंयःपठेदेकभावतः ॥ तस्यसिद्धिर्भवेत्क्षिप्रंराजराजेश्वरोभवेत् ॥ ३६ ॥ वाञ्छाफलमवाप्नोतियद्यन्मनसिवर्त्तते ॥ भूर्ज्जपत्रेलिखित्वायः कवचन्धारयेद्यदि ॥ ॥३७॥ शनिमङ्गलवारेचनवम्यामष्टमीदिने ॥ चतुर्द्दश्याम्पौर्ण्णमास्याङ्कृष्णपक्षेविशेषतः ॥ ३८ ॥ लिखित्वाधारयेद्विद्वानुत्तराभिमुखोभवेत् ॥महापातकयुक्तोपिमुक्तस्स्यात्सर्व्वपातकैः॥ ॥ ३९ ॥ योषिद्वामभुजेधृत्वासर्व्वकल्याणमालभेत् ॥ बहुपुत्रान्विताकान्तासर्व्वसम्पत्तिसँय्युता ॥ ४० तथाश्रीपुरुषश्रेष्ठोदक्षिणेधारयेद्भुजे ॥ ऐहिकेदिव्यदेहःस्यात्पञ्चाननसमप्रभः ॥ ॥ ४१ ॥ शिवलोकेपरेयातिवायुवेगीनिरामयः ॥ सूर्य्यमण्डलमाभेद्यपरम्मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ४२ ॥ लोकानामतिसौख्यद

मम ॥ तामवस्थाकामरूपादन्ताग्रङ्कुब्जिकामम ॥ ९ ॥ देवी प्रणवरूपासापातुनित्यंशिरोमम ॥ ओष्ठाधरंशक्तिबीजात्मिका स्वाहास्वरूपिणी ॥ १० ॥ गलदेशम्महारौद्रीपातुमेचापराजिता ॥ क्षौंबीजम्मेसदाकण्ठंरुद्राणीस्वाहयान्विता ॥ ११ ॥ हृदयंषोडशीविद्यापातुषोडशसुस्वरा ॥ द्वौबाहूपातुसर्व्वत्रमहालक्ष्मीःप्रधानिका ॥ १२ ॥ सर्व्वमन्त्रस्वरूपामेचोदरम्पीठनायिका ॥ पाइर्श्वयुग्मन्तथापातुहृद्देवीवाग्भवात्मिका ॥ १३ ॥ कैशोरीकटिदेशम्मेमायाबीजस्वरूपिणी ॥ जङ्घायुग्मञ्जयन्तीमे योगिनीकुल्लुकावृता ॥ १४ ॥ सर्व्वाङ्गमम्बिकादेवीपातुमन्त्रार्त्थगामिनी ॥ केशाग्रङ्कमलादेवीनासाग्रंनरमोहिनी ॥ १५ ॥ चिबुकञ्चण्डिकादेवीकुमारीपातुमेसदा ॥ हृदयँह्यलितादेवीपृष्ठम्पर्व्वतवासिनी ॥ १६ ॥ त्रिशक्तिःषोडशीदेवीलिङ्गङ्गुह्यंसदावतु ॥ श्मशानेचाम्बिकादेवीगङ्गागर्भेचभैरवी ॥ १७ ॥ शून्यागारेपञ्चमुद्रामन्त्रयन्त्रप्रकाशिनी ॥ चतुष्पथेसदापातुमामेववज्रधारिणी ॥ १८ ॥ शवासनगताचण्डामुण्डमालाविभूषिता ॥ पातुमामेवलिङ्गेचईश्वरीशक्तिरूपिणी ॥ १९ ॥ वनेपातुमहाबालामहारण्येरणप्रिया ॥ महाजलेतडागेचशत्रुमध्येसरस्वती ॥ २० ॥ महाकाशपथेपृथ्वीपातुमांशीतलासदा ॥ रणमध्येराजलक्ष्मीःकुमारीकुलकामिनी ॥ २१ ॥ अर्द्धनारीश्वरीपातुममपादतलम्मही ॥ नवलक्षमहाविद्याकुमारीरूपधारिणी ॥ २२ ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशाचन्द्रकोटिसुशीतला ॥ पातुमाँव्वरदावाणीबटुकेश्वरकामिनी ॥ २३ ॥ इतितेकथितन्नाथकवचम्परमाद्भुतम् ॥ कुमार्य्याःकुलदायिन्याःपञ्चतत्त्वार्त्थपारगम् ॥ २४ ॥ योजपेत्पञ्चतत्त्वेनस्तोत्रेणकवचेनच ॥ आकाशगामिनीसिद्धिर्भवेत्तस्यनसंशयः ॥ २५ ॥ वज्रदेहीभवेत्क्षिप्र

ङ्कवचस्यप्रसादतः ॥सर्व्वसिद्धीश्वरोयोगीज्ञानीभवतियःपठेत्॥ ॥ २६ ॥ विवादेव्यवहारेचसङ्ग्रामेकुलमण्डले ॥महापथेश्मशानेचयोगसिद्धयुद्धवेषुच ॥ २७ ॥ पाठित्वाफलमाप्नोतिसत्यंसत्यङ्कुलेश्वर ॥ वशीकरणकवचंसर्व्वत्रजयदंशुभम् ॥ २८ ॥ पुण्यवतीपठेन्नित्यँय्यातिश्रीमान्भवेद्ध्रुवम् ॥ सिद्धविद्याकुमारीचददातिसिद्धिमुत्तमाम्॥२९॥पठेद्यःशृणुयाद्वापिसभवेत्कल्पपादपः॥ भुक्तिंमुक्तितुष्टिंपुष्टिंराजलक्ष्मींसुसम्पदम् ॥३०॥ प्राप्नोतिसाधकश्रेष्ठोधारयित्वाभवेज्जयी ॥ असाध्यंसाधयेद्विद्वान्पठित्वाकवचंशुभम् ॥ ३१ ॥ कुलीनानाम्महासौख्यन्धर्म्मार्त्थकाममोक्षदम् ॥ योगिनान्दिवसेनित्यङ्कुमारीम्पूजयेन्निशि ॥ ३२ ॥ उपचारविशेषेणत्रैलोक्यँव्वशमानयेत् ॥ पललेनाशनेवापिमत्स्येनमुद्रयासह ॥ ३३ ॥ नानाभक्ष्येणभोज्येनगन्धद्रव्येणसाधकः ॥ माल्येनस्वर्ण्णरजतालङ्कारेणसुचैलकैः ॥ ३४॥ पूजयित्वाजपित्वाचतर्प्पयित्वावराननाम् ॥ यज्ञदानतपस्याभिःप्रयोगेणमहेश्वर ॥ ३५ ॥ स्तुत्वाकुमारीकवचंयःपठेदेकभावतः ॥ तस्यसिद्धिर्भवेत्क्षिप्रंराजराजेश्वरोभवेत् ॥ ३६ ॥ वाञ्छाफलमवाप्नोतियद्यन्मनसिवर्त्तते ॥ भूर्जपत्रेलिखित्वायः कवचन्धारयेद्यदि ॥ ॥३७॥ शनिमङ्गलवारेचनवम्यामष्टमीदिने ॥ चतुर्दश्याम्पौर्ण्णमास्याङ्कृष्णपक्षेविशेषतः ॥ ३८ ॥ लिखित्वाधारयेद्विद्वानुत्तराभिमुखोभवेत् ॥ महापातकयुक्तोपिमुक्तस्स्यात्सर्व्वपातकैः॥ ॥ ३९ ॥ योषिद्वामभुजेधृत्वासर्व्वकल्याणमालभेत् ॥ बहुपुत्रान्विताकान्तासर्व्वसम्पत्तिसँय्युता ॥ ४० तथाश्रोपुरुषश्रेष्ठोदक्षिणेधारयेद्भुजे ॥ ऐहिकेदिव्यदेहःस्यात्पञ्चाननसमप्रभः ॥ ॥ ४१ ॥ शिवलोकेपरेयातिवायुवेगीनिरामयः ॥ सूर्य्यमण्डलमाभेद्यपरम्मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ४२ ॥ लोकानामतिसौख्यद

म्भयहरंश्रीपादभक्तिप्रदम्मोक्षात्र्थङ्कवचंशुभम्प्रपठतामानन्दसि न्धूद्भवम्॥पन्थानङ्कलिकालऽघोरकलुषध्वंसैकहेतुञ्चयँय्येलोकाः प्रपठन्तिधर्म्मर्थमतुलम्मोक्षँव्रजन्तिक्षणात् ॥ ४३ ॥ इतिरुद्रया मलउत्तरतन्त्रेमहातन्त्रोद्दीपनेकुमार्य्युपचर्य्याविन्यासेकुमारीकव चोल्लासेसिद्धमन्त्रप्रकरणेभावनिर्णयकुमारीकवचंसमाप्तम् ॥

अथान्यत्स्तोत्रम् ॥

जगत्पूज्ये चगद्वन्द्ये सर्व्वशक्तिस्वरूपिणी ॥ पूजाङ्गृहाणकौ मारिजगन्मातर्न्नमोस्तुते ॥१॥ त्रिपुरान्त्रिपुराधारान्त्रिवर्षाञ्ज्ञान रूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवन्दितान्देवीन्त्रिमूर्त्तिम्पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥ कालात्मिकाङ्कलातीताङ्कारुण्यहृदयांशिवाम् ॥ कल्याणजननी न्देवीङ्कल्याणीम्पूजयाम्यहम् ॥३॥ अणिमादिगुणाधारामकाराद्य क्षरात्मिकाम् ॥ अनन्तशक्तिकाँल्लक्ष्मींरोहिणीम्पूजयाम्यहम् ॥ ॥ ४ ॥ कामचारींशुभाङ्कान्ताङ्कालचक्रस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदाराङ्कालिकाम्पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ चण्डवीराञ्चण्डमा याञ्चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम् ॥ पूजयामिसदादेवीञ्चण्डिकाञ्चण्ड विक्रमाम् ॥ ६ ॥ सदानन्दकरींशान्तांसर्व्वदेवनस्कृताम् ॥ स सर्व्वभूतात्मिकाँल्लक्ष्मीं शाम्भवीम्पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥ दुर्गमेदु स्तरेकार्य्ये भवदुःखविनाशिनीम् ॥ पूजयामिसदाभक्त्यादुर्गां दुर्गार्त्तिनाशिनीम् ॥ ८ ॥ सुन्दरींसर्व्ववर्णाभांसुखसौभाग्यदा यिनीम् ॥ सुभद्राजननीन्देवीं सुभद्राम्पूजयाम्यहम् ॥ ९ ॥

इतिकुमारीस्तोत्रम् ॥

इति शाक्तप्रमोदे कुमारीतन्त्रं समाप्तम् ॥

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

द्वादशं

बलिदानक्रमः ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज–खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ।

॥ अथबलिदानक्रमः ॥

स्वयमुत्तराभिमुखः पूर्व्वाभिमुखम्बलिं अव्यग्रावयवंसुन्दरंहृष्टपुष्टम्माल्यङ्कण्ठेवेष्टयित्वास्नातं समानीयकृताञ्जलिः पठेत्॥ॐ वाराहीयमुनागङ्गाकरतोयासरस्वती ॥ कावेरीचन्द्रभागाचसिन्धुर्भैरवसागराः ॥ पशुस्नानविधानायसान्निध्यमिहकल्पय ॥ इतितीर्त्थान्यावाह्य ॐअग्निः पशुरासीत्तेनायजन्तसएतँल्लोकमजयद्यस्मिन्नग्निःसतेलोकोभविष्यतितज्जेष्यसिपिबैताअपः ॥ ॐवायुः पशुरासीत्तेनायजन्तसएतँल्लोकमजयद्यस्मिन्वायुःसतेलोकोभविष्यतितज्जेष्यसिपिबैताअपः ॥ ॐसूर्य्यः पशुरासीत्तेनायजन्तसएतँल्लोकमजयद्यस्मिन्सूर्य्यःसतेलोकोभविष्यतितज्जेष्यसिपिबैताअपः ॥ ॐवाचन्तेशुन्धामि प्राणन्तेशुन्धामि चक्षुस्तेशुन्धामिश्रोत्रन्तेशुन्धामि मेढ्रन्तेशुन्धामि पायुन्तेशुन्धामि ॥ चारित्रांस्तेशुन्धामि मानस्तआप्यायताम् वाक्तआप्यायताम् प्राणस्तआप्यायताम् चक्षुस्तआप्यायताम् श्रोतन्त्रआप्यायताम् यत्तेक्रूरँय्यदास्तितन्तत्तआप्यायताम् निष्टचायताम् तत्तेशुद्ध्यातुशोमहोभ्यः स्वाहा ॥इतिमन्त्रैःस्नापयित्वा ॐ मेघाकारस्तम्भमध्येपशुबन्धायसशृङ्गाद्यवयवम्पशुम्बन्धयबन्धयब्रह्माण्डखण्डरूपस्तम्भेपशुम्बन्धयबन्धयहुः फट्स्वाहाॐह्राँह्रीँह्रूँचाँ चण्डिकायै इमम्पशुम्प्रोक्षामिस्वाहा इतिप्रोक्षणम् ततस्सशृङ्गाद्यवयवम्पशुम्मोक्षङ्कुरुकुरुस्वाहेतिमोक्षङ्कृत्वाक्षमस्वेतिललाटेसिन्दूरन्दत्त्वाॐछागपशवेनमइतिपाद्यादिकन्दत्त्वाएतदधिप

तये ॐ अग्नयेनमः एतत्सम्प्रदानीयायै ह्रीं अमुकदेवतायैनमः इति पुष्पन्दत्वा पशोरङ्गदेवताः पूजयेत् ॥ यथा शिरसि ॐ रुधिरवदनायै नमः ललाटे ॐ शार्ङ्गिण्यैनमः भ्रूमध्ये ॐ भङ्गायैनमः चक्षुषोः ॐ त्रिनेत्रायैनमः कर्णयोः ॐ पार्वत्यैनमः घ्राणे ॐ गौर्य्यैनमः चिबुके ॐ चण्डिकायैनमः दन्तपङ्क्तौ ॐ उग्रचण्डिकायैनमः जिह्वायाम् ॐ चण्डघण्टायैनमः मुखे ॐ विरूपाक्षायैनमः ग्रीवायाम् ॐ चण्डायैनमः पृष्ठे ॐ महाभैरव्यैनमः ॥ उदरे ॐ वैष्णव्यैनमः चतुष्पदे ॐ चण्डाप्रियायैनमः पार्श्वयोः ॐ सर्व्वैश्वर्य्यैनमः कटिदेशे ॐ विरूपाक्षायैनमः खुराग्रे ॐ कौशिक्यैनमः लाङ्गूले ॐ प्रहर्षिण्यैनमः सर्वाङ्गे ॐ पश्वधिष्ठातृदेवताभ्योनमः इति सम्पूज्य उत्सृजेत् ॥ विष्णुः ॐ तत्सदद्याश्विने मासि शुक्ले पक्षेऽमुकतिथौ वार्षिकशरत्कालीनामुकदेवतामहोत्सवे अमुकगोत्रस्यामुकस्य असुकदेवताप्रीतिकामनया अमुकदेव्यै इमम्पशुं वह्निदैवतन्तुभ्यमहङ्घातयिष्यामि इत्युत्सृज्य कृताञ्जलिः पठेत् ॥ ॐ छागत्वम्बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः ॥ प्रणमामि ततस्सर्व्वरूपिणम्बलिरूपिणम् ॥ यज्ञार्थे पशवस्सृष्टास्स्वयमेव स्वयम्भुवा ॥ अतस्त्वाङ्घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ पशुयोनिप्रसूतोऽसि पूजाहोमादिकर्म्मसु ॥ तुष्टा भवतु सा देवी सरक्तपिशितैस्तव ॥ चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनः ॥ चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यन्नमोऽस्तु ते ॥ ततः ॥ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि ॥ तन्नः पशुः प्रचोदयात् ॥ इति कर्णे जपेत् ॥ ततः खड्गमानीय ह्रीं इति बीजाक्षरं लिखित्वा ध्यायेत् ॥ कृष्णम्पिनाकपाणिञ्च कालरात्रिस्वरूपिणम् ॥ उग्ररक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम् ॥ रक्ताम्बरधरञ्चैव पाशहस्तङ्कुटुम्बिनम् ॥ पिबमानञ्च रुधिरम्भुञ्जानङ्क्रव्यसंहतिम् ॥ एवङ्खड्गन्ध्या

त्वागृहीत्वा ॥ ॐरसनात्वञ्चण्डिकायाःसुरलोकप्रसाधकः ॥ इत्य भिमन्त्र्य ॥ ऐंह्रींखड्गायनमइतिपाद्यादिभिःसम्पूज्य पुनर्म्मुष्टौ ॐमहादेवायनमः धारेॐयमायनयः अग्रे ॐब्रह्मणेनमः ॥ ॐअसिर्व्विशनसःखड्गस्तीक्ष्णधारोदुरासदः ॥ श्रीगर्भोविजय श्चैवधर्म्मपालनमोऽस्तुते ॥ इत्यष्टौतवनामानिस्वयमुक्तानिवेध सा ॥ नक्षत्रङ्कीर्त्तिकातुभ्यङ्गुरुर्देवोमहेश्वरः ॥ हिरण्यञ्चशरीरन्ते धातादेवोजनार्द्दनः ॥ पितापितामहोदेवस्त्वम्मामपालयसर्व्वदा ॥ नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रःकृशोदरः ॥ भावशुद्धोमर्षणश्चअ तितेजास्तथैवच ॥ ॐतीक्ष्णदंष्ट्रायनमइतिपुष्पन्दत्वा ॥ ॐ ह्रींफट्इतिखड्गमादाय ॐकालिकालिवज्रेश्वरिलोहदण्डायैनम इतिजपित्वाछागस्यग्रीवायाम् ॥ खड्गत्वंशीघ्रञ्छिन्धिछिन्धिफ ट्फट्स्वाहा इतिपूर्व्वाभिमुखम्बलिंस्वयमुत्तराभिमुखउत्तराभिमु खम्बलिंस्वयम्पूर्व्वाभिमुखोवासकृत्प्रहारेणछिन्द्यात् ॥ ततोमृ न्मयादिपात्रेरुधिरमादाय चतुर्म्भागङ्कृत्वाऐशान्याम् ॐविदारि कायैनमः आग्नेय्याम्ॐपूतनायैनमः नैर्ऋत्याम् ॐपापराक्षस्यै नमः वायव्याम् ॐकौशिक्यैनमः ॐतत्सदद्यामुकेमास्यमुकप क्षेऽमुकतिथौवार्षिकशरत्कालीनामुकदेवतामहोत्सवेमुकगोत्र स्यामुकस्यदशवर्षावच्छिन्नयामुकदेवताप्रीतिकामनयाऽमुकदे व्यैछागपशुरुधिरन्दास्यामि इतिसङ्कल्प्य ॐकालिकालिमहाका लिकालिकेपापनाशिनि ॥ शोणितञ्चबलिङ्गृह्णवरदेवामलो चने ॥ एषरुधिरबलिः ॥ ॐदक्षयज्ञेतिमन्त्रेणदद्यात् ॥ तत ऐंह्रींश्रींकौशिकिरुधिरेणाप्यायतामितिवदेत् ॥ ततःशिरसि ज्वलद्दीपशिखान्दत्वा ॐतत्सदद्यामुकेमास्यमुकपक्षेऽमुकतिथौ वार्षिकशरत्कालीनामुकमहोत्सवेअमुकगोत्रस्यामुकस्यश्रीमद मुकदेवतादर्शनाभिवन्दनस्पर्शनाभिपूजनस्नपनतर्प्पणजनि

तपूर्व्वपूर्व्वाधिकपुण्यप्राप्तिकामोऽमुकदेव्यैसप्रदीपछागपशुशी
र्षन्दास्यामि इतिसङ्कल्प्य एषसप्रदीपछागपशुशीर्षबलिः
ह्रीँदुर्ग्गादेव्यैनमइत्युत्सृज्य ॥ ॐजयत्वंसर्व्वभूतेशेसर्व्वभूत
समावृते ॥ रक्षमान्निजभूतेभ्योबलिम्भुङ्क्ष्वनमोऽस्तुते ॥ त
तःखड्गरुधिरमादाय ॥ ॐयंयंस्पृशामिपादेनयंयंपश्यामिचक्षु
षा ॥ ससमेवश्यतांय्यातुयदिशक्रसमोभवेत् ॥ इतिललाटेति
लकङ्कुर्य्यात् ॥ मेषघातेतुमेषेत्यूहेनयोज्यम् ॥ मेषरुधिरदा
नेतुएकवर्षावच्छिन्नामुकदेवताप्रीतिकामः प्रभूतबलिदानेतुद्वौ
बात्रीन्वाअग्रतःकृत्वासम्प्रोक्ष्यतत्तत्पशुभ्योनमइतिसम्पूज्य छा
गत्वमित्येकवचनानूहेनप्रयोगः ॥ पश्वन्तरेऽप्येवम् ॥ वाक्येतु
एतान्पशून् तुभ्यमहङ्घातयिष्ये ॥ रुधिरदानेतुएतान्रुधिरब
लीन्दास्यामिइतिसङ्कल्प्यप्रत्येकेनदद्यात् ॥ शीर्षदानमप्येव
म् ॥ ततोमूलमन्त्रंय्यथाशक्तिजप्त्वा समर्प्यप्रणमेदितिनान्दिके
श्वरपुराणोक्तपद्धतिः ॥ ॥ ॥

अथ तान्त्रिकबलिदानविधिः ॥

तत्रसुलक्षणम्पशुन्देव्यग्रेसंस्थाप्यवक्ष्यमाणविधिनाउत्सृजेत्॥
तदुक्तँय्यामले ॥ देव्यग्रेस्थापयित्वातुपशुँल्लक्षणसँय्युतम् ॥
श्वेतसर्षपविक्षेपाद्भूतानुत्सारयेत्ततः ॥ अर्घ्योदकेनसम्प्रो
क्ष्यअस्त्रेणसंरक्ष्यकवचेनावगुण्ठ्यधेनुमुद्रयामृतीकृत्यगन्धपुष्पा
क्षतैःपशुंसम्पूज्यमूलेनसप्तधातत्त्वमुद्रयाप्रोक्षणङ्कृत्वाकर्णेइम
म्मन्त्रम्पठेत् ॥ पशुपाशायविद्महेविश्वकर्म्मणेधीमहि ॥ तन्नो
जीवःप्रचोदयात् ॥ ततोह्रीँकालिकालिवज्रेश्वरिलोहदण्डायैनम
इतिमन्त्रेणखड्गम्पूजयेत् ॥ ततःखड्गस्याग्रमध्यमूलङ्क्रमेणपूज
येत् ॥ यथाह्रूँवागीश्वरीब्रह्मभ्यान्नमः ॥ ह्रूँलक्ष्मीनारायणाभ्या

न्नमः हूँ उमामहेश्वराभ्यान्नमः ॥ ततोब्रह्मविष्णुशिवशक्तियुक्ता यखड्गायनमइतिसर्व्वत्रपूजयित्वाप्रणमेत् ॥ खड्गायखरशाणाय शक्तिकार्य्यार्त्थतत्परः ॥ पशुच्छेद्यस्त्वयाशीघ्रङ्खड्गनाथनमोऽस्तुते ॥ ततोमहावाक्यममुकदेवताप्रीतिकामोऽमुकदैव्यैइमम्पशुन्तुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ ततोनिवेदयेत् ॥ यथोक्तेनविधानेनतुभ्यमस्तुसमार्प्पितम् ॥ ततोबलिश्छिन्द्यात् ॥ ततोरुधिरंसमांसन्देव्यैदद्यात् ॥ ततोऽवशिष्टम्बटुकादिभ्योबलिन्दद्यात् ॥ यथा ॥ हूँयाँबटुकायनमइतिगन्धादिभिस्सम्पूज्यपूर्व्ववन्मन्त्रेणवायव्येबलिन्दद्यात् ॥ हूँयाँयोगिनीभ्योनमइतिसम्पूज्यपूर्व्ववन्मन्त्रेणईशानेबलिन्दद्यात् ॥ हूँक्षाँक्षेत्रपालायनमइतिसम्पूज्यपूर्व्ववन्मन्त्रेणनैर्ऋत्याम्बलिन्दद्यात् ॥ हूँगाँगणपतयेनमइतिसम्पूज्यपूर्व्ववन्मन्त्रेणआग्नेय्याङ्गणेशायबलिन्दद्यात् ॥ इतितन्त्रसारः

अथहोमपद्धतिः ॥

तत्रादौकुण्डस्थण्डिलादिरीतिः ॥ मत्स्यपुराणे ॥ प्रागुदक्प्रवणाम्भूमिङ्कारयेद्यत्नतोनरः ॥ प्रागुदक्प्रवणाम्पूर्व्वनीचामुत्तरनीचाँव्वा तत्रवसिष्ठपञ्चरात्रेविज्ञानललितायाञ्च ॥ सर्व्वाधिकारिकङ्कुण्डञ्चतुरस्रन्तुसर्व्वदम् ॥ चतुरस्रञ्चतुष्कोणम् ॥ भविष्योत्तरे ॥ सहस्रेत्वथहोतव्येकुर्य्यात्कुण्डङ्करात्मकम् ॥ द्विहस्तमयुतेतच्चलक्षहोमेचतुष्करम्॥द्विहस्तादिकेयामलः ॥ पूर्व्वपूर्व्वस्यकुण्डस्यकोणसूत्रेणनिर्म्मितम् ॥ उत्तरोत्तरकुण्डानाम्मानन्तत्परिकीर्त्तितम् ॥पूर्व्वपूर्व्वस्यकुण्डस्यहताद्विहस्तादिमितस्यकोणसूत्रेणईशानान्निर्ऋतिकोणदत्तसूत्रेणपरिमितय्यँन्मानमुत्तरोत्तरकुण्डानान्तदेवपारिभाषिकन्द्विहस्तादिमानन्नतुप्रकृतहस्तद्वैगुण्यादिमितम् ॥ तथात्वे द्विहस्तादिमितस्यचतुर्हस्तप

रिमाणापत्तेः ॥ कृषिकस्यभूमेःपरिमाणवत् ॥ वसिष्ठपञ्चरात्रे ॥ यावान्कुण्डस्यविस्तारःखननन्तावदिष्यते ॥ हस्तैकेमेखला स्तिस्रोवेदाग्निनयनाङ्गुलाः ॥ कुण्डेद्विहस्तेताज्ञेयारसवेदगुणा ङ्गुलाः ॥ चतुर्हस्तेतुकुण्डेतावसुतर्कयुगाङ्गुलाः ॥ ब्रह्मचारिमे खलावत् ॥ कुण्डवष्टिताःमृद्घटिताः ॥ ताश्चखातदेशाद्बाह्येएका ङ्गुलरूपकण्ठम्परित्यज्यउच्छ्रयेणविस्तारेणचेत्यादिक्रमेणवेदा द्यङ्गुलाः ॥ एतद्विपरीतास्तन्त्रान्तरोक्ताव्यवहारविरुद्धाः ॥ वे दाश्चत्वारः अग्नयस्त्रयः नयनेद्वे रसाःषट् गुणास्त्रयः वसुतर्कयु गानि अष्टषट्चत्वारि ॥ पिङ्गलामते खातादेकाङ्गुलन्त्यक्त्वामे खलानाँविधिर्भवेत् ॥ एककुण्डस्यपश्चिमदिक्कर्त्तव्यतामा हमहादाननिर्णयेवसिष्ठपञ्चरात्रे ॥ भुक्तौमुक्तौतथा पुष्टौजीर्णो द्धारेतथैवच ॥ सदाहोमेसदाशान्तावेकव्वाँरुणदिग्गतम् ॥ शा रदातिलके ॥ होतुरग्रेयोनिरासामुपर्य्यश्वत्थपत्रवत् ॥मुष्टचरत्न्ये कहस्तानाङ्कुण्डानाँय्योनिरीरिता ॥षट्चतुर्द्व्यङ्गुलायामाविस्तारो न्नतिशालिनी ॥ एकाङ्गुलन्तुयोन्यग्रङ्कुर्य्यादीषदधोमुखम् ॥ एकैकाङ्गुलतोयोनिङ्कुण्डेष्वन्येषुवर्द्धयेत् ॥ यावद्द्वयक्रमेणैवयो न्यग्रमपिवर्द्धयेत्॥स्थलादारभ्यनालंस्याद्योन्यामध्येसरन्ध्रकम्॥ आसाम्मेखलानाम् अश्वत्थपत्रवदित्यनेनचतुरङ्गुलविस्तृतमू लात्यथोक्तक्रमेणएकाङ्गुलान्तस्सङ्कुचितविस्ताराः ॥ होमनि मित्ताग्निस्थापनार्थंस्थण्डिलविधिर्य्यथा ॥ वसिष्ठसंहितायाम् तस्मात्सम्यक्परीक्ष्यैवकर्त्तव्याशुभवेदिका ॥ हस्तमात्रंस्थ ण्डिलँव्वासाङ्कितेहोमकर्म्मणि ॥ क्रियासारेऽपि ॥ कुण्डमे वँव्वधन्नस्यात्स्थण्डिलँव्वासमाश्रयेत् ॥ शारदातिलकेऽपि ॥ नित्यन्नैमित्तिकङ्काम्यंस्थण्डिलेवासमाचरेत्॥हस्तमात्रन्तुततकु र्य्याच्चतुरस्रंसमन्ततः ॥ इतितिथ्यादितत्त्वे अपिचगोभिलः ॥

अनुगुप्ताअपआहृत्यप्रागुदक्प्रवणन्देशंसमँव्वापरिसमुह्यउपलिप्यमध्यतऽप्राचींरेखामुल्लिख्यउदीचीञ्चसंहताम्पश्चान्मध्येप्राचीस्तिस्रउल्लिख्याभ्युक्षयेल्लक्षणावृदेषासर्व्वत्रेति ॥ अनुगुप्ताआच्छादिताऽपतितादिभिरदृष्टाइतियावत् ॥ प्राङ्नीचादिफलमाहगृह्यसङ्ग्रहेगोभिलपुत्रः ॥ प्राङ्नीचब्रह्मवर्चस्यमुदङ्नीचंयशोत्तमम् ॥ पित्र्यन्दक्षिणतोनीचम्प्रतिष्ठालम्भकंसमम् ॥ यशोत्तममित्यत्रसान्ताअप्यदन्ताइत्युक्तेरदन्तोऽपि यशशब्दःगयाशिरेइतिवत् ॥ परिसमुह्यसर्व्वतऽकुशैऽपार्श्वादिकमपसार्य्यउत्तरस्यान्दिशिसार्द्धहस्तोपरिक्षिपेत् ॥ परिसमुह्यवितस्तित्रयेउत्तरतउत्करङ्करोतीतिहरिशर्म्मधृतवचनात् ॥ तत्तदुपलेपनम् ॥ तत्रकारणमाहगृह्यसङ्ग्रहः ॥ इन्द्रेणवज्राभिहतऽपुरावृत्रोमहासुरः॥ मेदसातस्यसङ्क्लिन्नातदर्थमुपलेपयेत् ॥इति॥ मध्यतःस्थण्डिलाभ्यन्तरेदक्षिणांशेनतुमध्यांशे उदग्गतैकविंशत्यङ्गुलरेखानुरोधात् ॥ अन्यथा ॥ कुशैस्सम्मार्ज्जयेद्भूमिंशुद्धामादौशुचिस्ततः ॥ हस्तमात्राञ्चतुरस्राङ्गोमयेनोपलेपयेत् ॥ इतिभारद्वाजीयहस्तप्रमाणस्थण्डिलेतदनुपपत्तेः ॥ प्राचीम्प्राग्गताम् ॥ उदीचीञ्चसंहताम् पश्चादिति ॥ प्राग्गतायाऽपश्चिमेभागेसँल्लग्नामुदगग्राम् मध्येउदग्गतायाऽप्राची ऽ प्रागग्रास्तिस्रोरेखाउल्लिख्याभ्युक्षयेदिति रेखाभ्यउद्धृतमृत्तिकोद्धरणपूर्व्वकमभ्युक्षयेत् ॥ उल्लिख्य उद्धृत्याभ्युक्षयेदितिकात्यायनसूत्रात् ॥ उत्करप्रक्षेपदेशमाहगृह्यसङ्ग्रहः ॥ उत्करङ्गृह्यरेखाभ्योऽरत्निमात्रेनिधापयेत् ॥ द्वारमेतत्पदार्त्थानाम्प्रागुदीच्यान्दिशिस्मृतम् ॥ इति ॥ परिसमूहनादिपरिषेकान्तङ्कर्म्मलक्षणसञ्ज्ञकन्तस्यलक्षणस्यावृत्प्रक्रियासर्व्वत्र यत्रयत्राग्निप्रणयनन्तत्रतत्रबोध्या ॥ रेखाप्रमाणमाहछन्दोगपरिशिष्टेकात्यायनः ॥ दक्षिणेप्राग्गतायास्तुप्रमाणन्द्वा

दशाङ्गुलम् ॥ तन्मूललग्नायोदीचीतस्याएवन्नवोत्तरम् ॥ उदग्ग
तायास्सङ्लग्नाश्शेषाःप्रादेशमात्रिकाः ॥ सप्तसप्ताङ्गुलांस्त्यक्त्वा
कुशेनैवसमुल्लिखेत् ॥ नवोत्तरन्नवाधिकन्द्वादशाङ्गुलमेकविंशत्य
ङ्गुलमित्यर्थः ॥ शेषाः उक्तरेखयोरवशिष्टास्तस्रःकुशेनइति
सर्व्वत्राभिसम्बध्यते ॥ एवकारेणशाखान्तरोक्तस्यव्यावृत्तिः ॥ रे
खाणान्देवतावर्णाश्चाहस्मृतिः ॥ प्राग्गतापार्त्थिवीज्ञेयाचाग्नेयी
चाप्युदग्गता ॥ प्राजापत्यातथाचैन्द्रीसौमीचप्राक्कृतास्मृता ॥
पार्त्थिवीपीतवर्णास्यादाग्नेयीलोहिताभवेत् ॥ प्राजापत्याभवेत्
कृष्णानीलाचैन्द्रीप्रकीर्त्तिता ॥ श्वेतवर्णेनसौमीस्याद्रेखाणाँ
व्वर्णलक्षणम् ॥ अग्निस्थापनपर्य्यन्तंसव्यहस्तप्रादेशस्याविधान
माहगृह्यसङ्ग्रहः ॥ सव्यम्भूमौप्रतिष्ठाप्यप्रोल्लिखेद्दक्षिणेनतु ॥ ता
वन्नोत्थापयेत्पाणिँय्यावदग्निन्निधापयेत् ॥ मानकर्त्तारमाहछन्दो
गपरिशिष्टेकात्यायनः॥मानाक्रियायामुक्तायामनुक्तेमानकर्त्तरि ॥
मानकृद्यजमानस्स्याद्विदुषामेषनिश्चयः ॥ अङ्गुष्ठाङ्गुलिमानमाह
सएव ॥ अङ्गुष्ठाङ्गुलिमानन्तुयत्रयत्रोपदिश्यते ॥ तत्रतत्रबृह
त्पर्व्वग्रन्थिभिर्म्मिनुयात्सदा ॥ यजमानासन्निधौहोमेतुसाधार
णाङ्गुलिमानम् यथाकपिलपञ्चरात्रे ॥अष्टभिस्तैर्भवेज्ज्येष्ठचंमध्य
मंसप्तभिर्य्यवैः ॥ कन्यसंषड्भिरुद्दिष्टमङ्गुलम्मुनिसत्तमैः ॥ तैःप्र
क्रम्यमानयवैः ॥ कन्यसङ्कनिष्ठम् ॥ मानन्तुपार्श्वेन ॥ षड्य
वाःपार्श्वमिताः ॥ इतिकात्यायनवचनात् ॥ इतिसंस्कारतत्त्वं
नाजप्तस्सिद्ध्यतेमन्त्रोनाहुतश्चफलप्रदः ॥ नानिष्टोयच्छतेका
मांस्तस्मात्त्रितयमर्च्चयेत् ॥ पूजयालभतेपूजाञ्जपात्सिद्धिर्न्नसं
शयः ॥ विभूतिश्चाग्निकार्य्येणसर्व्वसिद्धिञ्चविन्दति ॥ नीलतन्त्रे
पि ॥ नित्यहोमम्प्रवक्ष्यामिसर्व्वार्त्थय्येनविन्दति ॥ सपर्य्यांसम्य
गापाद्यबलिपूर्व्वञ्चरेद्विधिम् ॥ ततोहोमन्तर्प्पणञ्चचरेत्साधकसत्त

मः ॥ बलिवैश्वादिकञ्चैवब्राह्मणस्समुपाचरेत् ॥ अर्घ्योदकेनस म्प्रोक्ष्यतिस्रोरेखास्समालिखेत् ॥ विधिवदग्निमानीयक्रव्यादेभ्यो नमस्तथा ॥ मूलमन्त्रंसमुच्चार्य्यकुण्डेवास्थण्डिलेऽपिवा ॥ भूमौ वासंस्तरेद्वर्हिँव्याहृतित्रितयेनच ॥ स्वाहान्तेनत्रिधाहुत्वाषड ङ्गहवनञ्चरेत् ॥ तथा ॥ ततोदेवींसमावाह्यमूलेनषोडशाहुति म् ॥ हुत्वास्तुत्वानमस्कृत्यविसृजेदिन्दुमण्डले ॥ श्यामादौवि शेषः ॥ भैरवाँश्चहुनेदष्टौ आज्यान्वितैस्तिलैश्शुभैः ॥ पूर्व्वादि दिक्क्रमेणैवततोहोमंसमाचरेत् ॥

अथसङ्क्षेपहोमप्रयोगः ॥

कुण्डेवास्थण्डिलेवापिवीक्षणाद्यभिसंस्कृते ॥ प्रागग्राउदग ग्राश्चतिस्रोरेखास्समालिखेत ॥ तथाच ॥ वीक्षणम्मूलमन्त्रेणश रेणताडनम्मतम्॥तेनैव प्रोक्षणम्प्रोक्तँव्वर्म्मणाभ्युक्षणम्मतम् ॥ त तोमूलमुच्चार्य्यकुण्डायनमइतिसम्पूज्यप्रागग्रास्तिस्रोरेखाःकर्त्त व्याः ॥ प्रागग्रेषुमुकुन्देशपुरन्दरान्प्रादक्षिण्येनसम्पूज्यउदगग्रा सुब्रह्मवैस्वतेन्दून्पूजयेत् ॥सुन्दरीपक्षेतुसर्व्वत्रषट्तारोप्रयोगः॥ षट्तारोच ऐँह्रीँश्रीँऐँक्लीँसौः ब्रह्मणेनमः ॥ एवङ्क्रमेणपूजयेत् ॥ त था ब्रह्मसंहितायाम् होमकुण्डे ॥ ऐशान्याँव्वेदिकांहस्तविस्तारो न्नतिशालिनीम्॥कृत्वास्मिन्स्थापयेत् कुम्भँय्यथोक्तक्रमयोगतः ॥तत्रसम्पूजयेद्देवँय्यथाविध्युपचारकैः ॥ ततोहोमम्प्रकुर्व्वीतदेव तासन्निधानतः॥ततःकुण्डमध्येषट्कोणवृत्तत्रिकोणन्तद्वहिरष्टद लपद्मन्तद्वहिश्चतुरस्रञ्चतुर्द्वारसमेतँल्लिखित्वातदुपरिमूलेनपुष्पा ञ्जलिन्दद्यात् ॥ सुन्दरीपक्षेतुबालया ॥ततः सर्व्वाणिप्रणवेनाभ्यु क्ष्यवह्नेर्य्योगपीठमर्च्चयेत् ॥ तद्यथा ॥ कर्णिकोपर्य्याधारश क्त्यादीन्सम्पूज्याऽग्न्यादिकोणचतुष्केषु ॥ ॐधर्म्मायनमःॐ

ज्ञानायनमः ॐवैराग्यायनमः ॐऐश्वर्य्यायनमः ॥ पूर्व्वादिदिक्षु ॐअधर्म्मायनमः ॐअज्ञानायनमः ॐअवैराग्यायनमः ॐअनैश्वर्य्यायनमः ॥ मध्ये ॐ अनन्तायनमः ॐ पद्मायनमः ॐ अंअर्क्कमण्डलायद्वादशकलात्मनेनमः ॐ उंसोममण्डलायषोडशकलात्मनेनमः ॐ मंवँह्निमण्डलायदशकलात्मनेनमः ॥ ततःकेशरेषुपूर्व्वादिमध्येच ॐपीतायैनमः ॐ श्वेतायैनमः ॐ अरुणायैनमः ॐकृष्णायैनमः ॐ धूम्रायैनमः ॐ तीव्रायैनमः ॐ स्फुलिङ्गिन्यैनमः ॐ रुधिरायैनमः ॐ ज्वालिन्यैनमः ॥ ततोरंवह्न्यासनायनमः ॥ ततः ॥ वागीश्वरीमृतुस्नातान्नीलेन्दीवरलोचनाम् ॥ वागीश्वरेणसँय्युक्ताङ्क्रीडाभावसमन्विताम् ॥ इतिध्यात्वा ॥ ॐ ह्रींवागीश्वरायनमः ॐ वागीश्वर्य्यैनमइतिमन्त्रेणपञ्चोपचारैस्सम्पूज्य सूर्य्यकान्तादिसम्भूतंश्रोत्रियगेहजँव्वावह्निमानयेत् ॥ सुन्दरीपक्षेतुकामेश्वरङ्कामेश्वरीम्पूजयेत् ॥ गौतमीये ॥ पाषाणभववह्निञ्चयदिवारणिसम्भवम् ॥ श्रोत्रियाणाङ्गृहजञ्चवनस्थँव्वाथवाहरेत् ॥ यदृच्छालाभसँय्युक्तोऽप्ययोग्योयागकर्म्मणि ॥निरग्निब्राह्मणाह्लब्धोह्यर्द्धलाभकरोभवेत् ॥ क्षत्रबन्धोश्चतुर्त्थांशफलन्दद्याद्धुताशनः ॥ वैश्याच्छूद्राच्चविफलञ्जायतेहोमकर्म्मणि ॥ तस्मात्सर्व्वप्रयत्नेनवह्निमुक्तंसमाहरेत् ॥ तन्त्रान्तरे॥ द्विजातिभवनाद्वापिवह्निमानीयसाधकः ॥ वौषडन्तेनमूलेनमन्त्रितन्तँव्विलोकयेत् ॥ अग्निमावाहयेदस्त्रमन्त्रेणतदनन्तरम् ॥ हूम्फडन्तेनमूलेनक्रव्यादांशम्परित्यजेत् ॥ ततःॐ वह्नेर्य्योगपीठायनमः ॥ चतुर्द्दिक्षु ॐ वामायैनमः एवंज्येष्ठायैनमः रौद्र्यैनमः अम्बिकायैनमः ॥ ततोमूलमुच्चार्य्याऽमुकदेवताकुण्डायनमः ॥ इतिकुण्डंसम्पूज्य तदधोवागीश्वरीम्॥ तत्तद्देवतारूपांऋतुमतीन्ध्यात्वा यथोक्तव

ह्निमानोयवीक्षणादिभिस्सँस्कृत्यरामितितस्मद्वह्निमुद्धृत्यमूल मुच्चार्य्यहूँफट्क्रव्यादेभ्यःस्वाहा इत्यनेनक्रव्यादांशम्परित्यज्य वह्निमन्त्रेणसंरक्ष्यहूमित्यवगुण्ठ्यधेनुमुद्रयाअमृतीकृत्यबाहुभ्यां समुद्धृत्यकुण्डोपरित्रिःपरिभ्राम्यजानुस्पृष्टमहीतलः शिवबीज बुद्ध्यात्मनोऽभिमुखन्देव्यायोनौएनङ्क्षिपेत् ॥ ततोह्रींव्वह्निमूर्त्त येनमः इत्यभ्यर्च्यरंवह्निचैतन्यायनमः इतिचैतन्यन्तत्रंसँय्यो ज्य वोचित्पिङ्गलहनहनदहदहपचपचसर्व्वज्ञापयज्ञापयस्वाहा इतिज्वालयेत् ॥ ततः ॥ अग्निम्प्रज्वलितँव्वन्देजातवेदंहुताश नम् ॥ सुवर्णवर्णममलंसमिद्धँव्विश्वतोमुखम् ॥ इत्युपतिष्ठे त् ॥ ततोऽग्नेत्वममुकनामासीतिनामकृत्वा ॐवैश्वनरजातवेद इहावहलोहिताक्षसर्व्वकर्म्माणिसाधयस्वाहा ॥ अनेनार्घ्यादि भिःसम्पूज्य ॐ अग्निहिरण्यादिसप्तजिह्वाभ्योनमः ॐ सहस्रा र्चिषेहृदयायनमः इत्याद्यग्निषडङ्गेभ्योनमः ॐ अग्नयेजातवे दसइत्याद्यष्टमूर्त्तिभ्योनमः तद्बाह्ये ॐ ब्राह्म्याद्यष्टशक्तिभ्यो न मः तद्बहिः ॐ पद्माद्यष्टनिधिभ्योनमः तद्बाह्ये ॐ इन्द्रादि लोकपालेभ्योनमः तद्बाह्ये ॐ वज्राद्यस्त्रेभ्योनमः ततःप्रादेश मात्रङ्कुशपत्रद्वयङ्घृतमध्येनिःक्षिप्यसव्यासव्यमध्यभागेषुइडा म्पिङ्गलाम् सुषुम्नान्ध्यात्वाहोमङ्कुर्य्यात् ॥ स्रुवेणदक्षिणभागा दाज्यङ्गृहीत्वा ॐ अग्नयेस्वाहेत्यग्नेर्दक्षिणनेत्रेजुहुयात् ॥ तथा वामभागाज्यङ्गृहीत्वा ॐ सोमायस्वाहेतिवामनेत्रेजुहुयात् ॥ ततोमध्यभागादाज्यङ्गृहीत्वा ॐ अग्नीषोमाभ्यांस्वाहेत्यग्नेर्ल्ल लाटनेत्रेजुहुयात् ॥ पुनर्दक्षिणतः नमइति घृतङ्गृहीत्वा ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहेत्याग्निमुखे ॥ ततोमहाव्याहृतिहोमः ॥ ॐ भूःस्वाहा ॐ भुवःस्वाहा ॐ वैश्वानरजातवेदइहावह लोहिताक्षसर्व्वकर्म्माणिसाधयस्वाहा इत्यनेनत्रिवारञ्जुहुया

त् ॥ ततोऽग्नौमूलेनपीठपूर्व्वकन्देवतांसम्पूज्य तन्मुखेघृतेनमूल मन्त्रेणपञ्चविंशतिवारञ्जुहुयात् वह्निदेवतयोरात्मनासहैक्यँवि भाव्यमूलमन्त्रेणएकादशाहुतीर्ज्जुहुयात् ॥ ततोमूलमन्त्रस्या ङ्गदेवताभ्यःस्वाहा ॥ शक्तश्चेत्प्रत्येकमेकैकाहुतिञ्जुहुयात् ॥ ततःसङ्कल्पँविधायतत्तत्कल्पोक्तद्रव्येणहोमङ्कुर्य्यात् ॥ ततो मूलमन्त्रेणपूर्णाहुतिन्दत्त्वासंहारमुद्रयास्वेष्टदेवतांहृदयेसमानी यक्षमस्वेतिविसृज्यदक्षिणान्दत्त्वा अच्छिद्रावधारणङ्कुर्य्यात् ॥

इतिसंक्षेपहोमप्रकरणम् ॥



श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

त्रयोदशं

दुर्गातन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९६० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

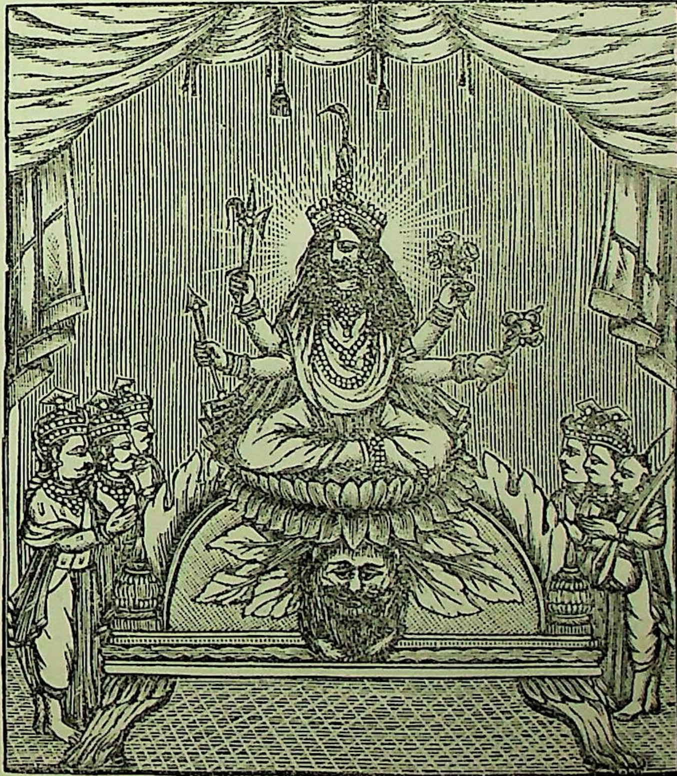
शाक्तप्रमोदः ॥

॥ अथ दुर्गातन्त्रम् ॥



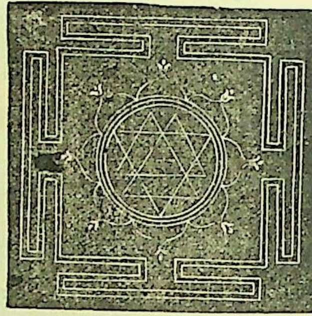
॥ अथ दुर्गाध्यानम् ॥

सिंहस्कन्धसमारूढान्नानालङ्कारभूषिताम् ॥ चतुर्भुजाम्महादेवीन्नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥ रक्तवस्त्रपरीधानाम्बालार्कसदृशीतनुम् ॥ नारदाद्यैर्म्मुनिगणैःसेविताम्भवगेहिनीम् ॥ त्रिवलीवलयोपेतनाभिनालसुवेशिनीम् ॥ रत्नद्वीपेमहाद्वीपेसिंहासनसमन्विते ॥ प्रफुल्लकमलारूढान्ध्यायेत्ताम्भवगेहिनीम् ॥



॥ अथयन्त्रोद्धारः ॥

दुर्गायन्त्रम्प्रवक्ष्यामिशृणुष्वहरवल्लभे ॥ त्रिकोणंविन्यसेत्पूर्व्वंन्नवकोणसमन्वितम् ॥ त्रैबिम्बसहितंसर्व्वमष्टपत्रसमन्वितम् ॥ त्रिरेखासहितंवज्रम्भूपुरद्वयसँय्युतम् ॥ समीकृत्ययथोक्तेनविलिखेद्विधिनामुना ॥ नानास्त्रसँय्युतँल्लेख्यञ्चक्रम्मन्त्रविभूषितम् ॥ तत्रताम्पूजयेद्देवीम्मूलप्रकृतिरूपिणीम् ॥



॥ अथमन्त्रोद्धारः ॥

अथदुर्गामनुँव्वक्ष्येदृष्टादृष्टफलप्रदम् ॥ मायादिःकर्णविद्धाढ्योभूयोसौसर्गवान्भवेत् ॥ चान्तकश्चप्रतिष्ठावान्मारुतोभौतिकासनः ॥ तारादिर्हृदयान्तोयम्मन्त्रोवस्वक्षरात्मकः ॥

॥ अथमन्त्रः ॥

ॐह्रींदुन्दुर्गायैनमः ॥

॥ अथपूजाविधिः ॥

प्रातःकृत्यादिपीठन्यासान्तँव्विधायकेशरेषुमध्येचपीठशक्तीर्विन्यसेत् ॥ तद्यथा ॥ आंप्रभायैनमः ईंमायायैनमः ॥ ऊंजयायैनमः ॠं सूक्ष्मायैनमः लृँविशुद्धायैनमः ॥ ऐंनन्दिन्यैनमः ॥ औंसुप्रभायैनमः अंविजयायैनमः अःसर्व्वसिद्धिदयैनमः ॥ तदुपरि ॥ ॐवज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनायहूं फट्नम इतिपूज

येत् ॥ ततऋष्यादिन्यासः ॥ शिरसिनारदऋषयेनमः ॥ मुखेगा यत्रीछन्दसेनमः हृदिदुर्गादेवतायैनमः ततःकराङ्गन्यासो ह्रां ॐह्रींदुन्दुर्गायैअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ह्रींॐह्रींदुन्दुर्गायैतर्ज्जनीभ्यां स्वाहा ह्रूंॐह्रींदुन्दुर्गायैमध्यमाभ्यँवषट् ह्रैंॐह्रींदुन्दुर्गायैअना मिकाभ्यांहूम् ह्रौंॐह्रींदुन्दुर्गायैकनिष्ठिकाभ्याँवौषट् ह्रः ॐह्रीं दुन्दुर्गायैकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ॥एवंहृदयादि॥ह्रांॐह्रींदुन्दु र्गायैहृदयायनमः ह्रींॐह्रींदुन्दुर्गायैशिरसेस्वाहा ह्रूंॐह्रींदुन्दु दुर्गायैशिखायैवषट् ह्रैंॐह्रींदुन्दुर्गायैनेत्रत्रयायवौषट् ॥ ह्रौंॐ ह्रींदुन्दुर्गायैकवचायहूम् ह्रःॐह्रींदुन्दुर्गायैअस्त्रायफडितिषड ङ्गादिन्यासः॥ तथाचनिबन्धे नमस्कारनियुक्तेनमूलमन्त्रेणदेशि कः॥ ह्रीमाद्यैःसहकुर्वीतषडङ्गानियथाविधि ॥अथध्यानम् ॥ सिं हस्थाशशिशेखरामरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खंचक्रधनुःश रांश्चदधतीनेत्रैस्त्रिभिश्शोभिता ॥ आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरण त्काञ्चीक्वणन्नूपुरा दुर्गादुर्गतिहारिणीभवतुनोरत्नोल्लसत्कुण्ड ला ॥ एवन्ध्यात्वा मानसैः शङ्खस्थापनङ्कुर्य्यात् ततःपीठपू जाङ्कुर्य्यात् ॥ केशरेषुमध्येच ॥ आंप्रभायैनमः ईंमायायै नमःऊंजयायैनमः ऋंसूक्ष्मायैनमः ऌंविशुद्धायैनमः ॐऐंनन्दि न्यैनमः॥ औंसुप्रभायैनमः॥ अंविजयायैनमः॥ अःसर्व्वसिद्धिदा यैनमः ॥ तदुपरिवज्रनखदंष्ट्रायुधायमहासिंहासनायहूम्फट्नमः॥ दद्यादासनमेतेनमूर्त्तिमूलेनकल्पयेव ॥ ततःपुनर्द्ध्यात्वावाहना दिपञ्चपुष्पाञ्जलिदानपर्य्यन्ताँव्विधायावरणपूजामारभेत् ॥ अ ग्निनैर्ऋतिवाय्वीशानकोणमध्येदिक्षुच ॥ ह्रांॐह्रींदुन्दुर्गायैहृद यायनमः॥इत्यादिनापूजयेत्॥ततःपत्रेषुपूर्वादि॥जंजयायै० विंवि जयायै०किंकीर्त्यै० पंप्रीत्यैनमः पंप्रभायै०शुंशुद्धायै०मंमेधायै० शंश्रुत्यै० ॥ पत्राग्रेषुलंखड्गायनमः वंखेटकायनमः शंबाणायनमः

षंधनुषेनमः संशूलाय० हंतर्ज्जन्यै० तद्बहिरिन्द्रादिवज्रादींश्चपूजयेत् ॥ ततोधूपादिविसर्ज्जनान्तङ्कर्म्मसमापयेत् ॥ अस्याबलिमन्त्रस्तु ॥ एहिएहिपदद्वन्द्वम्मदीयञ्चबलिन्देविललायकपदद्वयं साधयद्वितीयम्ब्रूयात्खादयद्वितीयम्पुनः॥ सर्व्वसिद्धिपदन्देवीततः स्वाहापदम्भवेत् ॥ बलिदानस्यमन्त्रोयंमन्त्रिण्यापरिकीर्त्तितः ॥ अस्यपुरश्चरणमष्टलक्षः ॥ अष्टसहस्रतिलैर्होमः ॥ तथा च ॥ वसुलक्षंजपेन्मत्रंतत्सहस्रतिलैःसह इत्यादिवचनात् ॥

अथ स्तोत्रम् ॥

नमन्त्रन्नोयन्त्रन्तदपिचनजानेस्तुतिमहो नचाह्वानन्ध्यानन्तदपिचनजानेस्तुतिकथाः ॥ नजानेमुद्रास्तेतदपिचनजानेविलपनम् परञ्जानेमातस्त्वदनुशरणङ्क्लेशहरणम् ॥ १ ॥ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणाऽलसतया विधेयाशक्यत्वात्तवचरणयोर्य्याच्युतिरभूत् ॥तदेतत्क्षन्तव्यञ्जननिसकलोद्धारिणिशिवे कुपुत्रोजायेतक्वचिदपिकुमातानभवति ॥ २ ॥ पृथिव्यान्पुत्रास्तेजननिबहवःसन्तिसरलाः परन्तेषांम्मध्येविरलतरलोहन्तवसुतः ॥ मदीयोयन्त्यागःसमुचितमिदन्नोतवशिवे कुपुत्रोजायेतक्वचिदपिकुमातानभवति ॥ ३ ॥ जगन्मातर्म्मातस्तवचरणसेवा नरचिता नवादत्तन्देविद्रविणमपिभूयस्तवमया ॥ तथाऽपित्वंस्नेहंमयिनिरुपमँय्यत्प्रकुरुषे कुपुत्रोजायेतक्वचिदपिकुमातानभवति ॥ ४ ॥ परित्यक्त्वादेवान्विविधविधिसेवाकुलतया मयापञ्चाशीतेरधिकमुपनीतेतुवयसि ॥ इदानीञ्चेन्मातस्तवयदिकृपानाऽपिभविता निरालम्बोलम्बोदरजननिकँय्यामिशरणम् ॥ ५ ॥ श्वपाकोजल्पाकोभवतिमधुपाकोपमगिरा निरातङ्कोरङ्कोविहरतिचिरङ्कोटिकनकैः॥ तवापर्णेकर्णेविशति

मनुवर्ण्णैफलमिदम् ॥ जनःकोजानीतेजननिजपनीयञ्जपविधौ॥ ॥ ६ ॥ चिताभस्मालेपोगरलमशनन्दिक्पटधरोजटाधारीकण्ठेभुजगपतिहारीपशुपतिः ॥ कपालीभूतेशोभजतिजगदीशैकपदवीम् भवानित्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥ ७ ॥ नमोक्षस्याकाङ्क्षानचविभववाञ्छापिचनमेनविज्ञानापेक्षाशशिमुखिसुखेच्छापिनपुनः ॥ अतस्त्वांसयँयाचेजननिजननँय्यातुममवैमृडानीरुद्राणीशिवाशिवभवानीतिजपतः ॥ ८ ॥ नाराधितासिविधिनाविविधोपचारैःकिंरूक्षचिन्तनपरैर्न्नकृतँव्वचोभिः ॥ श्यामेत्वमेवयदिकिञ्चनमय्यनाथे धत्सेकृपामुचितमम्बपरन्तवैव ॥ ९ ॥ आपत्सुमग्नःस्मरणन्त्वदीयङ्करोमिदुर्ग्गेकरुणार्ण्णवेशि ॥ नैतच्छठत्वम्ममभावयेथाः क्षुधातृषार्त्ताजननींस्मरन्ति ॥ १० ॥ जगदम्बविचित्रमत्रकिम्परिपूर्ण्णाकरुणास्तिचेन्मयि ॥ अपराधपरम्परावृतन्नहिमातासमुपेक्षतेसुतम् ॥ ११ ॥ मत्समःपातकीनास्तिपापघ्नीत्वत्समानहि ॥ एवंज्ञात्वामहादेवियथायोग्यन्तथाकुरु ॥ १२ ॥ इतिस्तोत्रम् ॥

अथकवचम् ॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामिकवचंसर्व्वसिद्धिदम् ॥ पठित्वापाठयित्वाचनरोमुच्येतसङ्कटात् ॥ अज्ञात्वाकवचन्देविदुर्ग्गामन्त्रञ्चयोजपेत् ॥ सनाप्नोतिफलन्तस्यपरञ्चनरकम्व्रजेत् ॥ उमादेवीशिरःपातुललाटेशूलधारिणी ॥ चक्षुषीखेचरीपातुकर्ण्णौचत्वरवासिनी॥ सुगन्धानासिकेपातुवदनंसर्व्वधारिणी ॥ जिह्वाञ्चचण्डिकादेवीग्रीवांसौभद्रिकातथा ॥ अशोकवासिनीचेतोद्वौबाहूवज्रधारिणी॥हृदयँल्ललितादेवीउदरंसिंहवाहिनी ॥ कटिम्भगवतीदेवीद्वावूरूविन्ध्यवासिनी ॥ महाबलाचजङ्घेद्वे पादौभूतलवासिनी ॥ एवंस्थिता

सिदेवित्वन्त्रैलोक्येरक्षणात्मिका ॥ रक्षमांसर्व्वगात्रेषुदुर्गेदेवि नमोऽस्तुते ॥ इतिकवचम् ॥

अथोपनिषत् ॥

सर्व्वेदेवादेवीमुपतस्थुः । कासित्वम्महादेवि । साब्रवीदहम्ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तःप्रकृतिपुरुषात्मकञ्जगत् ॥ शून्यञ्चाशून्यञ्च अहमानन्दावानन्दौ । अहँव्विज्ञानाविज्ञाने । अहम्ब्रह्माणीवेदब्रह्मणिवेदितव्येइतिचाथर्व्वणीश्रुतिः । अहम्पञ्चभूतानिअहंपञ्चतन्मात्राणि । अहमखिलञ्जगत् वेदोहमवेदोहम् विद्याहमविद्याहम्अजाहमजाहम्अधश्चोर्द्धञ्चतिर्य्यक्चाहम् । अहंरुद्रेभिर्व्वसुभिश्चरामिअहमादित्यैरुतविश्वदेवैः ॥ अहम्मित्रावरुणावुभौविभर्म्मिअहमिन्द्राग्नीअहमश्विनावुभौ ॥ अहंसोमन्त्वष्टारम्पूषणम्भगंसन्दधामि ॥ अहँव्विष्णुमुरुक्रमम्ब्रह्माणमुत्प्रजापतिन्दधामि ॥ द्रविणंहविष्मतेसुप्रजाययजमानायसुन्वते ॥ अहंराष्ट्रीसङ्गमनीवसूनाञ्चिकितुषीप्रथमायज्ञियानाम् ॥अहंसुवेर्य्यःपितरमस्यमूर्द्धन्ममयोनिरप्स्वन्तः समुद्रे ॥ यएवंवेदसदेवीपदमाप्नोति तेदेवाअब्रुवन् नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायैसततन्नमः ॥ नमःप्रकृत्यैभद्रायैनियताःप्रणताःस्मताम् ॥ तामग्निवर्णान्तपसाज्वलन्तीँव्वैरोचनीङ्कर्म्मफलमुपजुष्टाम् ॥ दुर्गान्देवींशरणमहम्प्रपद्येसुतरांनाशयतेनमः ॥ देवीमम्वामजनयन्तदेवास्ताँव्विश्वरूपाःपशवोवदन्ति । सानोमन्द्रेषमूर्ज्जन्दुहानाधेनुर्व्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ कालरात्रींव्वापस्तुतानान्ताँव्वैष्णवींस्कन्दमातरम्सरस्वतीमदितिन्दक्षदुहितरन्नमाम्यहम्पावनांशिवाम् ॥ हालक्ष्म्यैचविद्महेसर्व्वशक्त्यैचधीमहि ॥ तन्नोदेवीप्रचोदयात् ॥ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव ॥ तान्देवाअन्वजायन्तभ

द्राअमृतबन्धवः । कामेयोनिःकमलवेत्रपाणिगुहाहस्तामातरि
श्वाशमिन्द्रःपुनर्ग्गेहासफलामाययाचापृथुकेनविश्वमातादिवि
द्याएषात्माशक्तिः । एषाविश्वमोहिनी । पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा
एषाश्रीमहाविद्यायएवँव्वेदसशोकन्तरतिनमस्तेभगवतिमातर
स्मान्पाहिसर्व्वतः । सैषाष्टौवसवःसैषाएकादशरुद्राःसैषाद्वाद
शादित्याःसैषाविश्वेदेवाःसोमपाअसोमपाश्चसैषायातुधानाअसु
रारक्षांसिपिशाचायज्ञसिद्धाःसैषासत्वरजस्तमांसिसैषाब्रह्मविष्णु
रुद्ररूपिणीसैषाप्रजापतीन्द्रमनवःसैषाग्रहनक्षत्रज्योतींषिकला
काष्ठादीतिभस्मरूपिणीतामहम्प्रणतोस्मि ॥ नित्यपापहारिणी
देवीभुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ अनन्ताँव्विजयांशुद्धांशरण्यांशिव
दांशुभाम् । वियदाकारसँय्युक्तँव्वीतिहोत्रसमन्वितम् ॥ अर्द्धेन्दु
लसितन्देव्याबीजंसर्व्वार्त्थसाधकम् ॥ एवमेकाक्षरम्मन्त्रङ्कतवःशु
द्धचेतसः ॥ ध्यायन्तिपरमानन्दमयाज्ञानाम्बुराशयः ॥ वामा
याब्रह्मभूतस्मात्यष्टवक्त्रसमन्वितम् ॥ सूर्य्योवामश्रोत्रबिन्दुःसँ
य्युक्ताष्टातृतीयकः ॥ नारायणेनसम्मिश्रोसावाद्यश्चाधरयुक्त
यः ॥ विधेनवार्ण्णकोणःस्यान्महानन्दप्रदायकः ॥ हृत्पुण्डरीक
मध्यस्थाम्प्रातःसूर्य्यसमप्रभाम् ॥ पाशाङ्कुशधरांसौम्यवरदाभ
यहस्तकाम् ॥ त्रिनेत्रांरक्तवसनाम्भक्तकामदुहाम्भजे ॥ भजा
मित्वाम्महादेवीम्महाभयविनाशिनीम् ॥ महादारिद्र्यशमनीमहा
रूपास्वरूपिणी ॥ यस्याःस्वरूपम्ब्रह्मादयोनजानन्तितस्मादु
च्यतेअनन्ता । यस्यागृहन्नोपलक्ष्यतेस्मादुच्यतेअलक्ष्यम् ।
यस्याजननन्नोपलभ्यतेतस्मादुच्यतेअजा । एकैवसर्व्वत्रवर्त्ततेत
स्मादेका । एकैकविश्वरूपिणीतस्मादनेका । अनन्ततपोवाच्य
ज्ञेयानन्तालक्ष्याजैकानेकानमन्त्राणाम्मातृकादेवीशब्दानांज्ञान
रूपिणी ॥ ज्ञानानाञ्चिन्मयातीताशून्यानांशून्यसाक्षिणी ॥ य

स्याःपरतरन्नास्तिसैषादुर्गाप्रकीर्त्तिता ॥ तान्दुर्ग्गंदुर्ग्गमान्देवी न्दुराचारविधायिनीम् ॥ नमामिभवभीतोहंसंसारार्ण्णवतारिणीम् यइदमथर्व्वशीर्षंय्योधीतेसपञ्चाथर्व्वशीर्षफलमाप्नोतिइदमथर्व्व शीर्षमज्ञात्वायोअर्च्चांस्थापयतिशतलक्षञ्जप्त्वानार्च्चाशुद्धिञ्चवि न्दाति । शतमष्टोत्तरञ्चास्यपुरश्चर्य्याविधिःस्मृतः । दशवार म्पठेद्यस्तुसद्यःपापैःप्रमुच्यते ॥ महादुर्ग्गाणितरतिमहादेव्याः प्रसादतः ॥ सायमधीयानोदिवसकृतम्पापन्नाशयति । सा यम्प्रातःप्रयुञ्जानोअपापोभवति । निशीथेतुरीयसन्ध्यायांवाज प्त्वावाक्सिद्धिर्भवति । नूतनायाम्प्रतिमासन्निधौजप्त्वादेवता सान्निध्यम्भवति । प्राणप्रतिष्ठायाञ्जप्त्वादेवताभवति । भौमा श्विन्याम्महादेवीसन्निधौजप्त्वामहामृत्युन्तरतिमहामृत्युन्तरति यएवँव्वेद ॥ इतिदेव्याअथर्व्वशीर्षोपनिषत्समाप्ता ॥ छ

इति शाक्तप्रमोदे दुर्गातन्त्रं समाप्तम् ॥

अथ शतनामाष्टकम् ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥ शतनामप्रवक्ष्यामिशृणुष्वकमलानने ॥ यस्यप्रसादमात्रेणदुर्ग्गाप्रीतासदाभवेत् ॥ १ ॥ सतीसाध्वीभव प्रीताभवानीभवमोचनी ॥ आर्य्यादुर्ग्गाजयाआद्यात्रिनेत्राशूल धारिणी ॥ २ ॥ पिनाकधारिणीचित्राचन्द्रघण्टामहातपा ॥ मनोबुद्धिरहङ्काराचित्तरूपाचिताचितिः ॥ ३ ॥ सर्व्वमन्त्रमयी सत्यासत्यानन्दस्वरूपिणी ॥ अनन्ताभाविनीभाव्याभवाभव्या सदागतिः ॥४॥ शम्भुपत्नीदेवमाताचिन्तारत्नप्रियासदा ॥ सर्व्व विद्यादक्षकन्यादक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥ अपर्ण्णाचैवपर्ण्णाच पाटलापटलावती ॥ पट्टाम्बरपरीधानाकलमञ्जीररञ्जिनी ॥ ६ ॥ अमेयाविक्रमाक्रूरासुन्दरीकुलसुन्दरी ॥ वनदुर्ग्गाचमातङ्गीमत

ङ्गमुनिपूजिता ॥ ७ ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीचैन्द्रीकौमारीवैष्णवीत
था ॥ चामुण्डाचैववाराहीलक्ष्मीश्चपुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥ विम
लोत्कर्षिणीज्ञानाक्रियासत्याचवाक्प्रदा ॥ बहुलाबहुलप्रेमासर्व
वाहनवाहना ॥ ९ ॥ निशुम्भशुम्भहननीमहिषासुरमर्द्दिनी ॥
मधुकैटभहन्त्रीचचण्डमुण्डविनाशिनी ॥ १० ॥ सर्वाऽसुरवि
नाशाचसर्वदानवघातिनी ॥ सर्वशास्त्रमयीविद्यासर्वास्त्रधारिणी
तथा ॥ ११ ॥ अनेकशस्त्रहस्ताचअनेकास्त्रविधारिणी ॥ कुमा
रीचैवकन्याचकौमारीयुवतीयतिः ॥ १२ ॥ अप्रौढाचैवप्रौढा
चवृद्धमाताबलप्रदा ॥ यइदञ्चपठेत्स्तोत्रन्दुर्ग्गानामशताष्टकम्
॥ १३ ॥ नासाध्यँविद्यतेदेवित्रिषुलोकेषुपार्वति ॥ धनन्धा
न्यंसुताञ्जायांहयंहास्तिनमेवच ॥ १४ ॥ चतुर्वर्गन्तथाचान्ते
लभेन्मुक्तिञ्चशाश्वतीम् ॥ कुमारीःपूजयित्वाचध्यात्वादेवींसुरे
श्वरीम् ॥ १५ ॥ पूजयेत्परयाभक्त्यापठेन्नामशताष्टकम् ॥ तस्य
सिद्धिर्भवेद्देविसर्वैःसुरवरैरपि ॥ १६ ॥ राजानोदासतांयान्तिरा
ज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥ गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन सिन्दूरकर्म्पूरमधु
त्रयेण ॥ विलिख्ययन्त्रँविधिनाविधिज्ञो भवेत्सदाधारयतापुरा
रिः॥१८॥भौमावास्यानिशाभागेचन्द्रेशतभिषाङ्गते॥विलिख्यप्र
पठन्स्तोत्रंसभवेत्सम्पदाम्पदम् ॥१९॥ इतिनामाष्टोत्तरशतम् ॥

अथसहस्रनाम ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥ ममनामसहस्रञ्चशिवपूर्वविनिर्म्मितम् ॥
तत्पठ्यताँविधानेनतदासर्व्वम्भविष्यति ॥ १ ॥ इत्युक्तापार्व
तीदेवीश्रावयामासतच्चतान् ॥ तदेवनामसाहस्रन्दकारादिवरा
नने ॥ २ ॥ रोगदारिद्र्यदौर्भाग्यशोकदुःखविनाशकम् ॥ सर्वा
सांपूजितन्नामश्रीदुर्ग्गादेवतामता ॥ ३ ॥ निजबीजम्भवेद्बीजं

मन्त्रङ्कीलकमुच्यते ॥ सर्वाशापूरणेदेवीविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ ॥ ४ ॥ दुंदुर्ग्गादुर्ग्गतिहरादुर्गाजलनिवासिनी ॥ दुर्ग्गमार्ग्गानुसञ्चारादुर्ग्गमार्ग्गनिवासिनी ॥ ५ ॥ दुर्ग्गमार्ग्गप्रविष्टाचदुर्ग्गमार्ग्गप्रवेशिनी ॥ दुर्ग्गमार्ग्गकृतावासादुर्ग्गमार्ग्गजयप्रिया ॥ ६ ॥ दुर्ग्गमार्ग्गगृहीतार्च्चादुर्ग्गमार्ग्गस्थितात्मिका ॥ दुर्ग्गमार्ग्गस्तुतिपरा दुर्ग्गमार्ग्गस्मृतिपरा ॥ ७ ॥ दुर्ग्गमार्ग्गसदास्थालीदुर्ग्गमार्ग्गरतिप्रिया ॥ दुर्ग्गमार्ग्गस्थलस्थानादुर्ग्गमार्ग्गविलासिनी ॥ ॥ ८ ॥ दुर्ग्गमार्ग्गत्यक्तवस्त्रादुर्ग्गमार्ग्गप्रवर्त्तिनी ॥ दुर्ग्गासुरनिहन्त्रीचदुर्गासुरनिषूदिनी ॥ ९ ॥ दुर्ग्गासुरहरादूतीदुर्ग्गासुरविनाशिनी ॥ दुर्ग्गासुरवधोन्मत्तादुर्ग्गासुरवधोत्सुका ॥ ॥ १० ॥ दुर्ग्गासुरवधोत्साहादुर्ग्गासुरवधोद्यता ॥ दुर्ग्गासुरवधप्रेप्सुर्दुर्ग्गासुरमखान्तकृत् ॥ ११ ॥ दुर्ग्गासुरध्वंसतोषा दुर्ग्गदानवदारिणी ॥ दुर्ग्गविद्रावणकरीदुर्ग्गविद्रावणीसदा ॥ ॥ १२ ॥ दुर्ग्गविक्षोभनकरीदुर्ग्गशीर्षनिकृन्तनी ॥ दुर्ग्गविध्वंसनकरीदुर्ग्गदैत्यनिकृन्तनी ॥ १३ ॥ दुर्ग्ग दैत्यप्राणहरादुर्ग्गदैत्यान्तकारिणी॥ दुर्ग्ग दैत्यहरत्रातादुर्ग्ग दैत्यसृग्गुन्मदा ॥१४॥ दुर्ग्ग दैत्याशनकरीदुर्ग्गचर्म्माम्बरावृता ॥ दुर्ग्गयुद्धोत्सवकरी दुर्ग्गयुद्धविशारदा ॥ १५ ॥ दुर्ग्गयुद्धासवरतादुर्ग्गयुद्धविमर्द्दिनी ॥ दुर्ग्गयुद्धहास्यरतादुर्ग्गयुद्धाट्टहासिनी ॥ १६ ॥ दुर्ग्गयुद्धमहामत्तादुर्ग्गयुद्धानुसारिणी ॥ दुर्ग्गयुद्धोत्सवोत्साहादुर्ग्गदेशनिषेविणी ॥ १७ ॥ दुर्ग्गदेशवासरतादुर्ग्ग देशविलासिनी ॥ दुर्ग्गदेशार्च्चनरतादुर्ग्गदेशजनप्रिया ॥ १८ ॥ दुर्ग्गमस्थानसंस्थानादुर्ग्गमध्यानसाधना ॥ दुर्ग्गमादुर्ग्गमध्यानादुर्ग्गमात्मस्वरूपिणी ॥ १९ ॥ दुर्ग्गमागमसन्धानादुर्ग्गमागमसंस्तुता ॥ दुर्ग्गमागमदुर्ज्ञेयादुर्ग्गमश्रुतिसम्मता ॥ २० ॥ दुर्ग्गमश्रुतिमा

न्याच दुर्ग्गमश्रुतिपूजिता ॥ दुर्ग्गमश्रुतिसुप्रीतादुर्ग्गमश्रुतिहृर्षदा ॥ २१ ॥ दुर्ग्गमश्रुतिसंस्थानादुर्ग्गमश्रुतिमानिता ॥ दुर्ग्गमाचारसन्तुष्टादुर्ग्गमाचारतोषिता ॥ २२ ॥ दुर्ग्गमाचारनिर्व्वृत्तादुर्ग्गमाचारपूजिता ॥ दुर्ग्गमाचारकासितादुर्ग्गमस्थानदायिनी ॥ २३ ॥ दुर्ग्गमप्रेमनिरता दुर्ग्गमद्रविणप्रदा ॥ दुर्ग्गमाम्बुजमध्यस्थादुर्ग्गमाम्बुजवासिनी ॥ २४ ॥ दुर्ग्गनाडीमार्ग्गगतिर्दुर्ग्गनाडीप्रचारिणी ॥ दुर्ग्गनाडीपद्मरतादुर्ग्गनाड्यम्बुजस्थिता ॥ २५ ॥ दुर्ग्गनाडीगतायातादुर्ग्गनाडीकृतास्पदा ॥ दुर्ग्गनाडीरतरतादुर्ग्गनाडीशसँस्तुता ॥ २६ ॥ दुर्ग्गनाडीश्वररतादुर्ग्गनाडीशचुम्बिता ॥ दुर्ग्गनाडीशक्रोडस्थादुर्ग्गनाड्युत्थितोत्सुका ॥ २७ ॥ दुर्ग्गनाड्यारोहणाचदुर्ग्गनाडीनिषेविता ॥ दरिस्थानदरिस्थानवासिनीदनुजान्तकृत् ॥ २८ ॥ दरीकृततपस्याचदरीकृतहरार्च्चना ॥ दरीजापितदिष्टाचदरीकृतरतिक्रिया ॥ २९ ॥ दरीकृतहरार्हाचदरीक्रीडितपुत्रिका ॥ दरीसन्दर्शनरतादरीरोपितवृश्चिका ॥ ३० ॥ दरीगुप्तिकौतुकाढ्या दरीभ्रमणतत्परा ॥ दनुजान्तकरीदीनादनुसन्तानदारिणी ॥ ॥ ३१ ॥ दनुजध्वंसिनीदूनादनुजेन्द्रविनाशिनी ॥ दानवध्वंसिनीदेवीदानवानाम्भयङ्करी ॥ ३२ ॥ दानवीदानवाराध्यादानवेन्द्रवरप्रदा ॥ दानवेन्द्रनिहन्त्रीचदानवद्वेषिणीसती ॥ ३३ ॥ दानवारिप्रेमरतादानवारिप्रपूजिता ॥ दानवारिकृतार्च्चाचदानवारिविभूतिदा ॥ ३४ ॥ दानवारिमहानन्दादानवारिरतिप्रिया ॥ दानवारिदानरतादानवारिकृतास्पदा ॥ ३५ ॥ दानवारिस्तुतिरतादानवारिस्मृतिप्रिया ॥ दानवार्य्याहाररतादानवारिप्रबोधिनी ॥ ३६ ॥ दानवारिधृतप्रेमादुःखशोकविमोचनी ॥ दुःखहन्त्रीदुःखदात्रीदुःखनिर्म्मूलकारिणी ॥ ३७ ॥ दुःखनि

र्म्मूलनकरीदुःखदार्य्येरिनाशिनी॥दुःखहरादुःखनाशादुःखग्रामादुरासदा ॥ ३८ ॥ दुःखहीनादुःखधाराद्रविणाचारदायिनी॥ द्रविणोत्सर्ग्गसन्तुष्टाद्रविणत्यागतोषिका ॥ ३९ ॥ द्रविणस्पर्शसन्तुष्टाद्रविणस्पर्शमानदा॥द्रविणस्पर्शहर्षाढ्याद्रविणस्पर्शतुष्टिदा ॥ ४० ॥ द्रविणस्पर्शनकरीद्रविणस्पर्शनातुरा ॥ द्रविणस्पर्शनोत्साहाद्रविणस्पर्शसाधिता ॥४१॥द्रविणस्पर्शनमताद्रविणस्पर्शपुत्रिका ॥ द्रविणस्पर्शरक्षिणीद्रविणस्तोमदायिनी ॥ ४२॥ द्रविणकर्षणकरीद्रविणौघविसर्ज्जनी ॥ द्रविणाचलदानाढ्याद्रविणाचलवासिनी ॥ ४३ ॥ दीनमातादीनबन्धुर्द्दीनविघ्नविनाशिनी ॥ दीनसेव्यादीनसिद्धादीनसाध्यादिगम्बरी ॥ ४४ ॥ दीनगेहकृतानन्दादीनगेहविलासिनी॥दीनभावप्रेमरता दीनभावविनोदिनी ॥ ४५ ॥ दीनमानवचेतःस्थादीनमानवहर्षदा॥दीनदैन्यनिघातेच्छुर्द्दीनद्रविणदायिनी ॥ ४६ ॥ दीनसाधनसन्तुष्टादीनदर्शनदायिनी ॥ दीनपुत्रादिदात्रीचदीनसम्पद्विधायिनी ॥ ४७ ॥ दत्तात्रेयध्यानरतादत्तात्रेयप्रपूजिता ॥ दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धादत्तात्रेयविभाविता ॥ ४८ ॥ दत्तात्रेयकृतार्हाचदत्तात्रेयप्रसाधिता ॥ दत्तात्रेयहर्षदात्रीदत्तात्रेयसुखप्रदा ॥ ४९ ॥ दत्तात्रेयस्तुताचैवदत्तात्रेयनुतासदा ॥ दत्तात्रेयप्रेमरतादत्तात्रेयानुमानिता ॥ ५० ॥ दत्तात्रेयसमुद्गीतादत्तात्रेयकुटुम्बिनी ॥ दत्तात्रेयप्राणतुल्यादत्तात्रेयशरीरिणी ॥ ५१ ॥ दत्तात्रेयकृतानन्दादत्तात्रेयांशसम्भवा ॥ दत्तात्रेयविभूतिस्थादत्तात्रेयानुसारिणी ॥ ५२ ॥ दत्तात्रेयगीतिरतादत्तात्रेयधनप्रदा ॥ दत्तात्रेयदुःखहरादत्तात्रेयवरप्रदा ॥ ५३ ॥ दत्तात्रेयज्ञानदात्रीदत्तात्रेयभयापहा॥देवकन्यादेवमान्यादेवदुःखविनाशिनी ॥ ५४ ॥ देवसिद्धादेवपूज्यादेवेज्यादेववन्दिता ॥ देवमान्यादेवधन्यादेवविघ्नविना

शिनी ॥ ५५ ॥ देवरम्यादेवरतादेवकौतुकतत्परा ॥ देवक्रीडादेवव्रीडादेववैरिविनाशिनी ॥ ५६ ॥ देवकामादेवरामादेवद्विष्टविनाशिनी ॥ देवदेवप्रियादेवीदेवदानववन्दिता ॥ ५७॥ देवदेवरतानन्दादेवदेववरोत्सुका ॥ देवदेवप्रेमरतादेवदेवप्रियँव्वदा ॥ ५८ ॥ देवदेवप्राणतुल्यादेवदेवनितम्बिनी ॥ देवदेवहृतमनादेवदेवसुखावहा ॥ ५९ ॥ देवदेवक्रोडरतादेवदेवसुखप्रदा॥ देवदेवमहानन्दादेवदेवप्रचुम्बिता ॥ ६० ॥ देवदेवोपभुक्ताच देवदेवानुसेविता ॥ देवदेवगतप्राणादेवदेवगतात्मिका ॥ ६१ ॥ देवदेवहर्षदात्रीदेवदेवसुखप्रदा ॥ देवदेवमहानन्दादेवदेवविलासिनी ॥ ६२ ॥ देवदेवधर्म्मपत्नीदेवदेवमनोगता ॥ देवदेववधूर्देवदेवदेवार्च्चनप्रिया ॥ ६३ ॥ देवदेवाङ्कनिलयादेवदेवाङ्गशायिनी ॥ देवदेवाङ्गसुखिनीदेवदेवाङ्गवासिनी ॥ ६४ ॥ देवदेवाङ्गभूषाचदेवदेवाङ्गभूषणा ॥ देवदेवप्रियकरीदेवदेवाप्रियान्तकृत् ॥ ॥ ६५॥ देवदेवप्रियप्राणादेवदेवप्रियात्मिका ॥ देवदेवार्च्चकप्राणा देवदेवार्च्चकप्रिया ॥ ६६ ॥ देवदेवार्च्चकोत्साहादेवदेवार्च्चकाप्रिया ॥ देवदेवार्च्चकाविघ्नादेवदेवप्रसूरपि ॥ ६७ ॥ देवदेवस्यजननीदेवदेवविधायिनी ॥ देवदेवस्यरमणीदेवदेवहृदाश्रया ॥ ॥ ६८ ॥ देवदेवेष्टदेवीचदेवतापसपातिनी ॥ देवताभावसन्तुष्टादेवताभावतोषिता ॥ ६९ ॥ देवताभाववरदादेवताभावसिद्धिदा ॥ देवताभावसंसिद्धादेवताभावसम्भवा ॥ ७० ॥ देवताभावसुखिनीदेवताभाववन्दिता ॥ देवताभावसुप्रीतादेवताभावहर्षदा ॥ ७१ ॥ देवताविघ्नहन्त्रीचदेवताद्विष्टनाशिनी ॥ देवतापूजितपदादेवताप्रेमतोषिता ॥ ७२ ॥ देवतागारनिलया देवतासौख्यदायिनी ॥ देवतानिजभावाचदेवताहृतमानसा ॥ ॥ ७३ ॥ देवताकृतपादार्च्चादेवताहृतभक्तिका ॥ देवतागर्व्वम

ध्यस्थादेवतादेवतादनुः ॥ ७४ ॥ दुन्दुर्ग्गायैनमोनाम्नीदूंफट्मन्त्रस्वरूपिणी ॥ दूंनमोमन्त्ररूपाचदूंनमोमूर्त्तिकात्मिका ॥ ॥ ७५ ॥ दूरदर्शिशप्रियादुष्टादुष्टभूतनिषेविता ॥ दूरदर्शिशप्रेमरतादूरदर्शिशप्रियँव्वदा ॥ ७६ ॥ दूरदर्शिशसिद्धिदात्रीदूरदर्शिशप्रतोषिता ॥ दूरदर्शिशकण्ठसंस्थादूरदर्शिशप्रहर्षिता ॥ ७७॥ दूरदर्शिशगृहीतार्च्चादूरदर्शिशप्रतर्प्पिता ॥ दूरदर्शिशप्राणतुल्यादूरदर्शिशसुखप्रदा ॥७८॥ दूरदर्शिशभ्रान्तिहरादूरदर्शिशहृदारुपदा ॥ दूरदश्इर्यैरिविद्रावादीर्ग्घदर्शिशप्रमोदिनी ॥ ७९ ॥ दीर्घदर्शिशप्राणतुल्यादीर्ग्घदर्शिशवरप्रदा ॥ दीर्ग्घदर्शिशहर्षदात्रीदीर्ग्घदर्शिशप्रहर्षिता ॥ ८० ॥ दीर्ग्घदर्शिशमहानन्दादीर्ग्घदर्शिशगृहालया ॥ दीर्ग्घदर्शिशगृहीतार्च्चादीर्ग्घदर्शिशहृताहंणा ॥ ॥ ८१ ॥ दयादानवतीदात्रीदयालुर्द्दीनवत्सला ॥ दयार्द्राचहयाशीलादयाढ्याचदयात्मिका ॥ ८२॥ हयाम्बुधिर्द्दयासारादयासागरपारगा ॥ दयासिन्धुर्द्दयाभारादयावत्करुणाकरी ॥ ॥ ८३ ॥ दयावद्वत्सलादेवीदयादानरतासदा ॥ दयावद्भक्तिसुखिनीदयावत्परितोषिता ॥ ८४ ॥ दयावत्स्नेहनिरतादयावत्प्रतिपादिका ॥ दयावत्त्राणकर्त्रीचदयावन्मुक्तिदायिनी ॥ ८५ ॥ दयावद्भावसन्तुष्टादयावत्परितोषिता ॥ दयावत्तारणपरादयावत्सिद्धिदायिनी ॥ ८६ ॥ दयावत्पुत्रवद्भावादयावत्पुत्ररूपिणी॥ दयावद्देहनिलयादयाबन्धुदयाश्रया ॥ ८७ ॥ दयालुवात्सल्यकरीदयालुसिद्धिदायिनी ॥ दयालुशरणासक्तादयालुदेहमन्दिरा ॥ ८८ ॥ दयालुभक्तिभावस्थादयालुप्राणरूपिणी ॥ दयालुसुखदादम्भादयालुप्रेमवर्षिणी ॥८९॥ दयालुवशगादीर्ग्घादीर्ग्घाङ्गीदीर्ग्घलोचना ॥ दीर्ग्घनेत्रादीर्ग्घचक्षुर्द्दीर्ग्घबाहुलतात्मिका ॥९०॥ दीर्ग्घकेशीदीर्ग्घमुखीदीर्ग्घघोणाचदारुणा॥दारुणसु

रहन्त्रीचदारणासुरदारिणी ॥ ९१ ॥ दारुणाहवकर्त्रीचदारुणाहवहर्षिता ॥ दारुणाहवहोमाढ्यादारुणाचलनाशिनी ॥ ॥ ९२ ॥ दारुणाचारनिरतादारुणोत्सवहर्षिता ॥ दारुणोद्यतरूपाचदारुणारिनिवारिणी ॥ ९३ ॥ दारुणेक्षणसँय्युक्तादोश्चतुष्कविराजिता ॥ दशदोष्कादशभुजादशबाहुविराजिता ॥ ॥ ९४ ॥ दशास्त्रधारिणीदेवीदशदिक्ख्यातविक्रमा ॥ दशरथार्च्चितपदादाशरथिप्रियासदा ॥ ९५ ॥ दाशरथिप्रेमतुष्टादाशरथिरतिप्रिया ॥ दाशरथिप्रियकरीदाशरथिप्रियँव्वदा ॥ ९६ ॥ दाशरथीष्टसन्दात्रीदाशरथीष्टदेवता ॥ दाशरथिद्वेषिनाशादाशरथ्यानुकूल्यदा ॥ ९७ ॥ दाशरथिप्रियतमादाशरथिप्रपूजिता दशाननारिसम्पूज्यादशाननारिदेवता ॥ ९८ ॥ दशाननारिप्रमदादशाननारिजन्मभूः ॥ दशाननारिरतिदादशाननारिसेविता ॥ ९९ ॥ दशाननारिसुखदादशाननारिवैरिहृत् ॥ दशाननारिष्टदेवीदशग्रीवारिवन्दिता ॥ १०० ॥ दशग्रीवारिजननी दशग्रीवारिभाविनी ॥ दशग्रीवारिसहितादशग्रीवसभाजिता ॥ ॥ १०१ ॥ दशग्रीवारिरमणीदशग्रीववधूरपि ॥ दशग्रीवनाशकर्त्रीदशग्रीववरप्रदा ॥ १०२ ॥ दशग्रीवपुरस्थाचदशग्रीववधोत्सुका ॥ दशग्रीवप्रीतिदात्रीदशग्रीवविनाशिनी ॥१०३॥ दशग्रीवाहवकरीदशग्रीवानपायिनी ॥ दशग्रीवप्रियावन्द्यादशग्रीवाहृता तथा ॥ ४ ॥ दशग्रीवाहितकरीदशग्रीवेश्वरप्रिया ॥ दशग्रीवेश्वरप्राणादशग्रीववरप्रदा ॥ ५ ॥ दशग्रीवेश्वररतादशवर्षीयकन्यका ॥ दशवर्षीयबालाचदशवर्षीयवासिनी ॥६॥ दशपापहरादम्यादशहस्तविभूषिता ॥ दशशस्त्रलसद्दोष्कादशदिक्पालवन्दिता ॥ ७ ॥ दशावताररूपाचदशावताररूपिणी ॥ दशविद्याभिन्नदेवीदशप्राणस्वरूपिणी ॥ ८ ॥ दशविद्या

स्वरूपाचदशविद्यामयीतथा ॥ दृक्स्वरूपादृक्प्रदात्रीदृग्रूपा दृक्प्रकाशिनी ॥ ९ ॥ दिगन्तरादिगन्तस्स्थादिगम्बरविलासिनी ॥ दिगम्बरसमाजस्थादिगम्बरप्रपूजिता ॥ ११० ॥ दिगम्बरसहचरीदिगम्बरकृतास्पदा ॥ दिगम्बरहृताचित्तादिगम्बरकथाप्रिया ॥ ११ ॥ दिगम्बरगुणरतादिगम्बरस्वरूपिणी ॥ दिगम्बरशिरोधार्य्यादिगम्बरहृताश्रया ॥ ११२ ॥ दिगम्बरप्रेमरतादिगम्बररतातुरा ॥ दिगम्बरीस्वरूपाचदिगम्बरीगणार्च्चिता ॥ ११३ ॥ दिगम्बरीगणप्राणादिगम्बरीगणप्रिया ॥ दिगम्बरीगणाराध्यादिगम्बरगणेश्वरी ॥ १४ ॥ दिगम्बरगणस्पर्शामदिरापानविह्वला ॥ दिगम्बरीकोटिवृतादिगम्बरीगणावृता ॥ ॥ १५ ॥ दुरन्तादुष्कृतिहरादुर्ध्येयादुरतिक्रमा ॥ दुरन्तदानवद्वेष्टीदुरन्तदनुजान्तकृत् ॥ १६ ॥ दुरन्तपापहन्त्रीचदस्रनिस्तारकारिणी ॥ दस्रमानससंस्थानादस्रज्ञानविवर्द्धिनी ॥ १७ ॥ दस्रसम्भोगजननीदस्रसम्भोगदायिनी ॥ दस्रसम्भोगभवनादस्रविद्याविधायिनी ॥ १८ ॥ दस्रोद्वेगहरादस्रजननीदस्रसुन्दरी ॥ दस्रभक्तिविधाज्ञानादस्रद्विष्टविनाशिनी ॥ १९ ॥ दस्रापकारदमनीदस्रसिद्धिविधायिनी ॥ दस्रताराराधिताचदस्रमातृप्रपूजिता ॥ १२० ॥ दस्रदैन्यहराचैवदस्रतातनिषेविता ॥ दस्रापितृशतज्योतिर्दस्रकौशलदायिनी ॥ २१ ॥ दशशीर्षारिसहितादशशीर्षारिकामिनी ॥ दशशीर्षपुरीदेवीदशशीर्षसभाजिता ॥ ॥१२२॥दशशीर्षारिसुप्रीतादशशीर्षवधूप्रिया ॥ दशशीर्षशिरश्छेत्रीदशशीर्षनितम्बिनी ॥ १२३ ॥ दशशीर्षहरप्राणादशशीर्षहरात्मिका ॥ दशशीर्षहराराध्यादशशीर्षारिवन्दिता ॥ ॥१२४॥ दशशीर्षारिसुखदादशशीर्षकपालिनी ॥ दशशीर्षज्ञानदात्रीदशशीर्षारिदेहिता ॥ १२५ ॥ दशशीर्षवधोपात्तश्री

रामचन्द्ररूपता ॥ दशशीर्षराष्ट्रदेवीचदशशोर्षारिसारिणी ॥ ॥ २६ ॥ दशशीर्षभ्रातृतुष्टादशशीर्षवधूप्रिया ॥ दशशीर्षवधू प्राणादशशीर्षवधूरता ॥ २७ ॥ दैत्यगुरुरतासाध्वीदैत्यगुरुप्रपू जिता ॥ दैत्यगुरूपदेष्ट्रीदैत्यगुरुनिषेविता ॥ २८ ॥ दैत्यगुरु गतप्राणादैत्यगुरुत्तापनाशिनी ॥ दुरन्तदुःखशमनीदुरन्तदमनीत मी ॥ २९ ॥ दुरन्तशोकशमनीदुरन्तरोगनाशिनी ॥ दुरन्तवै रिदमनीदुरन्तदैत्यनाशिनी ॥१३०॥ दुरन्तकलुषघ्नीचदुःकृति स्तोमनाशिनी ॥ दुराशयादुराधारादुर्ज्जयादुष्टकामिनी ॥ ३१॥ दर्शनीयाचदृश्याचदृश्याचदृष्टिगोचरा ॥ दूतीयागप्रियादूतीदू तीयागकरप्रिया ॥३२॥ दूतीयागकरानन्दादूतीयागसुखप्रदा ॥ दूतीयागकरायातादूतीयागप्रमोदिनी ॥ ३३ ॥ दुर्व्वासःपू जिताचैवदूर्वासोमुनिभाविता ॥ दुर्वासोर्च्चितपादाचदुर्व्वासोमु निभाविता ॥ ३४ ॥ दुर्व्वासोमुनिवन्द्याचदुर्व्वासोमुनिदे वता ॥ दुर्व्वासोमुनिमाताचदूर्व्वासोमुनिसिद्धिदा ॥ १३५ ॥ दुर्व्वासोमुनिभावस्थादुर्व्वासोमुनिसेविता ॥ दुर्व्वासोमुनि चित्तस्थादुर्व्वासोमुनिमण्डिता ॥ १३६ ॥ दुर्व्वासोमुनि सञ्चारादुर्व्वासोहृदयङ्गमा ॥ दुर्व्वासोहृदयाराध्यादुर्व्वासो हृत्सरोजगा ॥ १३७ ॥ दुर्व्वासस्तापसाराध्यादुर्व्वासस्ताप साश्रया ॥ दुर्व्वासस्तापसरतादुर्व्वासस्तापसेश्वरी ॥ १३८ ॥ दुर्व्वासोमुनिकन्याचदुर्व्वासोद्भूतासिद्धिदा ॥ दररात्रीदरहरादर युक्तादरापहा ॥ १३९ ॥ दरघ्नीदरहन्त्रीचदरयुक्तादराश्रया ॥ ॥ १४० ॥ दरस्मेरादरापाङ्गीदयादात्रीदयाश्रया ॥ दस्रपूज्या दस्रमातादस्रदेवीदरोन्मदा ॥ १४१ ॥ दस्रसिद्धादस्रसंस्थाद स्रतापविमोचिनी ॥ दस्रक्षोभहरानित्यादस्रलोकगतात्मिका ॥ ॥ १४२ ॥ दैत्यगुर्व्वङ्गनावन्द्यादैत्यगुर्व्वङ्गनाप्रिया ॥ दैत्यगुर्व्व

ङ्गनासिद्धादैत्यगुर्व्वङ्गनोत्सुका ॥ १४३ ॥ दैत्यगुरुप्रियतमा देवगुरुनिषेविता ॥ देवगुरुप्रसूरूपादेवगुरुकृतार्हणा ॥ १४४ ॥ देवगुरुप्रेमयुतादेवगुर्व्वनुमानिता ॥ देवगुरुप्रभावज्ञादेवगुरुसुख प्रदा ॥ १४५ ॥ देवगुरुज्ञानदात्रीदेवगुरुप्रमोदिनी ॥ दैत्यस्त्री गणसम्पूज्यादैत्यस्त्रीगणपूजिता ॥ १४६ ॥ दैत्यस्त्रीगणरूपाच दैत्यस्त्रीचित्तहारिणी ॥ देवस्त्रीगणपूज्याचदेवस्त्रीगणवन्दिता ॥ ॥ १४७ ॥ देवस्त्रीगणचित्तस्थादेवश्रीगणभूषिता ॥ देवस्त्रीग णसंसिद्धादेवस्त्रीगणतोषिता ॥ १४८ ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्था चारुचामरवीजिता ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुगन्धविलेपिता ॥ ॥१४९ ॥ देवाङ्गनाधृतादर्श्शदृष्टचतुर्थमुखचन्द्रमा ॥ देवाङ्गनो त्सृष्टनागवल्लीदलकृतोत्सुका ॥१५० ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थदीप मालाविलोकना ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थधूपघ्राणविनोदिनी ॥ ॥ १५१ ॥ देवनारीकरगतवासकासवपायिनी ॥ देवनारीक ङ्कतिकाकृत्तकेशनिमार्ज्जना ॥ १५२ ॥ देवनारीरुष्टचगात्रादे वनारीकृतोत्सुका ॥ देवनारीविरचितापुष्पमालाविराजिता ॥ ॥ १५३ ॥ देवनारीविचित्राङ्गीदेवस्त्रीदत्तभोजना ॥ देवस्त्रीगण गीताचदेवस्त्रीगीतसोत्सुका ॥१५४॥ देवस्त्रीनृत्यसुखिनीदेवस्त्री नृत्यदर्श्शिनी॥देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादुपदाम्बुजा ॥ १५५॥ देवस्त्रीगणविस्तीर्ण्णचारुतलपनिषेदुषी ॥ देवनारीचारुकराक लिताङ्घ्यादिदेहिका ॥ १५६ ॥ देवनारीकरव्यग्रतालवृन्तम रुत्सुखा ॥ देवनारीवेणुवीणानादसोत्कण्ठमानसा ॥ १५७ ॥ देवकोटिस्तुतिनुतादेवकोटिकृतार्हणा ॥ देवकोटिगीतगुणादेव कोटिकृतस्तुतिः ॥ १५८ ॥ दन्तदष्टचोद्वेगफलादेवकोलाहला कुला ॥ द्वेषरागपरित्यक्ताद्वेषरागविवर्ज्जिता ॥ १५९ ॥ दामपू ज्यादामभूषादामोदरविलासिनी ॥ ।मादेरप्रमेरतादामादेदरभ

गिन्यपि ॥ १६० ॥ दामोदरप्रसूर्द्दामोदरपत्नीपतिव्रता ॥ दामो
दराभिन्नदेहादामोदररतिप्रिया ॥ १६१ ॥ दामोदराभिन्नतनुर्द्दा
मोदरकृतास्पदा ॥ दामोदरकृतप्राणादामोदरगतात्मिका ॥
॥ १६२ ॥ दामोदरकौतुकाढ्यादामोदरकलाकला ॥ दामोदरा
लिङ्गिताङ्गीदामोदरकुतूहला ॥१६३॥ दामोदरकृताह्लादादामो
दरसुचुम्बिता ॥ दामोदरसुताकृष्टादामोदरसुखप्रदा ॥ १६४ ॥
दामोदरसहाढ्याचदामोदरसहायिनी ॥ दामोदरगुणज्ञाचदामो
दवरप्रदा ॥ १६५ ॥ दामोनरानुकूलाचदामोदरनितम्बिनी ॥
दामोदरजलक्रीडाकुशलादर्श्शनप्रिया ॥१६६॥ दामोदरबलक्री
डात्यक्तस्वजनसौहृदा ॥ दामोदरलसद्रासकेलिकौतुकिनीतथा
॥ १६७॥दामोदरभ्रातृकाचदामोदरपरायणा ॥ दामोदरधरादा
मोदरवैरिविनाशिनी ॥ १६८ ॥ दामोदरोपजायाचदामोदरनिम
न्त्रिता ॥ दामोदरपराभूतादामोदरपराजिता ॥ १६९ ॥ दामोद
रसमाक्रान्तादामोदरहताशुभा ॥ दामोदरोत्सवरतादामोदरो
त्सवावहा ॥ १७० ॥ दामोदरस्तन्यदात्रीदामोदरगवेषिता ॥
दमयन्तीसिद्धिदात्रीदमयन्तीप्रसाधिता ॥ १७१ ॥ दमयन्ती
ष्टदेवीचदमयन्तीस्वरूपिणी ॥ दमयन्तीकृतार्च्चाचदमनर्ष्षिवि
भाविता ॥ १७२ ॥ दमनर्ष्षिप्राणतुल्यादमनर्ष्षिस्वरूपिणी ॥
दमनर्ष्षिस्वरूपाचदम्भपूरितविग्रहा ॥ १७३ ॥ दम्भहन्त्रीद
म्भदात्रीदम्भलोकविमोहिनी ॥ दम्भशीलादम्भहरादम्भवत्परि
मर्द्दिनी ॥ १७४ ॥ दम्भरूपादम्भकरीदम्भसन्तानदारिणी ॥
दत्तमोक्षादत्तधनादत्तारोग्याचदाम्भिका ॥ १७५ ॥ दत्तपुत्राद
त्तदारादत्तहाराचदारिका ॥ दत्तभोगादत्तशोकादत्तहस्त्यादिवा
हना ॥ १७६ ॥ दत्तमतिर्द्दत्तभार्य्यादत्तशास्त्रावबोधिका ॥ द
त्तपानादत्तदानादत्तदारिद्र्यनाशिनी ॥ १७७ ॥ दत्तसौधावनी

वासादत्तस्वर्गाचदासदा ॥ दास्यतुष्टादास्यहरादासदासीशत प्रदा ॥ १७८ ॥ दाररूपादारवासादारवासिहृदास्पदा ॥ दारवासिजनाराध्यादारवासिजनप्रिया ॥ १७९ ॥ दारवासिविनिर्न्नीतादारवासिसमर्च्चिता ॥ दारवास्याहृतप्राणादारवास्यरिनाशिनी ॥ १८० ॥ दारवासिविघ्नहरादारवासिविमुक्तिदा ॥ दाराग्निरूपिणीदारादारकार्य्यरिनाशिनी ॥ १८१ ॥ दम्पतीदम्पतीष्टाचदम्पतीप्राणरूपिका ॥ दम्पतिस्नेहनिरतादाम्पत्यसाधनप्रिया ॥ १८२ ॥ दाम्पत्यसुखसेनाचदाम्पत्यसुखदायिनी ॥ दम्पत्याचारनिरतादम्पत्यामोदमोदिता ॥ १८३ ॥ दम्पत्यामोदसुखिनोदाम्पत्याह्लादकारिणी ॥ दम्पतीष्टपादपद्मादाम्पत्यप्रेमरूपिणी ॥ १८४ ॥ दाम्पत्यभोगभवनादाडिमीफलभोजिनी ॥ दाडिमीफलसन्तुष्टादाडिमीफलमानसा ॥ १८५ ॥ दाडिमीवृक्षसंस्थानादाडिमीवृक्षवासिनी ॥ दाडिमीवृक्षरूपाचदाडिमीवनवासिनी ॥ १८६ ॥ दाडिमीफलसाम्योरुपयोधरविवर्ज्जिता ॥ दक्षिणादक्षिणारूपादक्षिणारूपधारिणी ॥ १८७ ॥ दक्षकन्यादक्षपुत्रोदक्षमाताचदक्षसूः ॥ दक्षगोत्रादक्षसुतादक्षयज्ञविनाशिनी ॥ १८८ ॥ दक्षयज्ञनाशकर्त्रीदक्षयज्ञान्तकारिणी ॥ दक्षप्रसूतिर्द्दक्षेज्यादक्षवंशैकपावनी ॥ १८९ ॥ दक्षात्मजादक्षसूनुर्द्दक्षजादक्षजातिका ॥ दक्षजन्मादक्षजनुर्द्दक्षदेहसमुद्भवा ॥ १९० ॥ दक्षजनिर्द्दक्षयागध्वंसिनीदक्षकन्यका ॥ दक्षिणाचारनिरतादक्षिणाचारतुष्टिदा ॥ १९१ ॥ दक्षिणाचारसंसिद्धादक्षिणाचारभाविता ॥ दक्षिणाचारसुखिनीदक्षिणाचारसाधिता ॥ ॥ १९२ ॥ दक्षिणाचारमोक्षाप्तिर्द्दक्षिणाचारवन्दिता ॥ दक्षिणाचारशरणादक्षिणाचारहर्षिता ॥ १९३ ॥ द्वारपालप्रियाद्वारवासिनीद्वारसंस्थिता ॥ द्वाररूपाद्वारसंस्थाद्वारदेशनिवासिनी

॥ १९४ ॥ द्वारकरीद्वारधात्रीदोषमात्रविवर्ज्जिता ॥ दोषकरादोषहरादोषराशिविनाशिनी ॥ १९५ ॥ दोषाकरविभूषाढ्यादोषाकरकपालिनी॥दोषाकरसहस्राभादोषाकरसमानना ॥ १९६॥ दोषाकरमुखीदिव्यादोषाकरकराग्रजा ॥ दोषाकरसमज्योतिर्द्दोषाकरसुशीलता ॥ १९७ ॥ दोषाकरश्रेणिदोषसदृशापाङ्गवीक्षणा ॥ दोषाकरेष्टदेवीचदोषाकरनिषेविता ॥ १९८ ॥ दोषाकरप्राणरूपादोषाकरमरीचिका ॥ दोषाकरोल्लसद्भालादोषाकरसुहर्षिणी ॥ १९९ ॥ दोषाकरशिरोभूषादोषाकरवधूप्रिया ॥ दोषाकरवधूप्राणादोषाकरवधूर्म्मता ॥ २०० ॥ दोषाकरवधूप्रीतादोषाकरवधूरपि ॥ दोषापूज्यातथादोषापूजितादोषहारिणी ॥ २०१॥ दोषाजापमहानन्दादोषाजापपरायणा ॥ दोषापुरश्चाररतादोषापूजकपुत्रिणी ॥ २०२ ॥ दोषापूजकवात्सल्यकारिणीजगदम्बिका ॥ दोषापूजकवैरिघ्नीदोषापूजकविघ्नहृत् ॥ २०३ ॥ दोषापूजकसन्तुष्टादोषापूजकमुक्तिदा ॥ दमप्रसूनसम्पूज्यादमपुष्पप्रियासदा ॥ २०४ ॥ दुर्य्योधनप्रपूज्याचदुःशासनसमर्च्चिता ॥ दण्डपाणिप्रियादण्डपाणिमातादयानिधिः ॥ २०५ ॥ दण्डपाणिसमाराध्यादण्डपाणिप्रपूजिता ॥ दण्डपाणिगृहासक्तादण्डपाणिप्रियंवदा ॥ २०६ ॥ दण्डपाणिप्रियमतादण्डपाणिमनोहरा ॥ दण्डपाणिहृतप्राणादण्डपाणिसुसिद्धिदा ॥ २०७ ॥ दण्डपाणिपरामृष्टादण्डपाणिप्रहर्षिता ॥ दण्डपाणिविघ्नहरादण्डपाणिशिरोधृता ॥ २०८ ॥ दण्डपाणिप्राप्तचर्च्चादण्डपाण्युन्मुखीसदा ॥ दण्डपाणिप्राप्तपदादण्डपाणिवरोन्मुखी ॥ २०९ ॥ दण्डहस्तादण्डपाणिर्द्दण्डबाहुर्द्दरान्तकृत् ॥ दण्डदोष्काद्दण्डकरादण्डचित्तकृतास्पदा ॥ २१० ॥ दण्डविद्यादण्डिमातादण्डिखण्डकनाशिनी ॥ दण्डिप्रियादण्डिपूज्यादण्डिसन्तोषदायिनी ॥ २११ ॥ दस्युपूज्यादस्युरता

दस्युद्रविणदायिनी ॥ दस्युवर्ग्गकृताहांचदस्युवर्ग्गविनाशिनी ॥ २१२ ॥ दस्युनिर्न्नाशिनीदस्युकुलनिर्न्नाशिनीतथादस्युप्रियकरीदस्युनृत्यदर्श्शनतत्परा ॥२१३॥ दुष्टदण्डकरीदुष्टवर्ग्गविद्राविणीतथा॥दुष्टवर्ग्गनिग्रहार्हादूषकप्राणनाशिनी ॥२१४॥दूषकोत्तापजननीदूषकारिष्टकारिणी ॥ दूषकद्वेषनकरीदाहिकादहनात्मिका ॥ २१५ ॥ दारकारीनिहन्त्रीचदारुकेश्वरपूजिता॥दारुकेश्वरमाताचदारुकेश्वरवन्दिता ॥२१६॥ दर्भहस्तादर्भयुतादर्भकर्म्मविवर्ज्जिता॥दर्भमयीदर्भतनुर्द्दर्भसर्व्वस्वरूपिणी२१७ दर्भकर्म्माचाररतादर्भहस्तकृतार्हणा॥ दर्भानुकूलादार्भर्य्यादर्व्वीपात्रानुदामिनी ॥२१८॥ दमघोषप्रपूज्याचदमघोषवरप्रदा दमघोषसमाराध्यादावाग्निरूपिणीतथा ॥२१९॥दावाग्निरूपादावाग्निनिर्न्नाशितमहाबला॥ दन्तदंष्ट्रासुरकलादन्तचर्च्चितहस्तिका ॥ २२०॥ दन्तदंष्ट्रस्यन्दनाचदन्तनिर्न्नाशितासुरा ॥ दधिपूज्यादधिप्रीतादधीचिवरदायिनी॥ २२१॥ दधीचीष्टदेवताचदधीचिमोक्षदायिनी ॥ दधीचिदैन्यहन्त्रीचदधीचिदरदारिणी ॥ २२२ ॥ दधीचिभक्तिसुखिनीदधीचिमुनिसेविता ॥ दधीचिज्ञानदात्रीचदधीचिगुणदायिनी ॥ २२३ ॥ दधीचिकुलसम्भूषादधीचिभुक्तिमुक्तिदा ॥ दधीचिकुलदेवीचदधीचिकुलदेवता ॥ २२४ ॥ दधीचिकुलगम्याचदधीचिकुलपूजिता ॥ दधीचिसुखदात्रीचदधीचिदीनहारिणी ॥ २२५ ॥ दधीचिदुःखहन्त्रीचदधीचिकुलसुन्दरी दधीचिकुलसम्भूतादधीचिकुलपालिनी ॥ २२६ ॥ दधीचिदानगम्याचदधीचिदानमानिनी ॥ दधीचिदानसन्तुष्टादधीचिदानदेवता ॥ २२७ ॥ दधीचिजयसम्प्रीतादधीचिजपमानसा ॥ दधीचिजपपूजाढ्यादधीचिजपमालिका ॥ २२८ ॥ दधीचिजपसन्तुष्टादधीचिजपतोषिणी ॥ दधीचितपसाराध्यादधीचिशुभदायिनी

॥ २२९ ॥ दूर्व्वादूर्व्वादलश्यामादूर्व्वादलसमद्युतिः ॥ नाम्नांस सहस्रन्दुर्ग्गाया दार्दानामितिकीर्त्तितम् ॥ यःपठेत्साधकाधीशः सर्व्वसिद्धीर्ल्लभेत्तुसः ॥ २३० ॥ प्रातर्म्मध्याह्नकालेच सन्ध्यायां न्नियतःशुचिः ॥ तथार्द्धरात्रसमये समहेशइवापरः ॥ २३१ ॥ शक्तियुक्तोमहारात्रौ महावीरःप्रपूजयेत् ॥ महादेवीम्मकाराद्यैः पञ्चभिर्द्रव्यसत्तमैः ॥ २३२ ॥ तत्पठेत्स्तुतिमिमाँय्यस्सचसि द्धिस्वरूपधृक् ॥ देवालयेश्मशानेचगङ्गातीरेनिजेगृहे ॥ २३३॥ वाराङ्गनागृहेचैवश्रीगुरोस्सन्निधावपि ॥ पर्व्वतेप्रान्तरेघोरेस्तो त्रमेतत्सदापठेत् ॥ २३४ ॥ दुर्ग्गानामसहस्रंहिदुर्ग्गांपश्यति चक्षुषा ॥ शतावर्त्तनमेतस्यपुरश्चरणमुच्यते ॥ २३५ ॥ स्तुति सारोनिगदितःकिम्भूयःश्रोतुमिच्छसि ॥

इतिश्रीकुलार्णवेदुर्ग्गादकारादिसहस्र नामस्तोत्रंसमाप्तम्



इति दुर्गातन्त्रम् सम्पूर्णम् ।

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मज
खेमराजेन स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर"
यन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

चतुर्दशं

शिवतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ।

अथ शिवतन्त्रम् ॥



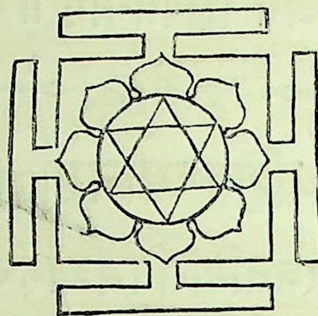
अथशिवध्यानम् ॥

ध्यायेन्नित्यम्महेशंरजतगिरिनिभञ्चारुचन्द्रावतंसंरत्नाकल्पो
ज्ज्वलाङ्गपरशुमृगवराभीतिहस्तम्प्रसन्नम् ॥ पद्मासीनंसमन्तात्
स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिंवँसानँविश्वाद्यँविश्वबीजन्निखिलभ
यहरम्पञ्चवक्त्रन्त्रिनेत्रम् ॥



अथयन्त्रोद्धारः ॥

अनुक्तकल्पेयन्त्रन्तुलिखेत्पद्मदलाष्टकम् ॥ षट्कोणकर्णिणकन्तत्रवेदद्वारोपशोभितम् ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

नमस्कारंसमुद्धृत्यवान्तंनेत्रसमान्वितम् ॥ वारुणम्मुखवृत्तञ्च वायुंललाटसँय्युतम् ॥ अमुम्पञ्चाक्षरम्मन्त्रम्पञ्चकामफलप्रदम् ॥ प्रणवादिर्य्यदादेवितदामन्त्रःषडक्षरः ॥

अथमन्त्रः ॥

ॐमनःशिवाय ॥

अथपूजाप्रयोगः

प्रातःकृत्यादिकङ्कृत्वापूजागृहङ्गत्वा आसनेउपविश्य दीपम्प्रज्वाल्य ॐदींदीपनाथायनम इतिदीपंसम्पूज्यभूतापसर्प्पणङ्कृत्वा पूजामारभेत् ॥ तद्यथा ॥ अथध्यानम् ॥ बन्धूकसन्निभन्देवन्त्रिनेत्रञ्चन्द्रशेखरम् ॥ त्रिशूलधारिणन्देवञ्चारुहासंसुनिर्म्मलम् ॥१॥ कपालधारिणन्देवव्वँरदाभयहस्तकम् ॥ उमयासहितं शम्भुन्ध्यायेत्सोमेश्वरंसदा ॥२॥ इतिध्यानम् ॥ अथावाहनम्॥ आयाहिभगवन्शम्भोशर्व्वत्वङ्गिरिजापते ॥ प्रसन्नोभवदेवेशनमस्तुभ्यंहिशङ्कर ॥ इत्यावाहनम् ॥ अथासनम् ॥विश्वेश्वरमहादेवराजराजेश्वरप्रिय॥आसनन्दिव्यमीशानदास्येहन्तुभ्यमीश्वर॥

इत्यासनम् ॥ अथपाद्यम् ॥ महादेवमहेशानमहादेवपरात्पर॥पाद्यङ्गृहाणमद्दत्तम्पार्व्वतीसहितेश्वर ॥इतिपाद्यम् ॥ अथार्घ्यम् ॥ त्र्यम्बकेशसदाचारजगदादिविधायक ॥ अर्घ्यङ्गृहाणदेवेशसाम्बसर्व्वार्त्थदायक॥इत्यर्घ्यम्॥अथाचमनीयम् ॥ त्रिपुरान्तकदीनार्त्तिनाशकश्रीकण्ठशाश्वत ॥गृहाणाचमनीयञ्चपवित्रोदककल्पितम्इत्याचमनीयम्॥अथगोदुग्धस्नानम् ॥मधुरङ्गोपयःपुण्यम्पटपूतम्पुरस्कृतम्॥स्नानार्थन्देवदेवेशगृहाणपरमेश्वर ॥इतिदुग्धस्नानम्॥अथदधिस्नानम् ॥दुर्ल्लभन्दिविसुस्वादुदधिसर्व्वप्रियम्परम्॥पुष्टिदम्पार्व्वतीनाथस्नानायप्रतिगृह्यताम् ॥ इतिदधिस्नानम् ॥ अथघृतस्नानम् ॥घृतङ्गव्यंशुचिस्निग्धंसुसेव्यम्पुष्टिमिच्छताम् ॥ हाणगिरिजानाथस्नानायचन्द्रशेखर ॥इतिघृतस्नासम्॥अथमधुस्नानम्॥मधुरम्मृदुमोहघ्नंस्वरभङ्गविनाशनम् ॥महादेवेदमुत्सृष्टन्तवस्नानायशङ्कर ॥ इतिमधुस्नानम्॥अथशर्क्करास्नानम् ॥ तापशान्तिकरीशीतामधुरास्वादसँय्युता॥स्नानात्र्थन्देवदेवशशर्क्करेयम्प्रदीयते ॥ इतिशर्क्करास्नानम् ॥ अथशुद्धोदकस्नानम् ॥ गङ्गागोदावरीरेवापयोष्णीयमुनातथा ॥ सरस्वत्यादितीर्थानिस्नानार्त्थम्प्रतिगृह्यताम् ॥ अथशतरुद्रचास्नानम् ॥ तदुद्धारोयथा ॥ नमस्तेरुद्रसूक्तञ्चपुनःषोडशमेवच ॥ एषतेद्विर्न्नमस्तेद्विर्न्नतविद्वयमेवच ॥ मीदुष्टमष्टचत्वारिवयक्ष्वमष्टमञ्जपेत् ॥ ॐनमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः बाहुभ्यामुततेनमः ॥ १ ॥ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीःपुरुषञ्जगत् ॥ ॥ ३ ॥ शिवेनव्वचसात्वागिरिशाच्छाव्वदामसि ॥ यथानःसर्व्वमिदञ्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥ अद्धचवोचदाधिवक्ता

प्रथमोदैव्योभिषक् ॥ अहींश्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चयातुधा
न्न्योधराचीःपरासुव ॥ ५ ॥ असौयस्ताम्रोऽअरुणऽउतबभ्रुः
सुमङ्गलः॥येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाꣳहेड
ईमहे ॥ ६ ॥ असौयोऽवसर्प्पतिनीलग्रीवोविलोहितः ॥ उतैन
ङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यःसदृष्टोमृडयातिनः ॥ ७ ॥ नमोऽ
स्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्यसत्वानोहन्ते
भ्योकरन्नमः ॥ ८ ॥ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योंर्ज्ज्याम् ॥
याश्चतेहस्तइषवःपराताभगवोव्वप ॥ ९ ॥ विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दि
नोविशल्योबाणवाꣳउत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिष
ङ्गधिः ॥ १० ॥ यातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ त
यास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज ॥ ११ ॥ परितेधन्व
नोहेतिरस्मान्वृणक्तुविश्वतः ॥ अथोयइषुधिस्तवारेऽअस्मन्नि
धेहितम् ॥ १२ ॥ अवतत्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशी
र्य्यशल्यानाम्मुखाशिवोनःसुमनाभव ॥ १३ ॥ नमस्तऽआयु
धायानाततायधृष्णवे ॥ उभाभ्यामुततेनमोबाहुभ्यान्तवध
न्वने ॥ १४ ॥ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्त
मुतमानऽउक्षितम् ॥ मानोव्वधीःपितरम्मोतमातरम्मानःप्रि
यास्तन्न्वोरुद्ररीरिषः ॥ १५ ॥ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषि
मानोगोषुमानो अश्वेषुरीरिषः ॥ मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोव्व
धीर्हविष्मन्तःसदमित्वाहवामहे ॥ १६ ॥ नमोहिरण्यबाहवेसे
नान्न्येदिशाञ्चपतयेनमोनमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यःपशूनाम्पतये
नमोनमः सस्पिञ्जरायात्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशा
योपवीतिनेपुष्टानाम्पतयेनमः ॥ १७ ॥ नमोबभ्लुशायवि
व्याधिनेऽन्नानाम्पतयेनमोनमोभवस्यहेत्यैजगताम्पतयेनमोनमो
रुद्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सूतायाहन्त्यैव्वनानाम्प

तयेनमः ॥ १८ ॥ नमोरोहितायस्थपतयेव्वृक्षाणाम्पतयेन मोनमोभुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतयेनमोनमोमन्त्रिणे व्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयतेपत्तीना म्पतयेनमः ॥ १९ ॥ नमः कृत्स्नायतयाधावतेसत्त्वनाम्प तयेनमोनमःसहमानायनिव्याधिनऽआव्याधिनीनाम्पतयेनमो नमोनिषङ्गिणेककुभायस्तेनानाम्पतयेनमोनमोनिचेरवेपरिचरा यारण्यानाम्पतयेनमः ॥ २० ॥ नमोव्वञ्चतेपरिवञ्चतेस्तायूना म्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणऽइषुधिमतेतस्कराणाम्पतयेनमोनमः सृकायिभ्योजिघा ँ सद्भ्योमुष्णताम्पतयेनमोनमोऽसिमद्भ्योन क्तञ्चरद्भ्योविकृन्तानाम्पतयेनमः ॥ २१ ॥ नमऽउष्णीषि णेगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतयेनमोनम ऽइषुमद्भ्योधन्वायिभ्य श्चवोनमोनमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्चवोनमोनमऽआ यच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्चवोनमः ॥ २२ ॥ नमोविसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्चवोनमोनमः स्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्चवोनमोनमःशया नेभ्यऽआसीनेभ्यश्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवोनमः ॥ २३ ॥ नमःसभाभ्यः सभापतिभ्यश्चवोनमोनमोऽश्वेभ्योऽश्व पतिभ्यश्चवोनमोनमऽआव्याधिनीभ्योविविद्ध्यन्तीभ्यश्चवो नमोनमऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्चवोनमः ॥ २४ ॥ नमोग णेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्चवोनमो नमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्योविश्वरूपेभ्य श्चवोनमः ॥ २५ ॥ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्चवोनमोन मोरथिभ्योऽअरथेभ्यश्चवोनमोनम ÷ क्षतृभ्य ÷ सङ्ग्रहीतृभ्यश्चवो नमोनमोमहद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्चवोनमः ॥ २६ ॥ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्चवोनमोनम ः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्चवोनमोनमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्चवोनमोनमःश्वनिभ्योमृगयुभ्यश्चवो न

मः ॥ २७ ॥ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्चवोनमोनमोभवायचरु द्रायचनमः शर्व्वायचपशुपतयेचनमोनीलग्रीवायचशितिकण्ठा यच ॥ २८ ॥ नमः कपर्द्दिनेचव्युप्तकेशायचनमः सहस्राक्षा यचशतधन्वनेचनमोगिरिशयायचशिपिविष्टायचनमोमीढुष्टमा यचेषुमतेच ॥ २९ ॥ नमोह्रस्वायचवामनायचनमोबृहतेच वर्षीयसेचनमोवृद्धायचसवृधेचनमोऽग्र्यायचप्रथमायच ॥३०॥ नमऽ आशवेचाजिरायचनमः शीघ्र्यायचशीभ्यायचनमऽ ऊर्म्यायचावस्वन्यायचनमोनादेयायचद्वीप्यायच ॥३१॥नमोज्ये ष्ठायचकनिष्ठायचनमःपूर्व्वजायचापरजायचनमोमध्यमायचाप गल्भायचनमोजघन्यायचबुध्न्यायच ॥३२॥ नमः सोभ्यायचप्र तिसर्य्यायचनमोयाम्यायचक्षेम्यायचनमः श्लोक्यायचावसान्या यचनमऽ उर्व्वर्य्यायचखल्यायच॥३३॥नमोव्वन्यायचकक्ष्याय चनमःश्रवायचप्रतिश्रवायचनमऽ आशुषेणायचाशुरथायचनमः शूरायचावभेदिनेच ॥ ३४ ॥ नमोबिल्मिनेचकवचिनेचनमो व्वर्म्मिणेचवरूथिनेचनमः श्रुतायचश्रुतसेनायचनमोदुन्दुभ्याय चाहनन्यायच ॥ ३५ ॥ नमोधृष्णवेचप्रमृशायचनमोनिषङ्गि णेचेषुधिमतेचनमस्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनमः स्वायुधायचसुध न्वनेच ॥ ३६॥ नमः स्रुत्यायचपथ्यायचनमः काट्यायचनी प्यायचनमः कूल्यायचसरस्यायचनमोनादेयायचव्वैशन्ताय च ॥ ३७ ॥ नमः कूप्यायचावट्यायचनमोवीध्र्यायचातप्या यचनमोमेघ्यायचविद्युत्यायचनमोवर्ष्यायचावर्ष्यायच३८॥ नमोवात्यायचरेष्म्यायचनमोवास्तव्यायचव्वास्तुपायचनमःसो मायचरुद्रायचनमस्ताम्रायचारुणायच ॥ ३९ ॥ नमःशङ्गवेच पशुपतयेचनमऽउग्रायचभीमायचनमोऽग्रेवधायचदूरेवधायचन मोहन्त्रेचहनीयसेचनमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्योनमस्ताराय ॥४०॥

नमः शम्भवायचमयोभवायचनमः शङ्करायचमयस्करायचनमः शिवायचशिवतरायच ॥ ४१ ॥ नमः पार्य्यायचावार्य्यायचनमः प्रतरणायचोत्तरणायचनमस्तीर्त्थ्यायचकूल्यायचनमःशष्प्यायचफेन्न्यायच ॥ ४२ ॥ नमः सिकत्त्यायचप्रवाह्यायचनमः किंशिलायचक्षयणायचनमः कपर्द्दिनेचपुलस्तयेचनमइरिण्यायचप्रपत्थ्यायच ॥ ४३ ॥ नमोव्व्रज्यायचगोष्ठ्यायचनमस्तल्प्प्यायचगेह्यायचनमोहृदय्यायचनिवेष्प्यायचनमः काट्यायचगह्वरेष्ठायच ॥ ४४ ॥ नमःशुष्क्यायचहरित्त्यायचनमःपाꣳसव्यायचरजस्यायचनमोलोप्प्यायचोलप्प्यायचनमऽऊर्व्यायचसूर्व्यायच ॥ ४५ ॥ नमः पर्ण्णायचपर्ण्णशदायचनमऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमऽआखिदतेचप्रखिदतेचनमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्चवोनमोनमोवः किरिकेभ्योदेवानाꣳहृदयेभ्योनमो विचिन्वत्केभ्योनमोविक्षिणत्केभ्योनमऽआनिर्हतेभ्यः ॥ ४६ ॥ द्रापेऽअन्धसस्पतेदरिद्रंनीललोहित ॥ आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्म्मोचनः किञ्चनाममत् ॥ ४७ ॥ इमारुद्रायतवसेकपर्द्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः ॥ यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदेविश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥ यातेरुद्रशिवातनूःशिवाविश्वाहभेषजी ॥ शिवारुतस्यभेषजीतयानोमृडजीवसे ॥४९ ॥ परितेरुद्रस्यहेतिर्व्वृणक्तुपरित्वेषस्यदुर्म्मतिरघायोः ॥ अवास्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृड ॥ ५० ॥ मीढुष्टमशिवतमाशिवोनः सुमनाभव ॥ परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंव्वसानऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि ॥ ५१ ॥ विकिरिद्रविलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः ॥ यास्तेसहस्रꣳहेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तुताः ॥ ५२ ॥ सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयः ॥ तासामीशानोभगवःपराचीनामुखा

कृधि ॥ ५३ ॥ असङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्रा अधिभूम्याम् ॥ तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ ५४ ॥ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षेभवाऽअधि ॥ तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ ५५ ॥ नीलग्रीवाःशितिकण्ठादिवँ रुद्रा उपश्रिताः ॥ तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ ५६ ॥ नीलग्रीवाःशितिकण्ठाःशर्वा अधःक्षमाचराः ॥ तेषा ँ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ५७ ॥ येभूतानामधिपतयोविशिखासः कपर्दिनः ॥ तेषा ँ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ५८ ॥ येवृक्षेषुसस्पिञ्जरानीलग्रीवाविलोहिताः ॥ तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ ५९ ॥ येपथाम्पाथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्य्युधः ॥ तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ ६० ॥ येतीर्त्थानिप्रचरन्तिसृकाहस्तनिषङ्गिणः ॥ तेषा ँ सहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ६१ ॥ येऽन्नेषुविविद्ध्यन्तिपात्रेषुपिबतोजनान् ॥ तेषा ँ सहस्रयोजनेऽ वधन्वानितन्मसि ॥ ६२ ॥ य एतावन्तश्चभूया ँ सश्चदिशोरुद्रावितस्थिरे ॥ तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥६३॥ नमोस्तुरुद्रेभ्योयेदिवियेषाँव्वर्षमिषवःतेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ ६४ ॥ नमोस्तुरुद्रेभ्योयेऽन्तरिक्षेयेषाँव्वात इषवःतेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृयडन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ ६६ ॥ नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेपृथिव्याँय्येषामन्नमिषवःतेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वास्तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥

॥ ६६ ॥ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ६७ ॥ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयान स्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ ६८ ॥ यामिषुङ्गि रिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिंꣳसीः पुरुषञ्जगत् ॥ ६९ ॥ शिवेनव्वचसात्वागिरिशाच्छावदाम सि ॥ यथानःसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽअसत् ॥ ७० ॥ अ द्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ॥ अहीꣳश्चसर्व्वाञ्जम्भ यन्त्सर्व्वाश्चयातुधान्योधराचीः परासुव ॥ ७१ ॥ असौयस्ता म्म्रोऽअरुण उतबभ्रुःसुमङ्गलः ॥ येचैनꣳरुद्राअभितोदिक्षुश्रि ताःसहस्रशोवैषाꣳहेडईमहे ॥ ७२ ॥ असौयो वसर्प्पतिनील ग्रीवोव्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः ॥ स दृष्टोमृडयातिनः ॥ ७३ ॥ नमोऽस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षायमी ढुषे ॥ अथोयेऽअस्यसत्वानोऽहन्तेभ्योकरन्नमः ॥ ७४ ॥ प्रमु ञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्त्न्र्योज्ज्याम् ॥ ॥ याश्चतेहस्तऽइषवः परताभगवोव्वप ॥ ७५ ॥ विज्ज्यन्धनुःकपर्द्दिनोव्विशल्योबा णवाँ२ उत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ७६ ॥ यातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥ तयाऽस्मान्विश्वतस्त्व मयक्ष्मयापरिभुज ॥ ७७ ॥ परितेधन्वनोहेतिरस्मान्वृणक्तुवि श्वतः ॥ अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्मान्निधेहितम् ॥ ७८ ॥ अव तत्त्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशल्यानाम्मुखाशि वोनःसुमनाभव ॥ ७९ ॥ नमस्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे ॥ उभाभ्यामुतनेनमोबाहुभ्यान्तवधन्न्वने ॥ ८० ॥ मानोमहान्त मुतमानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्॥मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानःप्रियास्तन्न्वोरुद्ररीरिषः ॥ ८१ ॥ मान स्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मा

नोव्वीरान्नुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्वा हवामहे ॥८२॥ एषतेरुद्रभागःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥ ८३ ॥ अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथा नोव्वस्यसस्करद्यथानःश्रेयसस्करद्यथानोव्व्यवसाययात्॥८४॥ नमस्तेहरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे ॥ अन्न्यास्तेअस्म्मत्त पन्तुहेतयःपावकोअस्मभ्भ्यꣳशिवोभव ॥ ८५ ॥ नमस्तेऽअस्तुविद्युते नमस्तेस्तनयित्नवे ॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयतस्वःस मोहसे ॥८६॥ नतँव्विदाथयऽइमाजजानान्यद्युष्माकमन्तरम्बभूव ॥ नीहारेणप्रावृताजल्प्याचासुतृपऽउक्थशासश्चरन्ति ॥८७॥ विश्वकर्माहिविश्वकर्म्माह्यजनिष्टदेवऽआदिद्गन्धर्व्वोऽअभवद्द्वितीयःतृतीयःपिताजनितौषधीनामपाङ्गर्भँव्व्यदधात्पुरुत्रा ॥८८॥ मीढुष्टमशिवतमशिवोनःसुमनाभव ॥ परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिँव्वसानऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि ॥ ८९ ॥ विकिरिद्रव्विलोहितनमस्तेअस्तुभगवः ॥ यास्तेसहस्रꣳहेतयोन्यमस्मन्निव पन्तुताः ॥ ९० ॥ सहस्राणिसहस्रशोव्बाह्वोस्तवहेतयः ॥ तासामीशानोभगवःपराचीनामुखाकृधि ॥ ९१ ॥ असङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्म्याम् ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ ९२ ॥ वयꣳसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ९३ ॥ एषतेरुद्रभागः सहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥ ९४ ॥ अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथानोवस्यसस्करद्यथानः श्रेयसस्करद्यथानोव्यवसाययात् ॥ ९५ ॥ भेषजमासिभेषजङ्गवेऽश्वायपुरुषायभेषजम् ॥ सुखंमेषायमेष्यै ॥ ९५ ॥ त्र्यम्बकँय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्र्यम्बकँय्यजामहेसुगन्धिपतिवेदनम् ॥ ऊर्व्वा

रुकमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः ॥ ९७ ॥ एतत्तेरुद्रावसन्ते नपुरोमूजवतोतीहि ॥ ९८ ॥ आयुषञ्जमदग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥ ९९ ॥ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ॥ १०० ॥ इतिशुद्धोदकस्नानम् ॥ अथवस्त्रम् ॥ वस्त्राणिपट्टकूलानिविचित्राणिनवानिच ॥ मयानीतानिदेवेशप्रसन्नोभवशङ्कर ॥ इतिवस्त्रम् ॥ अथोपवीतम् ॥ सौवर्ण्णराजन्ताताम्रङ्कार्प्पासस्यतथैवच ॥ उपवीतम्मयादत्तंप्रीत्यर्थम्प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्युपवीतम् ॥ अथगन्धम् ॥ सर्व्वेश्वरजगद्वन्द्यदिव्यासनसमास्थित ॥ गन्धङ्गृहाणदेवेशचन्दनम्प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिगन्धम् ॥ अथाक्षताः ॥ गन्धोपरिशुक्लाक्षतान् ॥ अक्षताश्चसुरश्रेष्ठाःशुभ्राधूताश्चनिर्म्मलाः ॥ मयानिवेदिताभक्त्यागृहाणपरमेश्वर ॥ इत्यक्षताः ॥ अथपुष्पाणि ॥ माल्यादीनिसुगन्धीनिमालत्यादीनिवैप्रभो ॥ मयाहृतानिपूजार्थम्पुष्पाणिप्रतिगृह्यताम् ॥ इतिपुष्पाणि ॥ अथबिल्वपत्राणि ॥ बिल्वपत्रंसुवर्ण्णेनत्रिशूलाकारमेवच ॥ मयार्प्पितम्महादेवबिल्वपत्रङ्गृहाणमे ॥ इतिबिल्वपत्राणि ॥ अथधूपम् ॥ वनस्पत्तिरसोत्पन्नोगन्धढयो गन्धउत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्व्वदेवानान्धूपोयम्प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिधूपः ॥ अथदीपः ॥ आज्याक्तवर्त्तिसँय्युक्तँव्वह्निनादीपितन्तुयत् ॥ दीपङ्गृहाणदेवेशत्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ इतिदीपम् ॥ अथनैवेद्यम् ॥ अपूपानिचपक्वानिमण्डकावटकानिच ॥ पायसंसूपमन्नञ्चनैवेद्यम्प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिनैवेद्यम् ॥ अथाचमनीयम् ॥ पानीयंशीतलंशुद्धङ्गाङ्गेयम्महदुत्तमम् ॥ गृहाणपार्व्वतीनाथ तव प्रीत्याप्रकल्पितम् ॥ इत्याचमनी

यम् ॥ अथकरोद्वर्त्तनम् कर्प्पूरादीनिद्रव्याणिसुगन्धीनिमहेश्वर॥ गृहाणजगतान्नाथकरोद्वर्त्तनहेतवे॥इतिकरोद्वर्त्तनम् ॥ अथफलानि॥कूष्माण्डम्मातुलिङ्गञ्चनारिकेरफलानिच॥गृहाणपार्व्वतीकान्तसोमशेखरशङ्कर ॥ इतिफलानि ॥ अथसपूगीफलताम्बूलादीनि ॥ पूगीफलम्महद्दिव्यन्नागवल्लीदलैर्य्युतम् ॥ गृहाणदेवदेवेश द्राक्षादीनिसुरेश्वर ॥ इतिपूगीफलादीनि ॥ अथद्रव्यम् ॥ हिरगर्भ्भगर्भ्भस्थंहेमबीजसमन्वितम् ॥ पञ्चरत्नम्मयादत्तङ्गृह्यतावृषभध्वज ॥ इतिद्रव्यम्॥अथनीराजनम्॥ अग्निर्ज्ज्योतीरविर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिर्न्नारायणोविभुः ॥ नीराजयामिदेवेशम्पञ्चदीपैःसुरेश्वर ॥ इतिनीराजनम् ॥ अथपुष्पाञ्जलिः ॥ हरविश्वाखिलाधारनिराधारनिराश्रय ॥ पुष्पाञ्जलिङ्गृहाणेशसोमेश्वरनमोस्तुते इतिपुष्पाञ्जलिः ॥ अथप्रणाममन्त्रः॥ हेतवेजगतामेवसंसाराण्णवसेतवे॥ प्रभवेसर्व्वविद्यानांशम्भवेगुरवेनमः॥ इतिप्रणाममन्त्रःसर्व्वमन्त्रान्तेसाङ्गायसायुधायसवाहनायसपरिवारायसावरणायनमइतियोज्यम् ॥

॥ अथशिवसहस्रनामावली ॥

अस्यश्रीसदाशिवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य ॥ नारायणऋषिः श्रीसदाशिवोदेवता ॥ अनुष्टुप्छन्दः सदाशिवोबीजम् गौरीशक्तिःश्रीसदाशिवप्रीत्यर्त्थन्तद्दिव्यसहस्रनामभिःअमुकद्रव्यसमर्प्पणेविनियोगः॥अथध्यानम् ॥ ध्यायेन्नित्यम्महेशंरजतगिरिनिभञ्चारुचन्द्रावतंसंरत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गम्परशुमृगवराभीतिहस्तम्प्रसन्नम् ॥ पद्मासीनंसमन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिव्वसानव्विश्वाद्यव्विँश्ववन्द्यन्निखिलभयहरम्पञ्चवक्त्रन्त्रिनेत्रम् ॥१॥ स्थिरायनमः ॥१॥स्थाणवेनमः॥२॥प्रभवेनमः॥३॥भीमायनमः ॥ ४ ॥ प्रवरा

यनमः ॥ ५ ॥ वरदायनमः॥ ६ ॥ वरायनमः ॥ ७॥ सर्व्वात्मने नमः ॥८॥ सर्व्वविख्यातायनमः ॥ ९ ॥ सर्व्वस्मैनमः ॥ १० ॥ सर्व्वकरायनमः ॥ ११ ॥ भवायनमः ॥ १२ ॥ जटिनेनमः ॥१३॥ चर्म्मिणेनमः ॥१४॥ शिखण्डिनेनमः ॥ १५ ॥ सर्व्वाङ्गा यनमः ॥ १६ ॥सर्व्वभावनायनमः ॥१७॥ हरायनमः ॥ १८ ॥ हरिणाक्षायनमः ॥२० ॥ प्रभवेनमः॥२१॥प्रवृत्तयेनमः ॥ २२ ॥ निवृत्तायनमः ॥ २३ ॥ नियतायनमः ॥ २४ ॥ शाश्वतायन मः ॥ २५ ॥ ध्रुवायनमः ॥ २६ ॥ श्मशानवासिनेनमः ॥ २७॥ भगवतेनमः ॥ २८ ॥ खेचरायनमः ॥ २९ ॥ गोचरायनमः ॥ ॥ ३० ॥ अर्द्दनायनमः ॥ ३१ ॥ अभिवाद्यायनमः ॥ ३२ ॥ महाकर्म्मणेनमः ॥ ३३ ॥ तपस्विनेनमः ॥ ३४ ॥ भूतभा वनायनमः ॥ ३५ ॥ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नायनमः ॥ ३६ ॥ स र्व्वलोकप्रजापतयेनमः ॥ ३७ ॥ महारूपायनमः ॥ ३८ ॥ महाकायायनमः ॥ ३९ ॥ वृषरूपायनमः ॥ ४० ॥ महायश सेनमः ॥ ४१ ॥ महात्मने नमः ॥ ४२ ॥ सर्व्वभूतात्मनेनमः ॥ ॥ ४३ ॥ विश्वरूपायनमः ॥ ४४ ॥ महाहनवेनमः ॥ ४५ ॥ लोकपालायनमः ॥ ४६ ॥ अन्तर्हितात्मनेनमः ॥ ४७ ॥ प्र सादायनमः ॥४८ ॥ हयगर्द्दभयेनमः ॥ ४९ ॥ पवित्रायनमः ॥ ॥ ५० ॥ महतेनमः ॥ ५१ ॥ नियमायनमः ॥ ५२ ॥ निय माश्रितायनमः ॥ ५३ ॥ सर्व्वकर्म्मणेनमः ॥ ५४ ॥ स्वयम्भू तायनमः ॥ ५५ ॥ आदयेनमः ॥ ५६ ॥ आदिकरायनमः ॥ ॥ ५७ ॥ निधयेनमः ॥ ५८ ॥ सहस्राक्षायनमः ॥ ५९ ॥ वि शालाक्षायनमः ॥ ६० ॥ सोमायनमः ॥ ६१ ॥ नक्षत्रसाध कायनमः ॥ ६२ ॥ चन्द्रायनमः ॥ ६३ ॥ सूर्य्यायनमः॥६४॥ शनयेनमः ॥ ६५ ॥ केतवेनमः ॥ ६६ ॥ ग्रहायनमः ॥ ६७ ॥

ग्रहपतयेनमः ॥ ६८ ॥ वरायनमः ॥ ६९ ॥ अत्रयेनमः ॥ ॥ ७० ॥ अत्र्यानमस्कर्त्त्रेनमः ॥ ७१ ॥ मृगबाणार्प्पणायनमः ॥ ७२ ॥ अनघायनमः ॥ ७३ ॥ महातपसेनमः ॥ ७४ ॥ घोरतपसेनमः ॥ ७५ ॥ अदीनायनमः ॥ ७६ ॥ दीनसाधकायनमः ॥ ७७ ॥ सम्वँत्सरायनमः ॥ ७८ ॥ मन्त्रायनमः ॥ ॥ ७९ ॥ प्रमाणायनमः ॥ ८० ॥ परमन्तपायनमः ॥ ८१ ॥ योगिनेनमः ॥ ८२ ॥ योज्यायनमः ॥ ८३ ॥ महाबीजायनमः ॥ ८४ ॥ महारेतसेनमः ॥ ८५ ॥ महाबलायनमः ॥ ८६ ॥ सुवर्ण्णरेतसेनमः ॥ ८७ ॥ सर्व्वज्ञायनमः ॥ ८८ ॥ सुबीजायनमः ॥ ८९ ॥ बीजवाहनायनमः ॥ ९० ॥ दशबाहवेनमः ॥ ॥ ९१ ॥ अनिमिषायनमः ॥ ९२ ॥ नीलकण्ठायनमः ॥ ९३ ॥ उमापतयेनमः ॥ ९४ ॥ विश्वरूपायनमः ॥ ९५ ॥ स्वयंश्रेष्ठानयमः ॥ ९६ ॥ बलवीरायनमः ॥ ९७ ॥ अबलायनमः ॥ ॥ ९८ ॥ गणायनमः ॥ ९९ ॥ गणकर्त्त्रेनमः ॥ १०० ॥ गणपतयेनमः ॥ १०१ ॥ दिग्वाससेनमः ॥ १०२ ॥ कामायनमः ॥ १०३ ॥ मन्त्रविदेनमः ॥ १०४ ॥ परमायनमः ॥ ॥ १०५ ॥ मन्त्रायनमः ॥ १०६ ॥ सर्व्वभावकरायनमः ॥ ॥ १०७ ॥ हरायनमः ॥ १०८ ॥ कमण्डलुधरायनमः॥१०९॥ धन्विनेनमः ॥ ११० ॥ बाणहस्तायनमः ॥ १११ ॥ कपालवतेनमः ॥ ११२ ॥ अशनिनेनमः ॥ ११३ ॥ शतघ्निनेनमः ॥ ११४ ॥ खड्गिनेनमः ॥ ११५ ॥ पट्टिशिनेनमः ॥ ११६ ॥ आयुधिनेनमः ॥ ११७ ॥ महतेनमः ॥ ११८ ॥ स्रुवहस्तायनमः ॥ ११९ ॥ सुरूपायनमः ॥ १२० ॥ तेजसेनमः ॥ ॥ १२१ तेजस्करनिधयेनमः ॥ १२२ ॥ उष्णीषिणेनमः ॥ ॥ १२३ ॥ सुवक्रायनमः ॥ १२४ ॥ उदग्रायनमः ॥ १२५ ॥

विनतायनमः ॥ १२६ ॥ दीर्ग्वायनमः ॥ १२७ ॥ हरिकेशाय नमः ॥ १२८ ॥ सुतीर्थायनमः ॥ १२९ ॥ कृष्णायनमः ॥ ॥ १३० ॥ सृगालरूपायनमः ॥ १३१ ॥ सिद्धार्थायनमः ॥ ॥ १३२ ॥ मुण्डायनमः ॥ १३३ ॥ सर्व्वशुभकरायनमः ॥ १३४ ॥ अजायनमः ॥ १३५ ॥ बहुरूपायनमः ॥ १३६ ॥ गन्धधारिणेनमः ॥ १३७ ॥ कपर्द्दिनेनमः ॥ १३८ ॥ ऊर्द्ध्वरेतसेनमः ॥ १३९ ॥ ऊर्द्ध्वलिङ्गायनमः ॥ १४० ॥ ऊर्द्ध्वशायिनेनमः ॥ ॥ १४१ ॥ नभस्थलायनमः ॥ १४२ ॥ त्रिजटायनमः ॥ ॥ १४३ ॥ चीरवाससेनमः ॥ १४४ ॥ रुद्रायनमः ॥ १४५ ॥ सेनापतयेनमः ॥ १४६ ॥ विभवेनमः ॥ १४७ ॥ अहश्चराय नमः ॥ १४८ ॥ नक्तञ्चरायनमः ॥ १४९ ॥ तिग्ममन्यवेनमः ॥ १५० ॥ सुवर्च्चसायनमः ॥ १५१ ॥ गजघ्नेनमः ॥ १५२ ॥ दैत्यघ्नेनमः ॥ १५३ ॥ कालायनमः ॥ १५४ ॥ लोकधात्रेनमः ॥ १५५ ॥ गुणाकरायनमः ॥ १५६ ॥ सिंहशार्द्दूलरूपायनमः ॥ १५७ ॥ आर्द्रचर्म्माम्बरावृतायनमः ॥ १५८ ॥ कालयोगिनेनमः ॥ १५९ ॥ महानादायनमः ॥ १६० ॥ सर्व्वकामायनमः ॥ १६१ ॥ चतुष्पथायनमः ॥ १६२ ॥ निशाचरायनमः ॥ १६३ ॥ प्रेतचारिणेनमः ॥ १६४ ॥ भूतचारिणेनमः ॥ ॥ १६५ ॥ महेश्वरायनमः ॥ १६६ ॥ बहुभूतायनमः ॥ १६७ ॥ बहुधरायनमः ॥ १६८ ॥ स्वर्भानवेनमः ॥ १६९ ॥ अमितायनमः ॥ १७० ॥ गतयेनमः ॥ १७१ ॥ नृत्यप्रियायनमः ॥ १७२ ॥ नित्यनर्त्तायनमः ॥ १७३ ॥ नर्त्तकायनमः ॥ १७४ ॥ सर्व्वलालसायनमः ॥ १७५ ॥ घोरायनमः ॥ १७६ ॥ महातपसेनमः ॥ १७७ ॥ पाशायनमः ॥ १७८ ॥ नित्यायनमः ॥ ॥ १७९ ॥ गिरिरुहायनमः ॥ १८० ॥ नभसेनमः ॥ १८१ ॥

सहस्रहस्तायनमः ॥ १८२ ॥ विजयायनमः ॥ १८३ ॥ व्यव सायनमः ॥ १८४ ॥ अतन्द्रितायनमः ॥ १८५ ॥ अधर्षणा यनमः ॥ १८६ ॥ धर्षणात्मनेनमः ॥ १८७ ॥ यज्ञघ्नेनमः ॥ ॥ १८८ ॥ कामनाशकायनमः ॥ १८९ ॥ दक्षयागापहारिणे नमः ॥ १९० ॥ सुसहायनमः ॥ १९१ ॥ मध्यमायनमः ॥ ॥ १९२ ॥ तेजोपहारिणेनमः ॥ १९३ ॥ बलघ्नेनमः ॥ १९४॥ मुदितायनमः ॥ १९५ ॥ अर्त्थायनमः ॥ १९६ ॥ अजितायन मः ॥ १९७ ॥ अवरायनमः ॥ १९८ ॥ गम्भीरायनमः ॥ ॥ १९९ ॥ गभीरायनमः ॥ २०० ॥ गम्भीरबलवाहनायनमः ॥ २०१ ॥ न्यग्रोधरूपायनमः ॥ २०२ ॥ न्यग्रोधायनमः ॥ ॥२०३॥ वृक्षकर्ण्णस्थितयेनमः ॥ २०४॥विभवेनमः॥२०५॥ सुतीक्ष्णदशनायनमः ॥ २०६ ॥ महाननायनमः ॥ २०७ ॥ महाननायनमः ॥ २०८ ॥ विष्वक्सेनायनमः ॥२०९॥ हरये नमः ॥ २१० ॥यज्ञायनमः ॥२११॥ सँय्युगापीडवाहनायनमः ॥ २१२ ॥ तीक्ष्णतापायनमः ॥ २१३ ॥ हर्य्यश्वायनमः ॥ ॥ २१४ ॥ सहायनमः ॥ २१५ ॥ कर्म्मकालविदेनमः ॥२१६॥ विष्णुप्रसादितायनमः ॥ २१७ ॥ यज्ञायनमः ॥ २१८ ॥ समु द्रायनमः ॥ २१९ ॥ वडवामुखायनमः ॥ २२० ॥ हुताशनस हायनमः ॥ २२१ ॥ प्रशान्तात्मनेनमः ॥ २२२ ॥ हुताशना यनमः ॥ २२३ ॥ उग्रतेजसेनमः ॥ २२४ ॥ महातेजसेनमः ॥ ॥ २२५ ॥ जन्यायनमः ॥ २२६ ॥ विजयकालविदेनमः ॥ ॥ २२७ ॥ ज्योतिषामयनायनमः ॥ २२८ ॥ सिद्धयेनमः ॥ ॥ २२९॥ सर्व्वविग्रहायनमः ॥ २३० ॥ शिखिनेनमः ॥२३१॥ मुण्डिनेनमः ॥ २३२ ॥ जटिनेनमः ॥ २३३ ॥ ज्वालिनेनमः ॥२३४ ॥ मूर्द्धगायनमः ॥ २३५ ॥ बलिनेनमः ॥ २३६ ॥

वेणाविनेनमः ॥ २२८ ॥ पणविनेनमः ॥ २३९ ॥ तालिनेन
मः ॥ ५४० ॥ खलिनेनमः ॥ २४१ ॥ कालकटङ्कायनमः
॥ २४२ ॥ नक्षत्रविग्रहमतयेनमः ॥ २४३ ॥ गुणबुद्धयेनमः ॥
॥ २४४ ॥ लयायनमः ॥ २४५ ॥ अगमायनमः ॥ ५४६ ॥
प्रजापतयेनमः ॥ २४७ ॥ विश्वबाहवेनमः ॥ २४८ ॥ विभा
गायनमः ॥ २४९ ॥ सर्व्वगायनमः ॥ २५० ॥ अमुखायनमः
॥ ३५१ ॥ विमोचनायनमः २५२ ॥ सुसरणायनमः ॥
॥ २५३ ॥ हिरण्यकवचोद्भवायनमः २५४ ॥ मेढ्रजायनमः
॥ २५५ ॥ बलचारिणेनमः ॥ २५६ ॥ महीचारिणेनमः ॥ २५७॥
स्रुतायनमः ॥ २५८ ॥ सर्व्वतूर्य्यनिनादिनेनमः ॥ २५९ ॥ सर्व्व
तोद्यपरिग्रहायनमः ॥ २६० ॥ व्यालरूपायनमः ॥ २६१ ॥
गुहावासिनेनमः ॥ २६२ ॥ गुहायनमः ॥ २६३ ॥ मालिनेनमः॥
॥ २६४ ॥ तरङ्गविदेनमः ॥ २६५ ॥ त्रिदशायनमः ॥ २६६ ॥
त्रिकालधृषेनमः ॥ २६७ ॥ कर्म्मसर्व्वबन्धविमोचनायनमः ॥
॥ २६८ ॥ असुरेन्द्राणाम्बन्धनायनमः ॥ २६९ ॥ युधिशत्रुवि
नाशिनेनमः ॥ २७० ॥ साङ्ख्यप्रसादायनमः ॥ २७१ ॥ दुर्व्वा
ससेनमः ॥॥२७२ ॥ सर्व्वसाधुनिषेवितायनमः ॥ २७३ ॥ प्रस्क
न्दनायनमः॥ २७४ ॥ विभागज्ञायनमः ॥ २७५ ॥ अतुल्या
यनमः ॥ २७६ ॥ यज्ञभागविदेनमः ॥ २७७ ॥ सर्व्वचारिणेन
मः ॥ २७८ ॥ सर्व्ववासायनमः ॥ २७९ ॥ दुर्व्वाससेनमः ॥
॥ २८० ॥ वासवायनमः ॥ २८१ ॥ अमरायनमः ॥ २८२ ॥
हैमायनमः ॥ २८३ ॥ हेमकरायनमः ॥ २८४ ॥ अयज्ञसर्व्वधा
रिणेनमः २८५ ॥ धरोत्तमायनमः ॥ २८६ ॥ लोहिताक्षाय
नमः ॥ २८७ ॥ महाक्षायनमः ॥ २८८ ॥ विजयाक्षायनमः ॥
॥ २८९ ॥ विशारदायनमः ॥ २९० ॥ सर्व्वकामदायनमः ॥

॥ २९१ ॥ सर्व्वकालप्रसादायनमः ॥ २९२ ॥ सुबलायनमः ॥
॥ २९३ ॥ बलरूपधृषेनमः ॥ २९४ ॥ सङ्ग्रहायनमः ॥२९५॥
निग्रहायनमः ॥ २९६ ॥ कर्त्रेनमः ॥ २९७ ॥ सर्प्पचीरनिवा
सायनमः ॥ २९८ ॥ मुख्यायनमः ॥ २९९ ॥ अमुख्यायनमः
॥ ३०० ॥ देहायनमः ॥ ३०१ ॥ काहलयेनमः ॥ ३०२ ॥ स
र्व्वकामवरायनमः ॥ ३०३ ॥ सर्व्वदायनमः ॥ ३०४ ॥ सर्व्वतो
मुखायनमः ॥ ३०५ ॥ आकाशनिर्व्विरूपायनमः ॥ ३०६ ॥
निपातिनेनमः ॥ ३०७ ॥ अवशायनमः ॥ ३०८ ॥ खगाय
नमः ॥ ३०९ ॥ रौद्ररूपायनमः ॥ ३१० ॥ अंशवेनमः ॥
॥ ३११ ॥ आदित्यायनमः ॥ ३१२ ॥ बहुरश्मयेनमः ॥
॥ ३१३ ॥ सुवर्च्चस्विनेनमः ॥ ३१४ ॥ वसुवेगायनमः ॥
॥ ३१५ ॥ महावेगायनमः ॥ ३१६ ॥ मनोवेगायनमः ॥
॥ ३१७ ॥ निशाचरायनमः ॥ ३१८ ॥ सर्व्ववासिनेनमः ॥
॥ ३१९ ॥ श्रियावासिनेनमः ॥ ३२० ॥ उपदेशकरायनमः ॥
॥ ३२१ ॥ अकारायनमः ॥ ३२२ ॥ मुनयेनमः ॥ ३२३ ॥
आत्मनिरालोकायनमः ॥ ३२४ ॥ सम्भग्नायनमः ॥ ३२५ ॥
सहस्रदायनमः ॥ ३२६ ॥ पक्षिणेनमः ॥ ३२७ ॥ पक्षरूपा
यनमः ॥ ३२८ ॥ अतिदीप्तायनमः ॥ ३२९ ॥ विशाम्पतये
नमः ॥ ३३० ॥ उन्मादायनमः ॥ ३३१ ॥ मदनायनमः ॥ ३३२॥
कामायनमः ॥ ३३३ ॥ अश्वत्थायनमः ॥३३४॥ अर्त्थकरायनमः
॥ ३३५ ॥ यशसेनमः ॥ ३३६ ॥ वामदेवायनमः ॥ ३३७ ॥
वामायनमः ॥ ३३८ ॥ प्राचेनमः ॥ ३३९ ॥ दक्षिणायनमः
॥ ३४० ॥ वामनायनमः ॥ ३४१ ॥ सिद्धयोगिनेनमः ॥ ३४२ ॥
महर्ष्षयेनमः ॥३४३॥ सिद्धार्त्थायनमः॥३४४॥ सिद्धसाधकायन
मः ॥ ३४५ ॥ भिक्षवेनमः ॥ ३४६ ॥ भिक्षुरूपायनमः ॥

॥ ३४७ ॥ विपणायनमः ॥ ३४८ ॥ मृदवेनमः ॥ ३४९ ॥ अव्ययायनमः ॥ ३५० ॥ महासेनायनमः ॥ ३५१ ॥ विशाखायनमः ॥ ३५२ ॥ षष्टिभागायनमः ॥ ३५३ ॥ गवाम्पतयेनमः ॥ ३५४ ॥ वज्रहस्तायनमः ॥ ३५५ ॥ विष्कम्भिनेनमः ॥ ३५६ ॥ चमूस्तम्भनायनमः ॥ ३५७ ॥ वृत्तावृत्तकरायनमः ॥ ३५८ ॥ तालायनमः ॥ ३५९ ॥ मधवेनमः ॥ ३६० ॥ मधुकलोचनायनमः ॥ ३६१ ॥ वाचस्पत्यायनमः ॥ ३६२ ॥ वाजसनायनमः ॥ ३६३ ॥ आश्रमपूजितायनमः ॥ ३६४ ॥ ब्रह्मचारिणेनमः ॥ ३६५ ॥ लोकचारिणेनमः ॥ ३६६ ॥ सर्वचारिणेनमः ॥ ३६७ ॥ विचारविदेनमः ॥ ३६८ ॥ ईशानायनमः ॥ ३६९ ॥ ईश्वरायनमः ॥ ३७० ॥ कालायनमः ॥ ॥ ३७१ ॥ निशाचारिणेनमः ॥ ३७२ ॥ पिनाकधृषेनमः ॥ ॥ ३७३ ॥ निमित्तस्थायनमः ॥ ३७४ ॥ निमित्तायनमः ॥ ॥ ३७५ ॥ नन्दयेनमः ॥ ३७६ ॥ नन्दिकरायनमः ॥ ॥ ३७७ ॥ हरयेनमः ॥ ३७८ ॥ नन्दीश्वरायनमः ॥ ३७९ ॥ नन्दिनेनमः ॥ ३८० ॥ नन्दनायनमः ॥ ३८१ ॥ नन्दिवर्द्धनायनमः ॥ ३८२ ॥ भगहारिणेनमः ॥ ३८३ ॥ निहन्त्रेनमः ॥ ॥ ३८४ ॥ कालायनमः ॥ ३८५ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ ३८६ ॥ पितामहायनमः ॥ ३८७ ॥ चतुर्म्मुखायनमः ॥ ३८८ ॥ महालिङ्गायनमः ॥ ३८९ ॥ चारुलिङ्गायनमः ॥ ३९० लिङ्गाध्यक्षायनमः ॥ ३९१ ॥ सुराध्यक्षायनमः ॥ ३९२ ॥ योगाध्यक्षायनमः ॥ ३९३ ॥ युगावहायनमः ॥ ३९४ ॥ बीजाध्यक्षायनमः ॥ ३९५ ॥ बीजकर्त्रेनमः ॥ ३९६ ॥ अध्यात्मानुगतायनमः ॥ ३९७ ॥ बलायनमः ॥ ३९८ ॥ इतिहासायनमः ॥ ॥ ३९९ ॥ सङ्कल्पायनमः ॥ ४०० ॥ गौतमायनमः ॥ ४०१॥

निशाकरायनमः ॥४०२॥ दम्भायनमः॥४०३॥ अदम्भायनमः ॥ ४०४ ॥ वैदम्भायनमः ॥ ४०५ ॥ वश्यायनमः ॥ ४०६ ॥ वशंकरायनमः ॥ ४०७ ॥ कलयेनमः ॥ ४०८ ॥ लोककर्त्रेनमः ॥ ४०९ ॥ पशुपतयेनमः ॥ ४१० ॥ महाकर्त्रेनमः ॥ ॥ ४११ ॥ अनौषधायनमः ॥ ४१२ ॥ अक्षरायनमः ॥ ४१३॥ परब्रह्मणेनमः ॥ ४१४ ॥ बलवतेनमः ॥ ४१५ ॥ शक्रायनमः ॥ ४१६ ॥ नीतयेनमः ॥ ४१७ ॥ अनीतयेनमः ॥ ४१८ ॥ शुद्धात्मनेनमः ॥४१९॥ मान्यायनमः ॥४२०॥ शुद्धायनमः ॥ ॥ ४२१ ॥ गतागतायनमः ॥ ४२२ ॥ बहुप्रसादायनमः ॥ ॥ ४२३ ॥ सुस्वप्नायनमः ॥ ४२४ ॥ दर्प्पणायनमः ॥ ४२५ ॥ अमित्रजितेनमः ॥ ४२६ ॥ वेदकारायनमः ॥ ४२७ ॥ मन्त्रकारायनमः ॥ ४२८ ॥ विदुषेनमः ॥४२९॥ समरमर्द्दनायनमः ॥ ४३० ॥ महामेघनिवासिनेनमः ॥ ४३१ ॥ महाघोरायनमः ॥ ४३२ ॥ वशिनेनमः ॥ ४३३ ॥ करायनमः ॥ ४३४॥ अग्निज्वालायनमः ॥ ४३५ ॥ महाज्वालायनमः ॥ ३३६ ॥ अतिधूम्रायनमः ॥ ४३७ ॥ हुतायनमः ॥ ४३८ ॥ हविषेनमः ॥ ४३९ ॥ वृषणायनमः ४४० ॥ शङ्करायनमः ॥ ४४१ ॥ वर्च्चस्विनेनमः ॥ ४४२ ॥ धूमकेतनायनमः ॥ ४४३ ॥ नीलायनमः ॥ ४४४ ॥ अङ्गलुब्धायनमः ॥ ४४५ ॥ शोभनायनमः ॥ ४४६ ॥ निरवग्रहायनमः ॥ ४४७ ॥ स्वस्तिदायनमः ॥ ४४८ ॥ स्वस्तिभावायनमः ॥ ४४९ ॥ भागिनेनमः ॥ ॥ ४५० ॥ भागकरायनमः ॥ ४५१ ॥ लघवेनमः ॥ ४५२ ॥ उत्सङ्गायनमः ॥ ४५३ ॥ महाङ्गायनमः ॥ ४५४ ॥ महागर्भपरायणायनमः ॥ ४५५ ॥ कृष्णवर्णायनमः ॥ ४५६ ॥ सुवर्णायनमः ॥ ४५७ ॥ सर्व्वदेहिनामिन्द्रियायनमः ॥ ४५८ ॥

महापादायनमः ॥ ४५९ ॥ महाहस्तायनमः ॥ ४६० ॥ महाकायायनमः ॥ ४६१ ॥ महायशसेनमः ॥ ४६२ ॥ महामूर्द्धेनमः ॥ ४६३ ॥ महामात्रायनमः ॥ ४६४ ॥ महानेत्रायनमः ॥ ४६५ ॥ निशालयायनमः ॥ ४६६ ॥ महान्तकायनमः ॥ ४६७ ॥ महाकर्ण्णायनमः ॥ ४६८ ॥ महोष्ठायनमः॥४६९॥ महाहनवेनमः ॥ ४७० ॥ महानासायनमः ॥ ४७१ ॥ महाकम्बवेनमः ॥ ४७२ ॥ महाग्रीवायनमः ॥ ४७३ ॥ श्मशानभाजेनमः ॥ ४७४ ॥ महावक्षसेनमः ॥ ४७५ ॥ महोरस्कायनमः ॥ ४७६ ॥ अन्तरात्मनेनमः ॥ ४७७ ॥ मृगालयायनमः ॥ ४७८ ॥ लम्बनायनमः ॥ ४७९ ॥ लम्बितोष्ठायनमः ॥ ॥ ४८० ॥ महामायायनमः ॥४८१॥ पयोनिधयेनमः ॥४८२॥ महादन्तायनमः ॥ ४८३ ॥ महादंष्ट्रायनमः ॥ ४८४ ॥ महाजिह्वायनमः ॥ ४८५ ॥ महामुखायनमः ॥ ४८६ ॥ महानखायनमः ॥ ४८७ ॥ महारोम्णेनमः ॥ ४८८ ॥ महाकेशायनमः ॥ ४८९ ॥ महाजटायनमः ॥ ४९० ॥ प्रसन्नायनमः ॥ ४९१ ॥ प्रसादायनमः ॥ ४९२ ॥ प्रत्ययायनमः ॥ ४९३ ॥ गिरिसाधनायनमः ॥ ४९४ ॥ स्नेहनायनमः ॥ ४९५ ॥ अस्नेहनायनमः ॥ ४९६ ॥ अजितायनमः ॥ ४९७ ॥ महामुनयेनमः ॥ ४९८ ॥ वृक्षाकारायनमः ॥ ४९९ ॥ वृक्षकेतवेनमः ॥ ५०० ॥ अनलायनमः ॥५०१॥ वायुवाहनायनमः॥५०२॥ मण्डलिनेनमः ॥ ५०३ ॥ मेरुधाम्नेनमः ॥ ५०४ ॥ दधिपतयेनमः ॥ ५०५ ॥ अथर्व्वशीर्षायनमः ॥ ५०६ ॥ सामास्यायनमः ॥ ५०७ ॥ ऋक्सहस्रामितेक्षणायनमः ॥ ५०८ ॥ यजुःपादभुजायनमः ॥ ५०९ ॥ गुह्यायनमः ॥ ५१० ॥ प्रकाशायनमः ॥ ५११ ॥ जङ्गमायनमः ॥ ५१२ ॥ अमोघार्त्थायन

मः ॥ ५१३ ॥ प्रसादायनमः ॥ ५१४ ॥ अभिगम्यायनमः ॥ ॥५१५॥ सुदर्श्शनायनमः ॥ ५१६ ॥ उपकारायनमः ॥५१७॥ प्रियायनमः ॥ ५१८ ॥ सर्व्वायनमः ॥ ५१९ ॥ कनकायनमः ॥ ५२० ॥ काञ्चनच्छवयेनमः ॥ ५२१ ॥ नाभयेनमः ॥ ॥ ५२२ ॥ नन्दिकरायनमः ॥ ५२३ ॥ भावायनमः ॥ ५२४ ॥ पुष्करस्थपतयेनमः ॥ ५२५ ॥ स्थिरायनमः ॥५२६॥ द्वादशायनमः ॥ ५२७ ॥ त्रासनायनमः ॥ ५२८ ॥ आद्यायनमः ॥ ५२९ ॥ यज्ञायनमः ॥ ५३० ॥ यज्ञसमाहितायनमः ॥ ॥ ५३१ ॥ नक्तायनमः ॥ ५३२ ॥ कलयेनमः ॥ ५३३ ॥ कालायनमः ॥ ५३४ ॥ मकरायनमः ॥ ५३५ ॥ कालपूजितायनमः ॥ ५३६ ॥ सगणायनमः ॥ ५३७ ॥ गणकरायनमः ॥ ॥ ५३८ ॥ भूतवाहनसारथयेनमः ॥ ५३९ ॥ भस्माशायनमः ॥ ५४० ॥ भस्मगोप्त्रेनमः ॥ ५४१ ॥ भस्मभूतायनमः ॥ ॥ ५४२ ॥ तरवेनमः ॥ ५४३ ॥ गणायनमः ॥ ५४४ ॥ लोकपालायनमः ॥ ५४५ ॥ अलोकायनमः ॥ ५४६ ॥ महात्मनेनमः ॥ ५४७ ॥ सर्व्वपूजितायनमः ॥ ५४८ ॥ शुक्लायनमः ॥ ५४९ ॥ त्रिशुक्लायनमः ॥५५०॥ सम्पन्नायनमः ॥ ५५१ ॥ शुचयेनमः ॥ ५५२ ॥ भूतनिषेवितायनमः ॥ ५५३ ॥ आश्रमस्थायनमः ॥५५४॥ क्रियावस्थायनमः ॥ ५५५ ॥ विश्वकर्म्ममतयेनमः ॥ ५५६ ॥ वरायनमः ॥ ५५७ ॥ विशालशाखायनमः ॥ ५५८ ॥ ताम्रोष्ठायनमः ॥ ५५९ ॥ अम्बुजायनमः ॥ ५६० ॥ सुनिश्चलायनमः ॥५६१॥कपिलायनमः ॥ ५६२ ॥ कपिशायनमः ॥ ५६३ ॥ शुक्लायनमः ॥ ५६४ ॥ आयुषेनमः ॥ ५६५ ॥ परायनमः ॥ ५६६ ॥ अपरायनमः ॥ ५६७ ॥ गन्धर्व्वायनमः ॥ ५६८ ॥ अदितयेनमः ॥ ५६९ ॥

तार्क्ष्यायनमः ॥ ५७० ॥ सुविज्ञेयायनमः ॥ ५७१ ॥ सुशारदायनमः ॥ ५७२ ॥ परश्ववधायुधायनमः ॥ ५७३ ॥ देवायनमः ॥ ५७४ ॥ अनुकारिणेनमः ॥ ५७५ ॥ सुबान्धवायनमः ॥ ५७६ ॥ तुम्बवीणायनमः ॥ ५७७ ॥ महाक्रोधायनमः ॥ ५७८ ॥ उर्द्धरेतसेनमः ॥ ५७९ ॥ जलेशयायनमः ॥ ५८० ॥ उग्रायनमः ॥ ५८१ ॥ वंशकरायनमः॥५८२॥ वंशायनमः ॥ ५८३ ॥ वंशनादायनमः ॥ ५८४ ॥ अनिन्दितायनमः ॥ ५८५ ॥ सर्व्वाङ्गरूपायनमः ॥ ५८६ ॥ मायाविनेनमः ॥ ५८७ ॥ सुहृदायनमः ॥ ५८८ ॥ अनिलायनमः॥५८९॥ अनलायनमः ॥ ५९० ॥ बन्धनायनमः ॥ ५९१ ॥ बन्धकर्त्रेनमः ॥ ५९२ ॥ सुबन्धनविमोचनायनमः ॥ ५९३ ॥ सयज्ञारयेनमः ॥ ५९४ ॥ सकामारयेनमः ॥ ५९५ ॥ महादंष्ट्रायनमः ॥५९६॥महायुधायनमः॥५९७॥बहुधानिन्दितायनमः॥५९८॥ शर्व्वायनमः ॥ ५९९ ॥ शङ्करायनमः ॥ ६०० ॥ शङ्करायनमः ॥ ६०१ ॥ अधनायनमः ॥ ६०२ ॥ अमरेशायनमः ॥ ६०३ ॥ महादेवायनमः ॥ ६०४ ॥ विश्वदेवायनमः ॥ ६०५ ॥ सुरारिघ्नेनमः ॥ ६०६ ॥ अहिर्बुध्न्यायनमः ॥ ६०७ ॥ अनिलाभायनमः ॥ ६०८ ॥ चेकितायनमः॥६०९॥हविषेनमः ॥६१०॥ अजैकपदेनमः ॥ ६११ ॥ कपालिनेनमः ॥ ६१२ ॥ त्रिशवेनमः ॥ ६१३ ॥ अजितायनमः ॥ ६१४ ॥ शिवायनमः॥६१५॥ धन्वन्तरयेनमः ॥ ६१६ ॥ धूमकेतवेनमः ॥ ६१७ ॥ स्कन्दायनमः ॥ ६१८ ॥ वैश्रवणायनमः ॥ ६१९ ॥ धात्रेनमः ॥ ६२०॥ शक्रायनमः ॥६२१ ॥ विष्णवेनमः॥६२२॥भिन्नायनमः॥६२३॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ६२४ ॥ ध्रुवायनमः ॥ ६२५ ॥ धरायनमः॥६२६॥ प्रभावायनमः ॥ ६२७ ॥ सर्व्वगवायनमः ॥ ६२८ ॥ अर्य्यम्णेन

मः ॥ ६२९ ॥ सवित्रेनमः ॥ ६३० ॥ रवयेनमः ॥ ६३१ ॥ उ
षङ्गवेनमः ॥ ६३२ ॥ विधात्रेनमः॥६३३॥मान्धात्रेनमः॥६३४॥
भूतभावनायनमः ॥ ६३५ ॥ विभवेनमः ॥ ६३६ ॥ वर्णविभा
विनेनमः ॥ ६३७ ॥ सर्व्वकामगुणावहायनमः ॥ ६३८ ॥ पद्म
नाभायनमः ॥ ६३९ ॥ महागर्भायनमः ॥ ६४० ॥ चन्द्रवक्त्रा
यनमः ॥ ६४१ ॥ अनिलायनमः॥६४२॥अनलायनमः॥६४३॥
वलवतेनमः ॥ ६४४ ॥ उपशान्तायनमः ॥ ६४५ ॥ पुराणा
यनमः ॥ ६४६ ॥ पुण्यचञ्चवेनमः ॥ ६४७ ॥ ईत्यैनमः॥६४८॥
कुरुकर्त्रेनमः ॥ ६४९ ॥ कुरुवासिनेनमः ॥ ६५० ॥ पुरुहूताय
नमः ॥ ६५१ ॥ गुणौषधायनमः ॥ ६५२ ॥ सर्व्वाशयायनमः
॥६५३॥दर्भचारिणेनमः॥६५४॥सर्व्वप्राणिपतयेनमः॥ ६५५ ॥
देवदेवायनमः ॥ ६५६ ॥ सुखासक्तायनमः ॥ ६५७ ॥ सदसते
नमः ॥ ६५८ ॥ सर्व्वरत्नविदेनमः ॥ ६५९ ॥ कैलासगिरिवासि
नेनमः ॥ ६६० ॥ हिमवद्गिरिसंश्रयायनमः ॥ ६६१ ॥ कूल
हारिणेनमः ॥ ६६२ ॥ कूलकर्त्रेनमः ॥ ६६३ ॥ वहुविद्यायनमः
॥ ६६४ ॥ वहुप्रदायनमः ॥ ६६५ ॥ वणिजायनमः ॥ ६६६ ॥
वर्द्धकिनेनमः ॥ ६६७ ॥ वृक्षायनमः ॥ ६६८ ॥ बकुलायनमः
॥ ६६९ ॥ चन्दनायनमः ॥ ६७० ॥ छन्दसेनमः ॥ ६७१ ॥
सारग्रीवायनमः ॥ ६७२ ॥ महाजत्रवेनमः ॥ ६७३ ॥ अलो
लायनमः ॥ ६७४ ॥ महौषधायनमः ॥ ६७५ ॥ सिद्धार्त्थका
रिणेनमः ॥ ६७६ ॥ छन्दोव्याकरणोत्तरसिद्धार्त्थायनमः ॥
॥ ६७७ ॥ सिंहनादायनमः ॥ ६७८ ॥ सिंहदंष्ट्रायनमः ॥
॥ ६७९ ॥ सिंहगायनमः ॥ ६८० ॥ सिंहवाहनायनमः ॥ ६८१ ॥
प्रभावात्मनेनमः ॥ ६८२ ॥ जगत्कालस्थानायनमः ॥ ६८३ ॥
लोकहितायनमः ॥ ६८४ ॥ तरवेनमः ॥ ६८५ सारङ्गायनमः ॥

॥ ६८६ ॥ नवचक्राङ्गायनमः ॥ ६८७ ॥ केतुमालिनेनमः ॥
॥ ६८८ ॥ सभायनायनमः ॥ ६८९ ॥ भूतालयायनमः ॥
॥ ६९० ॥ भूतपतयेनमः ॥ ६९१ ॥ अहोरात्रायनमः ॥
॥ ६९२ ॥ अनिन्दितायनमः ॥ ६९३ ॥ सर्व्वभूतवाहित्रेनमः ॥
॥ ६९४ ॥ सर्व्वभूतनिलयायनमः ॥ ६९५ ॥ विभवेनमः ॥
॥ ६९६ ॥ भवायनमः ॥ ६९७ ॥ अमोघायनमः ॥ ६९८ ॥
सँय्यतायनमः ॥ ६९९ ॥ अश्वायनमः ॥ ७०० ॥ भोजना
यनमः ॥ ७०१ ॥ प्राणधारणायनमः ॥ ७०२ ॥ धृतिमतेनमः
॥ ७०३ ॥ मतिमतेनमः ॥ ७०४ ॥ दक्षायनमः ॥ ७०५ ॥
सत्कृतायनमः ॥ ७०६ ॥ युगाधिपायनमः ॥ ७०७ ॥ गोपाल
येनमः ॥ ७०८ ॥ गोपतयेनमः ॥ ७०९ ॥ ग्रामायनमः ॥
॥ ७१० ॥ गोचर्म्मवसनायनमः ॥ ७११ ॥ हरयेनमः ॥ ७१२ ॥
हिरण्यबाहवेनमः ॥ ७१३ ॥ प्रवेशिनाङ्गुहापालायनमः ॥
॥ ७१४ ॥ प्रकृष्टारयेनमः ॥ ७१५ ॥ महाहर्षायनमः ॥ ७१६ ॥
जितकामायनमः ॥ ७१७ ॥ जितेन्द्रियायनमः ॥ ७१८ ॥
गान्धारायनमः ॥ ७१९ ॥ सुवासायनमः ॥ ७२० ॥ तपःस
क्तायनमः ॥ ७२१ ॥ रतयेनमः ॥ ७२२ ॥ नरायनमः ॥
॥ ७२३ ॥ महागीतायनमः ॥ ७२४ ॥ महानृत्यायनमः ॥
॥ ७२५ ॥ अप्सरोगणोसेवितायनमः ॥ ७२६ ॥ महाकेतवेनमः
॥ ७२७ ॥ महाधातवेनमः ॥ ७२८ ॥ नैकसानुचरायनमः ॥
॥ ७२९ ॥ चलायनमः ॥ ७३० ॥ आवेदनीयायनमः ॥
॥ ७३१ ॥ आदेशायनमः ॥ ७३२ ॥ सर्व्वगन्धसुखावहायनमः
॥ ७३३ ॥ तोरणायनमः ॥ ७३४ ॥ तारणायनमः ॥ ७३५ ॥
वातायनमः ॥ ७३६ ॥ परिधयेनमः ॥ ७३७ ॥ पतिखेचरा
यनमः ॥ ७३८ ॥ सँय्योगवर्द्धनायनमः ॥ ७३९ ॥ गुणाधिक

वृद्धायनमः ॥ ७४० ॥ अधिवृद्धायनमः ॥ ७४१ ॥ नित्यात्म सहायनमः ॥७४२ ॥ देवासुरपतयेनमः ॥ ७४३ ॥ पत्येनमः ॥ ७४४ ॥ युक्तायनमः ॥ ७४५ ॥ युक्तबाहवेनमः ॥ ७४६ ॥ दिविसुपर्व्वदेवायनमः ॥ ७४७ ॥ आषाढायनमः ॥ ७४८ ॥ सुषाढायनमः ७४९ ॥ ध्रुवायनमः ॥ ७५० ॥ हरणायनमः ॥ ॥ ७५१ ॥ हरायनमः ॥ ७५२ ॥ आवर्त्तमानवपुषेनमः ॥ ॥७५३ ॥वसुश्रेष्ठायनमः ॥ ७५४ ॥महापथायनमः ॥ ७५५ ॥ विमर्षशिरोहारिणेनमः ॥ ७५६ ॥ सर्व्वलक्षणलक्षितायनमः ॥ ॥ ७५७ ॥ अक्षरथयोगिनेनमः ॥ ७५८ ॥ सर्व्वयोगिनेनमः ॥ ॥ ७५९ ॥ महाबलायनमः ॥ ७६० ॥ समाम्नायायनमः ॥७६१॥ असाम्नायायनमः ॥ ७६२॥ तीर्थदेवायनमः ॥७६३॥ महारथा यनमः॥७६४॥ निर्जीवायनमः ॥७६५॥ जीवनायनमः॥७६६॥ मन्त्रायनमः ॥७६७ ॥ शुभाक्षायनमः ॥ ७६८ ॥ बहुकर्क्क शायनमः ॥७६९॥ रत्नप्रभूतायनमः ॥ ७७० ॥ रत्नाङ्गायनमः ॥ ७७१ ॥महार्णवनिपानविदेनमः ॥ ७७२ ॥ मूलायनमः ॥ ॥ ७७३ ॥ त्रिशूलायनमः ॥ ७७४ ॥ अमृतायनमः ॥ ७७५ ॥ व्यक्ताव्यक्तायनमः ॥ ७७६ ॥ तपोनिधयेनमः ॥ ७७७ ॥ आ रोहणायनमः ॥ ७७८ ॥ अधिरोधायनमः ॥ ७७९ ॥ शूलधा रिणेनमः ॥ ७८० ॥ महायशसेनमः ॥ ७८१ ॥ सेनाकल्पाय नमः ॥ ७८२ ॥ महाकल्पायनमः ॥ ७८३ ॥ योगायनमः ॥ ॥ ७८४ ॥ युगकरायनमः ॥ ७८५ ॥ हरयेनमः ॥ ७८६ ॥ युगरूपायनमः ॥ ७८७ ॥ महारूपायनमः ॥ ७८८ ॥ महागह नायनमः ॥ ७८९ ॥ वधायनमः ॥ ७९० ॥ न्यायनिर्व्वापणा यनमः ॥ ७९१ ॥ पादायनमः ॥ ७९२ ॥ पण्डितायनमः ॥ ॥ ७९३ ॥ अचलोपमायनमः ॥ ७९४ ॥ बहुमालायनमः ॥

॥ ७९५ ॥ महामालायनमः ॥ ७९६ ॥ शशिहरसुलोचनायन
मः ॥ ७९७ ॥ विस्तारलवणकूपायनमः ॥ ७९८ ॥ त्रियुगाय
नमः ॥ ७९९ ॥ सफलौदनायनमः ॥ ८०० ॥ त्रिनेत्रायनमः ॥
॥ ८०१ ॥ विषाणाङ्गायनमः ॥ ८०२ ॥ मणिविद्धायनमः ॥
॥ ८०३ ॥ जटाधरायनमः ॥ ८०४ ॥ बिन्दवेनमः ॥ ८०५ ॥
विसर्ग्गायनमः ॥ ८०६ ॥ सुमुखायनमः ॥ ८०७ ॥ शरायन
मः ॥ ८०८ ॥ सर्व्वायुधायनमः ॥ ८०९ ॥ सहायनमः ॥
॥ ८१० ॥ निवेदनायनमः ॥ ८११ ॥ सुखाजातायनमः ॥
॥ ८१२ ॥ सुगन्धारायनमः ॥ ८१३ ॥ यहाधनुषेनमः ॥
॥ ८१४ ॥ गन्धपालिभगवतेनमः ॥ ८१५ ॥ सर्व्वकर्म्मोत्थाना
यनमः ॥ ८१६ ॥ मन्थानबहुलबाहवेनमः ॥ ८१७ ॥ सकला
यनमः ॥ ८१८ ॥ सर्व्वलोचनायनमः ॥ ८१९ ॥ तलस्ताला
यनमः ॥ ८२० ॥ करस्थालिनेनमः ॥ ८२१ ॥ ऊर्द्धसंहन
नायनमः ॥ ८२२ ॥ महतेनमः ॥ ८२३ ॥ छत्रायनमः ॥
॥ ८२४ ॥ सुक्षत्रायनमः ॥ ८२५ ॥ विख्यातलोकायनमः ॥
॥ ८२६ ॥ सर्व्वाश्रयक्रमायनमः ॥ ८२७ ॥ मुण्डायनमः ॥
॥ ८२८ ॥ विश्वपायनमः ॥ ८२९ ॥ विकृतायनमः ॥ ८३० ॥
दण्डिनेनमः ॥ ८३१ ॥ कुण्डिनेनमः ॥ ८३२ ॥ विकुर्व्वाणाय
नमः ॥ ८३३ ॥ हर्य्यक्षायनमः ॥ ८३४ ॥ ककुभायनमः ॥
॥ ८३५ ॥ वज्रिणेनमः ॥ ८३६ ॥ शतजिह्वायनमः ॥ ८३७॥
सहस्रपदेनमः ॥ ८३८ ॥ सहस्रमूर्द्धेनमः ॥ ८३९ ॥ देवेन्द्राय
नमः ॥ ८४० ॥ सर्व्वदेवमयायनमः ॥ ८४१ ॥ गुरवेनमः ॥
॥ ८४२ ॥ सहस्रबाहवेनमः ८४३ ॥ सर्व्वाङ्गायनमः ॥
॥ ८४४ ॥ शरण्यायनमः ॥ ८४५ ॥ सर्व्वलोककृतेनमः ॥
॥ ८४६ ॥ पवित्रायनमः ॥ ८४७ ॥ त्रिककुन्मन्त्रायनमः ॥

॥ ८४८ ॥ कनिष्ठायनमः ८४९ ॥ कृष्णपिङ्गलायनमः ॥
॥ ८५० ॥ ब्रह्मदण्डविनिर्म्मात्रेनमः ॥ ८५१ ॥ शतघ्नी
पाशशक्तिमतेनमः ॥ ८५२ ॥ पद्मगर्भायनमः ॥ ८५३ ॥
महागर्भायनमः ॥ ८५४ ॥ ब्रह्मगर्भायनमः ८५५ ॥ ज
लजोद्भवायनः ॥ ८५६ ॥ गभस्तयेनमः ॥ ८५७ ॥ ब्रह्म
कृतेनमः ॥ ८५८ ॥ ब्रह्मिणेनमः ॥ ८५९ ॥ ब्रह्मविदेनमः ॥
॥ ८६० ॥ ब्राह्मणायनमः ॥ ८६१ ॥ गतयेनमः ॥ ८६२ ॥
अनन्तरूपायनमः ॥ ८६३ ॥ नैकात्मनेनमः ॥ ८६४ ॥ स्वय
म्भुवेतिग्मतेजसेनमः ॥ ८६५ ॥ ऊर्द्ध्वगात्मनेनमः ॥ ८६६ ॥
पशुपतयेनमः ॥ ८६७ ॥ घातरंहसेनमः ॥ ८६८ ॥ मनोज
वायनमः ॥ ८६९ ॥ चन्दनिनेनमः ॥ ८७० ॥ पद्मनालाग्रा
यनयः ॥ ८७१ ॥ सुरभ्युत्तारणायनमः ॥ ८७२ ॥ नरायनमः
॥ ८७३ ॥ कर्णिकारमहास्रग्विणेनमः ॥ ८७४ ॥ नीलमौलये
नमः ॥ ८७५ ॥ पिनाकधृषेनमः ॥ ८७६ ॥ उमापतयेनमः ॥
॥ ८७७ ॥ उमाकान्तायनमः ॥ ८७८ ॥ जान्हवीधृषेनमः ॥
॥ ८७९ ॥ उमाधवायनमः ॥ ८८० ॥ वरवराहायनमः ॥ ८८१ ॥
वरदायनमः ॥ ८८२ ॥ वरेण्यायनमः ॥ ८८३ ॥ सुमहास्वना
यनमः ८८४ ॥ महाप्रसादायनमः ॥ ८८५ ॥ दमनायनमः ॥
॥ ८८६ ॥ शत्रुघ्नेनमः ॥ ८८७ ॥ श्वेतपिङ्गलायनमः ॥ ८८८ ॥
पीतात्मनेनमः ॥ ८८९ ॥ परमात्मनेनमः ॥ ८९० ॥ प्रयतात्म
नेनमः ॥ ८९१ ॥ प्रधामधृषेनमः ॥ ८९२ ॥ सर्व्वपार्श्वमुखा
यनमः ॥ ८९३ ॥ त्र्यक्षायनमः ॥ ८९४ ॥ सर्व्वसाधारणवराय
नमः ॥ ८९५ ॥ चराचरात्मनेनमः ॥ ८९६ ॥ सूक्ष्मात्मनेनमः
॥ ८९७ ॥ अमृतगोवृषेश्वरायनमः ॥ ८९८ ॥ साध्यर्षयेनमः
॥ ८९९ ॥ आदित्यवसवेनमः ॥ ९०० ॥ विवस्वत्सवित्रमृता

यनमः ॥ ९०१ ॥ व्यासायनमः ॥ ९०२ ॥ सर्व्वसुसङ्क्षेपविस्त
रायनमः ॥ ९०३ ॥ पर्य्ययनरायनमः ॥ ९०४ ॥ ऋतवेनमः
॥ ९०५ ॥ सँव्वत्सरायनमः ॥ ९०६ ॥ मासायनमः ॥ ९०७॥
पक्षायनमः ॥ ९०८॥ सङ्ख्यासमापनायनमः ॥ ९०९ ॥ कला
यैनमः ॥ ९१० ॥ काष्ठायैनमः ॥ ९११ ॥ लवेभ्योनमः ॥
॥ ९१२ ॥ मात्राभ्योनमः ॥ ९१३ ॥ मुहूर्त्ताहःक्षपाभ्योनमः
॥ ९१४ ॥ क्षणेभ्योनमः ॥ ९१५ ॥ विश्वक्षेत्रायनमः ॥
॥ ९१६ ॥ प्रजाबीजायनमः ॥९१७॥ लिङ्गायनमः ॥ ९१८ ॥
आद्यनिर्ग्गमायनमः ॥९१९॥ सतेनमः ॥ ९२० ॥ असतेनमः
॥ ९२१ ॥ व्यक्तायनमः ॥ ९२२ ॥ अव्यक्तायनमः॥ ९२३॥
पित्रेनमः ॥ ९२४ ॥ मात्रेनमः ॥ ९२५ ॥ पितामहायनमः ॥
॥ ९२६ ॥ स्वर्ग्गद्वारायनमः ॥९२७॥ प्रजाद्वारायनमः ॥९२८
मोक्षद्वारायनमः ॥ ९२९ ॥ त्रिविष्टपायनमः ॥ ९३० ॥ निर्व्वा
णायनमः ॥ ९३१ ॥ ह्लादनायनमः ॥ ९३२ ॥ ब्रह्मलोकायन
मः ॥ ९३३ ॥ परागतयेनमः ॥ ९३४ ॥ देवासुरविनिर्म्मात्रेन
मः ॥ ९३५ ॥ देवासुरपरायणायनमः ॥ ९३६ ॥ देवासुरगुरवेन
मः ॥ ९३७ ॥ देवायनमः ॥ ९३८ ॥ देवासुरनमस्कृतायनमः
॥ ९३९ ॥ देवासुरमहामात्रायनमः ॥ ९४० ॥ देवासुरगणाश्र
यायनमः ॥ ९४१ ॥ देवासुरगणाध्यक्षायनः ॥ ९४२ ॥ देवासु
रगणाग्रण्येनमः॥९४३॥देवातिदेवायनमः॥९४४॥ देवर्षयेनमः
॥ ९४५ ॥ देवासुरवरप्रदायनमः ॥ ९४६ ॥ देवासुरेश्वरायन
मः ॥ ४४७ ॥ विश्वायनमः ॥ ९४८ ॥ देवासुरमहेश्वरायनमः
॥ ९४९ ॥ सर्व्वदेवमयायनमः ॥ ९५० ॥ अचिन्त्यायनमः ॥
॥ ९५१ ॥ देवात्मनेनमः ॥ ९५२ ॥ आत्मसम्भवायनमः ॥
॥ ९५३ ॥ उद्भिदेनमः ॥ ९५४ ॥ त्रिविक्रमायनमः ॥ ९५५ ॥

वैद्यायनमः ॥ ९५६ ॥ विरजायनमः ॥ ९५७ ॥ नीरजायनमः ॥ ९५८ ॥ अमरायनमः ॥ ९५९ ॥ ईड्यायनमः ॥ ९६० ॥ हस्तीश्वरायनमः ॥ ९६१ ॥ व्याघ्रायनमः ॥ ९६२ ॥ देव सिंहायनमः ॥ ९६३ ॥ नरर्षभायनमः ॥ ९६४ ॥ विबुधायनमः ॥ ९६५ ॥ अग्रवरायनमः ॥ ९६६ ॥ सूक्ष्मा यनमः ॥ ९६७ ॥ सर्व्वदेवायनमः ॥ ९६८ ॥ तपोमयायनमः ॥ ९६९ ॥ सुयुक्तायनमः ॥९७० ॥शोभनायनमः ॥ ९७१ ॥ वज्रिणेनमः ॥ ९७२ ॥ प्रासानाम्प्रभवायनमः ॥ ९७३ ॥ अ व्ययायनमः ॥ ९७४ ॥ गुहायनमः ॥ ९७५ ॥ कान्तायनमः ॥ ९७६ ॥ निजसर्ग्गायनमः ॥ ९७७ ॥ पवित्रायनमः ॥ ९७८ ॥ सर्व्वपावनायनमः ॥९७९॥ शृङ्गिणेनमः ॥ ९८०॥ शृङ्गप्रियायनमः ॥ ९८१ ॥ बभ्रवेनमः ॥ ९८२ ॥ राजराजा यनमः ९८३ ॥ निरामयायनमः ॥ ९८४ ॥ अभिरामाय नमः ॥९८५ ॥ सुरगणायनमः ॥ ९८६ ॥ विरामायनमः ॥ ॥ ९८७ ॥ सर्व्वसाधनायनमः ॥९८८॥ ललाटाक्षायनमः ॥ ॥ ९८९ ॥ विश्वेदेवायनमः ॥ ९९० ॥ हरिणायनमः ॥ ९९१॥ ब्रह्मवर्च्चसायनमः ॥ ९९२ ॥ स्थावरपतयेनमः ॥ ९९३ ॥ नि यमेन्द्रियवर्द्धनायनमः ॥ ९९४ ॥ सिद्धार्त्थायनमः ॥ ९९५ ॥ सिद्धभूतार्त्थायनमः ॥ ९९६ ॥ अचिन्त्यायनमः ॥ ९९७ ॥ स त्यव्रतायनमः ॥ ९९८ ॥ शुचयेनमः ॥ ९९९ ॥ व्रताधिपा यनमः ॥ १००० ॥ परायनमः ॥ १ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ २ ॥ भक्तानाम्परमागतयेनमः ॥ ३ ॥ विमुक्तायनमः ॥ ५ ॥ मुक्तते जसेनमः ॥ ५ ॥ श्रीमतेनमः ॥ ६ ॥ श्रीवर्द्धनायनमः ॥ ७ ॥ जगतेनमः ॥ ८ ॥ इतिश्रीमन्महाभारतेशान्तिपर्व्वणिदानधर्म्मे सप्तदशाध्यायेशिवसहस्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥ १७ ॥ श्री साम्बसदाशिवार्प्पणमस्तु ॥

॥ अथाग्घ्र्यप्रदानम् ॥

अद्यपूर्व्वोच्चरितएवङ्गुणविशेषणविशिष्टायाम्पुण्यतिथौममात्मनः पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्त्थंपूजासाङ्गतासिद्ध्यर्त्थमग्घ्र्यप्रदानङ्करिष्ये ॥ शिवरात्र्यग्घ्र्याणि ॥ नमः शिवायशर्व्वायसर्व्वपापहरायच ॥ शिवरात्रौमहापुण्यङ्गृहाणाग्घ्र्यन्नमोऽस्तुते ॥ शिवाय० इदम० ॥ १ ॥ व्योमकेशनमस्तुभ्यँव्व्योमात्मन् व्योमरूपिणे॥नक्षत्ररूपिणेतुभ्यन्तारकाग्घ्र्यन्नमोस्तुते॥तारकायनमः इदम०॥२॥ आकाशदिक्शरीरायग्रहनक्षत्रमालिने॥ सुरसिद्धनिवासायदत्तमग्घ्र्यंसदाशिव ॥ सदा० इदम० ॥ ३ ॥ अथसोमवाराग्घ्र्याणि ॥ सोमवारव्रतङ्कर्त्तुंऽकल्याणम्ममसर्वदा ॥ प्रसीदपार्व्वतीनाथसायुज्यन्देहिमेप्रभो ॥ भवानीशङ्करायनमः ॥इदम० ॥ नक्तेनसोमवारेणसोमनाथजगत्पते ॥ अनेककोटिसौभाग्यमनन्तंकुरुशङ्कर॥ शङ्कराय० इदम० ॥ २ ॥ आकाशदिक्शरीरायग्रहनक्षत्रमालिने ॥ सर्व्वसिद्धिनिवासाय दत्तमग्घ्र्यन्नमोऽस्तुते ॥ सदाशिवा० इदम० ॥ ३ ॥ अनेनाग्घ्र्यप्रदानेनभगवान् श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रऽप्रीयताम् ॥ इत्यग्घ्र्यप्रदानम् ॥

॥ अथ महिमस्तोत्रम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ महिम्नऽपारन्तेपरमविदुषोयद्यसदृशीस्तुतिर्ब्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयिगिरः ॥ अथावाच्यः सर्व्वःस्वमितिपरिणामावधि गृणन्ममाप्येषस्तोत्रेहरनिरपवादऽपरिकरः ॥ १ ॥ अतीतऽपन्थानन्तव च महिमावाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्यायञ्चकितमभिधत्तेश्रुतिरपि ॥ सकस्यस्तोतव्यऽकतिविधगुणऽकस्यविषयऽपदे त्वर्व्वाचीनेपततिनमनऽ कस्यनवचः ॥ २ ॥ मधुस्फीतावाचऽ परमममृतन्निर्म्मितवतस्तव ब्रह्म

न्किँव्वागपिसुरगुरोर्व्विस्मयपदम् ॥ ममत्वेताँव्वाणीङ्गुणकथन पुण्येन भवतः पुनामीत्यत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथनबुद्धिर्व्व्यवसिता ॥ ॥ ३ ॥ तवैश्वर्य्यंयँत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्त्रयीवस्तु व्यस्त न्तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ॥ अभव्यानामस्मिन्वरदरमणीयामर मर्णान्निहन्तु व्याक्रोशीव्विँदधतइहैकेजडधियः ॥ ४ ॥ किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनङ्किमाधारो धातासृजति कि मुपादानइतिच ॥ अतर्क्यैश्वर्य्येत्वय्यनवसरदुःस्थोहतधियःकु तर्कोऽयङ्कांश्चिन्मुखरयतिमोहायजगतः ॥ ५ ॥ अजन्मानोलो काः किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारङ्किं म्भवविधिरनादृ त्य भवति ॥ अनीशोवाकुर्य्याद्भुवनजननेकःपरिकरोयतोमन्दा स्त्वाम्प्रत्यमरवरसंशेरतइमे ॥ ६ ॥ त्रयीसाङ्ख्यय्येँागःपशुपति मतँव्वैष्णवमितिप्रभिन्नेप्रस्थानेपरमिदमदःपथ्यमितिच ॥ रुची नाँव्वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषान्नृणामेकोगम्यस्त्वमसिपय सामर्णवइव ॥७॥ महोक्षःखट्वाङ्गम्परशुरजिनम्भस्मफणिनःक पालञ्चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ॥ सुरास्तान्तामृद्धिन्दध तितुभवद्भ्रूप्रणिहितान्नहिस्वात्मारामँव्विषयमृगतृष्णाभ्रमयति ॥ ८ ॥ ध्रुवङ्कश्चित्सर्व्वंसकलमपरस्त्वध्रुवमिदम्परोध्रौव्याध्रौव्ये जगतिगदतिव्यस्तविषये ॥ समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथनतैर्व्वि स्मितइवस्तुवञ्जिह्रेमित्वान्नखलुननुधृष्टामुखरता ॥ ९ ॥ तवै श्वर्य्यय्यँत्नाद्यदुपरिविरिञ्चोहरिरधःपरिच्छेत्तुं यातावनलमनल स्कन्धवपुषः ॥ ततोभक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्याङ्गिरिशयत्स्व यन्तस्थेताभ्यान्तवकिमनुवृत्तिर्न्नफलति ॥ १० ॥ अयत्नादापा द्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरन्दशास्योयद्बाहूनभृतरणकण्डूपरवशा न् ॥ शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भ क्तेस्त्रिपुरहरविस्फूर्ज्जितमिदम् ॥ ११ ॥ अमुष्यत्वत्सेवासमधि

गतसारम्भुजवनम्बलात्कैलासेपित्वदाधिवसतौविक्रमयतः ॥ अ
लभ्यापातालेऽ प्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुव
मुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥ यदृद्धिंसुत्राम्णोवरदपरमोच्चैर
पिसतीमधश्चक्रे बाणःपरिजनविधेयात्रिभुवनः ॥ नतच्चित्रन्तस्मि
न्वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न्न कस्याप्युन्नत्यैभवतिशिरसस्त्वय्य
वनतिः ॥ १३ ॥ अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपाविधेय
स्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषंसंहृतवतः ॥ सकलमाषःकण्ठेतव न
कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपिश्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः
॥ १४ ॥ असिद्धार्थानैवक्कचिदपिसदेवासुरनरे निवर्त्तन्ते नित्य
ञ्जगतिजयिनोयस्यविशिखाः ॥ सपश्यन्नीशत्वामितरसुरसाधा
रणमभूत्स्मरः स्मर्त्तव्यात्मा नहिवशिषुपथ्यःपरिभवः ॥ १५ ॥
मही पादाघाताद्व्रजति सहसासंशयपदम्पदंविष्णोर्भ्राम्यद्भुज
परिघरुग्णग्रहगणम् ॥ मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यँय्यात्यनिभृतजटाताडि
ततटा जगद्रक्षायै त्वन्नटसि ननु वामैवविभुता ॥ १६ ॥ विय
द्व्यापीतारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहोवाराँय्यःपृषतलघुदृ
ष्टःशिरसिते ॥ जगद्वीपाकारञ्जलधिवलयन्तेनकृतमित्यनेनैवोन्ने
यन्धृतमहिमदिव्यन्तववपुः॥१७॥रथःक्षोणीयन्ता शतधृतिरगे
न्द्रोधनुरथो रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणेः शरइति॥दिधक्षो
स्तेकोयन्त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्व्विधेयैः क्रीडन्त्यो नखलु प
रतन्त्राःप्रभुधियः॥१८॥हरिस्ते साहस्रङ्कमलबलिमाधाय पदयो
र्य्यदेकोनेतास्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ॥ गतोभक्त्युद्रेकःपरिण
तिमसौचक्रवपुषात्रयाणां रक्षायैत्रिपुरहरजागर्त्ति जगताम्॥१९॥
क्रतौसुप्तेजाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमताङ्क्क कर्म्मप्रध्वस्तम्फल
तिपुरुषाराधनमृते ॥ अतस्त्वांसम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रातिभु
वम्।श्रुतौश्रद्धाम्बद्ध्वा दृढपरिकरःकर्म्मसुजनः ॥२०॥क्रियादक्षो

दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्त्विज्यंशरणद सदस्याः सुरगणाः ॥ क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवङ्कर्त्तुः श्रद्धाविधुरमभिचारायहिमखाः ॥ २१ ॥ प्रजानाथन्नाथ प्रसभम भिकंस्वान्दुहितरङ्गतंरोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्यवपुषा ॥ धनु ष्पाणेर्य्यातन्दिवमपिसपत्राकृतममुन्त्रसन्तन्तेऽद्यापित्यजतिन मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥ स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नायतृणव त्पुरः प्लुष्टन्दृष्ट्वापुरमथनपुष्पायुधमपि ॥ यदिस्त्रैणन्देवीयमनिरतदे हार्द्धघटनादवैति त्वामद्धावत वरदमुग्धायुवतयः ॥ २३ ॥ श्म शानेष्वाक्रीडास्मरहरपिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपःस्रगपि नृकरोटीपरिकरः ॥ अमङ्गल्यंशीलन्तवभवतुनामैवमखिलन्तथा पिस्मर्तॄणाँव्वरदपरमम्मङ्गलमसि ॥ २४ ॥ मनः प्रत्यक्चित्तेसविध मवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ॥ यदालोक्याह्लादं ह्रदइवनिमज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वङ्किम पियमिनस्तत्किलभवान् ॥ २५ ॥ त्वमर्कस्त्वंसोमस्त्वमसिपवन स्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वँव्योमत्वमुधरणिरात्मात्वमितिच ॥ प रिच्छिन्नामेवन्त्वयिपरिणताबिभ्रतिगिरन्नविद्मस्तत्तत्त्वँव्वयमिह तुयत्त्वन्नभवसि ॥ २६ ॥ त्रयीन्तिस्रोवृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकाराद्यैर्व्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्ण्णविकृति ॥ तुरीयन्तेधाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः समस्तंव्यस्तन्त्वांशरणदगृणात्योमि तिपदम् ॥ २७ ॥ भवःशर्व्वोरुद्रः पशुपतिरथोग्रःसहमहाँस्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ॥ अमुष्मिन्प्रत्येकम्प्रविच रतिदेवश्रुतिरपि प्रियायास्मैधाम्ने प्रणिहितनमस्योस्मिभवते ॥ ॥ २८ ॥ नमोनेदिष्ठायप्रियदवदविष्ठायचनमो नमः क्षोदिष्ठा य स्मरहर महिष्ठाय च नमः ॥ नमोवर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठा यचनमोनमःसर्व्वस्मैतेतादिदमितिसर्व्वायचनमः ॥ २९ ॥ बहलरज

सेविश्वोत्पत्तौभवायनमोनमःप्रबलतमसेतत्संहारेहरायनमोन
मः॥ जनसुखकृतेसत्वोद्रिक्तौ मृडायनमोनमःप्रमहसि पदेनिस्त्रैगु
ण्येशिवायनमोनमः ॥ ३० ॥ कृशपरिणतिचेतःक्लेशवश्यन्क्क
चेदं क्कचतवगुणसीमोलङ्घिनीशश्वदृद्धिः ॥ इतिचकितमम
न्दीकृत्यमाम्भक्तिराधाद्वरदचरणयोस्तेवाक्यपुष्पोपहारम्॥३१॥
असितगिरिसमं स्यात्कज्जलंसिन्धुपात्रेसुरतरुवरशाखा लेखनीप
त्रमुर्व्वी॥ लिखतियदिगृहीत्वा शारदासर्व्वकालन्तदपि तव गुणा
नामीशपारन्नयाति ॥ ३२ ॥ असुरसुरमुनीन्द्रैरर्च्चितस्येन्दुमौले
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्ग्गुणस्येश्वरस्य ॥ सकलगणवरिष्ठःपुष्प
दन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥ अह
रहरनवद्यन्धूर्ज्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तःपु
मान्यः ॥ सभवतिशिवलोकेरुद्रतुल्यस्तथात्रप्रचुरतरधनायुःपु
त्रवान्कीर्तिमांश्च ॥३४॥ महेशान्नापरोदेवोमहिम्नोनापरास्तुतिः॥
अघोरान्नापरोमन्त्रोनास्तितत्त्वङ्गुरोःपरम् ॥३५॥दीक्षादानन्तप
स्तीर्थंज्ञानँय्यागादिकाः क्रियाः॥ महिम्नःस्तवपाठस्यकलान्ना
र्हन्तिषोडशीम् ॥३६ ॥ आसमाप्तमिदं स्तोत्रंसर्व्वमीश्वरवर्ण्णन
म्॥अनुपमम्परनोहारिपुण्यङ्गन्धर्व्वभाषितम्॥३७॥कुसुमदशन
नामासर्व्वगन्धर्व्वराजः शशधरवरमौलेर्द्देवदेवस्य दासः ॥ सखलु
निजमहिम्नोभ्रष्ट एवास्यरोषात्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्य
म्महिम्नः ॥३७॥ सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्ग्गमोक्षैकहेतुम्पठति यदि
मनुष्यःप्राञ्जलिर्न्नान्यचेताः॥ व्रजतिशिवसमीपङ्किन्नरैः स्तूयमा
नः स्तवनमिदममोघम्पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३९॥ श्रीपुष्पदन्तमु
खपङ्कजनिर्ग्गतेनस्तोत्रेण किल्बिषहरेणहरप्रियेण ॥ कण्ठस्थि
तेनपठितेनसमाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्म्महेशः॥४०॥
इतिश्रीपुष्पदन्तविरचितं शिवमहिमाख्यस्तोत्रंसम्पूर्ण्णम् ॥

अथरावणकृतशिवस्तोत्रम् ॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि ॥ धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिःप्रतिक्षणम्मम ॥ १ ॥ धराधरेन्द्रनन्दिनी विलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ॥ कृपाकटाक्षधोरणी निरुद्धदुर्द्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरेमनो विनोदमस्तुवस्तुनि ॥ २ ॥ जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ॥ मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदमद्भुतम्बिभर्त्तुभूतभर्त्तरि ॥ ३ ॥ ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गया निपीतपञ्चसायकन्नमन्निलिम्पनायकम् ॥ सुधामयूखरेखयाविराजमानशेखरम्महाकपालिसम्पदे सरिज्जटालमस्तुनः ॥ ४ ॥ सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ॥ भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकःश्रियेचिरायजायताञ्चकोरबन्धुशेखरः ॥ ५ ॥ करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ॥ धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनित्रिलोचनेरतिर्म्मम ॥ ६ ॥ नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्द्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ॥ निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतुकृत्तिसुन्दरः कलानिधानबन्धुरःश्रियञ्जगद्धुरन्धरः ॥ ७ ॥ प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभावलम्बिकण्ठकन्दली रुचिप्रबद्धकन्धरम् ॥ स्मरच्छिदम्पुरच्छिदम्भवच्छिदङ्गजच्छिदम्मखच्छिदान्धकच्छिदन्तमन्तकच्छिदम्भजे ॥ ८ ॥ अखर्व्वसर्व्वमङ्गला कलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ॥ स्मरान्तकम्पुरान्तकम्मखान्तकम्भवान्तकङ्गजान्तकान्धकान्तकन्तमन्तकान्तकम्भजे ॥ ९ ॥ जयत्यदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्विनिर्गमक्रमस्फुर

त्करालभालहव्यवाट् ॥ धिमिन्धिमिन्धिमिन्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गम ङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्त्तितप्रचण्डताण्डवःशिवः ॥१०॥ दृषद्विचित्रत ल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्टयोःसुहृद्विपक्षपक्षयोः ॥तृणारविन्दचक्षुषोःप्रजामहीमहेन्द्रय्योः समप्रवृत्तिकःकदा स दाशिवम्भजाम्यहम् ॥११॥ कदानिलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्विमुक्तदुर्म्मतिस्सदा शिरःस्थमञ्जलिँव्वहन् ॥ विलोललोल लोचनाललामभाललग्नकं शिवेतिमन्त्रमुच्चरन्सदासुखीभवाम्य हम् ॥ १२ ॥ निलिम्पनाथनागरी कदम्बमौलिमल्लिका निगुम्फ निर्भ्भरक्षरन्मधूलिकामनोहरः ॥ तनोतुनोमनोमुदँव्विनोदनी महर्न्निशम्पराश्रियःपरम्पदन्तदङ्गजत्विषाञ्चयः ॥ १३ ॥ प्रच ण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणीमहाष्टसिद्धिकामिनी जनावहूत जल्पना ॥ विमुक्तवामलोचना विवाहकालिकध्वनिः शिवेति मन्त्रभूषणा जगज्जयायजायताम् ॥ १४ ॥ इतिरावणकृतंशिव स्तोत्रंसम्पूर्ण्णम् ॥ छ ॥

अथ शिवकवचम् ॥

अस्यश्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्यब्रह्माऋषिःअनुष्टुप्छन्दःश्री सदाशिवरुद्रोदेवता ह्रींशक्तिःरंकीलकम् श्रींह्रींक्लींबीजम् श्रीस दाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपेविनियोगः ॥ अथकरन्या सः ॥ ॐनमोभगवतेज्वलज्ज्वालामालिने ॐरांसर्व्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मनेअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ॐ नमोभगवतेज्वलज्ज्वालामालि नेॐ नँरीँनित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्ज्जनीभ्यान्नमः ॐ नमोभगवतेज्वलज्ज्वालामालिने ॐमँरूँअनादिशक्तिधाम्नेअ घोरात्मनेमध्यमाभ्यान्नमः ॐनमोभगवतेज्वलज्ज्वालामालि ने ॐशिँरैँस्वतन्त्रशक्तिधाम्नेवामदेवात्मनेअनामिकाभ्यान्नमः

ॐनमोभगवतेज्वलज्ज्वालिमामिने ॐवाँरौँ अतुल्यशक्तिधा म्नेसद्योजातात्मनेकनिष्ठाभ्यान्नमः ॐनमोभगवतेज्वलज्ज्वाला मालिने ॐयँरः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मनेकरतलकरपृष्ठाभ्या न्नमः ॥ एवंहृदयादि ॥ अथध्यानम् ॥ वज्रदंष्ट्रन्त्रिनयनङ्कालक ण्ठमरिन्दमम् ॥ सहस्रकरमत्युग्रंवन्देशम्भुमुमापतिम् ॥ १ ॥ अथापरं सर्व्वपुराणगुह्यन्निःशेषपापौघहरम्पवित्रम् ॥जयप्रदंसर्व्व विपत्प्रमोचनँव्वक्ष्यामिशैवङ्कवचंहितायते ॥ २ ॥ऋषभउवाच॥ नमस्कृत्वामहादेवँविश्वव्यापिनमीश्वरम् ॥ वक्ष्येशिवमयँव्व र्म्मं सर्व्वरक्षाकरन्नृणाम् ॥३॥ शुचौदेशेसमासीनो यथावत्कल्पि तासनः ॥ जितेन्द्रियोजितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम् ॥ ४ ॥ हृत्पुण्डरीकान्तरसन्निविष्टं स्वतेजसाव्याप्तनभोवकाशम् ॥अती न्द्रियंसूक्ष्ममनन्तमाद्यन्ध्यायेत्परानन्दमयम्महेशम् ॥५॥ ध्याना वधूताखिलकर्म्मबन्धश्चिरञ्चिदानन्दनिमग्नचेताः ॥ षडक्षरन्या ससमाहितात्मा शैवेनकुर्य्यात्कवचेनरक्षाम् ॥ ६ ॥ माम्पातुदे वोऽखिलदेवतात्मासंसारकूपेपतितङ्गभीरे ॥ तन्नामदिव्यँवरम न्त्रमूलन्धुनोतुमेसर्व्वमघंहृदिस्थम् ॥ ७ ॥ सर्व्वत्रमांरक्षतुविश्व मूर्तिर्ज्ज्योतिर्म्मयानन्दघनश्चिदात्मा ॥ अणोरणीयानुरुशक्तिरे कःसईश्वरः पातुभयादशेषात् ॥८॥ योभूस्वरूपेणबिभर्त्तिविश्व म्पायात्सभूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः ॥ योऽपांस्वरूपेणनृणाङ्करोतिस ञ्जीवनंसोऽवतुमाञ्जलेभ्यः ॥९ ॥ कल्पावसानेभुवनानिदग्ध्वा सर्व्वाणियोनृत्यतिभूरिलीलः ॥ सकालरुद्रोऽवतुमान्दवाग्नेर्व्वा त्यादिभीतेरखिलाच्चतापात् ॥ १० ॥ प्रदीप्तविद्युत्कनकावभा सो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः ॥ चतुर्म्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यांस्थितंरक्षतुमामजस्रम् ॥ ११ ॥ कुठारखेटाङ्कुशपाशशू लकपालढक्काक्षगुणान्दधानः ॥ चतुर्म्मुखोनीलरुचिस्त्रिनेत्रः पा

यादघोरोदिशिदक्षिणस्याम् ॥ १२ ॥ कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकाव
भासोवेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः ॥ त्र्यक्षश्चतुर्व्वक्त्ररुप्रभावःसद्यो
धिजातोऽवतुमाम्प्रतीच्याम् ॥ १३ ॥ वराक्षमालाभयटङ्कहस्तः
सरोजकिञ्जल्कसमानवर्ण्णः ॥ त्रिलोचनश्चारुचतुर्म्मुखोमाम्पा
यादुदीच्यान्दिशिवामदेवः ॥ १४ ॥ वेदाभयेष्टाङ्कुशपाशटङ्कक
पालढक्काक्षकशूलपाणिः ॥ सितद्युतिःपञ्चमुखोवतान्मामीशा
नऊर्द्ध्वम्पपरमप्रकाशः ॥ १५ ॥ मूर्द्धानमव्यान्ममचन्द्रमौलि
र्भालम्ममाव्यादथभालनेत्रः ॥ नेत्रेममाव्याद्भगनेत्रहारीनासां
सदारक्षतुविश्वनाथः॥१६॥ पायाच्छ्रुतीमेश्रुतिगीतकीर्त्तिः कपो
लमव्यात्सततङ्कपाली ॥ वक्त्रंसदारक्षतुपञ्चवक्त्रोजिह्वांसदारक्षतु
वेदजिह्वः ॥१७॥कण्ठङ्गिरीशोऽवतुनीलकण्ठःपाणिद्वयम्पातुपि
नाकपाणिः ॥ दोर्म्मूलमव्यान्ममधर्म्मबाहुर्व्वक्षस्थलन्दक्षमखा
न्तकोऽव्यात् ॥१८ ॥ ममोदरम्पातुगिरीन्द्रधन्वामध्यम्ममाव्या
न्मदनान्तकारी ॥ हेरम्बतातोममपातुनाभिम्पायात्कटिन्धूर्ज्ज
टिरीश्वरोमे ॥१९॥ ऊरुद्वयम्पातुकुबेरमित्रोजानुद्वयम्मेजगदीश्व
रोऽव्यात्॥जङ्घायुगम्पुङ्गवकेतुरव्यात्पादौममाव्यात्सुरवन्द्यपा
दः ॥२०॥महेश्वरःपातुदिनादियामेमाम्मध्ययामेऽवतुवामदेवः
त्रियम्बकःपातुतृतीययामेवृषध्वजःपातुदिनान्त्ययामे ॥२१॥
पायान्निशादौशशिशेखरोमाङ्गङ्गाधरोरक्षतुमान्निशीथे ॥ गौरीप
तिःपातुनिशावसानेमृत्युञ्जयोरक्षतुसर्व्वकालम् ॥२२॥ अन्तः
स्थितंरक्षतुशङ्करोमांस्थाणुःसदापातुबहिःस्थितम्माम् ॥तदन्तरे
पातुपतिःपशूनांसदाशिवोरक्षतुमांसमन्तात् ॥२३॥ तिष्ठन्तम
व्याद्भुवनैकनाथःपायाद्व्रजन्तम्प्रमथाधिनाथः ॥ वेदान्तवेद्योऽव
तुमान्निषण्णम्मामव्ययःपातुशिवःशयानम् ॥ २४ ॥ मार्ग्गेषुमां
रक्षतुनीलकण्ठःशैलादिदुर्ग्गेषुपुरत्रयारिः ॥ अरण्यवासादिमहा

प्रवासेपायान्मृगव्याधउदारशक्तिः ॥ २५ ॥ कल्पान्तकाटोपपटु
प्रकोपस्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः ॥ घोरारिसेनार्ण्णवदुर्न्निवा
रमहाभयाद्रक्षतुवीरभद्रः ॥२६॥ पत्त्यश्वमातङ्गरथावरूथसहस्र
लक्षायुतकोटिभीषणम् ॥ अक्षौहिणीनांशतमाततायिनाञ्छि
न्द्यान्मृडोघोरकुठारधारया ॥२७॥ निहन्तुदस्यून्प्रलयानलार्च्चि
र्ज्ज्वलन्त्रिशूलन्त्रिपुरान्तकस्य॥शार्द्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान्सन्त्रा
सयत्वीशधनुःपिनाकः ॥ २८॥ दुःस्वप्नदुःशकुनदुर्ग्गतिदौर्म्मन
स्यदुर्भिक्षदुर्व्यसनदुःसहदुर्य्यशांसि ॥ उत्पाततापविषभीतिम
सद्ग्रहार्त्तिव्याधींश्चनाशयतुमेजगतामधीशः ॥ २९ ॥ ॐनमो
भगवतेसदाशिवायसकलतत्त्वात्मकाय सर्व्वमन्त्ररूपाय सर्व्वय
न्त्राधिष्ठिताय सर्व्वतन्त्रस्वरूपाय सर्व्वतत्त्वविदूराय ब्रह्मरुद्रा
वतारिणेनीलकण्ठाय पार्व्वतीमनोहराप्रियायसोमसूर्य्याग्निलो
चनाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय महामणिमुकुटधारणाय माणि
क्यभूषणाय सृष्टिस्थितिप्रलयकालरौद्रावताराय दक्षाध्वरध्वंस
काय महाकालभेदनाय मूलाधारैकनिलयायतत्त्वातीताय गङ्गा
धराय सर्व्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्तसाराय त्रिवर्ग्गसा
धनायानन्तकोटिब्रह्माण्डनायकायानन्तवासुकितक्षककर्कोटक
शङ्खकुलिकपद्ममहापद्मेत्यष्टमहानागकुलभूषणाय प्रणवस्वरू
पाय चिदाकाशायाकाशदिक्स्वरूपाय ग्रहनक्षत्रमालिने सक
लाय कलङ्करहिताय सकललोकैककर्त्रेसकललोकैकसंहर्त्रे सकल
लोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवे
दान्तपारगाय सकललोकैकवरदप्रदाय सकललोकैकशङ्कराय श
शाङ्कशेखराय शाश्वतनिजावासाय निराभासाय निरामयाय
निर्म्मलाय निर्ल्लोभाय निर्म्मदाय निश्चिन्ताय निरहङ्काराय नि
रङ्कुशाय निष्कलङ्काय निर्ग्गुणाय निष्कामाय निरुपप्लवाय नि

रवद्याय निरन्तराय निष्कारणाय निरातङ्काय निष्प्रपञ्चाय निस्सङ्गाय निर्द्वन्द्वाय निराधाराय नीरागाय निष्क्रोधाय निर्म्मलाय निष्पापाय निर्भयाय निर्व्विकल्पाय निर्भेदाय निष्क्रियाय निस्तुलाय निःसंशयाय निरञ्जनाय निरुपमविभवाय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तस्वरूपाय तेजोरूपाय तेजोमयाय जयजयरुद्रमहारौद्रमहावतारमहाभैरव कालभैरवकल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वाङ्गखड्गचर्म्मपाशाङ्कुशडमरुशूलचापबाणगदाशक्तिभिण्डिपालतोमरमुशलमुद्गरपाशपरिघभुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्यायुधभीषणकरसहस्रमुखदंष्ट्राकरालवदन विकटाट्टहासविस्फारितब्रह्माण्डमण्डल नागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेद्रचर्म्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विश्वरूपविरूपाक्ष विश्वेश्वर वृषभवाहन विश्वतोमुख सर्व्वतोरक्षरक्षमाज्ज्वलज्ज्वलमहामृत्युमपमृत्युभयन्नाशयनाशय चोरभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्प्पभयं शमय शमय चोरान्मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय त्रिशूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धिभिन्धि खड्गेनछिन्धिछिन्धि खट्वाङ्गेनविपोथयविपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः सन्ताडयसन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषय अशेषभूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रह्मराक्षसगणान् सन्त्रासय सन्त्रासय ममाभयङ्कुरुकुरु वित्रस्तम्मामाश्वासयाश्वासय नरकमहाभयान्मामुद्धरोद्धर सञ्जीवयसञ्जीवय क्षुत्तृड्भ्याम्मामाप्याययाप्याययदुःखातुरम्मामानन्दयानन्दयशिवकवचेनमामाच्छादयाच्छादय मृत्युञ्जयत्र्यम्बकसदाशिवनमस्तेनमस्ते ॥ ऋषउवाच॥इत्येतत्कवचंशैवंवरदंव्याहृतम्मया॥सर्व्वबाधाप्रशमनं रहस्यंसर्व्वदेहिनाम् ॥ ३० ॥ यःसदाधारयेन्मर्त्त्यःशैवङ्कवचमुत्तम

म् ॥ नतस्यजायतेक्कापिभयंशम्भोरनुग्रहात् ॥ ३१ ॥ क्षीणा युः प्राप्तमृत्युर्वा महारोगहतोऽपिवा ॥ सद्यःसुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्चविन्दति ॥ ३२ ॥ सर्वदारिद्र्यशमनंसौमङ्गल्यविवर्द्धनम् ॥ योधत्तेकवचंशैवंसदेवैरपिपूज्यते ॥३३॥ महापातकसङ्घातैर्मुच्यतेचोपपातकैः॥देहान्तेमुक्तिमाप्नोति शिववर्म्मानुभावतः ॥ ३४ ॥ त्वमपिश्रद्धयावत्स शैवङ्कवचमुत्तमम् ॥ धारयस्वमयादत्तंसद्यः श्रेयोह्यवाप्स्यसि ॥ ३५ ॥ सूतउवाच ॥ इत्युक्त्वाऋषभोयोगीतस्मैपार्त्थिवसूनवे ॥ ददौशङ्खम्महारावङ्खड्गञ्चारिनिषूदनम् ॥ ३६ ॥ पुनश्चभस्मसम्मन्त्र्य तदङ्गम्परितोऽस्पृशत् ॥ गजानांषट्सहस्रस्य द्विगुणस्यबलन्ददौ ॥ ३७॥ भस्मप्रभावात्सम्प्राप्तबलैश्वर्य्यधृतिस्मृतिः ॥ सराजपुत्रः शुशुभे शरदर्कइवाश्रिया ॥ ३८ ॥ तमाहप्राञ्जलिम्भूयः सयोगी नृपनन्दनम्॥ एषखड्गोमयादत्तस्तपोमन्त्रानुभावितः ॥ ३९ ॥ शितधारमिमखड्गय्यँस्मैदर्शयसेस्फुटम् ॥ ससद्योम्रियतेशत्रुः साक्षान्मृत्युरपिस्वयम् ॥ ४० ॥ अस्यशङ्खस्यनिर्ह्रादंय्येशृण्वन्ति तवाहिताः ॥ तेमूर्च्छिताः पतिष्यन्ति न्यस्तशस्त्राविचेतनाः ॥ ४१ ॥ खड्गशङ्खाविमौ दिव्यौ परसैन्यविनाशिनौ ॥ आत्मसैन्यस्वपक्षाणां शौर्य्यतेजोविवर्द्धनौ ॥ ४२ ॥ एतयोश्चप्रभावेनशैवेनकवचेनच ॥ द्विषट्सहस्रनागानाम्बलेनमहतापिच ॥ ॥ ४३ ॥ भस्मधारणसामर्थ्याच्छत्रुसैन्यँव्विजेष्यसि ॥ प्राप्यसिंहासनम्पित्र्यङ्गोप्ताऽसिपृथिवीमिमाम् ॥ ४४ ॥ इतिभद्रायुषं सम्यगनुशास्यसमातृकम् [illegible]भ्यांसम्पूजितः सोऽथयोगी स्वैरगतिर्य्ययौ ॥ ४५ ॥ इतिशिवकवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथोपनिषत् ॥

ॐनमःशिवाय ॐनमोस्तुशर्व्वशम्भोत्रिनेत्रचारुगात्र त्रैलो

क्यनाथउमापते दक्षयज्ञविध्वंसकारकसकामाङ्गनाशनघोरपाप प्रणाशन महापुरुष महोग्रमूर्त्ते सर्व्वसत्वक्षयङ्कर शुभङ्कर महेश्वर त्रिशूलधर स्मरारे गुहाधामन् दिग्वासः महाशङ्खशेखरजटाधर कपालमालाविभूषितशरीर वामचक्षुःक्षुभितदेवप्रजाध्यक्ष भगाक्ष्णोः क्षयङ्कर भीमसेननाथ पशुपते कामाङ्गदहनचत्वरवासिन् शिव महादेव ईशान शङ्कर भीमभव वृषध्वज कैटभ प्रौढ महानाथेश्वर भूतिरत अविमुक्तक रुद्ररुद्रेश्वरस्थाणो एकलिङ्ग कालिन्दीप्रियश्रीकण्ठनीलकण्ठ अपराजितरिपुभयङ्कर सन्तोषपते वामदेव अघोर तत्पुरुष महाघोर अघोरमूर्त्ते शान्त सरस्वतीकान्त सहस्रमूर्त्ते महोद्भव विभोकालाग्ने रुद्ररौद्र हर महीधरप्रिय सर्व्वतीर्थाधिवास हंस कामेश्वर केदार अधिपते परिपूर्ण्ण मुचुकुन्द मधुनिवास कृपाणपाणे भयङ्कर विद्याराज सोमराज कामराज महीधरराजकन्याहृदञ्जवसते समुद्रशायिन् गयामुखगोकर्ण्णब्रह्मयोने सहस्रवक्त्राक्षिचरणहाटकेश्वरनमस्ते नमस्ते ॥ इत्युपनिषत् ॥

अथशतनाम ॥

शिवोमहेश्वरःशम्भुः पिनाकीशशिशेखरः ॥ वामदेवोविरूपाक्षऽकपर्द्दीनीललोहितः ॥ १ ॥ शङ्करःशूलपाणिश्च खट्वाङ्गीविष्णुवल्लभः ॥ शिपिविष्टोम्बिकानाथः श्रीकण्ठोभक्तवत्सलः॥२॥ भवःशर्वस्त्रिलोकेशःशितिकण्ठःशिवाप्रियः ॥ उग्रऽकपालीकामारिरन्धकासुरसूदनः ॥३॥गङ्गाधरोललाटाक्षःकालकालऽकृपानिधिः ॥ भीमऽपरशुहस्तश्च मृगपाणिर्ज्जटाधरः ॥४॥कैलासवासीकवचीकठोरस्त्रिपुरान्तकः ॥ वृषाङ्कोवृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ ५ ॥ सामप्रियःस्वरमयस्त्रयीमूर्त्तिरनीश्वरः ॥ सर्व्वे

ज्ञःपरमात्माच सोमसूर्य्याग्निलोचनः ॥ ६ ॥ हविर्य्यज्ञमयःसोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरोवीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः ॥ ७ ॥ हिरण्यरेतादुर्द्धर्षो गिरिशोगिरीशोनघः ॥ भुजङ्गभूषणोभर्गो गिरिधन्वागिरिप्रियः ॥ ८ ॥ कृत्तिवासाःपुरारातिर्भगवान्प्रमथाधिपः ॥ मृत्युञ्जयः सूक्ष्मतनुर्ज्जगद्व्यापीजगद्गुरुः ॥ ९ ॥ व्योमकेशोमहासेनजनकश्चारुविक्रमः ॥ रुद्रोभूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्योदिगम्बरः ॥ १० ॥ अष्टमूर्त्तिरनेकात्मा सात्विकः शुद्धविग्रहः ॥ शाश्वतःखण्डपरशुरजःपाशविमोचकः ॥ ११ ॥ मृडःपशुपतिर्देवः महादेवोऽव्ययःप्रभुः ॥ पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरोहरः ॥ १२ ॥ भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्राक्षःसहस्रपात् ॥ अपवर्गप्रदोऽनन्तस्तारकःपरमेश्वरः ॥ ॥ १३ ॥ इमानिदिव्यनामानिजप्यन्तेसर्व्वदामया ॥ नामकल्पलतेयम्मे सर्व्वाभीष्टप्रदायिनी ॥ १४ ॥ नामान्येतानिसुभगे शिवदानिनसंशयः ॥ वेदसर्व्वस्वभूतानि नामान्येतानिवस्तुतः ॥ ॥ १५ ॥ एतानियानिनामानितानिसर्व्वार्त्थदान्यतः ॥ जप्यन्तेसादरन्नित्यम्मया नियमपूर्व्वकम् ॥ १६ ॥ वेदेषुशिवनामानिश्रेष्ठान्यघहराणिच ॥ सन्त्यनन्तानिसुभगेवेदेषुविविधेष्वपि ॥ १७ ॥ तेभ्योनामानिसङ्गृह्य कुमारायमहेश्वरः ॥ अष्टोत्तरसहस्रन्तु नाम्नामुपदिशत्पुरा ॥ १८ ॥ इतिशिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥ ७ ॥

॥ अथसहस्रनाम ॥

सूतउवाच ॥ श्रूयतामृषयःश्रेष्ठाःकथयामियथाश्रुतम् ॥ विष्णुनाप्रार्थितोयेन सन्तुष्टःपरमेश्वरः ॥ १ ॥ तदहङ्कथयाम्यद्य पुण्यंनामसहस्रकम् ॥ चन्द्रापीडश्चन्द्रमौलिर्व्विश्वादिश्चामरे

श्वरः ॥ २ ॥ वेदान्तसारसन्दोहः कपालीनीललोहितः ॥ ध्यानाधारापरिच्छेद्योगौरीभर्त्तागणेश्वरः ॥ ३ ॥ अष्टमूर्तिर्व्विश्वमूर्त्तिस्त्रिवर्ग्गःस्वर्ग्गसाधनः ॥ ज्ञानगम्योदृढप्रज्ञोदेवदेवस्त्रिलोचनः ॥ ४ ॥ वामदेवोमहादेवः पटुःपरिवृढोदृढः ॥ विश्वरूपोविरूपाक्षोवागीशःशुचिमत्तरः ॥ ५ ॥ सर्व्वःप्रमाणसँव्वादीवृषाङ्कोवृषवाहनः ॥ ईशःपिनाकीखट्वाङ्गीचित्रवेषश्चिरन्तनः ॥ ॥ ६ ॥ तमोहरोमहायोगीगोप्ताब्रह्माण्डहृज्जटी ॥ कालकालः कृत्तिवासाःसुभगःप्रणतात्मकः ॥ ७ ॥ त्रिपुण्ड्रधारीचाक्षुष्योदुर्व्वासाःपुरशासनः ॥ दिव्यायुधः स्कन्दगुरुःपरमेष्ठीपरात्परः ॥ ॥ ८ ॥ अनादिमध्यनिधनोगिरीशोगिरिबान्धवः ॥ कुबेरबन्धुःश्रीकण्ठोलोकवर्ण्णोत्तमोमृदुः ॥९ ॥समाधिवेद्यःकोदण्डोनीलकण्ठःपरश्वधी ॥ विशालाक्षोमृगव्याधःसुरेशःसूर्य्यतापनः ॥ ॥ १० ॥ धर्म्मधामाक्षमाक्षेत्रम्भगवान्भगनेत्रभित् ॥ उग्रःपशुपतिस्ताक्ष्यः प्रियभक्तःप्रियँव्वदः ॥ ११ ॥ दातादयाकरोदक्षः कपर्द्दीकामशासनः ॥ श्मशाननिलयःसूक्ष्मःश्मशानस्थोमहेश्वरः॥१२॥लोककर्त्तामृगपतिर्म्महाकर्त्तामहौषधी ॥ उत्तरोगुप्तिगोप्ताचज्ञानगम्यःपुरातनः ॥ १३॥नीतिःसुनीतिःशुद्धात्मासामःसोमतरःसुखी ॥ सोमपोऽमृतपःसौम्योमहाज्योतिर्म्महाद्युतिः ॥ १४ ॥ तेजोमयोऽमृतमयोन्नमयश्चसुधापतिः ॥ अजातशत्रुरालोकसम्भाव्योहव्यवाहनः ॥ १५ ॥ लोककरोवेदकरःसूत्रकारःसनातनः ॥ महर्षिःकपिलाचार्य्योविश्वदीप्तिर्व्विलोचनः ॥ ॥ १६ ॥ पिनाकपाणिर्भूदेववशगःस्वस्तिकृत्सुधीः ॥ धातृधामाधामकरःसर्व्वदःसर्व्वगोचरः ॥ १७ ॥ ब्रह्मसृग्विश्वसृक्सर्व्वः कर्णिकारप्रियःकविः॥शाखोविशाखोमोशाखःशिवोभिषगनुत्तमः ॥ १८ ॥ गङ्गाप्लवोदकोभव्यःपुष्कलःस्थपतिःस्थिरः ॥ वि

जितात्माविधेयात्माभूतवाहनसारथिः ॥ १९ ॥ सगणोगणव
र्यश्चसुकीर्त्तिश्छिन्नसंशयः ॥ कामदेवःकामपालोभस्मोद्धूलित
विग्रहः ॥ २० ॥ भस्मप्रियोभस्मशायीकाम्मीकान्तःकृतागमः
॥ समावर्त्तोनिवृत्तात्माधर्म्मपुञ्जःसदाशिवः ॥ २१ ॥ अकल्मष
श्चतुर्ब्बाहुर्दुरावासोदुरासदः ॥ दुर्ल्लभोदुर्ग्गमोदुर्ग्गःसर्व्वायुधविशा
रदः ॥ २२ ॥ आध्यात्मयोगनिलयःसुतन्तुस्तन्तुवर्द्धनः ॥ शु
भाङ्गोलोकसारङ्गोजगदीशोजनार्द्दनः ॥ २३ ॥ भस्मशुद्धिकरो
मेरुरोजस्वीशुद्धविग्रहः ॥ असाध्यसाधुसाध्यश्चभृत्यमर्क्कटरूपधृ
क् ॥ २४ ॥ हिरण्यरेताःपौराणोरिपुजीवहरोचलः ॥ महाह्रदो
महागर्त्तःसिद्धवृन्दारकेडितः ॥ २५ ॥ व्याघ्रचर्म्माम्बरोव्याली
महाभूतोमहानिधिः ॥ अमृतानुभवःश्रीमान्पाञ्चजन्यःप्रभञ्जनः
॥ २६ ॥ पञ्चविंशतितत्त्वस्थःपारिजातःपरात्परः ॥ सुलभःसु
व्रतःशूरोवाङ्मयीकनिधिर्न्निधिः॥ २७ ॥वर्ण्णाश्रमगुरुर्व्वर्ण्णीश
त्रुजिच्छत्रुतापनः ॥ आश्रमःक्षपणःक्षामोज्ञानवानचलेश्वरः ॥
॥ २८ ॥ प्रमाणभूतोदुर्ज्ञेयःसुपर्ण्णोवायुवाहनः ॥धनुर्द्धरोधनुर्व्वे
दोगुणःशशिगुणाकरः ॥ २९ ॥ सत्यःसत्यपरोदीनोधर्म्माङ्गोध
र्म्मसाधनः ॥ अनन्तदृष्टिरानन्दोदण्डोदमयितादमः ॥ ३० ॥
अभिचार्य्योमहामार्य्योविश्वकर्म्माविशारदः ॥ वीतरागोविनी
तात्मातपस्वीभूतवाहनः ॥ ३१ ॥ उन्मत्तवेषःप्रच्छन्नोजितका
मोर्च्चितप्रियः ॥ कल्पान्तःप्रकृतिःकल्पःसर्व्वलोकप्रजापतिः ॥
॥ ३२ ॥ तरस्वीतारकोधीमान्प्रधानःप्रभुरव्ययः ॥ लोकपालो
न्तर्हितात्माकल्पादिःकमलेक्षणः ॥ ३३ ॥ वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो
नियमोनियमाश्रयः ॥ चन्द्रःसूर्य्यःशनिःकेतुर्व्विरागोविद्रुमच्छ
विः ॥ ३४ ॥ भक्तिग्राह्यःपरम्ब्रह्ममृगबाणार्प्पणोनयः ॥ अद्रिर
प्रलयःकान्तःपरमात्माजगद्गुरुः ॥ ३५ ॥ सर्व्वकामालयस्तुष्टो

माङ्गल्योमङ्गलावृतः ॥ महातपादीर्ग्घतपाःस्थविष्ठःस्थविरोद्रुमः ॥ ३६ ॥ अहःसँव्वत्सरोव्याप्तिः प्रमाणम्परमन्तपः ॥ सँव्वत्सरकरोमन्त्रःप्रत्ययःसर्व्वदर्शनः॥३७॥अजःसर्व्वेश्वरःसिद्धोमहारेतामहाबलः ॥ योगीयोग्योमहातेजाःसिद्धःसर्व्वादिविग्रहः ॥ ॥ ३८ ॥ वसुर्व्वसुमनाःसत्यःसर्व्वपापहरोहरः ॥ सुकीर्त्तिःशोभितःश्रावीह्यवाङ्मनसगोचरः ॥ ३९ ॥ अमृतःशाश्वतःशान्तोद्रोणहस्तःप्रतापवान् ॥ कमण्डलुधरोधन्वीवेदाङ्गोवेदाविन्मुनिः ॥ ॥ ४० ॥ भ्राजिष्णुर्भोजनम्भोक्तालोकनाथोदुरावरः ॥ अतीन्द्रियोमहामायःसर्व्वावासश्चतुष्पथः ॥ ४१ ॥ कालयोगीमहानादोमहोत्साहोमहाबलः ॥ महाबुद्धिर्म्महावीर्य्योभूतचारीपुरन्दरः ॥ ४२ ॥ निशाचरःप्रेतचारीमहाशक्तिर्म्महाद्युतिः ॥ अनिर्देश्यवपुःश्रीमान्सर्व्वाचार्य्यमनोगतिः ॥४३॥ बहुश्रुतोमहामायोनियतात्माध्रुवोऽध्रुवः ॥ तेजस्तेजोद्युतिधरोनरकःसर्व्वशासकः ॥ ४४ ॥ नृत्यप्रियोनित्यनृत्यःप्रकाशात्माप्रकाशकः ॥ स्पष्टःक्रूरोबुधोमन्त्रःसमानःसारसम्प्लवः ॥ ४५ ॥ युगादिकृद्युगावर्त्तोगम्भीरोवृषवाहनः ॥ इष्टोविशिष्टःशिष्टेष्टःशरभःशरभोधनुः ॥ ॥ ४६॥ तीर्त्थरूपस्तीर्त्थनामातीर्त्थादृश्यःसुतीर्त्थदः ॥अपान्निधिराधिष्ठानँव्विजयोजयकालवित् ॥ ४७ ॥ प्रतिष्ठितःप्रमाणज्ञोहिरण्यकवचोहरिः ॥ विमोचनःसुरगणोविद्येशोबिन्दुसंश्रयः ॥ ॥ ४८ ॥ बालरूपोबलोन्मत्तोविकर्त्तागहनोगुहः ॥ करणङ्कारणङ्कर्त्तासर्व्वबन्धविमोचनः ॥ ४९ ॥ व्यवसायोव्यवस्थानःस्थानदोजगदादिजः ॥ गुरुदोललितोभेदोनिवासात्मनिसंस्थितः ॥ ५० ॥ वीरेश्वरोवीरभद्रोविश्वरूपोविधिर्व्विराट् ॥ वीरचन्द्रोमणिर्द्धर्त्तातीव्रानन्दोनदीश्वरः ॥ ५१ ॥ अग्न्याधारास्त्रिशूलीच शिपिविष्टःशिवालयः ॥ वालखिल्यो

महावीर्य्यस्तिग्मांशुर्ब्बधिरःखगः ॥ ५२ ॥ अभिरामःसुश रणःसुब्रह्मण्यःसुधानिधिः ॥ मघवाकौशिकोगोमान्विरामः सर्व्वसाधनः ॥ ५३ ॥ ललाटजोविश्वदेहःसारसंसारचक्रभृ त् ॥ अमोघोदण्डिमध्यस्थोहरिणोब्रह्मवर्च्चसः ॥ ५४ ॥ पर मार्थःपरमयःसँव्वरोव्याघ्रकोनलः ॥ रुचिर्व्वररुचिर्व्वन्द्योवा चस्पतिरहर्प्पतिः ॥ ५५ ॥ रविर्व्विरोचनःस्कन्दःशास्तावैव स्वतोऽमरः ॥ युक्तिकृन्मत्तकीर्त्तिश्चसानुगश्चपरञ्जयः ॥ ५६ ॥ कैलासाधिपतिःकान्तःसवितारविलोचनः ॥ विश्वोत्तमोवीतभ यो विश्वभर्त्तानिवारितः ॥ ५७ ॥ नित्योनियतकल्याणःपुण्य श्रवणकीर्त्तनः ॥ दूरश्रवाविश्वसहोध्येयोदुःखप्रणाशनः॥ ५८॥ उत्तारणोदुष्कृतिहाविज्ञेयोदुःसहोभवः ॥ अनादिभूर्भुवोलक्ष्मीः किरीटीत्रिदशाधिपः ॥ ५९ ॥ विश्वगोप्ताविश्वकर्त्तासुवीरोरु चिराङ्गदः ॥ जननोजनजन्मादिःप्रीतिमान्नीतिमान्धवः ॥६०॥ वसिष्ठःकश्यपोभानुर्भीमोभीमपराक्रमः ॥ प्रणवःसत्पथाचारो महाकाशोमहाधनः ॥ ६१ ॥ जन्माधिपोमहादेवःसकलागमपा रगः ॥ तत्त्वन्तत्त्वविदेकात्माविभुर्व्विष्णुविभूषणः ॥ ६२ ॥ ऋ षिर्ब्राह्मणऐश्वर्य्योजन्ममृत्युजरातिगः ॥ पञ्चयज्ञसमुत्पत्तिर्वि श्वेशोविमलोदयः ॥ ६३ ॥ अनाद्यन्तआत्मयोनिर्व्वत्सलोभ क्तलोकधृक् ॥ गायत्रीवल्लभःप्रांशुर्व्विश्वावासःप्रभाकरः ॥६४॥ शिशुर्गिरिरतःसम्राट्सुषेणःसुरशत्रुहा ॥ अनेमिरिष्टनेमिश्चमु क्तिदोविगतज्वरः ॥ ६५ ॥ स्वयञ्ज्योतिस्तपञ्ज्योतिरातिज्यो तिरचञ्चलः ॥ पिङ्गलःकपिलःश्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः ॥ ६६॥ ज्ञानस्कन्दोमहानीतिर्व्विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः ॥ भोगीविवस्वतस्त त्त्वोयोगपारोदिवस्पतिः ॥ ६७ ॥ कल्याणगुणनामाचपापहा पुण्यदर्श्शनः ॥ उदारकीर्त्तिरुद्योगीमहन्मान्यश्चसत्त्वपः ॥ ६८॥

नक्षोमलिनकेशश्चस्वाधिष्ठानपदाश्रयः ॥ पवित्रःपापनाशश्च मणिपूरोनभोगतिः ॥ ६९ ॥ हृत्पुण्डरीकमासीनःशक्रःशान्तो वृषाकपिः ॥ कृष्णोग्रहपतिःकृष्णःसमर्त्थोऽनर्त्थनाशनः॥७०॥ अधर्म्मशत्रुरज्ञेयःपुरुहूतःपुरुश्रुतः॥ब्रह्मगर्भोबृहद्गर्भोधर्म्मधे नुर्द्धनागमः ॥ ७१ ॥ जगद्धितैषीसुगतःकुमारःकुशलागमः ॥ हिरण्यवर्णोज्योतिष्मान्नानाभूतरतोध्वनिः ॥ ७२ ॥ आरोग्यो नयनाध्यक्षो विश्वामित्रोधनेश्वरः ॥ ब्रह्मज्योतिर्व्वसुर्द्धामाम हाज्योतिरनुत्तमः ॥ ७३ ॥ मातामहोमातरिश्वानभस्वान्नाग हारधृक्॥ पुलस्त्यःपुलहोऽगस्त्योजातूकर्ण्यःपराशरः॥७४॥ निरावरणनिर्व्वारोवैरञ्ज्योविष्टरश्रवाः ॥ आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रि र्ज्ञानमूर्त्तिर्म्महायशाः॥ ७५ ॥ लोकवीराग्रणीर्व्वीरश्चन्द्रःसत्य पराक्रमः ॥ व्यालकल्पोमहाकल्पःकल्पवृक्षःकलाधरः ॥७६ ॥ अलङ्करिष्णुरचलोरोचिष्णुर्व्विक्रमोऽम्बरः ॥ आशुःशब्दपति र्व्वेगीप्लवनःशिखिसारथिः ॥ ७७ ॥ असंसृतिपतिःशक्रःप्रमादः पादपासनः ॥ वसुश्रवाःकव्यवाहःप्रतप्तोविश्वभोजनः ॥ ७८ ॥ जप्योजरारिःशमनोलोहिताश्वस्तनूनपात् ॥ नभयोनिःसुनि ष्पन्नःसुरभिःशिशिरात्मकः ॥ ७९ ॥ वसन्तोमाधवोग्रीष्मोनभः स्थोबीजवाहनः॥अङ्गिरागुरुरात्रेयो विमलोविश्ववाहनः॥८०॥पा वनःपुरुजिच्छक्रस्त्रैविद्योनरवारणः ॥ मनोबुद्धिरहङ्कारःक्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः ॥ ८१॥ जमदग्निर्ज्जलनिधिर्व्विगोलोविश्वगोलकः॥ अघराऽनुत्तरोयज्ञःश्रेष्ठोनिःश्रेयसालयः ॥ ८२ ॥ शैलोगगन कुन्दाभोदानवारिररिन्दमः ॥ चामुण्डाजीवकश्चारुनिःशल्यो लोककल्पधृक् ॥ ८३ ॥ चतुर्व्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुराप्रि यः ॥ आम्नायोऽथसमाम्नायस्तीर्त्थदेवशिवालयः ॥ ८४ ॥ ब हुरूपोमहारूपःसर्व्वरूपश्चराचरः ॥ नयनिर्म्मायकोन्यायोन्या

यगम्योनिरञ्जनः ॥ ८५ ॥ सहस्रमूर्द्धादेवेन्द्रःसर्व्वशास्त्रप्रभञ्ज नः ॥ मुण्डोविरूपोविक्रेतोदण्डीताण्डगुणोत्तमः ॥ ८६ ॥ पिङ्गलाक्षोहयग्रीवोनीलग्रीवोनिरामयः ॥ सहस्रबाहुःसर्व्वेशःशरण्यःसर्व्वलोकधृक् ॥ ८७ पद्मासनऽपरञ्ज्योतिःपरम्पारम्परम्फलम् ॥ पद्मगर्भोमहागर्भो विश्वगर्भोविचक्षणः ॥ ८८ ॥ चराचरज्ञोवरदोवरेशस्तुमहास्वनः ॥ देवासुरगुरुर्देवोदेवासुरनमस्कृतः ॥ ८९ ॥ देवासुरमहामित्रोदेवासुरमहाश्रमः ॥ देवादिदेवोदेवोग्निर्देवासुरवरप्रदः ॥ ९० ॥ देवासुरेश्वरोदिव्योदेवासुरमहेश्वरः ॥ देवदेवोमहाचिन्त्योदेवतात्मात्मसम्भवः ॥ ९१ ॥ सद्योनष्टासुरव्याघ्रोदेवसिंहोदिवाकरः ॥ विबुधाग्रचरःश्रेष्ठःसर्व्वदेवोत्तमोत्तमः ॥ ९२ ॥ शिवज्ञानप्रदःश्रीमाञ्छिखीश्रीपर्व्वतप्रियः ॥ वज्रहस्तःसिद्धखड्गीनरसिंहनिपातनः ॥९३॥ ब्रह्मचारीलोकचारीधर्म्मचारीधनाधिपः ॥ नन्दीनन्दीश्वरोनन्दोलग्नवृत्तिधरः शुचिः॥९४॥ लिङ्गाध्यक्षःसुराध्यक्षोयोगाध्यक्षोयुगावहः ॥ स्वर्द्धामास्वर्ग्गतःस्वामीस्वरःस्वरतमस्वनः ॥९५॥ बोधाध्यक्षोबीजकर्त्ताधर्म्मकृद्धर्म्मसम्भवः ॥ दम्भोलोभोथवैशम्भुस्सर्व्वभूतमहेश्वरः ॥ ९६ ॥ श्मशाननिलयस्त्र्यक्षःसेतुरप्रातिमाकृतिः ॥ लोकोत्तरःस्फुटालोकस्त्र्यम्बकोनागभूषणः ॥ ९७ ॥ अन्धकारिर्म्मयद्वेषीविष्णोःस्कन्धरतात्मकः ॥ हितदश्वक्षयगुणोदक्षारिः पूषदन्ताभित् ॥ ९८ ॥ पूर्ज्जनिःखण्डपरशुःसकलोनिष्कलोमुनिः ॥ अकालःसकलाधारःपाण्डुरोगोमृगोनगः ॥ ९९ ॥ पूर्ण्णऽपूरयितापुण्यःसुकुमार सुलोचनः ॥ सङ्गोगेयःप्रियाक्रूरःपुण्यकीर्त्तिरनामयः ॥ १०० ॥ मनोजवस्तीर्थकरोजटिलोजीवितेश्वरः ॥ जीवितान्तकरोनित्योवसुरेतावसुप्रदः ॥ १०१ ॥ सुजातिःसत्कृतिःसिद्धिःसजातिऽकालकण्टकः ॥ कलाधरोमहाकाल

भूतःसत्यपरायणः ॥ १०२ ॥ लोकलावण्यकर्त्ताचलोकोत्तरसुखालयः ॥ तेजोमयेद्युतिधरोलोकमानाग्राणीरणुः ॥ १०३ ॥ शुचिस्मितःप्रसन्नात्मअजेयोदुरतिक्रमः ॥ ज्योतिर्म्मयोनीरुजाङ्गोगङ्गाप्रेष्टोजलेश्वरः ॥१०४॥ तुम्बवीणोमहाकायोविशोकःशोकनाशनः ॥ त्रिलोकपात्रिलोकेशःसर्व्वशुद्धिरधोक्षजः ॥१०५॥ अव्यक्तलक्षणोदेवोव्यक्तोऽव्यक्तोविशाम्पतिः ॥ परःशिवोवसुर्न्नासासारोमानन्दनोमयः ॥१०६॥ब्रह्माविष्णुःप्रजापालेहंसोहंसगतिर्व्वयः ॥ वेधाविधातास्रष्टाचसंहर्त्ताचचतुर्म्मुखः॥१०७॥कैलासशिखरावासीसर्व्वावासीसदागतिः ॥ हिरण्यगर्भोद्रुहिणोभूतनाथोऽथभूपतिः॥१०८॥सद्योगीयोगविद्योगीवरदोब्राह्मणप्रियः॥ देवप्रियोदेवनाथोदेवकोदेवचिन्तकः ॥ १०९ ॥ विषमाक्षोविरूपाक्षोवृषभोवृषवर्द्धनः ॥ निर्म्ममोनिरहङ्कारोनिर्म्मोहोनिरुपद्रवः ॥ ११०॥ दर्पहादर्प्पदोदृप्तःसर्वार्त्थपरिवर्त्तकः ॥ सहस्रजित्सहस्रार्च्चिःस्निग्धप्रकृतिदक्षिणः ॥१११॥भूतभव्यभवोनाथःप्रभवोभूतिनाशनः॥अर्त्थोऽनर्त्थोमहाकोशःपरकार्य्यैकपण्डितः॥११२ निष्कण्टकःकृतानन्दोनिर्व्याजोव्याजमर्द्दनः ॥ सत्त्ववान्सात्त्विकिःसत्यःकीर्त्तिस्नेहःकृतागतः ॥ ११३ ॥ अकम्पितोगुणग्राहीनैकात्मानैककर्म्मकृत् ॥ सुप्रीतःसुमुखःसूक्ष्मःसुकरोदाक्षिणानिलः ॥ ११४ ॥ नन्दिस्कन्दधरोधुर्य्यःप्रकटःप्रीतिवर्द्धनः ॥ अपराजितःसर्व्वसत्वोगोविन्दःसत्ववाहनः ॥ ११५ ॥ अधृतःस्वधृतः सिद्धःपूतमूर्त्तिर्य्यशोधनः ॥ वाराहश्रृङ्गधृक्शूरोबलवानेकनाथकः ॥ ११६ ॥ श्रुतिप्रकाशःश्रुतिमानेकबन्धुरनेककृत् ॥ श्रीवत्सलःशिवारम्भःशान्तभद्रःसमोयशः ॥ ११७॥ भूयशोभूषणोभूतिर्भूतकृद्भूतिभावनः ॥ अकम्पोभक्तिकायस्तुकालहानिष्कलेश्वरः ॥ ११८ ॥ सत्यव्रतोमहात्यागी नित्यशान्तिः

परायणः ॥ परार्त्थवृत्तिर्व्वरदोविविक्षुस्तुविशारदः ॥११९॥ शुभदःशुभकर्त्ताचशुभनामाशुभःस्वयम् ॥ अनर्त्थितोगुणग्राहीअकर्त्ताकनकप्रभः॥१२०॥ स्वभावभद्रोमध्यस्थःशत्रुघ्नोविघ्ननाशनः॥शिखण्डीकवचीशूलीजटीमुण्डीचकुण्डली॥१२१॥अमृत्युःसर्व्वदृक्सिंहस्तेजोराशिर्म्महामणिः॥असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मावीर्य्यवान्वीर्य्यकोविदः ॥ १२२ ॥ वैद्यश्चैवावियोगीचसप्तवीरोमुनीश्वरः ॥ अनुक्रमोदुराधर्षोमधुरःप्रियदर्शनः ॥ १२३ ॥सुरेशस्तारणःसर्व्वशब्दःप्रतपताङ्गतिः ॥ १२४ ॥ कालक्षयःकालकारीसुकृतिःकृतवासुकिः ॥ १२५ ॥ महेष्वासोमहीभर्त्तानिष्कलङ्कोविशृङ्खलः ॥ द्युमणिस्तरणिर्द्धन्यःसिद्धिदःसिद्धिसाधनः ॥ ॥ १२६ ॥ विवृतःसँवृतस्तुत्योव्यूढोरस्कोमहाभुजः ॥ सर्व्वयोनिर्न्निरातङ्कोनरनारायणप्रियः ॥ १२७॥ निर्लेपोनिःप्रसङ्गात्मानिर्व्यङ्गोव्यङ्गनाशनः ॥ स्तव्यःस्तवप्रियःस्तोताव्यासमूर्त्तिर्न्निराकुलः॥ १२८ ॥ निरवद्यपदोपायोविद्याराशिरसत्कृतः॥ प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्णः सम्प्रहानित्यसुन्दरः ॥ १२९ ॥ पापहाधर्म्मधात्रीशः साकल्पः शर्व्वरीपतिः ॥ परमार्त्थगुरुर्द्दृष्टिःसुरैराश्रितवत्सलः ॥ १३० ॥ सोमोरसज्ञोरसदःसर्व्वसत्वावलम्बनः ॥ एवन्नाम्नांसहस्रेणतुष्टाववृषभध्वजम् ॥ १३१ ॥ प्रार्त्थयामासशम्भुँव्वै पूजयामासशङ्करम् ॥ परीक्षार्त्थंहरेरीशःकमलेषुमहेश्वरः ॥ १३२ ॥ गोपयामासकमलन्तदेकम्भुवनेश्वरः ॥ हृदिविचारितन्तेनकुतोवैकमलङ्गतम् ॥ १३३ ॥ यातुयातुमुखेनैवनेत्राङ्किङ्कमलन्नहि ॥ तदेकवमलङ्कृत्वायजामिचन्द्रशेखरम् ॥१३४॥ इत्येवंहृदयंज्ञात्वाविष्णोरमिततेजसः ॥ मामेतिव्याहरन्नेवप्रादुरासीज्जगद्गुरुः ॥ १३५ ॥ यत्रैवचकृतापूजाकृष्णेनपरमात्मना ॥ तस्मादवततारांशुमण्डलात्पार्थिवस्यसः ॥ १३६ ॥ यथोक्तरूपि

णंशम्भुन्तेजोराशिंसमुत्थितम् ॥ नमस्कृत्यपुरःस्थित्वास्तुति ङ्कृत्वाविशेषतः ॥ १३७ ॥ प्रसन्नवदनोभूत्वाशम्भोश्चसम्मुखः स्थिताः ॥ इत्थम्भूतंहरिर्दृष्ट्वाकोटिभास्करभूषितम् ॥ १३८ ॥ प्रणमामीश्वरंशम्भुन्देवदेवञ्जनार्द्दनः ॥तदाप्राहमहादेवःप्रहसन्निव शङ्करः ॥ १३९ ॥ सम्प्रेक्ष्यमाणयाविश्वङ्कृताञ्जलिपुटास्थितम् ॥१४०॥शङ्करउवाच ॥ ज्ञातम्मयेदंसकलन्देवकार्य्यञ्जनार्दन ॥ सुदर्शनाख्यञ्चक्रञ्चददामितवशोभनम् ॥१४१॥ यद्रूपम्भवता दृष्टं सर्व्वलोकसुखावहम् ॥ हितायसर्व्वदेवेशकृतम्भावयसुव्रत ॥ १४२ ॥ रणाजावपिसंस्मृत्यदेवानान्दुःखनाशनम् ॥ इदञ्च क्रमिदंरूपमिदन्नामसहस्रकम् ॥ १४३ ॥ येशृण्वन्तिसदाभक्त्या सिद्धिःस्यादनपायिनी ॥ एवमुक्त्वाददौचक्रं सूर्य्यायुतसमप्रभ म् ॥ १४४ ॥ विष्णुरपिचसंस्नात्वाजग्राहोदङ्मुखस्तदा ॥ नमस्कृत्यतदादेवम्पुनर्व्वचनमब्रवीत् ॥ १४५ ॥ शृणुदेवमया ध्येयम्पठनीयञ्चकिम्प्रभो ॥ लोकानान्दुःखनाशार्थंव्वदत्वँल्लो कशङ्कर ॥ १४६ ॥ इतिपृष्टस्तदातेन सन्तुष्टस्तुशिवोऽब्रवी त् ॥ रूपन्ध्येयम्मदीयँव्वै सर्व्वानर्थविनाशनम् ॥ १४७ ॥ अनेकदुःखनाशार्थम्पाठयन्नामसहस्रकम् ॥ धार्य्यञ्चक्रं ॥ सदामेऽद्यसर्व्वानर्थप्रशान्तये ॥ १४८॥ अन्येचयेपठिष्यन्तिपा ठयिष्यन्तिनित्यशः॥ तेषान्दुःखन्नस्वप्नेपिजायतेनात्रसंशयः ॥ ॥ १४९ ॥ राज्ञाञ्चसङ्कटेप्राप्ते शतवारम्पठेद्यदि ॥ साङ्गञ्चवि धियुक्तञ्चकल्याणल्लभतेनरः ॥ १५० ॥ रोगनाशकरञ्चैतद्विद्या नायकमुत्तमम् ॥ यमुद्दिश्यफलश्रेष्ठम्पाठिष्यन्तिनरास्त्विह ॥ ॥१५१॥ लभन्तेनात्रसन्देहः फलंसत्यमनुत्तमम् ॥ ममप्रातःस मुत्थायपूजाङ्कृत्वामदीयकम् ॥ १५२ ॥ पठतेमत्समक्षँव्वैनित्यं सिद्धिर्न्नदूरतः ॥ ऐहिकांसिद्धिमासाद्य परलोकसमुद्भवाम् ॥

॥ १५३ ॥ प्राप्नोतिपाठकोनित्यम्मत्प्रसादात्सुरेश्वर सायुज्यां मुक्तिमायाति नात्रकार्य्याविचारणा ॥ १५४ ॥ एवमुक्तातदा विष्णुंशङ्करःप्रीतमानसः ॥ उपस्पृश्यकराभ्यांहि उवाचशङ्करः पुनः ॥ १५५ ॥ वरदोऽस्मिसुरश्रेष्ठवरान्वृणुयथेप्सितान् ॥ भक्त्यावशीकृतोनूनंस्तवेनानेनतेतदा ॥ १५६ ॥ इत्युक्तोदेवदेवेनदेवदेवम्प्रणम्यतम् ॥ यथेदानीङ्कृपादेवाक्रियतेचाप्यतःपरम् ॥ १५७ कार्य्याचैवविशेषेणकृपालुत्वात्त्वयाप्रभो ॥ त्वयिभक्तिर्म्महादेवप्रसीदवरमुत्तमम् ॥ १५८ ॥ नान्यदिच्छामिभक्तानामार्त्तिर्न्नैवभवेत्प्रभो ॥ तच्छ्रुत्वावचनन्तस्यदयावान्सुतराम्भवः ॥ १५९ ॥ परस्पर्शंचतदातस्मै श्रद्धांशीतांशुलक्षणः ॥ प्राहत्वैनम्महादेवः परमानन्दमच्युतम् ॥ १६० ॥ मयिभक्तिश्चवन्द्यश्च पूज्यश्चैवसुरैरपि ॥ विश्वम्भरस्त्वदीयँवै नामपापहरम्परम् ॥ १६१ ॥ भविष्यतिनसन्देहोमत्प्रसादात्सुरोत्तम ॥ इत्युक्त्वान्तर्द्दधेरुद्रोभगवान्नीललोहितः ॥ १६२ ॥ जनार्द्दनोपिभगवान्वचनाच्छङ्करस्यच ॥ प्राप्यचक्रंशुभन्ध्यानंस्तोत्रमेतन्निरतरम् ॥ १६३ ॥ पपाठाध्यापयामासभक्तैस्तदुपपादितम् ॥ अन्येऽपियेपठिष्यन्तितेविन्दन्तु तथाफ़लम् ॥ २६४ ॥ इतिपृष्टंसमायातंशृण्वताम्पापहारकम् ॥ अतःपरञ्चकिंश्रेष्ठाःकथयामिवचःपुनः ॥ १६५ ॥ इतिशिवसहस्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

इति शाक्तप्रमोदे शिवतन्त्रं समाप्तम् ॥

श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

पञ्चदशं

गणेशतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९६० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

शाक्तप्रमोदः ॥

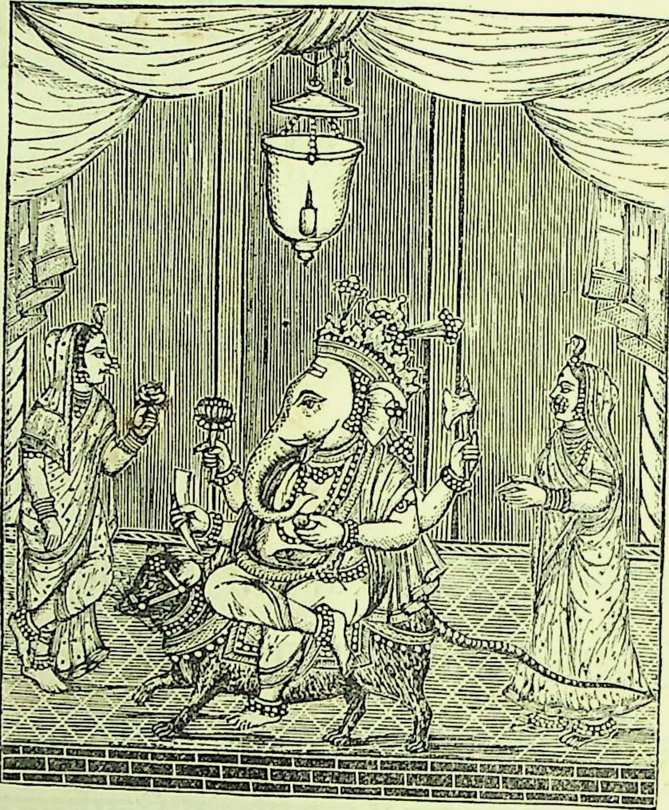
अथ गणेशतन्त्रम् ॥



अथश्रीगणेशध्यानम् ॥

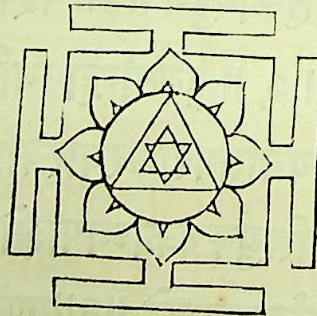
नवरत्नमयन्द्वीपंस्मरेदिक्षुरसाम्बुधौ ॥ तद्वीचिधौतपर्यन्तम्म न्दमारुतसेवितम् ॥ १ ॥ मन्दारपारिजातादिकल्पवृक्षलताकुल म् ॥ उद्भूतरत्नच्छायाभिररुणीकृतभूतलम् ॥ २ ॥ उद्यद्दिनकरे न्दुभ्यामुद्भासितदिगन्तरम् ॥ तस्यमध्येपारिजातन्नवरत्नमयंस्म रेत् ॥ ३ ॥ ऋतुभिःसेवितंषड्भिरनिशम्प्रीतिवर्द्धनैः ॥ तस्याध स्तान्महापीठेरचितेमातृकाम्बुजे ॥४॥ षट्कोणान्तस्त्रिकोणाढ्य म्महागणपतिंस्मरेत् ॥ ५ ॥ हस्तीन्द्राननमिन्दुचूडमरुणच्छाय न्त्रिनेत्रंरसादाश्लिष्टम्प्रिययासपद्मकरयास्वाङ्कस्थयासन्ततम् ॥ बीजापूरगदाधनुस्त्रिशिखियुक्चक्राब्जपाशोत्पलव्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशौहस्तैर्वहन्तम्भजे ॥६॥गण्डपालीगलद्दानपूरला लसमानसान्॥द्विरेफान्कर्णतालाभ्याँव्वारयन्तम्मुहुर्म्मुहुः ॥७॥ कराग्रधृतमाणिक्यकुम्भवक्त्रविनिस्सृतैः॥रत्नवर्षैःप्रीणयन्तंसा

धकम्मदविह्वलम् ॥८॥ माणिक्यमुकुटोपेतंरत्नाभरणभूषितम् ॥



अथ यन्त्रोद्धारः ॥

षट्कोणञ्चत्रिकोणञ्चतद्बहिःअन्यत्सर्व्वम्मातृकायन्त्रवत् ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

श्रीशक्तिस्मरभूविघ्नबीजानिप्रथमँव्वदेत् ॥ ङेन्तङ्गणपतिम्प श्चाद्वरान्तेवरदम्परम् ॥ उक्त्वासर्व्वजनम्मेन्तेवशमानयठद्वय म् ॥ अष्टाविंशत्यक्षरोयन्तारार्द्योमनुरीरितः ॥

अथमन्त्रः ॥

ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ ग्लौँगंगणपतयेवरवरदसर्वंजनम्मेवशमानयठःठः ।

अथपूजाप्रयोगः ॥

प्रातःकृत्यादिपीठन्यासान्ताँव्विधायपूर्व्वोक्तपीठशक्तीर्व्विन्यस्य ॥ तद्यथा ॥ केशरेषुमध्येच ॥ तीव्रायै० ज्वालिन्यै० नन्दायै० भोगदायै० कामरूपिण्यै० उग्रायै० तेजोवत्यै० सत्यायै० विघ्ननाशिन्यै० तदुपरिमध्येसर्व्वशक्तिकमलासनायनमः ॥ सर्व्वत्रप्रणवादिनमोऽन्तेनपूजयेत् ॥ ततऋष्यादिन्यासमाचरेत् ॥ शिरसिगणकऋषयेनमः ॥ मुखेनिचृद्गायत्रीछन्दसेनमः ॥ हृदिगणपतयेदेवतायैनमः ॥ ततःकराङ्गन्यासौ ॥ ॐ श्रींह्रींक्लीं ग्लौंगंगांअङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ॥ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगंगींतर्ज्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ६ ॥एवंगूंमध्यमाभ्याँव्वषट् ॥ ६॥गैंअनामिकाभ्यांहूम् ॥६॥ गौंकानिष्ठाभ्यँव्वौषट् ॥६॥गःकरतलकरपृष्ठाभ्याम्फट् ॥ एवंहृदयादिषु ॥ केचित्तु ॐ गांहृदयायनमःश्रींगींशिरसेस्वाहेतितत्वषड्बीजस्थस्वबीजेनदीर्घभाजाप्रकल्पयेत् ॥ इतिवचनाद्विशिष्टस्यैवग्रहणात् ॥

अथषोडशोपचारक्रमेणपूजाविधिः ॥

अथध्यानम् ॥एकदन्तंशूर्प्पकर्ण्णङ्गजवक्त्रञ्चतुर्भुजम् ॥पाशाङ्कुशधरन्देवम्मोदकान्बिभ्रतङ्करैः ॥ रक्तपुष्पमयीम्मालाङ्कण्ठेहस्तेपरांशुभाम् ॥भक्तानाँव्वरदंसिद्धिबुद्धिभ्यांसेवितंसदा ॥सिद्धिबुद्धिप्रदंनृणान्धर्म्मार्त्थकाममोक्षदम् ॥ब्रह्मरुद्रहरीन्द्राद्यैस्संस्तुतम्परमर्षिभिः ॥इतिध्यानम् ॥ अथावाहनम् ॥ आगच्छजगदाधारसुरासुरवरार्च्चित ॥ अनाथनाथसर्व्वज्ञगीर्व्वाणपरिपूजित ॥ इत्यावाहनम् ॥ अथासनम् ॥ स्वर्ण्णसिंहासनन्दिव्यन्नानारत्नसमन्वित

म् ॥ समर्प्पितम्मयादेवतत्रत्वंसमुपाविश ॥ इत्यासनम् ॥ अथपाद्यम्॥ देवदेवेशसर्व्वेशसर्व्वतीर्त्थाहृतञ्जलम् ॥ पाद्यङ्गृहाणगणपगन्धपुष्पाक्षतैर्य्युतम् ॥ इतिपाद्यम् ॥ अथार्घ्यम् ॥ प्रवालमुक्ताफलपूगरत्नताम्बूलजाम्बूनदमष्टगन्धम् ॥ पुष्पाक्षतायुक्तममोघशक्तेदत्तम्मयार्घ्यंसफलीकुरुष्व ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ अथाचमनीयम्॥ गङ्गादिसर्व्वतीर्त्थेभ्यःप्रार्त्थितन्तोयमुत्तमम् ॥ कर्प्पूरैलालवङ्गादिवासितंस्वीकुरुप्रभो ॥ इत्याचमनीयम् ॥ चम्पकाशोकबकुलमालतीमल्लिकादिभिः ॥ वासितंस्निग्धताहेतुन्तैलञ्चारुप्रगृह्यताम् ॥ इतितैलम् ॥ अथदुग्धस्नानम् ॥ कामधेनुसमुद्भूतंसर्व्वेषाञ्जीवनम्परम् ॥ पावनंयज्ञहेतुन्तेपयःस्नानात्थमर्प्पितम् ॥ इतिदुग्धस्नानम् ॥ अथदधिस्नानम् ॥ धेनुदुग्धसमुद्भूतंशुद्धंसर्व्वगतप्रियम् ॥ मयानीतन्दधिवरंस्नानार्त्थम्प्रातिगृह्यताम् ॥ इतिदधिस्नानम् ॥ अथघृतस्नानम् ॥ नवनीतसमुत्पन्नंसर्व्वसन्तोषकारणम् ॥ यज्ञाङ्गन्देवताहारङ्घृतंस्नातुंसमर्प्पितम् ॥ इतिघृतस्नानम् ॥ अथमधुस्नानम् ॥ रक्तसारघसम्भूतंसर्व्वतेजोविवर्द्धनम् ॥ सर्व्वपुष्टिकरन्देवमधुस्नानार्त्थमर्प्पितम् ॥ इतिमधुस्नानम् ॥ अथशर्क्करास्नानम् ॥ इक्षुसारसमुद्भूतांशर्क्करांसुमनोहराम् ॥ मलापहारिणींस्नातुङ्गृहाणत्वम्मयार्प्पिताम् ॥ इतिशर्क्करास्नानम् ॥ अथगुडस्नानम् ॥ सर्व्वमाधुर्य्यताहेतुस्स्वादुस्सर्व्वप्रियङ्करः ॥ पुष्टिकृत्स्नातुमानीतइक्षुसारभवोगुडः ॥ इतिगुडस्नानम् ॥ अथमधुपर्क्कः ॥ कांस्येकांस्येनपिहितोदधिमध्वाज्यपूरितः ॥ मधुपर्क्कोमयानीतःपूजार्त्थम्प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिमधुपर्क्कः ॥ अथशुद्धोदकस्नानम् ॥ सर्व्वतीर्त्थाहृतन्तोयम्मयाप्रार्त्थनयाविभो ॥ सुवासितङ्गृहाणेदंसम्यक्स्नातुंसुरेश्वर ! ॥ इतिशुद्धोदकस्नानम् ॥ अथवस्त्रम् ॥ रक्तवस्त्रयुगन्देवलोकलज्जा

निवारणम् ॥ अनर्घ्यमतिसूक्ष्मञ्चगृहाणेदम्मयार्प्पितम् ॥ इतिवस्त्रम् ॥ अथोपवीतम् ॥ राजतम्ब्रह्मसूत्रञ्चकाञ्चनंरक्तसँय्युतम् ॥ भक्त्योपपादितन्देवगृहाणपरमेश्वर ॥ इतियज्ञोपवीतम् ॥ अथभूषणम् ॥ अनेकरत्नयुक्तानिभूषणानिबहूनिच ॥ तत्तदङ्गेकाञ्चनानियोजयामितवाज्ञया ॥ इतिभूषणानि ॥ अथचन्दनम् ॥ अष्टगन्धसमायुक्तंरक्तचन्दनमुत्तमम् ॥द्वादशाङ्गेषुतेदेवलेपयामिकृपाङ्कुरु ॥ इतिचन्दनम् ॥ अथाक्षताः ॥ रक्तचन्दनसंमिश्रांस्तन्दुलांस्तिलकोपरि ॥ शोभार्थैसम्प्रदास्यामिगृहाणपरमेश्वर ॥ इत्यक्षताः ॥ अथपुष्पाणि ॥ पाटलङ्कर्णिकारञ्चबन्धूकंरक्तपङ्कजम् ॥ मोगरम्मालतीपुष्पङ्गृहाणसुमनोहरम् ॥ इतिपुष्पाणि ॥अथधूपः ॥ दशाङ्गङ्गुग्गुलन्धूपंसर्व्वसौगन्ध्यकारकम् ॥ सर्व्वपापक्षयकरन्त्वङ्गृहाणमयार्प्पितम् ॥ इतिधूपः॥अथदीपः ॥ सर्व्वज्ञसर्व्वलोकेशतमोनाशनमुत्तमम् ॥ गृहाणमङ्गलन्दीपन्देवदेवनमोऽस्तुते ॥ इतिदीपः ॥ अथनैवेद्यानि ॥ नानापक्वान्नसँय्युक्तम्पायसंशर्करान्वितम् ॥ नानाव्यञ्जनशोभाढ्यंशाल्योदनमनुत्तमम् ॥ दधिदुग्धघृतैर्य्युक्तँल्लवङ्गैलासमन्वितम् ॥ मरीचिचूर्णसहितक्काथिकावटकान्वितम् ॥राजिकाधान्यसँय्युक्तम्मेथीपिष्टंसतक्रकम् ॥ हिङ्गुजीरककूष्माण्डम्मरीचिमाषपिष्टकैः ॥ सम्पादितैः सुपक्वैश्चभर्ज्जितैर्व्वटकैर्य्युतम् ॥ मोदकापूपलड्डूकशष्कुलीमण्डकादिभिः ॥ पर्प्पटैरापसँय्युक्तन्नैवेद्यममृतान्वितम् ॥ हरिद्राहिङ्गुलवणसहितंसूपमुत्तमम् ॥ ससामुद्रङ्गृहाणेदम्भोजनङ्कुरुसादरम् ॥ इतिनैवेद्यानि ॥ अथाचमनीयम् ॥ सुतृप्तिकारकन्तोयंसुगन्धञ्चापिवेच्छया ॥ त्वयितृप्तेजगत्तृप्तन्नित्यतृप्तेमहात्मनि ॥ उत्तरापोशनार्थन्तेदद्मितोयंसुवासितम् ॥ मुखपाणिविशुद्ध्यर्थम्पुनस्तोयन्ददामिते ॥ इत्याचमनीयम् ॥

अथफलानि ॥ दाडिमम्मधुरान्निम्बुजम्ब्वाम्रपनसादिकम् ॥ द्राक्षारम्भाफलम्पक्वङ्कर्कन्धूःखार्जुरम्फलम् ॥ नारिकेलञ्चनारिङ्गमञ्जिरञ्जम्भिरन्तथा ॥ उर्व्वारुकञ्चदेवेशफलान्येतानिगृह्यताम् ॥ इतिफलानि ॥ अथसाचमनीयङ्करोद्वर्त्तनादिकम् ॥ मुखपाणिविशुद्धचर्त्थम्पुनस्तोयन्ददामिते ॥ गृहाणचन्दनञ्चारुकराङ्गोद्वर्त्तनंशुभम् ॥ नानापरिमलद्रव्यैर्न्निर्म्मितञ्चूर्ण्णमुत्तमम् ॥ सुगन्धिनामकम्पुण्यगान्धिचारुप्रगृह्यताम् ॥ इतिकरोद्वर्त्तनम् ॥ अथ सिन्दूरम् ॥ चारुशालूरसम्भूतँव्वंशसारसमुद्भवम् ॥ सीमन्तभूषणञ्चूर्ण्णँल्लाक्षाराञ्जितमस्तुते ॥ इतिसिन्दूरम् ॥ अथ ताम्बूलम् ॥ सचन्द्रपूगचूर्ण्णाढ्यङ्काद्यखादिरसँय्युतम् ॥ एलालवङ्गसंमिश्रन्ताम्बूलङ्केसरान्वितम् ॥ इतिताम्बूलम् ॥ अथ द्रव्यम् ॥ न्यूनातिरिक्तपूजायाःसम्पूर्ण्णफलहेतवे ॥ दाक्षिणाङ्काञ्चनीन्देवस्थापयामितवाग्रतः॥इतिदक्षिणा ॥ अथमाला ॥ सितपीतैस्तथारक्तैर्ज्जलजैःकुसुमैःशुभैः ॥ ग्रथितांसुन्दराम्मालाङ्गृहाणपरमेश्वर ॥ इतिमाला ॥ अथदूर्व्वाः ॥ हारिताश्श्वेतवर्ण्णावापञ्चात्रिपत्रसँय्युताः ॥ दूर्वाङ्कुरामयादत्ताएकविंशतिसम्मिताः ॥ इतिदूर्व्वाः ॥ अथप्रदक्षिणाः ॥ एकविंशतिसङ्ख्याकाः कुर्य्यांदेवप्रदक्षिणाः ॥ पदेपदेतेदेवेशनश्यन्तुपातकानिमे ॥ इति प्रदक्षिणा ॥ अथारार्त्तिकम् ॥ औदुम्बरेराजतेवाकांस्येकाञ्चनसम्भवे ॥ पात्रेप्रकल्पितान्दीपान्गृहाणचक्षुरर्प्पकान् ॥ पञ्चारार्त्तिम्पञ्चदीपैर्द्दीपिताम्परमेश्वर ॥ चारुचन्द्रनिभन्दीपङ्गृहाणवीचिवारणम् ॥ यथास्यनेक्ष्यतेभस्म तथापापँव्विनाशय ॥ इत्यारार्त्तिकम् ॥

इतिपूजाविधिः

अथगणेशस्तवराजः ॥

ॐतत्पुरुषायविद्महेवक्रतुण्डायधीमहि ॥ तन्नोदन्तिःप्रचोदयात् ॥ ॐकारमाद्यम्प्रवदन्तिसन्तो वाचःश्रुतीनामपियङ्गृणन्ति ॥ गजाननन्देवगणानताङ्घ्रिम्भजेहमर्द्धेन्दुकृतावतंसम् ॥ पादारविन्दार्च्चनतत्पराणांसंसारदावानलभङ्गदक्षम् ॥ निरन्तरन्निर्गतदानतोयैस्तन्नौमिविघ्नेश्वरमम्बुदाभम् ॥ कृताङ्गरागन्नवकुङ्कुमेन मत्तालिजालम्मदपङ्कलग्नम् ॥ निवारयन्तन्निजकर्ण्णतालैः कोविस्मरेत्पुत्रमनङ्गशत्रोः ॥ शम्भोर्ज्जटाजूटनिवासिगङ्गाजलंसमानीयकराम्बुजेन ॥ लीलाभिराराच्छिवमर्च्चयन्तङ्गजाननम्भक्तियुताभजन्ति ॥ कुमारभुक्तौपुनरात्महेतोःपयोधरौपर्व्वतराजपुत्र्याः ॥ प्रक्षालयन्तङ्करशीकरेणमौग्ध्येनतन्नागमुखम्भजामि ॥ तयासमुद्धृत्यगजस्यहस्तँय्येशीकराःपुष्कररन्ध्रमुक्ताः ॥ व्योमाङ्गणेतेविचरन्तितारःकालात्मनामौक्तिकतुल्यभासः ॥ क्रीडारतेवारिनिधौगजस्थेवेलामतिक्रामतिवारिपूरे ॥ कल्पावसानम्परिचिन्त्यदेवाःकैलासनाथंश्रुतिभिःस्तुवन्ति ॥ नागाननेनागकृतोत्तरीयेक्रीडारतेदेवकुमारसङ्घैः ॥ त्वयिक्षणङ्कालगतिंव्विहाय तौप्राप्तुःकन्दुकतामिनेन्दू ॥ मदोल्लसत्पञ्चमुखैरजस्रमध्यापयन्तंसकलागमार्थम् ॥ देवानृषीन्भक्तजनैकमित्रंहेरम्बमर्क्कारुणमाश्रयामि ॥ पादाम्बुजाभ्यामतिवामनाभ्याङ्कृतार्त्थयन्तङ्कृपयाधरित्रीम् ॥ अकारणङ्कारणमाप्तवाचान्तन्नागवक्त्रन्नजहातिचेतः ॥ येनार्प्पितंसत्यवतीसुतायपुराणमालिख्यविषाणकोट्या ॥ तच्चन्द्रमौलेस्तनयन्तपोभिराराध्यमानन्दघनम्भजामि ॥ पदंश्रुतीनामपदंस्तुतीनाँल्लीलावतारम्परमात्ममूर्त्तेः ॥ नागात्मकँव्वापुरुषात्मकँव्वात्वभेदमाद्यम्भजविघ्नराजम् ॥ पाशाङ्कुशौभग्नरदन्त्वभीष्टङ्करैर्द्दधानङ्कररन्ध्रमुक्तैः ॥ मुक्ताफलाभैःपृथुशी

करौघैःसिञ्चन्तमङ्गंशिवयोर्भजामि ॥ अनेकमेकङ्गजमेकदन्त ञ्चैतन्यरूपञ्जगदादिबीजम् ॥ ब्रह्मेतियँव्वेदविदोवदन्तितंशंभुसूनुं सततम्भजामि ॥ स्वाङ्कस्थितायानिजवल्लभायामुखाम्बुजालोक नलोलनेत्रम् ॥ स्मेराननाब्जम्मदवैभवेनरुद्धम्मजेविश्वविमोहन न्तम् ॥ येपूर्व्वमाराध्यगजाननन्त्वांसर्व्वाणिशास्त्राणिपठन्तिते षाम् ॥ त्वत्तोनचान्यत्प्रतिपाद्यमेतैस्तदस्तिचेत्सर्व्वमसत्यक ल्पम् ॥ हिरण्यवर्णञ्जगदीशितारङ्कविम्पुराणंरविमण्डलस्थम्॥ गजाननँय्यम्प्रविशन्तिसन्तस्तत्कालयोगैस्तमहम्प्रपद्ये ॥वेदान्त गीतम्पुरुषम्भजेहमात्मानमानन्दघनंहृदिस्थम् ॥गजाननँय्यन्म हसाजनानाँविघ्नान्धकारोविलयम्प्रयाति ॥ शम्भोस्समालोक्यज टाकलापेशशाङ्कखण्डान्निजपुष्करेण ॥ सुभग्नदन्तम्प्रविचिन्त्य मौग्ध्यादाक्रष्टुकामश्श्रियमातनोतु ॥विघ्नार्गलानाँव्विनिपातना र्त्थँय्यन्नारिकेलैःकदलीफलाद्यैः॥प्रसारयन्तम्मदवारणास्यम्प्रभुं सदाभीष्टमहम्भजेहम् ॥ यज्ञैरनेकैर्ब्बहुभिस्तपोभिराराध्यमाद्य ङ्गजराजवक्रम् ॥ स्तुत्यानयायेविधिवत्स्तुवन्तितेसर्व्वलक्ष्मीनि लयाभवन्ति ॥ इतिगणेशस्तवराजःसमाप्तः ॥

अथकवचम् ॥

ईश्वरउवाच ॥ शृणुवक्ष्यामिकवचंसर्व्वसिद्धिकरम्प्रिये ॥ प ठित्वापाठयित्वाचमुच्यतेसर्व्वसङ्कटात् ॥ अज्ञात्वाकवचन्देविग णेशस्यमनुञ्जपेत् ॥ सिद्धिर्न्नजायतेतस्यकल्पकोटिशतैरपि ॥ ॐ आमोदश्चशिरःपातुप्रमोदश्चशिखोपरि ॥ सम्मोदोभ्रूयुगेपा तुभ्रूमध्येचगणाधिपः ॥ गणक्रीडश्चक्षुर्युगन्नासायाङ्गणनायकः ॥ गणक्रीडाचितःपातुवदनेसर्व्वसिद्धये ॥ जिह्वायांसुमुखःपातु ग्रीवायान्दुर्म्मुखःसदा ॥ विघ्नेशोहृदयेपातु विघ्ननाशश्चवक्षसि ॥

गणानान्नायकः पातुबाहुयुग्मेसदामम ॥ विघ्नकर्त्ताच उदरेवि घ्नहर्त्ताचलिङ्गके ॥ गजवक्त्रः कटोदेशेएकदन्तोनितम्बके॥ लम्बो दरःसदापातुगुह्यदेशेममारुणः ॥ व्यालयज्ञोपवीतीमाम्पातुपाद युगेसदा॥जापकःसर्व्वदापातुजानुजङ्घेगणाधिपः॥ हारिद्रःसर्व्वदा पातुसर्व्वाङ्गेगणनायकः ॥यइदम्प्रपठेन्नित्यङ्गणेशस्यमहेश्वरि ॥ कवचंसर्व्वसिद्धाख्यंसर्व्वविघ्नविनाशनम् ॥ सर्व्वसिद्धिकरंसाक्षा त्सर्व्वपापविमोचनम्॥सर्व्वसम्पत्प्रदंसाक्षात्सर्व्वशत्रुक्षयङ्करम् ॥ ग्रहपीडाज्वरारोगायेचान्येगुह्यकादयः॥पठनाद्धारणादेवनाशमा यान्तितत्क्षणात् ॥ धनधान्यकरन्देविकवचंसुरपूजितम् ॥ समो नास्तिमहेशानित्रैलोक्येकवचस्यच ॥ हारिद्रस्यमहेशानिकव चस्यचभूतले॥ किमन्यैरसदालापैर्य्यत्रायुर्व्ययतामियात्॥ इति विश्वसारतन्त्रेगणेशकवचंसमाप्तम् ॥

अथोपनिषत् ॥

ॐ लंस्वाहानाववतुस्वाहा नौभुनक्तुस्वाहावीर्यंकरवावहै ॥ तेजस्विनावधीतमस्तुमाविद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिःशा न्तिःशान्तिः ॥ ॐलं नमस्तेगणपतये ॥ त्वमेवप्रत्यक्षंतत्त्वमसि ॥ त्वमेवकेवलंकर्त्तासि ॥ त्वमेवकेवलन्धर्त्तासि ॥ त्वमेवकेवलंह र्त्तासि ॥ त्वमेवसर्व्वंखल्विदम्ब्रह्मासि ॥ त्वंसाक्षादात्मासिनित्यं ॥ ऋतंवच्मि ॥ सत्यंवच्मि ॥ अवत्वंमाम् ॥ अववक्तारम् ॥ अ वश्रोतारम् ॥ अवदातारम् ॥ अवधातारम् ॥अवानूचानमवशिष्य म् ॥ अवपश्चात्तात् ॥ अवपुरस्तात् ॥ अवोत्तरात्तात् ॥ अवद क्षिणात्तात् ॥ अवचोर्द्ध्वात्तात् ॥ अवाधरात्तात् ॥ सर्व्वतोमाम्पा हिपाहिसमन्तात् ॥ त्वंवाङ्मयस्त्वञ्चिन्मयः ॥ त्वमानन्दमय स्त्वं ब्रह्ममयः ॥ स्त्वंसच्चिदानन्दाद्वितीयोसि ॥ त्वम्प्रत्यक्षम्ब्र

ज्ञासि ॥ त्वंज्ञामयो विज्ञानमयोऽसि ॥ सर्वंजगदिदन्त्वत्तोजायते ॥ सर्वंजगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति ॥ सर्वंजगदिदन्त्वयिलयमेष्यति ॥ त्वम्भूमिरापोनलोऽनिलोनभः ॥ त्वंचत्वारिवाक्पदानि ॥ त्वङ्गुणत्रयातीतः ॥ त्वन्देहत्रयातीतः ॥ त्वङ्कालत्रयातीतः॥ त्वंमूलाधारास्थितोऽसिनित्यम् ॥ त्वंशक्तित्रयात्मकः ॥त्वांयोगिनोध्यायन्तिनित्यम् ॥ त्वंब्रह्मा त्वंविष्णुस्त्वꣳरुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्य्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ गणादीन्पूर्वमुच्चार्य्यवर्णादींस्तदनन्तरम् ॥ अनुस्वारꣳपरतरः ॥ अर्द्धेन्दुलसितन्तारेणरुद्धम् ॥ एतत्तवमनुस्वरूपम् ॥ गकारꣳपूर्वरूपम् ॥ अकारोमध्यमरूपम्॥ अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् ॥ विन्दुरुत्तररूपम् ॥ नादःसन्धानम् ॥ संꣳहितासन्धिः ॥ सैषागणेशविद्या ॥ गणकऋषिर्निचृद्गायत्रीच्छन्दः ॥ गणपतिर्देवता ॥ ॐ गंगणपतयेनमः ॥ एकदन्तायविद्महेवक्रतुण्डायधीमहि ॥ तन्नोदन्तिःप्रचोदयात् ॥ एकदन्तञ्चतुर्हस्तम्पाशमङ्कुशधारिणम् ॥ रदंचवरदंहस्तैर्बिभ्राणम्मूषकध्वजम् ॥ रक्तंलम्बोदरंशूर्पकर्णकंरक्तवाससम् ॥ रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गंरक्तपुष्पैस्सुपूजितम् ॥ भक्तानुकम्पिनन्देवञ्जगत्कारणमच्युतम् ॥ आविर्भूतञ्चसृष्ट्यादौप्रकृतेꣳपुरुषात्परम् ॥ एवन्ध्यायतियोनित्यंसयोगीयोगिनाँव्वरः ॥ ॐनमोव्रातपतयेनमोगणपतयेनमꣳप्रमथपतये नमस्तेअस्तुलम्बोदरायैकदन्तायविघ्ननाशिनेशिवसुतायवरदमूर्त्तयेनमः ॥ एतदथर्वशीर्षंयोऽधीते ॥ सब्रह्मभूयायकल्पते ॥ ससर्वविघ्नैर्नबाध्यते ॥ ससर्वतःसुखमेधते ॥ सपञ्चमहापापात्प्रमुच्यते ॥ सायमधीयानोदिवसकृतंपापन्नाशयति ॥ प्रातरधीयानोरात्रिकृतंपापन्नाशयति ॥ सायम्प्रातꣳप्रयुञ्जानोअपापोभवति ॥ सर्वं

देवम्पुरारातिःपुरत्रयजयोद्यमे ॥ अनर्च्चनाद्गणेशस्यजातोविघ्ना कुलःकिल ॥ २ ॥ मनसासविनिर्द्धार्य्यततस्तद्विघ्नकारणम् ॥ ॥ महागणपतिम्भक्त्यासमभ्यर्च्यथाविधि ॥ ३ ॥ विघ्नप्रशमनो पायमपृच्छदपराजितः ॥ सन्तुष्टःपूजयाशम्भोर्म्महागणपतिः स्वयम् ॥ ४ ॥ सर्व्वविघ्नैकहरणंसर्व्वकामफलप्रदम् ॥ ततस्त स्मैस्वकन्नाम्नांसहस्रमिदमब्रवीत् ॥ ५ ॥ अस्यश्रीमहागणप तिसहस्रनाममालामन्त्रस्यगणेशऋषिः महागणपतिर्द्देवता ना नाविधानिच्छन्दांसि गमितिवीजन्तुण्डमितिशक्तिःस्वाहेतिकी लकम् सकलविघ्ननाशनद्वारामहागणपतिप्रीत्यर्त्थेजपेविनियो गः ॥ महागणपतिरुवाच ॥ ॐगणेश्वरोगणक्रीडोगणनाथो गणाधिपः ॥ एकदंष्ट्रोवक्रतुण्डोगजवक्रोमहोदरः ॥ ६ ॥ ल म्बोदरोधूम्रवर्ण्णोविकटोविघ्ननायकः ॥ सुमुखोदुर्म्मुखोबुद्धोवि घ्नराजोगजाननः ॥ ७ ॥ भीमःप्रमोदआमादःसुरानन्दोम दोत्कटः ॥ हेरम्बःशम्बरः शम्भुर्ल्लम्बकर्ण्णोमहाबलः ॥ ८ ॥ न न्दनोलम्पटोभीरुर्म्मेघनादोगणञ्जयः ॥ विनायकोविरूपाक्षो धीरःशूरोवरप्रदः ॥ ९ ॥ महागणपतिर्ब्बुद्धिप्रियःक्षिप्रप्रसादनः॥ रुद्रप्रियोगणाध्यक्षउमापुत्रोऽघनाशनः ॥ १० ॥ कुमारगुरु रीशानपुत्रोमूषकवाहनः ॥ सिद्धिप्रियःसिद्धिपतिःसिद्धःसिद्धि विनायकः ॥ ११ ॥ अविघ्नस्तुम्बरुःसिंहवाहनोमोहिनीप्रि यः ॥ कटङ्कटोराजपुत्रः शालकः सम्मितोमितः ॥ १२ ॥ कूष्माण्डसामसम्भूतिर्द्दुर्ज्जयोधूर्ज्जयोजयः ॥ भूपतिर्ब्भुवनपतिर्ब्भू तानाम्पतिरव्ययः ॥ १३ ॥ विश्वकर्त्ताविश्वमुखोविश्वरूपोनिधि र्घृणिः ॥ कविःकवीनामृषभोब्रह्मण्योब्रह्मणस्पतिः ॥ १४ ॥ ज्ये ष्ठराजोनिधिपतिर्न्निधिप्रियपतिप्रियः ॥ हिरण्मयपुरान्तस्थस्सू र्य्यमण्डलमध्यगः ॥ १५ ॥ कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलःपूष

दन्तभित् ॥ उमाङ्ककेलिकुतुकीमुक्तिदऽकुलपालनः ॥ १६ ॥ किरीटीकुण्डलीहारीवनमालीमनोमयः ॥ वैमुख्यहतदैत्यश्रीःपादाहतजितक्षितिः ॥ १७ ॥ सद्योजातः स्वर्णमुञ्जमेखलीदुर्न्निमित्तहृत् ॥ दुस्स्वप्नहृत्प्रसहनोगुणिनादप्रतिष्ठितः ॥ १८ ॥ सुरूपःसर्व्वनेत्राधिवासोवीरासनाश्रयः ॥ पीताम्बरऽखण्डरदः खण्डेन्दुकृतशेखरः ॥ १९ ॥ चित्राङ्गःश्यामदशनोभालचन्द्रश्चतुर्भुजः ॥ योगाधिपस्तारकस्थःपुरुषोगजकर्णकः ॥ ॥ २० ॥ गणाधिराजोविजयस्थिरोगजपतिर्द्ध्वजी ॥ देवदेवः स्मरप्राणोदीपकोवायुकीलकः ॥ २१ ॥ विपश्चिद्वरदोनादोनादभिन्नबलाहकः ॥ वराहरदनोमृत्युञ्जयोव्याघ्राजिनाम्बरः ॥ २२ ॥ इच्छाशक्तिधरोदेवत्रातादैत्यविमर्द्दनः ॥ शम्भुवक्त्रोद्भवःशम्भुकोपहाशम्भुहास्यभूः ॥ २३ ॥ शम्भुतेजाः शिवाशोकहारीगौरीसुखावहः ॥ उमाङ्गमलजोगौरीतेजोभूः स्वर्द्धुनीभवः ॥ २४ ॥ यज्ञकायोमहानादोगिरिवर्ष्माशुभाननः ॥ सर्व्वात्मासर्व्वदेवात्माब्रह्ममूर्द्धाककुप्श्रुतिः ॥२५॥ ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्व्योमभालः सत्याशिरोरुहः ॥ जगज्जन्मलयोन्मेषनिमिषोन्न्यर्कसोमदृक् ॥ २६ ॥ गिरीन्द्रैकरदोधर्म्मोधर्म्मिष्ठःसामबृंहितः ॥ ग्रहर्क्षदशनोवाणीजिह्वोवासवनासिकः ॥ २७ ॥ भ्रूमध्यसंस्थितकरोब्रह्मविद्यामदोत्कटः ॥ कुलाचलांसः सोमार्क्कघण्टोरुद्रशिरोधरः ॥ ॥ २८ ॥ नदीनदभुजःसर्प्पाङ्गुलीकस्तारकानखः ॥ व्योमनाभिःश्रीहृदयोमेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः॥२९॥ कुक्षिस्थयक्षगन्धर्व्वरक्षःकिन्नरमानुषः ॥ पृथ्वीकटिःसृष्टिलिङ्गःशैलोरुर्दस्रजानुकः ॥ ॥ ३० ॥ पातालजङ्घोमुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्त्रयीतनुः ॥ ज्योतिर्म्मण्डललाङ्गूलोहृदयालाननिश्चलः॥३१॥हृत्पद्मकर्णिकाशालीवियत्केलिसरोवरः ॥ सद्भक्तध्याननिगडःपूजावारिनिवारि

तः ॥ ३२ ॥ प्रतापीकश्यपसुतोगणपोविष्टपीवली ॥ यशस्वी धार्म्मिकःस्वोजाःप्रथमःप्रमथेश्वरः ॥ ३३ ॥ चिन्तामणिर्द्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः ॥ रत्नमण्डपमध्यस्थोरत्नसिंहासनाश्रयः॥३४॥तीव्राशिरोधृतपदोज्वालिनीमौलिलालितः ॥ नन्दानन्दितपीठश्रीभोगदाभूषितासनः ॥ ३५ ॥ सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः ॥ तेजोवतीशिरोरत्नंसत्यानित्यावतंसितः ॥ ३६ ॥ सविघ्ननाशिनीपीठः सर्व्वशक्त्यम्बुजाश्रयः ॥ लिपिपद्मासनाधारोवह्निधामत्रयाश्रयः ॥ ३७॥ उन्नतप्रपदागूढगुल्फसँव्वृतपार्ष्णिकः ॥ पीनजङ्घःश्लिष्टजानुः स्थूलोरुःप्रोन्नमत्कटिः ॥ ३८ ॥ निम्ननाभिःस्थूलकुक्षिःपीनवक्षावृहद्भुजः ॥ पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठोलम्बोष्ठोलम्बनासिकः ॥३९॥ भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तोमहाहनुः॥ ह्रस्वनेत्रत्रयःशूर्प्पकर्णोनिविडमस्तकः ॥ ४० ॥ स्तवकाकारकुम्भाग्रोरत्नमौलिर्न्निरङ्कुशः ॥ सर्प्पहारकटीसूत्रःसर्प्पयज्ञोपवीतवान् ॥ ४१ ॥ सर्प्पकोटीरकटकः सर्प्पग्रैवेयकाङ्गदः ॥ सर्प्पकक्ष्योदराबन्धःसर्प्पराजोत्तरीयकः ॥ ॥ ४२ ॥ रक्तोरक्ताम्बरधरोरक्तमाल्यविभूषणः ॥ रक्तेक्षणोरक्तकरोरक्तताल्वोष्ठपल्लवः ॥ ४३ ॥ श्वेतःश्वेताम्बरधरः श्वेतमाल्यविभूषणः ॥ श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः ॥ ॥ ४४ ॥सर्व्वावयवसम्पूर्णः सर्व्वलक्षणलक्षितः ॥ सर्व्वाभरणशोभाढ्यः सर्व्वशोभासमन्वितः ॥ ४५॥ सर्व्वमङ्गलमाङ्गल्यस्सर्वकारणकारणम् ॥ सर्व्वदैककरः शार्ङ्गीबीजपूरीगदाधरः ॥ ४६॥ इक्षुचापधरश्शूलीचक्रपाणिस्सरोजभृत् ॥ पाशीधृतोत्पलश्शालीमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत् ॥४७ ॥ कल्पवल्लिधरोविश्वाभयदैककरोवशी ॥ अक्षमालाधरोज्ञानमुद्रावान्मुद्गरायुधः ॥ ४८ ॥ पूर्णपात्रीकम्बुधरोविधृतालिसमूहकः ॥ मातुलिङ्गधरश्चूतकलिका

भृत्कुठारवान् ॥ ४९ ॥ पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकः भारतीसुन्दरीनाथोविनायकरतिप्रियः ॥ ५० ॥ महालक्ष्मीप्रियतमस्सिद्धलक्ष्मीमनोरमः ॥ रमारमेशपूर्वाङ्गोदक्षिणोमामहेश्वरः ॥ ५१ ॥ महीवराहवामाङ्गोरतिकन्दर्प्पपश्चिमः ॥ आमोदमोदजननःसप्रमोदप्रमोदनः॥५२॥ सामेधितासमृद्धिश्रीर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्त्तकः ॥दत्तसौमुख्यसुमुखःकान्तिकन्दलिताश्रयः ॥५३ ॥ मदनावत्याश्रिताङ्घ्रिःकृतदौर्म्मुख्यदुर्म्मुखः॥ विघ्नसम्पल्लवोपघ्नस्सेवोन्निद्रमदद्रवः ॥ ५४ ॥ विघ्नकृन्निघ्नचरणोद्राविणीशक्तिसत्कृतः ॥ तीव्राप्रसन्ननयनोज्वालिनीपालितैकदृक् ॥ ५५॥ मोहिनीमोहनोभोगदायिनीकान्तिमण्डितः ॥ कामिनीकान्तवक्त्रश्रीरधिष्ठितवसुन्धरः ॥ ५६ ॥ वसुन्धरामदोन्नद्धमहाशङ्खनिधिःप्रभुः ॥ नमद्वसुमतीमौलीमहापद्मनिधिप्रभुः ॥ ५७ ॥ सर्व्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः ॥ ईशानमूर्द्धादेवेन्द्राशिखःपवननन्दनः ॥ ५८ ॥ अग्रप्रत्यग्रनयनोदिव्यास्त्राणाम्प्रयोगवित् ॥ ऐरावतादिसर्व्वाशावारणावरणप्रियः ॥ ५९ ॥ वज्राद्यस्त्रपरीवारोगणचण्डसमाश्रयः ॥ जयाजयपरीवारोविजयाविजयावहः ॥ ६० ॥ अजिताजितपादाब्जोनित्यानित्यावतंसितः ॥ विलासिनीकृतोल्लासःशौण्डिसौन्दर्य्यमण्डितः ॥ ६१ ॥ अनन्तानन्तसुखदःसुमङ्गलसुमङ्गलः॥इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिनिषेवितः ॥६२ सुभगासंश्रितपदोलालितालतिताश्रयः ॥ कामिनीकामनःकाममालिनीकेलिलालितः ॥ ६३ ॥ सरस्वत्याश्रयोगौरीनन्दनःश्रीनिकेतनः ॥ गुरुगुप्तपदोवाचासिद्धोवागीश्वरीपतिः ॥६४॥ नलिनीकामुकोवामारामोज्येष्ठामनोरमः ॥ रौद्रीमुद्रितपादाब्जोहूम्बीजस्तुङ्गशक्तिकः ॥ ६५ ॥ विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिःसकीलकः॥ अमृताब्धिकृतावासोमदघूर्णितलोचनः॥

॥ ६६ ॥ उच्छिष्टगणउच्छिष्टगणेशोगणनायकः ॥ सार्व्वकालिकसंसिद्धिर्न्नित्यशैवोदिगम्बरः ॥ ६७॥ अनपायोनन्तदृष्टिरप्रमेयोजरामरः॥ अनाविलोप्रतिरथोह्यच्युतोऽमृतमक्षरम् ॥ ६८॥ अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽनामयोऽमलः ॥ अमोघसिद्धिरद्वैतमघोरोऽप्रमिताननः ॥ ६९ ॥ अनाकारोऽधिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्तलक्षणः ॥ आधारपीठआधारआधाराधेयवर्ज्जितः ॥ ॥ ७० ॥ आखुकेतनआशापूरकआखुमहारथः ॥ इक्षुसागरमध्यस्थइक्षुभक्षणलालसः ॥ ७१ ॥ इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः ॥ ७२ ॥ इन्द्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः ॥ इन्दीवरदलश्यामइन्दुमण्डलनिर्म्मलः ॥ ७३ ॥ इध्मप्रियइडाभागइडाधामेन्दिराप्रियः ॥ इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसीइतिकर्त्तव्यतेप्सितः ॥ ७४ ॥ ईशानमौलिरीशानईशानसुतईतिहा ॥ ईषणात्रयकल्पान्तईहामात्रविवर्ज्जितः ॥ ७५ ॥ उपेन्द्रउडुभृन्मौलिरुण्डेरकबलिप्रियः ॥ उन्नताननउत्तुङ्गउदारात्रिदशाग्रणीः ॥ ७६ ॥ ऊर्ज्जस्वानूष्मलमदऊहापोहदुरासदः ॥ ऋग्यजुःसामसंभूतिर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्त्तकः ॥ ७७ ॥ ऋजुचित्तैकसुलभऋणत्रयविमोचकः ॥ लुप्तविघ्नःस्वभक्तानांलुप्तशक्तिः सुरद्विषाम् ॥ ७८ ॥ लुप्तश्रीर्व्विमुखार्चानाँलूताविस्फोटनाशनः ॥ एकारपीठमध्यस्थएकपादकृतासनः ॥ ७९ ॥ एजिताखिलदैत्यश्रीरेजिताखिलसंश्रयः ॥ ऐश्वर्य्यनिधिरैश्वर्य्यमैहिकामुष्मिकप्रदः ॥ ८० ॥ ऐरम्मदसमोन्मेषऐरावतनिभाननः ॥ ओंकारवाच्यओङ्कारओजस्वानोषधीपतिः ॥ ८१ ॥ औदार्य्यनिधिरौद्धत्यधुर्य्यऔन्नत्यनिःस्वनः ॥ अङ्कुशस्सुरनागानामङ्कुशःसुरविद्विषाम् ॥ ८२ ॥ असमस्तविसर्ग्गाणाम्पदेषुपरिकीर्त्तितः ॥ कमण्डलुधरःऽकल्पःऽकपर्द्दीकलभाननः ॥ ८३ ॥ कर्म्मसाक्षीकर्म्मकर्त्ताकर्म्माक

र्म्मफलप्रदः ॥ कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः ॥ ॥ ८४ ॥ कारुण्यदेहऽकपिलःकथकऽकटिसूत्रभृत् ॥ खर्व्वऽख ड्गप्रियऽखड्गखातान्तस्थऽखनिर्म्मलः॥ ८५ ॥ खल्वाटशृङ्गनि लयऽखट्वाङ्गीखदुरासदः ॥ गुणाढ्योगहनोगस्थोगद्यपद्यसुधार्ण्ण वः ॥ ८६ ॥ गद्यगानप्रियोगर्ज्जोगीतगीर्व्वाणपूर्व्वजः ॥ गुह्याचा ररतोगुह्योगुह्यागमनिरूपितः ॥ ८७ ॥ गुहाशयोगुहाब्धिस्थो गुरुगम्योगुरोर्ग्गुरुः ॥ घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भोघटोदरः॥ ॥ ८८ ॥ चण्डश्चण्डेश्वरसुहृच्चण्डेशश्चण्डविक्रमः ॥ ८९ ॥ चराचरपतिश्चिन्तामणिश्चर्व्वणलालसः ॥ छन्दश्छन्दोवपुश्छ न्दोदुर्ल्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः ॥ ९० ॥ जगद्योनिर्ज्जगत्साक्षीजगदी शोजगन्मयः ॥ जपोजपपरोजप्योजिह्वासिंहासनप्रभुः ॥ ९१ ॥ झलज्झल्लोल्लसदानझङ्कारिभ्रमराकुलः ॥ टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्का रिमणिनूपुरः ॥ ९२ ॥ ठद्वयोपल्लवान्तस्थःसर्वमन्त्रैकसिद्धि दः ॥ डिण्डिमुण्डोडाकिनीशोडामरोडिण्डिमप्रियः ॥ ९३ ॥ ढक्कानिनादमुदितोढौङ्कोढुण्ढिविनायकः ॥ ९४ ॥ तत्त्वानाम्पर मन्तत्त्वन्तत्वम्पदनिरूपितः ॥ तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्ता रकान्तकः ॥ ९५ ॥ स्थाणुःस्थाणुप्रियःस्थातास्थावरञ्जङ्गमञ्ज गत् ॥ दक्षयज्ञप्रमथनोदातादानवमोहनः ॥ ९६ ॥ दयावान्दि व्यविभवोदण्डभृद्दण्डनायकः ॥ दन्तप्रभिन्नाभ्रमालोदैत्यवारण दारणः ॥ ९७ ॥ दंष्ट्रालग्नद्विपघटोदेवार्त्थनृगजाकृतिः ॥ धनधा न्यपतिर्द्धन्योधनदोधरणीधरः ॥ ९८ ॥ ध्यानैकप्रकटोध्येयोध्या नन्ध्यानपरायणः ॥ ९९ ॥ नन्द्योनन्दिप्रियोनादोनादमध्यप्रति ष्ठितः ॥ निष्कलोनिर्म्मलोनित्योनित्यानित्योनिरामयः॥ १००॥ परँव्योमपरन्धामपरमात्मापरम्पदम् ॥ परात्परऽपशुपतिःपशु पाशविमोचकः ॥ १०१ ॥ पूर्ण्णानन्दऽपरानन्दःपुराणपुरुषोत्त

मः ॥ पद्मप्रसन्ननयनःप्रणताज्ञानमोचनः ॥ १०२ ॥ प्रणामप्रत्य यातीतःप्रणतार्त्तिनिवारणः ॥ फलहस्तःफणिपतिःफेत्कारः फाणितप्रियः ॥ १०३ ॥ बाणार्च्चिताङ्घ्रियुगलोबालकेलिकुतूह ली ॥ ब्रह्मब्रह्मार्च्चितपदोब्रह्मचारीबृहस्पतिः॥१०४॥बृहत्तमोब्रह्म परोब्रह्मण्योब्रह्मवित्प्रियः॥ बृहन्नादाग्र्यचित्कारोब्रह्माण्डवलिमेख लः ॥१०५॥ भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीकोभर्गोभद्रोभयापहः ॥भगवान्भ क्तिसुलभोभूतिदोभूतिभूषणः॥१०६॥ भव्योभूतालयोभोगदाता भ्रूमध्यगोचरः॥मन्त्रोमन्त्रपतिर्म्मन्त्रीमदमत्तमनोरमः॥१०७॥ मे खलावान्मन्दगतिर्म्मतिमत्कमलेक्षणः॥ महाबलोमहावीर्य्योमहा प्राणोमहामनाः॥१०८॥यज्ञोयज्ञपतिर्य्यज्ञगोप्तायज्ञफलप्रदः ॥ य शस्करोयोगगम्योयाज्ञिकोयाजकप्रियः ॥ १०९ ॥रसोरसप्रियोर स्योरञ्जकोरावणार्च्चितः ॥ रक्षोरक्षाकरोरत्नगर्भोराज्यसुखप्रदः ॥ ११० ॥ लक्ष्यालक्षप्रदोलक्ष्योलयस्थोलड्डुकप्रियः ॥ लानप्रि योलास्यपरोलाभकृल्लोकविश्रुतः ॥ १११ ॥ वरेण्योवन्हिवदनो वन्द्योवेदान्तगोचरः ॥ विकर्त्ताविश्वतश्चक्षुर्व्विधाताविश्वतो मुखः ॥ ११२ ॥ वामदेवोविश्वनेतावज्रीवज्रनिवारणः ॥ विश्व बन्धनविष्कम्भाधारोविश्वेश्वरःप्रभुः ॥ ११३ ॥ शब्दब्रह्मशम प्राप्यःशम्भुशक्तिगणेश्वरः ॥ शास्ताशिखाग्रनिलयःशरण्यःशि खरीश्वरः ॥ ११४॥ षड्ऋतुकुसुमस्रग्वीषडाधारःषडक्षरः ॥संसार वैद्यःसर्व्वज्ञस्सर्व्वभेषजभेषजम् ॥११५ ॥ सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदनः ॥ सिन्दूरितमहाकुम्भस्सदसद्व्यक्तिदायकः ॥ ॥११६॥साक्षीसमुद्रमथनःससँव्वेद्यःस्वदक्षिणः॥स्वतन्त्रः सत्यस ङ्कल्पस्सामगानरतस्सुखी ॥ ११७ ॥ हंसोहस्तिपिशाचीशोहव नंहव्यकव्यभुक् ॥ हव्यंहुतप्रियोहर्षोहृल्लेखामन्त्रमध्यगः ॥ ॥ ११८ ॥ क्षेत्राधिपःक्षमाभर्त्ताक्षमापरपरायणः ॥ क्षिप्रक्षेमक

रः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः॥ ११९॥ धर्म्मप्रदोऽर्थदः कामदातासौ भाग्यवर्द्धनः॥ विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिप्रदायकः॥१२०॥ आभिरूप्यकरो वीरश्रीप्रदो विजयप्रदः॥ सर्व्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः॥ १२१॥ मेधादः कीर्त्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः॥ श्रीशोकहारी दौर्भाग्यनाशनस्सर्व्वशक्तिभृत्॥१२२॥ प्रतिवादिमुखस्तम्भो हृष्टचित्तप्रसादनः॥ पराभिचारशमनो दुःखभञ्जनकारकः॥१२३॥ लवस्त्रुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परः क्षणः॥ घटी मुहूर्तः प्रहरो दिवा नक्तमहर्न्निशम्॥ १२४॥ पक्षो मासोऽयनँव्वर्षय्युगङ्कल्पो महालयः॥ राशिस्तारा तिथिर्य्योगो वारः करणमंशकम्॥१२५॥ लग्नं होरा कालचक्रम्मेरुस्सप्तर्षयो ध्रुवः॥ राहुर्म्मन्दः कविर्ज्जीवो बुधो भौमश्शशी रविः॥१२६॥ कालस्सृष्टिः स्थितिर्व्विश्वंस्थावरजङ्गमञ्चयत्॥ भूरापोऽग्निर्म्मरुद्व्योमाहङ्कृतिः प्रकृतिः पुमान्॥१२७॥ ब्रह्माविष्णुश्शिवो रुद्र ईशश्शक्तिस्सदाशिवः त्रिदशाः पितरः सिद्धायक्षरक्षांसि किन्नराः॥१२८॥ साध्याविद्याधराभूतामनुष्याः पशवः खगाः॥ समुद्रास्सरितश्शैलाभूतभव्यम्भवोद्भवः।१२९॥ साङ्ख्यम्पातञ्जलँय्योगः पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः॥ वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसान्यायविस्तरः॥ १३०॥ आयुर्व्वेदो धनुर्व्वेदो गान्धर्व्वङ्काव्यनाटकम्॥ वैखानसं भागवतं सात्वतम्पाञ्चरात्रकम्॥ १३१॥ शैवम्पाशुपतङ्कालमुखम्भैरवशासनम्॥ शाक्तँव्वैनायकं सौरञ्जैनमार्हतसंहिता॥ १३२॥ सदसव्द्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम्॥ बन्धो मोक्षः सुखम्भोगोऽयोगस्सत्यमणुर्म्महान्॥ १३३॥ स्वस्ति हुम्फट्स्वधास्वाहाश्रौषट्वौषट्वषण्नमः॥ ज्ञानविज्ञानमानन्दो बोधस्सँव्विच्छमोयमः॥ १३४॥ एकएकाक्षराधारएकाक्षरपरायणः॥ एकाग्रधीरेकवीरएकानेकस्वरूपधृक्॥ १३५॥ द्विरूपोद्विभुजोव्द्यक्षोद्विरदोद्वीपरक्षकः

द्वैमातुरोद्विवदनोद्वन्द्वातीतोद्वयातिगः ॥ १३६ ॥ त्रिधामा त्रिकरस्त्रेतात्रिवर्गफलदायकः ॥ त्रिगुणात्मात्रिलोकादिस्त्रिश क्तीशस्त्रिलोचनः ॥ १३७ ॥ चतुर्ब्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्माचतु र्म्मुखः ॥ चतुर्व्विधोपायमयश्चतुर्व्वर्णाश्रमाश्रयः ॥१३८॥ चतु र्व्विधवचोवृत्तिपरिवर्त्तप्रवर्त्तकः ॥चतुर्त्थीपूजनप्रीतश्चतुर्त्थीतिथि सम्भवः ॥१३९॥ पञ्चाक्षरात्मापञ्चात्मापञ्चास्यऽपञ्चकृत्यकृत् ॥ पञ्चाधारऽपञ्चवर्णऽपञ्चाक्षरपरायणः ॥१४०॥ पञ्चतालऽप ञ्चकरःपञ्चप्रणवभावितः ॥ पञ्चब्रह्ममयस्फूर्त्तिऽपञ्चवारणवारितः ॥ १४१ ॥ पञ्चभक्ष्यप्रियऽपञ्चबाणऽपञ्चशिवात्मकः ॥ षट्को णपीठःषट्चक्रधामाषड्ग्रन्थिभेदकः ॥१४२॥ षडध्वध्वान्तवि ध्वंसीषडङ्गुलमहाह्रदः ॥ षण्मुखःषण्मुखभ्राताषड्शक्तिपरिवा रितः ॥१४३॥ षड्वैरिवर्गविध्वंसीषडूर्म्मिभयभञ्जनः ॥ षट् तर्कदूरःषट्कर्म्मनिरतःषड्रसाश्रयः ॥ १४४ ॥ सप्तपातालचर णःसप्तद्वीपोरुमण्डलः ॥ सप्तस्वर्ल्लोकमुकुटःसप्तसप्तिवरप्रदः ॥ ॥ १४५ ॥ सप्ताङ्गराज्यसुखदःसप्तर्षिगणमण्डितः ॥ सप्तछ न्दोनिधिःसप्तहोतासप्तस्वराश्रयः ॥ १४६ ॥ सप्ताब्धिकेलिका सारःसप्तमातृनिषेवितः ॥ सप्तछन्दोमोदमदस्सप्तछन्दोमखप्रभुः ॥ १४७॥ अष्टमूर्त्तिर्ध्येयमूर्त्तिरष्टप्रकृतिकारणम्॥ अष्टाङ्गयोग फलभूरष्टपत्राम्बुजासनः ॥ १४८ ॥ अष्टशक्तिसमृद्धश्रीरष्टैश्वर्य्य प्रदायकः ॥ अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः ॥१४९॥ अष्टभै रवसेव्योष्टवसुवन्द्योऽष्टमूर्त्तिभृत् ॥ अष्टचक्रस्फुरन्मूर्त्तिरष्टद्रव्यह विःप्रियः ॥ १५० ॥ नवनागासनाध्यासीनवनिध्यनुशासिता ॥ नवद्वारपुराधारोनवद्वारनिकेतनः ॥ १५१ ॥ नवनारायण स्तुत्योनवदुर्गानिषेवितः ॥ नवनाथमहानाथोनवनागविभूषणः ॥ १५२ ॥ नवरत्नविचित्राङ्गोनवशक्तिशिरोधृतः ॥ दशात्म

कोदशभुजोदशोदिक्पतिवन्दितः ॥ १५३ ॥ दशाध्यायोद
शप्राणोदशेन्द्रियनियामकः ॥ दशाक्षरमहामन्त्रोदशाशाव्याधि
विग्रहः ॥ १५४ ॥ एकादशादिभीरुद्रैःस्तुतएकादशाक्षरः
॥ द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डोद्वादशान्तनिकेतनः ॥ १५५ ॥ त्रयो
दशाभिदाभिन्नविश्वेदेवाधिदैवतम् ॥ चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशम
नुप्रभुः ॥ १५६ ॥ चतुर्दशादिविद्याढ्यश्चतुर्दशजगत्प्रभुः ॥
सामपञ्चदशःपञ्चदशीशीतांशुनिर्म्मलः ॥ १५७ ॥ षोडशाधार
निलयःषोडशस्वरमातृकः ॥ षोडशान्तपदावासःषोडशेन्दुकला
त्मकः ॥ १५८ ॥ कलासप्तदशीसप्तदशःसप्तदशाक्षरः ॥ अष्टा
दशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत् ॥ १५९ ॥ अष्टादशौषधीसृष्टि
रष्टादशविधिस्मृतः ॥ अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदः
॥ १६० ॥ एकविंशऽपुमानेकविंशत्यङ्गुलिपल्लवः ॥ चतुर्विंश
तितत्वात्मापञ्चविंशाख्यपूरुषः ॥ १६१ ॥ सप्तविंशतितारेशः
सप्तविंशातियोगकृत् ॥ द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः ॥
॥ १६२ ॥ षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतिरष्टत्रिंशत्कलातनुः ॥ नमदेको
नपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ॥ १६३ ॥ पञ्चाशदक्षरश्रेणीः
पञ्चाशद्रुद्रविग्रहः ॥ पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशःपञ्चाशन्मातृका
लयः ॥ १६४ ॥ द्विपञ्चाशद्वपुश्श्रेणीत्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयः ॥
चतुष्षष्ट्यर्णनिर्णेताचतुःषष्टिकलानिधिः ॥ १६५ ॥ चतुःषष्टि
महासिद्धयोगिनीवृन्दवन्दितः ॥ अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरवभा
वनः ॥ १६६ ॥ चतुर्न्नवतिमन्त्रात्माषण्णवत्यधिकऽप्रभुः ॥ श
तानन्दःशतधृतिश्शतपत्रायतेक्षणः ॥ १६७ ॥ शतानीकःशत
मखश्शतधारवरायुधः ॥ सहस्रपत्रनिलयस्सहस्रफणभूषणः ॥
॥ १६८ ॥ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षस्सहस्रपात् ॥ सहस्रना
मसंस्तुत्यःसहस्राक्षबलापहः ॥ १६९ ॥ दशसाहस्रफणिभृत्फ

णिराजकृतासनः ॥ अष्टाशीतिसहस्त्रौघमहर्षिस्तोत्रयन्त्रितः ॥ ॥ १७० ॥ लक्षाधीशप्रियाधारोलक्षाधीशमनोमयः ॥ चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशितः ॥ १७१ ॥ चतुराशीतिलक्षाणाञ्जीवानान्देहसंस्थितः ॥ कोटिसूर्य्यप्रतीकाशःकोटिचन्द्रांशुनिर्म्मलः ॥ १७२ ॥ शिवाभवाध्युष्टकोटिविनायकधुरन्धरः ॥ सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः ॥ १७३ ॥ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणतपादुकः ॥ अनन्तदेवतासेव्योह्यनन्तमुनिसंस्तुतः ॥ १७४ ॥ अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तानन्तसौख्यदः ॥ इतिवैनायकन्नाम्नांसहस्त्रमिदमीरितम् ॥ १७५ ॥ इदम्ब्राह्मेमुहूर्त्तेवैयःपठेत्प्रत्यहन्नरः ॥ करस्थन्तस्यसकलमैहिकामुष्मिकंसुखम् ॥ १७६ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्य्यन्धर्म्मःशौर्य्यम्बलँय्यशः ॥ मेधाप्रज्ञाधृतिःकान्तिस्सौभाग्यमतिरूपता ॥ १७७ ॥ सत्यन्दयाक्षमाशान्तिर्दाक्षिण्यन्धर्म्मशीलता ॥ जगत्सँय्यमनँव्विश्वसँव्वादोवादपाटवम् ॥ १७८ ॥ सभापाण्डित्यमौदार्य्यङ्गाम्भीर्य्यम्ब्रह्मवर्च्चसम् ॥ औन्नत्यञ्चकुलंशीलम्प्रतापोवीर्य्यमार्य्यता ॥ १७९ ॥ ज्ञानँव्विज्ञानमास्तिक्यन्धैर्य्यँव्विश्वातिशायिता॥धनधान्याभिवृद्धिश्चसकृदस्यजपाद्भवेत् ॥ १८० ॥ वश्यञ्चतुर्व्विधन्नॄणाञ्जपादस्यप्रजायते ॥ राज्ञोराजकलत्रस्यराजपुत्रस्यमन्त्रिणः ॥१८१ ॥ जप्यतेयस्यवश्यार्त्थेंसदासस्तस्यजायते ॥ धर्म्मार्त्थकाममोक्षाणामनायासेनसाधनम् ॥ १८२ ॥ शाकिनीडाकिनीरक्षोयक्षोरगभयापहम् ॥ साम्राज्यसुखदञ्चैवसमस्तरिपुमर्द्दनम् ॥ १८३ ॥ समस्तकलहध्वंसिदग्धबीजप्ररोहणम् ॥ दुःस्वप्नशमनङ्क्रुद्धस्वामिचित्तप्रसादनम् ॥ १८४ ॥ षट्कर्म्माष्टमहासिद्धित्रिकालज्ञानसाधनम् ॥ परकृत्योपशमनम्परचक्रविमर्द्दनम् ॥ १८५ ॥ सङ्ग्रामरङ्गेसर्व्वेषा

मिदमेकञ्जयावहम् ॥ सर्व्ववन्ध्यात्वदोषघ्नङ्गर्भरक्षैककारणम् ॥
॥ १८६ ॥ पठ्यतेप्रत्यहँय्यत्रस्तोत्रङ्गणपतेरिदम् ॥ देशेतत्रन
दुर्भिक्षमीतयोदुरितानिच ॥ १८७ ॥ नतद्गेहञ्जहातिश्रीर्य्यत्रा
यञ्जप्यतेस्तवः ॥ क्षयकुष्ठप्रमेहाऽर्शोभगन्दरविषूचिकाः ॥
॥ १८८ ॥ गुल्मम्प्लीहानमाध्मानमतिसारम्महोदरम् ॥ कासंश्वा
समुदावर्त्तं शूलंशोकादिसम्भवम् ॥ १८९ ॥ शिरोरोगँव्वमिंहि
क्काङ्गण्डमालामरोचकम् ॥ वातपित्तकफद्वन्द्वात्रिदोषजनितज्व
रम् ॥ १९० ॥ आगन्तुविषमंशीतमुष्णञ्चैकाहिकादिकम् ॥
इत्याद्युक्तमनुक्तँव्वारोगन्दोषादिसम्भवम् ॥ १९१ ॥ सर्व्वम्प्र
शमयत्याशुस्तोत्रस्यास्यसकृज्जपात् ॥ सकृत्पाठेनसंसिद्धिःस्त्री
शूद्रपतितैरपि॥ १९२॥सहस्रनाममन्त्रोयञ्जप्तव्यस्तुशुभाप्तये ॥
महागणपतेस्स्तोत्रंसकामःप्रजपन्निदम् ॥ १९३ ॥ इच्छयासक
लान्भोगानुपभुज्येहपार्त्थिवान् ॥ मनोरथफलैर्द्दिव्यैर्व्योमयानै
र्म्मनोरमैः॥ १९४ ॥चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मरुद्रादिसद्मसु॥काम
रूपःकामगतिःकामतोविचरन्निह ॥ १९५ ॥ भुक्त्वायथेप्सि
तान्भोगानभीष्टैस्सहवन्धुभिः ॥गणेशानुचरोभूत्वामहागणपतेः
प्रियः ॥१९६॥ नन्दीश्वरादिसानन्दीनन्दितः सकलैर्ग्गणैः॥शिवा
भ्याङ्कृपयापुत्रनिर्व्विशेषञ्चलालितः ॥ १९७ ॥ शिवभक्तःपू
र्णकामोगणेश्वरवरात्पुनः॥ जातिस्मरोधर्म्मपरः सार्व्वभौमोऽभि
जायते ॥ १९८॥ निष्कामस्तुजपन्नित्यम्भक्त्याविघ्नेशतत्परः॥
योगसिद्धिम्पराम्प्राप्यज्ञानवैराग्यसंस्थितः ॥ १९९ ॥ निरन्त
रोदितानन्देपरमानन्दसँव्विदि ॥ विश्वोत्तीर्ण्णेपरेपारेपुनरावृत्तिव
र्ज्जिते ॥ २०० ॥ लीनोवैनायकेधाम्निरमतेनित्यनिर्व्वृतः ॥ यो
नामभिर्हुनेदेतैरर्च्चयेत्पूजयेन्नरः ॥ २०१ ॥ राजानोवश्यताँय्या
न्तिरिपवोयान्तिदासताम्॥मन्त्राःसिध्यन्तिसर्व्वेपिसुलभास्तस्य

सिद्धयः ॥२०२॥ मूलमन्त्रादपिस्तोत्रमिदम्प्रियतरम्मम ॥ न भस्येमासिशुक्लायाञ्चतुर्त्थ्याम्ममजन्मनि ॥ २०३ ॥ दूर्व्वाभिर्न्नामभिः पूजान्तर्प्पणँव्विधिवच्चरेत् ॥ अष्टद्रव्यैर्व्विशेषेणजुहुयाद्भक्तिसँप्युतः॥२०४॥तस्येप्सितानिसर्व्वाणिसिद्धचन्त्यत्रनसंशयः ॥इदम्प्रजतम्पठितम्पाठितंश्रावितंश्रुतम् ॥ २०५ ॥ व्याकृतश्चर्च्चितन्ध्यातँव्विमृष्टमभिनन्दितम् ॥ इहामुत्रचसर्व्वेषाँव्विश्वैश्वर्य्यप्रदायकम् ॥२०६॥ स्वच्छन्दचारिणाप्येषयेनसन्धार्य्यतेस्तवः ॥ संरक्ष्यतेशिवोद्भूतैर्गणैरध्युष्टकोटिभिः ॥ २०७ ॥ पुस्तकेलिखितंस्तोत्रम्मन्त्रभूतम्प्रपूजयेत् ॥ तत्रसर्व्वोत्तमालक्ष्मीः सन्निधत्तेनिरन्तरम् ॥ २०८ ॥ दानैरशेषैरखिलैर्व्रतैश्चतीर्त्थैरशेषैस्सकलैर्म्मखैश्च॥नतत्फलँव्विन्दतियद्गणेशसहस्रनाम्नांस्मरणेनसद्यः ॥ २०९ ॥ एतन्नाम्नांसहस्रम्पठतिदितमणौप्रत्यहम्प्रोज्जिहाने सायम्मध्यन्दिनेवात्रिषवणमथवासन्ततँव्वाजनोयः ॥ सस्यादैश्वर्य्यधुर्य्यःप्रभवतिवचसाङ्कीर्त्तिमुच्चैस्तनोति प्रत्यूहंहन्तिविश्वँव्वशयातिसुचिरँव्वर्द्धतेपुत्रपौत्रैः ॥ २१० ॥ अकिञ्चनोप्येकाचित्तोनियतोनियताशनः ॥ जपेत्तुचतुरोमासान्गणेशार्च्चनतत्परः ॥ २११ ॥ दरिद्रतांसमुन्मूल्यसप्तजन्मानुगामपि ॥ लभतेमहतीँल्लक्ष्मीमित्याज्ञापारमेश्वरी ॥ २१२ ॥ आयुष्यँव्वीतरोगङ्कुलमतिविमलंसम्पदश्चार्त्तदानाः कीर्त्तिर्न्नित्यावदाताभणितिरभिनवाकान्तिरव्याजभव्या ॥ पुत्रास्सन्तःकलत्रङ्गुणवदभिमतँय्यद्यदेतच्चसत्यन्नित्यँय्यःस्तोत्रमेतत्पठतिगणपतेस्तस्यहस्ते समस्तम् ॥ २१३ ॥ ॐगणञ्जयोगणपतिर्हेरम्बोधरणीधरः ॥ महागणपतिर्ल्लक्षप्रदःक्षिप्रप्रसादनः ॥ २१४ ॥ अमोघसिद्धिरमितोमन्त्रश्चिन्तामणिर्न्निधिः ॥ सुमङ्गलोबीजमाशापूरकोवरदः शिवः ॥ २१५ ॥ काश्यपोनन्दनोवाचासिद्धोढुण्ढिर्व्विनायकः॥

मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्यानामभिःपुमान् ॥२१६॥ यःस्तौतिमद्गतमनाममाराधनतत्परः ॥ स्तुतोनाम्नांसहस्रेणतेनाहंनात्रसंशयः ॥ २१७ ॥ नमोनमस्सुरवरपूजिताङ्घ्रयेनमोनमोनिरुपममङ्गलात्मने ॥ नमोनमोविपुलकरैकसिद्धयेनमोनमःकरिकलभाननायते ॥ २१८ ॥ किङ्किणीगणरणितस्तवचरणः प्रकटितगुरुमितिचारित्रगणः ॥ मदजललहरिकलितकपोलः शमयतुदुरितङ्गणपतिनृपनामा ॥ २१९ ॥ इतिश्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥ ७ ॥

इति गणेशतन्त्रं समाप्तम् ॥



श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

षोडशं

सूर्यतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९६० शके १८२५

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथसूर्य्यतन्त्रम् ॥



अथश्रीसूर्य्यध्यानम् ॥

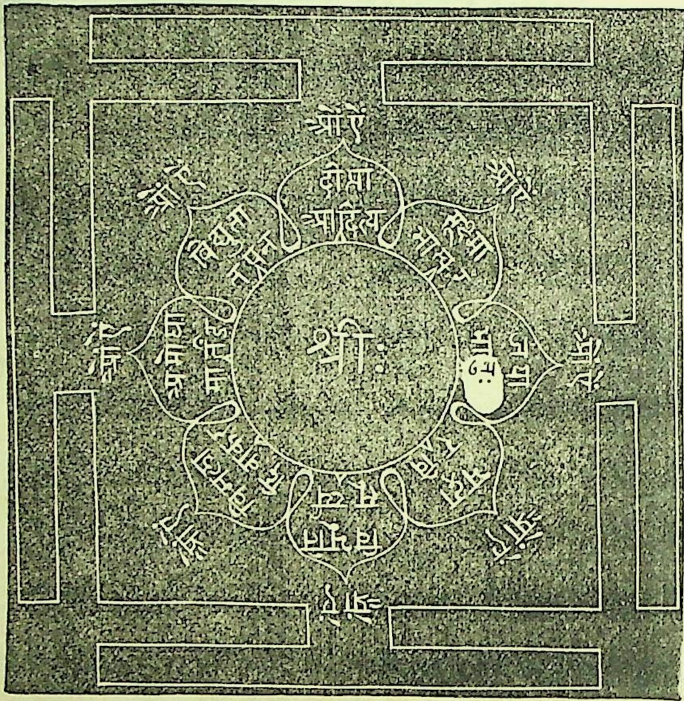
भास्वद्रत्नाढ्यमौलिःस्फुरदधररुचारञ्जितश्चारुकेशोभास्वान्योदिव्यतेजाःकरकमलयुतःस्वर्ण्णवर्ण्णःप्रभाभिः ॥ विश्वाकाशावकाशोग्रहगणसहितोभातियश्चोदयाद्रौसर्व्वानन्दप्रदाताहरिहरनमितःपातुमांव्विश्वचक्षुः ॥ १ ॥



अयन्त्रोद्धारः ॥

पूर्वमष्टदलम्पद्मम्प्रणवादिप्रतिष्ठितम् ॥ मायावीजन्दलाष्टाग्रेयन्त्रमुद्धारयेदिति ॥ आदित्यम्भास्करम्भानुंरविंसूर्य्यन्दिवाकरम् ॥ मार्त्तण्डन्तपनञ्चेतिदलेष्वष्टसुयोजयेत् ॥ दीप्तासूक्ष्मा

जयाभद्राविभूतिर्व्विमलातथा ॥ अमोघाविद्युताचेतिमध्येश्रीःसर्व्वतोमुखी ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

तारोघृणिर्भृगुःपश्चाद्वामकर्ण्णविभूषितः ॥ वह्न्यासनोमरुच्छेषःसनेत्रोदित्यपाश्चिमः ॥ अष्टाक्षरोमनुःप्रोक्तोभानोरभिमतःपरः ॥

अथमन्त्रः ॥

ॐघृणिःसूर्य्यआदित्यः ॥

अथपूजाविधिः ॥

प्रातःकृत्यादिप्राणायामान्तँव्विधायपीठन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ तत्रविशेषः ॥ हृदयस्यपूर्व्वादिदिक्षुमध्येचप्रभूतँव्विमलंसारंसमाराध्यम्परमसुखँव्विन्यस्याधारशक्त्यादिअंसूर्य्यमण्डलायदशकलात्मनेनमः इत्यन्ताँव्विन्यसेत् ॥ तथाचनिबन्धे ॥ पीठेचकृते

प्रथमन्दिक्षुमध्येचसँय्यजेत् ॥ प्रभूतँव्विमलंसारंसमाराध्यमनन्तरम् ॥ परमादिसुखम्पीठंस्वबिम्बान्तम्प्रकल्पयेत् ॥ ततःकेशरेषुमध्येच॥रांदीप्तायैनमः॥एवंरींसूक्ष्मायै०रूंजयायै०रैंभद्रायै०वैंविभूत्यै०वोंविमलायै०वौंअमोघायै०रंविद्युतायै०रःसर्व्वतोमुख्यै० ॥ तथाचनिबन्धे ॥ दीप्तासूक्ष्माजयाभद्राविभूतिर्व्विमला पुनः ॥ अमोघाविद्युतासर्व्वतोमुखीपीठशक्तयः ॥ दीप्तदीपशिखाकाराबीजान्यासाँव्विदुःक्रमात् ॥ अर्क्कावह्नस्वात्रितयस्वरान् बिन्द्वग्निसँय्युतान् ॥ ॐतदुपरिब्रह्मविष्णुशिवात्मकायसौराय योगपीठायनमः ॥ तथाचशारदायाम् ॥ वदेत्पदञ्चतुर्थ्यन्तम्ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥ सौराययोगपीठायनमःपदमनन्तरम् ॥ पीठमन्त्रोऽयमाख्यातोदिनेशस्यजगत्पतेः ॥ ततःऋष्यादिन्यासः ॥ शिरसिदेवभागऋषयेनमः ॥ मुखेगायत्रीछन्दसेनमःहृदि आदित्यायदेवतायैनमः ॥ तथाचनिबन्धे ॥ देवभागोमुनिःप्रोक्तोगायत्रीछन्दईरितम् ॥ आदित्योदेवताप्रोक्तादृष्टादृष्टफलप्रदा ॥ ततःकराङ्गन्यसौ ॥ सत्यायतेजोज्वालामणेहुंफट्स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ॥ एवंब्रह्मणेतेजोज्वालामणे० १० तर्ज्जनीभ्यांस्वाहा । विष्णवेते० १० मध्यमाभ्याँव्वषट् । रुद्रायते० १० अनामिकाभ्यांहूंम् । अग्नयेते० १० कनिष्ठाभ्याँव्वौषट् । सर्व्वायते० १० करतलकरपृष्ठाभ्यांफट् ॥ एवंहृदयादिषु ॥ तथाचशारदायाम् ॥ सत्यायहृदयम्प्रोक्तम्ब्रह्मणेशिरईरितम् ॥ विष्णवेस्याच्छिखावर्म्मरुद्रायपरिकीर्त्तितम् ॥ अग्नयेनेत्रमाख्यातं सर्व्वायास्त्रमुदाहृतम् ॥ तेजोज्वालामणेहूंफट्द्विठान्ताःपरिकीर्त्तिताः ॥ ततोमूर्त्तिन्यासः ॥यथा॥ ॐशिरसिआदित्यायनमः॥ एवंमुखेएँरवये०हृदयेउँभानवे०गुह्येइँभास्कराय०चरणयोः अँसूर्य्याय ॥ तथाचनिबन्धे॥आदित्यँव्विन्यसेन्मूर्द्ध्निरविम्मुखग

तन्न्यसेत् ॥ हृदयेभानुनामानम्भास्करङ्कुह्यदेशतः॥ सूर्य्यञ्चरण योर्न्न्यस्यवर्ण्णैःसत्यादिपञ्चभिः ॥ ततोन्यासः ॥ शिरसिॐनमः आस्येॐघृनमः कण्ठेॐणिनमः हृदिॐसूनमः कुक्षौॐर्य्यनमः नाभौॐआनमः लिङ्गेॐदिनमःपादयोःॐत्यनमः॥ तथाचॐमू र्द्धास्यकण्ठहृदयकुक्षिनाभिध्वजाङ्घ्रिषु ॥मन्त्रवर्णान्न्यसेदष्टौ प्रत्येकम्प्रणवादिकम्॥ततोध्यानम् ॥रक्ताब्जयुग्माभयदानहस्त ङ्केयूरहाराङ्गदकुण्डलाढ्यम्॥माणिक्यमौलिन्दिननाथमोडेवन्धू ककान्तिंविलसत्रिनेत्रम् ॥एवन्ध्यात्वामानसैःसम्पूज्यकुम्भस्था पनङ्कुर्य्यात् ॥ ततोगुरुपङ्क्तिपूजाङ्कृत्वा पीठपूजाङ्कुर्य्यात् ॥ ॐखंखखोल्कायनमः इतिमन्त्रेणमूर्त्तिसङ्कल्प्यपुनर्द्ध्यात्वाऽऽवा हनादिपञ्चपुष्पाञ्जलिदानपर्य्यन्तंविधायाऽऽवरणपूजामारभेत्॥ तथाचनिबन्धे ॥ तारादिखंखखोल्कायमनुनामूर्त्तिकल्पना ॥ साक्षिणंसर्व्वलोकानान्तस्यामावाह्यपूजयेत् ॥ केशरेष्वग्न्यादि कोणमध्येदिक्षुचसत्यायतेजोज्वालामणिहुँफट्स्वाहाहृदयायन मः एवंब्रह्मणे० १०शिरसेस्वाहा । विष्णवे० १०शिखायैवषट् । रुद्राय० १० कवचायहूम् । अग्नये० १० नेत्रत्रयायवौषट् । स र्व्वाय० अस्त्रायफट्॥ दिक्पत्रेषुपूर्व्वादिॐआदित्यायनमः एवंएँ रवयेउँभानवेईंभास्कराय०विदिक्पत्रेषुअग्न्यादिऊँउषायै० एवंप्रं प्रज्ञायै०पम्प्रभायै०सँसन्ध्यायै०॥तथाच॥ अङ्गानिपूजयेदादौदि क्पत्रेसूर्य्यमूर्त्तयः ॥ आदित्याद्याश्चतस्रोऽच्चर्याःशक्तयःकोणप त्रगाः ॥ स्वस्वनामादिवर्णाःस्युस्तासाम्बीजान्यनुक्रमात् ॥ उषाप्रज्ञाप्रभासन्ध्याःशक्तयःपरिकीर्त्तिताः ॥ ततःपत्रेषुब्रा ह्मयाद्याःपुरतोऽरुणमर्च्चयेत् ॥ तथाचशारदायाम् ॥ पत्राग्र संस्थाब्राह्म्याद्याःपुरतोऽरुणमर्च्चयेदिति ॥ तद्बाह्येपूर्व्वादिचन्द्रा दीन्पूजयेत् ॥ ॐ चन्द्रायनमः ॐमङ्गलायनमः एवंबुधाय०

बृहस्पतये॰शुक्राय॰ शनैश्चरायनमः राहवे॰केतवे॰ ॥ तथाच शारदायाम् ॥ चन्द्रादीन्वज्रादींश्चसम्पूज्यधूपादिविसर्ज्जनान्तङ्कर्म्मसमापयेत् ॥ अस्यपुरश्चरणमष्टलक्षजपः ॥ तथाच ॥ वसुलक्षञ्जपेन्मन्त्रमाज्येनचदशांशतः ॥ तिलैर्व्वामधुरासिक्तैर्ज्जुहुयाद्विजितेन्द्रियः ॥

इतिपूजा ॥

अथ स्तोत्रम् ॥

वसिष्ठउवाच ॥ स्तुवंस्तत्रततःसाम्बःकृशोधमनिसन्ततः ॥ राजन्नामसहस्रेण सहस्रांशुन्दिवाकरम्॥विद्यमानन्तुतन्दृष्ट्वासूर्य्यःकृष्णात्मजन्तदा॥स्वप्नेतुदर्शनन्दत्वापुनर्व्वचनमब्रवीत् ॥श्रीसूर्य्यउवाच ॥ साम्बसाम्बमहाबाहोशृणुजाम्बवतीसुत ॥ अलन्नामसहस्रेणपठस्वेमंस्तवंशुभम् ॥ यानिनामानिगुह्यानिपवित्राणिशुभानिच ॥ तानितेकीर्त्तयिष्यामिश्रुत्वावत्सावधारय ॥ विकर्त्तनोविवस्वांश्चमार्त्तण्डोभास्करोरविः ॥ लोकप्रकाशकःश्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः ॥ लोकसाक्षीत्रिलोकेशःकर्त्ताहर्त्तातमिस्रहा तपनस्तापनश्चैवशुचिःसप्ताश्ववाहनः ॥ गभस्तिहस्तोब्रह्माचसर्व्वदेवनमस्कृतः ॥ एकविंशतिरित्येषस्तवइष्टःसदामम ॥ श्रीरारोग्यकरश्चैवधनवृद्धियशस्करः ॥ स्तवराजइतिख्यातस्त्रिषुलोकेषुविश्रुतः ॥ यएतेनमहाबाहोद्विसन्ध्येस्तवनोदये ॥ स्तौतिमांप्रणतोभूत्वासर्व्वपापैःप्रमुच्यते ॥ कायिकँव्वाचिकश्चैवमानसँय्यच्चदुष्कृतम् ॥ एषजाप्येनतत्सर्व्वम्प्रणश्यतिनसंशयः ॥ एषजप्यश्चहोमश्चसन्ध्योपासनमेवच ॥ बलिमन्त्रोऽर्घ्यमन्त्रश्चधूपमन्त्रस्तथैवच ॥ अन्नप्रदानेस्नानेच प्रणिपातेप्रदक्षिणे ॥ पूजितोयम्महामन्त्रः सर्व्वपापहरःशुभः ॥ एवमुक्त्वातुभगवान्भा

स्करोजगदीश्वरः ॥ आमन्त्र्यकृष्णतनयन्तत्रैवान्तरधीयत ॥ साम्बोऽपिस्तवराजेनस्तुत्वासप्ताश्ववाहनम् ॥ पूतात्मानीरुजः श्रीमांस्तस्माद्रोगाद्विमुक्तवान् ॥ ॥ इतिसाम्बपुराणेसूर्य्यस्तवःसम्पूर्णः ॥

अथ कवचम् ॥

श्रीसूर्य्यउवाच ॥ साम्बसाम्बमहाबाहोशृणुमेकवचंशुभम् ॥ त्रैलोक्यमङ्गलन्नामकवचम्परमाद्भुतम् ॥ यज्ज्ञात्वामन्त्रवित्सम्यक्फलमाप्नोतिनिश्चितम् ॥ यद्धृत्वाचमहादेवोगणानामाधिपोभवत् ॥ पठनाद्धारणाद्विष्णुःसर्व्वेषाम्पालकःसदा ॥ एवमिन्द्रादयःसर्व्वेसर्व्वैश्वर्य्यमवाप्नुयुः ॥ कवचस्यऋषिर्ब्रह्माछन्दोनुष्टुबुदाहृतम्॥श्रीसूर्य्यो देवताचात्रसर्व्वदेवनमस्कृतः ॥ आरोग्ययशोमोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ प्रणवोमेशिरःपातुघृणिर्म्मेपातुभालकम् ॥ सूर्य्योव्यान्नयनद्वन्द्वमादित्यःकर्ण्णयुग्मकम् ॥ अष्टाक्षरोमहामन्त्रःसर्व्वाभीष्टफलप्रदः ह्रींबीजम्मेमुखम्पातुहृदयम्भुवनेश्वरी ॥ चन्द्रबीजँविसर्गाढ्यम्पातुमेगुह्यदेशकम् ॥ अक्षरोऽसौमहामन्त्रः सर्व्वतन्त्रेषुगोपितः ॥ शिवोवन्हिसमायुक्तोवामाक्षिम्बिन्दुभूषितः॥एकाक्षरोमहामन्त्रःश्रीसूर्य्यस्यप्रकीर्त्तितः ॥गुह्याद्गुह्यतरोमन्त्रोवाञ्छाचिन्तामणिस्मृतः ॥ शीर्षादिपादपर्य्यन्तंसदापातुमनूत्तमः॥इतितेकथितन्दिव्यन्त्रिषुलोकेषुदुर्ल्लभम् ॥ श्रीप्रदङ्कान्तिदन्नित्यन्धनारोग्यविवर्द्धनम् ॥ कुष्ठादिरोगशमनम्महाव्याधिविनाशनम् ॥ त्रिसन्ध्यंय्यःपठेन्नित्यमरोगीबलवान्भवेत् ॥ बहुनाकिमिहोक्तेनयद्यन्मनसिवर्त्तते ॥ तत्तत्सर्व्वम्भवत्येव कवचस्यचधारणात ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्चयक्षगन्धर्व्वराक्षसाः ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालानैवद्रष्टुमपिक्षमाः ॥ दूरादेवपलायन्तेतस्यसङ्कीर्त्तनादपि॥ भूर्ज्जपत्रेसमालिख्यरोचनागुरुकुङ्कुमैः॥

रविवारेचसङ्क्रान्त्यांसप्तम्याञ्चविशेषतः ॥ धारयेत्साधकश्रेष्ठ स्त्रैलोक्यविजयीभवेत् ॥ त्रिलोहमध्यगङ्कृत्वाधारयेद्दक्षिणेभुजे ॥ शिखायामथवाकण्ठेसोऽपिसूर्य्योनसंशयः ॥ इतितेकथितंसाम्ब त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ॥ कवचन्दुर्ल्लभँल्लोकेतवस्नेहात्प्रकाशित म् ॥ अज्ञात्वाकवचन्दिव्यंयोजपेत्सूर्य्यमुत्तमम् ॥ सिद्धिर्न्न जायतेतस्यकल्पकोटिशतैरपि ॥ १८॥ इतिब्रह्मयामलेत्रैलोक्य मङ्गलनामश्रीसूर्य्यकवचंसम्पूर्ण्णम् ॥

अथहृदयम् ॥

ततोयुद्धपरिश्रान्तंसमरेचिन्तयास्थितम्॥रावणञ्चाग्रतोदृष्ट्वा युद्धायसमुपस्थितम् ॥ १ ॥ दैवतैश्चसमागम्यद्रष्टुमभ्यागतोरण म् ॥ उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्योभगवांस्तदा ॥ २ ॥ रामराम महाबाहोशृणुगुह्यंसनातनम् ॥ येनसर्व्वानरीन्वत्ससमरेविजयि ष्यसे ॥३॥ आदित्यहृदयम्पुण्यंसर्व्वशत्रुविनाशनम् ॥ जयावह ञ्जपन्नित्यमक्षयम्परमंशिवम् ॥ ४॥ सर्व्वमङ्गलमाङ्गल्यंसर्व्वपाप प्रणाशनम् ॥ चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्व्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ ५ ॥ रश्मिमन्तंसमुद्यन्तन्देवासुरनमस्कृतम्॥ पूजयस्वविवस्वन्तम्भा स्करम्भुवनेश्वरम् ॥६॥सर्व्वदेवात्मकोह्येषतेजस्वीरश्मिभावनः ॥ एषदेवासुरगणाँल्लोकान्पातिगभस्तिभिः ॥ ७ ॥ एषब्रह्मा चविष्णुश्चशिवःस्कन्दःप्रजापतिः॥ महेन्द्रोधनदःकालोयमःसो मोह्यपाम्पतिः ॥ ८ ॥ पितरोवसवःसाध्याअश्विनौमरुतोमनुः ॥ वायुर्व्वह्निःप्रजाःप्राणऋतुकर्त्ताप्रभाकरः ॥ ९॥ आदित्यःस वितासूर्य्यःखगःपूषागभस्तिमान् ॥ सुवर्ण्णसदृशोभानुर्हिरण्यरे तादिवाकरः ॥ १० ॥ हरिदश्वःसहस्रार्चिःसप्तसप्तिर्म्मरीचि मान् ॥ तिमिरोन्मथनःशम्भुस्त्वष्टामार्त्तण्डकोंऽशुमान् ॥ ११ ॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः ॥ अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ॥ १२ ॥ व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः ॥ घनवृष्टिरपाम्मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ॥ १३ ॥ आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्व्वतापनः ॥ कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्व्वभवोद्भवः ॥ १४ ॥ नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ॥ तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोस्तु ते ॥ १५ ॥ नमः पूर्व्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ॥ ज्योतिर्गणानाम्पतये दिनाधिपतये नमः ॥ १६ ॥ जयाय जयभद्राय हर्य्यश्वाय नमो नमः ॥ नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥ १७ ॥ नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः ॥ नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥ १८ ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सुरायादित्यवर्च्चसे ॥ भास्वते सर्व्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥ १९ ॥ तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ॥ कृतघ्नाय च देवाय ज्योतिषाम्पतये नमः ॥ २० ॥ तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्म्मणे ॥ नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ २१ ॥ नाशयत्येष वै भूतन्तमेव सृजति प्रभुः ॥ पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥ २२ ॥ एष सुप्तेषु जागर्त्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ॥ एष चैवाग्निहोत्रञ्च फलञ्चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥ २३ ॥ देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनाम्फलमेव च ॥ यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व्वेषु परमप्रभुः ॥ २४ ॥ एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ॥ कीर्त्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥ २५ ॥ पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवञ्जगत्पतिम् ॥ एतत्त्रिगुणितञ्जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसे ॥ २६ ॥ अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणन्त्वञ्जयिष्यसि ॥ एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥ २७ ॥ एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा ॥ धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥ २८ ॥ आदित्यँव्वी

क्ष्यजप्त्वेदम्परंहर्षमवाप्तवान् ॥ त्रिराचम्यशुचिर्भूत्वाधनुरादायवीर्य्यवान् ॥ २९ ॥ रावणम्प्रेक्ष्यहृष्टात्माजयार्त्थंसमुपागतम् ॥ सर्व्वयत्नेनमहतावृतस्तस्यवधेभवत् ॥ ३० ॥ अथरविरवदन्निरीक्ष्यराममम्मुदितमनाःपरमम्प्रहृष्यमाणः ॥ निशिचरपतिसङ्क्षयँविदित्वासुरगणमध्यगतोवचस्त्वरेति ॥ ३१ ॥ इतिवाल्मीकीयेश्रीमद्रामायणेआदित्यहृदयस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

॥ अथसूक्तम् ॥

विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यंमद्धायुर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्मना प्रजाःपुपोषपुरुधाविराजति ॥ ॥ १ ॥ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवँव्वहन्तिकेतवः ॥ दृशेविश्वायसूर्य्यम् ॥२॥ येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ२अनु ॥ त्वँव्वरुणपश्यसि ॥ ३ ॥ दैव्यावद्ध्वर्य्यूऽआगतꣳरथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञꣳसमञ्जाथे ॥ ४ ॥ तम्प्रत्नथापूर्व्वथाविश्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदꣳस्वर्व्विदम् ॥ प्रतीचीनव्वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुवर्द्धसे ॥ ५ ॥ अयँव्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोविमाने ॥ इममपाꣳसङ्गमेसूर्य्यस्यशिशुन्नविप्रामतिभीरिहन्ति ॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः ॥ आप्राद्यावापृथिवीऽअन्तरीक्षꣳसूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ७ ॥ आनऽइडाभिर्व्विदथेसुशस्तिर्व्विश्वानरःसवितादेवऽएतु ॥ अपियथायुवानोमत्सथानोविश्वञ्जगदभिपित्त्वेमनीषा ॥ ८ ॥ यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य ॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥ ९ ॥ तरणिर्व्विश्वदर्श्शतोज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ विश्वमाभासिरोचनम् ॥ १० ॥ तत्सूर्य्यस्यदेवत्त्वन्तन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्विततꣳसञ्जभार ॥ यदेदयुक्तहरितःसधस्थादा

द्वात्रींव्वासस्तनुतेसिमस्म्मै ॥ ११ ॥ तन्मित्रस्यव्वरुणस्याभि चक्षेसूर्य्योंरूपङ्कृणुते द्यौरुपस्थे ॥ अनन्तमन्यद्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ १२ ॥ बण्ममहाँ२ऽअसिसूर्य्य बडादित्यमहाँ २ऽअसि ॥ महस्तेसतोमहिमापनस्यतेऽद्धादेव महाँ २ऽअसि ॥ १३ ॥ बट्सूर्य्यश्रवसामहाँ२ऽअसिसत्रादे वमहाँ२ असि ॥ मह्नादेवानामसूर्य्यः पुरोहितो व्विभुज्यो तिरदाभ्यम् ॥ १४ ॥ श्रायन्तऽइवसूर्य्यँव्विश्वेदिन्द्रस्यभक्षत ॥ व्वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्प्रतिभागन्नदीधिम ॥ १५ ॥ अद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्यनिरंहः. हसःपिपृता निरवद्या त् ॥तन्नोमित्रोव्वरुणोमामहन्तामादितिःसिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः ॥ १६ ॥ आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥ १७ ॥ इतिसूक्तम् ॥ ॥

अथशतनाम ॥

धौम्यउवाच ॥ सूर्य्योऽर्य्यमाभगस्त्वष्टा पूषार्कः सवितार विः ॥ गभस्तिमानजःकालो मृत्युर्द्धाताप्रभाकरः ॥ १॥ पृथि व्यापश्चतेजश्चखँव्वायुश्चपरायणम् ॥ सोमोबृहस्पतिःशुक्रोबुधो ङ्गारकएवच ॥ २ ॥ इन्द्रोविवस्वान्दीप्तांशुः शुचिःशौरिः शनै श्चरः ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चस्कन्दोवैवरुणोयमः ॥ ३ ॥ वैद्यु तोजाठरश्चाग्निरैन्धनस्तेजसाम्पतिः ॥ धर्म्मध्वजोवेदकर्त्तावे दाङ्गोवेदवाहनः ॥ ४ ॥ कृतन्त्रेताद्वापरश्चकलिः सर्व्वमलाश्रयः ॥ कलाकाष्ठामुहूर्त्ताश्चक्षपायामस्तथाक्षणः ॥ ५ ॥ सँव्वत्सरक रोश्वत्थः कालचक्रोविभावसुः॥ पुरुषःशाश्वतो योगीव्यक्ताव्य क्तः सनातनः ॥ ६ ॥ कालाध्यक्षःप्रजाध्यक्षो विश्वकर्म्मातमो

नुदः ॥ वरुणःसागरोंशश्चजीमूतोजीवनोऽरिहा ॥ ७ ॥ भूता श्रयोभूतपतिः सर्व्वलोकनमस्कृतः ॥ स्रष्टासँव्वर्त्तकोवह्निः सर्व्व स्यादिरलोलुपः ॥ ८ ॥ अनन्तःकपिलोभानुःकामदःसर्व्वतोमु खः ॥ जयोविशालोवरदःसर्व्वधातुनिषेवितः ॥ ९ ॥ मनःसुप र्णोभूतादिःशीघ्रगःप्राणधारणः ॥ धन्वन्तरिर्धूम्रकेतुरादिदेवो दितेःसुतः ॥ १० ॥ द्वादशात्मारविन्दाक्षःपितामातापिताम हः॥प्रजाद्वारंसर्ग्गद्वारम्मोक्षद्वारन्त्रिविष्टपम्॥ ११॥दाहकर्त्ताप्रशा न्तात्मा विश्वात्माविश्वतोमुखः ॥ चराचरात्मासूक्ष्मात्मा मैत्रे यः करुणान्वितः ॥१२॥ एकद्वैकीर्त्तनीयस्यसूर्य्यस्यामिततेज सः ॥ नामाष्टशतकञ्चेदम्प्रोक्तमेतत्स्वयम्भुवा ॥ १३ ॥ सुरग णपितृयक्षसेवितंह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितम् ॥वरकनकहुताश नप्रभम्प्रणिपतितोस्मिहिताय भास्करम् ॥१४॥सूर्य्योदयेयः सु समाहितःपठेत् सपुत्रदारान् धनरत्नसञ्चयान् ॥लभेतजातिस्म रतान्तरःसदाधृतिञ्चमेधाञ्चसविन्दतेपुमान् ॥ १५ ॥ इमंस्त वन्देववरस्ययोनरः प्रकीर्त्तयेच्छुद्धमनाःसमाहितः ॥ विमुच्यते शोकदवाग्निसागराल्लभेतकामान्मनसायथेप्सितान् ॥ १६ ॥ इ तिश्रीमहाभारतेवनपर्व्वणिधौम्ययुधिष्ठिरसँव्वादे श्रीसूर्य्यस्या ष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसमाप्तम् ॥ छ ॥

अथसहस्रनाम ॥

सुमन्तुरुवाच ॥ माघेमासि सितेपक्षे सप्तम्याङ्कुरुनन्दन ॥ निराहारोरविम्भक्त्या पूजयेद्विधिनानृप ॥ १ ॥ पूर्व्वोक्तेनजपेज्ज प्यन्देवस्यपुरतःस्थितः ॥ शुद्धैकाग्रमनाराजाञ्जितक्रोधोजिते न्द्रियः ॥ २ ॥ शतानीकउवाच ॥ केनमन्त्रेणजप्तेनदर्शनम्भ गवान्व्रजेत् ॥ स्तोत्रेणवापिसविता तन्मेकथयसुव्रत ॥ ३ ॥

सुमन्तुरुवाच ॥ स्तुतोनामसहस्रेण यदाभक्तिमतामया ॥ तदामेदर्शनँय्यातःसाक्षाद्देवो दिवाकरः ॥ ४ ॥ शतानीकउवाच॥ नाम्नांसहस्रंसवितुःश्रोतुमिच्छामितेद्विज ॥ येनतेदर्शनँय्यातः साक्षाद्देवोदिवाकरः ॥ ५ ॥ सुमन्तुरुवाच ॥ सर्व्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्व्वपापप्रणाशनम् ॥ नचेदस्तिभयङ्किञ्चिद्यजनेनचशाम्यति ॥ ६ ॥ ज्वराद्विमुच्यतेराजन् स्तोत्रेऽस्मिन्पाठितेनरः ॥ अन्येचरोगाःशाम्यन्ति पठतःशृण्वतस्तथा ॥ ७ ॥ सम्पद्यन्ते यथाकामास्सर्व्वभोगायथेप्सिताः॥ यएतदादितः श्रुत्वासङ्ग्राममप्रविशेन्नरः ॥ ८ ॥ सजित्वासमरेशत्रूनभ्येतिगृहमक्षतः ॥ वन्ध्यानाम्पुत्रजननम्भीतानाम्भयनाशनम् ॥ ९ ॥ भूतिकारि दरिद्राणाङ्कुष्ठिनाम्परमौषधम् ॥ बालानाञ्चैवसर्व्वेषाङ्ग्रहरक्षोनिवारणम् ॥ १० ॥ पठेदेतद्धियोराजन् सश्रेयःपरमाप्नुयात् ॥ ससिद्धस्सर्व्वसङ्कल्पः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥ ११ ॥ धर्म्मार्त्थिभिर्द्धर्म्मलब्ध्यैसुखायचसुखार्त्थिभिः ॥ राज्यायराज्यकामैश्चपठितव्यमिदन्नरैः ॥ १२ ॥ विद्यावहन्तुविप्राणां क्षत्रियाणाञ्जयावहम् ॥ पशवावहन्तुवैश्यानां शूद्राणान्धर्म्मवर्द्धनम् ॥ १३ ॥ पठतांशृण्वतामेतद्भवतीतिनसंशयः ॥ तच्छृणुष्वनृपश्रेष्ठ प्रयतात्माब्रवीमिते ॥ १४ ॥ नाम्नांसहस्रँव्विख्यातन्देवदेवस्यभास्वतः ॥ ॐअस्यश्रीसूर्य्यसहस्रनाम्नाम्भगवान् पराशरऋषिरनुष्टुप्छन्दःश्रीसूर्य्योदेवतासकलाभीष्टसिद्ध्यर्त्थेजपेविनियोगः ॥ ॐविश्वविद्विश्वजित्कर्त्ता विश्वात्मा विश्वतोमुखः ॥ विश्वेश्वरो विश्वयोनिर्न्नियतात्माजितेन्द्रियः ॥ १ ॥ कालाश्रयःकालकर्त्ता कालहाकालनाशनः ॥ महायोगीमहाबुद्धिर्म्महात्मासुमहाबलः ॥ २॥ प्रभुर्व्विभुर्भूतनाथोभूतात्माभुवनेश्वरः ॥ भूतभव्यो भावितात्मा भूतान्तःकरणश्शिवः ॥ ३ ॥ शरण्यःकमलानन्दो

नन्दनोनन्दवर्द्धनः ॥ वरेण्योवरदोयोगी सुसँय्युक्तऽप्रकाशकः ॥ ॥ ४ ॥ प्राक्प्राणऽपरऽप्राणऽ प्रीतात्माप्रियतऽप्रियः ॥ नयःस हस्रपात्साधुर्द्दिव्यकुण्डलमण्डितः ॥ ५ ॥ अव्यङ्गधारीधीरा त्मा प्रचेतावायुवाहनः ॥ समाहितमतिर्द्धाता विधाताकृतमङ्ग लः ॥ ६ ॥ कपर्द्दीकल्पकृद्रुद्रःसुमना धर्म्मवत्सलः ॥समायुक्तोवि मुक्तात्मा कृतात्माकृतिनाँव्वरः ॥ ७ ॥ अविचिन्त्यवपुःश्रेष्ठो म हायोगीमहेश्वरः ॥ कान्तऽकामादिरादित्यो नियतात्मा निराकु लः ॥ ८ ॥ कामऽकारुणिकऽकर्त्ता कमलाकरबोधनः ॥ सतस प्तिरचिन्त्यात्मा महाकारुणिकोत्तमः ॥ ९ ॥ सञ्जीवनोजीवना थो जगज्जीवोजगत्पतिः ॥ अजयोविश्वनिलयस्सँव्विभागोवृष ध्वजः ॥ १० ॥ वृषाकपिऽकल्पकर्त्ता कल्पान्तकरणोरविः ॥ ए कचक्ररथोमौनी सुरथोरथिनाँव्वरः ॥ ११ ॥ अक्रोधनोरश्मिमा लीतेजोराशिर्व्विभावसुः॥ दिव्यकृद्दिनकृद्देवो देवदेवोदिवस्पतिः ॥ १२ ॥ दीननाथोहविर्होता दिव्यबाहुर्द्दिवाकरः ॥ यज्ञोयज्ञ पतिः पूषास्वर्ण्णरेताऽपरावहः ॥ १३ ॥ परापरज्ञस्तरणिरंशु माली मनोहरः ॥प्राज्ञऽप्रजापतिस्सूर्य्यःसविताविष्णुरंशुमान् ॥ ॥ १४ ॥ सदागतिर्ग्गन्धवाहुर्व्विहितोविधिराशुगः ॥ पतङ्गऽप तगः स्थाणुर्व्विहङ्गोविहगोवरः ॥ १५ ॥ हर्य्यश्वोहरिताश्वश्वह रिदश्वोजगत्प्रियः ॥ त्र्यम्बकस्सर्व्वदमनोभावितात्माभिषग्वरः ॥ १६ ॥ आलोककृल्लोकनाथो लोकालोकनमस्कृतः ॥ का लऽकल्पान्तकोवह्निस्तपनस्सम्प्रतापनः ॥१७॥ विरोचनो विरू पाक्षस्सहस्राक्षऽपुरन्दरः ॥ सहस्ररश्मिर्म्मिहिरो विविधाम्बरभू षणः ॥ १८ ॥ खगऽप्रतर्द्दनोधन्यो हयगोवाग्विशारदः ॥ श्री मांश्चशिशिरोवाग्मीश्रीपतिः श्रीनिकेतनः ॥ १९ ॥ श्रीकण्ठः श्रीधरश्श्रीमान्श्रीनिवासोवसुप्रदः ॥ कामचारोमहामायोमहे

शोविदिताशयः ॥ २० ॥ तीर्त्थक्रियावान्सुनयोविभवोभक्तवत्सलः ॥ कीर्त्तिःकीर्त्तिकरोनित्यःकुण्डलीकवचीरथी ॥ २१ ॥ हिरण्यरेताःसप्ताश्वःप्रयतात्मापरन्तपः ॥ बुद्धिमानमरश्रेष्ठोरोचिष्णुःपाकशासनः ॥ २२ ॥ समुद्रोधनदोधातामान्धाताकश्मलापहः ॥ तमोघ्नोध्वान्तहावह्निर्होतान्तःकरणोगुहः ॥ २३ ॥ पशुमान्प्रयतानन्दोभूतेशःश्रीमताँवरः ॥ नित्योदितोनित्यरथः सुरेशः सुरपूजितः ॥ २४ ॥ अजितोविजयोजेताजङ्गमस्स्थावरात्मकः ॥ जीवानन्दोनित्यगामीविजेताविजयप्रदः ॥ २५ ॥ पर्ज्जन्योग्निस्स्थितिः स्थेयः स्थविरोऽणुर्न्निरञ्जनः ॥ प्रद्योतनोरथारूढःसर्व्वलोकप्रकाशकः ॥ २६ ॥ ध्रुवोमेधीमहावीर्य्योहंसस्संसारतारकः ॥ सृष्टिकर्त्ताक्रियाहेतुर्म्मार्त्तण्डोमरुताम्पतिः ॥ ॥ २७ ॥ मरुत्वान्दहनस्त्वष्टाभगोभाग्योऽर्य्यमापतिः ॥ वरुणांशोजगन्नाथःकृतकृत्यःसुलोचनः ॥ २८ ॥ विवस्वान्भानुमान्कार्य्यंकारणन्तेजसान्निधिः ॥ असङ्गगामीतिग्मांशुर्द्धर्म्मादिर्दीप्तदीधितिः ॥ २९ ॥ सहस्रदीधितिर्ब्ब्रध्नःसहस्रांशुर्द्दिवाकरः॥ गभस्तिमान्दीधितिमान्स्रग्विमानतुलद्युतिः ॥ ३० ॥ भास्करस्सुरकार्य्यज्ञःसर्व्वज्ञस्तीक्ष्णदीधितिः ॥ सुरज्येष्ठःसुरपतिर्ब्बहुज्ञोवचसाम्पतिः ॥३१॥ तेजोनिधिर्ब्बृहत्तेजाबृहत्कीर्त्तिर्ब्बृहस्पतिः ॥ अहिमानूर्ज्जितोधीमानामुक्तःकीर्त्तिवर्द्धनः ॥ ३२ ॥ महावैद्योगणपतिर्ग्गणेशोगणनायकः ॥ तीव्रप्रतापनस्तापीतापनोविश्वतापनाः ॥ ३३ ॥ कार्त्तस्वरोहृषीकेशःपद्मानन्दोभिनन्दितः ॥ पद्मनाभोमृताहारःस्थितिमान्केतुमान्नभः ॥ ३४ ॥ अनाद्यन्तोऽच्युतोविश्वोविश्वामित्रोघृणीविराट् ॥ आमुक्तःकवची वाग्मीकञ्चुकीविश्वभावनः ॥ ३५ ॥ अनिमित्तगतिश्रेष्ठःशरण्यः सर्व्वतोमुखः ॥ विगाहीरेणुरसहस्समायुक्तस्समाहितः ॥ ३६ ॥ ध

र्म्मकेतुर्द्धर्म्मरतिस्संहर्त्तासँय्यमोयमः ॥ प्रणतार्त्तिहरोवादोसिद्ध
कार्य्योजनेश्वरः ॥ ३७ ॥ नभोविगाहनस्सत्यस्तामसःसुमनो
हरः ॥ हारीहरिर्हरोवायुर्ऋतुःकालानलद्युतिः ॥ ३८ ॥ सुखसे
व्योमहातेजाजगतामन्तकारणम् ॥ महेन्द्रोविष्टुतस्तोत्रंस्तुति
हेतुःप्रभाकरः ॥ ३९ ॥ सहस्रकरआयुष्मानरोषःसुखदस्सुखी ॥
व्याधिहासुखदःसौख्यङ्कल्याणःकलिपनाँव्वरः ॥ ४० ॥ आरो
ग्यकर्म्मणांसिद्धिर्व्वृद्धिर्ऋद्धिरहस्पतिः ॥ हिरण्यरेताआरोग्यँव्वि
द्वान्बन्धुर्ब्बुधोमहान् ॥ ४१ ॥ प्रणवान्धृतिमान्धर्म्मोधर्म्मक
र्त्तारुचिप्रदः ॥ सर्व्वप्रियस्सर्व्वसहःसर्व्वशत्रुनिवारणः ॥ ४२ ॥
प्रांशुर्व्विद्योतनोद्योतस्सहस्रकिरणःकृतिः ॥ केयूरभूषणोद्भासी
भासितोभासनोनलः ॥ ४३ ॥ शरण्यार्त्तिहरोहोताखद्योतःखग
सत्तमः ॥ सर्व्वद्योतोभवद्योतःसर्व्वद्युतिकरोमलः ॥ ४४ ॥ क
ल्याणः कल्याणकरःकल्पःकल्पकरःकविः ॥कल्याणकृत्कल्प
वपुःसर्व्वकल्याणभाजनः ॥ ४५ ॥ शान्तिप्रियःप्रसन्नात्माप्रशा
न्तःप्रशमप्रियः ॥ उदारकर्म्मासुनयःसुवर्च्चावर्च्चसोज्ज्वलः ॥४६॥
वर्च्चस्वीवर्च्चसामीशस्त्रैलोक्येशोवशानुगः ॥ तेजस्वीसुयशावर्ण्णि
र्व्वर्ण्णाध्यक्षोबलिप्रियः ॥ ४७ ॥ यशस्वीवेदानिलयस्तेजस्वीप्र
कृतिस्थितः ॥ आकाशगःशीघ्रगतिराशुगःश्रुतिमान्खगः ॥
॥ ४८ ॥ गोपतिर्ग्रहदेवेशोगोमानेकःप्रभञ्जनः ॥ जनिताप्र
जनञ्जीवोदीपःसर्व्वप्रकाशकः ॥ ४९ ॥ कर्म्मसाक्षीयोगनित्यो
नभस्वानसुरान्तकः ॥ रक्षोघ्नोविघ्नशमनःकिरीटीसुमनःप्रियः ॥
॥ ५० ॥ मरीचिमालीसुमतिःकृतातिथ्योविशेषकः ॥ शिष्टाचा
रःशुभाचारःस्वाचाराचारतत्परः ॥ ५१ ॥ मन्दारोमाठरोरेणुः
क्षोभणःपक्षिणाङ्गुरुः ॥ स्वविशिष्टोविशिष्टात्माविधेयोज्ञानशो
भनः ॥ ५२ ॥ महाश्वेताप्रियोज्ञेयःसामगोमोददायकः ॥ सर्व्ववे

दप्रगीतात्मासर्व्ववेदालयोलयः ॥ ५३ ॥ वेदमूर्त्तिश्चतुर्व्वेदोवेद भृद्वेदपारगः ॥ क्रियावानतिरोचिष्णुर्व्वरीयांश्चवरप्रदः ॥ ५४ ॥ व्रतचारीव्रतधरोलोकबन्धुरलङ्कृतः ॥ अलङ्काराक्षरोदिव्याविद्या वान्विदिताशयः ॥ ५५ ॥ अकारोभूषणोभूष्योभूष्णुर्भुवनपू जितः ॥ चक्रपाणिर्व्वज्रधरः सुरेशोलोकवत्सलः ॥५६॥ राज्ञीप तिर्म्महाबाहुःप्रकृतिर्व्विकृतिर्ग्गुणः॥ अन्धकारापहः श्रेष्ठोयुगाव र्त्तोयुगादिकृत् ॥५७॥ अप्रमेयःसदायोगीनिरहङ्कारईश्वरः ॥ शु भप्रदःशुभश्शोभाशुभकर्म्माशुभास्पदः ॥ ५८ ॥ सत्यवान्धृति मानुच्चैर्थकारोवृद्धिदोनलः ॥ बलभृद्बलदोबन्धुर्बलवान्बलि नाम्वरः ॥ ५९ ॥ अनङ्गोनागराडिन्द्रःपद्मयोनिर्ग्गणेश्वरः ॥ सँ व्वत्सरऋतुर्न्नेताकालचक्रप्रवर्त्तकः ॥६०॥ पद्मेक्षणःपद्मयोनिः प्रभवोनसरद्युतिः ॥ सुमूर्त्तिःसुमतिस्सोमोगोविन्दोजगदादिजः ॥ ६१ ॥ पीतवासाःकृष्णवासादिग्वासातीन्द्रियोहरिः ॥ अ तीन्द्रोऽनेकरूपात्मास्कन्दःपरपुरञ्जयः ॥ ६२ ॥ शक्तिमान्शू लधृग्भास्वान्मोक्षहेतुरयोनिजः ॥ सर्व्वदश्शीजितोदश्शोदुःस्व प्नाशुभनाशनः ॥ ६३ ॥ मङ्गल्यकर्त्तातरणिर्व्वेगवान्कश्मलाप हः ॥ स्पष्टाक्षरोमहामन्त्रोविशाखोयजनप्रियः ॥ ६४ ॥ विश्व कर्म्मामहाशक्तिर्ज्योतिरीशोविहङ्गमः ॥विचक्षणोदक्षइन्द्रःप्रत्यू हःप्रियदश्शनः ॥६५॥ अश्विनौवेदनिलयोवेदविद्विदिताशयः॥ प्रभाकरोजितरिपुःसुजनोरुणसारथिः॥ ६६ ॥ कुबेरसुरथःस्कन्दो महितोभिहितोगुरुः ॥ ग्रहराजोग्रहपतिर्ग्रहनक्षत्रमण्डनः॥६७॥ भास्करःसततानन्दोनन्दनोनन्दिवर्द्धनः ॥ मङ्गलोथमङ्गलवान् मागल्योमङ्गलावहः ॥ ६८ ॥ मङ्गलाचारचरितःशीर्ण्णःसर्व्वव्र तोव्रती ॥ चतुर्म्मुखःपद्ममालीपूतात्माप्रणतार्त्तिहा ॥ ६९ ॥ अ किञ्चनस्सत्यसन्धोनिर्ग्गुणोगुणवान्गुणी ॥ सम्पूर्णःपुण्डरीका

क्षोविधेयोयोगतत्परः ॥ ७० ॥ सहस्रांशुःक्रतुपतिःसर्व्वस्वंसुमतिःसुवाक् ॥ सुवाहनोमाल्यदामाधृताहारोहरिप्रियः ॥ ७१ ॥ ब्रह्मप्रचेताप्रथितःप्रतीतात्मास्थिरात्मकः॥ शतबिन्दुःशतमखोगरीयाननलप्रभुः ॥ ७२ ॥ धीरोमहत्तरोधन्यःपुरुषःपुरुषोत्तमः ॥ विद्याधाराधिराजोहिविद्यावान्भूतिदःस्थितः ॥ ७३ ॥ अनिर्देश्यवपुःश्रीमान्विश्वात्माबहुमङ्गलः ॥ सुस्थितःसुरथःस्वर्णोमोक्षाधारनिकेतनः ॥ ७४ निर्द्वन्द्वोद्वन्द्वहासर्गःसर्व्वगःसम्प्रकाशकः॥दयालुस्सूक्ष्मधीःशान्तिःक्षेमाक्षेमास्थितिप्रियः ॥७५॥ भूधरोभूपतिर्व्वक्तापवित्रात्मात्रिलोचनः॥महावराहःप्रियकृद्दाताभोक्ताभयप्रदः ॥७६॥ चतुर्व्वेदधरोनित्योविनिद्रोविविधाशनः॥ चक्रवर्त्तीधृतिकरःसम्पूर्णोऽथमहेश्वरः॥ ७७ ॥ विचित्ररथएकाकीसप्तसप्तिःपरात्परः॥ सर्व्वोदधिस्थितिकरःस्थितिःस्थेयःस्थितिप्रियः ॥ ७८ ॥ निष्कलःपुष्कलनिभोवसुमान्वासवप्रियः ॥ वसुमान्वासवस्वामीवसुदातावसुप्रदः ॥ ७९ ॥ बलवान्ज्ञानवाँस्तत्वमोङ्कारस्त्रिषुसंस्थितः ॥ सङ्कल्पयोनिर्दिनकृद्भगवान्कारणावहः ॥ ८० ॥ नीलकण्ठोधनाध्यक्षश्चतुर्व्वेदप्रियँव्वदः ॥ वषट्कारोहुतंहोतास्वाहाकारोहुताहुतिः ॥८१ ॥ जनार्द्दनोजनानन्दोनरोनारायणोम्बुदः॥ स्वर्णाङ्गःक्षपणोवायुःसुरासुरनमस्कृतः ॥ ८२ ॥ विग्रहोविमलोबिन्दुर्व्विशोकोविमलद्युतिः ॥ द्योतितोद्योतनोविद्वान्विवित्वान्वरदोबली ॥ ८३ ॥ धर्म्मयोनिर्म्महामोहोविष्णुभ्रातासनातनः ॥ सावित्रीभावितोराजाविसृतोविघृणीविराट् ॥ ८४ ॥ सप्तार्च्चिःसप्ततुरगःसप्तलोकनमस्कृतः ॥ सम्पन्नोऽथजगन्नाथःसुमनाश्शोभनप्रियः ॥ ८५ ॥ सर्वात्मासर्व्वकृत्सृष्टिःसप्तिमान्सप्तमोप्रियः ॥ सुमेधामाधवोमेध्योमेधावीमधुसूदनः ॥ ८६ ॥ अङ्गिरागतिकालज्ञोधूमकेतुस्सुकेतनः ॥ सु

खीसुखप्रदःसौख्यङ्कामीकान्तिप्रियोमुनिः ॥ ८७ ॥ सन्तापनः सन्तपनआतपीतपसाम्पतिः ॥ उग्रश्रवास्सहस्रोस्रःप्रियङ्कारी प्रियङ्करः ॥ ८८ ॥ प्रीतोविमन्युरम्भोदोजीवनोजगताम्पतिः ॥ जगत्पिताप्रीतमनाःसर्व्वःसर्व्वोगुहाबलः ॥ ८९ ॥ सर्व्वगोजगदानन्दोजगन्नेतासुरारिहा ॥ श्रेयःश्रेयस्करोज्यायानुत्तमोत्तमउत्तमः ॥ ९० ॥ उत्तमोथमहामेरुर्द्धारणोधरणीधरः ॥ धाराधरोधर्म्मराजोधर्म्माधर्म्मप्रवर्त्तकः ॥ ९१ ॥ रथाध्यक्षोरथपतिस्त्वरमाणोमितानलः ॥ उत्तरोनुत्तरस्तापीतारापतिरपाम्पतिः ॥ ॥ ९२ ॥ पुण्यसङ्कीर्त्तनःपुण्योहेतुर्ल्लोकत्रयाश्रयः ॥ स्वर्भानुर्व्विहगारिष्टोविशिष्टोत्कृष्टकर्म्मकृत् ॥ ९३ ॥ व्याधिप्रणाशनःक्षेमःशूरस्सर्व्वजिताव्वँरः ॥ एकनाथोरथाधीशःशनैश्चरपितासितः ॥ ९४ ॥ वैवस्वतगुरुर्म्मृत्युर्द्धर्म्मनित्योमहाव्रतः ॥ प्रलम्बहारःसञ्चारीप्रद्योतोद्योतितोनलः ॥ ९५ ॥ सन्तानकृत्परोमन्त्रोमन्त्रमूर्त्तिर्म्महाबलः ॥ श्रेष्ठात्मासुप्रियःशम्भुर्म्महतामीश्वरेश्वरः ॥ ९६ ॥ संसारगतिविक्षेतासंसारार्ण्णवतारकः ॥ सप्तजिह्वःसहस्रार्च्चीरत्नगर्भोपराजितः ॥ ९७ ॥ धर्म्मकेतुरमेयात्माधर्म्माधर्म्मवरप्रदः ॥ लोकसाक्षीलोकगुरुर्ल्लोकेशश्छन्दवाहनः ॥ ९८ ॥ धर्म्मरूपःसूक्ष्मवायुर्द्धनुष्पाणिर्द्धनुर्द्धरः ॥ पिनाकधृङ्महोत्साहोनैकमायोमहाशनः ॥ ९९ ॥ वीरःशक्तिमतांश्रेष्ठःसर्व्वशस्त्रभृतांवरः ॥ ज्ञानगम्योदुराराध्योलोहिताङ्गोरिमर्द्दनः ॥ १०० ॥ अनन्तोधर्म्मदोनित्योधर्म्मकृच्चक्रिविक्रमः ॥ दैवतस्त्र्यक्षरोमद्योनीलाङ्गोनीललोहितः ॥ १०१ ॥ एकोनेकस्त्रयीव्यासःसविता समितिञ्जयः ॥ शार्ङ्गधन्वानलोभीमःसर्व्वप्रहरणायुधः ॥ १०२ ॥ परमेष्ठीपरञ्ज्योतिर्न्नाकपालीदिवस्पतिः ॥ वदान्योवासुकिर्व्वैद्य आत्रेयोतिपराक्रमः ॥ १०३ ॥ द्वापरःपरमोदारःपरमब्रह्मच

र्य्यवान्॥ उद्दीप्तवेषोमुकुटीपद्महस्तोहिमांशुभृत्॥ १०४॥ स्मितःप्रसन्नवदनःपद्मोदरनिभाननः॥ सायन्दिवादिव्यवपुर निर्देश्योमहारथः॥ १०५॥ महारथोमहानीशःशेषःसत्वरज स्तमः॥ धृतातपत्रप्रतिमोविमर्षीनिर्णयःस्थितः॥ १०६॥ अहिंसकःशुद्धमतिरद्वितीयोऽरिमर्द्दनः॥ सर्व्वदोधनदोमोक्षोवि हारीबहुदायकः॥१०७॥ ग्रहनाथोग्रहपतिर्ग्रहेशस्तिमिरापहः मनोहरवपुःशुभ्रःशोभनःसुप्रभाननः॥ १०८॥ सुप्रभःसुप्र भाकारःसुनेत्रोनिक्षुभापतिः॥ राज्ञीप्रियःशब्दकरोग्रहेशस्ति मिरापहः॥ १०९॥ सिंहिकेयरिपुर्देवोवरदोवरनायकः॥ चतु र्भुजोमहायोगीयोगीश्वरपतिस्तथा॥ ११०॥ अनादिरूपो दितिजोरत्नकान्तिःप्रभामयः॥ जगत्प्रदीपोविस्तीर्णोमहावि स्तीर्णमण्डलः॥ १११॥ एकचक्ररथःस्वर्णरथःस्वर्णशरी रधृक्॥ निरालम्बोगगनगोधर्म्मकर्म्मप्रभावकृत्॥ ११२॥ ध र्म्मात्माकर्म्मणांसाक्षीप्रत्यक्षःपरमेश्वरः॥मेरुसेवीसुमेधावीमेरुर क्षाकरोमहान्॥ ११३॥आधारभूतोरतिमांस्तथाचधनधान्यकृत् पापसन्तापसंहर्त्तामनोवाञ्छितदायकः॥ ११४॥ रोगहर्त्तारा ज्यदायीरमणीयगुणोनृणी॥ कालत्रयानन्तरूपोमुनिवृन्दन मस्कृतः॥११५॥ सन्ध्यारागकरःसिद्धःसन्ध्यावन्दनवन्दितः॥ साम्राराज्यदाननिरतःसमाराधनतोषवान्॥ ११६॥ भक्तदुःख क्षयकरोभवसागरतारकः॥ भयापहर्त्ताभगवानप्रमेयपराक्रमः॥ मनुस्वामीमनुपतिर्म्मान्योमन्वन्तराधिपः॥ ११७॥ एतत्तेस र्व्वमाख्यातँय्यन्मान्त्वप्परिपृच्छसि॥ नाम्नांसहस्रंसवितुःपाराश र्य्योयदाहमे॥ ११८॥ धन्यँय्यशस्यमायुष्यन्दुष्टदुःस्वप्ननाश नम्॥ बन्धमोक्षकरञ्चैवभानोर्न्नामानुकीर्त्तनम्॥ ११९॥ य स्त्विदंशृणुयान्नित्यम्पठित्वाप्रयतोनरः॥ अक्षयंसुखमन्नाद्यम्भवे

तस्योपसाधितम् ॥ १२० ॥ नृपाग्नितस्करभयँव्व्याधिभ्योनभ यम्भवेत् ॥ विजयोचभवेन्नित्यंश्रेयश्चपरमाप्नुयात् ॥ १२१ ॥ कीर्तिमान्सुभगोविद्वान्ससुखीप्रियदर्शनः॥भवेद्वर्षशतायुश्च सर्व्वव्याधिविवर्ज्जितः ॥१२२॥ नाम्नांसहस्रमिदमंशुमतःपठेद्यः प्रातः शुचिर्न्नियमवान्सुसमाधियुक्तः ॥ दूरेणतम्परिहरन्तिसदै वरोगाभीतास्सुपर्ण्णमिवसर्व्वमहोरगेन्द्राः ॥१२३ ॥इतिश्रीभवि ष्यपुराणेसप्तमीकल्पेभगवतःश्रीसूर्य्यस्यनाम्नांसहस्रंसम्पूर्ण्णम् ॥

इतिसूर्य्यतन्त्रं समाप्तम् ।



श्रीः ।

शिवहरराजधानीपति-

श्रीराजादेवनन्दनसिंहबहादूरनराधिप-

सङ्गृहीतविरचित-

शाक्तप्रमोदान्तर्गतं

सप्तदशं

विष्णुतन्त्रम् ।

उक्तराजगुरुवंश्यपण्डितश्रीरघुराज-

दुबेजीद्वारा संशोधितम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-खेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रालयेऽङ्कित्वा प्रकाशितम् ।

द्वितीयावृत्तिः ।

सँव्वत् १९५० शके १८१५

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विष्णुतन्त्रम् ।

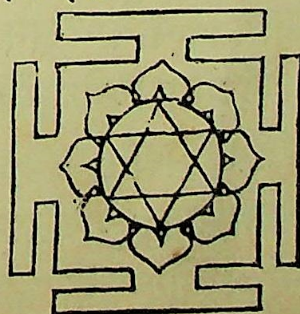
अथश्रीविष्णुध्यानम् ॥

शान्ताकारम्भुजगशयनम्पद्मनाभंसुरेशँव्विश्वाधारङ्गगनसदृशम्मेघवर्ण्णंशुभाङ्गम्॥लक्ष्मीकान्तङ्कमलनयनँय्योगिभिर्द्ध्यानगम्यँव्वन्देविष्णुम्भवभयहरंसर्व्वलोकैकनाथम् ॥ १ ॥



अथयन्त्रोद्धारः ॥

अनुक्तकल्पेयन्त्रन्तुलिखेत्पद्मदलाष्टकम् ॥ षट्कोणकार्ण्णिकन्तत्रवेदद्वारोपशोभितम् ॥



अथमन्त्रोद्धारः ॥

सचतुर्थीनमोन्तैश्चनामभिर्व्विन्यसेत्सुधीः ॥ तारन्नमः पदम्ब्रूयान्नरौदीर्ग्घसमन्वितौ ॥ यवर्णौणायमन्त्रोयम्प्रोक्तोवस्वक्षरः परः

अथमन्त्रः ॥

ॐनमोनारायणाय ॥

अथपूजाप्रयोगः ॥

प्रातः कृत्यादिमातृकान्यासान्तङ्कर्म्मविधायकेशवकृत्यादिन्यासङ्कुर्य्यात् ॥ ॥ अथऋष्यादिन्यासः ॥ शिरसिप्रजापतयेऋषयेनमः ॥ मुखेगायत्रीछन्दसेनमः ॥ हृदिअर्द्धलक्ष्मीहरये देवतायैनमः ॥ ततः कराङ्गन्यासौ ॥ श्रींअङ्गुष्ठाभ्यान्नमइत्यादि ॥ तथाचगौतमीये ॥ ऋषिः प्रजापतिश्छन्दोगायत्रीदेवतापुनः ॥ अर्द्धलक्ष्मीहरिः प्रोक्तःश्रीँबीजेनाङ्गकल्पनेति ॥ ततोध्यानम् ॥ उद्यत्प्रद्योतनशतरुचिन्तप्तहेमावदातम्पार्श्वद्वन्द्वेजलधिसुतयाविश्वधात्र्याचपुष्टम् ॥ नानारत्नोल्लसितविविधाकल्पमापीतवस्त्रँव्विष्णुँव्वन्देदरकमलकौमोदकीचक्रपाणिम् ॥ एवन्ध्यात्वान्यसेत् ॥ वर्णान्मुक्तासार्द्धचन्द्रानितिदर्श्शनात्॥अं केशवकृत्यैनमोललाटे ॥ आंनारायणायकान्त्यैनमोमुखे ॥ इं माधवायपुष्टयैनमोदक्षनेत्रे ॥ ईंगोविन्दायपुष्टयैनमोवामनेत्रे ॥ नमः सर्व्वत्र उंविष्णवे धृत्यै० दक्षकर्णे ॥ ऊंमधसूदनायशान्त्यै० वामकर्णे। ऋंत्रिविक्रमाय क्रियायै० दक्षनासापुटे। ॠंवामनायदयायै० वामनासापुटे। ऌंश्रीधरायमेधायै० दक्षगण्डे । ॡंहृषीकेशायदुर्ग्गायै ० वामगण्डे । एंपद्मनाभायश्रद्धायै ०ओष्ठे। ऐंदामोदरायलज्जायै०अधरे । ओं वासुदेवायलक्ष्म्यै० ऊर्द्धदन्तपङ्क्तौ ॥ औं सङ्कर्षणायसरस्वत्यै०अधोदन्तपङ्क्तौ । अंप्रद्युम्नायधृत्यै०

मस्तके । अःअनिरुद्धायरत्यै ० मुखे । कंचक्रिणेजयायै० खंग दिनेदुर्गायै ० गंशार्ङ्गिणेप्रभायै ० घंखड्गिनेसत्यायै ० ङंशङ्खिनेचन्द्रायै ० दक्षकरमूलसन्ध्यग्रकेषु ॥ चंहलिनेवाण्यै ० छं मुसलिने विलासिन्यै ० जंशूलिने विजयायै० झंपाशिनेविरजायै० भंअङ्कुशिनेबिम्बायै ० वामकरमूलसन्ध्यग्रकेषु ॥ टंमुकुन्दाय विनदायै ० ठंनन्दजाय सुनन्दायै ० डंनन्दिनेस्मृत्यै ० ढंनराय ऋद्धयै ० णंनरकजितेसमृद्धयै ०दक्षपादमूलसन्ध्यग्रकेषु ॥तंहरयेशुद्धयै०थंकृष्णायवृद्धयै०दंसत्यायभूम्यै०धंसात्वतायमत्यै ० नंसौराष्ट्रायक्षमायै ० वामपादमूलसन्ध्यग्रकेषु ॥ पं शूरायरमायै० दक्षपार्श्वे । फंजनार्द्दनाय उमायै० वामपार्श्वे । वं भूधराय क्लेदिन्यै०पृष्ठे। भंविश्वमूर्त्तये क्लिन्नायै०नाभौ । मंवैकुण्ठायवसुदायै ० उदरे । यंत्वगात्मनेपुरुषोत्तमायवसुधायै०हृदि । रंअस्त्रगात्मनेबलिनेपरायै० दक्षांसे । लंमांसात्मनेबालानुजायपरायणायै० ककुदि । वंमेदआत्मनेबलायसूक्ष्मायै०वामांसे । शं अस्थ्यात्मनेवृषघ्नायसंधायै० हृदादिदक्षकरे । षंमज्जात्मनेवृषायप्रज्ञायै० हृदादिवामकरे ॥ संशुक्रात्मने हंसायप्रभायै०हृदादिदक्षपादे । हंप्राणात्मनेवराहायनिशायै०हृदादिवामपादे। लंजीवात्मनेविमलायअमोघायै ० हृदाद्युदरे । क्षंक्रोधात्मने नृसिंहाय विद्युतायै०हृदादिमुखे ॥ तथाचगौतमीये ॥ केशवादिरयंन्यासो न्यासमात्रेणदेहिनाम् ॥ अच्युतत्वन्ददात्येवसत्यंसत्यन्नसंशयः ॥ मातृकार्णंसमुच्चार्य्यकेशवायइतिस्मरेत् ॥ कीर्त्त्यैचन मसायुक्तमित्यादिन्यासमाचरेत् ॥ केशवायततःकीर्त्त्यैकान्त्यैनारायणायच ॥ इत्याद्यगस्त्यसंहितावचनाच्चायङ्क्रमः ॥ नतुकेशवकीर्त्तिभ्यान्नमइत्यादि ॥ तथाभुक्तिमुक्तिमिच्छताऽयन्न्यासःकर्त्तव्यःश्रीबीजादिकः ॥ यथा श्रीं अं केशवायकीर्त्त्यैनम

इत्यादि ॥ अथोपचारक्रमेणपूजा ॥ अथावाहनम् ॥ यस्यदर्श्श नमिच्छन्तिदेवाःस्वाभीष्टसिद्धये ॥ कृपयादेवदेवेशमदग्रेसन्नि धीभव ॥ यस्यतेपरमेशानस्वागतंस्वागतम्प्रभो ॥ कृतार्थोऽनुगृ हीतोऽस्मिसफलञ्जीवनम्मम ॥ यदागतोऽसिदेवेशचिदानन्दमया व्यय ॥ अज्ञानाद्वाप्रमादाद्वा वैकल्पात्साधकस्यच ॥ यदपूर्ण्ण म्भवेत्कृत्यन्तथाप्यभिमुखोभव ॥ इत्यावाहनम् ॥ अथपाद्यम् ॥ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दसम्भवः ॥ तस्मैतेपरमेशान पाद्यंशुद्धायकल्पये ॥ इतिपाद्यम् ॥ अथाचमनम् ॥ देवाना मपिदेवायदेवानान्दैवतायच॥ आचामङ्कल्पयामीशस्वधयाशुद्धि हेतवे ॥ इत्याचमनम् ॥ अथार्घ्यम् ॥ तापत्रयहरन्दिव्यम्पर मानन्दलक्षणम् ॥ तापत्रयविमोक्षायतवार्घ्यङ्कल्पयाम्यहम् ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ अथमधुपर्कम् ॥ सर्व्वकालुष्यहीनायपरिपूर्ण्णसुधा त्मकम् ॥ मधुपर्कमिमन्देवकल्पयामिप्रसीदमे ॥ इतिमधुपर्कम् ॥ अथपुनराचमनीयम् ॥ उच्छिष्टोप्यशुचिर्व्वापियस्यस्मरणमात्र तः ॥ शुद्धिमाप्नोतितस्मैतेपुनराचमनन्त्विदम् ॥ इतिपुनराच मनीयम् ॥ अथाभ्यङ्गम् ॥ गन्धतैलङ्गृहीत्वापठेत् ॥ स्नेहङ्गृहाण स्नेहेनलोकनाथमहाशय ॥ सर्व्वलोकेषुशुद्धात्मन्ददामिस्नेहमु त्तमम् ॥ इत्यभ्यङ्गम् ॥ अथस्नानम् ॥ ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षःसहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंय्यच्चभाव्यम् ॥ उतामृतत्त्व स्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥ एतावानस्यमहिमातोज्ज्याꣳश्च पूरुषः ॥ पादोस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्द्ध्वउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोवि ष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥ ततोविराडजायतावि राजोअधिपूरुषः ॥ सजातोअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥

॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतःसम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँ श्चक्रेवायव्यानारण्याग्ग्राम्याश्चये ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऋचः सामानिजज्ञिरे ॥ छन्दा॑ँसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्त स्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्मादश्वाअजायन्तयेकेचोभयादतः ॥ गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८ ॥ तय्यँज्ञम्बर्हि षिप्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः ॥ तेनदेवाअयजन्तसाद्ध्याऋषय श्चये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषँव्व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ॥ मुखङ्कि मस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्येते ॥ १० ॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहूराजन्यः॑कृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः॑पद्भ्याँ॑शू द्रोअजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥ नाभ्याऽआ सीदन्तरिक्ष॑ँ शीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रो त्रात्तथालोकाँअकल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञम तन्वत ॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मइध्मःशरद्धविः ॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधः॑कृताः ॥ देवायद्यज्ञन्तन्वा नाअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्ता निधर्म्माणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्र पू र्व्वेसाध्याःसन्तिदेवाः ॥ १६ ॥ अथतान्त्रिकमन्त्राः ॥ परमान न्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्त्तये ॥ साङ्गोपाङ्गमिदंस्नानङ्कल्पयाम्य हमीशते ॥ इतिस्नानम् ॥ अथवासः ॥ मायाँव्विनानतेजन्म निजगूहोरुतेजसे ॥ निरावरणविज्ञायवासस्तेकल्पयाम्यहमिति वासः ॥ यमाश्रित्यमहामायाजगत्सम्मोहिनीतुसा ॥ तस्मैतेप रमेशानकल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥ अथयज्ञसूत्रम् ॥ यस्यश क्तित्रयेणेदं सम्प्रोक्तमखिलञ्जगत् ॥ यज्ञसूत्रायतस्मैतेयज्ञसू त्रम्प्रकल्पयेत् ॥ इतियज्ञसूत्रम् ॥ अथभूषणम् ॥ स्व

भावसुन्दराङ्गाय सत्यासत्याश्रयायते ॥ भूषणानिविचित्राणिक
ल्पयामिसुरार्च्चित ॥ इतिभूषणम् ॥ अथजलम् ॥ समस्तदेव
देवेशसर्व्वतृप्तिकरम्परम्॥अखण्डानन्द सम्पूर्णङ्गृहाणजलमुत्त
मम् ॥ इतिजलम् ॥ अथगन्धम्॥ परमानन्द सौरभ्यपरिपूर्णदि
गन्तरम् ॥ गृहाणपरमङ्गन्धङ्कृपया परमेश्वर ॥ इतिगन्धम् ॥ अ
थपुष्पम् ॥ तुरीयगुणसम्पन्नन्नानागुणमनोहरम् ॥ आनन्दसौर
भम्पुष्पङ्गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥ इतिपुष्पम् ॥ अथधूपः ॥ वन
स्पतिरसोत्पन्नोगन्धाढ्योगन्धउत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्व्वदेवानान्धू
पोऽयम्प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिधूपः॥अथदीपः॥सुप्रकाशोमहादीपः
सर्व्वतस्तिमिरापहः॥ सबाह्याभ्यन्तरञ्ज्योतिर्दीपोयम्प्रतिगृह्यता
म् ॥ इतिदीपः॥ अथनैवेद्यम् ॥ सत्पात्रसिद्धं सहविर्व्विविधानेक
भक्षणम् ॥ निवेदयामिदेवेशसानुगायगृहाणतत् ॥ इतिनैवेद्यम्
॥ अथाचमनार्थञ्जलम् ॥ समस्तदेवदेवेशसर्व्वतृप्तिकरम्परम्
अखण्डानन्दसम्पूर्णङ्गृहाणजलमुत्तमम्॥ इतिजलम्॥अथताम्बू
म्॥ताम्बूलञ्चवरन्दिव्यङ्कर्प्पूरादिसुवासितम्॥मयानिवेदितम्भ
क्त्यागृहाणपरमेश्वर ॥ इतिताम्बूलम् ॥इतिपूजा ॥ ७ ॥

अथस्तोत्रम् ॥

आदायवेदान्सकलान्समुद्रान्निहत्यचोन्मथ्यमधुंह्युदग्रम् ॥
दत्ताःपुरायेनपितामहायविष्णुन्तमाद्यम्भजमत्स्यरूपम् ॥ १ ॥
दिव्यामृतार्त्थम्मथितेमहाब्धौदेवासुरैर्व्वासुकिमन्दराभ्याम् ॥
भूमेर्म्महावेगविघूर्णितायान्तङ्कूर्म्ममाधारगतन्नमामि ॥ २ ॥
समुद्रकाञ्चीसरिदुत्तरीयावसुन्धरामेरुकिरीटभारा ॥ दंष्ट्राग्रतो
येनसमुद्धृताभूस्तमादिकोलंशरणम्प्रपद्ये ॥ ३ ॥ भक्तार्तिभङ्गक्ष
मयाधियायस्तम्भान्तरालादुदितोनृसिंहः ॥ रिपुंसुराणान्निशि

तैर्न्नखाग्रैर्व्विदारयन्तन्नचविस्मरामि ॥ ४ ॥ चतुस्समुद्राभरणा धरित्रीन्यासायनालञ्चरणस्ययस्य ॥ एकस्यनान्यस्यपदंसुरा णान्त्रिविक्रमंसर्व्वगतन्नमामि ॥ ५ ॥ त्रिस्सप्तकृत्वोनृपतीन्नि हत्ययस्तर्प्पणंरक्तमयम्पितृभ्यः॥ चकारदोर्द्दण्डबलेनसम्यक्तमा दिशूरम्प्रणमामिरामम् ॥ ६ ॥ कुलेरघुणांसमवाप्यजन्मवि धायसेतुञ्जलधेर्ज्जलान्तः ॥ लङ्केश्वरँय्यःशमयाञ्चकारसीतापति न्तम्प्रणमामिभक्त्या॥७ ॥ हलेनसर्व्वानसुरान्निकृष्यचकारचूर्ण्णं म्मुशलप्रहारैः ॥ यङ्कृष्णमासाद्यबलम्बलीयान्भक्त्याभजेतम्ब लभद्ररामम् ॥ ८ ॥ पुरासुराणामसुरान्विजेतुंसम्भावयच्छ्रीवर चिह्नवेषम् ॥ चकारयःशास्त्रममोघकल्पन्तम्मूलभूतम्प्रणतो स्मिबुद्धम् ॥ ९ ॥ कल्पावसानेनिखिलैःसुरैस्स्वैस्सङ्वहृया मासानिमेषमात्रात् ॥ यस्तेजसास्वेनददाहभोमोविष्णवात्मक न्तन्तुरगम्भजामः ॥ १० ॥ शङ्खंसुचक्रंसुगदांसरोजन्दोर्ब्भिर्द्द धानङ्गरुडाधिरूढम् ॥ श्रीवत्सचिह्नञ्जगदादिमूलन्तमालनीलंहृ दिविष्णुमीडे ॥ ११ ॥ क्षीराम्बुधौशेषविशेषतल्पेशयानमन्तः स्मितशोभिवक्त्रम् ॥ उत्फुल्लनेत्राम्बुजमम्बुदाम्भसामाद्यंश्रुती नामसकृत्स्मरामि ॥ १२ ॥ प्रीणयेदनयास्तुत्याजगन्नाथञ्जगन्म यम् ॥ धर्म्मार्त्थकाममोक्षाणामातयेपुरुषोत्तमम् ॥ १३ ॥ इतिश्रीविष्णुस्तोत्रंसमाप्तम् ॥

अथकवचम् ॥

श्रीनारदउवाच ॥ भगवन्सर्व्वधर्म्मज्ञकवचँय्यत्प्रकाशित म् ॥ त्रैलोक्यमङ्गलन्नामकृपयाकथयप्रभो ॥ १ ॥ सनत्कुमा रउवाच ॥ शृणुवक्ष्यामिविप्रेन्द्रकवचम्परमाद्भुतम् ॥ नारायणेन कथितङ्कृपयाब्रह्मणेपुरा ॥ २ ॥ ब्रह्मणाकथितम्मह्यम्परंस्नेहाद्

दामिते ॥ अतिगुह्यतरन्तत्त्वम्ब्रह्ममन्त्रौघविग्रहम् ॥ ३ ॥ यद्धृत्वापठनाद्ब्रह्मासृष्टिँव्वितनुतेध्रुवम् ॥ यद्धृत्वापठनात्पाति महालक्ष्मीर्ज्जगत्त्रयम् ॥ ४ ॥ पठनाद्धारणाच्छम्भुःसंहर्त्तासर्व्वमन्त्रवित् ॥ त्रैलोक्यजननीदुर्ग्गामहिषादिमहासुरान् ॥ ५ ॥ वरदृप्ताञ्जघानैवपठनाद्धारणाद्यतः ॥ एवमिन्द्रादयस्सर्व्वेसर्व्वैश्वर्य्यमवाप्नुयुः ॥ ६ ॥ इदङ्कवचमत्यन्तगुप्तङ्कुत्रापिनोवदेत् ॥ शिष्यायभक्तियुक्तायसाधकायप्रकाशयेत् ॥ ७ ॥ शठायपरशिष्यायदत्त्वामृत्युमवाप्नुयात् ॥ त्रैलोक्यमङ्गलस्यास्य कवचस्यप्रजापतिः ॥ ८ ॥ ऋषिश्छन्दश्चगायत्रीदेवोनारायणःस्वयम् ॥ धर्म्मार्त्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ ९ ॥ प्रणवोमेशिरःपातुनमोनारायणायच ॥ भालम्मेनेत्रयुगलमष्टार्णोभक्तिमुक्तिदः ॥ १० ॥ क्लीम्पायाच्छ्रोत्रयुग्मञ्चैकाक्षरस्सर्व्वमोहनः ॥ क्लींकृष्णायसदाघ्राणङ्गोविन्दायेतिजिह्विकाम् ॥ गोपीजनपदँव्वल्लभायस्वाहाननम्मम ॥ ११ ॥ अष्टादशाक्षरोमन्त्रःकण्ठम्पातुदशाक्षरः ॥ १२ ॥ गोपीजनपदँव्वल्लभायस्वाहाभुजद्वयम् ॥ क्लींग्लौंक्लींश्यामलाङ्गायनमः स्कन्धौदशाक्षरः ॥१३ ॥ क्लींकृष्णःक्लींकरौपायात्क्लींकृष्णायाङ्गतोऽवतु ॥ हृदयम्भुवनेशानीक्लींकृष्णायक्लींस्तनौमम ॥ १४ गोपालायाग्निजायान्तङ्कुक्षियुग्मंसदावतु ॥ क्लींकृष्णायसदापातुपार्श्वयुग्ममनुत्तमः ॥ १५ ॥ कृष्णगोविन्दकौकटचांस्मराद्यौङेयुतौमनुः ॥ अष्टाक्षरःपातुनाभिङ्कृष्णेतिव्द्यक्षरोऽवतु ॥ १६ ॥ पृष्ठंक्लींकृष्णकङ्कालंक्लींकृष्णायद्विठान्तकः ॥ सक्थिनीसततम्पातुश्रींह्रींक्लींकृष्णठद्वयम् ॥ १७ ॥ ऊरूसप्ताक्षरःपायात्त्रयोदशाक्षरोऽवतु ॥ श्रींह्रींक्लींपदतोगोपीजनवल्लभदन्ततः ॥ १८ ॥ भायस्वाहेतिपायूं वैक्लींह्रींश्रींसदशार्ण्णकः ॥ जानुनीचसदापातु

ह्रींश्रींक्लींचदशाक्षरः ॥ १९ ॥ त्रयोदशाक्षरः पातुजङ्घेचक्राद्यु दायुधः ॥ अष्टादशाक्षरोह्रींश्रींपूर्व्वकोविंशदर्ण्णकः ॥ २० ॥ सर्व्वाङ्गम्मेसदापातुद्वारकानायकोबली ॥ नमोभगवतेपश्चाद्वा सुदेवायतत्परम् ॥ २१ ॥ताराद्योद्वादशार्ण्णोऽयम्प्राच्याम्मांस र्व्वदाऽवतु ॥ श्रींह्रींक्लींचदशार्ण्णस्तुक्लींह्रींश्रींषोडशार्ण्णकः ॥ ॥२२॥ गदाद्युदायुधोविष्णुर्म्मामग्नेर्द्दिशिरक्षतु ॥ ह्रींश्रींदशाक्षरो मन्त्रोदक्षिणेमांसदावतु ॥ २३ ॥ तारोनमोभगवतेरुक्मिणीवल्ल भायच ॥ स्वाहेतिषोडशार्ण्णोऽयन्नैर्ऋत्यान्दिशिरक्षतु ॥ २४ ॥ क्लींहृषीकेपदेशायनमोमाँवारुणेऽवतु ॥ अष्टादशार्ण्णः कामान्तो वायव्येमांसदावतु ॥ २५ ॥ श्रींमायाकामकृष्णायह्रींगोविन्दा यद्विठोमनुः ॥ द्वादशार्ण्णात्मकोविष्णुरुत्तरेमांसदावतु ॥ २६ ॥ वाग्भावङ्कामंकृष्णायह्रींगोविन्दायतत्परम् ॥ श्रींगोपीजनवल्ल भान्तेभायस्वाहाहसौस्ततः ॥ २७ ॥ द्वाविंशत्यक्षरोमन्त्रोमा मैशान्येसदावतु ॥ कालियस्यफणामध्येदिव्यन्नृत्यङ्करोतितम् ॥ ॥ २८ ॥ नमामिदेवकीपुत्रन्नृत्यराजानमच्युतम् ॥ द्वात्रिंश दक्षरोमन्त्रोऽप्यधोमांसर्व्वदावतु ॥ २९ ॥ कामदेवायविद्महेपु ष्पबाणायधीमहि ॥ तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयादेषामाम्पातुचोर्द्ध्वतः ॥ ३० ॥ इतितेकथितँव्विप्रब्रह्ममन्त्रौघविग्रहम् ॥ त्रैलोक्य मङ्गलन्नामकवचम्ब्रह्मरूपकम् ॥ ३१ ॥ ब्रह्मणाकथितम्पूर्व्वन्ना रायणमुखाच्छुतम् ॥ तवस्नेहान्मयाऽऽख्यातम्प्रवक्तव्यन्नकस्य चित् ॥ ३२ ॥ गुरुम्प्रणम्यविधिवत्कवचम्प्रपठेन्ततः ॥ सकृ द्द्विस्त्रिर्य्यथाज्ञानंसोऽपिसर्व्वतपोमयः ॥ ३३ ॥ मन्त्रेषुसकले ष्वेवदेशिकोनात्रसंशयः ॥ शतमष्टोत्तरञ्चास्यपुरश्चर्य्याविधिः स्मृतः ॥ ३४ ॥ हवनादीन्दशांशेनकृत्वातत्साधयेद्ध्रुवम् ॥ यदिस्यात्सिद्धकवचोविष्णुरेवभवेत्स्वयम् ॥ ३५ ॥ मन्त्र

सिद्धिर्भवेत्तस्यपुरश्चर्य्याविधानतः ॥ स्पर्द्धामुद्धूयसततँल्लक्ष्मीर्व्वाणीवसेत्ततः ॥ ३६ ॥ पुष्पाञ्जल्यष्टकन्दत्वामूलेनैवपठेत्सकृत् ॥ दशवर्षसहस्राणाम्पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ ३७ ॥ भूर्ज्जे विलिख्यगुटिकांस्वर्णस्थान्धारयेद्यदि ॥ कण्ठेवादक्षिणेबाहौसोऽपिविष्णुर्न्नसंशयः ॥ ३८ ॥ अश्वमेधसहस्राणिवाजपेयशतानिच ॥ महादानादियान्येवप्रादक्षिण्यम्भुवस्तथा ॥ ३९ ॥ कलान्नार्हन्तितान्येवसकृदुच्चारणात्ततः ॥ कवचस्यप्रसादेनजीवन्मुक्तोभवेन्नरः ॥ ४० ॥ त्रैलोक्यङ्क्षोभयत्येवत्रैलोक्यविजयीभवेत् ॥ इदङ्कवचमज्ञात्वायजेद्यःपुरुषोत्तमम् ॥ शतलक्षप्रजप्तोऽपिनमन्त्रस्तस्यसिद्ध्यति ॥ ४१ ॥ इतिकवचंसमाप्तम् ॥

अथहृदयम् ॥

आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौस्मृत्वा ॥ ममाभीष्टसिद्ध्यर्त्थंसङ्कलीकरणरीत्यासम्पुटीकरणरीत्यावानारायणहृदयस्यसकृदावर्त्तनङ्करिष्ये ॥ अस्यश्रीनारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य ॥ भार्ग्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीलक्ष्मीनारायणोदेवता ॥ ॐबीजम् ॥ नमःशक्तिः ॥ नारायणायेतिकीलकम् ॥ श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्त्थेजपेविनियोगः ॐनारायणःपरञ्ज्योतिरित्यङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ॐनारायणःपरम्ब्रह्मेतितर्ज्जनीभ्यां० ॐनारायणःपरोदेवइतिमध्यमाभ्यां० ॐनारायणःपरोध्यातेतिअनामिकाभ्यां० ॐनारायणःपरन्धामेतिकनि० ॐनारायणःपरोधर्म्मइतिकरतलकर० एवंहृदयादि ॥ अथदिग्बन्धः॥ ॐऐंद्र्यादिदशशम्॥ॐनमःसुदर्शनायसहस्रारायहूम्फट्बध्नामि नमश्चक्रायस्वाहा" इतिप्रातिदिशंयोज्यम् ॥ अथध्यानम् ॥ उद्यदादित्यसङ्काशम्पीतवाससमच्युतम् ॥ शङ्खचक्रगदापाणिन्ध्यायेल्लक्ष्मीपतिंहरिम् ॥ "ॐ

नमोनारायणाये" तिजपः ॥ अथमूलाष्टकम् ॥ ॐनारायणःपर
ञ्ज्योतिरात्मानारायणःपरः ॥ नारायणःपरम्ब्रह्मनारायणनमो
स्तुते॥ १॥नारायणःपरोदेवोदातानारायणःपरः॥नारायणःपरो
ध्यातानारायणनमोऽस्तुते ॥२॥ नारायणःपरन्धामध्यानन्नाराय
णःपरः ॥ नारायणःपरोधर्म्मोनारायणनमोस्तुते॥३॥नारायणः
परोवेद्योविद्यानारायणःपरः ॥विश्वन्नारायणस्साक्षान्नारायणनमो
ऽस्तुते ॥ ४ ॥ नारायणाद्विधिर्ज्जतोजातोनारायणाच्छिवः ॥ जा
तोनारायणादिन्द्रोनारायणनमोस्तुते ॥ ५ ॥ रविर्न्नारायण
न्तेजश्चान्द्रन्नारायणम्महः ॥ वन्हिर्न्नारायणःसाक्षान्नारायणनमो
ऽस्तुते ॥ ६ ॥ नारायणउपास्यःस्याद्गुरुर्न्नारायणःपरः ॥ ना
रायणःपरोबोधोनारायणनमोस्तुते ॥ ७ ॥ नारायणःफलम्मु
ख्यंसिद्धिर्न्नरायणःसुखम् ॥ सेव्योनारायणश्शुद्धोनारायणन
मोऽस्तुते ॥ ८ ॥ इतिमूलाष्टकम् ॥ अथप्रार्थनादशकम् ॥
नारायणस्त्वमेवासिदहराख्येहृदिस्थितः ॥ प्रेरकःप्रेर्य्यमाणाना
न्त्वयाप्रेरितमानसः ॥ १ ॥ त्वदाज्ञांशिरसाधृत्वाजपामिजन
पावनम् ॥ नानोपासनमार्ग्गाणाम्भावहृद्भावबोधकः ॥ २ ॥
भावार्त्थकृद्भावभूतोभावसौख्यप्रदोभव ॥ त्वन्मायामोहितंविं
श्वन्त्वयैवपरिकल्पितम् ॥ ३ ॥ त्वदधिष्ठानमात्रेणसैषासर्व्वार्त्थ
कारिणी ॥ त्वमेवताम्पुरस्कृत्य ममकामान्समर्प्पय ॥ ४ ॥
नमेत्वदन्यस्त्रातास्तित्वदन्यन्नहिदैवतम् ॥ त्वदन्यन्नहिजाना
मिपालकम्पुण्यरूपकम् ॥ ५ ॥ यावत्सांसारिकोभावोमनः
स्थोभावनात्मकः॥ तावत्सिद्धिर्भवेत्साध्यासर्व्वथासर्व्वदाविभो॥
॥ ६ ॥ पापिनामहमेवाग्र्योदयालूनान्त्वमग्रणीः ॥ दयनीयो
मदन्योऽस्तितवकोऽत्रजगत्त्रये ॥ ७ ॥ त्वयाप्यहन्नसृष्टश्चेन्न
स्यात्तवदयालुता ॥ आमयोनैवसृष्टश्चेदौषधस्यवृथोदयः ॥ ८ ॥

पापसङ्घपरिक्रान्तःपापात्मापापरूपधृक् ॥ त्वदन्यःकोऽत्रपापेभ्यस्त्रातामेजगतीतले ॥ ९ ॥ त्वमेवमाताचपितात्वमेवत्वमेवबन्धुश्चसखात्वमेव ॥ त्वमेवविद्याचगुरुस्त्वमेवत्वमेवसर्व्वम्ममदेवदेव ॥ १० ॥ प्रार्त्थनादशकञ्चैवमूलाष्टकमुदाहृतम् ॥ यःपठेच्छृणुयान्नित्यन्तस्यलक्ष्मीःस्थिराभवेत् ॥ ११ ॥ नारायणस्यहृदयंसर्व्वाभीष्टफलप्रदम् ॥लक्ष्मीहृदयकंस्तोत्रँय्यदिचेत्तद्विनाकृतम् ॥ १२ ॥ तत्सर्व्वन्निष्फलम्प्रोक्तँल्लक्ष्मीःक्रुद्धयातिसर्व्वदा ॥ एतत्सङ्कलितंस्तोत्रंसर्व्वकर्म्मफलप्रदम् ॥ १३ ॥ लक्ष्मीहृदयकञ्चैवतथानारायणात्मकम् ॥ जपेद्यःसङ्कलीकृत्यसर्व्वाभीष्टमवाप्नुयात् ॥ १४ ॥ नारायणस्यहृदयमादौजप्त्वाततःपरम् ॥ लक्ष्मीहृदयकंस्तोत्रञ्जपेन्नारायणम्पुनः ॥ १५ ॥ पुनर्न्नारायणञ्जप्त्वापुनर्ल्लक्ष्मीकृतञ्जपेत् ॥ पुनर्न्नारायणञ्जाप्यंसङ्कलीकरणम्भवेत् ॥ १६ ॥ एवम्मध्येद्विवारेणजपेत्सङ्कलितंहितत् ॥ लक्ष्मीहृदयकंस्तोत्रंसर्व्वकामप्रकाशितम् ॥ १७ ॥ तद्वज्जपादिकङ्कुर्य्यादेतत्सङ्कलितंशुभम् ॥ सर्व्वान्कामानवाप्नोतिआधिव्याधिभयंहरेत् ॥ १८ ॥ गोप्यमेतत्सदाकुर्य्यान्नसर्व्वत्रप्रकाशयेत्॥ इतिगुह्यतमंशास्त्रम्प्रातम्ब्रह्मादिकैःपुरा॥ १९॥ तस्मात्सर्व्वप्रयत्नेनगोपयेत्साधयेत्सुधीः ॥ यत्रैतत्पुस्तकान्तिष्ठेल्लक्ष्मीनारायात्मकम् ॥ २० ॥ भूतपैशाचवेतालानास्थिरास्तत्रसर्व्वदा ॥ लक्ष्मीहृदयकम्प्रोक्तँविधिनासाधयेत्सुधोः॥२१ भृगुवारेचरात्रौचपूजयेत्पुस्तकद्वयम् ॥ सर्व्वस्वंसर्व्वदासत्यङ्गोपयेत्साधयेत्सुधीः ॥ २२ ॥ गोपनात्साधनाल्लोकेधन्योभवतितत्वतः ॥ २३ ॥ इत्यथर्व्वणरहस्येउत्तरभागेश्रीनारायणहृदयंसम्पूर्णम् ॥

अथोपनिषत् ॥

॥ कश्यपउवाच ॥ एकशृङ्गवृषसिन्धोवृषाकपेसुरवृषअनादिसम्भवरुद्रकापिल विष्वक्सेन सर्व्वभूतपते ध्रुवधर्म्म वैकुण्ठ वृषावर्त्त अनादिमध्यानिधन धनञ्जय शुचिश्रवः पृश्नितेजः निजजय अमृतशय सनातन त्रिधामन् तुषित महातत्त्व लोकनाथ पद्मनाभ विरञ्चे बहुरूप अक्षय अक्षर हव्यभुक् खण्डपरशो शक्र मुञ्जकेश हंस महादक्षिण हृषीकेश सूक्ष्म महानियमधर विरजः लोकप्रतिष्ठ अरूप अग्रज धर्म्मज धर्म्मनाभ हव्यभुक् गभस्तिनाथ शतक्रतुनाथ चन्द्ररथ सूर्य्यतेजः समुद्रवासः अज सहस्रशिरः सहस्रपाद अयोमुख महापुरुष पुरुषोत्तम सहस्रबाहो सहस्रमूर्त्ते सहस्रास्य सहस्रसम्भव विश्वन्त्वामाहुः ॥ पुष्पहासचरम त्वमेववौषट् वषट्कारस्त्वामाहुरग्र्यमखेषुप्राशितारम्॥ शतधारम् सहस्रधारम् बभूव ॥ भूवन्द्य भूनाथ भृगुपुत्र वेदवेद्य ब्रह्मशय ब्राह्मणप्रिय त्वमेवद्यौरसि मातरिश्वासि धर्म्मोसि होता पोता हन्ता मन्ता नेता होमहेतुस्त्वमेव ॥ अग्र्यश्चधाम्नांत्वमेवऋग्भिः सुभाण्ड इज्योऽसि सुमेधोसि समिधस्त्वमेव मतिर्गतिर्द्दातात्वमसि मोक्षोऽसि योगोऽसि सृजसि धाता परमयज्ञोऽसि सोमोसि दीक्षितोऽसि दक्षिणासि विश्वमासि ॥ स्थविर हिरण्यगर्भ नारायण त्रिनयन आदिवर्ण्ण आदित्यतेजः महापुरुष पुरुषोत्तम आदिदेव भूमिक्रम त्रिविक्रम प्रभाकर शम्भो स्वयम्भूः भूतादिमहाभूतोऽसि ॥ विश्वभूत विश्वंत्वमेव विश्वगोप्तासि पवित्रमासि विश्वभव ऊर्द्ध्वकर्म्मन् अमृत दिवस्पते वाचस्पते घृतार्च्चे अनन्तकर्म्मवंशप्राग्वंशधीः त्वमश्वमेधः वरार्त्थिनाँव्वरदोऽसित्वम् ॥ चतुर्भिश्चतुर्भिश्चद्वाभ्याम्पञ्चभिरेवच ॥ हूयतेचपुनर्द्वाभ्यान्तुभ्यंहोत्रात्मनेनमः ॥ इत्युपनिषत्समाप्ता ॥

अथाष्टोत्तरशतनाम ॥

॥ अष्टोत्तरशतन्नाम्नाँव्विष्णोरतुलतेजसः ॥ यस्यश्रवणमात्रे नरोनारायणोभवेत् ॥१॥ विष्णुर्ज्जिष्णुर्व्वषट्कारोदेवदेवोवृषाकपिः ॥दामोदरो दीनबन्धुरादिदेवो दितेस्सुतः ॥२ ॥पुण्डरीकऽपरानन्दऽपरमात्मापरत्परः॥ परशुधारी विश्वात्मा कृष्णऽकालिमलापहः ॥३॥ कौस्तुभोद्भासितोरस्को नरोनारयणोहरिः ॥ हरोहरप्रियःस्वामी वैकुण्ठो विश्वतोमुखः॥४॥ हृषीकेशोप्रमेयात्मा वराहोधरणीधरः॥वामनोवेदवक्ताच वासुदेवस्सनातनः॥५॥रामो विरामोविरजो रावणारीरमापतिः ॥ वैकुण्ठवासीवसुमान् धनदोधरणीधरः॥६॥ धर्मेशो धरणीनाथो ध्येयोधर्म्मभृताँव्वरः॥सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षस्सहस्रपात् ॥७॥सर्व्वगःसर्व्ववित्सर्व्वः शरण्यःसाधुवल्लभः ॥ कौशल्यानन्दनश्श्रीमान्रक्षऽ कुलविनाशकः ॥ ८ ॥ जगत्कर्त्ता गजद्धर्त्ताजगज्जेता जनार्त्तिहा ॥ जानकीवल्लभोदेवो जयरूपो जलेश्वरः ॥ ९॥ क्षीराब्धिवासीक्षीराब्धितनयावल्लभस्तथा ॥ शेषशायी पन्नगारिवाहनोविष्टरश्रवाः ॥ ॥१०॥माधवोमथुरानाथो मोहदोमोहनाशनः ॥ दैत्यारिःपुण्डरीकाक्षोह्यच्युतोमधुसूदनः ॥ ११ ॥ सोमसूर्य्याग्निनयनो नृसिंहोभक्तवत्सलः ॥ नित्योनिरामयश्शुद्धोनरदेवोजगत्प्रभुः ॥ १२ ॥ हयग्रीवोजितरिपुरुपेन्द्रोरुक्मिणीपतिः ॥ सर्व्वदेवमयः श्रीशःसर्व्वाधारःसनातनः ॥ १३ ॥ सौम्यःसौम्यप्रदः स्रष्टाविष्वक्सेनोजनार्द्दनः ॥ यशोदातनयोयोगी योगशास्त्रपरायणः ॥ १४ ॥ रुद्रात्मकोरूद्रमूर्तीराघवोमधुसूदनः ॥ इतितेकथितन्दिव्यन्नाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥ १५ ॥ सर्व्वपापहरम्पुण्यँव्विष्णोरमिततेजसः ॥ दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यनाशनंसुखव

र्द्धनम् ॥ १६ ॥ सर्व्वसम्पत्करं सौम्यम्महापातकनाशनम्॥प्रात रुत्थायविप्रेन्द्रपठेदेकाग्रमानसः ॥ तस्यनश्यन्तिविपदां रशयः सिद्धिमाप्नुयात्॥१७॥इत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥

॥ अथसहस्रनाम ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ब्रह्महत्यासहस्राणाम्पापंशाम्येत्कथञ्च न॥ नपुनस्त्वय्यविज्ञाते कल्पकोटिशतैरपि ॥ १ ॥ यस्मान्म याकृतास्पर्द्धापवित्रंस्यात्कथंहरे ॥ नश्यन्तिसर्व्वपापानितन्मां वदसुरेश्वर ॥२॥तदाहदेवोगोविन्दोममप्रीत्यायथायथम् ॥ ३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सदानामसहस्रम्मे पावनम्मत्पदावहम् ॥ तत्प रोऽनुदिनंशम्भो सर्व्वैश्वर्य्यंयदीच्छसि ॥४॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ तमेवतपसानित्यम्भजामिस्तौमिचिन्तये ॥ तेनाद्वितीयमहि मोजगत्पूज्योऽस्मिपार्व्वति ॥ ५ ॥ श्रीपार्व्वत्युवाच ॥ तन्मेकथ यदेवेशयथाहमयिशङ्कर ॥ शर्व्वेश्वरीनिरुपमातवस्यांसदृशीप्र भो ॥ ६॥ श्रीमहादेवउवाच॥साधुसाधुत्वयापृष्टो विष्णोर्भगवत श्शिवे ॥ नाम्नांसहस्रँव्वक्ष्यामिमुख्यन्त्रैलोक्यमङ्गलम् ॥ ७ ॥ नारायणायपुरुषोत्तमायचनमोमहात्मने ॥ विशुद्धसत्त्वाधिष्ठायम हाहंसायधीमहि ॥ ८ ॥ॐअस्यश्रीविष्णोःसहस्रनाममन्त्रस्यमहा देवऋषिः॥ परमात्मादेवता॥सूर्य्यकोटिप्रतीकाशइतिबीजम्॥ ग ङ्गातीर्थोत्तमाशक्तिः ॥ प्रपन्नाशनिपञ्जर इतिकीलकम् ॥ वासु देवम्परम्ब्रह्मइत्यङ्गुष्ठाभ्यान्नमः॥मूलप्रकृतितर्ज्जनीभ्यान्नमः॥ भूम हावराहइतिमध्यमाभ्यान्नमः॥ सूर्य्यवंशध्वजोरामअनामिकाभ्या न्नमः ॥ ब्रह्मादिकमलादिगदासूर्य्यकेशवमिति कनिष्ठाभ्यान्नमः ॥ शेषइतिकरतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः ॥ दिव्यास्त्रइत्यस्त्रम् ॥ सर्व्वपा पक्षयार्त्थंसर्व्वाभीष्टसिद्ध्यर्त्थं श्रीविष्णोर्नामसहस्रजपेविनियोगः

॥ अथध्यानम् ॥ विष्णुंभास्वत्किरीटाङ्गदवलयगणाकल्पहारोदराङ्घ्रिश्रोणीभूषं सुवक्षोमणिमकरमहाकुण्डलम्मण्डितांसम् ॥ हस्तोद्यच्चक्रशङ्खाम्बुजगदममलम्पीतकौशेयवासोविद्युद्भासंसमुद्यद्दिनकरसदृशम्पद्महस्तन्नमामि॥ ॐ वासुदेवः परम्ब्रह्म परमात्मापरात्परम्॥परन्धाम परञ्ज्योतिः परन्तत्त्वम्परम्पदम्॥१०॥परं शिवम्परोध्येयः परंज्ञानम्परागतिः ॥ परमार्थःऽपरंश्रेयऽपरानन्दःऽपरोदयः॥११॥ परोव्यक्तःऽपरंव्योमपरार्द्धःऽपरमेश्वरः ॥ निरामयोनिर्व्विकारोनिर्व्विकल्पोनिराश्रयः॥१२॥ निरञ्जनोनिरालम्बोनिर्लेपोनिरवग्रहः ॥ निर्गुणोनिष्कलोऽनन्तोचिन्त्योऽसावचलोऽच्युतः ॥ १३ ॥ अतीन्द्रियोऽमितोऽरोध्योऽनीहोऽनीशोव्ययोऽक्षयः॥सर्व्वज्ञःसर्व्वगःसर्व्वःसर्व्वदःसर्व्वभावनः॥१४॥ सर्व्वइशंभुस्सर्व्वसाक्षीपूज्यस्सर्व्वस्यसर्व्वदृक् ॥सर्व्वशक्तिःसर्व्वसारः सर्व्वात्मासर्व्वतोमुखः ॥१५॥ सर्व्वावासःसर्व्वरूपःसर्व्वादिस्सर्व्वदुःखहा ॥ सर्व्वार्थःसर्व्वतोभद्रःसर्व्वकारणकारणम् ॥१६॥ सर्व्वातिशायकःसर्व्वाध्यक्षःसर्व्वेश्वरेश्वरः॥षड्विंशकोमहाविष्णुर्म्महागुह्योमहाहरिः॥१७॥नित्योदितोनित्ययुक्तोनित्यानन्दःसनातनः॥ मायापतिर्य्योगपतिःकैवल्यपतिरात्मभूः ॥ १८ ॥ जन्ममृत्युजरातीतःकलातीतोभवातिगः ॥ पूर्णस्सत्यश्शुद्धबुद्धस्वरूपोनित्यचिन्मयः ॥ १९ ॥ योगिप्रियोयोगमयोभवबन्धैकमोचकः ॥ पुराणःपुरुषःप्रत्यक्चैतन्यम्पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ वेदान्तवेद्योदुर्ज्ञेयस्तापत्रयविवर्ज्जितः ॥ ब्रह्मविद्याश्रयोऽलंघ्यःस्वप्रकाशःस्वयम्प्रभः ॥ २१॥ सर्व्वोपेयउदासीनःप्रणवस्सर्व्वतस्समः॥ सर्व्वानवद्योदुष्प्रापस्तुरीयस्तमसःपरः ॥ २२ ॥ कूटस्थःसर्व्वसंश्लिष्टोवाङ्मनोगोचरातिगः ॥ सङ्कर्षणःसर्व्वहरःकालःसर्व्वभयङ्करः॥२३ ॥अनुल्लङ्घ्यःसर्व्वगतिर्म्महारुद्रोदुरासदः॥मूलप्र

कृतिरानन्दःप्रज्ञाताविश्वमोहनः ॥ २४ ॥ महामायोविश्वबीज
म्परशक्तिसुखैकभुक्॥सर्व्वकाम्यो नन्तशीलस्सर्व्वभूतवशङ्करः॥
॥ २५ ॥ अनिरुद्धःसर्व्वजीवोहृषीकेशोमनःपतिः ॥ निरु
पाधिःप्रियोहंसो क्षरःसर्व्वनियोजकः ॥ २६ ॥ ब्रह्मप्राणे
श्वरःसर्व्वभूतभृद्देहनायकः ॥ क्षेत्रज्ञःप्रकृतिस्वामीपुरुषोविश्वसू
त्रधृक् ॥ २७ ॥ अन्तर्य्यामीत्रिधामाऽन्तःसाक्षीत्रिगुणईश्वरः ॥
योगिमृग्यःपद्मनाभःशेषशायीश्रियःपतिः ॥ २८ ॥ श्रीसत्यो
पास्यपादाब्जोऽनन्तःश्रीःश्रीनिकेतनः ॥ नित्यवक्षःस्थलस्थश्रीः
श्रीनिधिःश्रीधरोहरिः ॥ २९ ॥ रम्यश्रीर्न्निश्चयश्रीदोविष्णुः
क्षीराब्धिमन्दिरः ॥ कौस्तुभोद्भासितोरस्कोमाधवोजगदार्त्ति
हा ॥ ३० ॥ श्रीवत्सवक्षानिःसीमःकल्याणगुणभाजनम् ॥ पी
ताम्बरोजगन्नाथोजगद्धाताजगत्पिता ॥ ३१ ॥ जगद्बन्धुर्ज्जग
त्स्रष्टाजगत्कर्त्ताजगन्निधिः ॥ जगदेकस्फुरद्वीर्य्योनाहंवादीजग
न्मयः ॥३२ ॥ सर्व्वाश्चर्य्यमयस्सर्व्वसिद्धार्थः सर्व्ववीरजित्॥स
र्व्वामोघोद्यमोब्रह्मरुद्राद्युत्कृष्टचेतनः ॥ ३३ ॥ शम्भोःपिताम
होब्रह्मपिताशक्राद्यधीश्वरः॥सर्व्वदेवप्रियःसर्व्वदेवमूर्त्तिरनुत्तमः॥
॥३४॥सर्व्वदेवैकशरणंसर्व्वदेवैकदैवतम् ॥ यज्ञभुग्यज्ञफलदोय
ज्ञेशोयज्ञभावनः ॥ ३५ ॥ यज्ञत्रातायज्ञपुमान्वनमालीद्विज
प्रियः ॥ द्विजैकमानदो हिंस्रःकुलदेवोऽसुरान्तकः ॥ ३६ ॥ स
र्व्वदुष्टान्तकृत्सर्व्वसज्जनानन्दपालकः ॥ सर्व्वलोकैकजठरःस
र्व्वलोकैकमण्डलः ॥ ३७ ॥ सृष्टिस्थित्यन्तकृच्चक्रीशार्ङ्गधन्वा
गदाधरः ॥ शङ्खभृन्नन्दकीपद्मपाणिर्ग्गरुडवाहनः ॥३८॥ अनिर्दे
श्यवपुःसर्व्वःसर्व्वलोकैकपावनः ॥ अनन्तकीर्त्तिर्न्निःश्रेशःपौ
रुषःसर्व्वमङ्गलः ॥ ३९ ॥ सूर्य्यकोटिप्रतीकाशोयमकोटिविना
शनः ॥ ब्रह्मकोटिजगत्स्रष्टावायुकोटिमहाबलः ॥ ४० ॥ कोटी

न्दुजगदानन्दीशम्भुकोटिमहेश्वरः ॥ कुबेरकोटिलक्ष्मीवान्शत्रुकोटिविनाशनः ॥ ४१ ॥ कन्दर्पकोटिलावण्योदुर्गकोटिविविमर्द्दनः ॥ समुद्रकोटिगम्भीरस्तीर्थकोटिसमाह्वयः ॥ ४२ ॥ हिमवत्कोटिनिष्कम्पःकोटिब्रह्माण्डविग्रहः ॥ कोटयश्वमेधपापघ्नोयज्ञकोटिसमार्च्चनः ॥ ४३ ॥ सुधाकोटिस्वास्थ्यहेतुःकामधुक्कोटिकामदः ॥ ब्रह्मविद्याकोटिरूपःशिपिविष्टः शुचिश्रवाः ॥ ४४ ॥ विश्वम्भरस्तीर्थपादःपुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ आदिदेवोजगज्जैत्रोमुकुन्दःकालनेमिहा ॥ ४५ ॥ वैकुण्ठोऽनन्तमाहात्म्योमहायोगीश्वरेश्वरः ॥ नित्यतृप्तोनृसद्भावोनिःशङ्कोनरकान्तकः ॥ ४६ ॥ दीनानाथैकशरणँविश्वैकव्यसनापहा ॥ जगत्क्षमाकृतोनित्यःकृपालुःसज्जनाश्रयः ॥ ४७ ॥ योगेश्वरःसदोदीर्णोवृद्धिक्षयविवर्ज्जितः ॥ अधोक्षजोविश्वरेताःप्रजापतिसमाधिपः ॥ ४८ ॥ शक्रब्रह्मार्च्चितपदःशम्भुब्रह्मोर्द्ध्वधामगः ॥ सूर्य्यसोमेक्षणोविश्वभोक्तासर्व्वस्यपारगः ॥ ४९ ॥ जगत्सेतुर्द्धर्म्मसेतुर्द्धीरोऽरिष्टधुरन्धरः ॥ निर्म्ममोखिललोकेशोनिःसङ्गोऽद्भुतभोगवान् ॥ ५० ॥ रम्यमायोविश्वविश्वोविष्वक्सेनोनगोत्तमः ॥ सर्व्वःश्रियःपतिर्द्देव्याःसर्व्वभूषणभूषितः ॥ ५१ ॥ सर्व्वलक्षणलक्षण्यःसर्व्वदैत्येन्द्रदर्पहा ॥ समस्तदेवसर्व्वज्ञःसर्व्वदैवतनायकः ॥ ५२ ॥ समस्तदेवतादुर्गः प्रपन्नाशनिपञ्जरः॥समस्तदेवकवचंसर्व्वदेवशिरोमणिः ॥ ५३ ॥ समस्तभयनिर्भिन्नोभगवान्विष्टरश्रवाः ॥ विभुस्सर्व्वहितोप्यक्कोंहतारिःसुरातिप्रदः॥ ॥ ५४ ॥ सर्व्वदैवतजीवेशोब्राह्मणादिनियोजकः ॥ ब्रह्माशम्भुपरार्द्धाब्योब्रह्मज्जेष्ठः शिशुःस्वराड् ॥ ५५ ॥ विराड्भक्तपराधीनःस्तुत्यःसर्व्वार्थसाधकः ॥सर्व्वार्थकर्त्ताकृत्यज्ञःस्वार्थकृत्यसदोज्झितः ॥५६॥ सदानवस्सदाभद्रःसदाशान्तःसदाशिवः॥ सदाप्रि

यःसदातुष्टःसदापुष्टःसदार्च्चितः ॥५७॥ सदापूतःपावनाग्रोवेदगुह्योवृषाकपिः ॥ सहस्रनामात्रियुगश्चतुर्म्मूर्त्तिश्चतुर्भुजः ॥ ५८॥ भूतभव्यभवन्नाथोमहापुरुषपूर्व्वजः ॥नारायणोमुञ्जकेशःसर्व्वयोगविनिस्सृतः ॥ ५९ ॥ वेदसारोयज्ञसारःसामसारस्तपोनिधिः ॥ साध्यश्रेष्ठपुराणर्षिर्निष्ठाशान्तिपरायणः ॥ ६० ॥ शिवस्त्रिशूलविध्वंसीश्रीकण्ठैकवरप्रदः ॥ नरकृष्णोहरिर्द्धर्म्मनन्दनोधर्म्मजीवनः ६१ ॥ आदिकर्त्तासर्व्वसत्यःसर्व्वस्त्रोरत्नदर्प्पहा ॥ त्रिकालोजितकन्दर्प्पउर्व्वशीदृङ्मुनीश्वरः ॥ ६२ ॥ आद्यकविर्हयग्रीवःसर्व्ववागीश्वरेश्वरः ॥ सर्व्वदेवमयोब्रह्मगुरुर्वाग्मीश्वरोपतिः ॥ ६३ ॥ अनन्तविद्याप्रभवोमूलाविद्याविनाशकः ॥ सर्व्वाहंणोजगज्जाड्यनाशकोमधुसूदनः ॥ ६४ ॥ अनन्तमन्त्रकोटीशःशब्दब्रह्मैकपावकः ॥ आदिविद्वान्वेदकर्त्तावेदात्माश्रुतिसागरः ॥ ६५ ॥ ब्रह्मार्त्थवेदाभरणःसर्व्वविज्ञानजन्मभूः ॥ विद्याराजोज्ञानराजोज्ञानसिन्धुरखण्डधीः ॥ ६६ ॥ मत्स्यदेवोमहाशृङ्गोजगद्बीजवहित्रधृक् ॥ लीलाव्यात्ताखिलाम्भोधिश्चतुर्व्वेदप्रवर्त्तकः ॥ ६७ ॥ आदिकूर्म्मोखिलाधारस्तृणीकृतजगद्भवः ॥ अमरीकृतदेवौघःपीयूषोत्पत्तिकारणम् ॥ ६८ ॥ आत्माधारोधरधारोयज्ञाङ्गोधरणीधरः॥ हिरण्याक्षहरःपृथ्वीपतिःश्राद्धादिकल्पकः ॥ ६९ ॥ समस्तपितृभीतिघ्नःसमस्तपितृजीवनम् ॥ हव्यकव्यैकभुग्भव्योग्गुणभव्यैकदायकः ॥ ७० ॥ लोमान्तलीनजलधिःक्षोभिताशेषसागरः ॥ महावराहोयज्ञघ्नध्वंसनोयाज्ञिकाश्रयः ॥ ७१ ॥ नरसिंहोदिव्यसिंहःसर्व्वारिष्टार्त्तिदुःखहा ॥ एकवीरोद्भुतबलोयन्त्रमन्त्रैकभञ्जनम् ॥ ७२ ॥ ब्रह्मादिदुःसहज्योतिर्युगान्ताग्न्यतिभीषणः ॥ कोटिवज्राधिकनखोगजदुष्प्रेक्ष्यमूर्त्तिधृक् ॥ ७३ ॥ मातृचक्रप्रमथनोमहामातृगणेश्वरः ॥ अचिन्त्योमो

घवोय्योढ्यःसमस्तासुरघस्मरः ॥ ७४ ॥ हिरण्यकशिपुश्छे दीकालःसङ्कर्षणःपतिः ॥ कृतान्तवाहनःसद्यःसमस्तभयनाशनः॥ ७५ ॥ सर्व्वविघ्नान्तकःसर्व्वसिद्धिदःसर्व्वपूरकः ॥ समस्तपातकध्वंसीसिद्धमन्त्राधिकाह्वयः ॥ ७६ ॥ भैरवेशोहरार्त्तिघ्नः कालकल्पोदुरासदः ॥ दैत्यगर्भस्रावीनामास्फुटब्रह्माण्डवर्ज्जितः ॥ ७७ ॥ स्मृतिमात्राखिलत्राताभूतरूपोमहाहरिः ॥ ब्रह्मचर्म्मशिरःपट्टदिक्पालोऽर्द्धाङ्गभूषणः ॥ ७८ ॥ द्वादशार्कशिरोधामारुद्रशीर्षैकनूपुरः ॥ योगिनीग्रस्तगिरिजारतोभैरवतर्ज्जकः ॥ ७९ ॥ वीरचक्रेश्वरोऽत्युग्रोयमारिःकालसंव्वरः ॥ क्रोधेश्वरोरुद्रचण्डीपरिवादीसुदुष्टभाक् ॥ ८० ॥ सर्व्वाक्षःसर्व्वमृत्युश्चमृत्युर्म्मृत्युनिवर्त्तकः ॥ असाध्यस्सर्व्वरोगघ्नःसर्व्वदुर्ग्रहसौम्यकृत् ॥ ८१ ॥ गणेशकोटिदर्प्पघ्नोदुःसहोऽशेषगोत्रहा ॥ देवदानवदुर्द्धर्षोजगत्भक्ष्यप्रदःपिता ॥८२॥समस्तदुर्गतित्राताजगद्भक्षकभक्षकः॥उग्रेशोऽसुरमार्ज्जारःकालमूषकभक्षकः ॥८३॥ अनन्तायुधदोर्द्दण्डोनृसिंहोवीरभद्रजित् ॥ योगिनीचक्रगुह्येशःशक्रारिःपशुमांसभुक्॥८४॥रुद्रोनारायणोमेषरूपशङ्करवाहनः ॥मेषरूपीशिवत्राताद्दुष्टशक्तिसहस्रभुक् ॥ ८५ ॥ तुलसीवल्लभोवीरोऽचिन्त्यमायोऽखिलेष्टदः॥ महाशिवःशिवोरुद्रोभैरवैककपालभृत् ॥८६॥भिल्लश्चक्रेश्वरश्चक्रीदिव्यमोहनरूपधृक् ॥ गौरीसौभाग्यदोमायानिधिर्म्मायाभयापहः॥८७॥ ब्रह्मतेजोमयोब्रह्मश्रीमयश्चत्रयीमयः ॥ सुब्रह्मण्योबलिध्वंसीवामनोऽदितिदुःखहा ॥ ८८ ॥ उपेन्द्रोनृपतिर्व्विष्णुःकश्यपान्वयमण्डनः ॥ बलिस्वाराज्यदःसर्व्वदेवविप्रात्मदोऽच्युतः ॥८९ ॥ उरुक्रमस्तीर्थपादस्त्रिदशश्चत्रिविक्रमः ॥ व्योमपादःस्वपादाम्भःपवित्रितजगत्त्रयः ॥ ९० ॥ ब्रह्मेशाद्याभिवन्द्याङ्घ्रिर्द्धुतकर्म्माद्रिधारणः ॥ अचिन्त्याद्भुतवि

स्तारोविश्ववृक्षोमहाबलः ॥ ९१ ॥ बहुमूर्द्धापराङ्गच्छिद्गुपती शिरोहरः ॥ पापस्तेयःसदापुण्योदैत्येशोनित्यखण्डकः ॥९२॥ पूरिताखिलदेवेशोविश्वात्थैकावतारकृत् ॥ अमरोनित्यगुप्तात्मा भक्तचिन्तामणिःसदा ॥ ९३ ॥ वरदःकार्त्तवीर्य्यादिराजराज्य प्रदोऽनघः ॥ विश्वश्लाघ्योऽमिताचारोदत्तात्रेयोमुनीश्वरः॥९४॥ परशक्तिसमायुक्तोयोगानन्दमदोन्मदः ॥ समस्तेन्द्रारितेजोहृत् परमानन्दपादपः ॥ ९५ ॥ अनसूयागर्भरत्नोभोगमोक्षसुख प्रदः ॥ जमदग्निकुलादित्योरेणुकाद्भुतशक्तिहृत् ॥ ९६ ॥ मातृहत्याघनिर्लेपःस्कन्दजिद्विप्रराज्यदः ॥ सर्व्वक्षत्रान्तकृद्वीरदर्पहाकार्त्तवीर्य्यजित् ॥ ९७ ॥ योगीयोगावतारश्चयोगीशोयोगतत्परः ॥ परमानन्ददाताचशिवाचार्य्ययशःप्रदः ॥ ९८ ॥ भीमःपरशुरामश्चशिवाचार्य्यैकविश्वभूः ॥ शिवाखिलज्ञानकोशी भीष्माचार्य्योऽग्निदैवतः ॥ ९९ ॥ द्रोणाचार्य्यगुरुर्व्विश्वजैत्रधन्वाकृतान्तकृत् ॥ अद्वितीयतमोमूर्त्तिर्ब्रह्मचर्य्यैकदक्षिणः ॥ ॥ १०० ॥ मनुश्रेष्ठःसतांसेतुर्म्महीयान्वृषभोविराट् ॥ आदिराजःक्षितिपितासर्व्वरत्नैकदोहकृत् ॥१०१॥ पृथुजन्माद्येकदक्षो ह्रीःश्रीःकीर्त्तिःस्वयन्धृतिः ॥ जगद्वृत्तिप्रदश्चक्रवर्त्तिश्रेष्ठोदुरस्त्रधृक् ॥ १०२ ॥ सनकादिमुनिप्राप्यद्भगवद्भक्तिवर्द्धनः ॥ वर्णाश्रमादिधर्म्माणाङ्कर्त्तावक्ताप्रवर्त्तकः ॥ १०३ ॥ सूर्य्यवंशध्वजोरामोराघवःसद्गुणार्णवः ॥ ककुत्स्थवीरताधर्म्मोराजधर्म्मधुरन्धरः ॥१०४॥नित्यसुस्थाशयःसर्व्वभद्रग्राहीशुभैकहृक्॥ नवरत्नंरत्ननिधिःसर्व्वाध्यक्षोमहानिधिः ॥ १०५ ॥ सर्व्वश्रेष्ठाश्रयः सर्व्वशस्त्रास्त्रग्रामवीर्य्यवान् ॥ जगद्वशीदाशरथिःसर्व्वरत्नाश्रयो नृपः॥१०६॥धर्म्मःसमस्तधर्म्मस्थोधर्म्मद्रष्टाखिलार्त्तिहृत् ॥ अतीन्द्रोज्ञानविज्ञानपारदश्वाक्षमाम्बुधिः ॥१०७॥सर्व्वप्रकृष्टःशिष्टे

श्चेहर्षशोकाद्यनाकुलः ॥ पित्राज्ञात्यक्तसाम्राज्यः सपत्नोदय निर्भयः ॥ १०८ ॥ गुहादेशार्पितैश्वर्य्यःशिवस्पर्द्धाजटाधरः॥ चित्रकूटाप्तरत्नाद्रिजगदीशोरणेचरः ॥ १०९ ॥ यथेष्टामोघ शस्त्रास्त्रोदेवेन्द्रतनयाक्षिहा ॥ ब्रह्मेन्द्रादिनतैषोको मारीचघ्नोवि राधहा ॥ ११० ॥ ब्रह्मशापहताशेषदण्डकारण्यपावनः ॥ चतु र्द्दशसहस्राख्यरक्षोघ्नैकशरैकभृत् ॥ १११ ॥ खरारिस्त्रिशिरोह न्ता दूषणघ्नोजनार्द्दनः ॥ जटायुषोग्निगतिदऽकवन्धस्वर्ग्गदाय कः ॥ ११२ ॥ लीलाधनुऽकोट्यपास्तदुन्दुभ्यास्थिमहाचयः ॥ सप्ततालव्यथाकृष्टध्वजपातालदानवः ॥११३ ॥ सुग्रीवराज्यदो धीमान् मनसैवाभयप्रदः ॥ हनूमद्रुद्रमुख्येशः समस्तकपिदेहभृ त् ॥ ११४ ॥ अग्निदैवत्यबाणैकव्याकुलीकृतसागरः ॥ सम्ले च्छकोटिबाणैकशुष्कनिर्द्दग्धसागरः ॥ ११५ ॥ सनागदैत्यधा मैकव्याकुलीकृतसागरः ॥ समुद्राद्भुतपूर्व्वैकबद्धसेतुर्य्यशोनिधिः ॥ ११६ ॥ असाध्यसाधको लङ्कासमूलोत्कर्षदक्षिणः ॥ वरदृप्त जनस्थानपौलस्त्यकुलकृन्तनः ॥११७ ॥ रावणघ्नऽप्रहस्ताच्छि त्रकुम्भकर्णभिदुग्रहा ॥ रावणैकमुखच्छेत्ता निश्शङ्केन्द्रैकराज्य दः॥ ११८ ॥ स्वर्ग्गास्वर्ग्गत्वविच्छेदीदेवेन्द्रादिन्द्रताहरः ॥ रक्षो देवत्वहृद्धर्म्माधर्म्मघ्नहर्म्यऽपुरुष्टुतः ॥ ११९ ॥ नातिमात्रदशा स्यारिर्द्दत्तराज्यविभीषणः ॥ सुधावृष्टिमृताशेषस्वसैन्यजीवनैक कृत् ॥ १२० ॥ देवब्राह्मणनामैकधातासर्व्वामरार्च्चितः ॥ ब्रह्मसू र्य्येन्द्ररुद्रादिवन्द्योऽर्च्चितःसताम्प्रियः ॥ १२१ ॥ अयोध्याखि लराज्यार्हःस्सर्व्वभूतमनोहरः ॥ स्वाम्यतुल्यकृपादत्तो हीनोत्कृ ष्टैकसत्प्रियः॥१२२॥स्वपक्षादिन्यायदर्शी हीनार्त्थोऽधिकसाध कः ॥ व्याधव्याजानुचितकृत्तावकोऽखिलतुष्टिकृत् ॥१२३॥ पार्व्वत्यधिकयुक्तात्माप्रियात्यक्तसुरारिजित्॥साक्षात्कुशलवत्स

ऽन्द्राग्निनातोऽपराजितः ॥१२४॥ कोशलेन्द्रोवीरबाहुःसत्यार्थ स्त्यक्तसोदरः॥ यशोदानन्दनो नन्दीधरणीमण्डलोदयः॥१२५॥ ब्रह्मादिकाम्यसान्निध्यसनाथीकृतदैवतः ॥ ब्रह्मलोकाप्तचाण्डालाद्यशेषप्राणिसार्त्थपः ॥ १२६॥ स्वर्णीतगर्द्दभश्वादिचिरायोध्यावलैककृत् ॥ रामाद्वितीयः सौमित्रिलक्ष्मणप्रहतेन्द्रजित् ॥ ॥१२७॥ विष्णुभक्ताशिवांहःक्षित् पादुकाराज्यनिर्वृतः ॥ भरतोऽसह्यगन्धर्व्वकोटिघ्नोलवणान्तकः ॥ १२८॥ शत्रुघ्नोवैद्यराडायुर्व्वेदगर्भौषधीपतिः ॥ नित्यानित्यकरोधन्वन्तरिर्य्यज्ञोजगद्धरः ॥ १२९ ॥ सूर्य्यविघ्नःसुराजीवोदक्षिणेशोद्विजप्रियः ॥छिन्नमूर्द्धोपदेशार्कतनूजकृतमैत्रिकः ॥ १३० ॥ शेषाङ्गस्थापितनरःकपिलः कर्द्दमात्मजः ॥ योगात्मकध्यानभङ्गसगरात्मजभस्मकृत् ॥ १३१ ॥ धर्म्मोविश्वेन्द्रसुरभीपतिः शुद्धात्मभावितः ॥शम्भुत्रिपुरदाहैकस्थैर्य्यविश्वरथोद्धतः ॥ १३२ ॥ विश्वात्माशेषरुद्रार्त्थशिरश्छेदाक्षताकृतिः ॥ वाजपेयादिनामाग्निर्व्वेदधर्म्मपरायणः ॥ १३३ ॥ श्वेतद्वीपपतिःसाङ्ख्यप्रणेतासर्व्वसिद्धिराट् ॥ विश्वप्रकाशितध्यानयोगोमोहतमिस्रहा ॥ १३४॥ भक्तशम्भुजितोदैत्यामृतवापीसमस्तपः ॥ महाप्रलयविश्वैकोऽद्वितीयोखिलदैत्यराट्॥१३५॥शेषदेवःसहस्राक्षःसहस्राऽङ्घ्रिशिरोभुजः॥ फणोफणिफणाकारयोजिताभ्यम्बुदक्षितिः ॥१३६॥कालाग्निरुद्रजनकोमुसलास्त्रोहलायुधः ॥ नीलाम्बरोवारुणीशोमनोवाक्कायदोषहा ॥ १३७ ॥ स्वसन्तोषतृप्तिमात्रःपातितैकदशाननः ॥ बलिसँय्यमनोघोरोरौहिणेयः प्रलम्बहा ॥ १३८ ॥ मुष्टिकघ्नोद्विविदहाकालिन्दीभेदनोबलः ॥ रेवतीरमणऽ पूर्व्वभक्तिखेदाच्युताग्रजः ॥ १३९ ॥ देवकीवसुदेवोत्थोऽदितिकश्यपनन्दनः ॥ वार्ष्णेयःसात्वतांश्रेष्ठःशौरिर्य्यदुकुलोद्वहः ॥१४०॥ नराकृतिऽपूर्ण

शोरविस्तेजःश्रेष्ठःशुक्रःकवीश्वरः ॥ १७४ ॥ महर्षिराड्भृगुर्वि ष्णुरादित्येशोबलिःस्वराट् ॥ वायुर्वह्निः शुचिःश्रेष्ठःशङ्करोरुद्र राड्गुरुः ॥ १७५ ॥ विद्वत्तमश्चित्ररथोगन्धर्व्वाग्र्योवसूत्त मः ॥ वर्णादिरग्र्यास्त्रीगौरीशक्त्यग्र्याश्रीश्चनारदः ॥ १७६ ॥ देवर्षिराट्पाण्डवाग्र्योऽर्ज्जुनोनारदवादराट् ॥ पवनःपवने शानोवरुणोयादसाम्पतिः ॥ १७७ ॥ गङ्गातीर्त्थोत्तमोद्भूत श्छत्रकाग्र्यँव्वरौषधम् ॥ अन्नंसुदर्शनास्त्राग्र्योवज्रप्रहरणोत्तम म् ॥ १७८ ॥ उच्चैःश्रवावाजिराजऐरावतइभेश्वरः ॥ अ रुन्धत्येकपत्नीशोह्यश्वत्थोऽशेषवृक्षराट् ॥ १७९ ॥ अध्या त्मविद्याविद्यात्मा प्रणवश्छन्दसाँव्वरः ॥ मेरुर्गिरिपतिर्म्मार्ग्गो मासाग्र्यःकालसत्तमः ॥ १८० ॥ दिनाद्यात्मा पूर्व्वसिद्धिः कापि लः सामवेदराट् ॥ तार्क्ष्यःखगेन्द्र ऋत्वग्र्योवसन्तः कल्पपादपः ॥ १८१ ॥ दातृश्रेष्ठःकामधेनुरार्त्तिघ्नाग्र्यःसुरोत्तमः ॥ चिन्ता मणिर्ग्गुरुश्रेष्ठो माताहिततमःपिता ॥ १८२ ॥ सिंहोमृगेन्द्रो नागेन्द्रोवासुकिर्भूधरोनृपः ॥ वर्णेशोब्राह्मणश्चान्तःकरणाग्र्यन्न मोनमः ॥ १८३ ॥ इत्येतद्वासुदेवस्यविष्णोर्न्नामसहस्रकम् ॥ सर्व्वापराधशमनम्परम्भक्तिविवर्द्धनम् ॥ १८४ ॥ अक्षयब्रह्म लोकादिसर्व्वार्त्थाप्त्यैकसाधनम् ॥ विष्णुलोकैकसोपानं सर्व्वदु ःखविनाशनम् ॥ १८५ ॥ समस्तसुखदं सत्यम्परन्निर्व्वाणदाय कम् ॥ कामक्रोधादिनिःशेषमनोमलविशोधनम् ॥ १८६ ॥ शान्तिदम्पावनन्नृणाम्महापातकिनामपि ॥ सर्व्वेषाम्प्राणिनामा शुसर्व्वाभीष्टफलप्रदम् ॥ १८७ ॥ सर्व्वविघ्नप्रशमनंसर्व्वारिष्टवि नाशनम् ॥ घोरदुःखप्रशमनन्तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ॥ १८८ ॥ तापत्रयापहङ्गुह्यन्धनधान्ययशस्करम् ॥ सर्व्वैश्वर्य्यप्रदंसर्व्वसि द्धिदंसर्व्वकालदम् ॥ १८९ ॥ तीर्त्थयज्ञतपोदानव्रतकोटिफल

प्रदम् ॥ अप्रज्ञजाड्यशमनंसर्व्वविद्याप्रवर्त्तकम् ॥ १९० ॥ राज्यदंराज्यकामानांरोगिणांसर्व्वरोगनुत् ॥ वन्ध्यानांसुतदञ्चा शुसर्व्वश्रेष्ठफलप्रदम् ॥ १९१ ॥ अस्त्रग्रामविषध्वंसिग्रहपीडा विनाशनम् ॥ मङ्गल्यम्पुण्यमायुष्यंश्रवणात्पठनाज्जपात्॥१९२ सकृदस्याखिलावेदाःसाङ्गामन्त्राश्चकोटिशः ॥ पुराणशास्त्रंस्मृ तयःपठिताऽपाठितास्तथा ॥ १९३ ॥ जप्त्वास्यश्लोकंश्लोका र्द्धम्पादंव्वापठतःऽप्रिये ॥ नित्यंसिद्ध्यतिसर्व्वेषामचिरात्किमु तोऽखिलम् ॥ १९४ ॥ प्राणेनसदृशंसद्यःऽप्रत्यहंसर्व्वकर्म्मसु ॥ इदम्भद्रेत्वयागोप्यम्पाठ्यंस्वात्थैंकसिद्धये ॥ १९५ ॥ नावैष्ण वायदातव्यँव्विकल्पोपहतात्मने ॥ भक्तिश्रद्धाविहीनायविष्णु सामान्यदर्शिने ॥ १९६ ॥ देयम्पुत्रायशिष्यायशुद्धायहित काम्यया॥मत्प्रसादादृतेनेदङ्गृहीष्यन्त्यल्पमेधसः॥१९७॥ कलौ सद्यःऽफलङ्कल्पग्राममेष्यतिनारद ॥ लोकानाम्भाग्यहीनानाँय्ये नदुःऽखँव्विनश्यति ॥१९८॥ क्षेत्रेषुवैष्णवेष्वेतदार्य्यावर्त्तेभविष्य ति ॥ नास्तिविष्णोःऽपरंसत्यन्नास्तिविष्णोःऽपरम्पदम् ॥ १९९ ॥ नास्तिविष्णोःऽपरंज्ञानन्नास्तिमोक्षोह्यवैष्णवः ॥ नास्तिविष्णोःऽ परोमन्त्रोनास्तिविष्णोःऽपरन्तपः ॥ २०० ॥ नास्तिविष्णोःऽपर न्ध्यानन्नास्तिमन्त्रोह्यवैष्णवः ॥ किन्तस्यबहुभिर्म्मन्त्रैःऽकिञ्जपै र्व्वहुविस्तरैः ॥ २०१ ॥ वाजपेयसहस्रैःऽकिंभक्तिर्य्यस्यजनार्द्दने ॥ सर्व्वतीर्थमयो विष्णुःसर्व्वशास्त्रमयःऽप्रभुः ॥ २०२ ॥ स र्व्वक्रतुमयोविष्णुःसत्यंसत्यँव्वदाम्यहम् ॥ आब्रह्मसारसर्व्वस्वं सर्व्वमेतन्मयोदितम् ॥ २०३ ॥ श्रीपार्व्वत्युवाच ॥ धन्यास्म्यनु गृहीतास्मिकृतार्त्थास्मिजगद्गुरो ॥ यन्मयेदंश्रुतंस्तोत्रंत्वद्रह स्यंसुदुर्ल्लभम् ॥ २०४ ॥ अहोबतमहत्कष्टंसमस्तसुखदेहरौ ॥ विद्यमानेऽपिसर्व्वेशेमूढाःऽक्लिश्यन्तिसंसृतौ ॥ २०५ ॥

यमुद्दिश्य सदानाथोमहेशोपिदिगम्बरः ॥ जटिलोभस्मलिप्ताङ्गस्तपस्वीवीक्षितोजनैः ॥ २०६ ॥ अतोऽधिकोनदेवोऽस्तिलक्ष्मीकान्तान्मधुद्विषः ॥ यत्तत्त्वश्चिन्त्यतेनित्यन्त्वया योगीश्वरेणहि ॥ २०७ ॥ अतःपरङ्किमधिकम्पदंश्रीपुरुषोत्तमात् ॥ तमविज्ञायतान्मूढायजन्तेज्ञानमानिनः ॥ २०८ ॥ मुषितास्मित्वयानाथचिरँय्यदयमीश्वरः ॥ प्रकाशितोनमेयस्य दत्ताद्यादिव्यशक्तयः ॥ २०९ ॥ अहोसर्व्वेश्वरोविष्णुःसर्व्वदेवोत्तमोत्तमः ॥ भवदादिगुरुर्म्मूढैःसामान्यइवलक्ष्यते ॥ ॥ २१० ॥ महीयसांहिमाहात्म्यम्भजमानान्भजन्तिचेत् ॥ द्विषतोऽपितथापापानुपेक्ष्यन्तेक्षमालयाः ॥ २११ ॥ मयापिबाल्येस्वपितुःप्रजाहृष्टाबुभुक्षिताः ॥ दुःखादशक्ताःस्वम्पोष्टुंश्रियानाध्याक्षिताःपुरा ॥ २१२ ॥ त्वयासँव्वर्द्धिताभिश्चप्रजाभिर्व्विबुधादयः ॥ विससद्भिःस्वशक्त्याद्याःससुहृन्मित्रबान्धवाः ॥ ॥ २१३ ॥ त्वयाविनाक्वदेवत्वङ्क्वधैर्य्यंक्वपरिग्रहः॥सर्व्वेभवन्ति जीवन्तोयातनाःशिरसिस्थिताः ॥ २१४ ॥ तामृतेनैवधर्म्मार्त्थौ कामोमोक्षोऽपिदुर्ल्लभः ॥ क्षुधितानान्दुर्गतानाङ्कुतोयोगसमाधयः ॥ २१५ ॥ साचसंसारसारैकासर्व्वलोकैकपालिका ॥ वश्यासाकमलायस्यत्यक्तात्वामपिशङ्कर ॥ २१६ ॥ श्रियाधर्म्मेण शौर्य्येणरूपेणार्ज्जवसम्पदा ॥ सर्व्वातिशयवीर्य्येणसम्पूर्णस्यमहात्मनः ॥ २१७ ॥ कस्तेनतुल्यतामेतिदेवदेवेनविष्णुना ॥ यस्यांशांशकभागेनविनासर्व्वंव्विलीयते ॥ २१८ ॥ जगदेतत्तथाप्राहुर्दोषायैतद्विमोहिता ॥ नास्यजन्मजरामृत्युर्न्नप्राप्यँव्वार्त्थमेववा ॥ २१९ ॥ तथापिकुरुतेधर्म्मान्पालनायसताङ्कृते ॥ विज्ञापयमहादेवम्प्रणम्यैकम्महेश्वरम् ॥ २२० ॥ अवधार्य्यंतथासाहंकान्तकामदशाश्वत ॥ कामाद्यासक्तचित्तत्वात्किन्तुस

र्व्वेश्वरप्रभो ॥ २२१ ॥ त्वन्मयत्वात्प्रसादाद्वाशक्नोमिपठितुन्नचे त् ॥ विष्णोस्सहस्रनामैतत्प्रत्यहँव्वृषभध्वज ॥ नाम्नैकेनतुयेन स्यात्तत्फलम्ब्रूहिमेप्रभो ॥२२२॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ राम रामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे ॥ सहस्रनामभिस्तुल्यंरामनामव रानने ॥ २४४ ॥ अतःसर्व्वाणितीर्त्थानिजलञ्चैवप्रयागजम् ॥ विष्णोर्न्नामसहस्रस्यकलान्नार्हन्तिषोडशीम् ॥ २२४ ॥ इति नार दपञ्चरात्रोक्तश्रीविष्णोर्न्नामसहस्रंसमाप्तम्

इति विष्णुतन्त्रं समाप्तम् ॥

इतिश्रीशाक्तप्रमोदस्समाप्तः ॥

कालीध्यानं तदुक्तं परमिह लिखितं चित्रिताङ्गञ्चकाल्या यन्त्रोद्धारस्सयन्त्रोमनुरपिकथितःसोद्धृतिःपूजनञ्च ॥ सङ्गि तंचाप्यनल्पंस्तुतिरपिकथिताचापराधार्द्दनीचनाम्नांसाहस्रमुक्तं शतमुपनिषदावर्म्मंहृच्चोक्तमत्र ॥ १ ॥ तारायाःपूजनंस्तोत्रमि हाहिगादितँव्वर्म्मचोक्तँव्वरेण्यम् तत्पश्चाद्धृतसमुक्तंपरमुपनिषद ष्टोत्तरम्पूतनाम्नाम्॥ यत्नात्प्रोक्तन्तदीयंशतमिहशुभदन्तत्सहस्र ञ्चरम्यन्ताराख्रूपन्तमोघ्नन्त्वरितफलकरंषोडशीयन्तथैव ॥ २ ॥ लक्ष्म्यालालित्ययुक्तंसकलमपितथासूक्तमत्राधिकञ्चधूमाधर्म्मा र्त्थयुक्तन्तादिहचभुवनाभक्तिदाञ्छिन्नमस्ता॥ शत्रुच्छेदप्रदन्तद्धल युतबगलाबुद्धिदंभैरवीयम्मातङ्ग्याचामाननीयँय्यजनमथतुतिर्व्व र्म्मंहृत्प्रोक्तमत्र ॥३॥नाम्नामष्टोत्तरँय्यच्छतमिहालिखितन्तत्सहस्रं म्परञ्चपूजाप्रोक्ताकुमार्य्याःस्तुतिरपिकथितावर्म्मतत्तर्प्पणञ्च ॥ होमोदानम्बलेश्चप्रचरितमिहवैशोभिशाक्तप्रमोदेप्राप्तेदौर्लभ्यमे

षामिहतुसमुदितंसर्व्वमेकत्रलभ्यम् ॥ ४ ॥ ध्यानन्तदुक्ताश्चित्रञ्च यन्त्रमन्त्रौचकीर्त्तितौ ॥ सोद्धारौदशविद्यानामस्मिन्शाक्तप्रमोदके ॥ ५ ॥ विष्णोर्द्ध्यानंसचित्रँय्यजनविधिरपिस्तोत्रमस्मिन्सवर्म्महृत्प्रोक्तञ्चापियुक्तंसममुपनिषदाष्टोत्तरन्नामतस्य ॥ मन्त्रोग्रन्देवगोप्यंशतमिहलिखितञ्चापिनाम्नांसहस्रम् सोद्धारौयन्त्रमन्त्रावहृदयमखिलन्ताहृशन्तच्चदेव्याः ॥६॥ एतत्सर्व्वङ्गणेशेश्वरहृदयविहीनंसमुक्तंसदस्मिन्मार्त्तण्डस्यापिताहृक्सलकामिहपरंहृच्चसूक्तेनयुक्तम् ॥ नास्त्यस्मिंस्तस्यचोग्रोपनिषदवगताबोद्धयमेताद्धिचित्रम् सर्व्वन्तूपात्तमस्मिन्सकलबुधजनैर्य्यथास्थानलब्धम् ॥ ७ ॥ षड्वेदाङ्केन्दु १९४६ युक्तेशरादिविधुदिनेसात्तिथौषण्मुखस्य अक्षपक्षे सुमासेजयसुखशुभदेमाधवेमानवानाम् ॥ ग्रन्थःशाक्तप्रमोदोगमदयमखिलःसम्प्रदेशःसमाप्तिं श्रीदेवैर्न्नन्दनान्तैर्न्नृपकुलकमलाहस्करैःसुप्रणीतः ॥ ८ ॥

सम्पूर्णोयङ्ग्रन्थः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना.

बंबई.

श्रीमद्
वाल्मीकीय रामायण.
संस्कृत मूल और भाषाटीका सहित
(पुस्तकाकार) खुलापत्रा ॥

कविकुल तिलक आदि कवि महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण समग्रग्रंथ माहात्म्य और अनुक्रमणिका सहित परमपुष्ट मोटे और चिकने कागज पर सुवाच्य मनोहर अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुतहै—हिन्दोस्थानमें आजपर्य्यंत इसका ऐसा भाषानुवादनहींहुआथा भूमण्डलके बीच इस परम पवित्र पावन ग्रंथको पहले पहल हमींने छापाहै इसकी टीका अत्युत्तम परम सुगम और ललित मनरंजन शब्दोंमें विद्वद्वर शिरोमणि श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्रने अत्यन्त ही उत्तमकी है सकल गुण आगरी नागरीकी पूरीलालित्यता सर्वाङ्ग रूपसे दरशायी है यह बालसे वृद्धतकको परमोपयोगीहै कथावांचनेवाले विद्वानों को इससे बड़ा हीलाभ प्राप्त होगा केवल अक्षर मात्रका बोधहोनेसेही सज्जन जन इस रामायण का पाठ सहजमें कर सकैंगे और कथा बाँचकर धन यश लक्ष्मीके भागी होंगे कथा बाँचने वालोंको तो यह अत्यंत ही लाभकारी है, ऐसा सुंदर मनोहर रमणीक ग्रंथ होने परभी सबके सुगमार्थ मूल्य२५रु० रक्खा गया है डाक महसूल नहीं देना होगा २५ रु० भेज देने पर समग्र ग्रंथ उनके मकानपर पहुँच जायगा ग्रन्थकी अद्भुत छवि और आन्तरिक विद्वता देखकर ग्राहक गण परम प्रसन्न होंगे ॥

श्रीमद्
वाल्मीकीयरामायण
केवलभाषा वार्त्तिक ॥

परमप्रशंसनीय सराहनीय और अत्यंत सुगम सरलरीत्यऽनुसार परम सुंदर ललित और विचित्र मनोविलास पीयूषधारा भाषा किया गया है और समग्रग्रंथके श्लोकांकभी डालेगयेहैं प्रतीक्के लिये प्रत्येकसर्गका आद्यंत श्लोकभी लिख दिये गये हैं जिल्द बड़ी होनेके कारण दो भागोंमें विभक्त कीगई है, पूर्व्वार्द्ध भागमें बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, आरण्यकाण्ड, और किष्किन्धाकाण्ड है, उत्तरार्द्धमें सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड है जिल्दकीभी शोभा अपार है सोनहरी अक्षरोंमें चित्रितपुट्ठेमें बनी है मूल्य १० रु० है ॥

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत
सटीकरामायण ॥
श्रीयुतपं०ज्वालाप्रसादकृतसंजीवनीटीका ॥

लीजिये महाशय कविवरशिरोमणि तुलसीदासकी अपूर्व कविताका अक्षरात्र्थ भाषामृतभी लीजिये सम्पूर्ण क्षेपकों सहित और श्रुतिस्मृतिपुराणोंके अद्भुत दृष्टांतोंसहित जिसमें सम्पूर्ण शंका समाधान का विवर्ण है, तुलसीदासजीका समग्र जीवन चरित्र, माहात्म्य, रामजन्म चतुर्दश वर्ष वनोवासका तिथिपत्र और अष्टम रामाश्वमेध लवकुशकाण्ड भी अक्षरात्र्थ सम्मिलितहै, गूढार्थ, अक्षौहिणीकी संख्या, प्रश्नावली, भजनमाला, प्रभा-

ती आदिके सिवाय परम मनोहर फोटूग्राफके विचित्र चित्रभी हैं, सूर्यवंशका वृक्ष और हनोमानजीकीचित्रित प्रतिमा है इस सबके सिवाय कठिन शब्दोंका बृहत् कोषभी लगाया गया है ऐसी रामायण आजपर्य्यन्त अन्यत्र कहींनहींछपी देखतेही तन मन प्रसन्नहोगा मूल्य८रु०है जिल्दचित्रितसुनहरो परम मनोहरहै

श्रीमद् गोस्वामितुलसीदासकृत

रामायण मझोला.

सहित श्लोकार्त्थ, छन्दार्थ, शब्दार्थ, इतिहासार्थ, गूढार्थके जिसमें सम्पूर्ण क्षेपकहैं बाबा तुलसीदासका जीवन चरित, माहात्म्य, रामचतुर्दश वनवास का तिथिपत्र, बरवा रामायण, और अष्टम रामाश्वमेध लवकुशकाण्ड भी संयुक्त है इसके सिवाय ३८०० कठिन २ शब्दोंकी टिप्पणी हैं ऐसा उत्तम ग्रंथ अन्यत्र कहीं नहीं छपा मूल्य रफकागजका १॥रु० और ग्लेजकागजका २॥ रु०है परमपुष्ट विलायती चित्रितजिल्दबँधीहै हिंदोस्थानके कारीगरतो केवल १॥ रु० ऐसी जिल्दबाँधनेकाहीलेंगे ॥

श्रीसप्तशतीचंडी अर्थात् दुर्ग्गा पाठ

संस्कृतमूल और भाषा टीकासहित.

महामाया जगज्जननी आदि शक्तिकी शक्ति जगत् भरमें विख्यात् है इस परम पावन चरित्रकी महिमा अतिअगाधहै इस में कठिन दार्शनिक तत्त्व लिखितहैं रक्तबीजका वध, महिषासुर का वध, मधुकैटभका वध, शुम्भ निशुम्भका वध इसमें अत्यन्त विस्तार पूर्वकहै, देवीसूक्त, रात्रीसूक्त, रहस्य, कील, कवच

अर्गला और प्रयोगादि विधिभी संयुक्तहै और इनका भाषाभी किया गयाहै भाषा अत्यन्त सरल मधुर तथा तन मन प्रसन्न करने वालीहै यह ग्रंथ अभी नया छपकर तय्यार हुआहै इसका पाठ प्रत्येक् हिन्दूके गृहमें होना परम आवश्यकहै महामाया की यह महिमा सुननेसे सम्पूर्ण रोग शोक लयको प्राप्त होतेहैं और सुखसौभाग्यका पार नहीं रहताहै कीमत केवल १ रु० है जिल्दबंदी बहुत दृढहै ॥

मनुस्मृति ॥

संस्कृत मूल और भाषाटीकासहित ॥

इस उत्तम ग्रंथका ान्वय भाषा अत्युत्तम हुआहै यह पुस्तक हिन्दू मात्रको परमोपयोगीहै, राजा महाराजाभी इसके अनुसार धर्म्म पूर्वक शासन करते हैं यह ग्रंथ देखनेहीके योग्यहै भाषा अत्यन्त सुगम और रसीली है कीमत ३ रु०

गायत्री पञ्चाङ्ग ॥

यह संपूर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्योंको अवश्य संग्रह करने योग्यहै. स्वधर्मका ग्रंथहै इस्में गायत्रीपटल, पद्धति, पुरश्चरण, स्तोत्र, कवचादिकहैं. कीमत ॥। आना

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

खेमराज श्रीकृष्णदास

"श्रीवेंकटेश्वर" छापखाना.

बम्बई.

